Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण की रीति पर

सबलसिंहचौहान-विरचित

महाभारत

(अठारहों पर्व)

प्रकाशक—नवलकिशोरप्रे-स, लखनऊ.

आठवीं बार] [१९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण की रीति पर

सबलसिंहचौहान-विरचित

महाभारत

(अठारहों पर्व)

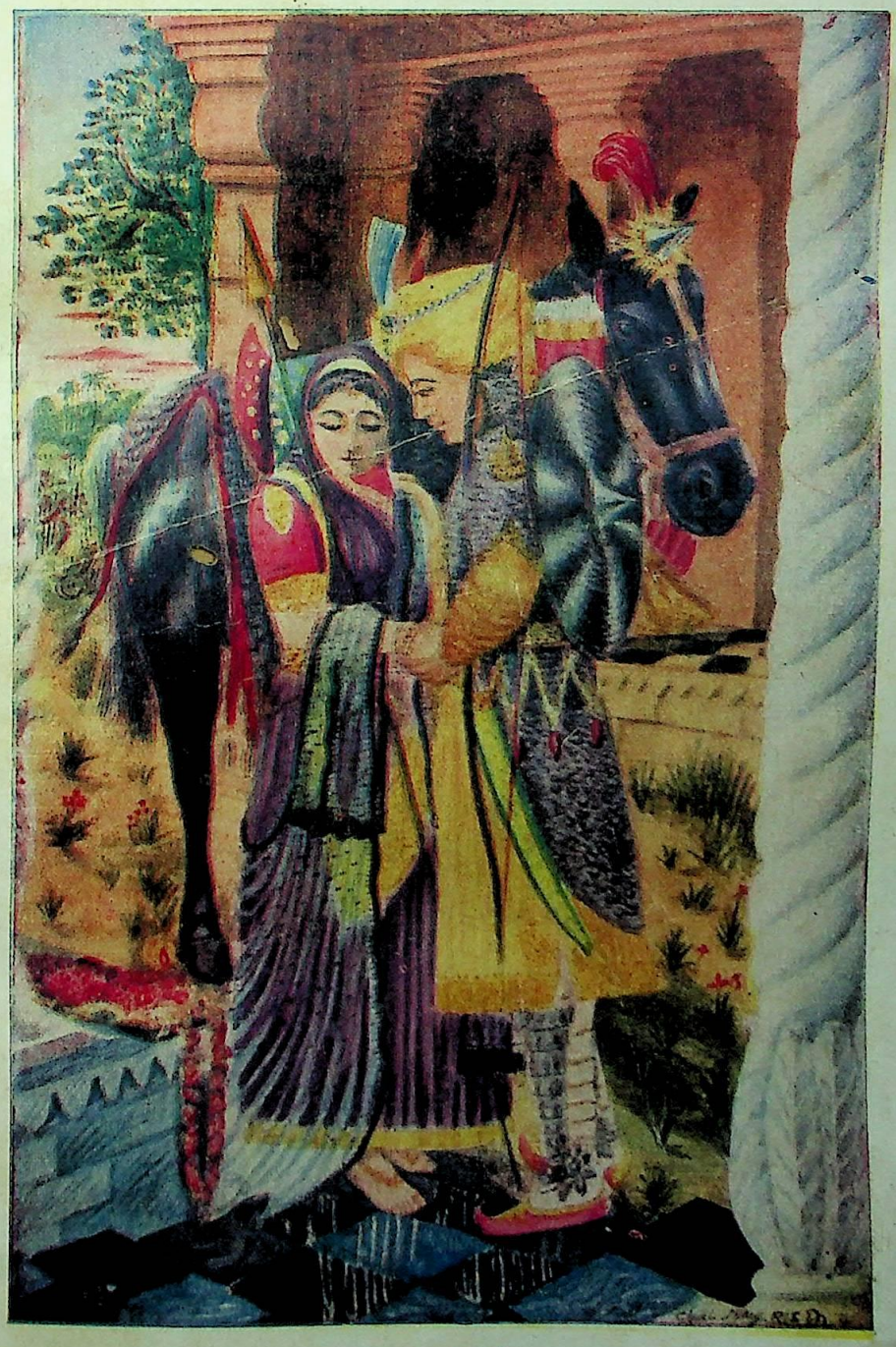

प्रकाशक—नवलकिशोरप्रे-स, लखनऊ.

आठवीं बार] [१९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
आदिपर्व	
मंगलाचरण	१
महाराज जनमेजय के पास वेदव्यास का आगमन	२
व्यासजी की आज्ञा से वैशम्पायन का जनमेजय से महाभारत की कथा आरम्भ करना	२
भरतवंश का वर्णन	२
महाराज शन्तनु की रानी का गंगाजी में फाँदकर प्राण दे देना ...	३
शन्तनु का वन में स्त्रीरूप गंगा को देखना	३
शन्तनु और गंगा की परस्पर प्रतिज्ञा	४
गंगाजी के गर्भ से भीष्म की उत्पत्ति	४
शन्तनु का अपनी प्रतिज्ञा त्याग देना और गंगा का अपना परिचय देना	४
अपने पुत्र को वरदान देकर गंगा का चला जाना	५
भीष्म का परशुराम से राजनीति और धनुर्विद्या सीखना	५
सत्यवती के जन्म का वृत्तान्त ...	७
पराशर के वीर्य से, सत्यवती के गर्भ से वेदव्यास की उत्पत्ति ...	७
सत्यवती और शन्तनु का विवाह और भीष्म का राज्य न करने की प्रतिज्ञा करना	८
सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य की उत्पत्ति ...	८
भीष्म का काशिराज की कन्याएँ हर लाना	९
भीष्म और परशुराम का युद्ध ...	१०
अम्बालिका का अग्नि में जल भरना...	११
शिखंडी का जन्म ...	११
धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर की उत्पत्ति	१४
कर्ण की उत्पत्ति	१७
कर्ण का परशुराम से छल करके धनुर्विद्या सीखना	१८
दुर्योधन आदि सौ भाइयों की उत्पत्ति	२०
पाण्डवों की उत्पत्ति ...	२२
द्रोणाचार्य का हस्तिनापुर में आना...	२८

विषय	पृष्ठ
भीष्म की आज्ञा से द्रोणाचार्य का कौरव-पाण्डवों को धनुर्विद्या सिखाना	२९
अर्जुन का द्रुपद को जीतकर द्रोणाचार्य के पास लाना	३६
लाक्षगृह से निकलकर पाण्डवों का एक ब्राह्मण के यहाँ ठहरना ...	४३
भीम और बकासुर का युद्ध ...	४५
द्रौपदीका स्वयम्बर और अर्जुनका लक्ष्यवेध	५०
अर्जुन का द्रौपदी को लेकर कुन्ती के पास आना	५५
इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर का राज्य करना	५९
अर्जुन का चित्राङ्गदा के साथ विवाह करके कुछ दिनों तक मणिपुर में रहना	६०
अर्जुन और हनुमान् की भेंट ...	६६
सभापर्व	
मंगलाचरण	२
युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ आरम्भ करना	३
दुर्योधन का यज्ञशाला में आना और स्थल के भ्रम से जल में गिर पड़ना	१२
सबसे पहले कृष्ण की पूजा होते देखकर शिशुपाल का कुपित होना और कृष्ण को अनेक दुर्वचन कहना	२०
श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध ...	२३
युधिष्ठिर से बिदा होकर सब राजाओं का अपने अपने घर जाना ...	२७
दुर्योधन का शकुनि की सलाह से जुआ खेलने की तैयारी करना ...	३१
युधिष्ठिर का शकुनि के साथ जुआ खेलना	४१
युधिष्ठिर का जुआ में अपना सर्वस्व हारकर द्रौपदी को भी हार जाना	४७
दुश्शासन का द्रौपदी के केश पकड़कर सभा में लाना	५१
दुश्शासन द्वारा द्रौपदी का चीर खींचा जाना	५७
द्रौपदी का श्रीकृष्ण की स्तुति करना	५८
द्रौपदी का चीर बढ़ना और सभा में अनेक प्रकार के उत्पात देख पड़ना	६०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu.

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
धृतराष्ट्र का सभा में आना और द्रौपदी समेत पाण्डवों को दासभाव से छुड़ा देना	६१
द्रौपदी समेत पाण्डवों का वन को चला जाना	६७

वनपर्व

पाण्डवों का काम्यक वन में निवास करना	२
द्वैत वन में मार्कण्डेय और पाण्डवों का संवाद	७
अर्जुन का हिमालय पर जाकर शंकर की आराधना करके दिव्य अस्त्र प्राप्त करना	११
नल और दमयन्ती की कथा ...	१३
युधिष्ठिर के पास नारद का आगमन	२६
जरा राक्षस का युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और द्रौपदी को हर ले जाना ...	३०
भीम द्वारा जरा दानव का वध ...	३१
पाण्डवों का दुर्योधन आदि कौरवों को गन्धर्वों के हाथ से छुड़ा देना ...	३८
जयद्रथ का द्रौपदी को हर ले जाना और पाण्डवों द्वारा जयद्रथ का अपमान होना	३९

विराटपर्व

पाण्डवों का विराट के यहाँ छिपकर रहना	८
विराट की सभा में भीमसेन का एक मल्ल को मल्लयुद्ध करके हरा देना	११
भीमसेन का कीचक को मार डालना	२०
भीमसेन का कीचक के सौ भाइयों को भी मार डालना	२३
कौरवों का विराट के राज्य पर आक्रमण करना	२७
अर्जुन और कौरवों का युद्ध ...	३८
कौरव सेना का भागना और द्रोणाचार्य का अर्जुन के साथ युद्ध करना	४३
अर्जुन और हलम्बुष का युद्ध ...	४९
अर्जुन और भीष्म का युद्ध ...	५१
भीष्म, द्रोण और कर्ण को जीतकर अर्जुन का विराट के यहाँ वापस आना	५५
पाण्डवों को पहचानकर विराट का अभिमन्यु के साथ अपनी कन्या व्याह देना	६०

विषय	पृष्ठ
श्रीकृष्ण का दुर्योधन के पास जाकर पाण्डवों के साथ सन्धि का प्रस्ताव करना	६२

उद्योगपर्व

युधिष्ठिर का विराट, द्रुपद और श्रीकृष्ण के साथ कर्तव्य का विचार करना	३
श्रीकृष्ण का बलदेव से कौरव-वंश का वर्णन करना	४
श्रीकृष्ण का बलदेव से अर्जुन की वीरता बतलाना	११
दुर्योधन के बुलाने से अनेक राजाओं का हस्तिनापुर में एकत्र होना ...	२१
दुर्योधन और अर्जुन का श्रीकृष्ण को अपने पक्ष में लाने के लिए एक ही समय में उनके घर पहुँचना और अर्जुन को अपने पैरों के पास सामने खड़े देखकर श्रीकृष्ण का उन्हीं के पक्ष में हो जाना	२८
द्रौपदी का श्रीकृष्ण से रो-रोकर अपने सब दुख कहना	३६
सन्धि का प्रस्ताव लेकर द्रुपद के पुरोहित का दुर्योधन के पास जाना ...	४४
धृतराष्ट्र की आज्ञा से संजय का श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास सन्धि के लिए जाना	५२
विदुर का धृतराष्ट्र से दुर्योधन की दुष्टता कहकर उनको पाण्डवों के साथ सन्धि कर लेने की सलाह देना	६१
श्रीकृष्ण का सात्यकि से दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा कहना ...	७७
श्रीकृष्ण का सन्धि कराने के लिए हस्तिनापुर को जाना और विदुर के घर में ठहरना	८६
श्रीकृष्ण का कुन्ती से मिलना ...	९७
कुन्ती का श्रीकृष्ण से विदुला का इतिहास कहकर अपने पुत्रों को उत्तेजित करना	९८
श्रीकृष्ण का भीष्म, द्रोण आदि से विदा होकर हस्तिनापुर से प्रस्थान करना	१०९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
कर्ण की सलाह से दुर्योधन का युधिष्ठिर के पास दूत भेजकर उनको युद्ध का सन्देश देना ...	११७
व्यासजी का दुर्योधन के पास आकर उनको समझाना	१२७
धर्मराज का श्रीकृष्ण, द्रुपद और विराट आदि राजाओं की सलाह से युद्ध का निश्चय करना ...	१३३

भीष्मपर्व

श्रीकृष्ण का हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर के पास जाना और उनको युद्ध के लिए उत्साहित करना	२
कुरुक्षेत्र में कौरव-पाण्डव की सेना का एकत्र होना और द्रोण आदि गुरुजनों को सामने देखकर युद्ध से विमुख अर्जुन को श्रीकृष्ण का समझाना	८
अर्जुन और भीष्म का युद्ध ...	१३
द्रोण के ब्रह्मास्त्र द्वारा विराट-तनय शंख की मृत्यु	१६
अर्जुन और भगदत्त का युद्ध, भगदत्त और उनके हाथी की मृत्यु ...	२६
पाँच दिन युद्ध होने के बाद दुर्योधन का भीष्म को उलहना देना और भीष्म का पाण्डवों के रक्षक श्रीकृष्ण का माहात्म्य कहना	३७
भीमसेन और द्रोणाचार्य का युद्ध ...	४५
श्रीकृष्ण का सुदर्शनचक्र लेकर भीष्म की ओर झपटना और उनका प्रण रखना	५२
दसवें दिन अर्जुन के बाणों से घायल होकर भीष्म का रथ से गिरना...	६२

द्रोणपर्व

भीष्म के गिर जाने पर दुर्योधन का द्रोणाचार्य को सेनापति बनाना	२
अभिमन्यु का जयद्रथ को हराकर चक्रव्यूह में प्रवेश करना ...	१२
अभिमन्यु की मृत्यु और पाण्डवों का विलाप	२०
पुत्रशोक से पीड़ित अर्जुन का जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा करना ...	२५
अर्जुन का द्रोणरचित व्यूह में प्रविष्ट होकर अनेक योद्धाओं को परास्त करके जयद्रथ का वध करना ...	३६
अश्वत्थामा हाथी की मृत्यु और भीम का द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को रथ-समेत फेंक देना	४६
अपने पुत्र की मृत्यु जानकर द्रोण का प्राणायाम करके अपने प्राण त्याग देना और फिर धृष्टद्युम्न द्वारा उनका सिर काटा जाना ...	५२

कर्णपर्व

द्रोण की मृत्यु होने पर दुर्योधन का कर्ण को सेनापति बनाना ...	१
कुन्ती का कर्ण से परशुराम के दिये हुए पाँच बाण माँग लाना और इन्द्र का उनके कुण्डल कवच माँग लेना	३
भीमसेन का दुश्शासन की भुजा उखाड़कर उसके रुधिर से द्रौपदी के केश बँधवाना	१६
युद्धभूमि में कर्ण के रथ का चक्र पृथिवी में धँस जाना और कर्ण की मृत्यु	२१

शल्यपर्व

दुर्योधन का शकुनि की सलाह से शल्य को सेनापति बनाना ...	२
युधिष्ठिर और शल्य का युद्ध तथा शल्य की मृत्यु	११

गदापर्व

दुर्योधन का व्यास-सरोवर में छिपना	२
पाण्डवों का दुर्योधन की खोज में व्यास-सरोवर के पास पहुँचना और भीम के ललकारने पर दुर्योधन का बाहर निकल आना ...	५
भीमसेन और दुर्योधन का गदायुद्ध ...	६
दुर्योधन का घायल होकर गिर पड़ना	७

सौप्तिकपर्व [illegible]

अश्वत्थामा का द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के सिर काटकर दुर्योधन के पास ले जाना और दुर्योधन की मृत्यु...	३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
अर्जुन का अश्वत्थामा को बाँधकर द्रौपदी के सामने लाना और द्रौपदी का दया करके उनको छुड़ा देना और धृतराष्ट्र का भीमसेन की लोहमूर्ति को चूर्णकर डालना तथा श्रीकृष्ण को गान्धारी का शाप ...	५

स्त्रीपर्व

संजय का पुत्रशोक से व्यथित राजा धृतराष्ट्र को समझाना ...	३
कौरवस्त्रियों का विलाप ...	७
पाण्डवों का धृतराष्ट्र के पास जाना और उनसे क्षमा माँगना ...	१३
युद्ध में निहत वीरों का दाहकर्म करना और स्त्रियों का सती होना ...	१७

शान्तिपर्व

व्यासजी की आज्ञा से पाण्डवों का शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म के पास राजनीति और धर्मोपदेश सुनने के लिए जाना ...	२
भीष्म का युधिष्ठिर से एकादशी का माहात्म्य कहना	१०
भीष्म का युधिष्ठिर से गंगा का माहात्म्य कहना	१६
युधिष्ठिर को उपदेश देकर भीष्म का प्राणत्याग करना	३१

अश्वमेधपर्व

व्यासजी की आज्ञा से युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय करना	५
भीमसेन का राजा यौवनाश्व को जीतकर यज्ञ करने के लिए अश्व लाना	१२
अर्जुन का लंका से सुवर्ण ले आना ...	१६
भीमसेन का श्रीकृष्ण को बुलाने के लिए द्वारका को जाना ...	२१
यज्ञ का अश्व छोड़ा जाना और अर्जुन का घोड़े के पीछे जाना ...	२८
राजा हंसध्वज का घोड़े को पकड़ लेना और उनके पुत्रों से अर्जुन का युद्ध	४०
मणिपुरमें बभ्रुवाहनके साथ अर्जुनका युद्ध	४४
बभ्रुवाहन द्वारा अर्जुन का वध और चित्राङ्गदा तथा उलूपी का विलाप	६१
सजीवन मणि के प्रभाव से अर्जुन का जीवित होना	६८
देश भर में भ्रमण करके घोड़े समेत अर्जुन का हस्तिनापुर को आना और अश्वमध यज्ञ का अनुष्ठान...	६६

आश्रमवासिकपर्व

पाण्डवों का सुखपूर्वक हास्तनापुर में राज्य करना	३
धृतराष्ट्र आदि का तपस्या करने के लिए वन को जाना	१३
धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती की मृत्यु	१७

मुशलपर्व

अर्जुन का द्वारकापुरी को जाना ...	१
प्रभास तीर्थ में परस्पर युद्ध करके यदुवंशियों का विनाश ...	१३
श्रीकृष्ण का इस लोक से चला जाना	१४

स्वर्गारोहणपर्व

व्यासजी का पाण्डवों को हेवार में गलने की अनुमति देना ...	३
परिक्षित् का राज्याभिषेक करके पाण्डवों का हिमालय पर जाना	६
पाण्डवों का केदारनाथ के दर्शन करना	११
नारद का पाण्डवों को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देना	१८
द्रौपदी की मृत्यु	१६
सहदेव और नकुल की मृत्यु ...	२०
अर्जुन और भीम की मृत्यु ...	२१
युधिष्ठिर की मृत्यु	२२
युधिष्ठिर का स्वर्गलोक में द्रौपदी समेत अपने भाइयों और युद्ध में निहत द्रोणाचार्य आदि वीरों को देखना...	२३

—:o:—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारतभाषाआदिपर्व ॥

दो० गजमुख सुखकर दुखहरण, तोहिं कहौं शिरनाय।
कीजै यश लीजै बिनय, दीजै ग्रन्थ बनाय॥
जगदीश्वर को धन्य जिन, उपजायो संसार।
क्षिति जल नभ पावक पवन, करि इनको बिस्तार॥
नृपहि दास दासहि नृपति, पवितृणतृणहिंपखान।
जलधिअल्पसर लघुसरहि, उदधि करै क्षणमान॥

प्रथमहिं आदिपुरुष को ध्यावों ❀ जा प्रसाद शिक्षा सब पावों
परमपुरुष आखण्डित रूपा ❀ है सर्वातम रूप अनूपा
अक्षर कृष्ण अक्षर मंझारा ❀ जानै देखत सब संसारा
अक्षर भये हैं कृष्ण अभङ्गा ❀ परमपुरुष कर रूप अनङ्गा
जो सर्वज्ञ लेप निर्लेपा ❀ ता महिमा को कह संक्षेपा
जाके नाम तरत संसारा ❀ जाहि नाम दुखशोक सँहारा
एक ब्रह्म ते अगणित रङ्गा ❀ बरण बरण संसारप अङ्गा
ता माया सब देवता भयऊ ❀ त्रिगुण एक ते गुण निर्मयऊ
पुरुषकबीज मूल पुनि खारहि ❀ मूलरूप बरणौं निरकारहि
हरिहर कृष्ण तौ शाखा भयऊ ❀ जन्म बौध संहारण लयऊ

दो० एक ब्रह्म बहुरूप है, जानि जात नहिं भेद।
नानारूपक त्यहि बिषे, महिमा भाषत वेद॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहौं निरञ्जन पुरुष प्रधाना ❀ पुनःव्यास मुनि गुणकेनिधाना
हरिचरित्र कोउ भेद न पावहिं ❀ कै भाषा सँक्षेप कछु गावहिं
महामुनी जो व्यास बखाना ❀ श्रीभगवन्त चरित जिनजाना
जनमेजय राजा अवतारा ❀ धर्मरूप ऋष्मता कुमारा
एकै समय व्यासमुनि आये ❀ राजसभा के माहिं सिधाये
पूजार्चा तब राजा कीन्हों ❀ हर्ष गात कछु पूछै लीन्हों
सबही देख्यो तुम महभारथ ❀ कौरव पाण्डवकर पुरुषारथ
कौन प्रकार चरित्र अपारा ❀ मारे कौरव पंच कुमारा

दो० औरौ वंश चरित्र जो, सुनिये तोहिं प्रसाद।
जाहि सुनत जो महामुनि, नाशत चित्तविषाद॥

सुनिकै व्यास कहै नृप पाहीं ❀ यह अब कहैक अवसर नाहीं
वैशम्पायन शिष्य हमारा ❀ सो तो कहै चरित्र अपारा
यहकहिव्यासमुनिवनहींसिधाये ❀ वैशम्पायन कथा सुनाये
प्रथमहिं कहो वंश बिस्तारा ❀ जामें भये नृप अमित प्रकारा
कृष्णपुत्र मारीच सु भयऊ ❀ मारिच सूरसभा निर्मयऊ
सूरसभा पुत्र सूर्यावतारा ❀ सूर्य पुत्र स्वायम्भु भुवारा
स्वयम्भुपुत्र नक्षत्रपति भयऊ ❀ बुद्धनाम सुत ता निर्मयऊ
ताके पुत्र अनूपम आही ❀ वेद पुराण प्रशंसत जाही
अनुपम पुत्र नहंस भुवारा ❀ नहंस पुत्र संजति संसारा
संजति पुत्र मरे जनमाहीं ❀ संजति पुत्र अनूपम आहीं

दो० संजतिपुत्र है प्रहजमा, जगत महासंचार।
तस्य पुत्र जो भोज भे, सुनो जो बचन भुवार॥

भोजपुत्र भयो सन्त अवतारा ❀ भरत नाम भयो तासु कुमारा
मञ्जमीठ ताके सुत भयऊ ❀ तासु पुत्र ब्रह्मा निर्मयऊ
विष्णुसुता सत्य सुवनके माहीं ❀ तासुपुत्र शन्तनु नृपआहीं
विचित्रवीर्य है तासु कुमारा ❀ लीन्हो जासु पाण्डु अवतारा
भये पाण्डुसुत अर्जुन नामा ❀ अर्जुनसुत अभिमन्यु गुणधामा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गा पुत्र गोद कर लीन्हा ❀ स्वर्गहिलोक गमन तब कीन्हा
इन्द्र बरुण यम पावक पाहीं ❀ औ दिक्पाल मिलायो ताहीं
सब ते कहा पुत्र यह मोरा ❀ ताते दरश करौं जो तोरा
सबहिं कृपा कीजै यहि काजा ❀ गङ्गा भाष्यो देव समाजा
रण में अजय होहु बरदेवा ❀ पुत्र हमार जानु यह भेवा
सबहि देवता कहि तब बाता ❀ रण में अजय होइ कह माता
जब लग अस्त्र रहै करमाहीं ❀ तीनि लोक कोउ जीतहि नाहीं
सौंपा शन्तनु को तब जाई ❀ और कहा बहुतक समुझाई
और एक कंकण तब दीन्हा ❀ हर्षि गात राजा लै लीन्हा
जाके हाथ बराबर होई ❀ ताकर ब्याह करब नृप सोई

दो० यह कहिकै तब जाह्नवी, भई जो अन्तर्द्धान।
राजा पुत्रहिं पालही, सबलसिंह चौहान॥

पांच सात बर्ष कर भयऊ ❀ परशुराम पहँ पढ़ने गयऊ
परशुराम किरपा बहु कीन्हा ❀ बिद्या राजनीति सब दीन्हा
अस्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा ❀ आपु समान कीन्ह संचारा
भृगुपति बहुत दया तब कीन्हा ❀ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हा
पढ़ि जो बिद्या भीषम आये ❀ बैशम्पायन कथा सुनाये
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ ❀ महाहर्ष शंतनु मन ठयऊ
आगे कही कथा बिस्तारा ❀ सावधान होइ सुनो भुवारा
जैस ब्यासमुनि को अवतारा ❀ सत्यवती के गर्भ मँझारा
जैसे सत्यवती अवतारा ❀ तासु पुत्र मुनिब्यास कुमारा
सुनत कथा पाप कर नासा ❀ पावत अन्त परमपद बासा

दो० भारत कथा पुण्यफल, राजा सुनु बिस्तार।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोबिन्द अपार॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An C

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैशम्पायन उवाच ॥

वैशम्पायन करत बखाना ❀ जनमेजय राजा सुनि ध्याना
बस्वरुपचर राजा बलवन्ता ❀ महासुशील बीर गुणवन्ता
गिरिकर नाम तासु यह रानी ❀ रूप शील नहिं जाइ बखानी
रजस्वला सो रानी भयऊ ❀ तादिन राउ अखेटक गयऊ
मारे साउज मृगा अपारा ❀ जल आश्रम राजा पगुधारा
सरवर एक अनूप सुहावा ❀ नाना जन्तु कमल बहुछावा
कञ्ज महा भँवरा इक आही ❀ केलिकरत भँवरी के पाही
राजा देखि कामबश भयऊ ❀ भूलि ज्ञान राजा का गयऊ
रानी रूप हृदय धरि राऊ ❀ बीर्यपात भयो वाही ठाऊ
राजा कही बीर्य दे आहीं ❀ तासुको तेज पताकहि जाहीं

दो० मन बिचार कर राजा, पक्षी शुकहि बुलाइ।
पद्मपत्र दोना कियो, ताहि बीर्य सौंपाइ॥

भाष्यउ राज पक्षि सों बानी ❀ देहु बीर्य यह जहँ है रानी
कहि संदेश तुरत मो आवहु ❀ तब पक्षी तुम बात सुनावहु
पक्षी बीर्य चलेउ लै तबहीं ❀ आधो मारग पहुँचो जबहीं
नदी एक के ऊपर आयो ❀ पक्षि सकल देखन तब धायो
तिन्हैं देखि गहि जानि अहारा ❀ दूनों पक्षिन युद्ध सँचारा
एक बुन्द जल महँ पर सोई ❀ महा युद्ध पक्षिनमहँ होई
जौन बुन्द जल माहीं डारा ❀ एक मच्छि तब कीन्ह अहारा
दूनों पक्षी लरत सो जाहीं ❀ दोना कतहूं गयो उड़ाहीं
जौनि मच्छ सो कीन्ह अहारा ❀ गर्भवन्त भै जल मंझारा

दो० बहुत दिना तब बीतिगे, बिधि परपञ्च उपाइ।
धीमर एक अखेट कहँ, मच्छि हेतु तहँ जाइ॥

ओही मच्छि जालमहँ परी ❀ दीरघ मच्छि देखि सुखकरी
दासा राम तहां कर राऊ ❀ धीमर मीन लाह ता दाऊ
राजा मच्छि देखि बिस्तारा ❀ तब मच्छीकर उदर बिदारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तासु उदर में देखि भुवारी ❀ कन्या एक अनूप कुमारी
मच्छराज मन हर्ष अपारा ❀ बोल्यउ बचन समय अनुसारा
मच्छ देश पति राजा सोई ❀ निश्चय राजा जानहु होई
कन्या नृप केवट को दीन्हा ❀ मच्छोदरी नाम त्यहि कीन्हा
बहुत प्रीति केवट सों राऊ ❀ कन्या पालत अपने ठाऊ
सात वर्ष की कन्या भयऊ ❀ नदी माहिं सो कन्या गयऊ
केवट ब्याधी तनमों गही ❀ नाव घाट में कन्या रही

दो० यहि प्रकारते राजा, सुनौ और बिस्तार।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पगुधार॥

नदी घाट पाराशर जाई ❀ मच्छोदरि को देख्यउ आई
कन्या देखि मोहि मुनि गयऊ ❀ कामातुर पाराशर कहेऊ
लगन देखि ऐसा मुनि ताही ❀ जन्महि पुत्र सो पण्डितमाही
कन्या पाहिं कुहा मुनिबाता ❀ नदीघाटकर मत सख्याता
काम जो अनी पंचशर मारा ❀ स्त्री मानहु बचन हमारा
रति दानहिं दे हमको नारी ❀ सुनि कन्या लज्जा भइ भारी
कन्या कहा बाल तन मोरा ❀ जानों काह कामगति तोरा
दिवस माहिं देखहिं नर नाना ❀ कैसे तुम भाषौ रति दाना
ऋषि जो कहत न बचन बिचारी ❀ योजनगन्धा नाम तुम्हारी
यौवनवन्त होहु क्षणमाही ❀ अन्ध कुहिर होवै पुनि ताही

दो० यौवनवन्त भई सुता, औ सुगन्ध तनु सान।
दशौदिशा अँधियार भा, कन्यादिय रतिदान॥

रति रस पाराशर तब कीन्हा ❀ व्यासदेव जन्महिं तब लीन्हा
जन्मेउ बालक गर्भ मँझारा ❀ पिता संग तब बन पगु धारा
पुत्र हेतु रोवत सो रानी ❀ तबै व्यास अस कह्यउ बखानी
बिष्णू माया जन्म हमारा ❀ कौन काज दुख करो अपारा
तप के काज पिता सँग जैहौं ❀ सुमिरत मन्त्र तुरतही ऐहौं
कन्या कह मम भयो कलंका ❀ लोकलाज कर्महु भौबंका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाराशर भाष्यो बिस्तारी ❀ आशिष मोर होहु सुकुमारी
पाराशर बन तबहीं गयऊ ❀ ब्यासदेव पुत्रहि सँग लयऊ
कन्या तब अपने गृह आई ❀ यह बृत्तांत सुनौहो राई
ऐसो ब्यासदेव अवतारा ❀ भाष्यो मुनिवर सुनो भुवारा

दो० ब्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान।
पुण्य कथा श्री भारत, जा सुनि पाप नशान॥

शंतनु राजा केतिक काला ❀ उपजा चित्तहेतु सो बाला
पुरबै गङ्गा कंकण दीन्हा ❀ जगतसकल उमान सो कीन्हा
काहू के कर होत सो नाहीं ❀ खोज्यो सकलजगत के माहीं
मत्स्योदरि केवटकै बारी ❀ ताके करमहँ भयो बिचारी
राजा कहै सुन्यो तब बाता ❀ ब्याहब सा कन्या बिख्याता
भीषम कहै जाति की हीना ❀ कौन बुद्धि यहि बिधिने दीना
शंतनुहूं कीन्ह्यो यह कामना ❀ भीषम कह्यो ब्याह अनबना
भीषम केवट सन कह जाई ❀ राजा ब्याह करन तब आई
केवट कह वाचा करि लेऊं ❀ तब कन्या राजा कहँ देऊं
मोरि कन्या के गर्भ अवतारा ❀ सोई राज्य करब संसारा

दो० भीषम तब कीन्हो सोई, बचनबन्ध परमाण।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण॥

भीषम प्रण कीन्हो ता पाहा ❀ जगतमाहँ ना करौं बिवाहा
योग रूप रैहौं सेवकाई ❀ कन्या देउँ पिता को जाई
वाचावन्ध जब भीषम कीन्हा ❀ केवट राजहि कन्या दीन्हा
ऐसे शंतनु ब्याही जाई ❀ सत्यावती नाम सो पाई
सत्यवती पटरानी भयऊ ❀ राज्यभोग तब शंतनु कियऊ
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा ❀ बिचित्रबीर्य दूसर अवतारा
दूनों पुत्र भये नृप बारा ❀ महाबली गुण रूप अपारा
चित्राङ्गदहि राज्य तब दीन्हा ❀ कछुकहिदिवसराज्य उनकीन्हा
अन्तकाल शंतनु को भयऊ ❀ स्वर्गलोक राजा तब गयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० क्रिया कर्म शन्तनु कर, कीन्हो तीनि कुमार।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार॥

देशराज्य भीषम रखवारा ❀ चित्राङ्गद भो राजभुवारा
महायशी राजा यह भयऊ ❀ बैशम्पायन राजहि कह्यऊ
भीषम जो प्रतिपालहिं राजहिं ❀ धर्मशास्त्रकाहत हरि काजहिं
यहि प्रकार भारत बिस्तारा ❀ आदि पर्व संक्षेप पसारा
कहत होत बहु कथा अपारा ❀ राजा सुनु यह बहुबिस्तारा

दो० भारतकथा पुण्य फल, कहतहि पाप बिनाश।
सबलसिंह चौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

वैशम्पायन उवाच॥

राजा सुनौ कथा बिस्तारा ❀ काशीराजा बीर भुवारा
कन्या तीनि तासुघर रहई ❀ तिनके नाम सुनौ तौ कहई
अम्बे जेठि अम्बिका नामा ❀ सबते छोटि अँबलिका जाना
बरषैं दश बीते जब तासू ❀ तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू
देश देशके राजा आये ❀ सत्यावती कतहुँ सुनि पाये
भीषम पाहिं कहा तब रानी ❀ बन्धु बिवाहौ कन्या आनी
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै ❀ दूनों बन्धु ब्याह करदीजै
यह सुनिकै भीषम रथसाजा ❀ काशी गये जहां सब राजा
तीनों कन्या रूप अपारा ❀ पटभूषणयुत यज्ञ मँझारा
मन बाञ्छित बर चाहत सोई ❀ हाथे माल उपस्थित होई

दो० तीनों कन्या एक सँग, जयमाला लियेहाथ।
मन बाञ्छित बर चाहतीं, आये बहु नर नाथ॥

तीनों कन्या एकहि साथा ❀ भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा
तीनों कन्या रथहि चढ़ाई ❀ हांका रथ तब चला उड़ाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाराशर भाष्यो विस्तारी ❀ आशिष मोर होहु सुकुमारी
पाराशर बन तबहीं गयऊ ❀ ब्यासदेव पुत्रहि सँग लयऊ
कन्या तब अपने गृह आई ❀ यह बृत्तांत सुनौहो राई
ऐसो ब्यासदेव अवतारा ❀ भाष्यो मुनिवर सुनो भुवारा

दो० ब्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान।
पुण्य कथा श्री भारत, जा सुनि पाप नशान॥

शंतनु राजा केतिक काला ❀ उपजा चित्तहेतु सो बाला
पुरबै गङ्गा कंकण दीन्हा ❀ जगतसकल उमान सो कीन्हा
काहू के कर होत सो नाहीं ❀ खोज्यो सकलजगत के माहीं
मत्स्योदरि केवटकै बारी ❀ ताके करमहँ भयो बिचारी
राजा कहै सुन्यो तब बाता ❀ ब्याहब सा कन्या बिख्याता
भीषम कहै जाति की हीना ❀ कौन बुद्धि यहि बिधिने दीना
शंतनुहूं कीन्ह्यो यह कामना ❀ भीषम कह्यो ब्याह अनबना
भीषम केवट सन कह जाई ❀ राजा ब्याह करन तब आई
केवट कह वाचा करि लेऊं ❀ तब कन्या राजा कहँ देऊं
मोरि कन्या के गर्भ अवतारा ❀ सोई राज्य करब संसारा

दो० भीषम तब कीन्हो सोई, बचनबन्ध परमाण।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण॥

भीषम प्रण कीन्हो ता पाहा ❀ जगतमाहँ ना करौं बिवाहा
योग रूप रैहौं सेवकाई ❀ कन्या देउँ पिता को जाई
वाचाबन्ध जब भीषम कीन्हा ❀ केवट राजहि कन्या दीन्हा
ऐसे शंतनु ब्याही जाई ❀ सत्यावती नाम सो पाई
सत्यवती पटरानी भयऊ ❀ राज्यभोग तब शंतनु कियऊ
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा ❀ बिचित्रबीर्य दूसर अवतारा
दूनों पुत्र भये नृप बारा ❀ महाबली गुण रूप अपारा
चित्राङ्गदहि राज्य तब दीन्हा ❀ कछुकहिदिवसराज्य उनकीन्हा
अन्तकाल शंतनु को भयऊ ❀ स्वर्गलोक राजा तब गयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० क्रिया कर्म शन्तनु कर, कीन्हो तीनि कुमार।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार॥

देशराज्य भीषम रखवारा ❀ चित्राङ्गद भो राजभुवारा
महायशी राजा यह भयऊ ❀ बैशम्पायन राजहि कह्यऊ
भीषम जो प्रतिपालहिं राजहिं ❀ धर्मशास्त्रकाहत हरि काजहिं
यहि प्रकार भारत बिस्तारा ❀ आदि पर्व संक्षेप पसारा
कहत होत बहु कथा अपारा ❀ राजा सुनु यह बहुबिस्तारा

दो० भारतकथा पुण्य फल, कहतहि पाप बिनाश।
सबलसिंह चौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

वैशम्पायन उवाच॥

राजा सुनौ कथा बिस्तारा ❀ काशीराजा बीर भुवारा
कन्या तीनि तासुघर रहईं ❀ तिनके नाम सुनौ तौ कहईं
अम्बे जेठि अम्बिका नामा ❀ सबते छोटि अँबलिका जाना
बरषैं दश बीते जब तासू ❀ तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू
देश देशके राजा आये ❀ सत्यावती कतहुँ सुनि पाये
भीषम पाहिं कहा तब रानी ❀ बन्धु बिवाहौ कन्या आनी
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै ❀ दूनों बन्धु ब्याह करदीजै
यह सुनिकै भीषम रथसाजा ❀ काशी गये जहां सब राजा
तीनों कन्या रूप अपारा ❀ पटभूषणयुत यज्ञ मँझारा
मन बाञ्छित बर चाहत सोई ❀ हाथे माल उपस्थित होई

दो० तीनों कन्या एक सँग, जयमाला लियेहाथ।
मन बाञ्छित बर चाहतीं, आये बहु नर नाथ॥

तीनौं कन्या एकहि साथा ❀ भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा
तीनों कन्या रथहि चढ़ाई ❀ हांका रथ तब चला उड़ाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कन्या आरत नाद पुकारा ❀ रण ठाढ़े तब सबै भुवारा
भयो युद्ध तहँ बरणि न जाई ❀ भीषम जीते सब जगराई
राजन अस्त्र अनेक प्रहारे ❀ भीषम बीर काटि सब डारे
देवन को बर भीषम पाहीं ❀ को जीतै सन्मुख रणमाहीं
हारे सब राजा बलधारी ❀ भीषम लैगयो तीनिउ कांरी
तीनों कन्या गहि लै आये ❀ सत्यावती मातु सुख पाये
चित्राङ्गद अम्बिका बिवाही ❀ बिचित्रवीर्य अम्बि उरताही
दोउ बन्धु दुइकन्या ब्याहीं ❀ अम्बलिका कह भीषम पाहीं

दो० हमको हरण कीन तुम, गह्यो बांह सों बांह।
जो अपना सुख चहौ तुम, हमसन करौ बिवाह॥

भीषम कह प्रणहवै हमारा ❀ स्त्री भोग तजा संसारा
स्त्री भोग पुत्र जो होई ❀ राजबंश दुइ होई सोई
हम तजि राज्य तात के कारन ❀ स्त्री भोग तजा संसारन
कन्या सुनतहि भई निरासा ❀ रोवतिचलि भृगुपति के पासा
भीषम केर गुरू उनजाना ❀ ता कारण तहँ कीन पयाना
जाइ दुःख भृगुपति सों कहै ❀ भीषम पाप करत जो अहै
हरि लायो ममकारण ब्याहा ❀ ताते कहौं बात भृगुनाहा
परशुराम क्रोधित मन भयऊ ❀ कन्या लै भीषम पहँ गयऊ
भीषम पाहिं कह्यो भृगुनाथा ❀ तुम हरिलायो पकस्यो हाथा

दो० नारि भोग अरु राज्यसुख, तजा पिता के काज।
अब जो ब्याहहि कीजिये, होत जन्म कुललाज॥

परशुराम तबहीं अस भाषहिं ❀ जीतौ युद्ध हमारे साथहिं
बचन हमार करौ परमाना ❀ नातरु रण ठानहु मैदाना
तोहिं जीतिहौं कन्या देऊ ❀ भृगुनन्दन काहै यह भेऊ
भीषम प्रण करिकै रणठाना ❀ गुरुशिष्यकीन कठिनसंधाना
सातदिनालौं भा रणभारी ❀ दोऊ वीर महा धनुधारी
सुर वरदानिक भीषम आही ❀ जगत माहिं को जीतन चाही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अतिही मारु करै भृगुनाथा ❀ जय नहिं पायो भीषम साथा
सात दिना लौं भो रण भारी ❀ भीषम युद्ध भयो अनुहारी
बहुतक शर मारे भृगुनाथा ❀ जय नहिं पायो भीषम साथा
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना ❀ तब अकुलाय शाप यह दीना

दो० गुरु अपमान कीन तुम, क्षत्री कै संसार।
अस्त्रहीन कै मृत्यु तुव, सन्मुख रण मंझार॥

कीन्यो क्षत्री गुरु अपमाना ❀ तव अपमान तजौ रणप्राना
और प्रतिज्ञा यहै हमारा ❀ जेतक क्षत्री जगत मँझारा
इन्हैं अस्त्र देवें अब नाहीं ❀ यहै प्रतिज्ञा अब मन माहीं
परशुराम तौ यह कहि जाई ❀ भै निराश कन्या वहि ठाई
पक्ष करत हारे भृगुनाथा ❀ हमको बिधना कीन्ह अनाथा
धिक है जीवन जन्म हमारा ❀ अब धिक रहौं जगत मंझारा
तब भीषम पहँ कहै रिसाई ❀ तो कहँ भीषम मारबजाई
मोरे पाप तोर शिर भारा ❀ मो दरशन ते रण संहारा
यहै शाप भीषम कहँ दीन्हा ❀ तब कन्याहिं सरारचि लीन्हा
महादुखित पावक तनु जारा ❀ सोई कन्या भइ जरि छारा

दो० यहि प्रकार ते कन्या, तजि पावक में प्रान।
सोई जन्मी द्रुपदघर, जाहि शिखण्डी नाम॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❀ बिदरदेश महँ एक नरेशा
शुद्रानाम तव कन्या अहई ❀ ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा ❀ बिचित्रबीर्यकी दासी कीन्हा
बैशम्पायन कहत बखानी ❀ सुनु राजा तुव बंश कहानी
भीषम महाबीर जग जाना ❀ बानावरि नहिं बीर समाना
देश राज प्रतिपालन करई ❀ राजा काज सदा मन धरई
भारत कथा पाप नहिं रहई ❀ तृणसमान अघ पावक दहई

दो० महभारत भाष्यउ यह, कीन्ही अल्प बखान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबलसिंह चौहान कह, सर्व पाप क्षय जान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा सवधाना ❀ बैशम्पायन करत बखाना
चित्राङ्गद राजा पुर माहीं ❀ प्रेमरु हर्ष सदा मनमाहीं
इक दिन राजा गये शिकारा ❀ महा अगम कानन मंझारा
तहँ चित्राङ्गद गन्धव रहई ❀ राजा देखि क्रोध सो कहई
मानुष ह्वै कै गन्धव नामा ❀ अब निश्चयकरि तजिहै जामा
वन में गन्धव तबै प्रचारा ❀ चित्राङ्गद सों रण बिस्तारा
गन्धव बीर बाण सौ मारे ❀ पैदल हय दल सब संहारे
गन्धव गये स्वर्ग अस्थाना ❀ देशराज सब ब्याकुल नाना

दो० भीषमचितचिन्ता भई, कहँ गये बन्धु नरेश।
बहुप्रकार ते खोजहीं, कतहुँ न मिल्यो अँदेश॥

क्रियाकर्म ताहीकर कीन्हा ❀ बिचित्रबीर्यको राज्यहि दीन्हा
सत्यवती सो ब्याकुल होई ❀ पुत्रके हेतु मरत सो रोई
भीषम ज्ञान बुझावै ताहीं ❀ करि बिचार या मन के माहीं
यूवारूप कन्त का शोगा ❀ ताके ऊपर भयो बियोगा
रात्रिकाल गङ्गासुत जाई ❀ रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई
जाते मनै शान्ति दृढ़ आवै ❀ नीति कर्म सो कथा सुनावै
दिन केतिक तौ ऐसे गयऊ ❀ बिचित्रबीर्य तब चरचै लयऊ
सर्व रात्रि माता के पाहीं ❀ भीषम कहा करै निशिमाहीं
पाप चित्त कै राजा जाई ❀ देखि पराक्रम जाइ दुराई
भीषम उत्तम अशन बनाये ❀ माता को तहँ लै बैठाये

दो० आप ज्ञान उपदेश ते, भाष्यउ तहां पुरान।
जाते माता थीर मन, प्रकट होइ मन ज्ञान॥

यहै कर्म देख्यउ तब राई ❀ त्राहि त्राहि करि चलेउ पराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई ❀ जेहि न होइ हरि संग लड़ाई

भीष्म उवाच ॥

कहेउ बात भलि जस मन मोरा ❀ मैं समझावों अन्धकिशोरा
अस कहि भीष्म तहां पगुधारा ❀ जहँ कोपत कुरुनाथ भुवारा
नृपहिं पितामह बहु समुझाये ❀ सहितसमाज धर्म पहँ आये
कहत काह पूछत कुरुनायक ❀ कहेउ नरेश होइ ज्यहिलायक
अब यह बिमल पितामहबानी ❀ हम तुम सकल करिय शिरमानी
कह कुरुनाथ उचित मत एहा ❀ समर सरोष त्यागि संदेहा
जिन नहिं नेकु कानि मनमानी ❀ दीन उतारि क्षणक में पानी

दो० नीचहोत तौ बध उचित, तुल्यसमर अब योग्य ।
अपर यतन करि अयशते, कबहुँ न होब अरोग्य ॥

बाहुलीक कह सुन नृप बानी ❀ सत्य बिबेक धर्म नयसानी
जेहिसब बधेउ दनुजकुल टीका ❀ करब तासु अस कहब न नीका
जबते भा हरि जन्म पुनीता ❀ बधत बली दुष्टन कहँ बीता
कोजगमिलहि तुमहिंसमयोधा ❀ करत समर यदुपतिहि प्रबोधा
हरिसन जे भट रणकृत भारे ❀ मानहुँ मरे प्रथम के मारे
तात समुझिपरिहरहु कुमतिही ❀ सोह न समर तुम्हैं यदुपतिही
चलिहि न बिक्रम सहित सहाई ❀ नाहक प्राण गँवैहौ जाई
चलिहि चक्र हल मूसल नाना ❀ हरि हलधर करिहैं घमसाना

दो० तब कहिहौ पछिताइ हम, काह कुमारग कीन्ह ।
तेहि अवसर हलधर सहित, यदुपति दर्शन दीन्ह ॥

गहे राम हल मूसल हाथा ❀ आगे तेहि पीछे यदुनाथा
चर्म कृपाण गहे कर माहीं ❀ उग्ररूप छूटत रिस नाहीं
यादवसात्यकिदुहुँदिशिआवत ❀ अस्त्र गहे बहु यदुपति धावत

कृष्ण उवाच ॥

कहेउ कृपाल धर्मसुत पाहीं ❀ हम शिशुपाल बधे मखमाहीं
यदपि भई यह बात अयोगू ❀ दोष तुम्हार न देहैं लोगू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब तुम साज साजि मख करहू ❀ जनि बिस्मय मन रञ्चक धरहू
नतु कीजै हमहूं तुम सोई ❀ कहहिं वचन कुरुनायक जोई
जो दमघोष सुवन कर अङ्गू ❀ होइ जो प्रकट करै रणरङ्गू
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला ❀ ताहि पठावहु भवन भुवाला
संग करहु सेनापति जाई ❀ आवहिं दण्ड बांधि बरिआई
जे नृप दण्ड चैद्य कहँ देता ❀ पठवहु निजचर सेन समेता
आवहिं दण्ड सबन प्रति बांधी ❀ भूप भई महि बिगतउपाधी

दो० धर्मराज सुनि हरिबचन, कहअस उचित न नाथ।
बधबोलाइ करिद एडहित, पठइय निजजनसाथ॥

तासु तनयबध समुझि दुखारी ❀ पुनि यहदण्ड बिपतिबड़ि भारी
कह प्रभुउचित नीति कह बाता ❀ नृपकहँ दण्ड बिचार न ताता
निज सेनापति भूप बुलावा ❀ कहेउ यथा हरि आयसु पावा
आवहु दण्ड बांधि सब तेरे ❀ नहिं शिशुपाल सुतन के नेरे
गुप्त कहेउ यह हरि नहिं जाना ❀ चैद्य राखि रथ कीन्ह पयाना
माहिष्मती नगर पहुँचाई ❀ लीन्हे डांड़ि अपर भुवराई
कह शिशुपाल सुतन ते येहू ❀ हौ अदण्ड तुम दण्ड न देहू
अपर नरेश करै कोउ भीरा ❀ बेगि जनाबब धर्मज तीरा
सब हम करब सहाय तुम्हारी ❀ धर्म दोहाय नगर तब झारी
असकहि बहुबिधिधीरज दीन्हा ❀ आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा

दो० इहां तुरत यदुबंशमणि, आयसु दीन्ह कराय।
बाजे बिबिध निशानघन, सबन दीन बैठाय॥

याम निशागत यह सब भयऊ ❀ पुनि यदुनाथ महामख ठयऊ
जस मखमारग वेदन बरणा ❀ कीन धर्मसुत सब आचरणा
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा ❀ छत्र धराय राज्यपद दीन्हा
बाजे विपुल शंख घरियारा ❀ भेरि धेनुमुख पवँरि दुवारा
विपुलदान द्विजबृन्दन पाये ❀ ऋषि मन अशन पान करवाये
भै बकशीश याचकन भारी ❀ शतयोजन नहिं रह्यउ भिखारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Jay Vastu Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जहँ तहँ बारमुखी बहु नाची ❀ नगर नगारे की धुनि माची
कछु दिन सबहि राखि नरनाहा ❀ करि सतकार समेत उछाहा
नृपन बिदाहित आयसु मांगे ❀ चलती बार निपट अनुरागे
साजि बाजि गजबाहन नाना ❀ दुर्योधन दल कीन पयाना
फिरे पाण्डुनन्दन पहुँचाई ❀ उद्धव राम सहित यदुराई
बाहुलीक पद पुनि शिरनावा ❀ गङ्गासुवन ते आयसु पावा
बिदुरहि मिलत नाथ जगतीके ❀ भेंटत राम कृष्ण अतिनीके
कीन्ह बिदा अति पुलक शरीरा ❀ गे सुत धर्म द्रोण गुरुतीरा

दो० गुरुहि नाय शिर भेंटि पुनि, अतिहितद्रोणकुमार।
मगमहँमिलिरबिनन्दनहि, जातभये आगार॥

यदुबंशिन मिलि धर्म भुवारा ❀ कीन्हेउ अशन अनेकप्रकारा
सकल बहोरि सभामहँ आये ❀ कोउ बिश्राम करत सुख पाये
कोउ खेलत बहु पंसासारी ❀ खेलत कौतुक की बलभारी
देखत नृत्य गान सुन कोऊ ❀ कोउ मृगयाहित सजत सँजोऊ
हरि हलधर युत धर्म नरेशा ❀ लखि मन सकुचत कोटिसुरेशा
जेहि मारग निकसत कुरुचन्दा ❀ देखिपरत बहु याचकबृन्दा
आवत लखि कुरुनाथ सवारी ❀ कहहिं प्रशंसि प्रचारि प्रचारी
दुर्योधन आदिकन सुनाई ❀ करैं धर्मसुत केरि बड़ाई
काहे न होहिं धर्मसुत भारी ❀ जिनके तुम समान भण्डारी
दानकृपाण निपुण सब भांती ❀ भूप दशा कैसे कहि जाती
जासु किंकरन के मन ऐसे ❀ आपु नरेश होहिं धौं कैसे

दो० रहे न जगमहँ रङ्क कोउ, सब नर धनपद पाव।
तासु कोशकीरतिबिमल, कहहु मनुज किमिगाव॥

कुरुपतिधर्मसुयश सुनि कानन ❀ बिदरतहृदय मनहुँ पबिबानन
अतिसकुचत जनु अवनिसमाई ❀ याहिबिधि कुरुपति मन्दिरजाई
करत बनै नहिं काज नशाना ❀ पुनिपुनिधिगनिजजीवनजाना
विभव बिलोकि युधिष्ठिर केरा ❀ कुरुपतिउर संशय कृत डेरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रातहि उठे धर्मसुत राजा ❀ हलधर कृष्णसमेत समाजा
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई ❀ दूतन कही खबरि असि आई
प्रभु अब नागनगर भल बसई ❀ अमरावती जानि लघु हँसई
अब कोउ रंक न असयहिग्रामा ❀ तुमते हीन जासु गृहसामा
सबके गृह मणि कञ्चन रासी ❀ दास अनेक अनेकन दासी
गजरथ चपल तुरंगम छाये ❀ गृह गृह जनु हरि धनद बसाये

दो० प्रथमजयतितवजयकरण, जय कुरुनाथ भुवाल ।
कहहिं परस्पर रङ्क ते, जिनकीन्होंधनपाल ॥

धर्मराज तव दान पताका ❀ बिदित रसातल भूतल नाका
दूतबचन सुनि अतिसुखमाना ❀ बहुरि नरेश करत अनुमाना
कहत दूत सब जो निधि मेरे ❀ भे तस रङ्क नागपुर केरे
यहि मन्दिर ते जिमि मैं एका ❀ प्रकट तथा धनवान अनेका
नेक कोश मम भयो न खाली ❀ दानदशा सुनि भूतल हाली
सो यह द्रव्य कहांते आई ❀ पूछहु भीमहिं भूप बोलाई
सुनि नृपबचन पवनसुत हाला ❀ कह्यो भयो यदुनाथ दयाला
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाहीं ❀ त्राता अपर दीख कोउ नाहीं
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्हीं ❀ राखिलाज करुणानिधिलीन्हीं
कुरुपति चहत भङ्गमख कीन्हा ❀ कृपासिन्धु सोइ करै न दीन्हा

सो० रही प्रीति उर छाइ, यदुपतिकी करणी समुझि ।
दशा न सो कहिजाइ, जोरिपाणि बिनवत हरिहि ॥

जय राधाबर हलधर सोदर ❀ जयति दयानिधि जयदामोदर
जय जय जय बृन्दावन वासी ❀ लक्ष्मीपति बैकुण्ठ निवासी
निज जन हेत सदा तुम त्राता ❀ मम पति राखिलीन तुम जाता
हलधर सहितजयति जयजोरी ❀ राखेउ लाज दयानिधि मोरी
सुनत बचन कह दीनदयाला ❀ रही तुम्हारि लाज सबकाला
तुम सरीख जे भूतल राजा ❀ नहिं तिनकहँ नृपहोत अकाजा
कह नृपनाथ सुनौ गिरिधारी ❀ एक हृदय मम संशय भारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चैद्य जाहि निजधाम पठावा ❀ रोष मोहिं केहि कारण आवा
बिदुर बुझाइ कह्यउ मम माहीं ❀ तव संतोष भयो मन माहीं
दो० हँसि बोल्यउ यदुबंशमणि, तुमहिं उचित यह भाव।
नीतिधर्म उर बसत है, कस न रोष उर आव॥
जो नृप होत अज्ञ अविचारी ❀ करत न रोष सभय लखिरारी
आवत जहां निमन्त्रण दीन्हे ❀ शत्रु मित्र तहँ उचित न चीन्हे
अनुचित खोरि धरत सबलोगू ❀ समता तासु कहत बधयोगू
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ ❀ अयश विलोकि क्रोध उर भयऊ
तदपि नीच असज्याहि थलपैये ❀ करिय बिनाश बिचार न लैये
कीन क्षमा तुम अस जियजानी ❀ यह बध योग अमङ्गलखानी
सुनि नृपधर्म परम सुखपाये ❀ हलधर कृष्णसमेत नहाये
उद्धव सात्यकि राम सोहाये ❀ प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये
अशन पानकरि सहितसमूहा ❀ मांगी बिदा चले दल जूहा
दो० बहु प्रकार रानीन मिलि, कुन्तीपद शिर नाय।
प्रद्युम्नादि कुमार जे, मांगत सबहि रजाय॥
चढ़े सकल निजनिजरथन, चले निशान बजाय।
पुर बाहरलग धर्मसुत, फिरत भये पहुँचाय॥
गये द्वारकहि जब यदुराई ❀ बैठे सभा धर्मसुत आई
करहिं धर्मसुत राज्य सुखारी ❀ सुखरुख जोगवत बान्धवचारी
अभिमनुआदिबिलोकिकुमारा ❀ लहत मोद मन धर्मभुवारा
यक दिन बाजि चढ़े नरनाथा ❀ सुभट समाज चले बहुसाथा
अश्वारूढ़ बन्धु बरचारी ❀ धाये बन्दी बिरद पुकारी
अभिमनु आदिक साथकुमारा ❀ माहिषमती नगरी पगुधारा
आगे मिल्यउ चैद्यसुत आई ❀ कीन अनेक भांति पहुनाई
अभयबाहँ करि ताहि बसाये ❀ कहिअदण्ड नृप निजपुरआये
धर्मनरेश जानि सब लायक ❀ दण्ड पठाइ देहि नरनायक
दो० यहिविधिविपुल प्रताप नृप, बसत नागपुरमाहिं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबलसिंह लखि जासुगति, धनदशक्र सकुचाहिं॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृतेशिशुपाल वधनयुधिष्ठिरयज्ञकथनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० जनमेजय कह ऋषि कहहु, सकलकथा बिस्तारि।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन, नाथ भई किमि रारि॥

कह ऋषि सुनु नृप गजपुरवासी ❀ कुरु पाण्डव चरित्र सुखरासी
सुनत होइ नर बिनहिं प्रयासा ❀ सिद्धि कामना सुरपुर बासा
आयो देखि धर्म मख जबते ❀ निशि न नींद कुरुनाथहितबते
बन्धु बिभव लखि परम उदासा ❀ यतनबिचारतकेहिबिधिनासा
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई ❀ सुनि जरिजात गात कुरुराई
यकदिन कुरुपतिसचिवबोलाये ❀ शकुनी करण दुशासन आये
पूछत सबही कुरुकुलदीपा ❀ होइ नाश जेहि धर्ममहीपा
कीन्ह सबन मिलियहमतठीका ❀ जोरि समूह समर अब नीका
कीजै सकल बन्धु अब घेरी ❀ चहुँदिशि धर्मज भवन गरेरी

दो० पितहिपूछिअनुचितउचित, तस कीजै तब काज।
उचित मन्त्र शकुनी कह्यो, सबकेमन भलभ्राज॥

करण दुशासन नृप मनमाना ❀ बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना
संजय दीख कि कुरुपति आये ❀ करि सतकार बिबिध बैठाये
मतिदृगचरण धरैं सब शीशा ❀ पावहिं मनभावती अशीशा
शकुनी कह्यो सुनौ महराजा ❀ तुम्हरे सुतहि रोष बड़लाजा
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी ❀ अतिबिस्मयबश रूपबिशेखी
तहँ कछु भूप भयो अपमाना ❀ ताते दुर्योधन दुख माना
होत अवज्ञा गजपुर माहीं ❀ भीम कानि मानत कछु नाहीं
एक राज्य महँ भे दुइ राजा ❀ कीन मन्त्र यह जानि अकाजा
दल बटोरि कीजै रण रीती ❀ लीजै धर्म नरेशहि जीती

दो० बन्धु मित्र अरु पुत्र सब, थल गरेरि करिनास।
देश कोश लीजै सकल, धर्महि यमपुरबास॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि मतिहग शकुनी मुख बानी ❀ बोले बचन देखि बड़ि हानी
मन्त्र तुम्हार हमहिं नहिं भावत ❀ ईश बाम अस बचन कहावत
समर दक्ष जिन के मन ऐसे ❀ जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे
जिन के साथ सदा बनवारी ❀ करि न सकहिं रण शक्रप्रचारी
लरिकाई खेलत नहिं हारे ❀ तासु न बिगरहि बात बिगारे
जीति सकहि को धर्मकुमारा ❀ जहँ जगदीश आपु रखवारा
उनते समर न पैहौ पारा ❀ अबसुतजनियहकरहु बिचारा
धर्मराज अपराध बिहीना ❀ करत तात तुम मन्त्र अलीना

दो० सुनि शकुनीबोलेबहुरि, भूप कही भलि बात।
हारि जीति कीन्हे समर, कुरुपतिजानि न जात॥

शकुनिरुवाच॥

द्यूतकर्म हम निपुणहिं कुरुपति ❀ पंसासार ख्याल अद्भुतगति
कपट अक्ष भावै मन जोई ❀ सुनहु नरेश परइ तब सोई
कपट भेंट पाण्डवन बोलाई ❀ जीति लेब सब अक्ष खेलाई
ऐहै धर्म महीपति आछे ❀ युद्ध जुवा पग धरै न पाछे
देश कोश नृप सकल लगाइहि ❀ जीतिलेब सब रहिनहिं जाइहि
युद्ध किये पाण्डव नहिं हरिहैं ❀ उनकर पक्ष कृष्ण तब धरिहैं
जीते ख्याल न बढ़िहि बिरोधू ❀ कही न कोउ अनुचित करिक्रोधू
भूप हमारि मानि सिख लीजै ❀ अपरबात जनि चित्त धरीजै

दो० कपटभेदकरिपाण्डवन, जीतहु देहु निकारि।
एकछत्र महिभोग बहु, रहइ न कण्टकधारि॥

सुनि कुरुपति मन भयो अनन्दा ❀ जनु चकोर पायो निशि चन्दा
पुनि पुनि शकुनी केरि बड़ाई ❀ करै लाग कुरुपति हर्षाई
भलगुण तात गुप्त करिराख्यउ ❀ ममहितहेत तात सोइ भाख्यउ
नीक लाग मत अन्ध नरेशहि ❀ पुनिपुनि शकुनी कह उपदेशहि
पूछहु तात बिदुर पहँ जाई ❀ परम भक्त गुणनिधि मम भाई
यादवकुल जिमि उद्धव ज्ञानी ❀ तिमि कुरुबंश बिदुर सज्ञानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब गुरुनाथ विदुरगृह आये ❀ शकुनि दुशासन संग सोहाये
देखि बिदुरमन अति अनुरागा ❀ आसन दीन रजायसु मांगा
शकुनी वरणि कहेउ सब साजा ❀ तुमहिं मन्त्र पूछत कुरुराजा

दो० उनकहँदीन्हेउ बिभवबिधि, तुम जनिकरहुखभार।
निज सेवाते कीन बश, केशव जो करतार॥

बिदुरवचन कुरुपतिहि न भाये ❀ तुरत पितामह के गृह आये
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा ❀ देखि गङ्गसुत दीन अशीशा
सत्यव्रत के बैठ समीपा ❀ कही कथा कौरवकुलदीपा

भीष्म उवाच॥

जो तुम सुत पूछहु मम हीका ❀ कहब रहा अस कहब न नीका
नृपमुखवचन चहिय नय लीन्हे ❀ राज्य न रहत ताहि तजि दीन्हे
भल न रिझाउब इन बातनते ❀ जीत न उनके उतपातन ते
जस उनसुभट समर महिजीते ❀ मख कारज कीन्हे मन चीते
असमखयहि कुलकाहुनकीन्हा ❀ जगउठिगयो याचकन चीन्हा
मरेउ न हरि हलधरके मारे ❀ युग करि जरासंध ते फारे
को अस सुभट भयो यहि वंशा ❀ जासु करिय बहुबार प्रशंशा

दो० जेनर मानत जीति निज, हारि मानि तिमि लेत।
बिदितकरहिंजयअजयतजि, तेहियमभलिसिखदेत॥

तुम अब तात रहउ चुपसाधी ❀ जनि कीजै करि यतन उपाधी
यह मत नृप तुम अस ठहरायो ❀ करिसोवत जिमि सिंह जगायो
भीष्मवचनकुरुपतिसुनिलीन्हा ❀ नाहिंन कछु प्रतिउत्तर दीन्हा
उठि पुनि शकुनी सहित नरेशा ❀ बिषसम लाग अमीउपदेशा
कीन्ह द्रोणकहँ दण्डप्रणामा ❀ लहेउ अशीश होइ मनकामा
कहि शकुनी सबहेतु सुनावा ❀ द्रोणद्रोणसुत मनहिं न आवा

द्रोण उवाच॥

भरद्वाज सुत कह सुनु राजा ❀ हम तुम्हार बाञ्छित शुभकाजा
आयसु जासु रमापति करई ❀ तासु पराजय समुझि न परई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करहु न सो दुर्योधन राजा ❀ जेहि पीछे बड़ होइ अकाजा
दो० गुरुमुख बचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात ।
शीश नाइ मांगी बिदा, गये जहांरविजात ॥
आदर बहुत तरणिसुत कीन्हा ❀ रत्न सिंहासन आसन दीन्हा

कर्ण उवाच ॥

कहेउ रजायसु होइ नरेशा ❀ प्रभु आगमन मोहिं अन्देशा
तेहि अवसर कुरुपति रुख पाई ❀ शकुनी विधिवत कथा सुनाई
कह रविसुत नृप सुनु मत मोरा ❀ बोलि लेहु सब भूप किशोरा
मम घट कालनिशा नियराई ❀ कार्त्तिकमास शरद ऋतु पाई
खेलत द्यूत सकल संसारा ❀ तबहिं बोलाइहि पाण्डुकुमारा
लखि नहिं परहि कपट चतुराई ❀ यह सलाह रविसुत मनभाई
दुर्योधन सुनि अतिसुख माना ❀ पुनि पुनि भेंटत करत बखाना
दो० आतुर उठि शकुनीकरण, मगकृतबाकबिलास ।
सबलसिंह कह तब गये, गान्धारी के पास ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते दुर्योधनमन्त्रप्रश्नवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कीन्ह प्रणाम मातुपर भूपति ❀ दै अशीशआसनप्रमुदितअति
कहेउ मनोरथ निज नरनायक ❀ करिय न तात बात बेलायक
दीन्हीं ईश तुमहिं ठकुराई ❀ बैठि रहहु निज भवन चुपाई
सुत जग जन्म सुफल करिलीजै ❀ बन्धु बिरोध कदापि न कीजै
मातु वचन नृप मनहिं न आये ❀ भानुमती गृह आपु सिधाये
शकुनी आदि भवन निज गये ❀ भूप सेज पर शोभित भये
भानुमती ते सकल हेवाला ❀ कहि पूछेव कौरवकुलपाला
जोरि युगल कर कौरव रानी ❀ कहेउ नाथ सुनिये मम बानी
करिय न बन्धु बिरोध बलीते ❀ सजग भये पुनि जाहिं न जीते
दो० नहिं भाये रानी बचन, निजबल कहेउ भुवार ।
होतप्रात आये सभा, हने निशान अपार ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आये कुरुपति निजमखशाला ❀ बैठि चित्रसारी नरपाला
चरबर बहु कुरुनाथ पठाये ❀ बोलि बोलि सब भाइन लाये
आये शकुनी करण दुशासन ❀ करि जुहार बैठे निज आसन
सकल बन्धु आये तिहि तीरा ❀ लषण कुँवर आदिक भैभीरा
नाइ नाइ शिर नृपहि जोहारी ❀ जहँ तहँ सोहतहैं भट भारी
प्रतिपवँरिन दरबानि समाजा ❀ बिपुल बिभव राजत कुरुराजा
पूछेहु सबहिं भरत कुलकेतू ❀ कहि बिस्तार कहेउ सबहेतू
निज निज मन्त्र न राखहु गोई ❀ सब मिलि करहु करब हम सोई
प्रथम मन्त्र जो शकुनि बखाना ❀ ठीक नीक सबके मनमाना

दो० एकछत्र कीजिय धरणि, दै पाण्डव बनबास।
सबन कह्यो मत ठीक यह, कुरुपति हृदय हुलास॥

बिकर्ण उवाच॥

बिकरण कह्यउ जोरि कर दोऊ ❀ नाथ अयशभाजन जनि होऊ
जिन कीन्हेउ बशत्रिभुवननाहा ❀ जगदुर्लभ प्रभु ताकहँ काहा
रंक जासु रमापति राजै ❀ तासुकहियक्यहि भांति पराजै
कौरवनाथ कही अस बानी ❀ सुनु ममबचन बन्धु सज्ञानी
पाण्डव जीति सकै किन कोई ❀ कहहु शेष कीजै बश सोई
जाके शीश धरी सब धरणी ❀ पाण्डव की केतिक है करणी
शेष दिनेश जाहिं किन जीते ❀ बिजय न एक धर्मसुतही ते
सकल कहहिं सो बचन प्रमाना ❀ एक कहहिं कीजै जनिकाना
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई ❀ दुश्शासन बोल्यो शिरनाई

दो० नाथ कीजिये बात यह, सत्य सत्य मत मोर।
मैं अनुचर करिहौं सकल, कुरुपति आयसु तोर॥

बन्धु बचन सुनि नृप सुखपाये ❀ शिल्पकार बहु तुरत बुलाये
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई ❀ देखत जाहि चकित सुरराई
तबलगि रचना रचहु सँवारी ❀ बृतदिवस जब आव दिवारी
सब थवई नरनाह पठाये ❀ अनुचरसाथ बिपुल तिनपाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लोककाष्ठकरसुनिसुनि आवहिं ❀ रचहिं सभानृप आयसु पावहिं
सात मास महँ करि निपुणाई ❀ दीन्ही मनहुं नवीन बनाई
दुर्योधन नृप सभा निहारी ❀ बैठहिं दिनप्रति होहिं सुखारी
सुन्दर मास दमोदर आवा ❀ कालनिशाथल अति नियरावा
शकुनी करणहिं पूछि नरेशा ❀ पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा

दो० कालनिशा जागरण हित, आवहु सबभुवराइ।
द्यूतखेल खेलहु इहां, करहु सभा मम आइ॥

खेलब हम अरु धर्मकुमारा ❀ देखहु आय सकल सरदारा
दुर्योधन कर आयसु पाई ❀ गजपुर सब आये भुवराई
सुखद शिबिर पाये सबकाहू ❀ बहु सतकार करत नरनाहू
कुरुनन्दन तब बिदुर बोलाये ❀ जाहु धर्म पहँ कहि पठवाये
धर्मराज गृह बिदुर सिधाये ❀ तुरग सवार साथ शत धाये
चपल तुरङ्गम बिदुर सँवारा ❀ जात चले पाण्डव दरबारा
बिदुर आगमन सुनि सुख पाये ❀ आगे मिलन धर्मसुत आये
बहुरि सभा लै गयो भुवारा ❀ सादर सिंहासन बैठारा
पुनि पुनि भूप रजायसु मांगत ❀ प्रीति बिलोकि बिदुर अनुरागत

बिदुर उवाच॥

दो० हृदय बिचारत नख लिखत, कौरव की मतिपोच।
हाथी हरहट मदगलित, नाहिंन शील सँकोच॥

सुनहु तात मम आगम काजा ❀ तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा ❀ आये ममगृह बिपुल नरेशा
द्यूतहेतु हम साजि उछाहू ❀ सो तुमहूं आवहु नरनाहू
इहैं कालनिशि जागहु आई ❀ देखहु मम समाज समुदाई
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता ❀ कुरुपति के मन है छल ताता
शकुनीकरणहि सहित दुशासन ❀ चाहततुमकहँ देश निकासन
यहै मनोरथ जीतब यूपा ❀ कहूँ कहेउ यह भेद न भूपा
तुमहिं परमप्रिय जानि सुनावा ❀ करहु भूप जो बनहि बनावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहत भये अस धर्मजराई ❀ सुनहु सचिव भीमादिक भाई
कुरुपति के ईर्षा भै भारी ❀ हमकहँ जीतन कहत हँकारी
दो० युद्ध जुवाँवश होत नहिं, भ्राता करहु बिचार ।
होत तासु जय तात सुनु, जेहि सहायकरतार ॥
यह कुरुपति भलि बात बिचारी ❀ मानत जीति न जानत हारी
विदुर विचारि कहो मोहिं पाहीं ❀ का समुझत कुरुपति मनमाहीं
बोले विदुर कही भलि बाता ❀ हम यह भेद न जानत ताता
कह्यउ भीम मतिभ्रम कुरुराऊ ❀ सो किमि जानहिं भाउ कुभाऊ
चलहु भूप अब करहु तयारी ❀ खेलिय नृप गृह पंसासारी
उन श्रमकरि सब भूप बुलाये ❀ कौतुक देखन ते नृप आये
जो न नरेश चलौ तुम काली ❀ कुरुपति होइ मनोरथ खाली
भीम बचन सबके मन भाये ❀ भूप प्रात गजबाजि सजाये
गये बितान पटल लदि आगे ❀ पटह धेनुमुख बाजन लागे
सो० निकर नगारे बाज, बोले बिरद पयान के ।
गरजि उठे गजराज, हय हींसत घहरात रथ ॥
विदुर समेत चढ़े नृप हाथी ❀ चलत भये भीमादिक साथी
उठे निशान चले नरनायक ❀ धाये विपुल चहूँदिशि पायक
तुरगारूढ़ नगिनि करवालहि ❀ गहिकर घेरिचले नरपालहि
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये ❀ आतुर लषण कुमार पठाये
उलका द्विरद दुशासन साथा ❀ नायो धर्मराज पद माथा
दै अशीश नृप धर्म समोदा ❀ बैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा
मुक्तामाल दीन्ह पहिराई ❀ दिये विविध पकवान मिठाई
कीन्ह बिदा कुरुनाथकुमारा ❀ आप बितान बीच पगु धारा
दो० तेहि अवसर आवत भयो, धर्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालकी, भीतर गईं अवास ॥
लषण समेत विदुर इत आई ❀ सकलकथा कुरुपतिहि सुनाई
कुरुरनिवास सबन सुधिपाई ❀ मिलनद्रुपदतनया कहँआई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि आवत दुर्योधन रानी ❀ चलीं मिलनहित सकल सयानी
तजि नरबाहन सब रनिवासा ❀ मिलीं द्रौपदी सहित हुलासा
करि सबबिधि सबकहँ सतकारा ❀ भांति अनेक भई जेवनारा
कुरुपति बन्धुन की सब नारी ❀ निजनिज भवन गमनकृत भ्कारी
चलन चहेउ दुर्योधन रानी ❀ द्रुपदसुता राखेउ गहि पानी
करन धर्मसुत कै पहुनाई ❀ भूरि बस्तु कुरुनाथ पठाई
अशन पान करि धर्मजराजा ❀ लीन बोलि द्विज साधु समाजा
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैके ❀ बिप्रन सहित सुआसन दैके
द्रुपदसुता अरु पाण्डव रानी ❀ सोहहिं पटल कपाट सयानी
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा ❀ हरिकी कथा रसाल अनूपा

सो० हरिकी कथा रसाल, कहन लगे द्विज बिदुषवर।
सुनत धर्म महिपाल, जहँ तहँ दरवानी खड़े॥

इहां राय दुर्योधन निरयस ❀ सञ्जय ते तब कहतभयो अस
अब तुम जाहु पाण्डुसुत ठांई ❀ भा शकुनीकर मन्त्र सहाई
कहेउ धर्मसुत ते समुझाई ❀ प्रात द्यूत खेलहिं इत आई
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये ❀ आतुर धर्मराय पहँ आये
भूप समीप लीन बैठाई ❀ तब सञ्जय बोलेउ रुख पाई
तुमहिं प्रात कुरुनाथ बोलावा ❀ द्यूतकर्म हित साज बनावा
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी ❀ मिलबप्रात सबकहँ हम आनी
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये ❀ धर्मबचन कुरुपतिहि सुनाये

दो० सुनहु भूप सञ्जय कह्यो, यह कह धर्मज राइ।
स्वजन सहित कुरुपतिहिंमैं, प्रात भेंटिहौं आइ॥
सबलसिंह संजय बचन, सुनि कौरव कुलनाथ।
जात भयो बिश्राम थल, युवती वृन्दन साथ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥३॥

तेहि रात्रीकर भयो बिहाना ❀ पाण्डव गये द्रोण अस्थाना
संग भूमिसुर साधु समाजा ❀ नमत द्रोणपद पाण्डवराजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परत दण्डवत धर्मज चीन्हा ❀ द्रोण उठाइ लाइ उर लीन्हा
पाइ अशीश भेंटि सब भाई ❀ मिले द्रोणनन्दन पुनि आई
पूछी कुशल प्रश्न नृप आछे ❀ तब कुरु कही कुशल सब पाछे
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा ❀ बोले बचन भूप श्रुतिसारा
नाथकुशल सबविधि अनुगामी ❀ तव अशीश मोरे शिर जामी
मांगी बिदा भूप शिरनायो ❀ तुरत पितामह के गृहआयो
परशि चरण नृप द्वौ करजोरा ❀ लखि हरषे मन गङ्गाकिशोरा

भीष्म उवाच ॥

दो० पुत्र युधिष्ठिर भद्र तव, होइसोआशिष दीन्ह ।
करणीकुरुपतिकीसमुझि, सजलनयनकछुकीन्ह॥

बहेउ युगल तनु प्रेमप्रबाहा ❀ आयसु मांगि चले नरनाहा
बुद्धिचक्षु के मन्दिर आये ❀ पितु भ्रातापद शीश नवाये
धरम आगमन सुनि सुख पाये ❀ परमप्रीति मतिदृग उर लाये
परत चरण लखि पांचौ भाई ❀ बरबस भूप लिये उर लाई
रहे भूप तेहि थल धरि चारी ❀ करत प्रीति मतिदृग बैठारी
उठि धर्मज नाये पद शीशा ❀ बिदा कीन नृप दिये अशीशा
चले समाज समेत भुवारा ❀ कुरुपति के मन्दिर पगुधारा
आवत देखि धर्म नरनाथा ❀ उठे भूप भट यूथप साथा
मिलिअनेकविधिकरिसतकारा ❀ कुशल पूछि आसन बैठारा

दो० भेंटि भलीबिधि युगलनृप, बहु आदर बहुभाइ ।
धर्मराय देखेउ बहुरि, रविनन्दन गृह आइ ॥

रविसुत सुनेउ धर्मसुत आये ❀ बिसासेन कहँ तुरत पठाये
आगे मिलत चरणगहि रहेऊ ❀ चिरंजीव अधरम अरि कहेऊ
सुत समेत रविसुत पहँ आये ❀ मिलत परस्पर चषजल छाये
कुशल प्रश्न पूछत मृदुबानी ❀ गये अँगारमती जहँ रानी
धर्महिं देखि रानि सुख भरेऊ ❀ भीमादिक भ्रातन आदरेऊ
लखि सतकार बिपुल सुखपाये ❀ आतुर भूप बिदुरगृह आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिले कृपहिं नृप अतिहिततेरे ❀ आवत भये बहुरि नृपडेरे
खान पान करि पति जगतीके ❀ पुनि सोहैं सिंहासन नीके
रही तँबूरनकी ध्वनि माची ❀ बारबधू बहु बृन्दन नाची
दो० करतहास्य भीमादिसब, लखि अप्सरा ललाम।
यहि प्रकार आनन्दते, बिगत भई निशियाम॥
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❀ लै सँदेश कुरुनाथ पठाये
खेलन अक्ष चलहु नृप आजू ❀ तुमहिं बोलावत कौरवराजू
संजय वचन भूप सुनि लीन्हा ❀ नहिं ताकर प्रति उत्तर दीन्हा
बिप्रबृन्द तेहि अवसर आये ❀ प्रथम भूप उठि शीश नवाये
दीन्हे सबन यथोचित आसन ❀ बहुरि आप बैठे सिंहासन
गायक नर्त्तक बदन दुराई ❀ रहे चुपाइ भूप रुख पाई
वेद ऋचा द्विजबृन्दन गाये ❀ सुनि बश प्रेम सभा मनभाये
गावहिं बिदुष सकल गुण पूरे ❀ बिबिध प्रकार बजाइ तँबूरे
होतहि प्रात कर्म के जाये ❀ गन्धारी गृह आतुर आये
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई ❀ दीन्ह अशीश मातु सुखदाई
सो० दासीबृन्दबिशाल, दीन्हे मञ्च अनेक धरि।
बैठे धर्म नृपाल, सचिवसखा भाइनसहित॥
कनक प्रयंक बिराजत रानी ❀ जनु सोहत कैलास भवानी
उठि नरनाह रजायसु मांगा ❀ बन्दि मातुपद अतिअनुरागा
अति बल कुरुनन्दन के भाई ❀ सबके भवन धर्मसुत जाई
भेंटत सबहि गये दिन चारी ❀ आई कालनिशा भयकारी
दीपक श्राद्ध धर्मसुत कीन्हा ❀ बिपुलद्रव्य महिदेवन दीन्हा
कीन्हेउ श्राद्ध बुद्धिहग एका ❀ धरिदीन्हे मणिदीप अनेका
गजपुर प्रकटि रही उजियारी ❀ भयो बिनाश निशातम भारी
दो० जात भयो ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ।
बिकरण दुश्शासनकरण, सौबल शकुनीसाथ॥
दियो किंकरन डारि गलीचा ❀ अद्भुत बसन परे बिचबीचा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठि गयो कुरुनायक जाई ❀ आवन लगे नृपति समुदाई
बाहुलीक गङ्गासुत आये ❀ भूरिश्रवा बृषसेन सोहाये
युद्धामन्यु अलम्बु उलूका ❀ मगहय बन्धु चतुर अहिमूका
सोमदत्त शशिबिन्दु सुवेशा ❀ सैन्धवपति अरु शल्य नरेशा
आइ गये नृप तीस हजारा ❀ रहत सदा जे कुरु दरबारा
करहिं वकीलाति निजमहि हेतू ❀ अचल करहिं कौरवकुलकेतू
आये सभा वकील घनेरे ❀ जे हित करत नरेशन केरे
कौरवनायक के शत भाई ❀ आये साथ सुभट समुदाई

सो० तेहिअवसर गे आइ, बेतपाणिगण गुणनिपुण ।
दीन सबन बैठाइ, यथा उचितआसनसबन ॥

दो० द्रोण कृपा भीषम करण, आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ ॥

आये बहु मतङ्ग पुर बासी ❀ सचिव महाजन जे गुणरासी
सबहि नरेश कीन्ह सतकारा ❀ आवत देखे द्रोणकुमारा
करि आदर अनेक नरनाहू ❀ कहेउ धर्मसुतपहँ तुम जाहू
बेतपाणि तब खबरि जनावत ❀ सहितसमाज युधिष्ठिर आवत
तब लग धर्मराज पगु धारा ❀ जहँ तहँ नृप बहु करत जोहारा
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ❀ बैठारे करि बिबिध प्रबोधन
अति प्रताप कुन्तीके बालक ❀ सोहत सभा प्रजाप्रतिपालक
तेहि अवसर कुरुपति सुख पाये ❀ पंसासारि दुशासन लाये
दीन्ही धरि अजीतरिपु आगे ❀ करगहि भीम बिलोकन लागे
सो कुरुपति निज हाथ डसाई ❀ लिये धर्मसुत अस उठाई
फरकेउ अशुभ नयन भुज बायें ❀ उर थरहरेउ छींक भइ दायें

सो० दिये धर्मसुत डारि, परेउ न पांसा जो कहेउ ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकेउ कहिनहिं पव परेउ ॥

धर्मराज पांसा महि मारे ❀ बोले बचन नयन रतनारे
खेल हमार अहै कुरुपति ते ❀ शकुनी ते खेलहिं केहिमति ते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहहु कुमन्त्र लागि श्रुतिमाहीं ❀ युद्ध जुवां लायक तुम नाहीं
शकुनी लज्जित निपटसभामा ❀ कुरुपतिहृदय रोषतरु जामा
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा ❀ बिहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा
हम शकुनी कहँ नृप बैठारा ❀ यामें कछु न अकाज तुम्हारा
शकुनी हारहि सो हम देहीं ❀ अङ्गीकार जीति करि लेहीं
हम हारे शकुनी के हारे ❀ बड़िअनुचित नृपज्ञान बिचारे
जो निज हानि भूप तुम जानो ❀ निजकिंकर तुमहूं कोउ आनो

सो० हम खेलब तव साथ, होइ नीच सब भांति जो।
कह्यो बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमौर मम॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी।
हमहिंन ओछिमहीश, मैं खेलब नृपसरसि महँ॥

दो० धर्मराज सन भीम तब, कहन लगे कर जोरि।
छल है जुवां न खेलिये, सुनिये बिनती मोरि॥

चलि नरेश कीजै निज राजू ❀ शकुनी ते खेलिय केहि काजू
अतिहित भीमसेन कै बानी ❀ युगल बन्धु पारथ मनमानी
बरजत सकल धर्ममहराजहि ❀ भीष्मादिकसबसहितसमाजहि
जनि पांसा अब धर्मचलावहि ❀ बामबिधाता कछु नहिं भावहि
होनहार को सकत मिटाई ❀ बोले धर्मराज सुनु भाई
जो यह बोलत कुरुपति बाता ❀ छलबिहीन लागत मोहिंताता
क्षत्री धर्म कांछ हम कांछे ❀ युद्ध जुवां रण परइ न पाछे
यकदिशि कालप्रचारहि जबहूं ❀ क्षत्रिधर्म धरि मुरिय न तबहूं
त्यहिमा फिरि आपुसिकर बीचू ❀ पाछे पांव धरै सो नीचू

दो० अस कहि धर्म नरेश तब, पांसालीन उठाय।
दशा संकटा कठिन है, निपट रही नियराय॥

मन्द बर्षपति गतबल भयऊ ❀ रबि कुदृष्टि मूरतिथल गयऊ
सबग्रह अशुभपरे थलही थल ❀ बर्षप बर्ष त्रयोदश निर्बल
कहहिंविदुषजन नृपहिं शुरिष्टा ❀ महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जबअसवचनसुनहिंकुरुनायक ❀ लागहिंहृदय कठिनजनुशायक
भावीवश नृप मनहिं न भाये ❀ भाषि दावँ निज अक्ष चलाये
पुनि शकुनी कर लीन उठाई ❀ कहेउ करण कुरुपति रुखपाई
धर्मज बृथा न बड़ श्रम कीजै ❀ पाँसा में कछु होढ़ बदीजै
काढ़ि कण्ठते गजमणिमाला ❀ सो धरिदीन धर्म महिपाला
हरितमालमणि कुरुपति राखी ❀ पाँसा चलन लगे बल भाखी
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ❀ कहतपरतसोइ बिनहिं बिचारे
होत जीत कुरुनायक केरी ❀ हारे धर्मज वस्तु घनेरी

दो० ताहीसमय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दिवान ।
आयोआयसुमानिसोइ, परम प्रपञ्चनिधान ॥

हारि जीति जो होइ हमारी ❀ सो तुम सकल लिख्यो सम्भारी
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई ❀ लागेउ करन शूद्रपति सोई
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा ❀ जीति लिये मुक्तामणि हीरा
मोती रतन जवाहिर जेता ❀ मूंगा कञ्चन कोश समेता
शकुनी कपट अक्षबल जीते ❀ चितभ्रम धर्मज भे सुखबीते
जीतिवस्तु धर्मज गृह राखी ❀ बोलहिं बिकलभूमिपतिसाखी
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये ❀ जीति देखि कुरुगण सुखपाये
परहिं न धर्मराज के पांसे ❀ चकित लोग सब देखि तमासे
आदि बरादिलोह अरु चांदी ❀ रहेउ न शेष ताम्र कोशादी
द्रव्य जो होति धातुसंपुट दोई ❀ रहेउ न धर्मराज गृह कोई

दो० शकुनी अक्षसँभारिकै, फिरि लीन्हेउ निजहाथ ।
कपट भेदमहँ दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे ❀ क्षणमहँ सकल धर्मसुत हारे
तरकस कवच धनुष दस्ताना ❀ चर्म त्रिशूल कटार कृपाना
शक्ति कराल अस्त्र सबचीन्हे ❀ पृथक पृथक धरिधर्मज दीन्हे
तजे अक्ष शकुनी छलकारी ❀ यहि बिधि गये धर्मसुत हारी
बाढ़ेउ रोष धर्मसुत अङ्गा ❀ धरेउ सकल दल नृप चतुरङ्गा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब शकुनी छल अक्ष चलाये ❀ कोरे कागज जीति लिखाये
धरेउ धर्म महिषी गज गाई ❀ जीते शकुनी अक्ष चलाई
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी ❀ कानन नर बानर चित्तादी
पक्षी बहु बिचित्र बहु भांती ❀ रङ्ग रङ्गके अगणित जाती
कनक पींजरा सोहहिं पांती ❀ लखि शोभा भारती भुलाती

दो० नृपत्रायसु अनुचर सकल, सेवहिं खगमृगवृन्द ।
प्रथम नाम कहि धर्मसुत, धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारैं ❀ धर्म हारि सब लोग पुकारैं
बाहन रथ शिबिका सुखपाला ❀ ऊँट महिष अरु शकट बिशाला
यक यक भिन्न भिन्न धरिदीन्हे ❀ शकुनी जीति कपटबल लीन्हे
धरेउ नरेश तुरंगम सामा ❀ कहेउ पृथक शाला प्रतिनामा
यहि प्रकार धरि धर्मज बाजी ❀ हारे सकल तुरंगम ताजी
लखि आपन सबभांति बनाऊ ❀ रोम रोम हरषे कुरुराऊ
धर्मज नयन बाम भुज फरके ❀ भयबश अङ्ग धकाधक धरके
रहेउ न चेत भयो मतिभङ्गा ❀ धरेउ धर्मसुत यूथ मतङ्गा
देश देश जहँ मत्त समाजा ❀ धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा

दो० पांसा शकुनी पाणि गहि, देत भूमि जब डारि ।
करत कुलाहल लोगसब, निज निज दावँ पुकारि॥

हारे धर्मराज गज सर्बा ❀ शकुनी अक्ष लेइ सह गर्बा
रहत सदा जे भूपति सङ्गा ❀ शेष रहे ते सकल मतङ्गा
पृथक पृथक कहि भूपति नामा ❀ धरेउ नरेश जिनहिं बिधिबामा
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ❀ भइ शिरहारि धर्मसुत केरे
चकित लोग सब देखि तमासा ❀ कहैं न परत धर्मसुत पांसा
पुनि पुनि परत दावँ कुरुपतिको ❀ को जानै परमेश्वर गतिको
सुनिकर सरुष धर्मसुतपाहीं ❀ बाहुलीक आदिक पछिताहीं
शकुनी पाण्डवसुतहि प्रचारा ❀ लीन जीति भाजन भण्डारा
कञ्चनआदि जड़ितमणिभाजन ❀ हारे सकल धर्ममहराजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो० बसन कोश गे हारि, रङ्गरङ्गके अतिसुभग ।
दीन्हे पांसा डारि, शकुनी सांचे कपटके ॥
दो० देश देशके पाण्डवन, देत भूप अवनीश ।
सकलपत्रधरि दावँपर, दीन्हेउ धर्म महीश ॥
शकुनी पाँसा तमकि चलाये ❀ कुरुपतिजयतिनिशान दिवाये
बोलि लिये तब धावन चारी ❀ द्विरद दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी
कहेउ कि हम जीते नृपभारी ❀ जे नहिं मानत आनि हमारी
एक बिहीन धर्म महिपालहि ❀ जे न डरत सपनेहुं रणकालहि
ते अब सहज जीति हम पाये ❀ बिन प्रयास बिधि ताप बुझाये
पठवहु बोलि सकल नरनाहू ❀ आवहिं नहिं सेना सजि जाहू
देहिं दण्ड नत आनहु बाँधी ❀ देश देश प्रति करहु उपाधी
दण्ड चतुरगुण दशगुण लेहू ❀ मिलहिं न तेहिं मम शासन देहू
दुर्योधन कर आयसु पाये ❀ निजनिजकारज्जसकल सिधाये
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये ❀ देश देश लिखि पत्र पठाये
दो० मिलहु आइ आतुर निपट, त्यागिसकलसन्देह ।
देहु दण्ड कुरु भूपतिहि, नत जैहौ यमगेह ॥
जहँ कहुँ वीर धीर नृपजाना ❀ साजि विकटदल कीन पयाना
जिनते वैर भाव अधिकाई ❀ करि उपाय तहँ करैं लराई
सपनेहु पाण्डुसुवन बल पाई ❀ कीन अवज्ञा जेहि सुधि आई
करहिं उपाधि तासु स[illegible]नाना ❀ जेहि बिधिहोय तासु अपमाना
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं ❀ लखि बलहीन त्यागि तब देहीं
काहुहि बाँधि लेहिं करि सङ्गा ❀ काहुहि करहिं समरमहँ भङ्गा
यह कुरुपतिअतिशयसुखपावैं ❀ दुर्दशानहिं बहोरि बुलावा
तात सजहु तुम दल चतुरङ्गा ❀ लेहु धीर भट यूथप सङ्गा
महिषमती नगरी कहँ जाई ❀ [illegible]रिआनहु निशिचर समुदाई
जहँ शिशुपालसुवन विख्याता ❀ [illegible] दण्ड बिनु शत्रु अजाता
दो० दण्ड बांधि लीजै उचित, कीजै अवशि पयान ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सजि दल दुर्दर्शन चले, बाजन लगे निशान ॥
देखि युधिष्ठिर अति दुखपावा ❀ दुर्योधन ते बचन सुनावा
नीति नरेशन के असि होई ❀ जो जस दण्ड उचित सो देई
हम अदण्डकृतसुतशिशुपाला ❀ तुम पठये दल अतिबिकराला
जो ह्वै है महि दीन हमारी ❀ तुम ते ना पाई भिखियारी
मखमहँ गयो तासु पितु मारा ❀ किये दण्ड बिनु युगलकुमारा
तुमहिं उचितहै तब मतिवन्ता ❀ लेहु दण्ड जनि बर्ष प्रयन्ता
यह प्रतिपालहु बात हमारी ❀ मनभावहि तस करहु अगारी
तुमहिं नरेश उचित यह बाता ❀ बार बार कह शत्रु अजाता
सो० धर्म्मराज के बैन, सुनि बोले कुरुनाथ तब ।
हमैं उचित यह हैन, करिय दण्ड बिन चैद्यसुत ॥
अवनी प्रति अदण्ड करि देहीं ❀ हम तजि राज्य कमण्डलु लेहीं
तव मुख कहत बनत यह बाता ❀ अपर न काहुहि सुनत सोहाता
धर्मराज सुनि कुरुपति बानी ❀ गे जरिगात तेज बल हानी
भीमसेन फरके भुज दण्डा ❀ अधर फरहरत रोष प्रचण्डा
पारथ भयो बिलोचन लाला ❀ लखि आनर्थक धर्मभुवाला
नाहिं न समय रोष कर भ्राता ❀ किमि समुझै मूरख अज्ञाता
परम सुजान चतुर जे बीरा ❀ समय बिचारि धरैं मन धीरा
जाहि अभय हम दीन बसाई ❀ अब तापर दारुण भय आई
सकल हारि कर मोहिं न शोचू ❀ जस य[illegible] परेउ परम संकोचू
सो० निजनयननलखिमोहिं, होत दुसहदुखनिपटलखि।
तात न तेहि बिधि सोहिं, समयजानि धीरज धरहु॥
शपथ हमारि हजार, अ[illegible]यसुबिनजनिकरियय ह।
त्यागहु सकल बिचार, तात भये अपमान कर॥
तब बोले सहदेव सभा[illegible] ❀ का देखौ देखिहौ अब आगे
अबते भूप ख्याल तजि दीजै ❀ रण्त प्राण भवन मग लीजै
नन दुर्योधन नृप अति नीचू ❀ मारहि सबहि बुलाय कुमीचू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहिं सहदेव बचन मन भाये ❀ धर्मराज कर अक्ष उठाये
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता ❀ चारि याम यामिनि रहि जाता
याम सपाद दिवस चढ़िजाई ❀ अब अवसर नृप चलिय नहाई
भीमबचन सुनि कह कुरुराजा ❀ शकुनी ते भागे बड़ि लाजा
प्रथम हीनकरि चहत न खेले ❀ तासु संग बड़ि हास पछेले
कुन्तीसुत सुनि अति दुखपाये ❀ राखि दावँ बड़ अक्ष चलाये

सो० परे न धर्मज अक्ष, शकुनी लीन उठाय कर ।
कपट भेद महँ दक्ष, पुनि पाँसा फेंको चहत ॥

दो० धर्मराज निजराज्य सब, धरि दीन्हे यकदाय ।
जीतिलीन्हशकुनीसकल, बिनश्रमकपटउपाय॥

सो० धरन लगे नर देव, राज्यसकलचित भ्रमबसी ।
कहि दीन्हेउ सहदेव, चारि बरण ब्राह्मण बिना ॥

ब्राह्मण कहहु जाहिं किमि हारे ❀ सब प्रकार प्रिय मोर हमारे
लखि सहदेव केरि चतुराई ❀ बिहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई
राज्य जीति कुरुनायक लीन्ही ❀ गह गह जयति दुन्दुभी दीन्ही
कपट वितान शेष जे रहेऊ ❀ सो धरि बहुरि धर्मसुत कहेऊ
सहित समाज धरे सहदेऊ ❀ शकुनी जीते छल बल तेऊ
देश कोश समेत धरि दीन्हा ❀ नकुल जीति कुरुनायक लीन्हा
पारथ धरेउ सहित सब सामा ❀ हय गज वसन कोश धन ग्रामा
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ❀ परमानन्द निशान दिवाये
धरेउ दांव नहिं रहेउ सँभारा ❀ हारे भूप सकल परिवारा
बहुरि भूप युत सहन भँडारा ❀ हारे भीम सहित परिवारा
हारि गये कुरुनायक जी ❀ गयो रङ्क पद भागि महीते
दीन्हे द्विजन याचकन दाना ❀ हय गज भूमि रतन मणि नाना
गजपुर रहेउ न रङ्क अभागी ❀ रहेउ केवल धर्म धुरन्धर त्यागी

दो० चितभ्रमचकितअजातअरि, धरिशरीरनिजदीन्ह।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नहिंबिचारकछुकीन्ह॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दीन्हे शकुनी अक्ष उलारी ❀ किंकर भये धर्मसुत हारी
छूटि राज्य पद दास कहाये ❀ भये अचेत रहे शिर नाये
पुनि पुनि शकुनी कहेउ नृपाहीं ❀ जो कछु शेष रहा गृह माहीं
उठत ख्याल अब सो धरिदीजै ❀ पाछे पगधरि अयश न लीजै
धर्मसुतहिं कुरुनाथ प्रचारा ❀ गूढ़ गिरा कहि बारहिं बारा
तुम नृप विदित सत्यव्रतधारी ❀ परहिं न पद ये कर्म पछारी
अटपटि कुरुनन्दन कै बानी ❀ समुझि न परी तर्कछलसानी
उर बरि उठी रोष दुखज्वाला ❀ धरेउ भूप तनया पञ्चाला
बान्धवप्रियजनअतिदुखभरेऊ ❀ मानहुँ अन्ध महानद परेऊ

सो० शकुनी सबन पुकारि, साखी करि नरनाह बहु।
दीन्हेउ पाँसा डारि, हारिगये नृप धर्मसुत॥
लखि अनरथकी बात, भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सब गात, मानहुँ बिनु मारे मरे॥

धर्मराज तन सुधि बिसराये ❀ करते उठत न अक्ष उठाये
भयो शोकबश धर्म भुवारा ❀ मनहुँ कमलबन परेउ तुषारा
भीषम बिदुर निपट दुखपावा ❀ द्रोण कृपा महिशीश नवावा
बाह्लीक उर दुख अधिकाई ❀ गये सभा तजि गृह अकुलाई
मन बिस्मय बासि द्रोणकुमारा ❀ काधौं कीन चहत करतारा
सचिव महाजन गजपुरबासी ❀ बिलपत विकलपरी जनुफांसी
समुझिसमुझिकुरुनाथसुभाऊ ❀ होत हृदय नहिं धीरज काऊ
रविसुत शकुनी उर आनन्दा ❀ मनहु उदधि लखि पूरणचन्दा

दो० दुश्शासन आदिक अनुज, सकल प्रफुल्लितगात।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात॥

हीर चीर गज बाजि लुटाये ❀ द्विजन दान नानाबिधि पाये
भे याचकगण सकल अयाची ❀ बिजय नगारे की धुनि माची
जीती कुरुपति पाण्डव हारी ❀ कहेउ धर्मसुत ते यह बानी
अनुचर भयो समेत समाजा ❀ करहु मानि मम आयसु काजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई ❀ माथे मानि करब हम सोई
रूख बदन करि कह कुरुराई ❀ द्रुपदसुता अब देहु मँगाई
सदसि बीचसुनि निर्भय बानी ❀ रोषज्वाल सुनि उर सरसानी
धरि धीरज रिस सो उरमारी ❀ मूर्च्छिपरेउ नृप अवनि दुखारी
रह्यउ न चेत कह्यउ कछु नाहीं ❀ अटकिरहेउ मणि खम्भन माहीं

दो० सबलसिंह धर्मजदशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि, परम रोष सरसान ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेदुर्योधनधर्मपराजय
द्यूतवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० सुनिये नृप निज बंश के, पुनि चरित्र सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामी प्रात बुलाय ॥

सूत प्रात कामी ज्यहि नामा ❀ करत सदा कौरवपति कामा
अतिगम्भीरवचन नृप कह्यऊ ❀ धर्मराज महराज न रह्यऊ
भये आजुते दास हमारे ❀ सब परिवार द्रौपदी हारे
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई ❀ द्रुपदसुता तुम आनहु जाई
ल्यावहु सभा द्रुपद की जाता ❀ तुम सब विधि प्रपञ्चमगज्ञाता
कह्यउ संदेश गये पति हारी ❀ अब तुम सेवहु सेज हमारी
सुनत प्रात कामी उठि धावा ❀ आतुर धर्म शिबिर कहँ आवा
दुर्योधन कर सकल संदेशा ❀ कह्यउ शीलतजि सकल भदेशा
चलहु सभा बोलत कुरु नाथा ❀ नतु धरि लैजैहैं निजहाथा

सो० सुनत सूत मुखबैन, भयबश कांपी द्रौपदी ।
विकल भये सबगात, कौरवनाथसुभावलखि ॥

धरि धीरज कह द्रुपदकुमारी ❀ सुनहु सूतपति बात हमारी
कस यह बचन कहा कुरुराई ❀ नृपसभा त्रिय केहिबिधि जाई
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं ❀ धोखे लैजाहुँ सभा महँ तोहीं
सुनत निठुरसारथिमुखबानी ❀ अति सरोष दुर्योधन रानी
कहेउ सूत ते बचन रिसाई ❀ जानि पूत तुम्हरे शिर आई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भूले कहे भूल कहि तेरे ❀ गये बिसरि भुज पाण्डव केरे
समुझि परत यह हेतु बिशेखा ❀ चहत नयन तव यमपुर देखा
बोलेउ सूत सुनहु महरानी ❀ आयउँ मैं नृप आयसु मानी
बचन तुम्हार शीशधरि जैहौं ❀ दोष न मैं कुरुपति पहँ पैहौं

दो० सुनत सारथी के बचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी बदन, गयो भागि भयपाय॥

कहि सन्देश सकल तेहि दीन्हा ❀ सुनि कुरुनाथ क्रोध अति कीन्हा
दुश्शासनहिं बुलाय नरेशा ❀ कहेउ सरोष सूत सन्देशा
पुनिपुनि कहत रोषदारुण अति ❀ केश पाणि धरि ल्याव घसीटति
यह शठ पाण्डुसुवन भय पाई ❀ सक्यउ न मूढ़ द्रौपदी ल्याई
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ❀ अजहूं गह्वर कहत न बाता
सबते प्रिय निज जीवन जानी ❀ सकल मूढ़ नहिं धीरज आनी
चलेउ दुशासन आयसु मानी ❀ आयउ द्रुपदसुता जहँ रानी
आवत सरुष दुशासन देखी ❀ पाञ्चाली भय ग्रसित बिशेखी
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई ❀ चलु बोलत दुर्योधन राई

दो० दुश्शासन के बचन सुनि, द्रुपदसुता अकुलानि।
हमरे तुम सहदेव सम, कहत जोरि युगपानि॥

तात नीति मग देखु बिचारी ❀ कैसे जाय सभा महँ नारी
जबलगि हमशिरतेन अन्हाहीं ❀ पूरुषमुख देखन कहँ नाहीं
मैं रज स्रवत एक पट धारी ❀ सभा मध्य पति जाय तुम्हारी
तात चलै कर अवसर नाहीं ❀ नतु जातिउँ मैं कुरुपति पाहीं
भीष्मादिक क्षत्री बहु राजा ❀ जुरत सभामहँ त्रियकहँ लाजा
तात एकान्त बोलि कुरुराई ❀ मैं सब बिधि कहतिउँ समुझाई
मम दिशि ते समुझाइ नरेशा ❀ कहेउ तात अतिभल संदेशा
दुश्शासन तब नैन तरेरे ❀ सुनु री हारि गये पति तेरे
कस न बिचार कीन तिन गूढ़ा ❀ म्वहिं समुझावति जिमि मैं मूढ़ा

दो० चलतिन तैं त्रिय सदासिकहँ, करति उतर प्रतिगात।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जोरि युगलकर द्रौपदी, कहति बिकल अतिबात॥

सुनहु तात तुम नीतिनिधाना ❋ सो मग नहिं तुम जो नहिं जाना
तुमकहँ तात शपथ शत मोरी ❋ कह्यउ तात नहिं राखेउ चोरी
कहहु सत्य तजि जीवन पापू ❋ हारे नृप मोहिं प्रथम कि आपू
हारे होहिं प्रथम निज रूपा ❋ किंकर भये मिट्यउ पद भूपा
दासन के गृह होइँ न रानी ❋ नीति बिचारि समुझु मम बानी
छूटि गये सब नात हमारे ❋ नृप हारे हम जाहिं न हारे
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा ❋ त्यागि लाज चलिहौं तव साथा
ह्वै किंकरी करौं सब काजू ❋ जो कहिहैं कौरवशिरताजू
बेगि समुझि प्रति उत्तर दीजै ❋ आयसु होय अवशि सोइ कीजै

दो० सुनि दुश्शासन बचन अस, धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति, नीति बिचारति चेरि॥

सो० कहत कटुक दुर्बाद, रोष भरा धावत भयो।
देखि जाय मर्याद, भयबश भागी द्रौपदी॥

जात पुकारत आरत बानी ❋ देखि दुशासन अति रिस मानी
झपटि केश लीन्हेउ गहि हाथा ❋ चलेउ घसीटत जहँ कुरुनाथा
देखि दशा दासिन के वृन्दा ❋ करहिं बिलाप बिपति परिफन्दा
दुर्योधन कर सब रनिवासू ❋ बिलपत गिरत नयनमग आंसू
परी धर्मसुत शिबिर तरापा ❋ गजपुर सकल शोकबश कांपा
गहे दुशासन द्रौपदि बारा ❋ निकसत नाग नगर गलियारा
देखि दशा बिलपहिं पुरबासी ❋ जड़ जंगम खग मृग नृप दासी
जेहिमगनिकसत अन्धकुमारा ❋ देखि बज्र उर जात दरारा
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं ❋ होत शोर जेहि मारग माहीं

दो० देखि झरोखन महल ते, दासी वृन्द हवाल।
जाय जाय रनिवासप्रति बिदित कीन्ह ततकाल॥

सुनिअसिगतिकौरवगणरानी ❋ बिलपहिं सकल हृदय हति पानी
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी ❋ करुण भवन भवन प्रति घेरी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नांघत पँवरि पँवरि प्रति जाता ❀ द्रुपदसुता परबश बिलखाता
मोहिं छुड़ाव मातु गन्धारी ❀ बार बार कह द्रुपदकुमारी
भीतर दासिन खबरि जनाई ❀ तजि पर्यंक जननि उठि धाई

गान्धारीउवाच ॥

हा पुत्री हा धर्मज प्यारी ❀ बलि बलि जाय मातु गन्धारी
छूटे केश उघरि गयो चीरा ❀ बिलपति दासीगण सँग भीरा
आवत जानि मातु गन्धारी ❀ गयो दुशासन बेगि अगारी
जब लगि रानि द्वार पग दयऊ ❀ राजसभा दुश्शासन गयऊ
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी ❀ करत मूढ़ कोउ तर्क बिशेखी

सो० करत दया कोउ धीर, कोउधिक कह दुश्शासनहिं।
तजतनयनकोउ नीर, कोउ निन्दत भीमादिकन॥
द्रुपदसुता के केश, गहिखैंचतकुरुपतिअनुज।
बैठे सकल नरेश, मध्य सभा तहँ लैगयउ ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई ❀ जाय समीप दीन ठढ़ियाई
चहुँदिशि चकित चितै पांचाली ❀ राजसभा लखि थरथर हाली
लज्जाबश नहिं रहेउ सँभारा ❀ स्रवत नयनमग ते जलधारा
अतिसुन्दरि लखि द्रुपदकिशोरी ❀ कामिन केरि भई मति भोरी
कहहिं जासु गृह द्रुपद कि कन्या ❀ धन्यधन्य पाण्डवपति धन्या
पुनि पुनि दुश्शासनहिं सराहीं ❀ है बड़िभाग्य गही जेहि बाहीं
धन्य आजु दुर्योधन राई ❀ आयसु जासु मानि धरि आई
लोचनलाभ हमहिं जेहि दीन्हा ❀ सुफल जगतमहँ जीवन कीन्हा
धर्मदशालखि कोउ दुखपावहिं ❀ कोउ पछिताइ शीशमहिनावहिं

दो० दुश्शासन कह द्रौपदी, का रोवत बेकाज।
होत न आये सदसि तहँ, चेरिन को बड़ि लाज॥

भीषम बिदुर नाव महिं शीशा ❀ द्रोण कृपा उर शोच सरीशा
सकल धर्मशीलन दुख पावा ❀ नीचन के उर आनँद छावा
शकुनी करण अनन्द समीछे ❀ दुर्योधन करि नयन तिरीछे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुश्शासन ते कहेउ प्रचारी ❀ बसनहीन करु द्रुपदकुमारी
लै बैठारि देहि मम जानू ❀ बान्धव बेगि कहा मम मानू
उठे दुशासन आयसु मानी ❀ बिकरण कहत जोरियुग पानी
तव मुख बचन न सोहत ऐसे ❀ कुरुकुलतिलक कहत तुम जैसे
बृद्ध द्रोण गुरु भीषम आगे ❀ तुम नृप कहत लाज भय त्यागे
देश देश के भूपति राजत ❀ तुम दुर्बचन कहत नहिं लाजत
ज्येष्ठ बन्धु कै जो त्रिय होई ❀ मातु समान कहत श्रुति सोई

दो० क्षण मा तासु उतारि पति, तुम डारी कुरुराज ।
अब अस कहत कि जो सुने, होत नीचउर लाज ॥

पूरण शशिमहँ कीरति तोरी ❀ जानि महीश डारहु करि थोरी
मानि बिनय मम प्रभु अनुरागी ❀ देहु द्रुपदतनया अब त्यागी
धर्मराज सँग बिन अपराधू ❀ कीन नाथ तुम कर्म असाधू
बिकरण बचन धर्म नय साने ❀ सुनि सरोष रबिनन्द रिसाने

कर्णउवाच ॥

सुनु बिकर्ण तव तन शिशुताई ❀ बृद्ध बचन नहिं शोभा पाई
छोटे बदन कहेउ बड़ि बाता ❀ सुनि किमि सकै महिप गुरुज्ञाता
है यह सभा सकल गुणखानी ❀ तुम निजजानि अधिक सज्ञानी
गाल फुलाय बचन कहि दीन्हा ❀ चाहत है सबका लघु कीन्हा
बयस न भूपन देख मत योगू ❀ जानत तुम न हँसत सब लोगू

दो० खेलहु सबहिं लखि बालकन, जाय शरासन बान ।
सीख देउ जनि भूपतिहि, हौ तुम शिशु अज्ञान ॥

बालक इव गृह भोजन कीजू ❀ निजमन अहमिति नेक न धरहू
दुर्योधन आयसु शिर धरहू ❀ गृहकारज सब सादर करहू
कह बिकर्ण नृप सुनु मत जीको ❀ अब नहिं होनहार कछु नीको
जस नृप तस मन्त्री बुधवाना ❀ अस कहि गृह निज कीन्ह पयाना
बहुरि सकोप कहत कुरुराजा ❀ द्रुपदसुता मम देख समाजा
नयन हीन सब सूझत नाहीं ❀ बोलेउ तोहिं सभा महँ ताहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है यह सभा अन्ध नृप केरी ❀ केहि प्रकार सूझै री चेरी
हैं हम सुवन अन्ध नृपती के ❀ भीमसहित तुम जानत नीके
अन्ध तुम्हैं किमि देखै कोऊ ❀ देखहु सबहि भीम तुम दोऊ
दो० देखन हित अन्धी सभा, तुमकहँलीन्हबुलाय।
कीन्हेउममअपमानजिमि, तुम अपने गृह पाय॥
अब द्रौपदी बसन निज त्यागू ❀ बैठि जांघ मम करु अनुरागू
अन्धी सभा न देखै कोई ❀ जानब गति हमहीं तुम दोई
आये चतुर पाँच पति तेरे ❀ भे बिन नयन सभा मिलि मेरे
सूझत तुम समेत बहु भीमहिं ❀ करहिं न रोष वृकोदर जीमहिं
बहुरि बिलोकि दुशासनओरा ❀ मानत तैं नहिं आयसु मोरा
बेगि द्रुपदतनया नँगियाई ❀ लै मम जानु देहु बैठाई
भूपबचन सुनि भीम कराला ❀ निकसत रोमरोम प्रति ज्वाला
लपट नयनमगप्रकट बिलोकी ❀ लीन गदा रिस रहत न रोकी
बान्धव सकल भीम रुख पाई ❀ भये सरोष सुभट समुदाई
पारथ पाणिगही असि मूठी ❀ कह नृप होति सत्य मम झूठी
सो० धर्मजबदन निहारि, बिकलसकलरिस मारि उर।
दीन गदामहिडारि, भीम बिकल पारथ असिहि॥
रहे पाण्डुसुत सब शिरनाई ❀ बारिज नयन बारि सरसाई
चलेउ दुशासन रोष रिसाता ❀ कह कुरुपति बिदुरअसिबाता
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ पीछे अम्बर हरण करीजै
प्रथम कथा शुभ सुनहु नरेशा ❀ अग्निशर्म ब्राह्मण यक देशा
राक्षस यक प्रहर्ष अति भारी ❀ कीन युगल मिलि मित्राचारी
यक यक पुत्र दुहुन के होई ❀ निर्भय सकल भांति भय सोई
गये काल भे युगल सयाने ❀ मित्राचार परस्पर माने
गये अहेर दोऊ यकदाई ❀ फिरत विपिन कन्या यक पाई
दो० राक्षससुत तो यह कही, कन्या को हम लेह।
बिप्र कहै दे मित्र मोहिं, परी दुहुन अवरेह॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

युगल परस्पर शोर मचावा ❀ पुनि यह मन्त्र ठीक ठहरावा
जाकहँ चाहै अब यह कन्या ❀ पावै सो यह त्रिभुवन धन्या
झगरत गे कन्या के पासा ❀ करहु दया जापर बिश्वासा
जासु हृदय डारहु जयमाला ❀ पावै सोइ कहु बचन रसाला
कन्या कहेउ सुनौ मतिवन्ता ❀ जो सरिष्ट सोई मम कन्ता
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना ❀ कह द्विज मैं सब बिधि सज्ञाना
झगरत अग्निशर्म पहँ आये ❀ कहेउ बाद निजपद शिरनाये
दुइमा को सरिष्ट को नामी ❀ भाषहु सत्य बचन तुम स्वामी

दो० पुनि पुनि बिनती करतहौं, कहिये करुणाऐन ।
मित्र पुत्र निज पुत्र ते, तब बोले द्विज बैन ॥

हमते बाद बिनाश न होऊ ❀ जाउ प्रहर्ष तीर तुम दोऊ
चले बिवाद करत स्वर ऊंचे ❀ तुरत जाय तेहि भवन पहूंचे
तब प्रहर्ष पूछत मन लाई ❀ का झगरत हौ तुम दोउ भाई
तब वे कहनलगे निज स्वारथ ❀ ज्यहि प्रकार जस भयो यथारथ
तुम प्रहर्ष करि कहौ बिचारा ❀ दुइमा कौन सरिष्ट कुमारा
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ ❀ तब बिचारि दूनौंसन कहेऊ
कश्यप ऋषिहि पूछि मैं आवों ❀ वेगि यथारथ तुम्हैं सुनावों
उठि प्रहर्ष ऋषि के गृह जाई ❀ कीन प्रणाम चरण शिरनाई

दो० कीन्ह क्षिति करजोरि कर, बैठेउ आयसु पाय ।
ऋषि पूछेउ आये कहां, कहिये राक्षसराय ॥

ऋषे बचन सुनि प्रीति समेता ❀ लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा ❀ कीन विपिन महँ झगराझोरा
झगरत आये दौ मम भवन हैं ❀ कौन सरिष्ट कहौ हम गवनहिं
कह कश्यप सुनु राक्षस राऊ ❀ झूंठ बचन तुम कहेउ न काऊ
जो सुत होय तुम्हार सरिष्ठा ❀ तौ अब सत्य कहौ मति निष्ठा
होय श्रेष्ठ जो बिप्र कुमारा ❀ कहेउ असत्य न त्यागि बिचारा
कहे असत्य अधोगति जाई ❀ लक्ष वर्ष सो नरक रहाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसे थल यह उचित न ताता ❋ भूलि असत्य कहेउ जनि बाता
दो० कश्यपऋषिहि प्रणामकरि, राक्षस निजघर जाय।
दुनहुन के आगे बचन, कहनलागसमुझाय॥
कह राक्षस सुनु ब्राह्मणपूता ❋ तव पितु हमते सरस बहूता
मातु तोरि है बड़ी सयानी ❋ हमरे सुततें तुम बड़ज्ञानी
सत्य कहा राक्षस जिउबधिका ❋ दुइसै बर्ष आयु में अधिका
अन्त न कण्ठ परी यम फांसी ❋ भा कमलापति नगरनिवासी
सत्य असत्य केर अस बीचू ❋ होत कृषी जस सींच असींचू
बीचु अनीति नीति कर भारी ❋ जनु रजनी अँधियारि उज्यारी
कहीबिदुर नृप नीकि न रचना ❋ जनि बोलहु अधर्म अस बचना
नागफांस कर नहिं अन्देशा ❋ जो तुम करत अधर्म नरेशा
सुनिअसबचनबिदुरदिशि ताको ❋ भृकुटिकीन कुरुपति रिस बांकी
दो० भृकुटिभङ्गकुरुनाथ लखि, बिदुररहे चुप साधि।
थरथर कम्पति द्रौपदी,दृष्टिविलोकिउपाधि॥
सो० परी बिपति बारीश, लखि दरकत उर बज्र को।
धीर न धरत महीश, निज समुझावत द्रौपदी॥
कपट द्यूत शकुनी ते हारे ❋ बिधि यह गति लिखिदीन ललारे
अहह दैव दिवसन कर फेरू ❋ गिरि ते रज रज होत सुमेरू
सभामध्य पति पांच हमारे ❋ महाबीर रण टरत न टारे
मोहिं उघारि होन कब देहैं ❋ उठिकै भीम अवशि सुधि लेहैं
बहुरि सभा यहि भूप अनेका ❋ समरथ शूर एकते एका
जानन हार धर्मपथ केरा ❋ क्षत्री भीषम आदि बड़ेरा
यदपि न भूपहि कहिनि निहोरी ❋ तौ अरन्तु लेहैं सुधि मोरी
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहि हैं ❋ आपुहि उठि राजासन कहि हैं
दो० अनुचित होइ न पाइ है, लेहैं मोहिं छुड़ाइ।
आजु पितामहते सरिस, धीर बीर को आइ॥
हैं गुरु द्रोण सभामहँ सोई ❋ जिनते अस्त्र सिखे सब कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भारद्वाज तनय रण शूरा ❀ लेहैं मोहिं छुड़ाय जरूरा
इत उत बहुभरोस ठहरावत ❀ पुनि २ निजमन कहँ समुझावत
बहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई ❀ खैंचहु चीर दुशासन भाई
लेहु बसन सब आतुर छोरी ❀ गहि बैठारु जांघपर मोरी
होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता ❀ आलिङ्गन करि द्रुपदकिजाता
अतिशय बिकल द्रौपदी कांपी ❀ लेत राहु चन्द्रहि जिमि झांपी
इत उत दिशा दुखित मन हेरी ❀ केहरि मनो मृगी बन घेरी
भीषम द्रोण करण दिशि चितई ❀ निजपति देखि आश सब बितई

दो० सकल सभादिशि देखि पुनि, चितई पाण्डव ओर।
भीमहिं देखि सरोष पुनि, बरज्यो धर्म किशोर॥

बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी ❀ उठ्यो दुशासनरिसकरि भारी
आतुर कहत बचनकटु धावा ❀ मनहु कृतान्तराज चलि आवा
एकपाणि लीन्हे गहि केशा ❀ यक कर बसन गहे यम भेशा
सकल सभाजन त्रियगहि हेरी ❀ ग्राम ग्राम गजनगरु बमेरी
बहु अवनीपति जे जन साधू ❀ बूड़त बारिधि शोक अगाधू
धीरन के मुख जोवत अहई ❀ चहत पितामह अब कछु कहई
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहिहैं ❀ अवशि बचन गङ्गासुत कहिहैं
कृपाचार्य गतिपति लखिवामा ❀ रहिहैं किमि चुप अश्वत्थामा
यहिविधिनिजमन करतभरोसा ❀ शील धीर जे मारग दोसा

सो० जे शठ कायर कूर, मानभङ्ग सब विधि चहत।
सकल सभा भरिपूर, करत मनोरथ पृथक पुनि॥

पकरिसि बसन दुशासन जाई ❀ सरुषप्रचारत पुनि कुरुराई
बीर धुरीण रहे चुप साधी ❀ श्रीगत भये सकल अपराधी
लखि दुर्दशा द्रुपदतनयाकी ❀ शोकज्वाल पाण्डव उर बांकी
बारिज नयन बही जलधारा ❀ रहे नाइ शिर पाण्डुकुमारा
निपटबिकललखिपाण्डुकिशोरा ❀ देहिं बिदरत उर कठिन कठोरा
तदपि दुष्ट अस तहि थल माहीं ❀ जे हरषत मन धरषत नाहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Jnan Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्योधन कर प्रबल प्रतापा ❀ तपत मनहुँ रवि द्वादश तापा
अति करुणा सबके उर होई ❀ प्रतिउत्तर करि सकत न कोई
भीष्मद्रोण कुरु बिभव बिलोकी ❀ रहे चुपाइ सके नहिं रोंकी

दो० तीक्षण भृकुटि सरोष लखि, अतिकुरुनाथ भुवार।
सकल सभा भयबश बिकल, कांपहिं बारहिं बार॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा ❀ कहि न सकैं कछु द्रोणकुमारा
कोउ शिर नाय रहे सकुचाई ❀ अश्रुपात कोउ कृत दुखदाई
जे नृप धीर बीर बल भारी ❀ जानि सत्य लखि होहिं दुखारी
सकहिंन कछु कहि काहुहि काऊ ❀ दुर्योधनकर समुझि सुभाऊ
बारबार कह कौरव राजू ❀ बेगि दुशासन करु यह काजू
खैंचन लाग बसन गहि पानी ❀ द्रुपदसुता तब अतिअकुलानी
तनया बिकल द्रुपद नृप केरी ❀ छूटी आश सकलदिशि हेरी
कालरूप लखि कौरवनाथा ❀ जायरहेउ चित जहँ यदुनाथा
राधारमण बचन सुनु मेरे ❀ कीन बिलाप कलाप करेरे
बूड़त बिरह सिन्धु रघुनाथा ❀ जिमि गहिलीन भरत कर हाथा
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा ❀ राखि बिभीषण रावण मारा
ध्रुवहि निरादर किय पितु माता ❀ ताकहँ नाथ भयो तुम त्राता
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी ❀ करि बिलाप दै हांक करेरी

दो० भुज उठाय हरिनगर दिशि, पाहि पाहि पुनि टेरि।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्ही हांक करेरि॥

दैत्य दलन प्रहलाद उबारण ❀ लागहु मम गोहारि जगतारण
मम अनाथ के नाथ गोसांई ❀ सो ना होइ लज्जा जेहि जाई
तुम बिन आरत पक्ष गही को ❀ राखु रमापति लाज गई को
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी ❀ तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी
बैठे सभा सकल अघधारी ❀ कोउ न चहत छुड़ावन नारी
परबश लाज जात हरि मेरी ❀ त्रिभुवन नाथ शरण मैं तेरी
बीते काल दयानिधि ऐहौ ❀ मोहिं उघारि देखि पछितैहौ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा ❀ तब तुम नाथ न लायहु बारा

दो० गोकुल बोरत घेरि घन, जिमि रक्षा तुम कीन्ह ।
नाश्यो मातलि सूतमंद, गिरिवर कर धरिलीन्ह ॥

ते तुम नाथ कहां गिरिधारी ❀ यह पापी खैंचत मम सारी
खैंचि बसन मम करिहि उघारी ❀ का करिहौ तब आय खरारी
गये लाज प्रभु बिरद न रहिहै ❀ तुमहिं कृपालु काह काउ कहिहै
सरबस हरेउ बचेउ यक बसना ❀ सोऊ हरत बचावत कसना
दवा जरत जिमि गोपन राखा ❀ कौरव अग्नि दीन्ह गृह लाखा
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा ❀ दीनदयाल कहां यहि बारा
दारिद दहि द्विजके दुख काटे ❀ धनपति सरिस सदन धन पाटे
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई ❀ राखिलेहु मम लाज न जाई

दो० श्रीपति दीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पट लेहैं छोरि ॥

बीचसभा प्रभु म्वहिं नँगियावत ❀ करुणासिन्धु धाय किन आवत
द्रुपदसुता लखि बिकल पुकारा ❀ प्रणतपाल हरि बिरद सँभारा
द्वारावति तजि नांगे पांयन ❀ आतुर आइ गये नारायन
प्रथम पाहि मुख ते जब काढ़ा ❀ प्रकटे बसनरूप पट बाढ़ा
बसनरूप धरि बसन समाने ❀ धीरज द्रुपदसुता उर आने
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता ❀ निकस्यो बसन बसन मगतेता
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ❀ परमरोष करि खैंचन लागा
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती ❀ मथसागरसुर असुर कि पांती
कढ़नी मनहुँ शेष भय सारी ❀ दुश्शासन जनु देव सुरारी
खैंचत सरुष दुशासन सारी ❀ निजतन पुरवत बसन खरारी

सो० देखि बसन कै बाढ़ि, भक्ति प्रेम बश द्रौपदी ।
भइ रोमावलिठाढ़ि, बिनय करत गदगदगिरा ॥

गयो शोच मन भयो अनन्दा ❀ जनु चकोर पायो निशि चन्दा
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी ❀ जय गोपाल गोबर्द्धन धारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जय शारँगधर जय असुरारी ❀ जय मनमोहन कुञ्जविहारी
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ❀ कमलनयन शोभा शतकामा
पीताम्बरधर धरणी पालक ❀ जय वसुदेव देवकी बालक
जय तव कर सरोज यदुराया ❀ कीन्ह्यो जेहि कर मोपर दाया
जे पद सरसिज मम हित धाये ❀ दुश्शासन कर दर्प नशाये
जय मधुसूदन यदुपति स्वामी ❀ जय त्रिलोकपति अन्तर्यामी
जयअघारि जय जय अविकारी ❀ जय जय जय केशी कंसारी
जय मम लज्जा राखनहारे ❀ जयति यशोदा नन्ददुलारे

दो० जय कृपालु करुणायतन, जयति कौशलानन्द ।
मोरपक्षधर मुरलिधर, जय जय आनँदकन्द ॥
जयति सच्चिदानन्द हरि, ईश्वर जगदाधार ।
राखौ लज्जा जाति निज, जय मम नाथ उदार ॥

निर्भय हर्ष विवश पञ्चाली ❀ कहि चिग्घाराति जय बनमाली
जय जयकार पूरि पुनि रहेऊ ❀ दुष्टन बिना सबन जय कहेऊ
देवन देखि सुमन झरि कीन्ही ❀ गहगह गगन दुन्दुभी दीन्ही
बाढ़त देखि बसन चहुँफेरा ❀ मन थिर भयो पाण्डवन केरा
हरिप्रताप दिनकर सम भयऊ ❀ कौरवसिसुकि कुमुदसम गयऊ
हरिहि पुकारति द्रुपदकुमारी ❀ खैंचत सरुष दुशासन सारी
करत जोर बहुभांति दरेरा ❀ बाढ़त बसन सकल चहुँ फेरा
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे ❀ भांति भांति के बसन घनेरे
पीत रङ्ग के बहुत निकारे ❀ पीताम्बर के ओढ़नहारे

दो० मिश्रित रँग के पट बढ़े, थके दुशासनहाथ ।
देवन जे देखे नहीं, ते पुरये यदुनाथ ॥

आपु बसनतन धरि भगवाना ❀ बढ़ये विविध रङ्ग परिधाना
द्रुपदी चषपुतरी प्रभु कीन्ही ❀ विरदावलि मूरति करि दीन्ही
खैंचत चीर दुशासन हारा ❀ अम्बर मनहुँ देवसरिधारा
द्रुपदसुता के अम्बर तीरे ❀ हारे भुजा दुशासन केरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निकसे पट बिचित्र बहुतेरे ❀ नहिं समात मन्दिर नृपकेरे
दश सहस्र गजबल थकिगयऊ ❀ दशगज अम्बर हरण न भयऊ
निपट होत लखि अनरथ बाता ❀ नाना भांति होत उतपाता
शिवा यज्ञशाला में बोली ❀ ढहे भवन धरणी जब डोली
अशुभ शब्दकृत रासभ श्वाना ❀ मेघन बिना ब्योम घहराना
सो० हींसे सकल तुरंग, हयशाला महँ बार यक ।
चिघरे मत्तमतंग, निजनिजआश्रमबिकलसब ॥
भयो दाह दिग करत कागा ❀ तदपि न बसन दुशासन त्यागा
बढ़ाति बिलोकि तजै पुनि धरई ❀ अनत गहै पुनि सो परिहरई
विदुर दीख भा अनरथ भारी ❀ गे ज्यहि गृह बिलपति गन्धारी
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं ❀ होत अकाज न सूझत तोहीं
कृष्ण आजु द्रुपदी तन ब्यापे ❀ बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे
नहिं होइहि सुत धर्म अकाजू ❀ जिनके यदुनन्दन महराजू
सदा दास कर करत सहाई ❀ प्रणतारति भञ्जन यदुराई
जे हरि हन्यो निशाचर राजू ❀ सहि दुख निजभक्तन के काजू
सो जानी सब बात तुम्हारी ❀ नहिं अज्ञान ग्रसित गन्धारी
दो० जानिबिकलप्रहलादजिमि, जो हरिभक्त अनन्य ।
सहि श्रम निकस्यो खम्भ ते, कश्यपहन्योहिरन्य॥
सो० अब अनके उतपात, देखि परत अनरथ निपट ।
होन चहत सोइ बात, तुव तपबल ते थपिरही ॥
अबते रानि कहा सुनु मोरा ❀ भाग्य अभाग्य होत अब तोरा
बसन बुड़ाव दुशासन करसन ❀ चलन चहत नतु चक्रसुदरसन
गन्धारी सुनि अति दुख पाई ❀ बिलपत बिदुर संग उठि धाई
मतिदृग सुत खैंचत इत चीरा ❀ थक्यो पराक्रम भयो अधीरा
भुज थकिगयो बढ़त नहिं जाना ❀ बसनत्यागिमनअतिखिसियाना
निज आसन बैठेउ शिरनाई ❀ मनहुँ रङ्क निधि पाइ गँवाई
दुर्योधन नृप बैठ उदासा ❀ मानहुँ भयो राजपद नासा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीहत भयो सकल मदभङ्गा ❀ निपट बिकल अपमान तरङ्गा
सुनत शोर मारग श्रुति केरे ❀ पूछत मतिदृग संजय तेरे
होत कहां यह हाहाकारा ❀ संजय कहै सहित विस्तारा

सो० सुनत दशा दुखपाय, संजय करगहि पाणिनिज।
सभा बिलोक्यो जाय, कुरुपतिकी अनरथ कथा॥

मध्य सभा कञ्चन सिंहासन ❀ सो धृतराष्ट्र नृपतिकर आसन
बैठि गये तहँ मतिदृग जाई ❀ परम रोष नहिं बरणि सिराई
दुश्शासन कहँ नृप दुरिआई ❀ शठ कुरुकुल तैं दीन लजाई
दुर्योधन पर क्रोध अपारा ❀ कहि कटु बार बार धिक्कारा
त्यहि अवसर आई गन्धारी ❀ कहि दुर्बचन कीन्ह रिस भारी
कीन्हो दुष्ट कर्म तुम नीचू ❀ परिहौ अधम नरक के बीचू
दीन्हेउ सरुष शाप गन्धारी ❀ कह मतिदृग सुनु द्रुपदकुमारी
पुत्रबधू जे सकल हमारी ❀ मनक्रमबचन अधिक तुम प्यारी
तव सँग शठन कीन अपराधा ❀ भइ मम वृद्धापनमहँ बाधा

दो० पुत्रि तोहिं ममशपथ शत, मनबाञ्छित बर मांगु।
दुष्टन कीन कुकर्म सो, मम दिशि ते सबत्यागु॥

अब तुम मम निहोर शिरमानी ❀ करहु क्षमा अपराध भवानी
बेगि मांगु पुत्री बरदाना ❀ तुम सम मोहिं न प्रिय कोउआना
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे ❀ नाहिंन सत्ता तदपि सम तोरे
बार बार नृप कह बर मांगू ❀ द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू
बोली बचन जोरि युग पाणी ❀ सुनहु नरेश सत्य मम बाणी
मोहिं समेत सकल परिवारा ❀ दास भाव भे पाण्डुकुमारा
सो नरेश मांगे म्वहिं दीजै ❀ दासभाव बिनु सकल करीजै
बाहन अस्त्र देहु सब काहू ❀ कीजै बेगि बिदा नरनाहू
मतिदृग कहेउ ताहिं मैं दीन्हा ❀ मांगु अपर कछु आयसु कीन्हा

दो० सुनहु पिता कह द्रौपदी, मनबाञ्छित बरदान।
मैं पायों तुम्हरी कृपा, नाथ शपथ नृप आन॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तव प्रसाद अब कुरुकुलकेतू ❀ फिरि होइहै सुखसम्पति सेतू
उचित बिप्र मांगै बर चारी ❀ कहत बेद अस नीति बिचारी
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई ❀ मांगै एक शूद्र सुत होई
मैं तो पुत्रबधू क्षत्रानी ❀ लीन्हे मांगि तीनि बर जानी
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा ❀ नरनायक मम मानि निहोरा
बुद्धचक्षु चर चतुर बोलाये ❀ सब के बाहन अस्त्र देवाये
चढ़ि बाहन गहि आयुध हाथा ❀ चले अवास धर्मनरनाथा
परसे चरण बुद्धि दृग केरे ❀ बोले भूप युधिष्ठिर तेरे
लज्जाविवश बचन सुनि तोरा ❀ हे सुत होत बिकल मन मोरा

सो० बचन तोर सुनि तात, लज्जित अवनि समात मैं।
मोहिं अक्षत यह बात, पुत्र परम अनुचित भई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याणा ❀ सुनु अशीष मम बचन प्रमाणा
जीति तुम्हारि राज्यसब लीन्ही ❀ दुर्योधन अनीति बड़ि कीन्ही
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ❀ लीजै सुत प्रसाद मम मानी
मतिदृगआयसुशिरधरिलीन्हा ❀ शीश नवाय गमन गृह कीन्हा
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा ❀ दीन्ह त्यागि त्यहि ओर न हेरा
पटल वितान सेन चतुरङ्गा ❀ चपल तुरंगम मत्त मतङ्गा
सकल धर्मनन्दन तजि दीन्हा ❀ सहितकुटुम्ब भवनमग लीन्हा
मिले विदुर मारग महँ आई ❀ जात भये निजभवन लेवाई
रानिन सहित नृपति अन्हवाये ❀ खान पान बिश्राम कराये

दो० यहँ उठि कुरुपति सभाते, गे सब निज निज धाम।
खान पान असनान करि, शेष दिवस रह याम ॥
द्रोणकरणभीषमशकुनि, निजनिजगृहमगलीन।
खान पान बिश्राम पुनि, सब भूपालन कीन ॥
प्रथम करो असनान पुनि, भोजन करि कुरुनाथ।
सबलसिंह आयो सभा, दुरद दुशासन साथ ॥

इति महाभारतेभाषाकृतेद्रौपदीचीरवर्द्धनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सुन्दर कनक प्रयंकपर, शयन करी कुरुराय।
बिदुर भवन हैं धर्मसुत, कही चरवरन आय॥

सुनि नरेश मन अतिदुखपाये ❀ सौबल शकुनी करण बोलाये
सहित दुशासन करत सलाहा ❀ बोले दुर्योधन नरनाहा
जीत्यो राज धर्मसुत केरी ❀ दीन्हीं बहुरि पिता सोइ फेरी
जीती अवनि पिता तजि दीन्हा ❀ सो हमरे हित अतिभल कीन्हा
छूटे भूप दासि गति तेरे ❀ लेत भूमि असिधार गरेरे
त्यागब राज्य उचित मत ताते ❀ किंकरता बिनु धर्मज जाते
अब तुम यतन बतावहु सोई ❀ मृषा मनोरथ मोर न होई
परबश होत मनोरथ खाली ❀ संशयबिबश उठत मन हाली
कीन्ह सकल कछु सरेउ न काजू ❀ भयो जानि मम परम अकाजू

दो० अबते कीजै यतन कछु, बिदुर भवन सुतधर्म।
हैं अबहीं सुनिये सचिव, कह कुरुनाथ कुकर्म॥

गुप्त शत्रुगति प्रकट भई सो ❀ आपुस बीती प्रीति गई सो
यहै लाभ भा सचिव हमारा ❀ मारत शत्रु गयो बिनु मारा
बड़ अनरथ अब सजग भये ते ❀ बहु उतपात करैं हम ते ते
सुनि कुरुनाथ बचन अनुरागे ❀ सब मिलि मन्त्र विचारन लागे
परेउ ठीक मत नृप सुख पाये ❀ बहुविधि सौबल सिखै पठाये
धर्म नरेश बिदा उन मांगी ❀ बिदुर पठाइ फिरे अनुरागी
निज गृह जात युधिष्ठिर राई ❀ सौबल मिल्यो बीच मग आई
कीन जोहार माथ महि लाई ❀ कहन लगेउ पुनि बचन बनाई
युक्ति सहित करि छल चतुराई ❀ निज बश कीन युधिष्ठिरराई
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती ❀ लीजै बैर द्यूत करि नीती

दो० बड़िअनीतिशकुनीकरी, शठ समेत कुरुराज।
होतदुसहदुख हृदयमम,गतितुम्हारिलखिलाज॥

सोइ गति होई कुरुपति केरी ❀ हृदय बुताइ ज्वाल तब मेरी
करि बहुयतन नृपहि पलटाई ❀ कुरुसमाज कहँ गये लेवाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करि बहुप्रीति सभा बैठारी ❀ मँगवाई पुनि पंसासारी
भावी प्रबल मेटि को सकई ❀ बरजि बरजि सब प्रियजन थकई
धर्मराज कर अक्ष गहे जब ❀ बिहँसि बचन यह कर्ण कहे तब
का अब धरत युधिष्ठिर राऊ ❀ कह नृप जो कहिये कुरुराऊ
हारहि सो अस कुरुपति कहई ❀ द्वादश बर्ष बिपिन सो रहई
कन्दमूल फल करै अहारा ❀ उदासीन इव सब आचारा
हारै सो निज भवन न जावै ❀ आतुर कानन पन्थ सिधावै

दो० होइ बैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ ।
अन्नअशन अरुराज्य सब, सो तजि तृण इव देइ ॥

अनुचर अपर लेइ नहिं संगा ❀ एक त्यागि निजबंश प्रसंगा
तापस तनु धरि कानन जाई ❀ देइ महीपति चिह्न दुराई
यहि बिधि द्वादश बर्ष बितावै ❀ नेम सहित त्यरहीं जब आवै
ग्राम निवास करै अज्ञाता ❀ बर्षदिवस कहिन्सय न जाता
मिलै न खोज रहै यहिभाँती ❀ बर्ष त्रयोदशई जब जोती
पावै राज्य चौदही आये ❀ खोज त्रयोदशई बिनु पाये
जो कदापि त्यरहीं सुधि पाई ❀ द्वादश बर्ष बहुरि बन जाई
जब जब खबरि तेरहीं पाई ❀ तब तब सो काननमग जाई
मिलै न खबरि तेरहीं जासू ❀ सो पुनि करै राज्य निज बासू

दो० भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकी बात ।
कहिप्रमाणधरिदाउँसोइ, दीन्हों शत्रु अजात ॥

कह सौबल सुनु धर्मकिशोरा ❀ होइ खेल शकुनी सँग मोरा
मैं खेलौं तुम्हरी बदि राजा ❀ देखौ शठ शकुनी कर काजा
बोले कुरुजन धर्मज ताता ❀ छल कहि भूलब शत्रु अजाता
कर गहि अक्ष युधिष्ठिर राऊ ❀ मानि प्रमाणधरौ सोइ दांऊ
बरजत रहे सकल हितकारी ❀ केहि बिधि मिटै जो होनेहारी
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई ❀ परेउ दांव शकुनी कर आई
खल खेलार अजित शकुनीते ❀ पुनि पुनि हारि गये नहिं जीते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० हारेउ दाउँ अधर्मअरि, चुपकिरहे शिर नाय।
बिजय नगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय॥

छूटत सभा देश गृह कोशा ❀ लखि उर शोक होत सहरोशा
चितै शल्यदिशि धर्मज ज्ञानी ❀ बोले स्रवत नयनजल पानी
सुनु शठ तैं सब लाज गँवाई ❀ भयसि वृथा माद्री कर भाई
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई ❀ धिकधिक त्वहिं जननी के भाई
हम हारे शठ तैं नहिं हारे ❀ लाजरोष कहँ गये तुम्हारे
जानत जगत तोहिं सबलायक ❀ बिक्रम थकेउ देखि कुरुनायक
धिक धिक पापबुद्धि शठ तोरी ❀ निजनयनन देखहु गति मोरी
धिकधिक कितवकितवअभिमानी ❀ दीन्हेउ मूढ़ त्यागि मम बानी
नहिं कछु कुरुपति केर कुकर्मा ❀ नहिं शकुनीकृत कर्ण अधर्मा
समरथ भीष्म द्रोण संपाती ❀ तिन्हैं दोष देइय क्यहि भांती
तैं शठ भयसि पापकर मूला ❀ होत न मूढ़ हृदय तव शूला

दो० देखि दशा मम लाज तजि, रहे मूढ़ चुपसाधि।
कहिनसकहिकोउनीचकछु, कृतकुरुनाथउपाधि॥

सुनु अधर्म निजकाल बिताई ❀ जो न बिनाश करौं तव आई
तौ न गहौं शरचाप कृपाना ❀ करौं त्याग क्षत्रीकुल बाना
अस कहि भूप अग्र पगुधारा ❀ कहत रोषवश पवनकुमारा
गराजि जलदसम नयन तरेरे ❀ बोले दिति दुशासन तेरे
निपट नीच तव बुद्धि पिशाची ❀ निश्चय मीच शीशपर नाची
ज्यहि कर बसन द्रौपदी केरे ❀ गहि खैंचेउ करि जोर दरेरे
सो उखारि डारौं भुज तेरे ❀ दाह बुताय हृदय तब मेरे
ठोंकि जंघ बैठहु कहि चेरी ❀ भइ मतिभ्रम कुरुनायक केरी
चलत कुशल करि सिंह जगाई ❀ बैनतेय बलि बायस खाई
होत यथा यह बात अयोगू ❀ तेहिबिधि हमहिं हँसत सबलोगू

दो० सुनत सभा अस कहत मैं, सबप्रतिबचनउचारि।
तबलगधिकमोहिंकुरुपतिहि, जबलगडारुँनमारि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संगर भूमि गदा लै हाथा ❀ जङ्घ भङ्ग करिहौं कुरुनाथा
कहे बचन कर फल देखरावों ❀ तौ मैं क्षत्रियबंश कहावों
अवधि बिताइ कहा मम मानू ❀ जो न बिनाश करौं तव जानू
तौ हम होइँ निरयपथगामी ❀ पन्नग योनि जन्म परिनामी
बैठु जङ्घ मम द्रुपदसुता ते ❀ कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते
निज पद ते मरदउँ मुख सोऊ ❀ बन्धु हमार बोध तब होऊ
दिवस बिताइ गदाधरि लरिहौं ❀ अन्ध नरेशबंश संहरिहौं
त्रिय तजि पुरुष न राखौं एका ❀ मतिद्दगबंश सत्य मम टेका
कृष्ण शपथ नृप चरण दोहाई ❀ बीते दिवस करब सब आई

दो० असकहि निजकर गहिगदा, भीम चले नृपसाथ ।
बोले पारथ रोष बश, जो कुमार सुरनाथ ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी ❀ कीन्हेउ मम विस्मय तजि हासी
धरणी सम करिहौं शर मारी ❀ करण प्रतिज्ञा सत्य हमारी
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे ❀ निज नैनन सुखें देखनहारे
धन्य धन्य सब लायक केरे ❀ निज निजनैन परम सुख हेरे
जन्म प्रयन्त सत्यव्रत कीन्हा ❀ अन्तकिबयस लाभभललीन्हा
शर सागर कौरव कुल बोरौं ❀ भीष्मादिक क्षत्रिनशिर फोरौं
तौ मैं कुन्तीसुत शुचि साँचा ❀ काटौं तव शिर कठिन नराचा
मोहिं अजातशत्रुके आना ❀ बीते दिवस करौं मनमाना
अस कहि चले युधिष्ठिरसङ्गा ❀ बोले नकुल रोष भरिअङ्गा
सुनु रे करण पापकर अंशा ❀ करौं बिनाश सकल तव बंशा
विष्वक्सेन आदि सुत तोरे ❀ होइहैं नाश सकल कर मोरे

दो० सबलसिंहकहिनकुलअस, गये युधिष्ठिर पास ।
जो न करौं यह सत्य सब, होइ नरक मम बास ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेसभापर्वसौबल
युधिष्ठिरछद्मकरणंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा ❀ मष्टरहे कुरुनाथ समाजा
तब सहदेव शकुनितन हेरी ❀ भृकुटि भङ्ग करि नयन तरेरी
शकुनी तव मति ईश भ्रमाई ❀ नीच मीचु करि यत्न बोलाई
द्यूत हराय कियो छल भारी ❀ कीन सकल दुर्दशा हमारी
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं ❀ ईर्षा लाज न कछु मन माहीं
जनि भूलेउ यहि भूलि बिशेखी ❀ बीते दिवस परी सब देखी
कुरुपति नाशसहित परिवारा ❀ होइहै ममकर मरण तुम्हारा
बीते अवधि शरासन धरिहौं ❀ रिपुकृत कर्म प्रकट सब करिहौं
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा ❀ करौं समर तव खण्डित शीशा

दो० बीते दिवस प्रमाण निज, करौंसकलप्रणसांच।
मतिदृगसुतकटिकटिगिरहिं, दाहनकरै नराच॥

अस कहि चलन भूपपहँ चह्यऊ ❀ द्रुपदसुता तब रिसवश कह्यऊ
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा ❀ जब ममशिर होइ बहै पनारा
बाँधउँ कच तब करि असनाना ❀ कोटि भूप यदुपति कै आना
अस कहि केश दिये छिटकाई ❀ दुश्शासन के रुधिर नहाई
जेहि विधि नाथ लाज ममराखी ❀ करेहु सत्यप्रण जन अभिलाखी
जङ्घ भङ्ग कुरुपति सुनि काना ❀ मैं सुख बिपुल लहब भगवाना
बढ़त केश बिगलित पञ्चाली ❀ अति भयकार मनो कङ्काली
तनु सुन्दरता भय गति दूरी ❀ रोष कराल रहा भरिपूरी

दो० असकहिद्रुपदकुमारिपुनि, चली युधिष्ठिर साथ।
बल्कल लाये दास गण, लखिरुख कौरवनाथ॥

ज्यहि मग जात युधिष्ठिरराई ❀ अग्र दिये धरि भाजन जाई
दुर्योधन कर आयसु जोई ❀ किंकर कहत जोरि कर दोई
नृप बल्कल अब धारण कीजै ❀ गृहमगतजि कानन मगलीजै
अस सुनि भीम भयो मन रोषा ❀ धिक कहि देत भुजन पर दोषा
रोष तरङ्ग बिलोचन लाला ❀ कह्यउ नाय धर्मजपद भाला
हम नृप दास भये अब नाहीं ❀ आयसु नीच करत केहि पाहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज्य त्यागि कानन मग जैहैं ❀ तहँ कुरुपति का हमहिं सिखैहैं
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे ❀ का नृप बहुरि जन्म धरि हारे
जो न तजत मम नीच पछारी ❀ चहत बिलोकन शठ यमधारी
आयसु मोहिं नराधिप देहू ❀ बिक्रम बन्धु देखि करि लेहू
दुर्योधनहिं प्रकट देखरावों ❀ जो तुम्हार अनुशासन पावों

दो० तौ सौभाई आजु सब, कुरुपति आदि बटोरि ।
मारि पठावों यमपुरन, नृप तव शपथ करोरि ॥

आजु सहायक हैं भगवाना ❀ जीतब एक न पैहै जाना
जिन करुणाकरि चीर बढ़ावा ❀ सो मम बाहु सहायक आवा
तदपि मरण जो यहि थल होई ❀ धिक मम बिस्मय कहै न कोई
भीष्मादिक बिनु मारे मरिहैं ❀ वृश्चिकराशि न एक उबरिहैं
सहिअसिबिपति न जीवननीका ❀ समुझाइये महीपति जीका
पारथ कहेउ मोर मत येहू ❀ बेगि नरेश रजायसु देहू
तमकि तमकि निज अस्त्र उठाये ❀ सजगदेखि कुरुगण भयपाये
बल्कल बसन अनूप सुहाये ❀ जे प्रथमहिं कुरुकिंकर लाये

दो० भीम बचन सुनि कुरुपति, जाइ जनायो हाल ।
बुद्धिचक्षु सुत रोषवश, भयो बिलोचन लाल ॥
कहत भयो कुरुनाथ तब, यूथप सुभट बोलाइ ।
घेरि पवँरि मारहु सकल, जियत न पावहिं जाइ॥

भूपति आयसु धनुष चढ़ाये ❀ सुभट समूह रोषवश धाये
करण दुशासनादि भटभारी ❀ घेरि पवँरि प्रति ठाढ़ अगारी
सातौ द्वार बीर ठढ़िआई ❀ कीन्हेउ बज्र केवार देवाई
इत यह साज सजे कुरुराई ❀ उत आयसु मांगत सबभाई
बेगि महीपति देवे योगू ❀ करिये समर न कर्म अयोगू
रिस उर मारे बड़ दुख होई ❀ कीन्हे समर मिटै नृप सोई
होइ जीति तव नृप भलि बाता ❀ मरण नीक नहिं शत्रुअजाता
जो यहि बिधि भइ जगतहँसाई ❀ करब काह जग जीवन भाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कीन्हे समर भुजा सुख पावैं ❀ अतिकराल तनताप बुझावैं
सुरपुर तात लहब सुख नीके ❀ करिकरिखण्डखण्डकुरुपति के
नतु नरेश जारत उर शोषू ❀ मिलिहि न युगललोक संतोषू

दो० पुनिपुनिअनुजसरोषअति, मांगतसकलनिदेश।
मनबिचारकर कोटिबिधि, बोले बचन नरेश॥

बन्धुबचन अस भूलि न कहऊ ❀ भयो अरोग्यअरुझिजनि रहऊ
जन्म प्रयन्त होम जिमि करई ❀ अन्तकि बैस ताहि परिहरई
तिमि सहि शीश सकल दुखसेतू ❀ चहत बेगारन अब बिनुहेतू
बर्ष त्रयोदश भे मम लेखे ❀ अब निजनयन उमापति देखे
पशुपतीश देखिय नैपाला ❀ डाकिनि देश भयंकर काला
रामनाथ सम ईश्वर देखी ❀ होइहै जीवन सुफल बिशेखी
महाकाल उज्जैन अशेखी ❀ अमरनाथ कश्मीर सो देखी

दो० बिश्वनाथ बाराणसी, बहुरि देखि शशिभाल।
सुनहु बन्धु आनन्दयुत, कटिहि सहज सबकाल॥

अस कहि भूपति चिह्न दुराये ❀ पहिरे बलकल बसन सुहाये
द्रुपदसुता युत बान्धव चारी ❀ पहिरे बसन बेष अतिभारी
रतन जटित पट चित्र उतारे ❀ ते नरेश त्यहि थल सब डारे
कुरु किंकरन परे पट पाये ❀ गत दरिद्र धनवान कहाये
बन्धु सुजन जनसंग महीपा ❀ आगे चले पाण्डुकुल दीपा
उदासीन इव बेष बनाये ❀ मनहुँ महातपतनु धरि आये
जाहिं पवँरि जहँ बल्कलधारी ❀ धावहिं सुभट समूह प्रचारी
सो मग त्यागहिं धर्मकुमारा ❀ आतुर आवहिं आन दुवारा
बज्र केवार जड़े तहँ पावहिं ❀ शायकवीर सरोष चलावहिं

दो० कहहुँ दुशासन शकुनिकहुँ, यूथनाथ भट बृन्द।
देखि पवँरि प्रति धर्मसुत, गये जहां रबिनन्द॥

देखा करण धर्मसुत आये ❀ बलकलधर शर चाप चढ़ाये
बिहँसि कहा सुनु शत्रु अजाता ❀ तुमका द्रुपदसुता भयत्राता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई ❀ गहि कर हाथ पार कोउ करई
त्राता नारि भली तुम पाई ❀ करण तर्क करि हँसे ठठाई
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू ❀ बोले भीम भयो उर दाहू
सुनु रविनन्दन दूषण यामे ❀ भेद न दम्पति श्रुति परिणामे
द्रुपदसुता है जीति हमारी ❀ हँसी न देखहु हृदय बिचारी
होउ न अज्ञ विवश परतीती ❀ देखहु पूछि बिदुरसन नीती
निज तन होत प्रकट यक देही ❀ बामअङ्ग त्रिय परम सनेही
तीसरि जाति पुत्र निज होई ❀ कहे बिदुर यह प्रकट न गोई

दो० सुनि न कहेउ रविसुतकछु, चुपकिरहे अरुगाइ ।
बोले धर्म नरेश तब, आरत बचन सुनाइ॥

मोहिं करण अब मारग देहू ❀ करि दुर्गति जनि जीवन लेहू
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं ❀ दीजै पन्थ कवनविधि तोहीं
फिरे धर्मसुत सुनि असि बानी ❀ स्रवत नयनजारिजमग पानी
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता ❀ होत शोर तहँ जनु पवि पाता
सुभट सरोष अस्त्रगहि धावहिं ❀ लखि सुत धर्म अपरमगजावहिं
यहिविधिनृपचहुँदिशि फिरिआये ❀ मारु मारु तजि पन्थ न पाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा ❀ शिरधुनि कहत शोकयुत भीमा
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई ❀ करत शील उर बज्र कि नाई
अवनहिं मिलिहै कुरुपतिभारी ❀ भै नृप कुपथ कुमीचु हमारी

दो० अहहदैवतुवगतिअगम, मरे मीचु बिनु आइ ।
मनकी मनहींमें रही, कहि बिलपतसबभाइ ॥

होत सभा महँ भूप रजाई ❀ जियत न जात भवन कुरुराई
हमहिं न रहत मरे कर शोचू ❀ भा नृप दुखद तुम्हार सकोचू
इत नरहार भार तुव नाथा ❀ उत रण सुभट न कौरवनाथा
यह नरेश बड़ शोक समाजा ❀ बीर बधे नहिं होत अकाजा
जाहिं बन्धुजन प्रियजन मारे ❀ हृदय शोक दुख होत हमारे
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई ❀ सुनहु तात तुम तजि कदराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सदा सहायक हैं करुणाकर ❀ कस न खबरि लेहैं राधावर
द्रुपदसुता की लाज बचाई ❀ तिनहिं न बात बड़ी यह भाई
अस कहि लोचन बारि बिमोचैं ❀ बिदुर समेत बंधु सब शोचैं

दो० सकल कहैं आरत बचन, त्राहित्राहि यदुनाथ।
सजलनयनपुनिपुनिकहत, राधावर धुनिमाथ॥

जात बिकल लखिद्रुपदकिशोरी ❀ कहत घटोत्कच दोउकरजोरी
सुनौ बिनय मम धर्मकुमारा ❀ बिश्वम्भर रखवार तुम्हारा
अब नरेश मोहिं आयसु देहू ❀ जिमि निजकिंकरइव कर नेहू
तब नरेश निज पृष्ठि चढ़ाई ❀ सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई
करि दुर्योधन भवन उलङ्घा ❀ जाउँ भूप तव आयसु सङ्घा
न तौ महीपति आयसु देहू ❀ करौं महारण करि संदेहू
नतु यहि अवसर जहँ कुरुराई ❀ जाइ समीप देहुँ पहुँचाई
आयसु बेगि देहु मोहिं राजा ❀ तव पद शपथ करौं सोइ काजा
कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा ❀ तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा

सो० करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो।
जियकी जरनि बुताय, सम्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अनहीं जो कीन्हों प्रथम।
होत शरीर असत्य, को जानै जीवन मरण॥

भीम बचन सबके मन भाये ❀ आयसु मांगि मीगि शिर नाये
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा ❀ मानहु आयसु सकल हमारा
मारग यही बिपिन कहँ लीजै ❀ बिग्रह बन्धु कदापि न कीजै
यहिप्रकार कहि धर्मकिशोरा ❀ बोले चितै घटोत्कच ओरा
धन्य धन्य सुत भाग तुम्हारा ❀ लीन उबारि सकल परिवारा
सब समेत अब सुत बड़भागी ❀ काननपन्थ चलिय डर त्यागी
सपनेहुँ आन बिचार न करहू ❀ मम अनुशासन सुत उर धरहू
कहेउ सुभग शिष धर्मकुमारा ❀ कीन सबन मिलि अङ्गीकारा
कुम्भोत्कच तनु धरेउ बिशाला ❀ छायो रूप श्याम कच लाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई ❀ गहि कर हाथ पार कोउ करई
त्राता नारि भली तुम पाई ❀ करण तर्क करि हँसे ठठाई
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू ❀ बोले भीम भयो उर दाहू
सुनु रविनन्दन दूषण यामे ❀ भेद न दम्पति श्रुति परिणामे
द्रुपदसुता है जीति हमारी ❀ हँसी न देखहु हृदय बिचारी
होउ न अज्ञ विवश परतीती ❀ देखहु पूछि बिदुरसन नीती
निज तन होत प्रकट यक देही ❀ बामअङ्ग त्रिय परम सनेही
तीसरि जाति पुत्र निज होई ❀ कहे बिदुर यह प्रकट न गोई

दो० सुनि न कहेउरविसुतकछु, चुपकिरहे अरुगाइ ।
बोले धर्म नरेश तब, आरत बचन सुनाइ॥

मोहिं करण अब मारग देहू ❀ करि दुर्गति जनि जीवन लेहू
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं ❀ दीजै पन्थ कवनविधि तोहीं
फिरे धर्मसुत सुनि असि बानी ❀ स्रवत नयनजारिजमग पानी
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता ❀ होत शोर तहँ जनु पवि पाता
सुभट सरोष अस्त्रगहि धावहिं ❀ लखि सुत धर्म अपरमगजावहिं
यहिविधिनृपचहुँदिशि फिरिआये ❀ मारु मारु तजि पन्थ न पाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा ❀ शिरधुनि कहत शोकयुत भीमा
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई ❀ करत शील उर बज्र कि नाई
अवनहिं मिलिहैकुरुपतिभारी ❀ भै नृप कुपथ कुमीचु हमारी

दो० अहहदैवतुवगतिअगम, मरे मीचु बिनु आइ ।
मनकी मनहींमें रही, कहि बिलपतसबभाइ ॥

होत सभा महँ भूप रजाई ❀ जियत न जात भवन कुरुराई
हमहिं न रहत मरे कर शोचू ❀ भा नृप दुखद तुम्हार सकोचू
इत नरहार भार तुव नाथा ❀ उत रण सुभट न कौरवनाथा
यह नरेश बड़ शोक समाजा ❀ बीर बधे नहिं होत अकाजा
जाहिं बन्धुजन प्रियजन मारे ❀ हृदय शोक दुख होत हमारे
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई ❀ सुनहु तात तुम तजि कदराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सदा सहायक हैं करुणाकर ❀ कस न खबरि लेहैं राधावर
द्रुपदसुता की लाज बचाई ❀ तिनहिं न बात बड़ी यह भाई
अस कहि लोचन बारि बिमोचैं ❀ बिदुर समेत बंधु सब शोचैं

दो० सकल कहैं आरत बचन, त्राहित्राहि यदुनाथ।
सजलनयनपुनिपुनिकहत, राधावर धुनिमाथ॥

जात बिकल लखिद्रुपदकिशोरी ❀ कहत घटोत्कच दोउकरजोरी
सुनौ बिनय मम धर्मकुमारा ❀ बिश्वम्भर रखवार तुम्हारा
अब नरेश मोहिं आयसु देहू ❀ जिमि निजकिंकरइव कर नेहू
तब नरेश निज पृष्ठि चढ़ाई ❀ सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई
करि दुर्योधन भवन उलङ्घा ❀ जाउँ भूप तव आयसु सङ्घा
न तौ महीपति आयसु देहू ❀ करौं महारण करि संदेहू
नतु यहि अवसर जहँ कुरुराई ❀ जाइ समीप देहुँ पहुँचाई
आयसु बेगि देहु मोहिं राजा ❀ तव पद शपथ करौं सोइ काजा
कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा ❀ तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा

सो० करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो।
जियकी जरनि बुताय, सम्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अबहीं जो कीन्हों प्रथम।
होत शरीर असत्य, को जानै जीवन मरण॥

भीम बचन सबके मन भाये ❀ आयसु मांगि मांगि शिर नाये
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा ❀ मानहु आयसु सकल हमारा
मारग यही बिपिन कहँ लीजै ❀ बिग्रह बन्धु कदापि न कीजै
यहिप्रकार कहि धर्मकिशोरा ❀ बोले चितै घटोत्कच ओरा
धन्य धन्य सुत भाग तुम्हारा ❀ लीन उबारि सकल परिवारा
सब समेत अब सुत बड़भागी ❀ काननपन्थ चलिय डर त्यागी
सपनेहुँ आन बिचार न करहू ❀ मम अनुशासन सुत उर धरहू
कहेउ सुभग शिष धर्मकुमारा ❀ कीन सबन मिलि अङ्गीकारा
कुम्भोत्कच तनु धरेउ बिशाला ❀ छायो रूप श्याम कच लाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास ।
अन्धकार माया प्रबल, दिवसनाथ उर त्रास॥

माया वश राक्षस की धारी ❀ सब परिवार पृष्ठि बैठारी
सहित द्रौपदी धर्मज राई ❀ दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई
बाम बाहु पर बान्धव चारी ❀ भीमादिक लीन्हउ बैठारी
पुनि पुनि गर्जि चलत जब भयऊ ❀ नृप करजोरि बिदुरसन कहेऊ
तात पितासम आपु हमारे ❀ शिशुपन ते सबबिधि रखवारे
मम सुधि अब यादवपति लीन्ही ❀ रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही
हरिते अधिक हितू तुम मोरे ❀ पितुमातासम हित न निहोरे
अबते एक मोरि रखवारी ❀ करेउ तात मम बिनय बिचारी
जो गृह रहै देइ दुर्योधन ❀ तात निहोरे किहेउ प्रबोधन
तुम तहँ जात रहेउ कलुकाला ❀ गयेदिवस दुख कटहिं बिशाला
जब जब सुरति करै मम माता ❀ करेहु प्रबोध बिकल लखिगाता
भोजन पान अधीन तुम्हारे ❀ मातु प्राण धन के रखवारे

सो० बिपिन महादुखरूप, ताते उचित न मातुसँग ।
कही युधिष्ठिर भूप, गहवर उर व्याकुल निपट॥
कहेउ प्रणाम हमार, तात मातसन बिबिध बिधि ।
अस कहि धर्मकुमार, चकित चितै रोवनलगे ॥

कहेउ बिदुर नृप धीरज धरहू ❀ आतुरगमन बिपिन मग करहू
हम कुन्ती बहुबिधि समुझैहैं ❀ रञ्चक शोक न शीश बिसैहैं
हमहिं उचित बिनु कहे तुम्हारे ❀ सब प्रकार पद सेवन हारे
तदपिकहेउतबअतिभलकीन्हा ❀ महाबिपति तजि धीरज दीन्हा
अब नहिं काम यहां के ठाढ़े ❀ कुरु आयसु आवत भट गाढ़े
तुम कहँ करुणासिन्धु सहाइ ❀ दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई
गमन कीजिये शत्रु अजाता ❀ भये मरण नृप नीकि न बाता
बिदुर बचन सुनि धर्मनरेशा ❀ कहेउ मातुकहँ पुनि संदेशा
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते ❀ मिलिहौं बर्ष त्रयोदश बीते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० मोहिंनहोय लवलेशदुख, तवप्रसाद बन जात।
बीते दिन पद देखिहौं, शोचपरिहरियमात॥
भीम सँदेश बिदुरसन कहेऊ ❀ ममदिशि तात मातुसन कहेऊ
कहेउ सहायक जो यदुराई ❀ बीते दिवस गहौं पद आई
भयो हमार कठिन अपमाना ❀ अमरशरीर तजत नहिं प्राना
होत न कछु अब कीन हमारा ❀ काधों अग्र करिय करतारा
कुरुपति सदृश एक बिनु रौरे ❀ सब शठ देखि परत रिपु मोरे
कोउ सज्जन परमारथबादी ❀ पापी सकल भीष्म द्रोणादी
तुम धर्मिष्ठ बिदुर सब भांती ❀ गदगदगिरा न पुनिकहिजाती
कह पारथ सुनु तात सुजाना ❀ तुम समर्थ बिज्ञाननिधाना
कहब न बिपति मातुसन भारी ❀ जेहिसुखलहहिं न होहिंदुखारी
सो० करेहु यत्न सोइ तात, मातु लहै सुख शोच तजि।
करि कौरवकुलघात, दरशावौं जननी बदन॥
दो० पृथकपृथकमातहिंकहेउ, निजनिजसबनसँदेश।
तेहिअवसरकरुणानिपट, बरणि न जाइ नरेश॥
बार बार कह द्रुपदकिशोरी ❀ सुरति करायहु मातहि मोरी
पूजनीय तुम श्वशुर हमारे ❀ नहिं संदेश पठावन हारे
अनुचित क्षमब कुअवसर जानी ❀ कहउ मातुते मम प्रिय बानी
पदसेवा कर अवसर आवा ❀ भाग्य कठिन तबमोहिं भ्रमावा
जो जीवत राखहिं जगदीशा ❀ धरिहौं आइ चरणतर शीशा
तुव प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे ❀ रहिहैं मोहिं समत सुखारे
अस कहि बिदुरचरण गहि रानी ❀ बिलपत भाषत आरतबानी
पुनि पुनि मिलत धर्म नरनाहू ❀ बहेउ बिलोचन बारि प्रबाहू
तेहि अवसर कुरु आयसु मानी ❀ चहुँदिशि बीर धीर अररानी
गहे अनेक नगिनि करबाला ❀ रूप भयंकर धनुष बिशाला
दो० धर्मसुतहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होइ।
चलत बार कौरव सुभट, कछुक दीजिये खोइ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहिं भायो पारथ बचन, नाय बिदुरपद भाल।
चलौ घटोत्कच ते कहेउ, सत्य धर्म महिपाल॥
लखिकुम्भोत्कचभूपरुख, आतुर बार न लागि।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि, गयो नागपुर त्यागि॥
सबलसिंहसुनि बिदुरमुख, कौरवनाथ हवाल।
कै उदास शकुनी करण, बोलिलियेततकाल॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
पाण्डववनगमनंनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

इति सभापर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

—:o:—

वनपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

जंगलों में पाँचों पाण्डवों व द्रौपदी का दुर्वासादि मुनियों का समागम व अनेक असुरों द्वारा दुःख पहुँचना पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञातवास रहने का विचार अनेक कथाओं में वर्णित है।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ वनपर्व ॥

दो० अब वनपर्व कथा यह, आगे सुनहु नरेश ।
छांड़ो देशहि धर्मसुत, कीन्हों वन परवेश ॥

काम्यक बिपिन रहे तहँ जाई ❀ धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई
जहां बिपिन हैं बहु बिस्तारा ❀ सिंह भालु बाराह अपारा
कामी नाम दैत्य यक रहई ❀ महा सो बीर पराक्रम अहई
ताके डर बहु तपी डेराई ❀ तेहि बन निशिबासर सो रहई
मानुष चाप पाइकै धायो ❀ धर्मराज सन पूछन आयो
किंबर नाम अहै बन मोरा ❀ को तुम बीर अहो बरजोरा
धर्मराज बोले यह बानी ❀ पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी
भीम धनञ्जय नकुल कुमारा ❀ सहदेव है लघु बन्धु हमारा
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं ❀ सत्य बचन तोसों सब कहहीं
यह द्रौपदी अहै पटरानी ❀ हारे राज्य लियो बन आनी

दो० सुनत दैत्य हँसि बोलेऊ, बिधि म्वहिं दीन्ह अहार ।
भीम नाम बलबीर सो, बैरी अहै हमार ॥

रहै बकासुर बन्धु हमारा ❀ ताको भीमसेन संहारा
शंख हमार हिडम्बक रहई ❀ मार्यो ताहि दैत्य अस कहई
सोविधि मोकहँ दीन्ह मिलाई ❀ आजु मारिहौं पांचौ भाई
शोणित करौं भीमकर पाना ❀ तब संतुष्ट होयँ मम प्राना
यह कहि दैत्यरूप तब धारा ❀ वृ एक हँसि भीम उपारा
मार्यो भीमसेन करि क्रोधा ❀ किंबर नाम दैत्य बड़ योधा
मार्यो वृ तासु के माथा ❀ क्रोधित भयो दैत्यकर नाथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकै एक जीति नहिं पायो ❋ दूनों बीर जूझ मन लायो
तब पर्बत यक दैत्य उपारा ❋ भीमसेन के उर पर डारा
मारु मारु करिकै तब धावा ❋ चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा

दो० उठेउ भीम तब क्रोधकरि, मल्लयुद्ध दिय ठान।
जिमि सुग्रीवहिं बालिसों, बिबिधभांति मैदान॥

क्रोधित भीम गह्यो तब ताहीं ❋ दूनौ हाथ दियो कटि माहीं
बहुरि भीम पकरेउ शिरबारा ❋ क्रोधवन्त होइ भूमि पछारा
आरत दूनों कीन्ह चिघारा ❋ मुख ते चली रुधिर की धारा
भीम दैत्य को जबहिं संहारा ❋ छांड़ेउ तब जब प्राण निकारा
बधेउ दैत्य कहँ भीम जुझारा ❋ हर्षित भे तब पवनकुमारा
मिलि सब बन्धु हर्ष उर छाये ❋ दुर्वासा तहँ देखन आये
साठि सहस्र शिष्य लै साथा ❋ बोलेउ बचन सुनहु नरनाथा
हम सब कहँ भोजन करवावो ❋ नातरु ब्रह्मशाप तुम पावो
त्रासवन्त पाण्डव सब भयऊ ❋ तब द्रौपदि हरि सुमिरन करेऊ
सुमिरत श्रीहरि आये जबहीं ❋ क्षुधावन्त भाषेउ तिन तबहीं
भोजन नेकु न कछु गृह अहई ❋ श्रीपतिसों यह द्रौपदि कहई
यदुपति कछू न भोजन अहई ❋ लावो पात्र सो यदुपति कहई
भोजन भाजन लैकर आई ❋ यकु रञ्चक भाजी तहँ पाई
पुनि कृष्णहि अस बचन सुनाये ❋ तीनों लोक तृपित होइजाये
मुनिगणकेर उदर भरि आये ❋ श्रीहरि द्वारावती सिधाये
दुर्वासा कहँ भीम बुलाये ❋ भोजन हेतु चलौ मुनिराये
दुर्वासा तब बचन प्रकाशा ❋ कबहुँ न होइ भक्करु हासा

दो० यह कहिगे दुर्वासऋषि, हर्षित धर्मकुमार।
सूर्य बिनयकरि द्रौपदी, पूजा करि बिस्तार॥

ह्वै प्रसन्न तब रवि बर दीन्हो ❋ मांगु मांगु यह कहि सो लीन्हो
कहा द्रौपदी धर्म उपाई ❋ अन्नपूरणा देहु गुसांई
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ आते दीन्हों ❋ धर्मराज कहँ हर्षित कीन्हों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रतिदिन तहँ ब्राह्मण विधिनाना ❀ भोजनकरैं बहुत सुख माना
साठि सहस तहँ मुनिवर आये ❀ नित प्रति तहँ भोजन करवाये
ऐसे धर्मराज तहँ रहई ❀ परमहर्ष बन भीतर अहई

दो० ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन, बनमें धर्म भुवार ।
पाण्डव विजय रहस्य है, सुने पाप सब छार ॥

आगे सुनु जनमेजय राजा ❀ धर्मराज कीन्हो जस काजा
सरवर एक सुभग बन रहेऊ ❀ जल हित तहँ सहदेवहि गयऊ
जलमें एक जन्तु तहँ रहई ❀ पायो शब्द बचन सो कहई
को तुम जीव कहौ अब भाई ❀ कहौ सो सब मम कथा बुझाई
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हो ❀ तुरतहि ग्राह लीलि तब लीन्हो
यहि प्रकार तहँ चारिउ भाई ❀ लीले ग्राह सरोवर जाई
धर्मराज तहँ करो विलापू ❀ पाछे गये सरोवर आपू
जल भाजन देखेउ तब राई ❀ तट में चरण चिह्न हैं भाई
अरु बक चिह्न पाइ लखि राजा ❀ तब चलि गयो सरोवर काजा
लखि भाजन राजन तब गहई ❀ पावन शब्द ग्राह तब कहई

दो० को जीवत को जागतो, कहो भेद समुझाइ ।
बिन भाषे सरवरहिते, कोउ न जल लैजाइ ॥

धर्मराज तब मनमहँ जाना ❀ यही जन्तु कछु कस्यो बिधाना
धर्मराज तब कह समुझाई ❀ जीव जौन सो सुनु मनलाई
दया शील समता मन रहई ❀ सत्य छोड़ि मिथ्या नहिं कहई
विष्णुभक्ति आनै करि ज्ञाना ❀ प्रेमभाव मनमहँ जो ठाना
जाके हृदय कपट है नाहीं ❀ परसेवक सो है जगमाहीं
जीवै सदा सो भक्त कृपाला ❀ तू किमि जीवै सुनु चण्डाला
कहे बचन अस धर्मभुआला ❀ तब छोड़ेउ सहदेवै काला
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी ❀ धर्मराज तब कहेउ बखानी
सेवा मात पिता की करई ❀ सदा धर्म हिरदय महँ धरई
पाप कपट जिय कबहुँ न जाना ❀ जीवै सदा भक्त भगवाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तू किमि जीवै जो निज चोरा ❀ परो है अधम काल के फेरा
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं ❀ नकुलहि कहँ छांड़ेउ पुनि तबहीं
और सत्य अपने जिय माना ❀ हैं यह धर्मराज जिय आना

दो० को जीवत है जगत में, सुनिये धर्मकुमार ।
सुनु रे पापी पातकी, धर्मज बचन उचार ॥

देह आपनी हठ करि जाना ❀ करै योग बिधि बेद प्रमाना
ये षटचक्र बिदारै जोई ❀ जीवै सदा भक्तजन सोई
तू तो भक्ति धर्म नहिं जाना ❀ सदा मृत्युमुख सुनु अज्ञाना
इतना सुनि त्यहि अर्जुनबीरा ❀ उगिलि ग्राह ह्वै हर्ष शरीरा
पुनि तब ग्राह कही यह बानी ❀ धर्मराज सुनि कह्यो बखानी
जीवत योग देह महँ होई ❀ भावत कर्म धर्म नहिं सोई
कामी क्रोध लोभ अहँकारा ❀ कालरूप जानै संसारा
जीवे जो यह भक्त सुजाना ❀ जीवै सदा भक्त भगवाना
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी ❀ परो नरक चौरासी खानी
सुनत भीम उगिलेउ तिहिबारा ❀ बिनय कीन्ह तिहिं बारम्बारा

दो० सुनिये भूपति धर्मसुत, जानत सब संसार ।
छुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार ॥

परस्यो चरण भूप तेहिं जबहीं ❀ दिव्यरूप राजा भो तबहीं
धर्मराज पूछ्यो हरषाई ❀ कौन कहौ गति कैसे पाई
तबहि राउ सों कहेउ बिचारी ❀ सुनहु धर्मसुत बिपति हमारी
हम तौ यही शाप हित पाई ❀ ताते तव लीलेउँ सब भाई
सो तब तुमहिं चीन्हि हम पायो ❀ तुमहीं ते उद्धार करायो

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते वनपर्व
धर्मराजग्राहसंवादः प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई ❀ जौन हेतु हम यह गति पाई
मैं यकबार अहेरे गयऊं ❀ कर्महीन तबहीं सों भयऊं
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ ❀ मम सँग अश्व न एकौ रहेऊ

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परेउँ भूलिकै सो बन माहीं ❀ बिपिन सघन तहँ सूझ्यो नाहीं
तीनि कहार रहे तेहि पाहीं ❀ एक मृतकभा तेहि बनमाहीं
कर्महीन ते दुख मैं लहेऊ ❀ करत तपस्या ऋषि बन रहेऊ
तौन महाऋषि जान न पाये ❀ तिन्हैं कहार तहां धरि लाये
आनि पालकी माहिं लगाये ❀ निजपुरको फिरि तब हम आये
द्वारे धरी पालकी आई ❀ बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाई
भोजनपान खबरि नहिं लयऊ ❀ बासर गयउ राति पुनि भयऊ

दो० बासर बीते रैनि भै, कीन्हेउँ मैं उच्चार ।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जागत संसार ॥

तब मुनि कही तहां यह बाता ❀ जन्म मृत्यु दुख सुख सँग ताता
क्षुधा तृषा ते नित दुख सहई ❀ करत बन्ध सो सुख नहिं लहई
जानै यह जग दुःख समाजा ❀ सो जागै सब सोवत राजा
दूजे यहै चलाई बाता ❀ जागै कौन कहौ सति ताता
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना ❀ योगी योगकरौ नित ध्याना
कामरु क्रोध लोभ अहँकारा ❀ बसैं देह में सब बटपारा
सदा ज्ञान ते रहे सचेता ❀ सोवत जागत रहै सो येता
तीजे पहर पूछ मैं आही ❀ सो सुनि बोले पुनि मुनि पाही
जो कोइ ध्यान करै जग माहीं ❀ ताको संकट परै न काहीं
दिव्यज्ञान करि हरिको जानै ❀ हिंसा कपट हृदय नहिं आनै
जो दुःखी सो संशय भरई ❀ परबश ह्वै प्रचार सो करई
सो जागै सब सोवै राजा ❀ सोवै खोवै आपन काजा
चौथे पहर कहेउ को जागे ❀ क्रोधित मुनि बोले मो आगे
सुनु मूरुख जागै जो ज्ञानी ❀ तू किमि जागै गृह अभिमानी
ग्राह होय राजा तैं जाई ❀ भूप शाप ऋषि को यह पाई

दो० तब मैं बिनती कीन्हेऊं, भा बड़ दोष हमार ।
कृपा कीजिये महामुनि, हों ज्यहि विधि उद्धार ॥

बोले मुनि तब परम उदारा ❀ द्वापर युग उद्धार तुम्हारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डुपुत्र अहहैं बन माहीं ❀ धर्मपुत्र धर्मै मन चाहीं
परसे अंग होब उद्धारा ❀ पुनि दीन्ह्यो बर याहि प्रकारा
सो राजा तव दर्शन पाई ❀ मम उद्धार भयो अब आई
यहि प्रकार ते पायउँ शापू ❀ मेटेउ शाप कृपा करि आपू
अस्तुतिकरि राजा दिवि गयऊ ❀ धर्मराज मन हर्षित भयऊ
भाइन सहित हर्ष हिय भयऊ ❀ तेहि थल बसे धर्म सुख लयऊ
सुनो भूप जनमेजय बाता ❀ सो जड़भरत रह्यो मुनि त्राता

दो० रहे हर्षि बनमाहिं सो, परम मनोहर ठांय।
सहित द्रौपदी राजतहँ, अरु सब चारिउ भाय॥

तब सो द्रुपदराज भगवाना ❀ धृष्टद्युम्न सँग करेउ पयाना
मिलन हेतु सो बनमहँ आये ❀ बहु बिधि उन्हैं कृष्ण समुझाये
दुखसुख यहिबिधिकरतबराजा ❀ हस्तिनपुर कर राज समाजा
यहिबिधि मिलेउतिनहिं सोजाई ❀ सहित द्रौपदी पांचौ भाई
धौम्यऋषिहि मिलिबहुसुखमाना ❀ तबहिं द्रुपदगृह कियो पयाना
पाण्डव बसहिं जौन बनमाहीं ❀ काम्यक वन उत्तम है जाहीं
बहु दिन भये तौन बनमहहीं ❀ चारिउ बन्धु धर्मसुत रहहीं

दो० बहुदिन काम्यकबनहिं में, रहे पाण्डु तहँ आइ।
ह्वै उदास पुनि धर्मसुत, छांड़ो सो बन जाइ॥

तबहिं द्वैत बन पाण्डव गयऊ ❀ मार्कण्डे मुनि दर्शन दयऊ
नारद आदि सुनी यह तबहीं ❀ पाण्डव गये द्वैत बन जबहीं
तहां बसहिं बहु ऋषय समाजा ❀ पाण्डव शोक मेटिबे काजा
सो सम्बाद बहुत बिस्तारा ❀ कछु संक्षेप सुनौ सुख सारा
बसे द्वैत बन पाण्डव आई ❀ तहां द्रौपदी बात चलाई
कहे बचन तब धर्मनरेशहि ❀ बिपिन बास बहु सहे कलेशहि
पापी दुर्योधन जग जाना ❀ शकुनी कर्ण दुशासन नाना
अन्ध नृपति कछु कहो न आई ❀ सुनो धर्मसुत पांचौ भाई
हमहिं सहित उन बनहिं पठाये ❀ दुर्योधन छल ख्याल न लाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नेकु दया हिरदै नहिं लायो ❀ कपट अक्ष करि बनहिं पठायो
दो० आपु सहेउ बहुदुःख बन, हमैं सहो नहिं जाइ ।
दुर्योधन अपकारि सों, रानी कह्यो बुझाइ ॥
नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा ❀ ताकर यहफल बिधि बहु दीन्हा
भीम बीर अर्ज्जुन धनुधारी ❀ पलमा करैं सकल संहारी
ये तुम्हरे बाचा के कारन ❀ सकैं न कौरवदल संहारन
आज्ञा देउ सुनौ हो राऊ ❀ मारैं शत्रु देश तब पाऊ
क्षमा केर अवसर अब नाहीं ❀ छिपिकै रहब कहां धौं जाहीं
क्षमा के समय क्षमा है भारी ❀ युद्ध समय कीजै हठि रारी
राजधर्म क्षत्री के कर्मा ❀ मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा
द्रौपदि केर बचन ये सुनिकै ❀ बोले बचन धर्म मन गुनिकै
कहे बचन राजा त्यहि ठाईं ❀ धर्महिं सदा वेद मो अहईं
बारह संवत निजमुख हारा ❀ चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा
दो० किये क्रोध सम पाप नहिं, राजा कह्यो बुझाइ ।
क्रोधकिये पुनि धर्म नहिं, भाषेउ पाण्डव राइ ॥
दान धर्म सब कालहि करई ❀ परै दुःख तेहि जनि परिहरई
है सब घटमें पुरुष प्रधाना ❀ दुखसुख सब समान करिजाना
एक पुरुष है सुख, दुख दाता ❀ दूसर अहै न सुनु मम बाता
सुनत भीम क्रोधित ह्वै गयऊ ❀ धर्मराज सन बोलत भयऊ
जोपै धर्म महासुख पाये ❀ तौ बनको सहेतु केहि आये
कौन धर्म महँ बहुसुख पाये ❀ देखत देखत राज्य गँवाये
कौन धर्म्म दुर्योधन राऊ ❀ राज्यको सुखसो सकल बनाऊ
आज्ञा देउ बधौं सो भाई ❀ फिरि पीछे लैजावँ लवाई
तुम्हहिं राज्य बैठारहुँ राजा ❀ ऐसो जाय करौं सब काजा
अर्ज्जुन धनुष खैंचि शर धारैं ❀ यक क्षणमें कुरुराज संहारैं
दो० तुम्हैं हीनबल कौरवा, जानैं अपने जीम ।
आज्ञा देवहु धर्मनृप, कह्यो कोप करि भीम ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीम बचन सुनि राजा कहई ❀ जुआ खेल हारे सब अहई
बाचा हारि करौ सत कर्मा ❀ पीछे युद्ध कीजिये धर्मा
धर्म न छांड़ब जबतक प्राना ❀ धर्म ते राज्यवृद्धि जग जाना
ताही समय ब्यास तहँ आये ❀ हर्ष हृदय पांडव समुझाये
तब यकमन्त्र ब्यासमुनि कहेऊ ❀ सुनिकै धर्मराज सुख भयऊ
पुनि यह मन्त्र जपौ तुम जाई ❀ पारथते तब कहेउ बुझाई
देउँ मन्त्र जपतै बर पैहौ ❀ युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ
इन्द्र बरुण यम शंकर देवा ❀ होत सबै परसन्नहिं सेवा
यह कहिकै ऋषि ब्यास सिधाये ❀ काम्यकबन पुनि पाण्डव आये
काम्यकबन पुनि भयउ प्रकाशा ❀ पांचौ बन्धु द्रौपदी पासा

दो० यहि प्रकार ते बनहिं महँ, रहे पाण्डुसुत आनि।
जनमेजय नृप आगेहू, बैशम्पानि बखानि॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वकाम्यक
वनपाण्डववासवर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

सुनु राजा रहैं जौन प्रकारा ❀ चारिउ बान्धव धर्मकुमारा
कैतिक दिवस रहे तिहि ठाहीं ❀ यकदिन पारथ नृपसों काहीं
आज्ञा होय जाउँ मैं तहँवां ❀ गौरीपति के दर्शन जहँवां
आज्ञा पाइ चरण छुइराई ❀ चढ़ो हिमाञ्चल पर्वत जाई
ब्यास मन्त्र जो बिद्या दैऊ ❀ तौन मन्त्र जपि ध्यान लगैऊ
फल औ मूल भषे त्रयमासा ❀ पुनि दुइमास भयो उपवासा
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये ❀ पारथ सों इमि बचन सुनाये
काहे तप कठोर तनु त्रासा ❀ मन इच्छा सो करौ प्रकासा
जो बाञ्छा उर अहै तुम्हारे ❀ होइ सिद्धि सुनु बचन हमारे
भये शम्भु कहि अन्तर्द्धाना ❀ तेहि बन पारथ पुनि तप ठाना

दो० अन्तर्द्धान महेश भे, अरु अर्जुन बर पाइ।
ह्वै प्रसन्न तप करत भे, शंकरसों मन लाइ॥

तप साधत बीते कछु काला ❀ और चरित्र सो सुनौ भुवाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूप किरात धरो हर तहँवां ❋ करत उग्र तप पारथ जहँवां
दोउकर धनुषबाण कर लीन्हो ❋ रूप सुन्दरी गौरी कीन्हो
भूत कटक सब संग लेवाई ❋ कोल भील कर बेष बनाई
अहै नाम शुक दैत्यकुमारा ❋ शूकर रूप घोर पुनि धारा
पारथ के आगे भे आई ❋ रूप किरात महेश्वर जाई
चला दैत्य तारक के काजा ❋ करो विचार भूत के राजा
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे ❋ ध्यान छांड़ि कै पारथ जागे
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ ❋ तब किरात अर्जुन सन कहेऊ
बहुत परिश्रम करि मैं आयों ❋ बड़ो पराक्रम करि मैं पायों

दो० तेहि चाहत है मारनो, अरे मूढ़ अज्ञान।
अर्जुन कहो न मानि तब, हन्यो तासु शिर बान॥

सुवररूप तजि दानव भयऊ ❋ तब किरात मन क्रोधित भयऊ
मारेसि सुवर आपने हाथा ❋ पठवों तोहिं सुवरके साथा
यमपुर अबहिं पठावौं तोहीं ❋ तैं अब बीर बिरोधेसि मोहीं
जो शक्ती है तनु तुव हारी ❋ ताते अस्त्र देहु परहारी
सुनि कै क्रोध धनंजय ठाना ❋ पुनि किरातपर बर्ष्यो बाना
एकौ बाण न भेदेउ अङ्गा ❋ बिस्मय करि पारथ मन भङ्गा
तब हँसि शंकर बचन बखाना ❋ और बाण तोहिं करौं निदाना
अर्जुन धनुष हन्यो बर जोरा ❋ टूट्यो अस्त्र तौन पुनि घोरा
अर्जुन कह्यो किरात न होई ❋ होय विष्णु की शंकर सोई
माया बपु करि बंचेउ मोहीं ❋ भयो चकित चिन्ता मन सोहीं

दो० खड्ग घाव जो मारेऊ, सो निष्फल ह्वै जाय।
तबहिं वृक्ष यक लीन्हेऊ, पारथ क्रोधित धाय॥

शंकर भूत बाण अस मारा ❋ काटि वृक्ष भूतल में डारा
तब पारथ मुष्टिक अस मारा ❋ पौरुष करि अर्जुनहिं प्रहारा
शंकर पुनि तहँ हाथ पसारा ❋ अल्प तेज को पारथ मारा
लागत भूमि परेउ मुरझाई ❋ क्षणक एक पुनि चेत सो आई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहु रहु पुनि कहि उठ्यो प्रचारी ❀ तब सो हृदय निहारि निहारी
प्रथमहिं पूज्यो शंकर जोई ❀ पारथ ताहि बिलोक्यो सोई
सो माला हर गरे निहारा ❀ देखि चकित भे पाण्डुकुमारा
निश्चय जान्यो शंकर होई ❀ परेउ दौरि चरणनपर सोई
क्षमा करौ यह चूक हमारी ❀ बिनु जाने कीन्हीं मैं रारी
तब शंकर प्रसन्नचित भयऊ ❀ हित करि चितै परमसुख दयऊ
मैं प्रसन्न हरि हर कहिदीन्हा ❀ तब अर्जुन प्रणाम सो कीन्हा

दो० पशुपतास्त्रमन्त्रहिसहित, हर अर्जुन कहँ दीन्ह ।
हर्षित गात धनञ्जयहु, चरणकमल गहिलीन्ह॥

तुमसँग युद्ध पार को पाई ❀ ऐसी शक्ति न काहू भाई
अस्त्र देइकै पशुपति नाथा ❀ अन्तर्द्धान भये गणनाथा
हर्षवन्त कह पारथ बैना ❀ मैं शंकर देख्यों भरि नैना
धनि जीवन जग आज हमारा ❀ जो शंकर निजनैन निहारा
पारथ बहुत हर्ष जिय पायो ❀ तौने समय देव सब आयो
इन्द्रआदि सँग सब दिकपाला ❀ पारथ ऊपर भयो दयाला
हर नारायण सुरपति कहई ❀ तुम नररूप जन्म सुत अहई
भूमि सहै नहिं क्षत्री भारा ❀ तेहि कारण अवतार तुम्हारा
जेहिबिधि अस्त्र जौन हैं जेते ❀ सिखै देब हम तुमकहँ तेते
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हे ❀ मन्त्रनसहित समर्पण कीन्हे

दो० कालदण्ड यम दीन्हेऊ, बरुण दियो जलबान ।
बज्रदण्ड इन्द्रादि दै, हर्षित भो बलवान॥

जब उपकार अग्नि को कीन्हो ❀ पावक अस्त्र तहां बहु दीन्हो
सप्तपञ्च गाण्डिव धनु लीन्हो ❀ नन्दिघोषरथ हुतभुक दीन्हो
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हो ❀ तबहीं इन्द्र कछुक शिष कीन्हो
मातुलसाथ स्वर्ग कहँ ऐहौ ❀ अस्त्र अनेक तहां तुम पैहौ
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ ❀ रथ सह सूत उपस्थित भयऊ
देवसभा जब पारथ गयऊ ❀ नानाअस्त्र इन्द्र तब दयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुबिध अस्त्र सिखाये ताही ❋ इन्द्रलोक पारथ जहँ आही
देवअस्त्र पढ़ि सब बिधि जानी ❋ सुरपति जिष्णु परमसुख मानी
दो० सिखै अस्त्र बहु पारथहि, देवपुरी महँ जाय।
चिन्ता करत युधिष्ठिरहु, पारथ को हित पाय॥
कौने देश धनञ्जय गयऊ ❋ चारिउ बान्धव शोचत भयऊ
कीन्ह्यो शोच द्रौपदीरानी ❋ तबहिं धर्मसुत कह्यो बखानी
विद्या महाव्यास ते पायउ ❋ तौने कारण बनहिं सिधायउ
गौरीपति अवराधन गयऊ ❋ कौनहेत जिय बिस्मय भयऊ
हर पूजाते संशय नाहीं ❋ है कल्याण लोक तिहुँ माहीं
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा ❋ इमि सबको समुझावत राजा
तप कारण पारथ तहँ जाई ❋ सुनत भीम तब कह्यो रिसाई
जो वियोग पारथ सँग होइ ❋ प्राण त्याग करिबो सब कोई
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा ❋ सहतउँ कत यह दुःख समाजा
क्षमा किये राजा कह लहिये ❋ दिनदिनदुखबहुविधिकिमिसहिये
दो० राज देश सब छूटेऊ, राव तुम्हारे हेत।
देहु रजायसु राज तुम, अबते होउ सचेत॥
मरिये शत्रु देश तब पाई ❋ बनको दुःख सहो नहिं जाई
बारह वर्ष सहे दुख भारा ❋ एक बर्ष अज्ञात भुवारा
अर्जुन बीर बड़ो धनुधारी ❋ और सहायक श्रीबनवारी
राव तुम्हारी आज्ञा पावों ❋ दुर्योधन शतबन्धु नशावों
भीमवचन श्रवणन सुनि लीन्हे ❋ धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हे
सुनो भीम जो बचन बखानौ ❋ दोष हमार सत्य करि जानौ
सुनि मम बचन रहौ अरुगाई ❋ पीछे बन्धु करौ मनुसाई
अब यहि समय रहो चुप भाई ❋ तबै दस्वऋषि तहँ चलिआई
धर्मराज उर आनँद छाये ❋ अर्घ देइ आसन बैठाये
कहेउ आप सब बरणि कलेशा ❋ महादुखित होइ बरणि नरेशा
दो० तजेउँ देश बहु दुख सहेउँ, दुर्योधन के काज।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आदि अन्त सुनि आगे, बरजो दुख सब राज॥
सुनिकै तब दुख कहो बखानी ❀ मिटै न कर्मलिखा सुनु बानी
तुम तो बड़ो दुःख नृप पाये ❀ राज्य छोड़ि बनवासहि आये
नल दुख सुनो मनहिं धरि राजा ❀ घटै पाप बहु सौख्य समाजा
पांसे खेलि हारि सब देशा ❀ रानी सँग बन कीन्ह प्रवेशा
एकबस्त्र दोनों ढिग रहेऊ ❀ सोऊ तजि राजा बन गहेऊ
पायउ सो दुख बहु बन जाई ❀ छुट्यो दुःख भे राजा आई
ताको कहउँ सहित बिस्तारा ❀ सावधान होइ सुनो भुवारा
तासु दुखहि सुनिहौ जो राऊ ❀ सुनतहि प्राण न धैर्य रहाऊ
पायउ पतिव्रता दुख जेता ❀ तोपर कहो जाइ नहिं तेता

दो० सुनतदुखहि बहुनृपतिके, पारथ बीर न होइ।
धर्मराज के सम्मुखहि, कहतदस्वऋषिसोइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
नलोपाख्यानंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध यक देशा ❀ तहँ पुनीत नल नाम नरेशा
बहु बिस्तार कहो नाहिं जाई ❀ लघु करि ताहि कहौं समुझाई
यक दिन राव सरोवर जाई ❀ पंगति हंस देखि बहु पाई
तबहीं हंस पकरि नृप जाई ❀ रोइ हंस तब नृपहि सुनाई
राजा बेगि छांड़िदे मोहीं ❀ कन्या एक मिलावों तोहीं
देश बिदर्भ भीम नृप रहई ❀ कन्या एक तासु गृह अहई
दमयन्ती बिधि रूप सँवारी ❀ देखि गिरा रति रूप निहारी
सुनतहि राज हर्ष मन लीन्हा ❀ तुरतहि छांड़ि हंस कहँ दीन्हा
राजा गे अन्तःपुर माहीं ❀ देश बिदर्भ हंस उड़ि जाहीं
उतरो जाइ हंस सो तहँवां ❀ पारिजात फूले बहु जहँवां

दो० उत्तम सरवर देखिकै, उतरो हंस बिचारि।
बिधिरचनासबसखिनसँग, आई राजकुमारि॥

देखि हंस कहँ राजकुमारी ❀ गहन हेत तब बुद्धि बिचारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब वह हंसरूप अति धारेउ ❀ निजबश कन्या को मन कारेउ
सुनु दमयन्ती बात हमारी ❀ नैषध देश महीपति भारी
नल राजा उपमा को कहई ❀ देखत रूप मोहि जग रहई
तब यह सफल तोर है रूपा ❀ जो पति पावहु नलसों भूपा
सुनि दमयन्ती हृदय जुड़ाना ❀ हंसबचन गुनि हर्षित माना
कह दमयन्ती करहु उपाई ❀ जाते होइ मोर पति राई
भये स्वयम्बर उनकहँ बरिहौं ❀ अरु काहूको चित्त न धरिहौं
सुनत बचन यह कहेउ बुझाई ❀ जात अबहिं मैं कहौं उपाई
बढ़ो हंस तब पंख पसारी ❀ देखि रही तब राजकुमारी

दो० हंस देश नैषध गयो, राजहि कहा बुझाइ।
कन्या मन तुमसों बस्यो, करहु हर्ष मन राइ॥

राजा सुनत हर्ष मन कीन्हो ❀ पूरबकथा कहन मन लीन्हो
देखि सुताकर चितहि उदासा ❀ रानी नृपसों बचन प्रकासा
राजा सन रानी कह बाता ❀ कन्या योग स्वयम्बर गाता
सुनत बचन राजा मन भायो ❀ देश देश तब बिप्र पठायो
राजा भीम स्वयम्बर कीन्हो ❀ भूपन सबहिं निमन्त्रण दीन्हो
नल राजा कहँ नेवत पठावा ❀ करि निजसाज तुरंग सिधावा
नारद सुरपुर बात जनाये ❀ चारो दिगपति सुनतहि धाये
इन्द्र बरुण यम पावक अहई ❀ चारिहु देव चले मुनि कहई
मारग मांझ मिले नलराई ❀ सुरपति बचन कहो समुझाई
हम सब जात स्वयम्बर काजा ❀ हँसिकै बचन कही सुरराजा
हमरे हेत दूत है जाहू ❀ दमयन्ती हमसों कर ब्याहू
चारि जने हम यक मनमाना ❀ सुनि नल राजा बहुत लजाना

दो० बोले नल नृप मन्दिरै, रहैं बहुत रखवार।
राजसुता पहँ कैसही, जायँ बचन उच्चार॥

इन्द्र कहो मम आज्ञा होई ❀ तुमहिं जात देखै नहिं कोई
करि मन दुखित चले नृप तहँवां ❀ राजकुँवरि अन्तःपुर जहँवां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दूनों जन ते दरशन भयऊ ❀ दुवौ रूप मूर्च्छित ह्वै गयऊ
सखी धाइ तब शीतल नीरा ❀ सींचेउ तब जल दुवौ शरीरा
दूनों चेत भये मन माहा ❀ तब परचा दीन्हों नरनाहा
जौन प्रकार इहां को आये ❀ आवत काहु न देखन पाये
इन्द्र बरुण यम पावक आये ❀ तेइ दूत करि मोहिं पठाये
चारौ जन कहँ मनमहँ धरहू ❀ एक जने कहँ स्वामी करहू
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई ❀ देव नाग नर चित्त न अहई
केवल पति हम तुम कहँ जाना ❀ देव नाग नहिं कोउ मनमाना

दो० जादिन हंसहि रूपकह, ता दिन मैं पति जान ।
देव नाग नर गन्धरब, हृदय और नहिं आन ॥

राजा कहेउ दोष म्वहिं होई ❀ कहैं देव हमहीं सब कोई
ह्वै चर आपन काज सवाँरा ❀ देव अवज्ञा दुख है भारा
कह कन्या नृप देवन साथा ❀ पठयहु तुमहिं होन नरनाथा
जिय अपने मन तुमहीं आनों ❀ तुम तजि कैसे दूसर जानों
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये ❀ देवन पै नल राजा आये
देव सबै तब पूछन लीन्हो ❀ तबहीं नल यह उत्तर दीन्हो
मोहिं छांड़ि मन और न माना ❀ मैं गुण रूप तुम्हार बखाना
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना ❀ राजसभा नल करेउ पयाना
देश देश के राजा आये ❀ अद्भुत भूषण रूप बनाये
चारिउ देव भये नल रूपा ❀ लखि नहिं परे सो एकस्वरूपा

दो० बैठ जहां नल भूपबर, सब करि करि शृङ्गार ।
सँग प्रोहित कर माल लै, सभा मांझ पगुधार ॥

प्रोहित सब कर नाम बताये ❀ नल राजा कर नाम सुनाये
कन्या देखि तहां यह रूपा ❀ पांचौ जन बैठे नलरूपा
बिनय करत तब राजदुलारी ❀ अयि देवहु मैं शरण तुम्हारी
नैषध पति है स्वामी मोरा ❀ करौ प्रकट पद बन्दत तोरा
सुनिकै बिनय दया सुर कीन्हे ❀ आपन रूप बहुरि धरि लीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चीन्हे नल तब राजदुलारी ❀ जयमाला ताके उर डारी
राजा सत्य बचन कह सोई ❀ देवन तजि जनि हम मन होई
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी ❀ क्षणयक तुमहिं करब नहिंन्यारी
दीन्ह देवपति यह बरदाना ❀ इन्द्र कहे सम पवन पयाना
सुमिरत तुम ढिग तुरतहिं ऐहौं ❀ याते सदा तुम्हैं सुख दैहौं

दो० पावक अग्नी शक्ति दै, बरुण दियो जलबान।
धर्म बिषे रति यम दई, भे सब अन्तर्द्धान॥

देव सबै बर देकर गयऊ ❀ आशाभङ्ग सकल नृप भयऊ
यहि प्रकार दमयंति सगाई ❀ वेदमन्त्र करि जो बिधि गाई
दायज भीम नृपति बहुदीन्हो ❀ ह्वै कै बिदा चलन चित कीन्हो
बाजन शब्द मनो घन गाजा ❀ नगर आपने आयउ राजा
ऐसे आइ बसे रजधानी ❀ नल राजा दमयन्ती रानी
केतिक दिवस बीति इमि गयऊ ❀ नाना केलि रङ्ग रति भयऊ
नृपके पुत्र प्रकट यक भयऊ ❀ इन्द्रसेन अस नामहिं लयऊ
कन्या एक भई पुनि ताके ❀ बहुतक हर्ष भई मन वाके
ऐसे रँगरस राजा कीन्हो ❀ इन्द्रसरिस उपमा कहँ लीन्हो
धर्मवन्त नैषधपति राजा ❀ पालै प्रजा पुत्रके काजा

दो० राज्य करै नलराजही, करि बहुधर्म प्रकाश।
दमयन्ती अरु भूपवर, पूजेउ दूनों आश॥

आगे सुनो धर्मभुव राऊ ❀ देवलोक कर करेउ उपाऊ
बैठे सभा देवता जाई ❀ कलियुग बैठ तहां सुख पाई
इन्द्र तहां यक बात चलाई ❀ दमयन्ती राजा नल पाई
देवन केर करेउ अपमाना ❀ नलराजा कहँ पति करि जाना
सुनि यह कलियुग उठा रिसाई ❀ बोलेउ बचन क्रोध जिय लाई
नलके निकट जात सुरराई ❀ राज छोड़ावउँ निज बरिआई
कलियुग द्वापर दोनों भाई ❀ पहुँचे नगर नैषधहि आई
द्वापर ते कलि कह मुसुकाता ❀ होहु अक्ष यह सुनु मम बाता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हम अब बिप्ररूप ह्वै जैये ❀ चलिये अब पुष्करसों कहिये
पुष्करसों यह तब करि बाता ❀ तुम अब जीतौ नल कहँ ताता
दो० जीतिलेहु नलराजही, कह कलियुग समुझाइ ।
बैलरूप तब कलियुग, कहेउ तासु ते आइ ॥
धरि यह रूप उन्हैं समुझाई ❀ नल पहँ जाउ स्वरूप बनाई
तहां पुनीत रहै नल राई ❀ तिन के बदन प्रवेशहु जाई
एक समय बनमें नल राजा ❀ तृषा लागि जल लीन्हेउ राजा
यहिप्रकार तब अवसर पाये ❀ नलशरीरमहँ कलियुग आये
पुष्कर गे तब नलके पासा ❀ जाइ करेउ यह बचन प्रकासा
जुआ हेत आयहुँ तुम पाई ❀ आजु दुवो जन खेलिय भाई
नल राजा के मन महँ आई ❀ खेलन हेत सो करेउ उपाई
दमयन्तीके बचन न भाये ❀ नलराजा सब द्रव्य गँवाये
सोन रूप जो लाव भुवारा ❀ धरत दाउँ पलमहँ सब हारा
गज तुरंग हारे सब राऊ ❀ एकौ बार न जीत उपाऊ
दो० बहुत दावँ जब लायऊ, हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मन्त्री संग लै, आये नल दरबार ॥
रानी अरु मन्त्री समुझाये ❀ राजाके कछु मनहिं न आये
रानी कह सब हारे राजू ❀ खेलु न अब उठि चलु नलराजू
रोइ कही छूटत सब देशा ❀ झूठ बचन नहिं मानु नरेशा
एक सखी बोली तेहि पासा ❀ पठवो पुत्र सासुके पासा
वह सो आइ यहां लै जैहै ❀ सुत कन्या बिदर्भ पहुँचैहै
कहिये और बात कछु नाहीं ❀ पढ़न हेत पठये तुम पाहीं
सुत कन्या तब रथ बैठावा ❀ सारथि देश बिदर्भ पठावा
पहुँचे बेगि सारथी तहँवां ❀ देश बिदर्भ भीम नृप जहँवां
दमयन्ती पठये लै साथा ❀ सुत प्रतिपाल करौ नरनाथा
खेले जुआ कहेउ सो गाथा ❀ चिन्तावन्त भये नरनाथा
दो० यह कहि सारथि तब चलो, राजहिकियोजोहार ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुत देश तहँ देखिकै, अवधनगर पगु धार ॥

है ऋतुपर्ण भूप अस नाऊं ❀ ह्वै सारथी रहे तेहि ठाऊं
राज्य सकल तब पुष्कर जीता ❀ यह कलियुग कीन्हेउँ बिपरीता
पुष्कर कहो रहो कछु अहई ❀ दमयन्ती लावहु यह कहई
सुनत राउ भो क्रोध अपारा ❀ रानी के आभरण उतारा
हारे अस्त्र आभरण जेते ❀ राज स्थान आदि पुर तेते
सर्बस हारि उठे नल राजा ❀ पांसा खेले भयउ अकाजा
दमयन्ती जानो यह राजा ❀ कियो चलन बन केर समाजा
रोइ चली दमयन्ती रानी ❀ सो करुणा किमि करौं बखानी
राज्य तजा बनबास सिधाये ❀ ताकी करुणा जाति न गाये
दासी दास बहुत बिलखाहीं ❀ दमयन्ती नृप पाछे जाहीं

दो० चले जात नृपराज सो, पुरजन धीर धराय।
दमयन्ती नृप ऊपमा, रामचन्द्र सों जाय ॥

पुष्कर दूत फिरे सब गाऊं ❀ नलराजा कर लेब न नाऊं
उनहिं कोउ जो भोजन देहीं ❀ पकरि ताहि कारागृह देहीं
नगर लोग नृप पाछे जाहीं ❀ भयबश होइ बहुत बिलखाहीं
बाहर नगर रहे दिन तीनी ❀ भोजन खबरि न केहू लीनी
क्षुधावन्त तब राजा भयऊ ❀ पक्षि एक तहँ देखत भयऊ
सुनु रानी यह बचन हमारा ❀ यह पक्षी है आजु अहारा
आपन बसन तासु पर डारो ❀ सो पक्षी लै गगन सिधारो
गा अकाश तब बोल्यो बयना ❀ हमैं न अब तुव देखौ नयना
खेलि अरु सब राज्य गँवावा ❀ बसन हीन तबहीं सुख पावा
राजा सुनि यह चकित भयऊ ❀ बसन लिये वह पक्षी गयऊ

दो० राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्रान।
परमहंस यह देहते, चाहत कियो पयान ॥

अर्द्ध बसन पहिरो नरनाहा ❀ रानी संग चले गहि बांहा
दमयन्ती धीरज धरि कहई ❀ दुख सुख नारि पुरुष सब सहई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चले राह राजा अरु रानी ❀ दै राहैं तब आइ तुलानी
दक्षण दिशि यक मारग जाई ❀ रानीमन बोले नलराई
दूसर मारग सुनु मन लाई ❀ देश बिदर्भ सूत यह जाई
पाय पितागृह सुख तुम रहऊ ❀ संग हमारे दुख किमि सहऊ
रानी सुनत भरे जल नयना ❀ रोदनकरति कहतिअस बयना
कन्त चित्त है तुव थिर नाहीं ❀ ऐसे बचन कहत मुख माहीं
पतिके दुखलौं त्रिय दुख होई ❀ पितुको राज्य कामकेहि सोई
जो तुम दुख बन सहौ अपारा ❀ तौ पतिसुख हमार सब छारा

दो० कुण्डिनपुर कहँ चलौ नृप, जो मनमानै कन्त।
तुमकहँ देखत भीमनृप, करिहैं प्रेम अनन्त॥

बोले राव भीम नृप पाहीं ❀ ऐसे रानि जाब हम नाहीं
हमको पन्थ देखावत कन्ता ❀ कौनकाज पितु राज्य अनन्ता
चले जात बन गहन गँभीरा ❀ रानी सहित धर्म नृप धीरा
एक बृ तर बनाहिं मँझारी ❀ सोयउ राउ संग लै नारी
देखि राउ उर में बहु सोगा ❀ देखो बिधि कीन्हों कस योगा
रबिशशि जिनकहँ देखउ नाहीं ❀ सो मम संग फिरत बन माहीं
मेरे संग बिपिन दुख पैहैं ❀ बहु संताप कहां लौं सैहैं
जाउँ याहि तजि जो बन माहीं ❀ आखिर पिताभवन सो जाहीं
यह बिचार नृप के मनआयो ❀ कलियुग हृदय धर्म उपजायो
बसन अर्द्ध लीन्हो पुनि राजा ❀ दयाहीन कलि के बश साजा

दो० क्षण आवै नल निकटही, क्षणक चलै तजि मोह।
करै बिचार अनेक बिधि, कबहुँ करै मन क्षोह॥

भीमसुता तजि चलिभे राजा ❀ बहुरोदन करि चले अकाजा
गये राव मन बहुदुख पागी ❀ भीमसुता तेहि अवसर जागी
चहुँदिशिचितैचकितचितभयऊ ❀ हाहाकरि बहुरोदन ठयऊ
हाहा स्वामी कन्त हमारे ❀ तजि मोकहँ बन कहां सिधारे
प्रथमहिं कहां न आंड़ब तोहीं ❀ जबलगि घट बिच जीवन मोहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि दुख जीवन जात हमारा ❀ बचन झूँठ नृप भयउ तुम्हारा
कीन्हौं सेवा सदा तुम्हारी ❀ कौनि चूक भै कन्त हमारी
आज्ञाभङ्ग कबहुँ नहिं कीन्हा ❀ केहिहितत्यागिहमहिंदुखदीन्हा
धीरज आइ देउ जो नाहीं ❀ कैसे प्राण रहैं बन माहीं
कहौ नाथ कैसे तुम रहहू ❀ हमहिं छोंड़ि किमि धीरज गहहू

दो० सघन बिपिन महँ रोवती, दमयन्ती बिलखाइ ।
कौने अवगुण कीन्हेउ, दीन कन्त दुख आइ ॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा ❀ रानी पद मुख भीतर लावा
रानी बिकल बहुत बिलखाई ❀ हाय कन्त मोहिं राखौ आई
नैषध देश स्वामि जब जैहौ ❀ कहो कन्त मोकहँ कहँ पैहौ
ब्याध एक तहँ देखेउ आई ❀ बधिक सर्प कहँ टारेहु जाई
बधिक सर्प कहुँ डारेउ मारी ❀ पीड़ित काम कह्यो सुनु नारी
कामवश्य होइ बोलेउ बानी ❀ केहि हितबनमें फिरौ भुलानी
तब रानी कहँ चिंता आई ❀ नलको मनमें पुनि पुनि ध्याई
रानी शाप बधिक कहँ दीन्हा ❀ तुरतभस्म तेहि खलकहँ कीन्हा
करत बिलाप चली बनमाहीं ❀ गिरिकन्दर बन ढूंढ़त जाहीं
कोई नल की कहै न बाता ❀ रोवत रानी अति बिलखाता

दो० भृगु बशिष्ठ मुनि अङ्गिरा, नारदमुनिजहँ आहिं ।
करि बिलाप तब रानि सो, पहुँचीतेहि थल माहिं॥

जाइ तिनहिं कीन्ह्यउ परणामा ❀ आपन दुःख कहो तब बामा
सबमुनिमिलियहआशिषदीन्हों ❀ मिलिहैंनलसुनिजियसुखकीन्हों
अन्तर्द्धान भये मुनि राई ❀ चिन्ता उर रानी के आई
सपनो सो मन में यह जानी ❀ मानुष जन्म कहा तब रानी
कर्मबश्य बन फिरौं भुलानी ❀ ऐसे शोचि रानि अकुलानी
नलको खोजत बहु दुख पाये ❀ आपनपति कहुँ देखि न पाये
नायक कहो नगर को जैये ❀ खोजो जाइ कर्म गति पैये
बनमहँ ढूंढ़ि बहुत दुखपाये ❀ ग्रामनगर खोजो चितलाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० चली संग बन राजके, बसे एक बन आहिं।
सिंधुरयूथक बहुत तहँ, निकसे त्यहि बन माहिं॥

कचरिगये तहँ बहु बनिजारा ❀ हाइ हाइ सब करैं पुकारा
दमयन्ती देखो तब ताहीं ❀ बहुत लोग कचरे बन माहीं
दमयन्ती कह करत बिलापा ❀ मैं बचि गई कौन बश पापा
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई ❀ दिना आठ दश पन्थ सिराई
नाम बाहुबल राजा आही ❀ उत्तम नगर चित्तवर जाही
तौन नगर महँ पहुँची आई ❀ लरिकन तहँ दुख दीन्ह बनाई
मनमें दुःख अहै तेहि भारी ❀ बावरिरूप फिरहि तहँ नारी
ऊपर महल भूप महतारी ❀ देखो तिन निज नयन निहारी
तब रानी यक सखी पठाई ❀ दमयन्ती कहँ सँग लै आई
तब पूंछेउ राजा महतारी ❀ आपनि व्यथा कहौ सुकुमारी

दो० दमयन्ती यहभाष्यऊ, हम मानुष अवतार।
करौंकहांलगिबातबहु, बिधिदुखलिखालिलार॥

कह्यउ रावकी तब महतारी ❀ रहौ गेह काहू सुकुमारी
दमयन्ती बोली यह बाता ❀ रहै धर्म रहिबे तहँ माता
होइ जौन शुचि सेवों चरणा ❀ ऐसी होइ रहिहौं तेहि शरणा
ब्राह्मण सों पूछति मैं बाता ❀ जाते सुख पावों मैं माता
सुनि राजा की मातु बखाना ❀ पुत्री कह्यउ सो बचन प्रमाना
मम कन्या जो अहै सुनन्दा ❀ रहौ तासु सँग कहि आनन्दा
तहां जाइ दमयन्ती रहई ❀ नलकी कथा सुनो जस अहई
यक बनमें दावानल लाग्यो ❀ तहँ यक सर्प जरे दुख पाग्यो
ऊंचेस्वर तब कीन्ह पुकारा ❀ हा बिधि मोकहँ कौन उबारा
मैं नारद को डसिकै लीन्ह्यो ❀ अचलशापमोकहँ ऋषि दीन्ह्यो

दो० चलिनहिंसक्योंहेततेहि, बनमें लागी आगि।
कौन उबारै आनि अब, जरत सकौं जो भागि॥

तबहिं भूपमन दया जो आई ❀ तुरत जाइ तेहि लियो उठाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बोल्यो ब्याल पैग गनि जाहू ❀ तब हमार होई निरबाहू
राजा चल्यो पैग गनि ताहू ❀ दशौ पैग बोले नरनाहू
दशौ पैग जब कह्यो भुवारा ❀ काट्यो नलके मांझ लिलारा
श्याम स्वरूप भूप ह्वै गयऊ ❀ दै यक बसन मन्त्र दुइ दयऊ
एक मन्त्र पैहौ निज रूपा ❀ एक मन्त्र ते ह्वैहौ भूपा
यहि विद्या भय तोहिं न होई ❀ यह गति तोरि कीन्ह मैं जोई
है ऋतुपर्ण अवधपुर राई ❀ ह्वै सारथी रहौ तहँ जाई
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ ❀ यह तबकहि करकोटक गयऊ
शापहु ते सो भयउ उबारा ❀ गयउ भूप ऋतुपर्ण के द्वारा

दो० बाहुकनामा सारथी, रहौं आपु के धाम।
होहि बिकट हय जौनतुम, करौं शुद्ध मम काम॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई ❀ भीम भूप मन चिन्ता आई
तबहीं विप्र समूह बोलाये ❀ नल दमयन्ती खोजि पठाये
बहुतक देश फिरे द्विज जाई ❀ बीरबाहुपुर देखेउ आई
विप्र सुदेव देखि गो ताहीं ❀ दमयन्ती मिलि जलके पाहीं
ब्राह्मण को दमयन्ती चीन्हा ❀ करि प्रणाम बहुरोदन कीन्हा
द्विजको लै पुनि निजगृह आई ❀ तबहिं सुनन्दा सब सुधि पाई
राज मातु तहँ दौरी आई ❀ दमयन्ती कहँ चीन्हेउ जाई
भूपमातु पूछी यह बाता ❀ आपन देश नाम कहु ताता
भीम भूप के प्रोहित अहई ❀ नाम सुदेव हमारो कहई
रोय सुनन्दा नृप महतारी ❀ अहो प्रथम नहिं कीन्ह चिन्हारी

दो० सेवा कीन्हि हमारि बहु, नल राजा की बाम।
मैं अनचीन्हे तुमहिंसों, करवायों सब काम॥

भीमसों ब्राह्मण जाय सुनायउ ❀ राजा निजदल लोग पठायउ
कन्या को लै गयउ भुवारा ❀ राजा भीम बिदर्भ सिधारा
पाछे नल कर खोजन हेता ❀ ब्राह्मण बिदाकिये नृप जेता
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं ❀ तिनसों अब दमयन्ती कहहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बारह मास दुःख भो जाता ❋ जाइ कहेउ तब द्विज सब बाता
मोर स्वयम्बर कहियो जाई ❋ सुनत दुःख जो औरो पाई
आधोबसन तजो निशिनारी ❋ बनबिचदीख न असन बिचारी
यहै बात सुनि रोवै जोई ❋ जानेउ नल राजा सो होई
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई ❋ ग्राम ग्राम देशन प्रति जाई
अवध नगर राजा गृहगयऊ ❋ तहां जाइके यह दुख कहेऊ

दो० सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ आस।
यहै देखिकै ब्राह्मणहु, गे दमयन्ती पास॥

दमयन्ती पूछत बिलखाई ❋ कहौ बिप्र सब बात बुझाई
जननी पास गई तब नारी ❋ ह्वै उदास तब बचन उचारी
नलकी खबरि कही समुझाई ❋ मिलन केर सब करहु उपाई
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो ❋ बिप्र सुदेशहि तुरत पठावो
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा ❋ कहै जाइ सम्मत उपदेशा
जो आजुहिं नृप पहुँचहु जाई ❋ तो दमयन्ती पावहु राई
को नल बिन पहुँचै यहिबारा ❋ यही प्रतिज्ञा चित्त बिचारा
माता सब बिप्रन सन कहई ❋ तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई
सब यह हाल सुनावहु जाई ❋ है ऋतुपर्ण सभा जेहि ठाई
तब राजा बाहुक हँकराई ❋ एकदिवस महँ पहुँचउँ जाई

दो० आजुहि पहुँचउँ तहां सो, बरहुँ भीमजहि जाहि।
आजु करौं पुरुषारथहि, देश बिदर्भहि आहि॥

यह कहि बिप्र तुरन्त पठाये ❋ बाहुक रथहि साजि लैआये
राजा ते यह कहि समुझाई ❋ आजु बिदर्भ देउ पहुँचाई
सुनतहि राव भयो असवारा ❋ जोतेउ रथ सारथि तेहि बारा
छूटि बसन तब करते परेऊ ❋ लेन हेत राजा मन करेऊ
कहेउ सूत शत योजन राहा ❋ लौटत पर लीन्ह्यो नरनाहा
इन्द्र केर चेला नरनाहू ❋ बृक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहही ❋ फूल पत्र फल येते रहही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकोतरसै फल अरु आता ❀ भूमी माहिं परे झरि पाता
यक संशय फल है तरु माहीं ❀ पांच कोटि दल हैं तरुवाहीं
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं ❀ फिरतबार जो ममभति मनिहैं

दो० बाहुक हठ करिकै गनै, पत्र फूल फल ताहि ।
जो कछु भाषत राज भो, सो सब तरु में आहि ॥

बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना ❀ अक्ष सुविद्या राव बखाना
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्ह्यउ ❀ गणितमन्त्र राजा सो लीन्ह्यउ
जब नल भूप मन्त्र यह पाये ❀ तबसों कलियुग चले पराये
पूरब बिष ज्वाला तनुलागा ❀ तौन त्रासते कलियुग भागा
अस्थित भयउ बहेरे माहीं ❀ ताते पाप बहेरे आहीं
यह कौतुक तब मारग भयऊ ❀ पाछे देश बिदर्भहि गयऊ
तब पूछो यक भीम भुवारा ❀ कहौ आप जू कहँ पगुधारा
है लज्जित नृप कहेउ बुझाई ❀ मिलन आपुकहँ आयन भाई
राजा बहुविधि आदर कीन्हा ❀ उत्तम सदनबास तब दीन्हा
दमयन्ती तब रचो उपाई ❀ नल को चीन्हो मन में आई

दो० करन रसोई साज सब, बाहुक पास पठाय ।
पावक अरु जल ना दियो, कीन्हों ऐस उपाय ॥

पवन ते पावक आनेउ पानी ❀ पावकध्यानअगिनिपुनिआनी
दासी डरी देखि व्योहारा ❀ दमयन्ती सों करत बिचारा
दमयन्ती दोउ बाल पठाये ❀ दासी सँग रथशालहि आये
देखि सुतन कहँ जलभरिनैना ❀ बाहुक ते दासी कह बैना
क्षुधावन्त बालक सुनि लेहू ❀ भोजन आनि कलुक इन देहू
तब बाहुक बालक कहँ दयऊ ❀ लै बालक अन्तःपुर गयऊ
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना ❀ निश्चय नल दमयन्ती जाना
तब दमयन्ती आई तहँई ❀ रथशाला बाहुक है जहँई
पछिले दुख की कथा चलाई ❀ सुनत रुदन कीन्हो नरराई
रानी कहो कृपा अब करहू ❀ माया तजौ रूप सो धरहू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० करकोटकको ध्यानधरि, जप्यो मन्त्र शत आनि।
पूर्वरूप तब पायऊ, नलको तब पहिंचानि॥

तब ऋतुपर्ण चकित लखिभयऊ ❀ बहुबिनती राजासन ठयऊ
क्षमा करौ सब दोष हमारा ❀ मैं माया तव जानि न पारा
तब नर भीम अनुग्रह कीन्हो ❀ नृप ऋतुपर्णहिं बहुसुख दीन्हो
नलहि पाइ तब हर्षित राजा ❀ आज्ञा भै तब बाजे बाजा
सो ऋतुपर्ण बिदा तहँ भयऊ ❀ अवधनगर तब राजा गयऊ
तब नरवर भूपति पगुधारा ❀ लै दल परिग्रह संग भुवारा
जा ऋतुपर्ण सौं विद्या पाये ❀ तब पुष्करपर जुआ लगाये
मन्त्र यन्त्र नल जेते जाई ❀ हारो पुष्कर नृप को भाई
देश कोश साहस भण्डारा ❀ रथ गज द्रव्य जो हती अपारा
जीते नल पुष्कर जो हारा ❀ फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा

दो० दमयन्ती के दास तुम, कुटुंबसहितहौ आन।
कलिदुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिंकहै को जान॥

पुनि नल भे नैषध के राजा ❀ आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा
अर्द्ध बसन रानी लै दीन्हे ❀ अर्द्ध फारि जो नृप नल लीन्हे
राव देखि सो अतिदुख लयऊ ❀ बैठे नृप दुख बिसरि सुगयऊ
धार्मिकनल तब धर्महिं कीन्हो ❀ एक ग्राम पुष्कर को दीन्हो
ऐसे राजा दुख सो पाये ❀ पुण्यबीर राजा कहवाये
पुनि मुनि बृहदश्वहु अनुसारा ❀ सुनो युधिष्ठिर धर्मकुमारा
यहि के सुने पाप तनु भागै ❀ व्याधि होय सो तन नहिं लागै
दुखी सुनै सबदुख मिटिजाई ❀ बन्दितहो त्यहि बन्दि छोड़ाई
राज्य ते हीन सो राज्यहि पावै ❀ जेहि दुख बहुत सुने क्षय पावै
होयहौ धर्मज तुमहुँ भुवारा ❀ जो यह कथा सुनेहु सुखसारा

दो० सुनि बृहदश्व बचन बर, धर्मराज सुख पाव।
नशै पाप तनु सुख बढ़ै, नलचरित्र जो गाव॥

इति श्रीवनपर्वाणिनलोपाख्यानंनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुदिन राजा तेहि बन रह्यऊ ❀ यकदिन नारद मुनि तहँ गयऊ
नारद कहि संबाद अपारा ❀ तीरथ बरत महातम सारा
तेहिअन्तर सुनिकै यह भयऊ ❀ लामशऋषिपुनि तेहिथलगयऊ
राजा देखत पूजा कीन्ह्यउ ❀ अर्घपाद्य दै आसन दीन्ह्यउ
लोमश कहउ सुनहु भुवराई ❀ मोकहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई
यक दिन इन्द्रलोक पगुधारा ❀ देखा अर्जुन सभा मँझारा
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा ❀ परमअनन्दित आहि कुमारा
पारथ हित चिन्ता तुम पाये ❀ सुरपति ताते हमहिं पठाये
कहन कुशल पारथ की राजा ❀ हम इतको आये यहि काजा
सुनहु तहां हम जावैं राऊ ❀ राजा सुनत परम सुख पाऊ
सहित बन्धु नारी नर नाथा ❀ तीर्थराजको चलि मुनि साथा
धौम्यनाम प्रोहित सँग लागे ❀ चलेजात मन अति अनुरागे
तीर्थराज के दर्शन कीन्हे ❀ परम हर्ष भूपति मन लीन्हे
औरौ पुनि तीरथ हैं जेते ❀ परसे कहत न आवैं तेते
नैमिष बन काशी अस्थाना ❀ गया सुरसरी आदि बखाना
सब तीरथ परसे तब राजा ❀ चित उदवेग धनंजय काजा
गन्धमदन पर्वत भे पारा ❀ बद्रिक आश्रम गये भुवारा
तीरथ बिन्दुसरहिं तब देखा ❀ नाना बन पर्बत बहु लेखा

दो० तीरथ बिन्दुसरहि पुनि, पाँचौ जने अन्हाइ ।
पुष्प पत्र फल शोभितहि, देखत तरुवर जाइ ॥

पूर्व ओर से पवन उड़ाई ❀ पुष्प एक तेहि सरमहँ आई
अहैं सहसदल पुनि तेहिमाहीं ❀ सुन्दर बहुत सुगन्धित आहीं
जल ते फूल द्रौपदी लीन्हा ❀ भीमसेन के आगे कीन्हा
आइ सो फूल देवके लायक ❀ सुनो बृकोदर हो मम नायक
बेगि अनुग्रह मोपर कीजै ❀ यकशतपुष्प आनि मोहिं दीजै
सुनिकै बचन बृकादर कहई ❀ देहौं आनि शोच जनि लहई
धनुषबाण कर लैकर धाये ❀ जौने दिशि सों पवन ते आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चलो सिन्धुसम भीम रिसाई ❋ गँधमादन गिरि देखेउ आई
सो पर्बत गह्वर बन भारी ❋ नाना सर्प रहत बिषधारी
नाना मोर नृत्य तहँ करईं ❋ कोकिलकुहकिहरषि जिय भरईं

दो० छैयो ऋतु तहँ प्रकट शुभ, करत भँवर गुञ्जार।
अमृतसम फल लाग्यऊ, हरष्यो पवनकुमार॥

बहु बन भीतर हरषि अपारा ❋ कुन्तीसुत जो पवनकुमारा
तेहि बनबिहरतभीम सो फिरहीं ❋ नाद सिंह सम पुनि पुनि करहीं
हने ग्राह मृग गैंड़ा भारी ❋ क्रीड़ाकर इमि बनहिं मँझारी
भगे जन्तु पुनि बन के नाना ❋ सिंह भालु मृग सबै पराना
गरजे भीम जन्तु सब भागे ❋ कदलीबन देख्यउ यक आगे
महागँभीर सो वह बन अहई ❋ क्रीड़ित भीम तहां अस रहई
तोरेउ बृक्ष ताहि बन नाना ❋ मिष्ट पाक फल करि सो पाना
गरजै भीम करै फल पाना ❋ जीव जन्तु सब शङ्का माना
तेहि बन माहँ रहैं हनुमाना ❋ शब्द सुनत सो करेहु पयाना
हनूमान तब देह बढ़ावा ❋ उज्ज्वलरूप अनूप सुहावा

दो० बोले कुबचन भीमसों, बन तैं कियो उजार।
मोरे हाथहि मरण तुव, भाष्यो पवनकुमार॥

यह कुबेर बन सब जगजाना ❋ करत भोग यह कह हनुमाना
हनू संग जो बन रखवारा ❋ दुओ बीर बलपुञ्ज जुझारा
तिन सब आइ कही असबाता ❋ भयो भीम सुनि क्रोध ते ताता
धनुषबाण पुनि करलै लीन्हेउ ❋ युद्ध बृकोदर बहुबिधि कीन्हेउ
हते भीम जे बन रखवारा ❋ तब कुबेर पहँ जाइ पुकारा
मानुष एक गहे धनुबाना ❋ कदलीबन कीन्हेउ खइकाना
हनूमान तेहि बरजन ठाना ❋ सुना कुबेर आपु जो काना
आइ कुबेर हनू समुझाई ❋ करो बिरोध न तुम कपिराई
देखौ तुम यह मानुष नाहीं ❋ मानुष बेष देव कोउ आहीं
लेहु फूल खावो फल नाना ❋ जेतिक मनमहँ होइ सुजाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० हनूमान यह सुनतही, क्रोधै बहुत बढ़ाइ।
फूल काज बिधि भीमसों, कीन्हों ऐस उपाइ॥

हनूमान बोले यह बानी ❀ सुनिये भीम बचन अस जानी
रामकाज लगि मैं यकबारा ❀ लङ्का बीर बहुत संहारा
सागर नांघि लङ्क मैं जारा ❀ महिरावण पाताल सँहारा
यहै नेम मेरे मनमाहीं ❀ मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं
इतना प्रेम आप करिलेई ❀ पाछे फूल जान लै देई
यह हमार लंगूर जो आहीं ❀ ताते बात कहत तोहिं पाहीं
भूमि ते मम लंगूर उठावो ❀ लैकै फूल जान तब पावो
सुनतहि भीम कोप जिय गह्यऊ ❀ टारनचित्त लँगूर सो चह्यऊ
बायें हाथ गह्यउ तब ताहीं ❀ नेकु न डोला सो महि नाहीं
फिरि बल कीन्हो भीम जुझारा ❀ बज्र लँगूर टरत नहिं टारा

दो० गहेउ गदा कर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहिं।
दोनों कर लंगूर सो, गहो आशु करमाहिं॥

हारेउ भीम करेउ बहु करणी ❀ कपि लंगूर न डोलत धरणी
भीमसेन यह मन में जाना ❀ महाबीर ये हैं हनुमाना
हारो भीम ठाढ़ होइ रह्यऊ ❀ हर्षि गात कपि बोलत भयऊ
है प्रसन्न भाष्यो हनुमाना ❀ मांगो बर जो तुम मनमाना
यह सुनि भीम कहन अस लागे ❀ अमृतबचन हनुमान के आगे
जब कौरव कहँ मारन जाई ❀ तब कपि करियो मोर सहाई
रामकाज कीन्ह्यउ जिमि भाई ❀ तैसेइ होउ हमार सहाई
हनूमान बोले यह बाता ❀ भीमसेन सुनिये यह ताता
पारथ के रथपर हम रहिहैं ❀ रक्षा करत अस्त्र सब सहिहैं
ऐसे बचन कहे हनुमाना ❀ भीमसेन सुनि बहु सुखमाना

दो० यह रहस्य राजा सुनो, हनू भीम व्यवहार।
दूनों पवनपुत्र बल, कह सुनि हृदय बिचार॥

भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना ❀ भीमसेन लखि बहु सुख माना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लेहु फूल जेते मन भावै ❀ यहै हनू तब बात सुनावै
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ ❀ अपने गृह कुबेर तब गयऊ
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं ❀ तारत फूल जौन मन माहीं
बिहरत भीम हरषि बन माहीं ❀ सुमन सुगन्धित तोरेउ आहीं
भीमसेन बन में बहु गरजैं ❀ हांक सुनत पशुपक्षी लरजैं
ब्याघ्र सिंह औ गज मतवार ❀ गैंड़ा महिष अनेकन मारे
भीमसेन को शङ्का भयऊ ❀ भागि जन्तु तेहि बनते गयऊ
जनमेजय तब हर्षित भयऊ ❀ बैशम्पायन कथा सो कह्यऊ

दो० भीमसेन मन हर्ष अति, लीन्ह फूल करि हेत।
बैशम्पायन कहत भे, सुनिये भूप सचेत॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
भीमहनुमत्संवादोनामपञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ ❀ कहँ मम बन्धु बृकोदर गयऊ
जिय अकुलाइ मनों उर दरकै ❀ कुशकुन देखि बाम अँगफरकै
निशिस्वपना लखि बिस्मयराऊ ❀ कुशलक्षेम बिधि भीम मिलाऊ
कहा धौम्य यह बचन बिचारी ❀ घटउत्कच सुमिरन अनुसारी
उटउत्कच आये नृप पासा ❀ का आज्ञा यह बचन प्रकासा
जब राजा यह बोलत भयऊ ❀ गँधमादनगिरि भीम जो गयऊ
नाना कुशकुन देखियत भाई ❀ ताते चितचिन्ता अधिकाई
तीनिउ बन्धु पुरोहित रानी ❀ राजा कह यह बचन बखानी
सबको सुत लै चलिये तहँवां ❀ गँधमादनगिरि भीमहै जहँवां
सुनत हरषि उठि कस्यो प्रणामा ❀ जो आज्ञा कहिये सो कामा

दो० पांचो जने चढ़ाइ पुनि, पीठि आपने आन।
गँधमादनपर भीम जहँ, कीन्हे तुरत पयान॥

नाना बन तहँ देखत जाई ❀ घटउत्कच के ऊपर राई
बहु इतिहास पन्थकर अहई ❀ लिखे न जाइँ सूक्ष्म सो कहई
गँधमादन पर्बत जेहिठाई ❀ धर्मराज प्रविशे तहँ जाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि धर्मसुत मन हरषाई ❀ करमें धनुष भीम के आई
अगणित रणमहँ मारे बीरा ❀ बीर बृकोदर अभय शरीरा
देखेउ राजहिं पवनकुमारा ❀ करि प्रणाम तब बचन उचारा
भीमहि देखेउ अद्भुत रचना ❀ लिये धनुषशर बोलेउ बचना
समर सहाय देव कोउ नाहीं ❀ अससाहस सुत तोहिं न चाहीं
सुनत भीम बहु लज्जा पाये ❀ घटउत्कच तब बचन सुनाये
आज्ञा कौन मोहिं यहि ठाऊं ❀ रहौं कि निज आश्रम में जाऊं
आज्ञा पाय चरण शिरनायउ ❀ अपने थल घटउत्कच आयउ

दो० रहे युधिष्ठिर तौन थल, चारि बन्धु यकसाथ।
करत हर्ष बहुतै बनाहिं, धर्मराज नरनाथ॥

एक दिवस तहँ अचरज भयऊ ❀ मृगया हेतु बृकोदर गयऊ
धौम्यपुरोहित लोमश तहँवां ❀ गे मज्जन हित सरवर जहँवां
तीनों बन्धु द्रौपदी साथा ❀ आसन पर बैठे नरनाथा
जरा नाम यक दैत्य सो अहई ❀ मनहिंबिचारि त्यहीसन कहई
तहँ तीनों जन पीठि चढ़ाई ❀ पवन बेग लै चला उड़ाई
धर्मराज बोले यह बानी ❀ पापकर्म कह कर अज्ञानी
हमको लियेजात केहिकाजा ❀ बहुतहि ताहि बुझायउ राजा
धर्मकथा सुनि भूपति पाहीं ❀ हँसेउ दुःख सुनि मानत नाहीं
चोर धर्म कह लम्पट नाना ❀ निसरतकाम न सबकोउजाना

दो० छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ।
पर्वत कन्दर घोर बन, दानव लीन्हे जाइ॥

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा ❀ ऊंचे स्वर बहु करी पुकारा
येहो भीम गयो कहँ भाई ❀ परो दुःख हम ऊपर आई
आरत नाद जबै सुनि पायो ❀ लैकर गदा बृकोदर धायो
दूरिहि ते तब भीम निहारा ❀ लिये जात सो धर्मकुमारा
तब सहदेव भूमिपर आयो ❀ कूदि हांक तब ताहि सुनायो
सबहिं बृकोदर धावत आवा ❀ गदा हाथ करि गर्जि सुनावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दैत्य अशङ्क मानि नहिं शङ्का ❋ हांकत बीर क्रोध करि बङ्का
तबहिं द्रौपदी धर्मकुमारा ❋ पीछे नकुल बीर बरियारा
इनकहँ तुरत भूमि बैठावा ❋ दैकर हांक भीम पर धावा
भीम कही निज मरण के काजा ❋ पापी लै भाजे सुतराजा

दो० आजु मारितोहिं एकशर, पठवौं यमके पाहिं।
यहकहि गदाघाव तेहि,दीन्ह्योमस्तकमाहिं॥

गदाघाव तब भीम सँभारा ❋ तबहीं खल यक बृक्ष उपारा
मारो बृक्ष भीम पर जाई ❋ मारो गदा भीम पलटाई
दोनों बृक्ष युद्ध परिहारा ❋ मल्लयुद्ध तहँ पुनि बिस्तारा
दोनों बीर लरैं बरजोरा ❋ करैं युद्ध मानो घनघोरा
कम्पमान धरणी तहँ होई ❋ प्रलय काल आवै जनु सोई
मुष्टिक एक भीम तब मारा ❋ छांड़्यो दैत्य प्राण तेहिबारा
परम हर्ष भो धर्मकुमारा ❋ और अनन्दित भे परिवारा

दो० आशिर्बादहि देत मुनि, राजा सूंघत माथ।
लोमशऋषिपूजतभुजहिं, हरषि आपने हाथ॥

परम हर्ष राजा तब पायो ❋ कहि संक्षेपहि भारत गायो
पुनि सब मिलिकै कीन्ह बिचारा ❋ बद्रिकआश्रम गे त्यहिबारा
नाना पुष्प रम्य अस्थाना ❋ रहे हर्षि बन राव लोभाना
संवत चारि बीति इमि गयऊ ❋ पञ्चम बर्ष उपस्थित भयऊ
यही प्रकार रहे बन राऊ ❋ धौम्यआदि मुनि भोजन पाऊ

दो० नाना ज्ञानकथा तहाँ, राजा करहिं प्रकास।
चारि बन्धु हैं संग महँ, और द्रौपदी पास॥

इति वनपर्वणिजरादैत्यवधबदरिकाश्रमप्रस्थानं
नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

कछुदिन राव बीति इमि गयऊ ❋ धौम्य पुरोहित ते नृप कह्यऊ
पारथ बिनु देखे मुनिराई ❋ मम चित चञ्चल रहै सदाई
पञ्चम वर्ष खोज अब करई ❋ अर्जुन देखौं जलदृग ढरई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूरब कह्यो पार्थ यह बानी ❀ पञ्चम बर्ष मिलौं त्वहिं आनी
धवलाचल पर दरश हमारा ❀ निश्चय पैहौ धर्मभुवारा
चलौ सो परबत देखौ जाई ❀ पारथ दरश हेत तहँ राई
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी ❀ तीनों बन्धुरु लोमश ज्ञानी
कीन्ह बिचार चले सब तहँवां ❀ परबतधवल आइ पुनि जहँवां
लोमश धौम्य संग त्रयभाई ❀ ज्ञानकथा बहु बरणत जाई
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा ❀ पूरण बारि राव अवरेखा
सोहै मालपृष्ठ तेहि पासा ❀ धवला पर्बत परमप्रकासा
फटिकशिला तहँ देखत भयऊ ❀ दानवघोर जहां पुनि रह्यऊ

दो० रक्ष यक्ष दानव बहुत, सब कुबेरके दास।
सो पर्बत देखौं तहां, पुरी कुबेर प्रकास॥

देखि भीम तहँ राक्षस जेते ❀ बेगहि भीम सँहारेउ तेते
तबहिं कुबेर मरम सब पायो ❀ युद्ध हेतु तब आपु सिधायो
तब प्रणामकरि धर्मकुमारा ❀ शुद्ध बचन कहि युद्ध निवारा
हर्षित ह्वै कुबेर पहँ गयऊ ❀ धर्मराज तेहि पर्बत रह्यऊ
अर्जुन देवलोक महँ रह्यऊ ❀ अस्त्र अनेक सुरनते लह्यऊ
देवन केर शत्रु जे पाये ❀ मारि सकल यमलोक पठाये
जासों देव युद्ध मों हारा ❀ सो मारे सब पाण्डुकुमारा
होइ सन्तुष्ट देव वर दयऊ ❀ क्रीट अस्त्र तब बासव दयऊ
समय एक तहँ सो सुर आई ❀ बैठि सभा महँ सभा बनाई
यम कुबेर जलपति बैसन्दर ❀ बैठे और अनेक मुनिन्दर

दो० तब अर्जुन कहँ गोदलै, बैठे देव भुवार।
नृत्यकरत तहँ नृत्यकी, हर्षित सभा मँझार॥

नाम उर्बशी देव अप्सरा ❀ नृत्यकरत सो सभा मांझरा
बीणा ताल मृदङ्ग बजाये ❀ नाना रूप नृत्य लय लाये
इन्द्र गोद सोवत बलवाना ❀ मानो दूसर इन्द्र समाना
पारथ देखि उर्बशी नारी ❀ पीड़ित कामस्वरूप निहारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काम भाव तेहि अवसर भयऊ ❀ नृत्यगीत बहुबिधि तेहि ठयऊ
प्रीति सहित अर्जुन तेहि हेरा ❀ सो सुरपति देखेउ तेहि बेरा
जो उर्बशी तुमहिं बश करेऊ ❀ तौन त्रिया सुत तुमकहँ दयऊ
अर्जुन कहो जाय जो हारा ❀ इनते प्रकटो बंश हमारा
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना ❀ अपने गृह सुर कियो पयाना
सुरपति गे अपने अस्थाना ❀ निजथल गे पारथ बलवाना
अर्द्धनिशा बीती सो आई ❀ तेही समय उर्बशी आई
अर्जुन के मन्दिर पगु धारा ❀ देखे लगे कपाट दुआरा
बहुत यतनकरि खोलि केवारा ❀ अर्जुन कहँ त्रैबार पुकारा

दो० चेत पाइ अर्जुन तब, मन में करैं बिचार ।
अर्द्धरात्रि किमि उर्बशी, आई निकट हमार ॥

कहै धनञ्जय बचन बिचारी ❀ ममढिग केहिहित आई नारी
अर्द्धरात्रि बीती पुनि गयऊ ❀ निद्रा बश्य देव सब भयऊ
जो कछु दुख है चित्त तुम्हारा ❀ कहौ प्रात सो करौं उधारा
राति जाउ अपने गृह नारी ❀ पुरुष पियार एक की नारी
पारथ बात सुनी सो नारी ❀ मोहिं मदन कर है अनुसारी
हृदय समानो रूप तुम्हारा ❀ कामव्यथा तन जरत हमारा
सुनत धनञ्जय बिस्मयमाना ❀ त्राहि त्राहि करि मूंदेउ काना
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी ❀ इन्द्र अप्सरा मातु हमारी
ऐसि बात अपने मुखमाहीं ❀ भूलि बात जनि कहु मोहिं पाहीं
सुनत उरबशी ब्याकुल भयऊ ❀ दुःखित ह्वै पारथ ते कह्यऊ

दो० हम आई तुम आशकरि, सो तौ भई निराश ।
जानेउँ अहौ नपुंसक, यह कहि बचन प्रकाश॥

तब यह शाप पार्थ कहँ दीन्हा ❀ ह्वै उदास निज गृह मग लीन्हा
पारथ चित्त भयउ परितापा ❀ पाप किये बिन पायउँ शापा
होतहि प्रात उदित भे भाना ❀ बैठी सभा इन्द्र सुर नाना
प्रात होत पारथ तहँ जाई ❀ हाथ जोरि तब कह्यउ बुझाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काल्हि नृत्य जो नारी कीन्हा ❀ निशिको शाप हमैं तेहिं दीन्हा
होउ नपुंसक दीन्हो शापा ❀ ताते मो मन भा सतापा
सुनिकै इन्द्र महादुख पावा ❀ तुरत सभामहँ ताहि बुलावा
इन्द्र कहै नारी कह कीन्हा ❀ मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा
सुनत उर्बशी लज्जा पाई ❀ हाथ जोरि तब बिनय सुनाई
मेरो शाप होय उपकारा ❀ क्रोध न कीजै देव भुवारा

दो० होइ यक वर्ष नपुंसक, नृप बिराटके देश।
संवत बीते शाप ते, होइहौ मुक्त सुबेश॥

यह वर तव पारथकहँ दीन्हा ❀ अपने भवन गमन तव कीन्हा
तबहिं इन्द्र पुत्रहि समुझाई ❀ देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई
कुण्डल कवच इन्द्र तब दीन्हों ❀ भाषे मुनि अर्जुन शुभ कीन्हों
मिलि सब देव शंख यक दीना ❀ जाके नाद शत्रु बलहीना
पांच वर्ष सुरपुर महँ भयऊ ❀ पारथ तबहिं इन्द्रसों कह्यऊ
आज्ञा दीजै इन्द्र भुवारा ❀ परशौं पद कह धर्मभुवारा
सुनिकै इन्द्र तुरत वर दयऊ ❀ तब रथ मातलि साजत भयऊ
भेंटि सकल सुर चढ़े विमाना ❀ मृत्युलोक कहँ कियो पयाना
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवां ❀ धवल शिखरपर राजा जहँवां
धर्मराज पारथकहँ देख्यउ ❀ पुनिनिजजन्मसुफलकरिलेख्यउ
पारथ जाय चरण नृप गह्यऊ ❀ पूछी कुशल हर्ष बहु भयऊ

दो० सर्वकथा बिस्तार से, पारथ कियो बखान।
राजा आगे सहित विधि, बरण्यो बन्धु सुजान॥

जेहिबिधि शंकर दरशन पाये ❀ जिमि किरात ह्वै हर तहँ आये
जैसो युद्ध भयो तेहि ठांवा ❀ सुरपति जैसे दरशन पावा
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ ❀ जैसे अस्त्र लाभ तहँ भयऊ
शाप उर्वशी जिमि वर दीन्हा ❀ जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा
धर्मराज कहँ सर्व जनायो ❀ राजा धर्म हर्ष तब पायो
तेही समय इन्द्र तहँ आये ❀ धर्मराज ते कहि समुझाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबजीत बर जबहीं दीन्हा ❀ अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ ❀ धर्मराज आनन्दित भयऊ
पुनियहकथासो ऋषिहि सुनाये ❀ घटउत्कच तेहि अवसर आये
करि प्रणाम सब के पद बन्दे ❀ कहे बचन तब परम अनन्दे

दो० देश छोड़ि करि राजा, आये दूरि पयान।
चलौ सबै काम्यक बनहिं, हर्षित भये सुजान॥

सुनत बात यह सब मन भाये ❀ तब सबकहँ फिरि पीठि चढ़ाये
सबको लै काम्यक बन आये ❀ रहे तहां आनँद बहु पाये
काम्यकबनहिं बहुतदिन गयऊ ❀ परमअनन्दित सब जन रह्यऊ
तहां बहुरि आये यदुनाथा ❀ मिले आइ पाण्डवसुत साथा
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा ❀ द्वारावती गमन पुनि कीन्हा
अभिअन्तर तब कथा सुनाये ❀ मार्कण्डेय महामुनि आये
बहु संवाद तहां मुनि कीन्हों ❀ सो संक्षेप कहन मैं लीन्हों
ऐसे पाण्डव बनै महँ रह्यऊ ❀ कथाप्रसंग धर्म तब कह्यऊ

दो० पञ्च बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाण्डु बनमाह।
भारत पुण्य कथा यह, जनमेजय नरनाह॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणिअर्जुन
वरप्रोक्तकाम्यकवनआगमनन्नामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

ऐसे पाण्डव बन सुख पाये ❀ दूत जाय कुरुनाथ सुनाये
काम्यक बन महँ पांचौ भाई ❀ तबहिं बिचार करैं शतभाई
करण दुशासन शकुनी राजा ❀ मन्त्र कुमन्त्र करैं सबकाजा
बनोबास पाण्डव दुख नाना ❀ बलकलबसन करैं परिधाना
माथे जटा तपी के भेशा ❀ देखिय शत्रु कियो उपदेशा
देखब जाइ द्रौपदी पासा ❀ सब मिलिकै करिबे उपहासा
दुखमें शत्रु देखिये राई ❀ याते आनँद और न भाई
दुर्योधन दल साज करायो ❀ भीषम द्रोण भेद नहिं पायो
और सबै रथ पैदर साजा ❀ चले हर्षि दुर्योधन राजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काम्यक बनमें पहुँचे जाई ❀ देखत ताहि हरष बहुपाई
दो० काम्यकबन देखा तबै, एक सरोवर आहि ।
देवरु किन्नर गन्धरब, क्रीड़ करैं तेहि माहि ॥
देव चरित्र सुनहु सज्ञाना ❀ कुरुपतिको होइहै अपमाना
नाम चित्ररथ गन्धरब राऊ ❀ स्त्री सहित सरोवर आऊ
पत्नी सहित सो क्रीड़त भयऊ ❀ वाही थल दुर्योधन गयऊ
दुर्योधन लखि लज्जा पायो ❀ क्रोधवन्त गन्धर्ब सुनायो
अरे मूढ़ त्वहिं यह हंकारा ❀ ताकर फल तुम लह्यउ भुवारा
हाथ अस्त्र वह गन्धरब नाना ❀ दियो तिनहिं आज्ञा परमाना
मारु मारु यह आयसु दीन्हें ❀ अस्त्र गहे सो धरि सब लीन्हें
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई ❀ गन्धरब मानुष सम नहिं कोई
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा ❀ यहलखिकरणक्रोधअतिकीन्हा
हाथ अस्त्र लैकै तब धाये ❀ गन्धरब दल में बाण चलाये
दो० गन्धरब दलमें बाण बहु, भयो भूमि अँधियार ।
ऐसे मारे करण बहु, क्रोधित बाण अपार ॥
गन्धरब सबै पराभव कीन्हे ❀ क्षत लागे तब जात न चीन्हे
मारेउ करण खैंचि कर तीरा ❀ चल्यउ रुधिर गन्धर्ब शरीरा
अस्त्र अनेक करत परिहारा ❀ रुण्ड मुण्ड गन्धर्ब सँहारा
काहू हाथ कटेउ अरु पाऊ ❀ काहू केर हृदय महँ घाऊ
रुधिर नदी गन्धरबरण भयऊ ❀ भागे सबै मार्ग तब लयऊ
भागे सब कहुँ खोज न पाये ❀ पाछे देखत करण सिधाये
देखि पराभव इन्द्र कुमारा ❀ हाथ धनुष शर तब परचारा
तब गन्धर्ब दुशासन मारा ❀ परो दुशासन भुवि असभारा
रथते दुश्शासन भुइँ आये ❀ लज्जावन्त महा भय पाये
करणके संग तबै रणठाना ❀ महाबीर दोउ एक समाना
दो० क्रोधवन्त गन्धर्ब पति, मारे बाण प्रचण्ड ।
करणसँभारिसक्यउनहीं, कटे छत्र अरु दण्ड॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारे रथ सारथि संहारा ❀ हाथ धनुषगहि करणभुवारा
मारे तब गन्धब शर नाना ❀ शरनतेज रजभयो निदाना
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा ❀ दुर्योधनहिं बांधि पुनि लीन्हा
पाण्डव कर बैरी मैं जाना ❀ रहौ तोहिं दुख देहौं नाना
कुरुपति कहँ बांधेलिय जाई ❀ देखेउ भीमसेन तब धाई
देखि हरषि मनआये तहँई ❀ रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहँई
जोरि हाथ राजासन कहई ❀ ऐस दुःख दुर्योधन सहई
दुर्योधनहिं बाँधि लै जाई ❀ चलिकै राज्य करौ सबभाई
महा अधर्मि शत्रु भो नाशा ❀ मिल्यउराज तुवबिनहिंप्रयाशा
तबहिं राव यह कहो बखानी ❀ कैसे नाश भयउ अज्ञानी

दो० कौन प्रकारहि हेतु कहु, कैसे शत्रु विनाश।
सो सब मम आगे कहौ, कीन्हौं भीम प्रकाश॥

कही भीम राजुहि समुझाई ❀ गा अखेट दुर्योधन राई
बिधि रचनाते गन्धब आयउ ❀ युवतीसँग सरक्रीड़ा ठायउ
देखा तहँ दुर्योधन राऊ ❀ गन्धब गण रण तहां उपाऊ
करण आदि सेना सब भागी ❀ छांड़ो राजहि परमअभागी
गन्धब राज महाबल करेऊ ❀ दुर्योधनहि बांधि लै गयऊ
सुनत धर्मसुत बिस्मय भयऊ ❀ भीमसेन ते यहि बिधि कह्यऊ
नीति शास्त्र नहिं जानत अहहू ❀ मूरुख रूप सदा तुम रहहू
तब पारथ ते यह कहि राजू ❀ लेउ छड़ाइ सुयोधन आजू
बन्धु बन्धुसों कलह प्रमाना ❀ बन्धु बन्धुको बल जगजाना
तुमहीं तुरत लयावहु भाई ❀ गन्धब कहँ तुव दे बिचलाई

दो० जो गन्धब छांड़ै नहीं, तौ तेहि करब सँहार।
मारि निपातौ धरणि पर, कुरुपति लेहु उबार॥

आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई ❀ हांक दई गन्धर्वहि आई
देखत पारथ गन्धब नाना ❀ शीघ्रवन्त तब करेउ पयाना
तब बिचार गन्धर्बन कीन्हा ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब पारथ अस बाण चलाये ❀ भूमि स्वर्ग सोपान बनाये
बाणनपर ह्वै राजा आये ❀ धर्मराज के दरशन पाये
धर्मराज यह कहै सो लीन्हा ❀ यहगतितुमहिंकहौंक्यहिकीन्हा
ऐसो गर्ब करिय जनि भाई ❀ जाते अपनो मान गँवाई
दुर्योधन सुनि लज्जा पाई ❀ मरणहेत कछु करेउ उपाई
तबहीं राज बोध बहु कीन्हा ❀ मरम बचन कहि धीरज दीन्हा
हम तुम भाई एक समाना ❀ तोर मोर एकै अपमाना

दो० हम तुम एकै बन्धु हैं, तातें कहा बिचार ।
यह सुनि पायो सुखअमित, पापी कुरूभुवार ॥

राजा कह यह बचन सुनाई ❀ मांगो बर पावउ तुम भाई
धर्मराज बोले मुसुकाता ❀ दुर्योधन नृपसों यह बाता
अवसर पाइ सुनो नृप जबहीं ❀ तुमते बर मांगब हम तबहीं
कह्यउ सत्य राजा तब गयऊ ❀ कुरुदल तेजहीन सब भयऊ
राजा धर्म वही बनबासा ❀ पूछहिं तपसिन सहित हुलासा
केतक काल रहे सुख पाई ❀ एकदिना जयद्रथ तहँ आई
अर्जुन भीम रावके संगा ❀ माद्रीसुत दूनौ रण रंगा
मजन हेतु सरोवर जाई ❀ तेही समय दुष्ट सो आई
देखि अकेलि द्रौपदी रानी ❀ लै हरिकै भाग्यउ अज्ञानी
तौने समय पार्थ तहँ आये ❀ देख्यो चरित क्रोध जिय पाये

दो० भीम सहित पारथ बली, भेंट्यउ दुर्मति जाय ।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय ॥

दूनौ कर शिर केश उपारा ❀ बांधे बोझ समान भुवारा
श्वासा हीन रह्यउ तनुमाहीं ❀ ऐसे लाय धर्मसुत पाहीं
राजा देखि दया मन भयऊ ❀ छांड़िय यह आज्ञा नृप दयऊ
जो कोइ पाप करै जग माहीं ❀ बिनभुगते छूटत सो नाहीं
धर्मकथा कहि ताहि सुनायो ❀ दया धर्म भाषै मनलायो
पापकर्म को फल तब पावै ❀ नरक माहिं परलोक नशावै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसे ज्ञान बोध समुझावा ❀ करि प्रबोध अस्नान करावा
तब आज्ञा दै धर्म नरेशा ❀ गयउ द्रुमति सो अपने देशा

दो० धौम्य नाम प्रोहित तहां, धर्मराज के साथ।
बारह संबत पूरभे, कहौ बात नरनाथ॥

अब अज्ञात बरष परमाना ❀ कहां रहउँ सो करहु बखाना
कुरुके दूत फिरैं सब ठाऊ ❀ कहां दुरौं सो कहौ उपाऊ
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं ❀ बारहबर्ष फेरि बन जाहीं
तौ हमार दुख छूटत नाहीं ❀ रहिये गुप्त कौन बन माहीं
यह बिचारि मन रोदन कीन्हा ❀ हमैं बिधाता बहु दुख दीन्हा
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई ❀ धर्मराज ते कह समुझाई
तुम तौ धर्मरूप है राऊ ❀ बिपतिकाल कादर कस आऊ
सुख दुख व्यापक है संसारा ❀ चित्त धीर्य करु पाण्डुकुमारा
माया बिष्णु गुप्त है राजा ❀ गुप्तरूप देवन कर काजा
बामनरूप छल्यउ बलिराऊ ❀ देवकाज कीन्ह्यउ परभाऊ

दो० रामरूप माया धनी, रावण कीन्ह सँहार।
चित चिन्ताकेहि हेतकर, सुनिये धर्मसुवार॥

यहि प्रकार प्रोहित समुझाये ❀ तबहिं धीर राजा मनआये
पांच बन्धु अरु प्रोहित संगा ❀ करत तहां बहुकथा प्रसंगा
जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा ❀ पार्थ भीम अपमान करावा
लाजवन्त हर सेवा ठाना ❀ गङ्गाधर को कीन्हों ध्याना
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ ❀ पाइब जीती मन महँ धरेऊ
होइ प्रसन्न तब शंकर आयो ❀ मांगु मांगु बर बचन सुनायो
करि परणाम जयद्रथ कहई ❀ जीता पांच पाण्डवन चहई
गङ्गाधर बोले यह बाणी ❀ पारथ तन मन शारँगपाणी
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ ❀ पारथ कहँ जीते नहिं पाऊ
यह बर तौ गङ्गाधर दीन्हों ❀ जयद्रथ हृदय हर्ष बहु कीन्हों
यह बनपर्व कही मैं गाई ❀ रहे बनै महँ धर्मजराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जे फल तीरथ करि अरु दाना ❀ सिन्धु आदिसरिता अस्नाना
जो केदार बद्रिकाश्रम जाये ❀ जगन्नाथ के दरशन पाये
नाना दुख ब्रतकरि जो सहई ❀ सो बनपर्व सुने फल लहई

दो० कहि बनपर्व कथा यह, सुनु जनमेजय राय।
पुण्य कथा श्रीभारत, सबलसिंह कहि गाय॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
गन्धर्वदुर्योधनयुद्धवर्णनंनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

इति वनपर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

—:o:—

विराट-पर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जिसमें

द्रौपदी-सहित युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का व्यासोपदेश से नृप विराट के यहाँ सैरंध्री, कंक, जयन्त, बृहन्नला, सेनी और बाहुक नाम से दासवत् रहना, जयन्त द्वारा मल्ल-वध तथा हस्ती-मदनाश पुनःसैरंध्री का रूप देख कीचक का आसक्त होकर जयन्त द्वारा मृत्यु, धेनु-हरण को जानकर बृहन्नला द्वारा समस्त कौरव आदि वीरों का परास्त होना, अभिमन्यु-विवाह, श्रीकृष्ण का पाण्डवों को पाँच ग्राम देने के लिये समझाना और उसको न मानकर महाभारत रचने आदि की कथा वर्णित है।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विराटपर्व ॥

दो० कहे सकल बनपर्व के, ऋषि नरेश को ठाट ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषत पर्व बिराट ॥
धर्मराज तब बिकल ह्वै, सुमिरयो व्यास मुनीश ।
नाशनदासकलेशहित, आये जिमि जगदीश ॥

दण्ड प्रणाम नृपति उठि कीन्हा ❀ मुनिबरबिहँसि लायउरलीन्हा
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी ❀ परसेउ चरण व्यासके आनी
आय दीन मृग चर्म बिछाई ❀ चरण धोय बैठायो आई
पातन को व्यजना कर लीन्हों ❀ पवनकुमार पवन तब कीन्हों
भोजन तब लै आई रानी ❀ नकुलदीन्ह जलभाजनआनी
करिभोजन ऋषि शयन अनन्दे ❀ सहदेव आय चरण तब बन्दे
कह्यो राउ नयनन भरि बारी ❀ भलेहि नाथममसुरति बिसारी
कह्यो कलेश वरणि नहिं आवा ❀ अन्धसुवन मोहिं बहुत सतावा
कपट रूप करि भूमि छड़ाई ❀ सबहिं बोलाय सुनायकराई

दो० द्वादश वर्ष जाइकै, बिपिन बसेरो लेइँ ।
खोज न पावहिं तेरहीं, इनहिं राज हम देइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं ❀ द्वादश वर्ष बहुरि बन जावैं
मोहित दुरन बतावहु ठाऊँ ❀ कहि बन कौन देश ऋषि जाऊँ
खोजत वर्ष मध्य जो पैहै ❀ बहुरि बनै कुरुनाथ पठैहै
आज्ञा देउ रहौं तहँ जाई ❀ जहँ सुखहोइ दुःख कटिजाई
जाउँ तहां जहँ मोहिं छपावै ❀ कहुँ कुरुनाथ खोज नहिं पावै
कहेउ व्यास नृप सुनहु बिचारा ❀ है नहिं अन्त छपाव तुम्हारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्यागहु पकरि आड़ सेवकाई ❀ नृप बिराट गृह रहौ छपाई
सत्य बचन सुनु भूप हमारा ❀ तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा
करौ विचार नृपति अब सोई ❀ भीतर बर्ष न जानै कोई

दो० जाइ रहौ वैराट में, जहां न जानै कोइ।
काल कटै बिपदा घटै, अधिकअधिकसुखहोइ॥

जैहै बीति बिपति सुख पैहौ ❀ नृपति फेरि धरणीपति ह्वैहौ
जाइ रहौ तुम देश पराये ❀ रहिहौ सबसन शीश नवाये
ओछी पूरी कहै जो कोई ❀ सहियो बिलग न मानब कोई
मद साधे नृपताक दुराये ❀ रह्यो जाति औ नाम छपाये
हीन रूप ह्वै रह्यो भुवारा ❀ यामें होइ छपाव तुम्हारा
बोलेउ राउ जोरि युग पानी ❀ नाम सकल ऋषि कहौ बखानी
आपुस में कहिये हम सोई ❀ होइ दुराव न जानै कोई
नृप के बचन सुनत सुख पाये ❀ ब्यास सबन के नाम बताये
कङ्क नाम भूपति को भाखा ❀ नाम जयन्त भीम को राखा

दो० नाम धनञ्जय को कह्यो, बृहन्नला ऋषिब्यास।
सेनी सहदेवहि कह्यो, सकल गुणनकी रास॥

बाहुक नाम नकुलको फेरा ❀ शैलन्धरी द्रौपदी केरा
काटहु कलह जाय नर देवा ❀ गर्ब छांड़ि कीजै सब सेवा
छांड़ि क्रोध रहियो तुम राजा ❀ आयसु मानि करेहु नित काजा
कबहुँ न करेहु गर्ब अपकारा ❀ सेयहु नृपति समेत बिचारा
रह्यो सदा सबको रुख राखे ❀ परम अधीन दीन बच भाखे
निशिदिनकरेहुनयनलखिकाजा ❀ जाते रहै प्रसन्नित राजा
भीम आदि बरजेउ सब भाई ❀ जनि काहूसन करहिं लड़ाई
भये प्रकट जनिहै कुरुराजा ❀ होइहै नृपति तुम्हार अकाजा

दो० यहि बिधि तब बहु शिषदये, गयेब्यास ऋषिराज।
सोई मन्त्रन में धर्यो, मनसा बाच काज॥

पाई परम सीख भूपाला ❀ बसे कछुक दिन तेहिप्रणशाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नितप्रतिसकलअहेर सिधावहिं ❀ खगमृगअमितमारिलै आवहिं
धौम्यसहितऋषि सहसअठासी ❀ भोजनकरहिं सहज सुखरासी
एक दिवस नृप निकट बुलाये ❀ कह्यो ब्यास सोइ बचन सुनाये
हम अज्ञात बास अब करिहैं ❀ मिलै न सुधि तेहिदेशदौरिहैं
बंश पुरोहित मम हितकारी ❀ करौ कहो भलि चहौ हमारी
संवतबादि मिलेउ म्वहिं आई ❀ महि पर्यटन करौ तुम जाई
यह कहि नयननीर भरि आये ❀ बिदाकरत नृप अति दुख पाये
सकलऋषिन करि दण्डप्रणामा ❀ बिदाकिये कहिकहि सबनामा
चलेसकलमि लिआशिष दीन्हा ❀ नैमिष बिपिनबास तिन कीन्हा
करि अतिकष्ट करहिं जप योगा ❀ करुणासहित करहिं प्रियभोगा
कथा बिचित्र महामुनि कहेऊ ❀ जनमेजयमुनि सुनि सुख लहेऊ
मुनिसन प्रश्न बहुरि नृपकीन्हा ❀ किमि अज्ञातबास उन लीन्हा

दो० ब्याससीखता ऋषिकह्यो, भामन भूप उचाट ।
पांच बन्धु सँग द्रौपदी, आये नगर बिराट ॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा ❀ कहेनि छिपाइ यतन के चीन्हा
पुरते कछुक दूरि बन रहेऊ ❀ अन्धकूप ता भीतर रहेऊ
शमी बृक्ष ता मध्य बिराजा ❀ ताके निकट गयउ चलि राजा
अस्त्र सनाह बसन वर त्यागी ❀ शमी बृक्ष राखेउ बड़भागी
भीमसेन यक मृतक लै आई ❀ बृक्ष मध्य दीन्हो लटकाई
अब तरु भयउ निकण्टक सोई ❀ याके निकट न अइहै कोई
यहकहि फिरि सरवर तटआये ❀ नृपति आपु द्विजरूप बनाये
सबहिं राखि तहँ चलेउ नराटा ❀ गयो प्रथम तब नगर बिराटा

दो० दरबानी द्विज देखिकै, अद्भुत रूप बिलोकि ।
कह्यो नगर पैसार नृप, द्वार सके नहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन नृप भयऊ ❀ भीमसेन सहदेव ते कहेऊ
कैसे शकुन होत ये भाई ❀ हमहिं गणित करि देहु बताई
ऐसे लक्षण मैं पहिंचाने ❀ होइहैं काज सकल मनमाने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिली बाल बालक मगलीन्हे ❀ धेनुबाल प्यावत सुखकीन्हे
सुख महँ दिवस बीति हैं नीके ❀ ह्वैहैं काज महीपति जीके
अशकुन एक होत है भीमा ❀ यहै शोच आवत है जीमा
लीलै मूष बाम मंजारी ❀ बीते कछु दिन कलह पछारी
सरवर बन्धव चारि ठयेऊ ❀ राजसभा चलि भूपति गयऊ
द्विजको रूप महीपति कीन्हे ❀ अक्षमाल शिर चन्दन दीन्हे
लकुटि पाणि पुस्तकी सोहाई ❀ सभा मध्य पहुँचे सो जाई

दो० दीन्ह अशीश ऋषीश तब, भेंट्यो सहित सनेह।
उठि बिराट नृप बिप्रलखि, शिरनायो युतनेह॥

कह नृप बिप्र कहांते आयो ❀ धर्मराज तुम पास पठायो
कहेउ बचन मो चलती बारा ❀ करिहैं नृप प्रतिपाल तुम्हारा
हम पर परम अवस्था आई ❀ काटहु दिन बिराट गृह जाई
मोसन बचन कहेउ यह सांचो ❀ गिरिबर गुहा पैठिगये पांचो
जाहु बिराट महीपति पासा ❀ उहां तुम्हैं सब भांति सुपासा
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा ❀ जानौ सब गुण ज्ञान निबेरा
धर्मसुवन तुम पास पठावा ❀ ताते निकट तुम्हारे आवा
सुनि महीप कीन्हो सनमाना ❀ बैठारे गुण ज्ञान निधाना
कहौ नाम निज भूपति पूँछा ❀ कहेउ नरेश सकल छलछूँछा
कङ्कनाम म्वहिं ब्यास बखाना ❀ सुनिक्षितिपतिकीन्होसनमाना
जान्यो ब्राह्मण परम अनूपा ❀ अर्द्धासन बैठारेउ भूपा

दो० प्रीति पुनीत भुवालकी, परमस्वच्छ द्विज देखि।
रह्यो युधिष्ठिरकी सभा, है गुणवान बिशेखि॥

पुनि आयो तहँ पवनकुमारा ❀ आनि भूपकहँ कीन्ह जुहारा
दीरघ तन दीरघ भुज दण्डा ❀ निरखत कौतुक भयो अखण्डा
नृपके निकट भीम जब गयऊ ❀ देखि सभा सब चकृत भयऊ
सकैं न बूझि सबै भय पावा ❀ कौतुक कौन देश ते आवा
है यह कौन परत नहिं चीन्हें ❀ मल्लरूप दरबी कर लीन्हें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चकित सभासद करहिं बिचारा ❀ यह धौं कौन आहि करतारा
आवत देखि बिराट महीपा ❀ बूझ ताहि बुलाय समीपा

दो० कितते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम ।
कौन जाति केहि हेत कहि, आयो मेरे धाम ॥

सुनु नृप नाम जयन्त हमारा ❀ राज युधिष्ठिर केर सुवारा
करौं बिबिध बिधि ते जेंवनारा ❀ व्यञ्जन अमित बनावनहारा
अति सुगन्धयुत मिष्ट सलोने ❀ करौं पाक औरे नहिं होने
जेइ कृतज्ञ भूप भुपाला ❀ बकसत नित पटमणिगणमाला
सरबर भीमसेन की राखत ❀ अमृतसरिस बचन नृप भाषत
भोजन करत भीम के सङ्गा ❀ पालि नृपति तनकीन्ह मतङ्गा
सुनिबिराटनृपअतिहितकीन्हा ❀ रहउ बन्धुसम आदर दीन्हा
जिमि राखत तुव पाण्डुकुमारा ❀ तेहिते हेत हमार अपारा

दो० निरखे सरबरि भीमकी, भूपति ताकी देह ।
तैसो बली बिचारिके, ढिगराखे करि नेह ॥

निशा पाय अस पार्थ बिचारा ❀ केहि बिधि नगर करौं पैसारा
होय दुराव न जानै कोई ❀ सहदेव यतन बतावहु सोई
सुधि भूली तुमको किन भाई ❀ सुरपुर असुर बध्यो जब जाई
तब सुरनाथ कृपा अतिकीन्हा ❀ अस्त्रसिखाइ मुकुट निजदीन्हा
तब उन पुत्रभाव करि जाना ❀ दीन्ह बास भीतर अस्थाना
देखि मेनका देह बिसारी ❀ भई कामबश सुरपति नारी
रति मांगी तुमते करि ईड़ा ❀ पारथ करहु संग मम क्रीड़ा
पूरण करौ मोरि अभिलाषा ❀ त्राहि त्राहि माता तुम भाषा
तब मेनका क्रोध अति कीन्हा ❀ होवहु हिजशाप यह दीन्हा
प्रात होत सुरपति पहँ जाई ❀ शापकथा तुम सकल सुनाई
कहेउ सुरेश मेनकहि बोली ❀ शाप अनुग्रह करौ अमोली
सुनि सुरेश के बचन रसाला ❀ कीन्हो शाप अनुग्रह बाला
जब चाहौ तब वर्ष प्रयन्ता ❀ बृहन्नला तन होयहु सन्ता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुर त्रिय शाप आशिषा भयऊ ❀ हिजरूप अर्जुन ह्वै गयऊ
भूषण बसन द्रौपदी केरा ❀ तन शृंगार कीन्हो बहुतेरा
दो० बृहन्नला ह्वै पन्थ तब, कीन्हो तिय को रूप।
कङ्कण किङ्किणि आदिदै, अभरण सजे अनूप॥
शिरसिन्दूर तमोल मुख, मेंहदी युत युगपानि।
जावक चरण मृदंगकी, धुनिकीन्हीतिनआनि॥
गयो द्वार नृप पाण्डुकुमारा ❀ कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा
गायन राज्य युधिष्ठिर केरा ❀ आयों करि पुहुमी को फेरा
सब नृप द्वार देश फिरि आयों ❀ भोजन कहुँ न पेटभरि पायों
जब बन चले युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहिं तब निकट बुलाई
जायो भवन बिराट भुवारा ❀ तहँ ह्वैहै प्रतिपाल तुम्हारा
बेतपाणि राजा सन जाई ❀ समाचार सब कहेउ बुझाई
गायक द्वार एक प्रभु आवा ❀ कहत युधिष्ठिर मोहिं पठावा
दो० सुनि बोली भीतर नृपति, सब बूझ्यो ब्यवहार।
सकल गान सांगीत लखि, कला चौंसठी चार॥
नृपति युधिष्ठिर केर अखारा ❀ करौं गान सांगीत प्रचारा
गावहुँ मोहन राग रसाला ❀ नाचि नाचि रिझवों महिपाला
अपनो गुण कहिबे निजबानी ❀ कहत भूप आवत गिल्यानी
रहत रहे जे धर्म समाजा ❀ मम गुण पूँछ कङ्कसन राजा
बिद्या पढ़ी सकल नृप जेती ❀ जानत सकल कङ्कऋषि तेती
जब बन चल्यो युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहिं निज निकट बुलाई
सेवहु तुम बिराट नृप जाई ❀ मिलेहु मोहिं निजकाल बिताई
है समरत्थ बिराट भुवाला ❀ सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला
दो० मैं पारथको सारथी, बृहन्नला म्वहिं नाम।
जीवन आयों आपुघर, लियों आइ बिश्राम॥
धर्मपुत्र करिकै बहु नेहू ❀ पठयो इहां जानिकै गेहू
इतनो भार हमारो लेहू ❀ बस्तर अन्न बर्षभरि देहू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लघु कन्या बालकन पढ़ाऊँ ❀ पूरणगति सांगीत सिखाऊँ
बिद्या अमित बरणि नहिं जाई ❀ अल्प दिवसमहँ देउँ सिखाई
भूपसुता उत्तरा कुमारी ❀ सौंपी पढ़न योग सुकुमारी
फिर सहदेव पहूँचे आई ❀ नृपसों बचन कहत शिरनाई
मैं तो धर्मपुत्र को ग्वाला ❀ अतिशयकृपाकरहिं महिपाला
निकसि दूरिबन बीथिन गयऊ ❀ दै उपदेश पठै म्वहिं दयऊ
करि जानौं गायन कै सारू ❀ अरु जानौं नवबिधि हथियारू
मो देखत गोधन को हरई ❀ को नर जुरि मम समता करई
बर्ष पञ्च इक धेनु चराई ❀ सेवन करौं पञ्चशत गाई
सत्य बचन यह सुनहु भुवारा ❀ सेनिखोप है नाम हमारा
मोहिं जयन्त कङ्क ऋषि जानहिं ❀ उनहिं बूझि भूपति तब मानहिं
सुनि तिन जानेहु बुद्धिबिशाला ❀ सौंपी सब सुरभी भूपाला

दो० फेरि नकुल आये तहां, लीन्हे ताजन हाथ ।
देखि रूपकी राशि तब, चकित भये नरनाथ ॥
कौन देशको जाति कहु, कहा तुम्हारो नाम ।
केहि कारण बैराट कहि, देखो मेरो धाम ॥

बाहुकराय युधिष्ठिर केरा ❀ राखत मान सबै बिधि मेरा
मैं दुरिकै बन गयों भुवारा ❀ दै सबते हम कहँ दुखभारा
काटर कूचर अश्व चलावों ❀ योजन शत प्रमाण लै धावों
बूझहु कङ्क ऋषिहि गुण मेरो ❀ आयों नृपति नाम सुनि तेरो
मो कहँ सौंपौ साहन जेते ❀ करौं बनाय सूध सब तेते
सुनि भूपाल अमित सुख पावा ❀ पाण्डुसुवन ते हेत बढ़ावा
देखि मूक मुख तिन तेहिकाला ❀ कह बाहुक तन चतुर भुवाला

दो० सौंपेउ साहन नकुल कहँ, हो भूपाल उदार ।
बहुरि सो आई द्रौपदी, भूपतिभवन मँझार ॥

नगी किधौं पन्नग की जाई ❀ कमला किधौं देह धरि आई
रानिन सहित सखिनके बृन्दा ❀ निरखैं मुख चकोर जिमि चन्दा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह रानी निज नाम बतावो ❀ केहि कुल की कुलबधू कहावो
कहौ जाति आपनि गुणग्रामा ❀ केहिकारज आइउ ममधामा
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी ❀ दासी तासु लेहु म्वहिं जानी
सुनेहुँ श्रवण तुव अमित बड़ाई ❀ देखेहुँ द्वार बिपतिबश आई
पतिसँग चली बिपिन जब रानी ❀ मोसन कही बिहँसि यह बानी
तुम गृह जाहु बिराट भुवाला ❀ काटेहु काल कछुक दिन बाला

दो० आइउँ तुव सेवाकरन, सैलंधरि मम नाम।
आज्ञा देहु कृपाल ह्वै, करौं यहां बिश्राम॥

बोली बिहँसि बचन तब रानी ❀ केहि सेवा में बहुत सयानी
चन्द्रबदनि सोइ बेगि बताऊ ❀ सौंपौं तुमहिं सहित चित चाऊ
भोजन मैं करवावों रानी ❀ भूषण अङ्ग सजौं सुखदानी
चुनि चुनि नये बसन पहिराऊं ❀ लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं
लै कुंकुम घनसार लगावों ❀ कुसुमावलि शुचि सेज बनावों
अतर लाय तन पान खवावों ❀ तुम्हरी आज्ञा सदा बजावों
करिहौं दोय काज नहिं रानी ❀ छुवहुँ चरण नहिं जूठनि खानी
सैलंधरी बचन सुनि काना ❀ रानी बहुत कीन सनमाना
तनया सम मेरे गृह रहियो ❀ मोसन मन की बातैं कहियो
हलुकी भारी कोइ न भाषहिं ❀ सब कोई आदर तुव राखहिं
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा ❀ निशिदिन करौं तुम्हारो पोषा
सैलंधरी जोरि युग पानी ❀ करतबिनय सुनियो कछु रानी
रक्षक मोर पञ्च गन्धर्बा ❀ निशिदिन मोहिं रखावत सर्बा
अति बलवन्त भयानक सोई ❀ रहैं संग देखै नहिं कोई
सो वे अन्तरिक्ष के बासी ❀ करैं प्रीति जानैं निज दासी
पाप बुद्धि देखै म्वहिं कोई ❀ करैं निबर्त होय किन जोई
जाको अन्न खाइये रानी ❀ तापै रहिय सदा छल हानी
याते तुमकहँ प्रथम जनाई ❀ पाछे जनि ठहरै कनि जाई
सत्यबचन सुर मोर सहाई ❀ लखै कुदृष्टि जियत नहिं जाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राखी निकट परमहित मानी ❀ निशिदिन प्रीतिकरत प्रतिरानी
सजत शृँगार सिखावत जोई ❀ सैलंधरी बचन सोइ होई
काल पाइ कै पाण्डुकुमारा ❀ मिलहिं समेत द्रौपदी दारा
सकलअवस्था निजनिज कहई ❀ फिरि बिलगाय मौन ह्वै रहई
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं ❀ प्रथमकङ्कऋषि को शिर नावहिं

दो० यहिबिधि पांचौ पाण्डुसुत, और द्रौपदी बाम ।
कालक्षेप पुनि करहिं जिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेविराटपर्व
पाण्डवअज्ञातवासवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० कछु दिन बीते नगरमो, गृह गृह प्रति उत्साह ।
अपनी दुहिताको रच्यो, नृपति बिराट बिवाह॥

देश देश कहँ दूत पठाये ❀ सकल क्षितीश पुहुमि के आये
सभा विचित्र रची तहँ राजा ❀ जनु अमरावति रच्यो समाजा
आयु लसैं जैसे सुर साई ❀ सब नरेश जनु सुर समुदाई
सुरगुरुसम ऋषि कङ्क बिराजा ❀ अतिविचित्रतहँ बनी समाजा
कहूं नृत्यकारी नचि गावैं ❀ कहूं नाटकी स्वांग लै आवैं
नाचहिं कहुँ निदूषकरि जाला ❀ कूजहिं कांख बजावहिं ताला
गाल फुलावहिं करहिं तमासा ❀ नानाभांति करहिं परिहासा
वारमुखी बहु नाचहिं गावहिं ❀ बानी बेनु मृदङ्ग बजावहिं
बाजहिं आउझ झांझ तँबूरे ❀ मुनिमन हरत राग अतिपूरे
चन्द्रबदन उर्वशी लजाहीं ❀ जिनहिंदेखिरतिद्युतिकछुनाहीं
काहूं मल्ल लरहिं अति भारे ❀ कहूं मेष अतिलरहिं सिंगारे
मत दम्पति कहुँ लरहिं दँतारे ❀ श्याम वर्ण पर्वत से भारे

दो० शोभा राजसमाज की, मोपै कही न जाय ।
देश देश के भूप सब, जुरे सुवेश बनाय ॥

मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा ❀ दीरघ तन दीरघ भुजदण्डा
ओ द्वो चरण कड़ा द्वो पानी ❀ पीत बसन शोभा की खानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बड़ी भीर भूपन के देखी ❀ कही सभा महँ बात परेखी
अहंकार युत बचन बखाना ❀ सुनहु महीप बचन दै काना
जीति बिदर्भ देश जे शृङ्गी ❀ जीते मल्ल सरङ्ग तिलङ्गी
काशमीर लाहौर चँदेरी ❀ बन्दर सब करनाटक हेरी
अङ्ग बङ्ग कामरू मँझाई ❀ औरौ देश बिलोकेउँ जाई

दो० मोसे मल्ल जुरे नहीं, कोउ न कौनेउँ देश।
है कोई मोसे जुरै, आज्ञा देहु नरेश॥

सुनि सुनि सभा न बोलै कोई ❀ मन साहस काहू नहिं होई
नृप बिराट को सुधि ह्वै आई ❀ तब जयन्त कहँ लीन्ह बोलाई
सुनि जयन्त मम आज्ञा मानो ❀ मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो
मैं अपने मन कीन्ह बिचारा ❀ तुम सुआर यह मल्ल जुझारा
जो हारो तौ हारि न होई ❀ जीते द्रव्य देइ सब कोई
धरि मारौ जो मल्ल जुझारा ❀ जगमहँ होइहि सुयश तुम्हारा
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं ❀ रहे चुपाय कङ्क मुख चाहीं
कहेउ कङ्क किमि हृदय डेराना ❀ करु जयन्त नृप बचनप्रमाना

दो० तब जयन्त यह मल्लसों, कही बात अरगाय।
हम तुम रससों खेलिये, लीजै सभा रिझाय॥
तू जो आनै रोष मन, डारै भुजा उपारि।
हम परदेशी उदरहित, देहैं भूप निकारि॥

कहेउ मल्ल सुनु कौन बिचारा ❀ तैं कस कादर बचन उचारा
दीरघ भुजा बचन कह दीना ❀ ऐसी कहै होय जो हीना
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❀ तब जयन्त यह बचन सुनाये
करु अब जौन होय बल तोरा ❀ जनिमानसि खग मोर निहोरा
मल्लयुद्ध लागे दोउ करना ❀ मुष्टिघात अरु घालहिं चरना
मल्लयुद्ध दोउ यहि बिधि करहीं ❀ लपटहिं धरहिं भूमि झुकि परहीं
फिरिफिरिकरिबलउठहिंसँभारी ❀ समबलयुगल न मानहिं हारी
तबजयंत भुजबल अतिकीन्हा ❀ मल्ल उठाय डारि महि दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करि बड़ क्रोध सो भूपर डारा ❀ जनु सुरवज्र गिरिन को मारा
सँभरि उठ्यो यह बचन सुनाये ❀ अब मारौं खल तू कित जाये
लै तब गुरज उठो अकुलाई ❀ हनो जयन्त नासिका जाई
बिषम चोट थर हरेउ शरीरा ❀ मूर्च्छि गिरेउ महि पाण्डवबीरा
देखेउ कङ्क सेलंधी जानी ❀ हाइ हाइ करि अति अकुलानी
चेति जयन्त उठो गल गाजी ❀ जान न पाइहि अब खल भाजी
भूमिहिं सातवार धरि मारहुँ ❀ गहिरे गर्ब दुष्टको गारहुँ
फेरि जुरेउ जिमिकरि बलजोरी ❀ कीन्ह प्राण बिन मल्ल मरोरी

दो० मृतक तासु तन क्रोधकरि, दीन्हों दूरि पवाँरि ।
देश देशके भूप सब, करत बड़ाई भारि ॥

देखत सभा सबै नर हर्षे ❀ बसन कनक मणि मोलनबर्षे
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❀ कहौ सुनौ अब भा जस काजा
मत्त गयन्द नृपति को ऐसो ❀ कज्जल गिरि भूधर है जैसो
कानि महावत की नहिं आवे ❀ करै प्राण बिनि जो द्विपपावे
सुन्दर महल दिये महिपारी ❀ गये निकट नर डारै फारी
शूंड़ि दावि बहु बृक्ष उखारै ❀ नहिं कुन्तल ते रहै सँभारै

दो० बांधहु जाय गयन्द कहँ, पठये नर नरपाल ।
सकै निकट नहिं जाय कोउ, देखि देव बिकराल ॥

जाय भूप सन कथा जनाई ❀ कोऊ निकट सकै नहिं जाई
कैसेहु हाथ न कुञ्जर आवै ❀ अब सो करिय जो भूप बतावै
तब जयन्त ते कहेउ बोलाई ❀ गजहि पकरि लै आवहुजाई
कै बांधहु कै डारहु मारी ❀ पुरको कण्टक देहु निकारी
जब नरेशकी आज्ञा पाई ❀ चल्यो बृकोदर अति हरषाई
सिंहनाद गरज्यो बलबीरा ❀ तब गयन्द थरहरेउ शरीरा
पूछ पकरि झकझोरेउ ऐसे ❀ दाबत मृग करु चीता जैसे
दशन पकरि लै पहुँचो थाना ❀ ज्यों अजया लीजै गहि काना
बांधि ताहि भूपहि शिरनायो ❀ तब जयन्त बसनन पहिरायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० यहिबिधि बीते मास दश, नृप बिराट के तीर ।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पाण्डुपुत्र बलबीर ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वसबलसिंहचौहानभाषा
कृतेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० कीचक बली बिशालतन, नृप तरुणीको बन्धु ।
सहसद्विरदसमताहि बल, यौवनमदअतिअन्धु॥

शत बान्धव कीचक के बली ❀ बल अवगाहन नृप अस्थली
सोहत यक यक मातु के जाये ❀ ऐसे सुभट महीपति भाये
एक दिवस कीचक हरषाई ❀ निज भगिनी के मन्दिर जाई
रानी ढिग कीचक चलिजाई ❀ कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई
बन्धु बिलोकि हृदय हरषानी ❀ दीन्हअशीश मुदित मनरानी
भोजन करत कनक की थारी ❀ द्रुपदसुता तहँ करत बयारी
देखि चेरि कहँ कीचक बीरा ❀ काम बिबश थरहरेउ शरीरा
इत भगिनीसन बचन बखाना ❀ दासी बस ह्वै रह्यो पराना
तहँ कीचक तन दशा बिसारी ❀ सेलन्धरि दिशि रहो निहारी
भयो कामबश बुद्धि भुलानी ❀ छांड़िसि लोकलाज कुलकानी
सेलंध्री अपने मन जाना ❀ कामबिबश यह खल बौराना
ताहि सुनाय कहो सुनु रानी ❀ अकथकथा कछु कहौं बखानी
गन्धब पञ्च महा बल भारे ❀ ते मम सँग निशिदिन रखवारे
अन्तरिक्ष देखै नहिं कोई ❀ तुम कहँ प्रथम सुनायों सोई
मोहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई ❀ सो नर कठिन कालबश होई

दो० अवशि हनैं गन्धर्ब तेहि, मोहिं बिलोकै जोइ ।
बली होइ की निर्बली, जीवत बचै न सोइ ॥

यदपि सेलंध्री बिभव बखाना ❀ कीचकमनहुँ सुन्यो नहिं काना
काम अन्ध नहिं सूझत तेही ❀ बिषअस छहरि गयो सब देही
भयो बिकल सब दशा बिसारी ❀ दौ करजोरि बिनय अनुसारी
भगिनी सन बोला बिसवासी ❀ मांगे देहु मोहिं निज दासी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोकहँ मिलै मोहिं यह इच्छा ❀ मांगौं लाज छांड़ि यह भिक्षा
मोहिं दया करिकै यह दीजै ❀ याकी बदि सहस्र तुम लीजै
लाज छांड़िकै करौं ढिठाई ❀ करौ बचन फुर हृदय जुड़ाई
होइ मोरि तौ जाउ लवाई ❀ देउँ बन्धु किमि बस्तु पराई

दो० द्रुपदसुता की अनुचरी, देत मोहिं अति क्षोभ ।
यह मोरे जनु पूतरी, करौ बन्धु जनि लोभ ॥

जादिन प्रथम भवन मम आई ❀ कन्या कै राखेउँ मैं भाई
कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा ❀ सुनइ न काम बिबश मतवारा
रानी बचन कहे बिधि नाना ❀ कीचक सुन्यो न एकौ काना
बोली बहुरि बचन यह रानी ❀ सुनहु बन्धु इक कथा पुरानी
द्रुपदसुतापति सँग बन गयऊ ❀ इसहि पठाइ भवन मम दयऊ
रहै जीविका हित गृह माहीं ❀ दासी मोरि बन्धु यह नाहीं
जाइय भवन दई नहिं जाई ❀ देउँ कौनि बिधि बस्तु पराई
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❀ क्रोधवन्त ह्वै बचन सुनाये

दो० कहु कैसे तू राखिये, दासी बल करिलेहुँ ।
राज्य पाट सब छीनिकै, कोटिकोटि दुख देहुँ ॥

चेरी लागि नशावहु राजू ❀ तोरे कहा सुधरिहै काजू
अति बलवन्त बन्धु शतमोरे ❀ राखिलेइ ऐसो को तोरे
सुन्यो कठोर बन्धु की बानी ❀ बोली परम क्रोध ह्वै रानी
पर तरुणीरत जे जग भयऊ ❀ ते निजकरणी सों मिटिगयऊ
जो चाहौ आपनि कुशलाता ❀ फेरि कहौ जनि याकी बाता
रावण कथा सुन्यो तुम भाई ❀ रामचन्द्र की नारि चोराई
सियाहरत नहिं लागि विलम्बा ❀ नश्यो दशानन सहित कुटुम्बा
गौतमतियलखि शक्र लुभाने ❀ भयो सहसभग जग सबजाने
बांधेउ असुर पाप बश सोई ❀ भयो खण्ड जानत सब कोई
ह्वै सकाम गिरिजा तन हेरा ❀ एक नयन बिन भये कुबेरा
शुम्भनिशुम्भ असुरअभिमानी ❀ मोहा परम शक्ति जियजानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कथा प्रसिद्ध सकल जग खानी ❀ अपने पाप मिटा अभिमानी
बन्धुबधूरत रघुपति जानी ❀ मारेउ बालि हिये शर तानी
परत्रियरतहितशठ मन दीन्हा ❀ पैहै फल खल आपन कीन्हा

दो० भगिनी मुखके बचनसुनि, कियपयाननिजधाम।
बिकल महाजियकलनहीं, घरी मुहूरत याम॥

कीचकको सुधि बुधि नहिं रहेऊ ❀ सूने महल सेलन्धरि लहेऊ
कामअन्ध अञ्चल तेहि गहेऊ ❀ आतुरह्वै यहि बिधि तब कहेऊ
चित हमार तुव रूपहि पागो ❀ भयो असक्त सुधीरज भागो
मेरे तरुणी शशि अनुहारी ❀ सबपर होय सोहागिल नारी
उत्तम भूषण बसन बनावो ❀ अरु दासी को नाम मिटावो
बचन तुम्हार मेटि नहिं जाई ❀ रहौ नारि मम हृदय समाई
सुनत बचन मन शङ्का आई ❀ कहेउ सेलन्ध्री बचन बनाई
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा ❀ कीन्हे प्रीति नाश है तोरा
गन्धर्ब पञ्च मोहिं रखवारी ❀ दीरघ तन मन बिक्रम भारी
मोहिं छुवत वे तुरतै आवैं ❀ सुनु कीचक तुव प्राण नशावैं
तव मारे मम अपयश होई ❀ मोकहँ दोष देइ सब कोई
या महँ उभय प्रकार बिगारा ❀ मरण तोर मम देशनिकारा
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी ❀ इहां जीविका उठी हमारी
यह सुनि कीचक अतिभयमानी ❀ गई पराइ पाण्डु की रानी
निशिदिन ताकहँ नींद न आवै ❀ धन सम्पति घरबार न भावै
बोलि दूतिका यहि बिधि कहेऊ ❀ वह दासी मम चितबसिरहेऊ

दो० मनसा बाचा कर्मणा, तुमअबकरहु उपाउ।
मृगनयनीनिशिकरबदनि, मोपरभुरै लैआउ॥

भुरै लै आउ सेलन्ध्री आवे ❀ निज इच्छा मांगो तुम पावे
गई दूतिका बिबिध प्रकारा ❀ लागी करन युक्ति उपचारा
बहुत भांति दूती समुझायो ❀ चित्त सेलन्ध्री एक न आयो
यहां बिचार न बोलै सोई ❀ आजु काल्हि कछुकाज न होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रही मास दै अवधि हमारी ❀ नहिं जानै कुरुपति अपकारी
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो ❀ जहां सेलन्ध्री तहँ चलि आयो
दो० सूने घरमों पायकै, गहे केश कर धाय।
अबकहु राखै तोहिंको, कौन छुड़ावै धाय॥
गन्धब महँ गन्धबपति होई ❀ सकै छुड़ाय तोहिं नहिं सोई
गन्धब के बल तू अभिमानी ❀ बोलु छुड़ाय देइँ अब आनी
यदपि बली रक्षक तू होई ❀ मोरे तुल्य होइ नहिं सोई
ब्याकुल भई नीचबश रानी ❀ गई लाज अब हृदय डेरानी
हरे कृष्ण नाम यह भाखी ❀ दुश्शासन ते तुम पति राखी
सेलन्ध्री बिनवै मृदुबाणी ❀ बिबिधप्रकार जोरि युग पाणी
यदपि बिनयकृतबिबिध प्रकारा ❀ सुनै न काम विवश मतवारा
बोला कामवश्य रिसिआई ❀ तजौं तोहिं करि निजमनभाई
दो० दासी कर्म कराइकै, त्रास देखावहुँ तोहिं।
अपनो मनभाई करौं, यहीबानि अब मोहिं॥
कैसेहु खल नहिंहठ तजै, अंचल डारो फारि।
करते केश न तजै सो, अतिअकुलानीनारि॥
सेलन्ध्री तब बुद्धि विचारी ❀ बिबिधभांति कीन्हीं मनुहारी
रसते प्रीति बढ़ति है जोई ❀ तस नहिं कछु अनरस ते होई
दान मान युत आदर धरई ❀ परतिय सो अपने वश करई
यथा बीजते द्रुम उठिजाई ❀ तिमि रस की प्रतीति सरसाई
निशिदिन लिये रहै मनु हाथा ❀ बढ़ै हेत तब परतिय साथा
मिष्ट सुधा सम बचन सुनावै ❀ इष्ट समान हिये बिच लावै
कहत बचन फुरवै सब सोई ❀ परपत्नी ताके बश होई
यह कीचकहु सुन्यो ना चीन्हा ❀ परतियबरबसकेहिबश कीन्हा
दो० जानत रसकी प्रीति नहिं, तैं खल एकौ बात।
परतरुणीको मन दयो, तबसबसुखसरसात॥
रहसिरहसि अबमनमिलै, तौलहिहँसिपरनारि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बौरायो यह बचन कहि, गूढ़ उपाय बिचारि ॥
तजे केश तब गृह अभिमानी ❀ सेलन्धरी गई जहँ रानी
कह ऋषि सुनु कुरुबंशभुवारा ❀ गये बीति पुनि इकपखवारा
दीपमालिका के दिन रानी ❀ बोली सेलन्ध्री सों बानी
भोजन मिष्ट कलुक हित भाई ❀ सुरा पात्र दै आवहु जाई
द्रुपदसुतासुनि अतिअकुलानी ❀ जाब मोर उहँ नीक न रानी
लज्जा मोरि जीव वहि केरा ❀ रानी जात न लागी बेरा
यदपि सेलन्ध्री कह्यो बखानी ❀ बरबस ताहि पठायो रानी
पिये मत्त मद कनक प्रयंका ❀ देखि सेलंध्री भयो सशंका
अशन पान महि राखि परानी ❀ धाय केश पकरे गहि पानी
सेलंध्री तब बचन उचारे ❀ गहत केश केहि हेत हमारे
तुव मन बसेउ मोर मन सोई ❀ दिनराति कीचक पशुगति होई

दो० रैनि गये तुम आयऊ, नाच अखारे जाय।
शिथिलभयोयहबातसुनि, केशादिये मुकराय॥
योग भोग सूने सदन, बननिशिकीचकराय।
जाउ तहां हौं आइहौं, यामक रैनि गँवाय ॥

जहां उत्तरा की चटसारा ❀ होइ मिलाप हमार तुम्हारा
खलते लाज बचन नहिं जानी ❀ करि छल गई बहुरि जहँ रानी
कीचक यह सुनिअतिसुखपावा ❀ कह्यो सैलंध्री बचन सुहावा
जात भयो अपने गृह सोई ❀ हेरत बाट निशा कब होई
गई दुखित तहँ द्रौपदि रानी ❀ है पतिभूप जहां सुखदानी
कीचक कानि न याको राखी ❀ सो गति बाम भूपसन भाखी
आयसु अर्जुन को नृप दीजै ❀ कीचक मारैं सो नृप कीजै
यह कहिकै उपजी तन तापा ❀ ऊँचे स्वर करि कीन्ह विलापा
रोवत बाम श्वास नहिं आवै ❀ भूपति बहुत भांति समुझावै

दो० मास दिवस बीते त्रिया, सो व्रत पूरण होइ।
तौलगि कालहि काटिये, लखै कछू नहिं कोइ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अवधि बीत कीचक संहारौं ❀ तब त्रिय और बिचार बिचारौं
की तब लगे रहौ मन मारी ❀ की बनबास करावो नारी
सुनि नृपबचन बिकलभै रानी ❀ करत बिलाप हिये अकुलानी
उतर देत नहिं बनहि बनावा ❀ नयनन नीरगरे भरि आवा
रोदन करत चली तब रानी ❀ गै पति अब पति बात न मानी
बिलखि बदन तिय पहुँची तहां ❀ हते बीर बल अर्जुन जहां
नयन सनीर कढ़त नहिं बानी ❀ कथा समस्त बखानी रानी
बरणी कीचक की अधिकाई ❀ कह्यो भूपमन कछु नहिं आई
दीन्ह जवाब धरणि के धरणा ❀ आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा
मेरो कहो गोसाईं कीजै ❀ हति कीचक जगमें यशलीजै
तुमहिं अछत अस हाल हमारा ❀ बलपौरुष कहँ गयो तुम्हारा

दो० कह्यो पार्थ तब त्रियासों, करिअतिक्रोधकराल ।
आज्ञा पावों भूपकी, शठहि बधौं उत्ताल ॥

जो भूपति की आज्ञा पावों ❀ तौ कीचक यमलोक पठावों
नृप की कानि न तोरी जाई ❀ तोरे कछु नहिं करौं उपाई
सरवर तीर सबन के आगे ❀ चलती बार बचन नृप मांगे
मम आयसु बिन कृतकठिनाई ❀ कृष्णचरण तेहि कोटि दुहाई
नृपको बचन न मेटो जाई ❀ मास दिवस तुम रहौ चुपाई
सुनत सैलंध्री अति दुखमाना ❀ पारथको कछु बचन बखाना
छूटो तुमहिं क्षत्रिकुल बाना ❀ तजेउ सानधरि बेष जनाना
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा ❀ तुमहिं जियत अस हाल हमारा
सो सुनि पार्थ रहो शिरनाई ❀ माद्री सुतन तीर चलि आई

दो० गई नकुल सहदेव पहँ, बिलखि बदन बरनारि ।
अधिकारी ता दुष्टकी, सब बिधि कही पुकारि ॥

कीचक बांह हमारी गही ❀ तुम में कहौ कहां पति रही
मेरे कहेको नहिं हँसि टारो ❀ क्यों न आपने अरिकहँ मारो
सहदेव नकुल कही सुनु रानी ❀ मेटि न जाइ भूपकी कानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह्यो नृपति म्वहिं बारहिबारा ❀ भ्राता यह न करेउ अपकारा
कटुक कहेउ सुनिलेउ चुपाई ❀ काहुहि उतरु न दीजै भाई
बिन आज्ञा कृत करम दुरन्ता ❀ जानौ पाप मोर बपुहन्ता
तुव दुख देखि मोहिं कठिनाई ❀ नृप आयसु मेटी नहिं जाई
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा ❀ जोरिपाणि रानिहिं समुझावा

दो० सुनि सुनि तेरे बचन अब, बाढ़त क्रोध अपार।
मेटाजाय न नृपबचन, बिनयो बारहिंबार॥
मारौं कीचक क्षणकमहँ, भूपतिआयसु पाय।
करै अवज्ञा नारि अब,काकरिनरकहिजाय॥

मास एक तू और निवारी ❀ तब सकिहौं कीचककहँ मारी
इनहूँ ते तिय भई निरासा ❀ पहुँची भीमसेन के पासा
सजल नयन भरि आंशू ढारे ❀ मींजत नयन भये रतनारे
पवनपुत्र तब यहिविधि जानी ❀ बिलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी
आयो द्वार लखे तिय नयना ❀ श्वासलेत कछु कहै न बयना
बोली बिलखि आजु गृहमाहीं ❀ कीचक दुष्ट गही ममबाहीं
पाण्डुसुवन पै फिरी पुकारी ❀ वे गुहारि लाग्यो नहिं चारी
अब तुम स्वामी रहौ चुपाई ❀ गहि सो दुष्ट मोहिं लैजाई
सुन्यो श्रवण जब सकल प्रसङ्गा ❀ रोष बढ़ो बिकसो सब अङ्गा
लखि त्रियके मुखकै मलिनाई ❀ दौरिगई दृग में अरुणाई
बूझत बचन उतरु नहिं देती ❀ गहवर बयन नयन जलसेती
कीचकको सुनि तव मुख नामा ❀ भयो सक्रोध भीम बलधामा
देखत जो न बधौं क्षण जाई ❀ कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई

दो० लीन्हों मीचु बुलाइकै, नीच आपने हाथ।
जीतो चाहत श्वाननर, सिंहबली के साथ॥

दादुर जुरा चहत हरि सङ्गा ❀ चीताहि जीता चहै कुरङ्गा
चहत कपोत बाजसनरारी ❀ मूषक जीतन चहत मँजारी
गर्दभ चहत मतङ्गहि ठेलो ❀ चहत भुजङ्ग गरुड़सँग खेलो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम सन कही बचन कटुबागी ❀ अपने हाथ मीच वहि मांगी
कहेसिबिलोम बचनतजिज्ञाना ❀ यहिकर काल आय नियराना
सैलंधी यहि बिधि समुझाई ❀ चल्यो भीम त्रिय रूप बनाई
नाच महल महँ बैठो भीमा ❀ दीप बुझाय क्रोध करि जीमा
तहां कामबश कीचक आवा ❀ नारिजानि कुचपाणि चलावा
गहे भीम तब द्वौ भुज दण्डा ❀ मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा
करिबल भीम ताहि महि डारा ❀ चला पराय अधम हियहारा
मोहिं युधिष्ठिर भूप दुहाई ❀ कीचकबधौं जियत नहिं जाई

दो० कालसर्पसों खेलेउ, कामलहरि अकुलाय ।
पूंछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत नहिं जाय ॥

पकरौ भीम क्रोध करि धाई ❀ भिरो बहुरि शठ ताल बजाई
द्वौ महँ हारि न कोई मानैं ❀ कोपि अमितगति युद्धहि ठानैं
अतिबल भीमसेन तब कीन्हा ❀ पटक्यो भूमि कण्ठ पग दीन्हा
मारि दुष्ट प्राणन बिन कीन्हा ❀ मूढ़ उठाय पुहुमि तब दीन्हा
महा खोहड़े राखो जाई ❀ जानै पुरजन नहिं ज्यहि भाई
डारेउ भीम तहां बलवाना ❀ परेउ अधमतन शृङ्गसमाना
लरत ढहेउ गृह शब्द अघाता ❀ सुनि नरेश जागो अधराता
चाहेउचलन खड्ग गहि पानी ❀ बरजेउ युगल जोरिकर रानी
नाम सैलन्ध्री तुव घर दासी ❀ कीचक करी तासु सँग हासी
गन्धब पंच तासु रखवारे ❀ जानि परी कीचक उनमारे
चुपकि रहेउ नृप तौ कुशलाई ❀ सुनि त्रिय बचन बैठ अरगाई
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❀ कहेउ सो भीमकीन्हजसकाजा

दो० मारि दुष्ट धरि खोहमें, मनकी व्यथा नशाय ।
अर्द्धनिशासुतपवनको, निजथल पहुँचो जाय ॥
जागे पुरजन सदनप्रति, प्रात भयो नर नारि ।
मृतकदेखिकीचकनहीं, कोउनहिंसक्योबिचारि॥

इति श्रीमहाभारतेकीचकवधवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० अन्तःपुर चरबर बदन, सुधि पाई नरपाल ।
सचिवसभासद सुभटसँग, तहँ आयो तिहिकाल॥

नृप बिलोकि शङ्का उपजावा ❀ सजलनयनमुखबचन न आवा
शोक बिवश तन दशा बिसारी ❀ करत बिलाप ताप अतिभारी
क्यहियहिबध्यो जानिनहिंजाई ❀ बार बार कहि नृप बिलखाई
करियउपायमिलैज्यहिशोधा ❀ बिनअरिनिधनमिटिहिनहिंक्रोधा
बन्धु बद्ध सुधि तावण पाई ❀ भूपति की तरुणी तहँ आई
रोदन करत बहुत अकुलानी ❀ देखत भूप व्यथा तन जानी
अपने मनही महँ दुख माना ❀ बार बार यह बचन बखाना
कीचक कौने शूर सँहारो ❀ जासों युद्ध जुरो सो हारो
अङ्ग नहीं क्षत और न आयो ❀ भूलिरहेउ कछु शोध न पायो
इमि महीप कह बचन बखानी ❀ बोली बिलखि बदन ह्वै रानी

दो० रहै तुम्हारे धाम मैं, जाहि सैलन्ध्री नाम ।
गन्धबरक्षकै तासु के, रक्षत आठौ याम॥
कीचक अतिआसक्त ह्वै, गही सैलन्ध्री बाल ।
ताही दिन ते मैं लख्यौं, घेरो है यहि काल॥

कीचक तिन गन्धर्बन मारे ❀ नहिं काहू पर गयउ उखारे
अब चलि क्रिया तासुकी कीजै ❀ लै लै कुश सब अञ्जलि दीजै
रानी बचन श्रवण सुनि राजा ❀ लागो करन क्रियाको साजा
तब कुतवालै बोल्यो राऊ ❀ प्रजालोग सब बेगि बोलाऊ
लै कीचक को घाटै जाऊ ❀ बिधिसों सर्व क्रिया करवाऊ
कह ऋषि कङ्क नीचको अङ्गा ❀ छुवतै सुकृत होइ सो भङ्गा
उत्तम जाति होइ नर कोई ❀ छुवै अङ्ग कीचक कर सोई
गयो नृपति सुधि आय तुरन्ता ❀ कहेउ लै आउ सुवार जयन्ता
बार बार तासन कह राऊ ❀ कीचक मृतक घाट लैजाऊ
सुन्यो न बचन रहेउ चुपकाई ❀ फेरि नृपति अस कहेउ रिसाई
तैं मेटो बल बचन हमारा ❀ मूढ़ कहां तव होइ गुजारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी ❀ मानत पाण्डुसुवन के आनी
धर्मराज पठयो तकि मोहीं ❀ सरबरि गनौं बन्धुकी तोहीं
नृपके बचन श्रवण सुनि भीमा ❀ कहेउ बचन क्रोधित ह्वै जीमा

दो० मारो कीचक मैं कहां, कत कीजत है क्रोध ।
मो दुख मानत बादि नृप, अन्तहि लीजै शोध ॥
भोजन भाजन छांड़िकै, मैं नहिं अन्तहि जाउँ ।
मनसा बाचा कर्मणा, तुमकहँ बहुत डेराउँ ॥
सो० करी कृपा नरनाहु, यहिबिधि कही जयन्त सों ।
कीचक को लैजाहु, दूरि नगर ते कृति करहु ॥
बन्धु कुटुम्बी सोइ, मृत्यु कही सों काढ़ि कै ।
कहा परी है मोहिं, ऐसे कर्म न हौं करौं ॥

बारबार इमि कह्यो भुवारा ❀ कृति करवावहु जाय सुवारा
देखि कङ्क ऋषि केर इशारा ❀ तब जयन्त इमि बचन उचारा
जो अब भोजन को कछु पावों ❀ तौ कीचक लै घाटै जावों
भोजन अमित भूप मँगवावा ❀ बैठि जयन्त तहां सब पावा
रोवैं कीचक के सब भाई ❀ बरणि बिबिध बल शील बड़ाई
मेवा बहु पकवान मिठाई ❀ खात जयन्त न होत अघाई
कह नरेश सुनु बचन जयन्ता ❀ मृतढिग भोजन कर्म दुरन्ता
लैजा लोथ करत कत देरा ❀ क्रियाकरन हित होत अबेरा

दो० करि भोजन बलवन्ततब, कीचक लियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाय ॥
इत कीचक के बन्धु सब, पकरि सैलन्ध्री बाल ।
जारनचल्यो कुबन्धुसँग, लियोचल्योतेहिकाल ॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो ❀ पकरि पांय वाके सँगजारो
बरजत पुरजन सो नहिं मानै ❀ काहू बचन चित्त नहिं आनै
करत बिलाप द्रौपदी रानी ❀ को राखै बिन शारँगपानी
बिबिध भांतिसों करत बिलापा ❀ अतिशय कङ्क ऋषिहि दुख व्यापा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखत रह्यो बिराट भुवाला ❀ सोउ न रोकिसक्यो तेहिकाला
पकरि ताहि तहँवां लै आयो ❀ कीचकमृतक जहां पौढ़ायो
भरिभरि घृतघट केतिक आने ❀ चन्दन अगर न जायँ बखाने
तहँ द्रौपदी अधिक सन्तापा ❀ हा गन्धब कहि करतविलापा
छुवत मोहिं तुव उर न दरेरा ❀ तुव बल थकितभयो यहि बेरा

दो० रुदनकरत लखि द्रौपदी, गृह तब चल्यो जयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अङ्गमें, देखत कर्म दुरन्त ॥
बसन उतारि धरेउ कहूं, भीम भीम ह्वै धाय ।
फूलिगात दूनो भयो, उपमा कही न जाय ॥

ह्वै गये अरुण नयन रतनारे ❀ उठो क्रोध नहिं रहत सँभारे
भृकुटिकुटिलअतिक्रोधप्रचण्डा ❀ कालदण्ड सम दौ भुजदण्डा
कुचर समान कलेवर भयऊ ❀ सरवर निकट भीम चलि गयऊ
करै बिचार करौं अब सोई ❀ जेहित्रियबचै निधन खल होई
बेष छपाय बन्यो गन्धर्वा ❀ कीचक बन्धु बधौं जेहि सर्वा
मरैं सकल सो करौं उपाई ❀ जेहि खलएक जियत नहिं जाई
बसन उतारि खोह धरि दीन्हा ❀ भीमरूप तब भीम ने कीन्हा
नग्नरूप तन परम मतङ्गा ❀ कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अङ्गा

दो० कीच चढ़ाई सकलतन, केश दिये मुकराय ।
कर तरुवरलै बज्र सम, दै दिखराई आय ॥

कीचक बन्धु भजे अकुलाई ❀ कह गन्धर्ब पहुँचिगा आई
भीम बटोरि बीर सब लयऊ ❀ सुर जनु बज्र गिरिन को हयऊ
भीम लपेटि पङ्कतन धायो ❀ बड़े केश बहुधा मुकरायो
बेष भयानक लखि बिकरारा ❀ चहुँदिशि भागिचले नरदारा
हने हांकि कीचक के भाई ❀ बृक्ष घातदै गर्द मिलाई
ह्वै निशङ्क सब लोथ उठायो ❀ चिता बनाइ सकेलि चढ़ायो
ताके हाथ कहा हथियारू ❀ सो सब बरणौं ताको सारू
कह जयन्त कछुबरणि न जाई ❀ जब गन्धर्ब पहूँचो आई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जोरिपाणि तिन बिनय सुनाई ❀ पाण्डवकी कहुँ सुधि नहिं पाई
सकल बिराट पुरी हम देखी ❀ लेत सुद्धि तहँ रहे बिशेखी
केहिं मारे कीचक सौ भाई ❀ सो कछु भेद जानि नहिं जाई
लखे न पाण्डुसुवन तेहि ठावां ❀ सुन्यो श्रवण नहिं एकौ नावां
कह्यो दूत नृप सों बच येहू ❀ सुनि नरेश मन भा संदेहू

दो० भूपति मन संदेह करि, बोले भीषम द्रौन ।
पुर बिराट कीचक बधे, केहिधौं कारण कौन॥
कीचक को संहारि है,भीमबिना नहिं और ।
कह्योद्रोणगजसहससम, सुभटनकोशिरमौर ॥

कह्यो सुशर्मा नृप सुनि लीजै ❀ अब कछु और बिचार न कीजै
संग चमू कछु देहु सहाई ❀ बेढ़ौं नृप बिराट की गाई
और यतन ते वे नहिं ऐहैं ❀ धेनु हरण सुनि तुरतै धैहैं
सुरभिहरणसुनि नहिं सहि रैहैं ❀ लागि गोहारि चले सब ऐहैं
होत युद्ध नहिं रहहि सँभारा ❀ तहँ खुलि जैहै शत्रु तुम्हारा
भूपति अमित सैन सँग दीन्हों ❀ बिदा बेगि तेहि अवसर कीन्हों
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❀ उठी धूरि छपिगयो पतङ्गा
शकुनि बोलाय कह्यो इमिराजा ❀ अब सब करहु कटक को साजा

दो० चली चमू चतुरङ्गिणी, गज तुरंग के यूथ ।
रथी महारथि अतिरथी, सुभट पदातिबरूथ ॥

चली सैन को बरणै पारा ❀ बाजे गोमुख शङ्ख नगारा
झांझ ढोल अरु भेरि बजाई ❀ मारू राग सहित सहनाई
चलत नृपहि अतिहोत अतङ्का ❀ टेर नकीब भये बहु डङ्का
बिरद बखानि बन्दिजन बोले ❀ हाली धरा धराधर डोले
दल कलिङ्ग भगदत्त महीपा ❀ आये साजि नरेश समीपा
ढिरद दुमत्त दुशासन अत्री ❀ शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री
बिकरण करण शल्य बलधामा ❀ कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा
सिन्धुराज लक्षन बलवाना ❀ साजिसाजिनिजदलहननिशाना

CC-0. Nanaji Deshmukh ... RD, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाहुलीक गङ्गाधर राजा ❀ नृप काम्बोज कीन रणसाजा
सौ बान्धव दुर्योधन केरे ❀ औरौ सजे बीर बहुतेरे
भीषम द्रोण हलम्बुस साजे ❀ सोमदत्त भूरिश्रव गाजे
दक्षिण दिशा सुशर्मा घेरा ❀ उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा

दो० बन बीथिन छाये सुभट, लियो देश सब घेरि।
बांध्यो ग्वालसमूह तहँ, लीन्हों धेनु खदेरि॥

कितक ग्वाल लिय बांधि सुशर्मा ❀ केतिक भाजि गये बशभर्मा
ते नरेश पहँ जाय पुकारे ❀ धेनु बृन्द हरिगये तुम्हारे
सेनापति पठवहु बलदाई ❀ शत्रु जीति गो लेइ छोड़ाई
गोधन हरो सुशर्मा आई ❀ उठि नरेश चलि लेहु छड़ाई
जो न नरेश होहु असवारा ❀ तौनहिंगोधनमिलिहि तुम्हारा
और न सकहि सुशर्महिं जीती ❀ सुनु नरेश मन मान प्रतीती
देखिसचिवदिशिनृपतिसुजाना ❀ करि सुधिकीचककी पछिताना

दो० कीचककहँ सुमिरै नृपति, यह कहि बारहिं बार।
बाबिन सुरभी बेढ़ियो, को कहि लखै प्रकार॥
हरुये बोल्यो भूप तब, सेनापाल बुलाय।
धाइ सुशर्मा बीर जे, सुरभी लेहु छुड़ाय॥

उत्तर शङ्ख नृपति सुत बीरा ❀ औरौ सजे अमित रणधीरा
चले नरेश साजिकै साजा ❀ बाजे बिपुल जुझाऊ बाजा
गजरथ अरु पदादि बहुसङ्गा ❀ बहु कुरङ्गगति चलै तुरङ्गा
करि बहुयतन सुशर्मा हांकी ❀ चलि नहिंसकत धेनु सब थाकी
सहदेव खुरा ब्याधि उपजावा ❀ ताते धेनु सकत नहिं जावा
तब लगि सुभट गये सब आई ❀ बाजे पटह शङ्ख सहनाई
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❀ बाजे कटक भयो अति हूहा
उभय कटक महँ बाजन बाजे ❀ करिकरि नाद बीर सब साजे
द्वउ दिशि दल उमड़े घनघोरा ❀ जहँ तहँ सुभट भिरे बरजोरा
अन्धध्वन्ध रण भयो असूझा ❀ अपन बिरान परत नहिं सूझा

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिबिधभांति तन अस्त्र प्रहारे ❀ टरै न एक एक के टारे
उत्तर कुँवर आनि रण मण्डो ❀ बाणन ते रिपु सैन बिहण्डो
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा ❀ करि संधान सारथी मारा
करि अति नाद सुशर्मा गाजे ❀ चढ़ि तुरङ्ग उत्तर रणभाजे
गयो नगर तन अति भयमानी ❀ लै धनु शङ्ख कीन्ह रणआनी

दो० शङ्ख सुशर्मा बीरते, परो आनि जब जोर ।
महाभयंकर युद्ध भो, बिशिख चले चहुँओर ॥
बिजयबृहन्नल घररहो, पाण्डुपुत्र तहँ चारि ।
देखत कौतुक युद्धको, सकै न कोऊ हारि ॥

पञ्चबाण तब शङ्ख प्रहारे ❀ ते शर काटि सुशर्मा डारे
शर बहु त्यागि कीन्ह अतिजूझा ❀ मूर्च्छित कुँवर नयन नहिं सूझा
देखि सारथी रथी अचेता ❀ दल पीछेगा यतन समेता
तब विराट नृप करि संधाना ❀ एकबार मारे सौ बाना
ते शर बिशिख सुशर्मा काटे ❀ बाण पचीस क्रोध करि छांटे
मूर्च्छित भयो बिराट भुवारा ❀ करि निबन्ध निजरथपर डारा
वर्षन बाण सुशर्मा लागा ❀ भयो अधीर कटक सब भागा
नृपहि बांधि सब जीति सहाई ❀ चल्यो धेनु लै शंख बजाई

दो० सहदेव बपुष गुवालके, कङ्क ऋषिहिशिरनाय ।
टेरि सुशर्मा हांक दै, भिरे ततक्षण जाय ॥
मत्त करीदल तासुको, अंकुश टेर सुनाय ।
फेरो बलकरि सिंह ज्यों, गहो कोपि धरधाय ॥

भयो युद्ध कछु कहत बनैना ❀ देखत थकित भई सब सैना
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा ❀ लात घात मुष्टिका प्रहारा
भिरहिं गिरहिं उठिलरहिं सँभारी ❀ अतिबल युगल न मानै हारी
तबहिं सुशर्मा बलकरि हारो ❀ पाण्डुपुत्र गहि धरणि पछारो
मल्लयुद्ध करि दल बिचलायो ❀ छोरि बिराटहि दलमहँ लायो
भीमसेन गज यूथ सँहारे ❀ पकरि तुरङ्ग तुरङ्गन मारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by eGangotri
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गहि पदादि के शीश उपारे ❀ और सबै मल्लन को मारे
बारहिं बार भीम रण गाजे ❀ सुनि सुनि नाद शत्रु सब भाजे
नकुल कीन्ह तब खड्ग प्रहारा ❀ कटीसेन बहि शोणित धारा

दो० बही सरित तहँ रक्तकी, गयो सुशर्मा भाजि।
छोरि बिराटहि लै चले, पाण्डुपुत्र रण गाजि॥

आय कङ्क कहँ नायो माथा ❀ देखि सकलदल भयो सनाथा
फिरी धेनु सुख भयो अपारा ❀ गृहकहँ चल्यो बिराट भुवारा
उत्तर दिशि दुर्योधन राई ❀ बेढ़ि लई सुरभी समुदाई
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता ❀ किते जूह लै चले तुरन्ता
धेनु बृन्द यक करण बिलोकी ❀ रथ दौराय लीन्ह तहँ रोकी
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा ❀ तेहि तहँ खुरा ब्याधि उपराजा
बहु बिधि मारि ग्वालगण थाके ❀ अचलभयो धनुचलत न हांके
मिथुना शाप करण कहँ दीन्हा ❀ फल पैहौ तुम आपन कीन्हा
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा ❀ भारत में अटकै रथ तोरा

दो० अपर ग्वाल गण आइकै, बहुबिधि करी पुकार।
उत्तर उत्तर की दिशा, बेढ़ो धेनु तुम्हार॥

सुरभी शत हरिगई तुम्हारी ❀ बैठ सुचित्त सदनमहँ झारी
हरी एक दुर्योधन गाई ❀ एक दुशासन लै हँकवाई
करिवर एक करण हरिलीन्हा ❀ कृतबर्मा आगे धरि दीन्हा
नृप भगदत्त गाय बहुतेरी ❀ हरे यूथ चहुँ ओर गरेरी
पीत श्याम सुरभी बहु चोरी ❀ हरिलीन्हीं कपिला अरु धौरी
लक्षन कुँवर हरे यक जूहा ❀ लै कलिङ्ग यक धेनु समूहा
कुँवर पुकार श्रवण सुनु मेरी ❀ हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी
लिये जात धन अश्वत्थामा ❀ उत्तर दिशि उत्तर बलधामा

दो० ग्वालबिलापकलापकरि, उत्तर ते बहुभांति।
कही तुम्हारी धेनु हरि, लीन्हे कुरुपति जाति॥

बाहुलीक गङ्गाधर गाई ❀ हरिकाम्बोज लीन्ह अगुवाई

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोमदत्त भीषम रण गाढ़े ❀ शकुनी शल्य रोंकि मग ठाढ़े
करतकुलाहलगिरिगिरिजाता ❀ दीरघ दीरघ स्वर करिबाता
कहतगोपकरि बिबिधबिलापा ❀ धेनुहरण सुनि तोहिंन ब्यापा
ऐसो धिक जीवन जग तोरा ❀ शालत उर न बचन सुनि मोरा
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला ❀ सेना सहित न भवन भुवाला
मेरे रथ नहिं सारथि भाई ❀ होत लेत मैं धेनु छड़ाई
जो मेरो रथ हांकत होई ❀ कौरव जियत न छांड़ौं कोई

दो० द्रुपदसुता यह बचन सुनि, अर्जुन ते अकुलाय ।
कह्यो बृहन्नल कुवँरका, तुम रथहांको जाय ॥

कह्यउ पार्थ तुव त्रिय बौरानी ❀ रथहांकब गति हम नहिं जानी
कहै कुँवर मोसन नहिं होई ❀ देव निकारि देश ते सोई
दासी भुरै कुँवर उरझावा ❀ चहत जीविका मोरि छड़ावा
जानौं गाय सकल मैं गीता ❀ बिबिधभांति नाचौं संगीता
और बजावहुँ मैं सब बाजा ❀ करौं प्रसन्न उदर हित राजा
चहत मोरि सबबिधि उपहासी ❀ मृषा कुँवर बोलत यह दासी
यह कहि पार्थ रहे अरगाई ❀ द्रुपदसुता रानी पहँ आई
तहां बैठि उत्तराकुमारी ❀ कहेउ सैलन्ध्री बचन उचारी
बचन हमार सुनहु महरानी ❀ धेनुबेढ़ि कुरुपति अभिमानी
पठवहु कुँवर भवन नहिं राजा ❀ धेनु गये लागी कुल लाजा

दो० यह पारथ को सारथी, बृहन्नला यहि नाम ।
जो यह हांकै कुँवर रथ, जीतै सब संग्राम ॥

अब पठवहु उत्तराकुमारी ❀ प्राणनते वह अधिक पियारी
जो यह कहहि हिजते बानी ❀ सो फुर करहि सत्य सुनु रानी
कन्या सरस जानि मन ताको ❀ विद्या सकल पढ़ाई याको
हांकब रथ न कहा किन कोई ❀ याको हठ टारै नहिं सोई
सुनिकै श्रवण सेलन्ध्री बानी ❀ कह्यउ उत्तरी ते यह रानी
संग सेलन्ध्री के तुम जाऊ ❀ बिजयबृहन्नल को समुझाऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हठकरि कह्यउ काज ज्यहि होई ❀ उत्तर को रथ हांकै सोई
सुनत बचन आतुर सो आई ❀ संग सेलन्धी लीन्ह लेवाई
दो० जाय पार्थ पहँ रुदन करि, गई कण्ठ लपटाय।
मलिनबसन गुड़िया भई, खेल न मोहिंसोहाय॥
सुन्योश्रवणयहिपुरनिकट, आयो है कुरुराय।
तिनको भूषण बसन गुरु, मोकहँ देउ छिनाय॥
जबलगिकरौं न बचन फुर मोरा ❀ तब लगि कण्ठ न छांड़ौं तोरा
भूषण बसन कौरवन केरा ❀ बिन आने नहिं होय निबेरा
अर्जुन ते उत्तराकुमारी ❀ बोली बहुरि नयनभरि बारी
भीषम द्रोण करण उरमाला ❀ दुर्योधन को मुकुट बिशाला
देहु गुरू म्वहिं आनि छिनाई ❀ यहि बिधि बारबार रटलाई
कहत द्रौपदी श्रवणन बानी ❀ सभासुद्धि सब तोहिं भुलानी
बीती अवधि डरहु केहिकाजा ❀ लरहु निकट आयो कुरुराजा
क्षत्री युद्ध डरहिं जो पारथ ❀ कर्म धर्म बहुताहि अकारथ
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा ❀ उठि न लरै कुल आवै लाजा
तुम शरमात प्रबल त्रिय नाहीं ❀ जियडेरातजिमिपियपहँजाहीं
दो० चित्तचाउ रत साहसी, महाबाहु - बलधाम।
बृहन्नला को रूपधरि, तुम छांड़ेउ वह नाम॥
क्योंहठिरह्यउ चुपकितुम पारथ ❀ करौ युद्ध है उत्तर स्वारथ
कह द्रौपदी श्रवणलगि बाता ❀ भयदृग अरुण फूलि सबगाता
कह्यो उत्तरी बचन रसाला ❀ देहुमँगाय बसन मणिमाला
बारबार यह कहि बिलखाई ❀ तजै न कण्ठ रही लपटाई
समुझायो बिधि पार्थ अनेका ❀ सुनि उत्तरी तजत नहिं टेका
अर्जुन देखि दया उपजाई ❀ दृगजलपोंछि कुँवरि समुझाई
कौरव जीति बसन मणि लेऊं ❀ पुत्री तोहिं क्षणक महँ देऊं
जो नहिं भूषण बसनहि लावों ❀ आननाफिरि न तोहिं दिखरावों
करि प्रबोध उत्तरी पठाई ❀ उत्तर ते बोल्यो हरषाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० उत्तरसों तबहीं कही, बिजय बृहन्नल बात ।
साजौ कौरव युद्धको, ह्वै प्रसन्न सब गात ॥
पारथ सारथि मैं कियो, जानत हौं रथ हांकि ।
जहां होत है सारथी, जीति सकै को ताकि ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

सुन्यो बचन यह राजकुमारा ❀ हृदय मांझ सुखभयो अपारा
टोप सनाह पार्थ के आगे ❀ राखे बचन कहन इमि लागे
कवच पहिरि पारथ परमाना ❀ जाते अङ्ग न भेदै बाना
जिमि कीचक पहिरै बरनारी ❀ तिमि सनाहकृत सुवननगारी
देखि लोग सब हँसे ठठाई ❀ कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई
सिन्धु समान कटक कुरुराई ❀ रथ लै भाग्यो युद्ध डराई
सबके बचन हासरस पागे ❀ सुनत द्रौपदी शरसम लागे

दो० कहत पार्थते द्रौपदी, बौरावत क्यहि काज ।
रथसाजौ अब कुँवर को, रण जीतौ कुरुराज ॥
बर्षदिवस की अवधिबदि, गये और दिन बीति ।
कीजै युद्ध निशङ्क ह्वै, रही कौन की भीति ॥
भयो बृहन्नल सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ।
साजिकटकलीन्होंधनुष, कोपि गह्यो तलवार ॥

गन्धर्बन जे मन्त्र सिखाये ❀ सो पढ़ि पार्थ तुरङ्ग उठाये
ह्वै सारथी बेगि रथ हांको ❀ औघट बाट न कानन ताको
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना ❀ उत्तरके घट रह्यो न प्राना
गाजत गर्जहिं हिंसत हैं घोरा ❀ दुन्दुभि भेरि नाद अतिशोरा
शङ्खनाद पूरे सब कोई ❀ मारु मारु सब दलमहँ होई
द्वन्द्व घण्टध्वनि अति ठहनाई ❀ मारू राग सहित सहनाई
रङ्ग रङ्ग बैरख फहराई ❀ हरित पीत सित श्याम सोहाई
बाजत सेन सेन पर डङ्का ❀ बरणि बन्दिजन कहत अतङ्का
सारथि सन उत्तर करजोरा ❀ लै चलु भागि भवन रथमोरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बारबार तेहि बिनय बखानी ❋ एकौ बात न सारथि मानी
दो० करतबिनय सोनहिंसुनत, रथत्याग्यो अकुलाइ ।
भाजत लखि उत्तर कुँवर, गहो पार्थ तब धाइ ॥
बांधि धरो रथ ऊपर आई ❋ सम्मुख चल्यो सेनपर धाई
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिंचान्यो ❋ सबही ते यहि भांति बखान्यो
बांधिरथी रथ ऊपर धारो ❋ ह्वै निशङ्क रणको पगुधारो
अवगाहन सागर संग्रामा ❋ भुजबल पैज करी बलधामा
शूर सजग ह्वै सब धनुबाणा ❋ लेहु शूल अरु शक्ति कृपाणा
पवन गवन सम अर्जुन आवत ❋ वा बिन को जगमें अस धावत
दुर्योधन ते द्रोण बखाना ❋ अब सब सजग होहु बलवाना
भूप भली कछु परत न दीसी ❋ है आवनि यह अर्जुन कीसी
कह भीषम सुनु बचन हमारा ❋ मृग सँग धावत दीख सियारा
छुवत नितम्ब तासु पद धावत ❋ सुनु नरेश यह पारथ आवत
धरो बांधि रथ राजदुलारा ❋ त्रियस्वरूप यह पाण्डुकुमारा
दो० मन्द दृष्टि भइ द्रोणकी, भीषम गये बुढ़ाय ।
कह्यो शकुनि यह करणसों, हँस्यो करण हहराय ॥
सुनि भीषम भा क्रोध अपारा ❋ कह नरेश सुनु बचन हमारा
बन बन फिरत बहुत दुख पावा ❋ परम क्रोध करि पारथ आवा
चलहिंक्रोधकरितुमहिंबिलोकी ❋ ये शठ एकौ सकहिं न रोंकी
भीषम कह्यो करणसन बोली ❋ दल की तीनि बनावहु टोली
एक सेन लै चलहु भुवाला ❋ एक करै गोधन पतिपाला
पारथ रोंकि करौ संग्रामा ❋ एक सेन ते सब बलधामा
यहि बिधि भीषम मन्त्र दृढ़ाई ❋ तीनि अनी करि सेन बनाई
दो० द्रोणी कृतबर्मा शकुनि, शत बन्धव बीरेश ।
कृपाचार्य अरु करण सँग, सो लै चल्यो नरेश ॥
नृप भगदत्त शल्य बलदाई ❋ चले संग लै धेनु लवाई
भीषम द्रोण आदि रणधीरा ❋ मग रोंके ठाढ़े सब बीरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करै शङ्खध्वनि औ गल गाजैं ❀ मारू पटह भेरि बहु बाजैं
गोमुख ढाक ढोल पणवानक ❀ बाजत सब अति होत भयानक
द्विरद यूथ देखत अति भारी ❀ भादौं जलद घटा जनु कारी
रथके ठाट भूमि सब छाये ❀ परै न भूपर तिल छिटकाये
तुरँग पदादि बिलोकि अपारा ❀ भयो सशंक बिराटकुमारा

दो० उत्तर सौं सारथि कही, भय न करहु कछुयङ्क ।
सकल निपातौं अरिचमू, रहियो आप निशङ्क ॥
असकहि फेरो तुरँग रथ, सुनि पाण्डव कुलदीप ।
पलक न बीतीबिपिनमहँ, लैगे नगर समीप ॥
अन्ध कूप तरुवर शमी, ता पर धनु अरु बाण ।
बेगि लैआवहु मो निकट, गर्जौं अरिदलप्राण ॥

सुनत बचन उत्तर हरषाई ❀ त्यहिद्रुमनिकट तुरतचलिजाई
चढ़ेउ पार्थकी आज्ञा मानी ❀ अस्त्रसनाह बिलोक्यो आनी
पार्थ सुनौ मणि श्वेत सनाहा ❀ श्वेत धनुष श्वेतै गुणआहा
आनौ बेगि छुवै मति सोई ❀ अस्त्रसनाह नृपति कर होई
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा ❀ अर्जुन ते यह बचन उचारा
कनकरचितमणिखचितसोहाये ❀ धनुष सनाह देखि युगपाये
आयसु होइ डारि महि दीजै ❀ कह पारथ यह कत मत कीजै
यह सहदेव नकुल धनु गेरा ❀ रहि न सकै मम खैंचि दरेरा
सो उत्तर झांड़्यउ अरगाई ❀ और सनाह बिलोक्यो जाई
कोटि भांति उत्तर बल करेऊ ❀ जब न उठ्यो तब सो परिहरेऊ
उठो न धनुष कवच हिय हारो ❀ अर्जुन ते इमि बचन उचारो

दो० उठ्यो न धनुप सनाहकर, कोटि भांति बलकीन्ह ।
लोहमयी जनु वज्रसम, केहि निमित्त कैं दीन्ह ॥

परी गदा गिरिवर समताई ❀ है केहिको म्वहिं देव बताई
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा ❀ याको सुनहु सकलव्यवहारा
लोहमयी धनु कवच कराला ❀ भीमसेन को गदा बिशाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लावहु और करिय रण जाई ❀ मग हमार देखत कुरुराई
लाव बेगि धनु कवच हमारा ❀ पल लागत जनु कल्प अपारा
जो गृह जाइ भाजि कुरुराई ❀ फिरि का करब युद्धमहँ जाई
अक्षय तूण जाइ तहँ देख्यो ❀ संभ्रमभयो कुँवर यह लेख्यो
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा ❀ अहि ह्वै बिशिख करत फुंकारा
स्वै किरीटि स्वै कवच बिलोका ❀ रविसमतेज धनुष अवलोका
पारथते तब कह्यउ कुमारा ❀ धनु जनु दिनकर तेजपसारा
तब आयुध हम छुवन न पावैं ❀ ब्यालरूप शर काटन धावैं
सुनु सारथि मम बचन सुनाये ❀ मोपर अस्त्र न जायँ उठाये
यह सुनि कै पारथ हरषाई ❀ कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई

दो० निर्गुणधनुगुणकरिसोई, सूधे कीन्हे बाण।
काढ़ी गङ्गा भूमि ते, धोये सकल कृपाण॥
पहिरि कवच शिरटोपदै, निज धनु करि टंकोर।
हांक्योरथ बहुकोपकरि, पहुँचो कटक बहोर॥
बीर धनुर्द्धर धीरकै, मनमहँ कहूं न हारि।
भा दुर्घट सब घटनमहँ, कौरवदल अतिकारि॥

बैठो आनि ध्वजा हनुमन्ता ❀ जाके बलको नहिं कछु अन्ता
करि अतिक्रोध धनुषशरलीन्हो ❀ देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हो
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई ❀ जीतन हित दुर्योधन राई
सारथिते उत्तर कर जोरी ❀ कहै सुनहु बिनती कछु मोरी
तुमते कहौं बृहन्नल बांची ❀ मोते कहौ बात सब सांची
कौन आप म्वहिं देव बताई ❀ मो मनकी संशय मिटिजाई
कह अर्जुन भाषत सति भाऊ ❀ है ऋषि कङ्क युधिष्ठिर राऊ
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा ❀ भीम जयन्त तुम्हार सुवारा
सेनी सहदेव नामहिं जानौ ❀ बाहुक नकुल मैनहै मानौ

दो० वह है रानी द्रौपदी, जाहि सेलन्ध्री नाम।
कछुनभयचितकीजिये, जीतौं सब संग्राम॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम सम्मुखरण उचित न मोको ❀ ताते बिनय सुनायो तोको
कपटद्यूत करि बिपिन निकारा ❀ तेरह बर्ष सह्यो दुख भारा
अब न गुरू अपराध हमारा ❀ करिहौं कटक सकल संहारा
असकहि बाण परो महिजाई ❀ ह्वै सचेत सब करहु लराई
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई ❀ देखै सकल बीर समुदाई
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये ❀ तहँ कुरुनाथ देखि नहिं पाये
उत्तर ते यह पार्थ बखाना ❀ सुनु बिराटसुत बचन प्रमाना
अपरनिधननिसरहिंनहिंकाजा ❀ चलु रथहांकि जहां कुरुराजा
सुनि बिराटसुत तुरँग उठाये ❀ जेहिदलनृपतितहांचलिआये
लीन्हों पार्थ भूप कहँ ताकी ❀ लैगा बेगि कुँवर रथ हांकी
भीषम द्रोण सेन सब धाई ❀ पहुँची निकट भूप के आई
हाहा हूत सेन महँ भयऊ ❀ दल तीनों यकमिल ह्वै गयऊ
कह नरेश सब बीर बोलाई ❀ को रोंकै अर्जुन कहँ जाई

दो० जीतन पारथ बीर हित, वोटक लियो कलिङ्ग ।
अचल मेरुसों रणरचो, कियो कोटि रण रङ्ग ॥

नृप कलिङ्ग अर्जुन बल पाई ❀ दौदिशि बाणबुन्द झरिलाई
दश शर तब कलिङ्गनृप छांटे ❀ आवत पार्थ बीचही काटे
पुनि अर्जुन यकबाण प्रहारा ❀ कुन्तल नृपकलिङ्ग को मारा
पुनि शर हन्यो काल के धाके ❀ काट्यो गजके ध्वजा पताके
गजतजि चढ़्यो अपररथ आई ❀ कीन्ह कलिङ्ग युद्ध अधिकाई
तब कलिङ्ग कीन्हों अतिकोपा ❀ शरनमारि पारथ रथ तोपा
अग्निबाण तब पार्थ पँवारा ❀ सब शर भये निमिषमहँ छारा
पुनिशतविशिखकलिङ्गचलाये ❀ ते सब अर्जुन मारि गिराये

दो० पार्थ सहमदश बाण ते, हतो कोप करि बीर ।
मूर्च्छितगिरोकलिङ्गरण, धरि नसकतदलधीर॥

इति श्रीमहाभारतेकलिङ्गयुद्धवर्णनंनाममप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० जबकलिङ्गमूर्च्छित भयो, तबविकरणरणमाजि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोपि शरासन बाणलै, आयो सन्मुख गाजि।
तब बिकरण करि कोप चलाये ❀ भूमि अकाश बाण ते छाये
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती ❀ ह्वैगै मनहुं दिवस महँ राती
अतिशय अन्धकार तहँ भयऊ ❀ परै न लखि दिनकर छपि गयऊ
बिकरणहनो क्रोधकरि जियमों ❀ तीस बाण पारथ के हियमों
पारथ बाण क्रोध करि छण्ड्यो ❀ पलमहँ शर बिकरणके खण्ड्यो
औरौ बाण पाण्डुसुत छांटे ❀ हय गय मरे अमित रथ काटे
कोटिन अर्ब खर्ब शर मारा ❀ काटिसेन बहि शोणितधारा
परी लोथ धरणी पर पाटी ❀ बूझि न परै शीश अरु माटी
कहां जङ्घ कर शिर पद डारे ❀ कहूँ कबन्ध परे महि भारे

दो० तब बिकरणचालीस शर, हन्यो कीश बलवन्त।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त॥
तब बिकरण साहससहित, भूमि परो मुरछाय।
देखि करण बलबीर तब, आयो धनुष चढ़ाय॥

धनुष चढ़ाय करण ललकारे ❀ कठिन बाण अर्जुन पर मारे
ते शर सर्बजिष्णु रण खण्ड्यो ❀ करिअतिक्रोधसहसशरछण्ड्यो
ते सब बिशिख करण पुनि काटे ❀ लाघव शर पारथ पर छांटे
आवत देखे बाण अपारा ❀ अर्जुन अग्निबाण तब मारा
करण बाण जारे सब आगी ❀ लागी जरन सेन सब भागी
बरुण बाण तब करण चलायो ❀ क्षणभीतर सब अनल बुतायो
अर्जुन शर बूड़त जब जाना ❀ मारो तुरत पवन को बाना
तासु चलत गा नीर सुखाई ❀ ध्वजा पताका छत्र उड़ाई
अहिशर करण त्याग तबकीन्हा ❀ नागन सकलपवन भखिलीन्हा
तब अर्जुन शिखिबाण चलाये ❀ मोरन सकल सर्पसम खाये
रविसुत अन्धकार शर पाग्यो ❀ देखत सब पक्षीगण भाग्यो
परै दखि नहिं नयन पसारा ❀ ब्याकुल भयो बिराटकुमारा
अर्जुन ते तब बचन उचारा ❀ प्राण जात अब करहु उबारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब पारथ रविबाण प्रहारा ❀ तम भा दूरि भयो उजियारा
दो० तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्बत बान।
पारथ रथपर शैलगण, चहुँदिशिते फहरान॥
बज्र बाण तब पार्थ प्रहारा ❀ सब गिरिभयो निमिषमहँछारा
तब रविसुवन क्रोध उपजावा ❀ पढ़ि सुमन्त्र यमबाण चलावा
पार्थ कठिन शर आवत जाना ❀ मृत्युबाण कीन्हो संधाना
अस्त्रशस्त्र लड़ि शीतलभयऊ ❀ रविसुत कोपि कठिनशरलयऊ
सो लै अर्जुन के उरमारा ❀ बही प्रबाह रुधिर कै धारा
रविनन्दन विराटसुत ताका ❀ मारो कठिन बाण दै हांका
अब अर्जुन रण करहु सँभारा ❀ करौं निधन सारथी तुम्हारा
अर्जुन लये बाण कर चोखे ❀ कहो करण भूल्यो जनि धोखे
यम अरु इन्द्र बरुणचलिआवैं ❀ सारथि छांह छुवन नहिं पावैं
सुनु रविसुत केतिक बल तोरे ❀ सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे
यहकहिकै अर्जुनशर छण्डित ❀ कीन्होंबिशिखकर्णकोखण्डित
पुनि पारथकृत बिशिखप्रहारा ❀ भञ्ज्यो तुरँग सारथी मारा
शतसहस्र शर भालक लीन्हे ❀ रविनन्दन उर भेदन कीन्हे
अगणित बाण हृदयमहँ लागे ❀ सहि न सके रविनन्दन भागे
दो० रण अर्जुन को नेकहू, सहि न सकोस्वइबान।
रणमण्डित तजिको भयो, रवि सोंतेजनिधान॥
गयो पराय कुरूपति आगे ❀ विह्वल बचन कर्ण तहँ पागे
सुनु नरेश भा कठिन मशाना ❀ सहि न सक्यो अर्जुन के बाना
जब यह सुन्यो कर्ण मुखबाता ❀ क्रोध कृशानु जरे सबगाता
बोल्यो नृपति कुटिलकरि भौंहैं ❀ अरुणबरण भे नयनारिसौंहैं
क्षत्रीकुल बालक रिसगारी ❀ करत युद्ध पग परै पछारी
आयो करण युद्ध ते भागी ❀ तुमहिंबिलोकिमोहिंरिसलागी
तुम अर्जुन कहँ पीठि दिखाई ❀ भै बड़िलाज बरणि नहिं जाई
भूरिश्रवा मगहपति आगे ❀ द्रोणहिं बोलि कहन नृप लागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम सब मैं पाले यहि कामहिं ❀ पारथ जीति सकै संग्रामहिं
दो० यह कहिकै कुरुनाथ तब, नेकु न मानी शङ्क।
चल्यो निशान बजाइरण, भयो महाआतङ्क॥
भयो चलत अशकुन अतिभारी ❀ रविके अछत फेकरि सिआरी
बिनु घन नभमण्डल घहराई ❀ रहे गिद्ध दल ऊपर छाई
बोल उलूक भयंकर बानी ❀ बिनु बारिद नभ बरसत पानी
कररै काक कङ्क नभ ठाटी ❀ चलहिं जम्बुगण मारग काटी
रासभ श्वान भयंकर बोली ❀ बोलत धरा बार बहु डोली
गिरि गिरिपरत शरासन पाणी ❀ परत म्यानतजिनिकरकृपाणी
खास दास कर छत्र बिशाला ❀ परो टूटि अरु नृप मणिमाला
दिशा धूँधि धरणी पर छाई ❀ गये नृपति के चमर उड़ाई
अशकुन और भयो यकबांका ❀ भूपति रथको टूट पताका
दो० भै शंका भूपाल तब, कह्योद्रोणसनबोलि।
अशकुनकारणसकलगुरु, हमहिंबतावहुखोलि॥
कह्यो द्रोण गुरु सुनु कुरुराई ❀ कहत शकुन अतिबिकटलराई
ह्वैहै इहां कठिन संग्रामा ❀ होहिं निराश सकल बलधामा
कह्यो बचन गुरु रह्यो चुपाई ❀ बोल्यो करण नृपतिसन आई
रण भाजे मो कहँ भै लाजा ❀ अब मैं लरब पार्थसन राजा
यह कहि करण हांकि रथदीन्हा ❀ बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हा
देखि पार्थ लीन्हो शारङ्गा ❀ पुनि रणरच्यो करण के सङ्गा
उभय बीर लागे शर पारन ❀ सौते सहस हजार हजारन
तब रविसुवन क्रोधअति कीन्हों ❀ बाण पचीस फाँकपर दीन्हों
हांक मारि रथ ऊपर छण्ड्यो ❀ अर्जुन ते शर बीचहि खण्ड्यो
और पांच शर पार्थ चलाये ❀ करण बली ते काटि गिराये
दो० करण धनुर्द्धर क्रोध करि, हन्यो नराच अचूक।
ते पारथ निज शरन ते, काटि कियो दुइ टूक॥
और सहस शर त्यागेउ पायल ❀ ताते भयो तरणिसुत घायल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लक्ष बाण सेना पर मारे ❀ हय गज रथ पदाति संहारे
पारथ करेउ युद्ध सरसाई ❀ रणमहँ रक्त नदी बहिआई
मत्त मतङ्ग मरे जे भारे ❀ भये सरिस दोउ ओर करारे
चमकत खड्ग मीन सम जाने ❀ चर्म सेवार सरिस अरुझाने
अहिसम रुधिर नदी महँ सांगी ❀ जहँ तहँ परी धूप जनु नांगी
शिर बिन कवच सहित उतराहीं ❀ जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु आहीं
बिन शिर सेन जात पहिंचाने ❀ मनहुँ सूस जल में उतराने
रथ के चक्र अमित उतराहीं ❀ जनु आवर्त्त भ्रमत जलमाहीं
परी पत्र पुरइनि सम मानो ❀ बहत ढाल कच्छप सम जानो

दो० भैरव भूत पिशाच सम, गावत करि करि हेत।
नाचत चौंसठि योगिनी, रुधिर पियत युत प्रेत॥

अन्ध धुन्ध रण भयो भयंकर ❀ नाचत हँसत लेत शिरशंकर
कटकटाहिं जम्बुक रण धावहिं ❀ पियहिंरुधिरमलखाहिंअघावहिं
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये ❀ रणमहँ भये तृपित मनभाये
उठहिं कबन्ध मुण्ड बिन धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं
देखेउ करण भिहावन खेता ❀ लीन्हो धनुष कीन्ह चितचेता
करि रिस शतसहस्र शर मारे ❀ पाण्डुसुवन ते काटि निवारे
अर्जुन कोपि बाण दश त्यागे ❀ काटे तुरँग स्वामि उर लागे
भयो बिरथ तब तरणिकुमारा ❀ भयो आन रथपर असवारा
करि रिस कीन धनुष टंकोरा ❀ अशनिसमानशिलीमुख जोरा
हांक मारिकै करण चलावा ❀ बीचहि अर्जुन काटि गिरावा
समबल युगल करण अरु पारथ ❀ कीन्हों महाभयानक भारथ
सत सहस्र शर पार्थ निवारे ❀ हय गज कटे सुभट बहु मारे
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा ❀ कोटिन सुभट गिरे बहुनामा

दो० करण धनुर्द्धर के हिये, एक बार सौ बान।
मारो अर्जुन कोप करि, कीन्हों कठिन मशान॥

तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई ❀ रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुश्शासन तब युद्ध सँभारो ❀ देख्यो करण महाबल हारो
लै कर धनुष कोपि बलवाना ❀ पारथ पर छांड़े बहु बाना
ते शर जिष्णु काटि सब डारे ❀ दश शर दुश्शासन उर मारे
पांच बाण सारथि के अङ्गा ❀ बीस बाण ते हने तुरङ्गा
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ सात बाण ते ध्वजा पताका
पारथ कीन्ह कठिन शरजाला ❀ करि फुंकार चले जनु ब्याला
भये बिरथ दुश्शासन भाजे ❀ शङ्खध्वनि करि पारथ गाजे
अर्जुन बाण बुन्द झरिलाई ❀ कुरूसेन सब चली पराई

दो० भारत अति पारथ कियो, मारी सेन अनन्त।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त॥

आपन दल जब डोलत ताको ❀ मत्त द्विरद आगे नृप हांको
दश सहस्र शर एकहि बारा ❀ कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा
ते शर पार्थ काटि महिडारे ❀ लक्षबाण करि क्रोध पँवारे
पारथ बाण काटि भगदत्ता ❀ आगे पेलि चल्यो मयमत्ता
निकट देखि अर्जुन धनुताना ❀ मारो मगधराज उर बाना
चेत न रह्यो शिथिल सब अङ्गा ❀ तब कुन्तल लै फिरेउ मतङ्गा
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांटे ❀ भारत भूमि बाणते पाटे
रण सन्मुख जेतो दल पायो ❀ मारि पार्थ यमलोक पठायो

दो० अति संकटभा कटक महँ, सेना चली पराइ।
तब पारथ रणभूमि में, गर्जे शङ्ख बजाइ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वण्यष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

दो० पार्थबाण नहिं सहिसक्यो, कुरुदलचल्योपराइ।
देखि द्रोणगुरु क्रोध करि, आये रथ दौराइ॥

हांक मारि यह बचन सुनायो ❀ पार्थ सँभारु द्रोण अब आयो
सुनि यह बचन पार्थ चलिआगे ❀ करन प्रणाम गुरूसन लागे
देख्यो द्रोण नमित पद सोई ❀ आशिष दयो मनोरथ होई
अस कहि गुरुकोदण्ड चढ़ायो ❀ होहु सजग कहि बाण चलायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनिअर्जुनकहिलीन्हपिनाका ❀ शर संधानि दीन पुनि हांका
सजग अहौ कहि बाणचलावा ❀ गुरुप्रेरित शर काटि गिरावा
लघु संधानि द्रोण शर मारे ❀ ते सब पार्थ काटि महिडारे

दो० सहस बाण संधानकरि, पार्थ कियो रण रङ्ग ।
रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग ॥

तब गुरु चढ़्यो अपररथ जाई ❀ लै धनु बाण बुन्द झरिलाई
द्रोणबिशिखयहिभांतिचलायो ❀ भूमि अकाश बाण ते छायो
ते शर पार्थ निमिष महँ काटे ❀ दिशि अरु बिदिशि बाणतेपाटे
कोपि द्रोण शर अनल प्रहारा ❀ किये बाण अर्जुन के छारा
सहस शिखा पारथ चहुँओरा ❀ जारनचल्यो अनल करि शोरा
बरुण बाण तब पार्थ चलायो ❀ क्षणभीतर सब अनल बुतायो
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❀ नारायण शर पारथ मारा
अस्त्रअस्त्रतेभयोनिवारण ❀ तबलगिनिशितबिशिखअतिमारण
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ वज्रबाण पुनि कीन्ह प्रहारा
तब धनु तानि द्रोण रणलायक ❀ तड़प्यो सेनानी को शायक
ताते इन्द्र बाण क्षय कीन्हों ❀ तब पारथ मृत अस्त्रहि लीन्हों

दो० मृत्यु अस्त्रतै द्रोणगुरु, कीन्हों तुरत प्रहार ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो करत फुंकार ॥

संघटकरि अकाश उड़ि गयऊ ❀ लड़त लड़त सो शीतल भयऊ
परे भूमि दोनों शर आई ❀ कह्यो द्रोण अर्जुनहिं सुनाई
सुनहु पार्थ रण करहु सँभारा ❀ अब नहिं होय तुम्हार उबारा
असकहि महाकाल शर लीन्हा ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा ❀ सुमिरे कृष्णदेव के चरणा
छूटो जबहिं द्रोण को बाना ❀ मुख पसारि लीन्हों हनुमाना
तब अर्जुन यक बाण प्रहारा ❀ रथ सारथी द्रोणकर मारा
सहस बाण मारे गुरु अङ्गा ❀ चारि बाण ते बध्यो तुरङ्गा
बिरथहिभयो द्रोण जब जान्यो ❀ भूरिश्रवा आनि अरुझान्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारे अर्जुन के दश बाना ❀ बीस बाण मारे हनुमाना
द्वै द्वै शर तुरँगन के मारे ❀ शिथिल भयो पग टरत न टारे
दो० तबपारथ अतिक्रोधकरि, मारो बाण कराल।
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा, सुधि नरही तेहिकाल॥
तब सारथि स्यन्दन पलटावा ❀ लै नरेश के आगे आवा
द्रोण अपर रथ कै असवारी ❀ सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी
द्वै सरोष गुरु बहुशर छांड़ेउ ❀ आवत अर्जुन बीचहि खांड़ेउ
तबहीं पारथ क्रोध अपारा ❀ गुरु उरकठिन बाण यक मारा
जबहिं द्रोण कहँ मूर्च्छा आई ❀ फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई
अर्जुन कोपि धनुष धरि हाथहिं ❀ बधी सेन काटे बहु माथहिं
परी लोथ धरणी पर छाई ❀ रणमहँ रुधिर नदी बहिआई
सब योगिनि तहँ करत बिहारा ❀ ताल बजाइ करत किलकारा
भक्षहिं मांस रुधिर मुनि पीवहिं ❀ आशिष देहिं पार्थ चिरजीवहिं
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा ❀ सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा
दो० पवन गमन सम द्रोणसुत, गयो तुरत रथ हांकि।
बिशिखचलायोक्रोधकरि, पारथकी दिशिताकि॥
सो शर काटे निमिषमहँ, कीन्होंपुनिशरजाल।
द्रोणतनय के उर हन्यो, अर्जुन बाण कराल॥
लागत बाण भयो तनुपीरा ❀ रुधिर धार गा भीजि शरीरा
धनुष चढ़ाय द्रोणसुत छांड़े ❀ दिशिओबिदिशि बाणसब मांड़े
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❀ द्रोणी हृदय बाण दश मारे
भा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें ❀ मारौं शर अर्जुन के हियमें
फूटि कवच निसरेउ शर पारा ❀ बहत प्रबाह रुधिर कै धारा
अर्जुन अंधकार शर मारा ❀ कुरुदलमध्य भयो अँधियारा
ब्याकुल कटक भागि सब गयऊ ❀ प्रभाअस्त्र द्रोणी गुणदयऊ
ताते फैलि रह्यो उजियारा ❀ अर्जुननिशितबिशिखतवमारा
दो० तबरणकोप्यो द्रोणसुत, खण्ड्यो अर्जुन बान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भाषापर्व बिराट यह, सबल सिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वणिनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दो० बैशम्पायन से कही, जनमेजय शिरनाय ।
कीन्हकृतारथ मोहिंतुम, अद्भुतचरित सुनाय ॥

कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवण मन लाई
गुरुसुत दर्पण बाण चलायो ❀ भूमि अकाश आरसी छायो
देखि अनेक द्रोणसुत पायो ❀ पारथ के उर में भ्रम छायो
परत देखि बहु अश्वत्थामा ❀ काके संग करौं संग्रामा
यह कहि पार्थ चलायो बाना ❀ कीन्ह द्रोणसुत कठिन मशाना
लड़तलड़त द्वौदल मिलिगयऊ ❀ द्रोणी कोपि खड्ग कर लयऊ
कीन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा ❀ धनुगुण पारथ को तब काटा
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ निजअसि काटि सारथी मारा
पुनि मारे द्रोणी के बाजी ❀ भयबश गयो युद्ध तजि भाजी

दो० अर्जुन धनुगुण साजिकै, कीन्ह बिशिख संधान ।
रोक्यो तब जयदर्थ चलि, साजि शरासन बान ॥

सिन्धुराज दश बिशिख चलाये ❀ ते सब अर्जुन काटि गिराये
पुनि मारेउ पारथ यक तीरा ❀ कवच भेदिगा छेदि शरीरा
सिन्धु नृपति तब मूर्च्छा आयो ❀ स्यन्दन डारि सूत लै जायो
तबकरिक्रोधशकुनिचलिआयो ❀ अर्जुन को बहु बाण चलायो
ते शर काट्यो पाण्डुकुमारा ❀ पुनि यक बाण शकुनि उरमारा
बाण लगत तन मोह जनावा ❀ तबहिं सूत रथ फेरि चलावा

दो० कोप कियो संग्राम तब, पार्थ हन्यो बहु तीर ।
पारथ के एकहु बिशिख, सहि न सकत कोउबीर॥

शकुनी गिरत शल्य चलि आये ❀ पारथपर बहु बिशिख चलाये
सो शर अर्जुन काटि निवारे ❀ बाण पचीस शल्य उर मारे
भयो विकल व्यापी बहुपीरा ❀ गयो भागि उर रह्यो न धीरा
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा ❀ जीति युद्ध तब शङ्ख बजावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाहुलीक गङ्गाधर आये ❀ नृप काम्बोज युद्ध हित धाये
सोमदत्त करि क्रोध अपारा ❀ लैकर धनुष सेन ललकारा
कीन्ह सकल मिलि युद्धप्रचारा ❀ चहुँदिशि ग्रसि अर्जुन कहँ मारा
शूल सांगि कोऊ शर बरसा ❀ कोउ असिघात हने कोउ फरसा
देख्यो पार्थ ग्रसे चहुँ ओरा ❀ करि अतिक्रोध पार्थ शर जोरा
भये एक ते बिशिख हजारन ❀ कौरवदल लाग्यो संहारन
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारो ❀ सोमदत्त को दल सब मारो
कोटिन अर्ब खर्ब शर सारत ❀ सन्मुख आनि जुरे सब मारत
लै कृपाण कर पार्थ उठो तब ❀ मारि भगायदयो बल करि सब
भजे शूर ते नहिं फिर हेरत ❀ रण में पार्थ दौरिकै घेरत

दो० पार्थबाण नहिं सक्योसहि, कुरुदल चल्यो पराइ।
धनु टंकोस्यो क्रोध करि, सोमदत्त तब आइ॥

लै सो बिशिख पार्थ पर छांड़े ❀ शक्रसुवन तेहि बीचहिं खांड़े
कह अर्जुन कुरुपति बन काढ़ा ❀ शकुनी करण मन्त्र सुनि गाढ़ा
तुमहुँ कीन्ह नहिं न्याय हमारा ❀ मारन हेतु धनुष कर धारा
अब नहिं बचहिंबचनसुनु सांचा ❀ असकहि पारथ हन्यो नराचा
लाग्यो बिषम बाण उर जाई ❀ सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई
बाहुलीक हांक्यो रथ आगे ❀ करन युद्ध पारथ सन लागे
लैकर धनुष कीन्ह संधाना ❀ अर्जुन को मार्यो सौ बाना
ते शर पार्थ काटि सब दीन्हा ❀ पार्थ सहसशर त्यागन कीन्हा
बाहुलीक ते शर सब काटे ❀ लक्ष बाण अर्जुन रथ पाटे

दो० आवत देखे बाण जब, पारथ गहि कोदण्ड।
पलमहँखण्ड्योसकलशर, कीन्होयुद्धअखण्ड॥

शत सहस्र शर एकहि बारा ❀ बाहुलीक उर पारथ मारा
रथ अचेत ह्वै गिरत बिलोका ❀ गङ्गाधर पारथ कहँ रोका
बाण शरासन कृत संधाना ❀ अर्जुन पर छांड़े बहु बाना
ते शर खण्डि पार्थ शर त्याग्यो ❀ सोमदत्त सुत उर सो लाग्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परेउ मूर्च्छि गङ्गाधर जबहीं ❀ रणकाम्बोज कीन्ह पुनितबहीं
आवतही अर्जुन बलवाना ❀ हृदय मांझ मारेउ यकबाना
लागत चेत न रह्यो शरीरा ❀ रथ मुरझाइ गिरेउ रणधीरा
द्विरद द्विमत्त क्रोध करि धाये ❀ लक्षन कुँवर हलम्बुष आये
संग चमू चतुरङ्ग घनेरी ❀ लीन्हों पाण्डुसुवन कहँ घेरी

दो० शङ्क न मानत पार्थ भट, यद्यपि ग्रसत अनेक ।
डरत न गजसेना निरखि, सिंहबली जिमि एक॥

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई ❀ सेन किधौं बर्षा ऋतु आई
घोर घने गज दीरघ धाये ❀ पावस जलदघटा जनु छाये
श्वेत बरण गजदन्त विभांती ❀ सो जनु उड़त गगन बकपांती
होत चमर जहँ तहँ दल माहीं ❀ राजहंस जनु गगन उड़ाहीं
घन गर्जत बाजत जे डंका ❀ असिप्रहार जनु बिज्जुदमंका
धनुजनु सुरपतिधनुष बिशाला ❀ बुंद मनहुँ बरषत शरजाला
अर्जुन मनहुँ वीररस पागे ❀ शर समूह पुनि मारन लागे

दो० प्रलयकाल के पवन सम, पार्थ बाण हहराइ ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरद से भहराइ॥

द्विरद द्विमत्त कीन्ह अतिकोपा ❀ शरन मारि पारथ रथ तोपा
पारथ कीन्ह तुरत संधाना ❀ अरि शरखंडि हने बहुबाना
पंच बिशिख ते द्विरद प्रहारो ❀ दुइशर लै द्विमत्त उर मारो
परे मूर्च्छि रण दूनौं भाई ❀ लक्षन कुँवर जुरे तब आई
अर्जुन उर मारे दश बाना ❀ सत्तरि बाण हने हनुमाना
रुधिर धार भीज्यो सब अंगा ❀ पारथ कोपि लीन्ह शारंगा
यहिविधिकीन्होंविशिखप्रहारा ❀ रथ सारथी कुँवरको मारा
प्रेरेउ बहुरि बाण बहु साजी ❀ कीन्ह निधनकुरुपतिसुतबाजी
भये अरूढ़ कुँवर रथ आना ❀ कीन्हों बहुरि बिशिख संधाना
तब पारथ करि क्रोध अपारा ❀ अशनिसमान बाण उरमारा

दो० मूर्च्छिपरा रणभूमि महँ, जब कुरुनाथ कुमार ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साजि हलम्बुष धनुष शर, कीन्हों युद्ध अपार ॥
गहि कर धनुष हलम्बुष धाये ❀ पारथ रथ सन्मुख चलिआये
सात कोटि दानवगण साथहि ❀ धाये सकल धनुष धरि हाथहि
धरि बांधहु दानवपति टेरो ❀ धरु धरु मारु मारु कहि घेरो
कहुँ कीन्हों शर शक्ति प्रहारा ❀ मुद्गर गदा शूल केहुँ मारा
फरस कृपाण चले गहि मारन ❀ कोउ खंजर कोउ परिघ कटारन
कोउ कर सुभट भुशुण्डी लीन्हे ❀ महा मारु पारथ पर कीन्हे
भिन्दिपाल कोउ बृक्ष उपारी ❀ केहुँ गिरिशिला पार्थपर डारी

दो० सात कोटि दल दैत्य को, करि करि क्रोधअपार।
सबमिलिकीन्हों पार्थपर, निजनिजअस्त्रप्रहार ॥
कियोहस्तलाघवअतिहि, सबको बाणकृपाण।
रोंक्यो पारथ असुर बहु, मारिकियो बिनप्राण॥

मारि पार्थ घाल्यो दल घानी ❀ असुर सेन भहराइ परानी
दनुजराज तब करि संधाना ❀ पारथ पर प्रेरेउ शत बाना
ते शर काटि पार्थ रण कोपा ❀ बाणन मारि दैत्य रथ तोपा
ते शर दैत्यराज सब काटे ❀ बाणन मारि पार्थ रथ पाटे
अर्जुन अग्निबाण फटकारा ❀ सब शर कटे निमिष महँ छारा
स्यन्दन सूत तुरग जरिगयऊ ❀ अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ
प्रकट गयो स्यन्दन असवारा ❀ सन्मुख चला करत ललकारा
बधौं पार्थ तोहिं एकै बाना ❀ काल तुम्हार आय नियराना

दो० यह सुनि पारथ तब कह्यो, दनुजराज सों बात।
किये बड़ाई निजबदन, नहिंकछुबलसरसात ॥

हम तुम करिय आजु संग्रामा ❀ जीतै युद्ध होय बलधामा
असकहि पार्थ लीन्ह शारङ्गा ❀ दनुजराज के बधे तुरङ्गा
अमितबाण करि क्रोध पँवारो ❀ स्यन्दन भञ्जि सारथी मारो
बहुरि असुर स्यन्दनचढ़िआयो ❀ पारथ कहँ बहु बाण चलायो
पाण्डुपुत्र सब शायक खण्ड्यो ❀ लक्ष बाण दानवपति मण्ड्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेऊ बिशिख काटि महि डारे ❀ बहुरि धनञ्जय बाण पँवारे
आवत देखि पार्थ को बाना ❀ दनुजराज कीन्हों संधाना
आवत शर अर्जुन के काटे ❀ खण्ड खण्ड करि बीचहि पाटे
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा ❀ तुरग सूत दानव को मारा
यहि बिधि पार्थ बीसरथभञ्जेउ ❀ अरु अनेक दलबादल गञ्जेउ
सके न जीति हारि हिय मानी ❀ तबहिं हलम्बुष माया ठानी

दो० मारु मारु कहि दनुजपति, गयो अकाश उड़ाय।
बरषनलाग्यो गिरिशिखर, अन्धकार उपजाय॥
सिंहनाद करि गगन महँ, गरजत बारहिंबार।
बिटप चलायो क्रोध करि, बिबिधभांतिहथियार॥

इति महाभारतेविराटपर्वणिहलम्बुषयुद्धवर्णनंदशमोऽध्यायः॥१०॥

दो० दैत्य युद्धते बिकलभे, तब उत्तराकुमार।
पारथ राखहु प्राण अब, यहिबिधिकरत पुकार॥

दीन बचन सुनि पाण्डुकुमारा ❀ पढ़ि रविमन्त्र बाण तब मारा
सहसाकिरणिशरकीन्हप्रकाशा ❀ भयो तुरत माया निशि नाशा
पुनि अर्जुन कीन्हों संधाना ❀ मारे दैत्यराज उर बाना
परो धरणिखसि मूर्च्छित भयऊ ❀ स्यन्दन घालि सूत लै गयऊ
देखि युद्ध कृतवर्मा धाये ❀ शङ्खध्वनि करि हांक सुनाये
मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो ❀ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो
असकहि कृतवर्मा रण कोपी ❀ करिशरजाल दीन्ह रथ तोपी
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाये ❀ शर पञ्जर करि पार्थ दबाये
अर्जुन अनलबाण तब मारे ❀ बिशिख असंख्य जारि सबडारे
कृतवर्मा करि क्रोध अपारा ❀ कठिन बाण अर्जुन उर मारा

दो० लग्यो कठिन शर पार्थउर, क्षतयुत भयो शरीर।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि, पाण्डुपुत्र रणधीर॥

करिअतिक्रोधशिलीमुखछांड्यो ❀ नृपको धनुष शक्रसुत काट्यो
कटे धनुष कृत शूल प्रहारा ❀ बीचहि पार्थ काटि महिडारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करि रिसछांड़्यो शक्तिप्रचण्डा ❀ शरन मारि अर्जुन द्वै खण्डा
पुनि पारथ करि क्रोध कराला ❀ कृतउरहन्योबिशिखतेहिकाला
बाण लगत तन मोह जनायो ❀ तब कुन्तल गज फेरि चलायो
कृपाचार्य कीन्हों संधाना ❀ अर्जुन पर छांड़े बहु बाना
आवत पार्थ काटि महि डारे ❀ सहस बाण करि क्रोध पँवारे
ते नराच कृत बीचहि खांड़े ❀ लक्ष बाण पारथ पर छांड़े
कठिनबिशिखअर्जुनगुणदीन्हो ❀ आवत बाण सकल क्षयकीन्हो

दो० पुनि किरीटि फिरि क्रोधकरि, मारे बाण अनन्त।
रथ तुरंग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त॥

अर्जुन बहु कुरुकटक निपातो ❀ कृप तब भयो क्रोध ते तातो
अर्जुन उरमारे दश बानहिं ❀ साठि बाण मारे हनुमानहिं
लैकर धनुष पार्थ रिसिआना ❀ कृप के उर मारे दशबाना
दश शर हन्यो सारथी अङ्गा ❀ बीस बाण ते हन्यो तुरङ्गा
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ पांच बाण ते ध्वजा पताका
भयो बिरथ कृप चढ़ि रथआना ❀ पुनि अर्जुन तेहिं कीन्ह मशाना
कृपाचार्य बहु बिशिख पँवारे ❀ अर्जुन सकल काटि महिडारे
लक्ष बाण तब पार्थ चलाये ❀ आवतही कृप काटि गिराये
कृपाचार्य तब धनु कर लीन्हों ❀ महामारु पारथ पर कीन्हों
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ बज्र बाण कृप के उरमारा

दो० जब कृप रण मूर्च्छित भयो, गयो कटक भहराइ।
तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुँचो रथ दौराइ॥

पार्थहि देखि नृपति ढिगआयो ❀ तब भीषम कोदण्ड चढ़ायो
तब अर्जुन भीषम ढिग हेरा ❀ कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा
उत्तर सुनहु पितामह आये ❀ परशुराम जिन युद्ध हराये
अस कहि कीन्हों दण्डप्रणामा ❀ आशिष दयो होइ मनकामा
पुनिअर्जुनकुरुपतिदिशि ताका ❀ उतर कुमार बेगि रथ हांका
नृपदिशिजात पार्थ अवलोका ❀ शर संधानि गङ्गसुत रोका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भयो गङ्ग को आशिष सांचा ❀ नहिं मोहेउ भीषम रणबांचा
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी ❀ पट भूषण सब लेहु उतारी
चल्यो पार्थ की आज्ञा मानी ❀ पहुँचो निकट भूप के आनी
कुरुपति और बीर बहुतेरे ❀ भूषण बसन मुकुट सबकेरे
लेत कुँवर एकहु नहिं जागे ❀ रथ लै धरे पार्थ के आगे
दुर्योधन की मूर्च्छा जागी ❀ निजदिशिदेखिलाजअतिलागी
पार्थबिजयलखि रिस उपजायो ❀ लैकर धनुष युद्ध हित आयो
जाग्यो सकल सुभट समुदाई ❀ चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई
भीषम आइ बराजे दल राख्यो ❀ अरु यह बचन भूप ते भाख्यो
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो ❀ अर्जुनते रण जय नहिं पायो

दो० चुप ह्वैरहौ कि गृह चलौ, पारथ अति बलधाम ।
लज्जा ह्वै है भूप सुनु, तजि भागे संग्राम ॥

विकल भयो नृप अतिदुखपावा ❀ क्रोधबिबशमुखबचन न आवा
दीरघ श्वास ब्याल जिमि लेई ❀ लगे बज्रवत उतर न देई
भीषम ते बोल्यो बिलखाई ❀ गई पितामह बिगरि लराई
कहभीषमअबलगि नहिं लाजा ❀ भाज्यो कटक भूप नहिं भाजा
ताते नृप बरजत मैं तोहीं ❀ कारण समुझिपरो सब मोहीं
अर्जुन पर दयालु भगवाना ❀ तुमते सहि न जाइ नृप बाना
रण भागे तुव जक्क हँसाई ❀ ताते भवन चलो कुरुराई
जीते पारथ सकल समाजा ❀ तबलगि बिजय न भागे राजा
भाजे सकल सेन किमि झारी ❀ बिनु नरेश भागे नहिं हारी
भीषम बचन सुनत कुरुराई ❀ फिरे भवन सँग भट समुदाई

दो० भीषम आयसु मानिकै, दल लै चल्यो अवास ।
धावन धायगयो तबहिं, नृप बिराट के पास ॥
जीति उत्तरै अरिचमू, कौरव गयो पराइ ।
सुतसपूत कीन्ही बिजय, भाग तिहारे राइ ॥

भूपति खेलत पंसारी ❀ संग कङ्कऋषि लै सुखकारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब जन सुतकी कीरति गावैं ❀ हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं
बारबार नृप निज मुख बरणी ❀ उत्तर कीन्हि अमानुषकरणी
रथ चढ़ि एक न सङ्ग समाजा ❀ सेन सहित जीत्यो कुरुराजा
भीषम द्रोण करण कृप हारे ❀ और कहां जग जीव बिचारे
उत्तर सम जग कोउ न जुझारा ❀ भयो कबहुँ नहिं होनेहारा
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई ❀ कह्यो कङ्कऋषि तब मुसुक्याई

दो० बिजय बृहन्नल जेहिकटक, सो कत जीतो जाइ ।
जूरे युद्ध संग्राम थल, कालहु देइ भगाइ ॥

इतनी सुनत भूप उर जरेऊ ❀ राते दृगकरि बहुरिस भरेऊ
ततक्षणही नरनाह बिराटा ❀ हन्यो कङ्कऋषि पंस ललाटा
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई ❀ अञ्जलि में लैलीन्हों आई
निरखि भूप मन चिन्तामानी ❀ कह्यो सेलंध्री भेद बखानी
बिन जाने चित होत अँदेशा ❀ कह्यो सेलंध्री सुनहु नरेशा
भूतल रुधिर परै जो येहू ❀ द्वादश बर्ष न बरसै मेहू
यह कहिकै भूपति समुझायो ❀ भीमसेन के उर दुख आयो
फरकत अधर नयन भे राता ❀ चाहत भीम कियो उतपाता

दो० महाक्रोधलखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन ।
बरजो केहरि क्षुधित ह्वै, युक्त कहूं यह हैन ॥

उत्तर कुँवर भवन चलिआयो ❀ भूपति सों यह बचन सुनायो
आजु बृहन्नल सब दल जीतो ❀ कौरव गयो युद्ध ते रीतो
मारि शूर सब दीन्ह भगाई ❀ प्रबल पवन जिमि मेघ उड़ाई
भयो मौन नृप धाम सिधावा ❀ भीतर उत्तर बोलि पठावा
युद्ध कथा सिगरी कहि दीनी ❀ सारथि की शरजाल प्रवीनी
है अर्जुन जिन कौरव मारे ❀ दिवस इते यहि ठौर निवारे
यहि प्रकार सुत कहि समुझाये ❀ सुनि बिराट तब अति सुख पाये
कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवणसुखदाई

दो० धर्मपुत्र नरनाह सों, अर्जुन बोल्यो बैन ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाने हम सब कौरवन, अब कछु चिन्ता हैन ॥
तेरह बरष दिवस दश, बीतिगये यहि भाव ।
अब बैठौ शिरछत्रधरि, गुप्त करत कत नाव ॥

दीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा ❀ बसि बनबास सहे दुखभारा
छूटे अशन बसन घर नासा ❀ अन्नहीन कीन्हो उपवासा
भूख प्यास ते भयो बियोगी ❀ उदासीन जैसे रह योगी
बल बिहीन तुमको नृप जानी ❀ अन्धसुवन कछु कानि न मानी
आयसु होइ जीति अपराधी ❀ भुजबल जीतिलेउँ महि आधी
करि सन्धान बाण शर धारा ❀ बोरौं कुरुधसहित परिवारा
देहु निदेश धनुष संधानौं ❀ भूप मरे कौरव सब जानौं
यहि बिधि कहत परस्पर बाता ❀ बीति रैनि गै भयो प्रभाता

दो० प्रात होत शिर छत्र धरि, धर्मपुत्र सुख पाय ।
दान दियो बहुयाचकन, बिप्र समूह बोलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान ।
करनहार सब राज के, करत भूप सन्मान ॥
नहिं बाहन पदत्राण नहिं, उत्तरसहित बिराट ।
नृपति युधिष्ठिर चरण उठि, राख्यो आनि ललाट ॥
भई ढिठाई होइ जो, सो क्षमियो अपराध ।
चूक न मानत दास की, भूप बड़े जे साध ॥

बिन जाने करवाई सेवा ❀ क्षमहु चूक बड़ि भइ नरदेवा
ओछी पूरी चित मत धरियो ❀ भूप अनुग्रह हम पर करियो
मम गृह रही द्रौपदी रानी ❀ दासी भाव आजुलग जानी
बहु प्रकार ते टहल कराई ❀ सो सब क्षमा करहु तुम राई
अस कहि परो चरण करजोरी ❀ कीन्ह बिनय बहुभांति निहोरी
मन बच कर्म दास तुव स्वामी ❀ कीजै कृपा जानि अनुगामी
कह्यो भूप सन बारहि बारा ❀ सबिनय बचन बिराट भुआरा
सुनत युधिष्ठिर आनँद पाये ❀ करि सनमान बिराट बुझाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० बिपति हमारी सब हरी, राख्यो पुत्र समान ।
तोसों तोहिं न दूसरो, महि मण्डल नृपआन ॥

तुव पटतरि को दीजै आना ❀ उऋण होउँ नहिं अपनेजाना
तुम सबको दीनी सब भलिहै ❀ तुव कीरति जगमें नृप चलिहै
नित नित नेति बढ़ै अतिभारी ❀ भयो भूप तुव भुजा हमारी
जीति समर सुरभी जे आनी ❀ ज्यतनी त्यतनी जोकी जानी
ते सब सबको ताको दीन्हीं ❀ सबकी बिदा महीपति कीन्हीं
पहुँच्यो जाइ नगर कुरुराजा ❀ सन्ध्या समय समेत समाजा
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी ❀ भये स्वप्न ब्रत अन्न न पानी
कुश बिछाय कृत शयन भुआला ❀ हरि दानव लै गयो पताला
दानवराज बहुत समुझावा ❀ तुम लगि भूप हमारो दावा
जो तुम प्राणत्याग करि दीन्हा ❀ जग मिटिगयो दानवी चीन्हा
तुव भटतन करि सकल प्रवेशा ❀ करब युद्ध जनि करब अँदेशा

दो० करहु युद्ध कदराइ तजि, छांड़हु सब सन्देह ।
प्रविशहिं सबकी देह में, दैत्य आइ करि नेह ॥

यहि प्रकार कुरुपति समुझाये ❀ दैत्य सङ्ग मृत लोक पठाये
जेहि थल शयन कियो तो राई ❀ कुश साथरी गयो पौढ़ाई
गयो दनुज पुनि असुर समाजा ❀ प्रात होत जाग्यो कुरुराजा
द्रोणी करण तहां चलि आये ❀ कहि निजभेद भूप समुझाये
नरकासुर द्रोणी के अङ्गा ❀ भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसङ्गा
लोह करण तन करण समानो ❀ यहिप्रकार सब दानव जानो
तेहि अवसर आये सब योधा ❀ दनुजनाम कहि नृपति प्रबोधा
यहिबिधिनृपतिकह्यो बलधामा ❀ मारि पार्थ जीतब संग्रामा
कृतदानव तन सकल प्रवेशा ❀ करहु युद्ध नृप तजहु अँदेशा
सुनि नरेश अतिशय सुख पाये ❀ शकुनी बोलि मन्त्र ठहराये
जाय दूत जहँ धर्म नरेशा ❀ उनते यहि बिधि कह्यो सँदेशा
अवधिसाधि तुमकीन्ह प्रकासा ❀ द्वादश बर्ष करहु बनबासा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधि भूपति दूत पठावा ❀ नृपति युधिष्ठिर पै चलिआवा
सहित द्रौपदी पांचौ भाई ❀ बैठ देखि यह बात सुनाई

दो० प्रकटे भीतर अवधिमें, फेरि करहु बनवास ।
मिति सो पूरण कीजिये, तबतुमकरहुअवास॥
कहि सबविधि मलमासकी, समुझायो सो दूत ।
समुझि ताप बैठो तहां, जिमिसुरपुरसुरदूत ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्ववर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दो० उत्तर सों कीन्हों मतो, नृप बिराट तेहि बार ।
दुहिता दीजै अर्जुनहिं, करि बिवाह शुभचार ॥

अर्जुन ताहि नृत्य सिखरायो ❀ निशिबासर गुणगान बतायो
सो दुहिता ताको अब दीजै ❀ अब कछु और बिचार न कीजै
यह कहि भूपति दूत पठायो ❀ अर्जुन ते यह बात सुनायो
तोहिं सुता नृप अपनी दीन्हीं ❀ हेतुबिवाह करण चित लीन्हीं
सुनत पार्थ यह बचन सुनावा ❀ मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा
बात कहत तोहिं लाज न आई ❀ मिथ्या बचन कह्यो इत आई
मो सुतको दुहिता यह दीजै ❀ आनँद सों यह कारज कीजै
यह कहि पार्थ दूत पलटाई ❀ तेहिं बिराटसों कह्यो बुझाई
सो सुनिकै भूपति सुखपायो ❀ बूझि मुहूरत मङ्गल गायो
गावत आनँद सों नर नारी ❀ भूप युधिष्ठिर को दै गारी
नैमिषबासिन अवधि बिताये ❀ ताही समय धौम्यऋषि आये
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई ❀ पकरे चरण द्रौपदी आई
समाचार कहि भूप सुनाये ❀ सुनतधौम्यऋषिअतिसुखपाये

दो० दूत द्वारकानगर को, पठवहु अतिसुख पाय ।
बार न लागी बाटमें, कही कृष्णसों जाय ॥

दीनानाथ दयाल गुसांई ❀ कह्यो प्रणाम भूप सब भाई
कृपासिन्धु कृत दास सहाई ❀ द्रुपदसुता की लाज बचाई
करी आश प्रहलाद पुकारे ❀ हरी त्रास हरणाकुश मारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कही भूप यह त्रिभुवन राई ❀ सदा रहत तुम मोर सहाई
तुम्हरी कृपा बिपति भै दूरी ❀ ह्वै दयाल कीन्हों सुख भूरी
अभिमनु ब्याह रचो है राजा ❀ आइय यहां समेत समाजा
अभिमनु मातुसहित यदुराया ❀ बोलेउ भूप चलिय करि दाया
ह्वै दयाल कीन्हों सुख भारी ❀ करी दूरि प्रभु बिपति हमारी

दो० करि आयेहौ करतहौ, करिहौ सदा सहाइ।
सहितमातुअभिमन्युलै, आपुहि पहुँचोआइ॥
गयेकृष्णभगिनीसहित, लैअभिमनुकहँसाथ।
उठे देखि सुख पायकै, धर्मसुवन नरनाथ॥
मिलिकै शारँगपाणिको, लैआये निज गेह।
अस्तुतिबन्धुनयुतकरत, मनबचक्रमकरि नेह॥

द्वौ कर जोरि कृष्ण के आगे ❀ करन बिनय कुन्तीसुत लागे
श्री यदुनन्दन मुनिजनबन्दन ❀ कल्मषहर सब दुष्टनिकन्दन
जगतारण खलबिदन बिदारण ❀ दुखतारण गजराज उधारण
जगपावन सन्तन मनभावन ❀ ब्रजछावन गिरिवरनखलावन
जनमन रञ्जन भवभय भञ्जन ❀ दनुजनिमर्दन भवधनुगञ्जन
कंसबिनाशन प्रभु गरुड़ासन ❀ यदुबंशी अवतंस प्रकाशन
असुरनिवारण मुनिजनपारण ❀ कुञ्जबिहारण गणिका तारण
जगधर नगधर पीताम्बरधर ❀ हरि दामोदर हलधरसोदर
सिन्धु सुतावर श्री राधावर ❀ सर्ब निवारण सर्ब देवपर
जनकसुता भूषण भवभूषण ❀ सुररिपुदूषण तलतलपूषण
भक्तन हितकर हरनिशिचारी ❀ शुभगतिकारी भवभयहारी

दो० करि अस्तुति श्रीकृष्णकी, भूपति अतिसुखपाय।
नगर कम्पिला द्रुपद गण, दीन्हों दूत पठाय॥

सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ ❀ द्रुपद नरेश पयानहिं कियऊ
गजरथ साहन तुरी तुषारा ❀ सब दल युत बाहन भण्डारा
पञ्चाली सुत पांचौ साथा ❀ पहुँचा पुर बिराट नरनाथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिदुर गेह ते कुन्ती आई ❀ मिली सुतन अतिआनँद पाई
द्रुपद सुता ताके पद बन्दे ❀ सब मिलिकै सब जन आनन्दे
बनते बली घुरुका आये ❀ निज माता कहँ संग लगाये
नगरराज गिरिते चलिआयो ❀ काशिराज भूपति मनभायो
जरासन्ध पटना को राजा ❀ आयो सुतन समेत समाजा
शूरसेन कहँ दूत पठाये ❀ सुनत सँदेश बेगि तहँ आये
धर्मपुत्र सब राज समाना ❀ बिबिधअनुजसबबुद्धिनिधाना

दो० शुभघटिकाशुभलगनगनि, शुभबारहिं सो पाइ ।
रच्यो ब्याह अभिमन्युको, मङ्गलचार कराइ ॥
भाँवरि पारथ देखि कृत, पांचौ भाय हुलास ।
कह्योब्याहबिधिवतसकल, धौम्यसहितऋषिव्यास
दोऊ कुलकी रीति सों, करिबिवाहसुखदानि ।
बाजी गज रथ हेम मणि, दीन्हों नृपसुखखानि॥

भाट भले विरदावलि गावत ❀ सिन्धुर बाजि घने नगपावत
नृत्यत गुणी राग बहु साजत ❀ ताल पखाउझ आउझ बाजत
को बरणै सब आनँद संयुत ❀ बासरहूनिशि कौतुक अद्भुत
भाँवरि परतीं बेदन उच्चरि ❀ दोऊ कुलकी रीति सबै करि
तेहि औसर बिराट नरनाथा ❀ दयो राखि कुश कन्याहाथा
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हों ❀ स्वस्तिबोलि अर्जुनसुतलीन्हों
बिबिधभांति बाजध्वनि माची ❀ जहँ तहँ बारमुखी बहु नाची

दो० अभिमन्युकहँदीन्हीसुता, हरषे भूप बिराट ।
धर्मपुत्र सुख पायकै, लसत अनन्दितपाट॥
बोलि मयासुर को रच्यो, सुन्दर सदन बनाय ।
नृपति युधिष्ठिर यों कही, अर्जुन निकट बुलाय॥

सो० सुनिअर्जुनगुणधाम, मयदानव बोलो तुरत ।
धवलसँवारोधाम, खचिखचिरचिरचिजन्मनिज॥

मयदानव कहँ पार्थ बुलायो ❀ रचहु धाम यह कहि समुझायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Jnan Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रचहु भवन यहि भांति बनाई ❀ चित्रविचित्र बरणि नहिं जाई
रङ्ग रङ्ग रचि सदन बनाये ❀ हरित पीत मणि श्वेत सुहाये
दीसत उज्ज्वल श्वेत अटारी ❀ नीलत कमल घटा जनु कारी
भूमित कतहुँ प्रसाद सतुङ्गा ❀ खचितअरुणमणिरचितउतङ्गा
को कबि उपमा तासु बखाने ❀ देखत कौतुक देव भुलाने
पञ्चमणिन रचि जाल बनाये ❀ भूप रहन हित भवन सुहाये
मयदानव यह रचना ठानी ❀ जहँ जहँ थलह तहां तहँ पानी
लखिय द्वार मनमानि प्रतीती ❀ करत प्रवेश मिलत तहँ भीती
देखिय तहां उतङ्ग देवाला ❀ रच्यो तहां शुभद्वार बिशाला
बैठत नित्य सभा जहँ राजा ❀ तेहि देखत ऐरावत लाजा
पुर अन्तर बिरच्यो शुचिधामा ❀ तहँ रनिवास केर बिश्रामा
बहुत भीर युत नृप दरबारा ❀ को कहि तासु बखानै पारा
हय हिंसत सिन्धुर बहु गाजत ❀ निशिबासर दुन्दुभि तहँ बाजत
बैठे नृप तहँ साज बनाई ❀ कहत बन्दिजन बिरद सुनाई

दो० भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान ।
पण्डितगण मण्डितरहत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेअभिमन्युविवाहवर्णनोद्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

दो० सोम बंश नृप धर्म सुत, शोभितशक्रसमान ।
चारिबन्धु सरि देवकी, दुष्टदलन बलवान ॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी ❀ कृष्णदेव ते बिनय बखानी
जहँ तहँ परी बिपति जब भारी ❀ करि सुधि हरी तुरत बनवारी
दयासिन्धु सोइ करिय बिचारा ❀ मिलै बेगि जेहि देश हमारा
अह हरि हरहु अशेष कलेशा ❀ करहु दूरि प्रभु मोर अँदेशा
अन्धपुत्र कीन्हों अपकारा ❀ कपट द्यूतकरि मोहिं निकारा
धाम ग्राम गज बाजि छिनाई ❀ लहि सम्पदा सबै कुरुराई
खैंचो चीर दुशासन आनी ❀ कीन्हि न कानि बिकल मैं रानी
दीनबन्धु कहि द्रुपद कुमारी ❀ राखु राखु बहु बार पुकारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हम सब बैठि रहे शिरनाई ❀ करि सहाय तुम लाज बचाई
दो० करि आयेहौ करत हौ, सेवक सदा सहाय।
करी बन्दना कृष्ण की, धर्मपुत्र भुवराय ॥
द्वौ कर जोरि भूप अनुरागे ❀ करत बिनय कमलापति आगे
कच्छप बपु धरि सागर थाहन ❀ मत्स्यरूप शंखासुर दाहन
वन्दन मुनिजन सनक सनन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
शूकररूप रदन धरणी धर ❀ खलहिरण्याक्षहिपतितप्राणहर
भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
नरहित तनु प्रहलाद उबारण ❀ हिरण्यकशिपुनखउदरविदारण
सेवक कष्ट हरण जग बन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
छलिबलिबांधि पताल पठावन ❀ बामन बपुधरि भूतल आवन
काटत सब माया दुखद्वन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन ❀ रघुकुल कमल दिनेश प्रकाशन
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
कंस कुटिल असुरन भयकारी ❀ केशीमर्दन अजिर बिहारी
पीतबसन तन चर्चित चन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
बोध रूप धरणी पर धरिहौ ❀ कलकी ह्वै दुष्टन संहरिहौ
यहकहि नृपति कीन्ह पदवन्दन ❀ जयजयजय तुम जय यदुनन्दन
दो० बिनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधन पहँ जाव।
समुझायो बहुबिधि उन्हैं, बचैगोतन को घाव॥
बिहँसि कृष्ण तबहूं उठि धाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठाये ❀ सभामध्य लै कृष्णहिं आये
कह नरेश कित चरणचलायो ❀ बिहँसि कृष्ण तब बचन सुनायो
धर्मराज तुम पास पठाये ❀ गोत बिरोधन मेटन आये
भूपति जग में यह यश लीजे ❀ आधो देश बांटिकै दीजै
आपन कुलहि कलङ्क लगावहु ❀ कलह गोत को भूप बचावहु
दुर्योधन बोल्यो अकुलाई ❀ कैसे सकहुँ कलेश बचाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देश बांटि जो उनको देहैं ❋ योगी ह्वै कपाल हम लेहैं
भूप बांटि कत मोपै पावैं ❋ जो वे नभभूतल फिरि आवैं
कृष्ण कह्यो सुनि मोर निहोरा ❋ मानहु बचन होहि यश तोरा
और भूमि जनि भूपति देहू ❋ पांच ग्राम दीजै करि नेहू

दो० अरकस्थल बरकस्थली, एक चक्र पुनि देहु।
नगरबरुण अरु हस्तिपुर, और देश तुम लेहु॥
सुई अग्र जितनी उठै, सोकहि कबहुँ न देहुँ।
पुनि पीछे भुवभावकरि, प्रथम युद्ध करि लेहुँ॥

तुमहिं कहत यह कैसो आवत ❋ जियत मोहिं धरणी को पावत
सुनि हरिबचन जरत सबगाता ❋ जियत सुनी यह अद्भुतबाता
दुर्योधन मुख बचन बिलोका ❋ सुनि बोल्यो यादवकुलटीका
ऐसी बात कहौ जनि सपने ❋ कुरुपतिब्याधिलेत शिरअपने
पाण्डव से तुम नहिं बरिऐहौ ❋ फिरि नरेश पाछे पछितैहौ
भूपति देखु हिये महँ बूझी ❋ तुम कहँ अबहिं परत नहिं सूझी
मिटि जैहै तुम्हार यह तेहौ ❋ भूप भूमि देहौ तुम देहौ
लेइहि कोपि गदा जब पानी ❋ गाजिहि भीमसेन रण आनी
हांक सुनत कुरुदल भहराई ❋ जिमि बिग देखि भेड़ समुदाई
अर्जुन कोपि धनुष जब धरिहैं ❋ कौरव मारि प्रलय करिडरिहैं
पार्थ बाण सहि सकै न कोई ❋ नर किन देव दैत्य जिन होई
लैकर खड्ग नकुल बलधामा ❋ अवगाहहिं सागर संग्रामा
सहदेव युद्ध जुरे करि क्रोधा ❋ तुव दल रोंकि सकै को योधा
कुलको कलह न त्यागिहि कोही ❋ ऐसो भाव तजै अब तोही
छांड़त मान न बात अनैसी ❋ है तुम्हरे मनमहँ नृप कैसी

दो० पार्थ ध्वजापर बैठिकै, गरजै पवनकुमार।
धर्मराज के धर्म ते, होइहि नाश तुम्हार॥
कृष्णउठेयहबचनकहि, तिनको यह समुझाय।
भावी सो कैसे मिटै, को करि सकै बचाय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगर हस्तिनापुर तबै, कुन्ती पहुँची जाय।
समाचार श्रीकृष्णजू, सकल कह्यो समुझाय॥
दुर्योधन मति परिहरी, देत न पांचौ ग्राम।
देवेकी कहु का चली, श्रवण सुनत नहिं नाम॥

दुर्योधन उर बाढ़ो गर्बा ❀ कहत जीतिहौं भारत सर्बा
सो सुनि कुन्ती अति दुखपावा ❀ हरिदिशिदेखिनयनजलछावा
मो सम जगत दुखी नहिं कोई ❀ भयो न है आगे नहिं होई
कुन्ती दुखित देखि यदुराई ❀ कहि हरिचन्द्र कथा समुझाई
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी ❀ धर्मरूप मदनावति रानी
रोहिताश्व सुत भयो कुमारा ❀ जनु ऋतुराज लीन्ह अवतारा
एक छत्र बसुधा नृप केरी ❀ ऋधिसिधि रहैं भवनजिमिचेरी
निन्नानवे यज्ञ नृप कीन्हा ❀ सबई करण हेत चित दीन्हा
यह नरेश मन मनसा आई ❀ करि शत यज्ञ होहुँ सुरराई
सो सुधि सुनासीर कहुँ पाई ❀ भै शङ्का सुखगा कुम्हिलाई
उर न चैन अति भयो अँदेशा ❀ गाधिसुवन पहँ गयो सुरेशा

दो० बिश्वामित्रहिसों कही, सुरपति बिपति सुनाय।
राखो चहो जो इन्द्रपद, तौ कछु करौ उपाय॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा ❀ लेइ इन्द्रपद सुनहु मुनिन्दा
करिय उपाय महामुनि सोई ❀ जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई
क्रतु अवधेश उपद्रव दावा ❀ जो मुनीश तुम चहौ बचावा
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा ❀ करहु मोर तब मिटै अँदेशा
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो ❀ हँसि सुरेशते बचन सुनायो
यदपिन हमहिं उचित सुनु राजा ❀ करिय अकारण परअपकाजा
तुम आगमन परो म्वहिं भारा ❀ करब शक्र हम काज तुम्हारा
सो उपाय हम करब सुरेशा ❀ जाते नशै तुम्हार कलेशा

दो० सत्यहीन हरिचन्द्र करि, करौं तुम्हारो काज।
इन्द्रपुरी का अवध को, तुरत छड़ावौं राज॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by eGangotri Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि प्रकार शक्रहि मुनि बोधा ❀ बिदाकीन्ह बहुभांति प्रबोधा
पुनि बराह बपु आपु बनाये ❀ कौशिक अवधपुरी चलिआये
गयो बराह नृपति फुलवारी ❀ दल फल मूल अशनकृतभ्हारी
दशन घात सब बृक्ष ढहाये ❀ सरवर पैठि जलज सब खाये
पुरइनि तोरि मिलायो कीचा ❀ अतिरव करि गर्जा सरबीचा
मालाकार भूप सन जाई ❀ समाचार सब कहेउ बुझाई
महाराज यक आव बराहू ❀ मूरतिवन्त सोह जनु राहू
त्यहिं सब उपबन कीन्ह उजारी ❀ खनितड़ाग कांदव करिडारी
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई ❀ चल्यो तुरगचढ़ि दलअधिकाई
लै नरेश सँग सुभट अनेका ❀ चहुँदिशि जाय बाटिका छेका
तब नरेश कह भुजा उठाई ❀ सुनहु श्रवण दै भट समुदाई
ज्यहिदिशिजाइनिकरिबाराहा ❀ त्यहि जारों तनु तेज कराहा
पुनि बराह मन बिस्मय आई ❀ निकस्यो निकट भूप के जाई

दो० जाकी दिशि ह्वै मैं कढ़ौं, करै भूप तेहि दाह।
यह विचारिकै नृपनिकट, निकरो आइ बराह॥

मारन चल्यो भूप शर साजी ❀ चल्यो बराह मरुतगति भाजी
तब नरेश करि चपल तुरङ्गा ❀ गयो अकेल न दूसर सङ्गा
परम गहन द्विज रूप बनाई ❀ दीन्ह अशीष मुनीश्वर आई
नृपति बिलोकि अचम्भव माना ❀ करि प्रणाम यह बचन बखाना
पूरण मोरि भाग्य मुनिराया ❀ दीन्हों दरश कीन बड़िदाया
यहसुनिमुनिबोल्यो मुसक्याता ❀ आयों तुमहिं श्रवण सुनि दाता
पूरण करहु मनोरथ मोरा ❀ बाढ़ै सुयश जगत नृप तोरा
कह नृप अस भाषौ जनि भोरे ❀ तुमकहँ कछु अदेय नहिं मोरे
बारबार मुनि बचन दृढ़ाई ❀ नृपसन बिष्णु शपथ करवाई
मांगौं राज पाट भण्डारा ❀ तापर और कनक सौभारा
देन कह्यो नृप पुर जब आये ❀ गाधिराज सुत संग लगाये

दो० दीन्ह नरेश मुनीश कहँ, राज्य पाट भण्डार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिहँसि गाधिसुत तब कही, स्वर्णदेहु सौ भार ॥
जो नहिं राय देहु तुम मोरा ❀ नाशै सकल सत्य नृप तोरा
कह नरेश मैं सर्वसु दयऊ ❀ रानी तनय मोर तन रह्यऊ
कह हरिचन्द्र बचन छलहानी ❀ लीजै बेंचि मुनीश्वर ज्ञानी
गाधिसुवन सुनि अतिसुखपाये ❀ लै निज संग बनारस आये
तासु दिवस मग अन्न न पानी ❀ कीन्हों नृप न नेक अरु रानी
अठयें दिवस गङ्ग के तीरा ❀ चहत पानजल बिकल शरीरा
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई ❀ बिना कनक जो तू जल खाई
होइहि सत्य धर्म तुव क्षारा ❀ फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा
सुनि नरेश मन अति दुखपाये ❀ बैठि गङ्ग तट शीश नवाये
दो० रोहिताश्व अति तृषित ह्वै, तब थरहरो शरीर ।
मूर्च्छिपरे तनु बिकल अति, जह्नुसुता के तीर ॥
करतबिलाप बिकलअति रानी ❀ अञ्चल बोरि लैआई पानी
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो ❀ जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो
स्वर्णदिये बिन जल मुख डारा ❀ कुँवर बदन गा धर्म तुम्हारा
सुनि रानी मन अतिदुखव्यापा ❀ बैठि गङ्ग तट करत बिलापा
रवि आकर्ष जप्यो मुनि राई ❀ बारह कला तपै रवि आई
भयो तेज कछु बरणि न जाई ❀ रानी नृपति गिरेउ मुरछाई
बिनय कीन्ह नृप बारहिंबारा ❀ तुम ते प्रकट्यो बंश हमारा
सो तुम दया छांड़ि प्रभु दयऊ ❀ सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी ❀ सहित कुँवर तनुताप बुझानी
रविप्रसाद तनु अतिबल भयऊ ❀ क्षुधा पियास त्रास मिटि गयऊ
तब मुनि संग नरेश लवाई ❀ बैठि राज मारग महँ आई
बोलि सबन ते बचन सुनाये ❀ बिक्रय हेतु मनुज हम लाये
दो० सर्वसु सुनाय मुनीश पुनि, कहि इमि बारहिंबार ।
तीनि मनुज को मोल हम, स्वर्ण लेहिं सौभार ॥
रानिहि निरखि रूप अधिकाई ❀ सुनि माता बेश्या तहँ आई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोल करन को कीन्ह प्रचारा ❀ कह ऋषि कनक अर्द्ध सौ भारा
भार पचास स्वर्ण म्वहिं दीजै ❀ बालक सहित बाम यह लीजै
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सौ भारा ❀ रानि सहित लै चली कुमारा
बेश्या ते कर जोरि सयानी ❀ बोली बचन दीन ह्वै रानी
लीन्ह मोल तुम जीव हमारा ❀ कौन काज हम करब तुम्हारा
गणिकै कह्यो रानि ते बानी ❀ कारज सुनहु हमार सयानी
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई ❀ दान पाइ जीविका चलाई

दो० परपुरुषन ते प्रीति करि, द्रव्य लाइये धाम।
हावभावकरि मन हरिय, कीन दोय बश काम॥

सुनि रानी मन भयो अँदेशा ❀ मनमा सुमिरेउ देव दिनेशा
तुव कुलकी कुलबधू कहाई ❀ गई लाज मैं जगत हँसाई
रहै धर्म स्वइ करिय उपाई ❀ ह्वै दयाल प्रभु करिय सहाई
रवि मण्डल ते बहु कपि आये ❀ बारमुखिन कहँ त्रास देखाये
गणिकन बिकल बिप्रसन जाई ❀ कथा अलौकिक सकल सुनाई
त्यागो जो लिय द्रव्य हमारा ❀ तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा
बारमुखी इमि बचन सुनाये ❀ सत्यकेतु द्विज तहँ चलिआये
तिन तब बूझेउ सकल प्रसङ्गा ❀ सुनि दुखलह्यो महामुनिअङ्गा
कनक मँगाय दीन्ह मुनिज्ञानी ❀ बेश्यन ते लीन्हों सुत रानी

दो० कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय।
द्विजपत्नी कहँ प्रीतिकरि, अधिकअधिकसरसाय॥

नृप कहँ लीन्हों मोल चँडारा ❀ दीन्हों कनक अर्द्ध सौ भारा
कालसेन रह त्यहिका नाऊं ❀ लै हरिचन्द्रहि गा निज ठाऊं
कही दानवी सकल कहानी ❀ सौंप्यो नृपकहँ घाट मशानी
तहां मृतक जो नर लै आवै ❀ बिना दण्ड कृति करन न पावै
मुद्रा पञ्च बसन युग देई ❀ करन देइ कृति जब लैलेई
मिलै दण्ड सो लै नृप धीरा ❀ घटभरि लेइ गङ्ग को नीरा
नित प्रति कालसेन के आगे ❀ धरैं जाय नृप अति अनुरागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह्यो नाम नृपसन त्यहि बागा ❀ सुनि सुमहीपति पांयनलागा
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊं ❀ मोरे कतहुँ गांव नहिं ठाऊं
यहि बिधि ताहि भूप समुझाई ❀ पहुँचो प्रात घाट सो आई

दो० यहि बिधि बीते कछु दिवस, मुनि ह्वै सर्प कराल ।
डस्योआनिपुनिनृपतनय, प्राण तजे ततकाल ॥
सत्यकेतु कुश समिधहित, बनकहँ कीन्हपयान ।
द्विज तरुणी ताक्षण गई, करन गङ्ग असनान॥

रानी निरखि शोच उपजावा ❀ करत बिलाप दुसह दुखपावा
अर्द्धबसन ते कुँवर ओढ़ाये ❀ अर्द्धबसन निज देह छिपाये
लैगइ तुरत गङ्ग के तीरा ❀ रुदन करत अतिविकलशरीरा
चाहत जल डारौं त्यहिकाला ❀ आयो भूप रूप चण्डाला
लखि मृतकुँवर नयनजल मोचे ❀ भयो दुसह दुख नृप अतिशोचे
स्वामि भक्ति सुधि भूपहि आई ❀ तब रानी कहँ रह्यो रिसाई

दो० निठुर बचन बोल्यो तबहिं, रानी सों नरनाह ।
दएडदियेबिनुजनिमृतक, कीजै सरित प्रबाह ॥

कह रानी गे भूलि भुवारा ❀ रोहिताश्व यह तनय तुम्हारा
असकहि कीन बिलाप कलापा ❀ बोल्यो नृपति सहित परितापा
मैं हौं कालस्वेन को दासा ❀ छांड़ि देहु मन ते यह आसा
मुद्रा पञ्च बसन बिनु लीन्हे ❀ मानौं मैं न कोटि बिधि कीन्हे
बिप्र पाणि तुम बेंचि बहाई ❀ अब नृप द्रव्य कहां हम पाई
बसन कुँवर को लेहु उतारी ❀ लेहु बेंचि मम आमिष मारी
सुनि नरेशकहँ क्रोध न थम्भा ❀ पकरि केश बांध्यो लै खम्भा
मारन चल्यो खड्ग गहि पाणी ❀ तब यह भई गगनमहँ बाणी

दो० सुत राख्यो तन कष्टसहि, बीति गये दिन मन्द ।
केश तजौ धीरज धरौ, धन्य धन्य हरिचन्द॥

असकहि प्रकट भयो भगवाना ❀ मांगु भूप अस बचन बखाना
परे चरण नृप कण्ठ लगाये ❀ रानी के बन्धन छुटवाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है प्रसन्न तब श्रीभगवाना ❀ भूपति कहँ दीन्हों बरदाना
अब नृप करहु अवधपुर बासा ❀ अन्तकाल आयहु मम पासा
करी कृपा हरि कुँवर जियाई ❀ अन्तर आप भये सुरराई
प्रभुकी कृपा नगर निज आये ❀ अचलराज्य माता उन पाये
नहिं उनके दुखको कछु छोरा ❀ तिन देखत केतिक दुख तोरा
शिव प्रसाद मिटि जैहै सोई ❀ धीरज धरहु नीक अब होई
यहि प्रकार कुन्ती समुझाई ❀ बिदुर भवन गे संग लवाई
करि भोजन तहँ शारँगपानी ❀ कीन्ह शयन सब राति सेरानी

दो० प्रात होत श्रीकृष्णजू, दुर्योधन के पास।
गये फेरि हितसों सुबुधि, कीन्हें बचन प्रकास॥
कहो हमारो कीजिये, पांच ग्राम दै देहु।
बन्धु एकसौ पांचसों, निशिदिन बढ़ै सनेहु॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के, बचन सुने तेहिकाल।
प्रतिउत्तर हरिसों कह्यो, भये बिलोचन लाल॥
नितहरिशालैशालहरि, कितहिशलावतआनि।
करौंअपाण्डवभूमिसब, धरौं न कुलकी कानि॥

सो सुनि बचन कृष्ण नहिं भाये ❀ है सक्रोध यहि भांति सुनाये
कोपि भीम रणमें दल गाजहिं ❀ सुनत नाद कौरवदल भाजहिं
देखि गदायुत पवनकुमारा ❀ को तापर डारै हथियारा
सहदेव नकुलरु पाण्डुकुमारा ❀ तासम सकल कौन संसारा
जब कोपहिं लै पाणि पिनाका ❀ धीर न रहै सुनत रण हांका
समुझत नहीं बचन सुनि मूढ़ा ❀ परत सूझि नहिं गर्व अरूढ़ा
अबहिं न आवत चेत अभागे ❀ समुझहिं नीच मूढ़ अहँ लागे

दो० बोले शकुनि सरोष है, कही नृपति सों जाय।
कौनि कानि याकी करौं, बांधि लेहु सुखपाय॥
दुखपायो भीषम बिदुर, बिकल भये सब गात।
चहतकियोअपमानसब, बनै नहीं कछु बात॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीषम बिदुर बिकल प्रभु जानी ❀ बदन पसारेउ शारँगपानी
मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्डा ❀ सम्भ्रम छायो चित्त अखण्डा
देख्यो गगन सूर्य शशि तारा ❀ देख्यो भूमि अकाश पतारा
भूधर सरित सिन्धु अरु कानन ❀ देख्यो सुर सुरेश सहसानन
देख्यो शम्भु बिरञ्चि मुनीशा ❀ दानव दनुज सृष्टि सब दीशा
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा ❀ जहँ तहँ मरे परे बलधामा
कृप कृतवर्मा अश्वत्थामा ❀ कुरुदल मध्य बची यह सामा
सात्यकि पञ्चबन्धु सुरत्राता ❀ पाण्डव मध्य बचे ये साता
यहिबिधि चरित कृष्ण दरशाये ❀ भीषम बिदुर चरण शिरनाये

दो० यहि बिधि दरशायो चरित, भीषमको जगदीश।
बचन प्रकाश्यो बिदुरसों, हरिपद नायो शीश॥

खल दुर्योधन मर्म न जानत ❀ शिषत्रिभुवनपतिकी नहिंमानत
भूल्यो मूरुख नृपता गर्बा ❀ कुल के धर्म तजे यहि सर्बा
ह्वैहै सोइ जो लिख करतारा ❀ कह भीषम यह बारहिंबारा
कह मुनि सुनहु मुकुटबरधारी ❀ शोच हरण सन्तन हितकारी
चले कृष्ण नृपको समुझाई ❀ पहुँच्यो धर्मपुत्र पहँ आई
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये ❀ बैठि कृष्ण यह बचन सुनाये
सूक्षममहि तुमको नहिं देता ❀ उद्यम कीन्हों भारत हेता
बिना युद्ध महि कबहुँ न देहै ❀ जो जीतै सोई सब लेहै
बार बार कह बात कन्हाई ❀ बिना युद्ध कौने महि पाई

दो० बीर भोग है जीति रण, क्रूर तजैं कदराय।
अस्त्र गहौ भारत रचौ, लीजै सबै बचाय॥
कृष्ण कही सबके मते, मन मानी यह बात।
धर्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसन्नित गात॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

इति विराटपर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

—:०:—

उद्योग-पर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

कौरव-पाण्डवों का महाभारत करने के लिये अपने-अपने इष्ट-मित्रों को न्योता भेज कर बुलाने तथा युद्ध करने के विचार आदि की कथाएँ वर्णित हैं।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ उद्योगपर्व ॥

दो० बिधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुख पाय नियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भणित पर्व उद्योग॥

कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू ❀ कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू
जब हरि धर्मराज पहँ आये ❀ मिलत हृदय अतिआनँदछाये
गहे चरण भीमादिक भाई ❀ बैठे अति प्रसन्न यदुराई
तब सुधि पाइ बिराट भुवारा ❀ आये सभा सहित परिवारा
उत्तर शंख कुँवर दोउ साथा ❀ आइ चरण परशे यदुनाथा
उठे भूप मिलि भये सुखारे ❀ गहि भुज निज समीप बैठारे
सुतन समेत द्रुपद महराजा ❀ धृष्टकेतु त्यहि सभा बिराजा

दो० काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह।
जरासन्धसुत सात्यकी, नृपसब सहित उछाह॥

पांचाली सुत पांचो बीरा ❀ घटोत्कच अभिमन्यु रणधीरा
हरि समीप बैठे नर नाथा ❀ अर्जुन भीम जमलयुग साथा
प्रद्युम्न अरु अनिरुद्ध कुमारा ❀ जाम्बवतीसुत साम्ब जुझारा
बैठे यादव द्वादश जाती ❀ सब परिवार पुत्र अरु नाती
बैठे सब नृप सखा सुखारी ❀ भोज वृष्णि अन्धकगणभारी
हरि समीप हल मूसरवारे ❀ आसव पिये नयन रतनारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नील निचोल अभूषण साजे ❀ प्रभु के दक्षिण ओर बिराजे
जा कहँ शेष कहै संसारा ❀ सो बलभद्र सहै जगभारा
औरौ देश देश के राजा ❀ जुरे आनि तहँ सकलसमाजा

दो० भूपबामदिशि द्रौपदी, भूषण बसन उदोत।
मनहुँ प्रभाकरकी सभा, जगरमगर द्युति होत॥

केहरि कटि मृगशावकनयनी ❀ बोलीबिहँसि बचन पिकबयनी
दुर्योधन गृह भूप पठाये ❀ कारज सकल नाथ करि आये
कह हरि वह एको नहिं मानहि ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि जानहि
कहे बचन हँसि शारँगपानी ❀ बिना युद्ध महिमिलिहि न रानी
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ ❀ बासुदेव ते बिनय सुनायउ
मानत सो न कुमारगगामी ❀ अब उपाय कीजै का स्वामी
कही बिहँसि तब शारँगपानी ❀ सुनहु नरेश प्रेम सज्ञानी
बैठे द्रुपद बिराट भुवारा ❀ पूछि मन्त्र तस करहु प्रचारा
जस कछु मतो कहै सबलोगा ❀ कहेउकृष्ण तस करियनियोगा

दो० बुद्धि बहिक्रम बद्ध शुचि, ज्ञानवान पञ्चाल।
धर्मशीलबल नृप कहै, करिय यतन ततकाल॥

श्रेष्ठ बरिष्ठ भूप सबलायक ❀ पितु समान तुम्हरे हितदायक
इनहिं पूछि करिहौ जो काजा ❀ होइहि सकल मनोरथ राजा
पूछौ बैठि बिराट भुवारा ❀ इनते को हित चहत तुम्हारा
द्रुपद बिराट कही यह बाता ❀ सब जानत प्रभु अन्तर्याता
अब प्रभु और न करहु बिचारा ❀ आयुध बांधि होहु असवारा
कोटिन बिधि प्रभु यतन बिचारे ❀ मिलै न महि कौरव बिन मारे
सुनि यह बचन सात्यकी बोला ❀ कहे नाथ इन बचन अमोला
मत हमार सुनि पावन वारी ❀ जले जियत कुरुपति अपकारी

दो० तबलग कुशल न पाएडुसुत, सुनिये दीनदयाल।
जब लग दुर्योधन जियत, ग्रसत न राकहँकाल॥

आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजै ❀ मरे सकल कौरव सुनिलीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पारथ ते धनु बिद्या पाई ❀ कीन्ह निपुण सब अस्त्र पढ़ाई
यहिबिधि रणजीतौ यदुनायक ❀ कौरवनिधन करनके लायक
सुनत बचन हलधरहि न भाये ❀ क्रोधितनयन अरुण होइ आये
मोहिं न भावत मन्त्र तुम्हारो ❀ चहतसकलमिलिखेल बिगारो
धृष्टराज के छोटे भ्राता ❀ जानहु पाण्डु जगत बिख्याता
बेद पुराण बिदित सब काहू ❀ होइ परन्तु जेठ नरनाहू
है जेठे को राजकुमारा ❀ दुर्योधनहि राज्य अधिकारा
पहुँचत नहिं पाण्डव को दावा ❀ नाहक सब मिलि बैरु करावा

दो० सुने श्रवण बलदेव के, मन्त्र जबै यदुनाथ।
लागेकरन बिबाद तब, निज भ्राता के साथ॥

दूरौ प्रकट भये का बासा ❀ मेटि को सकै पाण्डुसुत आसा
यहिप्रकार हरि कहि समुझावा ❀ सुनत बचन हलधरहि न भावा
बाहुलीक कछु कीन न दावा ❀ प्रथम पितामह अंश न पावा
राज्ययोग नहिं होत कनिष्ठा ❀ करवावत तुम कान्ह अरिष्टा
हँसि बोले तब शारँगपानी ❀ सुनहु तात यक कथा पुरानी
भे शंतनु ते प्रथम देवापी ❀ बाहुलीक भे मध्य प्रतापी
देखेउ ज्येष्ठ कुष्ठ तन चीन्हा ❀ ताते राज्य पितहि नहिं दीन्हा
बाहुलीक मातुल पहँ गयऊ ❀ शांतनुनाम नृपति सो भयऊ
प्रथम ब्याह गङ्गा ते कीन्हा ❀ ताके जन्म पितामह लीन्हा
राज्य बिचित्रबीर्य कहँ दयऊ ❀ भीष्म ज्येष्ठ राजा नहिं भयऊ
पूछेउ द्रुपद सुनहु जगतारण ❀ अंशहीन भीषम केहि कारण
महारथी सन और न पूजा ❀ जेहिं समान जग भयउ न दूजा
बलते कवन छड़ावत दावा ❀ केहि कारण उन राज्य न पावा

दो० प्रकटे शांतनु गङ्गते, महाबाहु बल खानि।
अंश न पायो बंशको, कारण कहौ बखानि॥

सुनि श्रीहरि आये इन बातन ❀ सुनहु प्रपदसुत कथा पुरातन
भार्गीरथी ब्याहि सुख पाये ❀ करि करार भवनहिं नृप लाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालक सप्त प्रथम उपजाये ❋ तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये
भीषम जन्म जगत जब लीन्हा ❋ बाल बिलोकि मोह नृप कीन्हा
कहेउ भूप गङ्गा सुनि लीजै ❋ अबकी सुत मांगे मोहिं दीजै
कह सुरसरि नृप कीन्ह करारा ❋ पहुँचावों बालक तुव धारा
तुमहिं भूप अब सुत प्रिय लागे ❋ यह करार कीन्हों मैं आगे
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना ❋ निज प्रवाह हम करब पयाना
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै ❋ जाहुँ भूप मोहिं आज्ञा दीजै
करहु नृपति अब तजि संदेहा ❋ राखहु हमहिं कि बालक येहा
कहनरेशमोहिं शिशु प्रियलागत ❋ जोरिपाणि तुमते यह मांगत
सुरसरि सुनि महीप मुखबानी ❋ निज प्रवाह ततकाल समानी
नारि बिरह दुख भूपहि ब्यापा ❋ बिकल रैनिदिनकीन्हबिलापा
राज्ययोग बीते कछु काला ❋ भयो कुँवर दुख तजे भुवाला
परशुराम धनु बिद्या दीन्हों ❋ आपु समान महारथ कीन्हों
करहि गङ्गसुत सज्य प्रचारा ❋ भूप द्योसप्रति रमत शिकारा

दो० घूमत भूप अखण्ड बन, गयउ नदी के तीर।
देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर॥
की धौं रति सम मैनका, रम्भारूप समान।
बिज्जुलतासी देखि छबि, संभ्रम भूप भुलान॥

ठाढ़ नरेश नदी के तीरा ❋ कामबिबशअतिबिकलशरीरा
हांकि अश्व चलिगे नृप आगे ❋ पूछन बचन प्रेम सों लागे
केहि सुकृती की सुता सोहाई ❋ कारण कवन नदी तट आई
तुम्हहिं देखि लोभेउ मन मोरा ❋ को तुव पिता नाम का तोरा
सुता निषादराज की राजा ❋ निशिदिन मोर नदीतट काजा
मीन राज ब्योहार हमारा ❋ मत्स्योदरी नाम द्विज सारा
आवत मम तन कठिन कुबासा ❋ देखि लोग दाबैं निज नासा
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये ❋ यहि मग ऋषय पराशर आये

दो० सरित तीर ठाढ़े भये, तपोमूर्त्ति अभिराम।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोहिंबिलोक्योतरणिपर, बिकलभयोबशकाम॥
म्वहिंबिलोकि ऋषिप्रेमअधीरा ❀ भयो कामबश बिकलशरीरा
मांगी रति मुनि करि बहु ईड़ा ❀ बोली मैन भूपबश बीड़ा
कह मुनि हमहिं देव ऋतुदाना ❀ लेहु शाप की बज्र समाना
क्रोधवन्त ऋषि को जब देखा ❀ प्रति उत्तर मैं दीन्ह बिशेखा
मैं तुम्हारि पुत्री ऋषिराई ❀ मलिनरूप अरु देह गँवाई
नीचजाति कृत अशन कुभोगा ❀ नाहिंन नाथ तुम्हारे योगा
बरै पुरुष पितु शिष बिन जोई ❀ कुलटा नाम कहावै सोई
मैं मुनीश तुव हाथ बिकानी ❀ छोड़यों लोकलाज कुलकानी
तुमहिं बिलोकि राजअनुकूला ❀ देखहु नाथ लोग दोउकूला
अतिकलङ्क लागी मुनि हमको ❀ दिनरातिनाथउचितनहिंतुमको

दो० ह्वै प्रसन्न तव ऋषिकहेउ, त्यागहु तरुणिबिषाद ।
तुव तन गन्ध कपूर की, होइहि भोर प्रसाद ॥

ऋषिआशिष प्रसन्नचित भयऊ ❀ छूटि बिषाद शोक सब गयऊ
शशिसमान तन भयो प्रकासा ❀ योजनभरि पूरेउ पुनि बासा
योजनभरि तन बहेउ सुगन्धा ❀ कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा
सत्यचरित भावेउ निज श्यामा ❀ ताते सत्यवती तुव नामा
यहकरि कीन्हे ऋषय चरित्रा ❀ भयउ दिवसमहँ रात्रि विचित्रा
परेउ कुहिर दिनकर द्युतिनासा ❀ रमितभयो मुनि सहितहुलासा
योजन भरि पूरयो पुनि बासा ❀ तन सुगन्ध दुर्गन्ध बिनासा
निशिते सरिस भयो अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा
होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ❀ कन्यारूप सदा तेहि कीन्हों
यहि प्रकार मोहिं दै बरदाना ❀ ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना
जब ऋषीश निज मारग गयऊ ❀ भये प्रकाश कुहिर मिटिगयऊ
तिनते भये व्यास भगवाना ❀ प्रगटत बनको कीन्ह पयाना

दो० सत्यवती भूपाल ते, कह निजकथा प्रमान ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भणित पर्व उद्योग यह, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

काम बिबश नृप बचन उचारे ❀ सत्यवती चलु भवन हमारे
सब प्रकार तुव मम सुखदानी ❀ तुम कहँ लै करिहौं पटरानी
करहु कवल नृप चलहुँ तुम्हारे ❀ होइ महीपति पुत्र हमारे
तुव करार आवै केहि काजा ❀ करहि कवल भीषम सुनु राजा
सुनि नरेश बहु दूत पठाये ❀ गङ्गासुतहि बोलि लै आये
सत्यवती सुनि सकल प्रसङ्गा ❀ कीन प्रणाम प्रसन्नित अङ्गा
चलहु पिता सँग मातु व दारा ❀ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ ❀ धनि पितुभक्त जगत तुम भयऊ
करहु कवल हमते युवराजा ❀ तनय हमार करै तव राजा
चलौं भवन तव तुव पितु सङ्गा ❀ देहु बीच जग पावनि गङ्गा

दो० धर्म धुरन्धर धीर धर, देवअंश अवतार।
तुमसम सत्यप्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार ॥

बचन पालि तुम राज्य न लेहौ ❀ निश्चय मम पुत्रन को देहौ
तुम्हरे बंश प्रबल सुत होई ❀ लेइ छिनाइ राज्य पुनि सोई
तब शंतनु भीषम प्रति बोले ❀ हे सुत लेन नारि यह बोले
कीन्हे बिन उपकार तुम्हारे ❀ नहिं चलिहै पुनि भवन हमारे
यहि बिन मैं न जियउँ सुनु शावक ❀ जारत मोहिं मदन बिन पावक
शंतनु बचन शोक मम खोले ❀ सुनतहि तब गङ्गासुत बोले
सुनहु पिता तुम मोर करारा ❀ निरखहुं मैं न नयन भरि दारा
किमि ह्वैहै सन्तन की साजा ❀ करिहौं सत्यवती सुत राजा
मात पिता श्रीहरि गुरु आना ❀ सत्यवती सुनु बचन प्रमाना
जैसे हम गङ्गा कहँ जानब ❀ त्यहिते सरिस मातु तुहिं मानब
करि करार शुभ यान चढ़ाये ❀ नगर हस्तिनापुर लै आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब प्रकार निज लायक जानी ❀ शंतनु नृप कीन्हेउ पटरानी
चित्राङ्गद बिचित्र सुत जाके ❀ भये देव सरिवर नहिं ताके
तन तजि नृप सुरपुर जब गयऊ ❀ चित्राङ्गदहि राज्य पुनि भयऊ
गिरिकन्दरमहँ फिरत शिकारा ❀ प्रबल सिंह ताको बन मारा
भये दुखित भीषम सुनि बाता ❀ अतिशयबिकल भई पुनि माता
सहित धरा धन सेन समाजू ❀ दीन्ह बिचित्रबीर्य कहँ राजू

दो० आज्ञा लीन्हीं मातुकी, भीषम अति हरषाय।
काशिराजकी लै सुता, भ्राता ब्याहिनि आय॥

याते राज्य न भीषम लीन्हा ❀ राज्य बिचित्रबीर्य कहँ दीन्हा
रानिन बिबश भयउ नरनाहा ❀ रमित रैनि दिन सहित उछाहा
राजकाज नृप को सब भूला ❀ प्रतिदिन रहै नारि अनुकूला
द्वादश बर्ष भवन ते राजा ❀ कढ़ेउ न जान्यो दूसर काजा
गङ्गासुत कृत राज्य प्रचारा ❀ भूप दिवस निशि रमित बिहारा
बल न रहेउ तन नारि प्रसङ्गा ❀ भयउ राजयक्ष्मा नृप अङ्गा
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा ❀ भये बिकल जन त्यहिके शोगा
सत्यवती अति कीन्ह बिलापा ❀ भीषम उर उपज्यो परितापा

दो० धरि धीरज बैठे भवन, दुखित नयन जलरोकि।
माता सों कीन्हों मतो, बंश बिहीन बिलोकि॥

माता सुनहु ब्यास जो आवें ❀ कह भीषम वे बंश चलावें
सुमिरत तुरत ब्यासमुनि आये ❀ अक्षमाल तन भस्म चढ़ाये
जटाकलाप बार अति भूरे ❀ शोभित नयन अरुण पुनि रूरे
उठि भीषम चरणन शिरनाये ❀ सत्यवती पुनि कण्ठ लगाये
सादर सिंहासन बैठारे ❀ बिनय कीन्ह दुख हरो हमारे
बंश बिहीन बन्धु तुम भयऊ ❀ भयो राजयक्ष्मा मरिगयऊ
अबकरिकृपा ऋषियअवतंशा ❀ करिय प्रकट रानिन ते बंशा
ब्यास मातु की आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे सुख मानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काल्हिहि कहेउ अम्बिका बोली ❀ मुनिशय्या तुम जाहु अमोली
इनते सुत प्रकटो तुम जाई ❀ बाढ़ै बंश राज्य अधिकाई
दो० कही अम्बिका मातु यह, बात न मोते होय।
कुलटा कहिहैं लोग जग, जाय धर्म सब खोय॥
पैहै ब्यास विष्णु अवतारा ❀ ब्यापि रहो सगरे संसारा
तासु परस कीन्हे नहिं पापा ❀ असमन समुझितजौपरितापा
सत्यवती की आज्ञा मानी ❀ ऋषि ढिग गई अम्बिका रानी
ब्यास तेज ते तन थहराई ❀ बैठि सकुचबश शीश नवाई
जिमिहिमगतकमलीकुम्हिलानी ❀ थके बचन मुख आव न बानी
भयबश अङ्ग अङ्ग सब कांपी ❀ सुरत करत लीन्हें मुख झांपी
गये ब्यास माता के पासा ❀ निकटबैठि यह बचन प्रकासा
दो० सहि न सकीममतेजत्रिय, लिये ढांकि दृगबार।
ह्वैहै याके मातु सुनु, अक्षबिहीन कुमार॥
सत्यवती सुनि अतिदुख लहेऊ ❀ पुनि पुनि बचन पुत्रसों कहेऊ
नयन बिना राजा अधिकारी ❀ होत नहीं सुत देखु बिचारी
करहु प्रकट अम्बा ते बालक ❀ सो कुरुबंश होय प्रतिपालक
ब्यास मातु की आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे पुनि आनी
कह अम्बा ते योजनगन्धा ❀ होइ अम्बिका के सुत अन्धा
मुनिशय्या कहँ अब तुम जाहू ❀ उपजै पुत्र होइ नरनाहू
आयसु मांगि गई मुनि तीरा ❀ देखि तेज भयो पीत शरीरा
तब मुनीश आलिङ्गन कीन्हा ❀ होय भूपसुत आशिष दीन्हा
यह कहि सत्यवती पहँ आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये
दो० सकल सुलक्षण होय सुत, महाराज के योग।
पीतभई त्रिय देखि मोहिं, होय पीत तनरोग॥
यह कहि बचन मातु के आगे ❀ सुमिरण करन ब्रह्म की लागे
कह्यो मातु अब सुत सुनिलीजे ❀ अपने मन बिचार यह कीजे
यहिते अधिक न दूसर शोगा ❀ अन्ध एक सुत यक युत रोगा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देहु एक सुत अबकी बारा ❀ विष्णु भक्त जानै संसारा
कहेउ ब्यास माता सुनि लीजै ❀ शय्या पठै अम्बिका दीजै
सत्यवती सुनि ताहि बोलाई ❀ सुनत अम्बिका शीश डोलाई

दो० एक बार माता करौं, बचन तुम्हार प्रमान ।
बारमुखी समसो त्रिया, बार बार ऋतुदान ॥

सत्यवती कहि बालक काजा ❀ तुम ऋतु करौ छोड़िकै लाजा
सासुहि निकट भली कहि आई ❀ मुनि समीप परिचरी पठाई
भये रमित जानेउ मुनि रानी ❀ निलज देखि दासी पहिंचानी
आये मुनि माता के आगे ❀ कथा समस्त कहन पुनि लागे
याते होइहि प्रकट कुमारा ❀ परम भक्त जानहिं संसारा
माता सत्य कहौं मैं तोहीं ❀ पुनि छलकीन्ह अम्बिका मोहीं
मोहिं बिलोकि परम भय पाई ❀ पठई और आप नहिं आई
निपट निलज्ज देख मैं सोई ❀ काशिराज की सुता न होई

दो० माता सों यह कहि चले, मुनि बनको सुखपाइ ।
भये अम्बिका के तनय, धृतराष्ट्रक तन आइ ॥

भे अम्बा के पाण्डुकुमारा ❀ बंश बिभूषण जग प्रतिपारा
दासी योनि बिदुर अवतारा ❀ विष्णुभक्त अरु परम उदारा
प्रथम अम्बिका के सुत भयऊ ❀ अन्ध जानिकै राज्य न दयऊ
भीषम बाहुलीक मत कीन्हा ❀ अम्बासुतहि राज्य नहिं दीन्हा
पाण्डुहि सिंहासन बैठायो ❀ तिलक कियो शिर छत्र धरायो
राज्ययोग पुनि राजकुमारा ❀ नाहिंन भ्रात जात अधिकारा
यहिप्रकार हरि कहि समुझावा ❀ द्रुपद नरेश सुनत सुख पावा
सुनि बलदेव कही यह बानी ❀ सुनहु बात यह शारँगपानी
भीषम द्रोण करण धनुधारी ❀ दुर्योधन के आज्ञाकारी
बिना युद्ध देइहि महि नाहीं ❀ जीति को सकै कृष्ण उन पाहीं
करण समान बली संसारा ❀ नाहिंन प्रकट कीन करतारा
हम अपने मन में करि बूझा ❀ को हरि करिहि करणते जूझा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनतहि बचन नयन रतनारे ❀ भये क्रोध नहिं रहत सँभारे
दो० बोले हरि बलदेव ते, भ्राता करहि बिचार ।
धर्मराज के अंशको, कौन छँड़ावनहार ॥
करौं नाशकौरवसकल, जो न देइ नृप अंश ।
हतौं द्रोण भीषम करण, बाहुलीक युत बंश ॥
तदपि बली कुरु युध संसारा ❀ मोते रण नहिं तासु उबारा
चक्रपाणि गहि मस्तक फारौं ❀ राज युधिष्ठिर को बैठारौं
यह करतूति न करि दिखरावौं ❀ नहिं बसुदेव को तनय कहावौं
मिटै न अंश धर्म नृप केरा ❀ गावै अयश जगत सब मेरा
का बल देखि सुनौ बलभाई ❀ करत करण की आपु बड़ाई
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ नहिं त्रिभुवन इनकी समताई
अतिहठ हनूमान ते कीन्हा ❀ सकै न जीति सखा करिलीन्हा
है किरात गिरि पर रणकीता ❀ बनोबास जिन शंकर जीता
असुर सेवन्त कवच बलवाना ❀ जाके रण सुरपति भय माना
सो अर्जुन पलमहँ संहास्यो ❀ इन्द्रहि इन्द्रासन बैठास्यो
जिन बांधे शर सों सोपाना ❀ ऐरावत धरणी जिन आना
दो० बाणन कीन्ही बाट नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्ती सो पूजन कियो, सजल भई गन्धारि ॥
धनपति छांड़ो दण्ड लै, जीते सब भूपाल ।
पारथ सो बलवान जग, भयहु न कवने काल ॥
जब बिराटपुर कौरव घेरा ❀ बेढ़ी गाय अहीरन टेरा
भीषम द्रोण करण सब आये ❀ अर्जुन एक सबन बिचलाये
एक एक सब मिलिमिलि लरेऊ ❀ तब उन पारथ को का करेऊ
बाणन मारि सकल बिचलाये ❀ फेरी धेनु नगर फिरि लाये
देव दैत्य दानव बलभारी ❀ जहँ लगि रचे सृष्टि बिधि झारी
तीनों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ पारथ सों रण जय नहिं पावै
सहदेव दक्षिण की जय कीन्हा ❀ लङ्का दण्ड बिभीषण लीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नकुल बारुणी दिशि बलभारी ❀ जीत्यो सिन्धु तटी लघुझारी
भीमसेन सब पूरब ओरा ❀ निजभुजबल जीत्यो बरजोरा
यकचक नाग बकासुर मारा ❀ जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा
मारि हिडम्ब हिडम्बी ब्याही ❀ बन्धु को जीति सकै रणमाही
जिन मारो कीचक सौ भाई ❀ सकै बन्धु को अंश छड़ाई
धर्मराज सरि को संसारा ❀ तजेउ न धर्म सहेउ दुखभारा

दो० भीम पार्थ कीन्हों सकल, कौरवकुल संहार ।
धर्मराज के शत्रुको, मरतन लागी बार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० प्रश्न बहुरि कुरुबंशमणि, दीन्हीपदशिरनाइ ।
कहऋषि जनमेजयसुनौ, कथाश्रवणमनलाइ ॥

बलदिशि देखि बहुरिहरिबोले ❀ भ्राता सुनहु कहत मैं खोले
अनहित चहत धर्मसुत केरा ❀ जान्यहु परम शत्रु सो मेरा
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता ❀ रचिराख्यो यह कलह बिधाता
तुम कहँ धर्मराज प्रिय जैसे ❀ मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे
जो सात्यकी वीर बर होई ❀ मम संग्राम करै शठ सोई
है यह बात मतेकी भाई ❀ कुरु पाण्डव की प्रीति निकाई
कहि यह बचन बिदा पुनि भयऊ ❀ बल चलि नगर द्वारकै गयऊ
तब नृप कह्यउ सुनहु बनवारी ❀ कहेउ राम मत नीक बिचारी
करत युद्ध कटिहैं परिवारा ❀ मोकहँ जग कहिहै धिरकारा
जैहैं बन्धु बन्धु सन मारे ❀ कलह नीक नहिं मन्त्र हमारे
मिलै भूमि अरु मिटै लड़ाई ❀ सोई अब कीजै यदुराई
कहेउ विहँसि तब बालकन्हाई ❀ अरि पर दया परम कदराई
बैठि सबै सबको मत लीजै ❀ मिलै भूप महि सो अब कीजै
कहेउ नकुल यह मन्त्र हमारा ❀ सुनहु सकल मिलिकरहु बिचारा
सत्य बचन नृप सुनु हम पाहीं ❀ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीमसेन अर्जुन मन भायउ ❀ कहेउ बन्धु भल मन्त्र दिखायउ
द्रुपद बिराट कहे मत नीका ❀ तब बोलेउ यादव कुल टीका

दो० कही कृष्ण भूपाल ते, सुनिये मन्त्र हमार ।
बिनदलसों कछुबल नहीं, बिदित सकल संसार॥
जहँलग तुम्हरे अंशके, भूमिभूप भुवराइ ।
सजिनिजदलआवैंसकल, दीजै पत्र पठाइ॥

कह मुनि सुनहु बचन कुरुराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण मनलाई
सुनि हरिबचन नृपति मनभायो ❀ देश देश कहँ पत्र पठायो
पुनि हरि द्वारावती सिधायो ❀ द्रुपदसेन हित निजपुर आयो
सजि दल देश देशके राजा ❀ नृप बिराटपुर जुरो समाजा
नगर चँदेरी के भूपाला ❀ धृष्टकेतु आये तेहि काला
अक्षौहिणी चमू यक सङ्गा ❀ हय गज रथ पदचर बहुरङ्गा
सब कवची खड्गी धनुधारी ❀ सबै शूर महाबल भारी
उत्तर पुर बिराट नृप केरा ❀ कीन्हे धर्मराय कढ़ि डेरा
अक्षौहिणी धर्म नृप केरी ❀ भई नृपन की भीर घनेरी
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ अक्षौहिणी सङ्ग निज लाये
धृष्टद्युम्न पुत्र रण रंगी ❀ चौंसठि नृपति द्रुपद के संगी
दूसर नृपति शिखण्डी आये ❀ भीषमबधहित बिधि उपजाये
चारि बन्धु षट सुत दश नाती ❀ आयो अयुत द्रुपद के जाती
सबै महारथी बल भारी ❀ सन्नाही खड्गी धनुधारी

दो० शूरसेन आये तबै, लै निजसेन गँभीर ।
कवची खड्गी कुण्डली, धनुधारी सब बीर॥

जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ सेन सहित आये नृप तेऊ
अक्षौहिणी एक सँग लीन्हे ❀ धर्मराज हित रण मन दीन्हे
काशिराज की सेना आई ❀ अरु आये नृपगण समुदाई
बाहर निकसि बिराट भुवारा ❀ उतरे शंख सहित परिवारा
अक्षौहिणी संग निज लीन्हे ❀ डेरा धर्मराज ढिग कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गजरथ औ असवार पदाता ❀ अक्षौहिणी जुरेउ दल साता
घटोत्कच निज साथ सिधायो ❀ पांच कोटि राक्षस सँग लायो
भूप पञ्चनद के जे बासी ❀ आये सेन सहित बलरासी
शृङ्गी सिन्धु कक्ष के राई ❀ आये सकल समेत सहाई
चालिस सहस जुरे तहँ राजा ❀ को बरणै नृप सेन समाजा

दो० बन्धुन युत बैठे सभा, धर्मराज के रूप ।
जुरे आइ त्यहि थल सबै, देश देश के भूप ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दो० जनमेजय मुनिते कह्यो, कहौ कथा मनलाइ ।
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तब कस कीन्ह उपाइ ॥

चरवरमुख कुरुपति सुधि पाई ❀ जोख्यो कटक युधिष्ठिर राई
तब नरेश मन शङ्का आई ❀ शकुनि कर्णकहँ लीन्ह बोलाई
द्रोणी और दुशासन आये ❀ बैठि सकल मिलि मन्त्र दृढ़ाये
दुर्योधन कहि श्रवण सुनाई ❀ दूत वचन मुखपहँ सुधि पाई
सुनत अजातशत्रु दल जोरा ❀ अक्षौहिणी सप्त घनघोरा
सुनहु सचिव कीजै केहि भांती ❀ भयबश परी नींद नहिं राती
सुनि यह उतर करण तब दीन्हा ❀ नृप तुम शोच अकारथ कीन्हा
पञ्च बन्धु सात्यकि यदुराई ❀ अरु नरेश सब शत्रु सहाई
द्रुपद बिराट सेन सजि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै

दो० यम कुबेर वरुणेन्द्र मैं, जीति सकौं दिगपाल ।
मानुष मोते को जुरै, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह बचन भूप सुख पायो ❀ साधु साधु करि हृदय लगायो
कर्ण समान धर्म व्रतधारी ❀ नहिं त्रिभुवन हमार हितकारी
तन मन बचन न जानै आना ❀ मम कारज नहिं दुर्लभ प्राना
मिलै न हितदायक जग तोसे ❀ रहत सदा मैं करण भरोसे
जा दिन युद्ध परै कठिनाई ❀ मित्र मित्रसुत करहिं सहाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डव निधनकरण के लायक ❀ बन्धु सरिस मेरे हितदायक
जब यहि भांति प्रशंस्यो ताहीं ❀ बोल्यो करि बिचार मनमाहीं
दो० कियो रङ्क ते राउ तुम, राखत मानहमार।
तिलतिलतनकटिकटिगिरहि, ताकेप्रतिउपकार॥
स्वामिकाज लगि शीश समर्प्यो ❀ जुरे कालरण ताहि न डर्प्यो
जुरे युद्ध करणी नृप मेरी ❀ देख्यो कहौं कहा बहुतेरी
करिअतिक्रोध शिलीमुखजोरों ❀ शरसागर पाण्डवदल बोरों
भूप न करिय शोक कछु जीमा ❀ सकैं जीति नहिं अर्जुन भीमा
रणमहँ बांधि युधिष्ठिर राई ❀ जयति पत्र देहौं लिखवाई
मेरे बल समान नहिं पारथ ❀ सकै न जीति थकै पुरुषारथ
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो ❀ तीक्षण बचन बदनते काढ़ो
पारथ की सरि भट संसारा ❀ भयो जगत नहिं ह्वोनेउहारा
दो० कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार।
पारथ शर अतिकठिन है, सहै युद्ध को भार॥
सुनहु भूप अब कथा पुरानी ❀ पार्थ चरित मैं कहब बखानी
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई ❀ सो प्रसंग नृप सुनु चितलाई
जब बिराट गणनाथ छिनावा ❀ हारि समर नृप कानन आवा
मिले पिता नृप यमुना तीरा ❀ देखि युगल दृग भयो सनीरा
गहिपद नृप प्रणाम तब कीन्हेउ ❀ होहुअभय मुनिआशिषदीन्हेउ
भरद्वाज अरु द्रुपद मिताई ❀ अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई
द्रोण द्रुपद खेलैं यक सङ्गा ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति अभङ्गा
कथा समस्त द्रुपद जब कह्यऊ ❀ भये क्रोध सुनि द्रोण न सह्यऊ
दो० कहेउ द्रोण सुनु पै द्रुपद, बधि बिराटगण आजु।
सकल देश पञ्चाल को, तुमहिं करावों राजु॥
बधि बिराट तोहिं राज करावों ❀ द्रोण नाम तब बिप्र कहावों
हतौं शत्रु मैं एकै बाना ❀ तौ म्वहिं परशुराम की आना
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ ते अधमूल परहिं गे झारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस कहि लीन्ह शरासनबाना ❀ द्रुपद संग लै कीन्ह पयाना
कहेउ भूप यह चलती बारा ❀ करौं निधन जो शत्रु हमारा
आधो राज बिप्र सुनु तोरा ❀ पुनि मानब भरि जन्म निहोरा
असकहिनगरनिकटचलिआये ❀ पाणि शिलीमुख धनुष चढ़ाये
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये ❀ ब्रह्म अस्त्र ते द्रोण जराये
द्रुपदहि सिंहासन बैठारा ❀ काढ़ेउ तिलक छत्र शिरधारा
द्वादश वर्ष द्रोण सुनु राई ❀ बसे कम्पिला सुख अधिकाई
हमरे हेतु धेनु मुनि यांची ❀ दयो नृपति करि बुद्धि पिशाची
मित्र जानिकर शाप न दीन्हा ❀ करेउन निधननगरतजिदीन्हा

दो० गजपुरको तब द्रोणमुनि, कीन्हो तुरत पयान ।
पहुँचे बासर सात महँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० गेंद खेल खेलत सबै, जुरे बालकन साथ ।
तुम फेंकेउ तब रोंकेऊ, भीम ओड़िकै हाथ ॥

छांड़ेउ गेंद कूप में गयऊ ❀ तुमसबमिलि बिस्मयबशभयऊ
ताही समय द्रोण तहँ आयेउ ❀ बालक रुदत देखि चुपकायेउ
सींकधनुष शर द्रोण सँधानी ❀ गेंद काढ़ि दीन्हे तू आनी
लिये तुरत भीषम पहँ आये ❀ सकल चरित बालकन सुनाये
देखि पितामह मन अनुमानेउ ❀ आये द्रोण सत्य जिय जानेउ
चलिकै मिले गङ्गसुत आई ❀ सभा मध्य लै गयो लेवाई
अर्घपाद्य सिंहासन दीन्हा ❀ चरण धोय चरणोदक लीन्हा
लक्ष धेनु पुनि दीन्ह बिआऊ ❀ दीन्हेउ बहुरि पञ्चशत गांऊ

दो० जोरिपाणि कीन्ही विनय, भीषमपद शिरनाय ।
बालक सौंपे बोलि सब, कीजै निपुण पढ़ाय ॥

अस्त्रसिखाय निपुणजब कीन्हा ❀ तुमसबमिलि गुरुदक्षिण दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ ❀ सहस एक दश संयुत गाऊ
पद गहि बचन कह्यो यह सांचो ❀ आयसु करा चहौ जो यांचो
कह अर्जुन आयसु जो दीजै ❀ आज्ञा होइ नाथ सो कीजै
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा ❀ कीजै सफल मनोरथ मोरा
द्रुपद मित्र कीन्हो अपमाना ❀ ताते मांगत हौं यह दाना
बांधि चरण तर दाबौ आई ❀ चुकेउ तात अभिमत मैं पाई
कुरु पाण्डव की मिली सहाई ❀ घेर्‍यो नगर कम्पिला गाई
सुनेउ द्रुपद अरि सेना आई ❀ निकरेउ तुरत निशान बजाई

दो० चारिचमू है मिलिगईं, भयो घोर संग्राम।
हयगजरथ लाखन परे, सुभट कटे बहु नाम॥

द्रुपद कर्ण ते सरस लड़ाई ❀ महा युद्ध कीन्हेउ प्रभुताई
शोणित बाण द्रुपद उरलागा ❀ क्रोध अनल उर अन्तरजागा
हन्यो कर्ण के चारिउ घोरा ❀ असि निकारि सारथि शिरफोरा
बिरथ देखि तब गे कुरुनायक ❀ धनुष तानि छांड़े बहुशायक
देखत युद्ध द्रुपद शर छांड़त ❀ करते धनुष भूप तब डारत
करि अतिक्रोध बिशिख बहुत्याग्यो ❀ भई बिकल सेना सब भाग्यो
भीमसेन लज्जा जिय आयो ❀ अर्जुन ते यह बचन सुनायो
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना ❀ अब कर गुरुहित पन्थ मशाना
भा पारथ उर क्रोध कराला ❀ रिसबश भये बिलोचनलाला
अर्जुन कहन सूतते लागे ❀ लै चलु हांकि बेगि रथ आगे
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हा
गांडिव धनुष बहुरि टंकोरा ❀ चौदह भुवन भयो रवघोरा
पुनि पारथ दीन्ह्यो शर जाला ❀ लीन्हबांधि रण द्रुपद बिहाला
पकरि द्रोण चरणन पर डारा ❀ मित्र जानि मुनि नाहिंन मारा
दीन्ह छड़ाय द्रोण पांचाला ❀ सुनु अर्जुन करणी भूपाला

दो० शरसों बारिधि बांधि जिन, जीतेउ पवनकुमार।
भयो न होनेहार कोउ, अर्जुन सरि संसार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पारथ कीन्ह अमानुष करणी ❀ चितदै सुनहु कहब हम बरणी
इन्द्रकील गिरि पर तपहेतू ❀ गयो मन्त्र साधन बृषकेतू
तेहिथल धनुषबाण धरिदीन्हा ❀ करि आचमन देहशुचि कीन्हा
धरि उर ध्यान पार्थ तपसाधत ❀ करि व्रतमौन शम्भु आराधत
एक चरण द्वै भुजा उठाये ❀ शिवशिव रटत परम हितलाये
तप साधत बीते बहुकाला ❀ भयउ चरित यक सुनहु भुवाला
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा ❀ तासु बन्धु अतिशय बरिआरा
पूर्व के बैर रोष बढ़ि आवा ❀ धरि बराह तन मारनधावा
जब पारथ समीप नियराना ❀ सो चरित्र शंकर सब जाना
गङ्गाधर पिनाकधर आये ❀ गणगणपति सब संग लगाये

दो० धरि किरात तन हर चले, लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरिमित्र की, करन असुर संहार ॥

अर्जुन ढिग शूकर नियराना ❀ शिव शर जोरि शरासन ताना
करि अतिक्रोधअधमतम मारा ❀ आधो निकसि रहो शरपारा
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा ❀ चला असुर मारन करि शोरा
परेउ श्रवण शूकर बर बोला ❀ सुनि रवहग किरीटशिरखोला
आवत यक बराह अतितीछे ❀ आयुध धृत किरातगण पीछे
होइ सरोष लीन्हों तब चापा ❀ शरसंधान कीन्ह करि दापा
यहि बिधि अर्जुन बाण प्रहारेउ ❀ निज प्रवेश हरशरहि निकारेउ
कह शङ्कर यह मोर शिकारा ❀ मारेउ अधम न कीन्ह बिचारा

दो० अरुणनयन भृकुटी कुटिल, बोले पार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुव बात नहिं, रे रे अधम किरात॥

नीचजाति अति अधम किराता ❀ मूरख समुझि न बोलत बाता
मोते बचन कहत कटुबानी ❀ अब तुव मृत्यु आइ नियरानी
अतिबलहीन न बल तनमाहीं ❀ मानत अधम निहोरा नाहीं
यहसुनि गण क्रोधित होइ धाये ❀ बाणन मारे पार्थ बिचलाये
षणमुख द्विरद बदन नहिं जीते ❀ चले पराइ सकल भयभीते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिकलसकलतनशुण्डिहलावत ❋ भागतशिवदिशिबचनसुनावत
भागे सब किरातगण झारी ❋ बिन किरातपति भगे न हारी
सुनियहबचन शम्भुहँसिदीन्हा ❋ गहि पिनाकशायक करलीन्हा
धूरजटी बहु बाण पँवारे ❋ अर्जुन काटि काटि महिडारे
पारथ शर काटैं शूलीधर ❋ भयो युद्ध अति बिकल परस्पर
बिजय बृहन्नल के संग्रामा ❋ लरत न करत शम्भु बिश्रामा
तब चरित्र गौरीपति कीन्हों ❋ अक्षयतूण के शर हरि लीन्हों
गांडिवधनुष बिजय तब लीन्हा ❋ करि अतिरोष प्रहारण कीन्हा
गङ्गाधर कीन्हेउ हुंकारा ❋ फाटो धनुष भयो दुइ फारा

दो० तबै किरीटी क्रोध करि, कीन्हेउ खड्ग प्रहार ।
तिलभरिकट्योनशम्भुतन, बिफलभयोअसिधार॥

अर्जुन मही डारि तरवारी ❋ मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी
लरिबिलगाहिं बहुरिपुनिलरहीं ❋ नानाभांति दावँ दोउ करहीं
अर्जुन पद कहँ हाथ चलावा ❋ चहत उमापति भूमि गिरावा
चरण परस कीन्हें जब हाथा ❋ बरं ब्रूहि बोल्यो गिरिनाथा
अबमोहिं अतिप्रसन्नजियजानू ❋ मांगु तात अभिमत बरदानू
असकहि शिव निजरूप देखावा ❋ पञ्चबदन शशिअर्द्ध सोहावा
जटा कलाप शीश पुनि गङ्गा ❋ चढ़ी सकल तन भस्म अभङ्गा
हृदय कपाल माल बिकराला ❋ उठत त्रिपञ्च नयनमहँ ज्वाला
भुजंग हैं भूषण दिग्पट धारी ❋ अर्द्ध अङ्ग गिरिराजकुमारी
अभय एक कर यक बरदाना ❋ एक पाणिमहँ शूल महाना

दो० एक पाणि डमरू लिये, नीलकण्ठ भगवान ।
बार बार कह पार्थ ते, मांगु मांगु बरदान ॥

जीते बिना युद्ध गिरिजापति ❋ मैं बरदान न तुमते मांगति
बिन जीते रण मौलि मयङ्का ❋ बर मांगों बड़ कुलहि कलङ्का
प्रथमहिं बिजयपत्र लिखिदीजै ❋ पुनि बर देहु कृपा प्रभु कीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vijay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुव पद सप्तकोटि हरि आना ❀ ऐसे नहिं मांगौं बरदाना
हम हारे सुत संग तुम्हारे ❀ होइहौ बिजय प्रसाद हमारे
सुनि यह बचन पार्थ अनुरागे ❀ अस्तुति करन जोरि कर लागे
जय गिरिजापति जय कामारी ❀ चतुर बदन सेवित भुजचारी
शारद शेष चरित तुव गावत ❀ निगम नेति कहि पार न पावत
बारहिंबार शक्रसुत भाखा ❀ निजप्रण टारि मोर प्रण राखा
अस कहि परे चरण अकुलाई ❀ पाहि पाहि प्रभु जनसुखदाई
गङ्गाधर त्रिशूलधर शंकर ❀ दुष्टदलन पालन निज किंकर
नीलकण्ठ सितकण्ठ शम्भु हर ❀ महाकाल कंकाल कृपाकर

दो० शृंगी शूली धूरजटि, कुण्डलीश त्रिपुरारि ।
वृषाकपर्दी मानहर, मृत्युञ्जय कामारि ॥

जयति सदाशिव सबगुणरासी ❀ काशीपति कैलास निवासी
सुनि यह गिरा मगन हर भयऊ ❀ पारथ को याबिधि बर दयऊ
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ नाश होय सब शत्रु तुम्हारे
होइहैं सुफल सकल जे काजू ❀ मिलिहै तुमहिं अकण्टक राजू
यह कहि हर सब अस्त्र सिखायो ❀ पुनि पशुपतिको भेद बतायो
परै पार्थ जब कठिन मशाना ❀ तादिन शर कीजै संधाना
छूटत प्रलय शत्रु दल होई ❀ त्रिभुवन रोंकिसकै नहिं कोई
यहि विधि अर्जुन को बरदयऊ ❀ अन्तर्द्धान उमापति भयऊ
यक बलिष्ठ पुनि शिव बरदाना ❀ कहहु भूप को पार्थ समाना
कहेउ बचन इमि द्रोण कुमारा ❀ समुझाये बहुभांति भुवारा

दो० गुरुबांधवमुख बचन सुनि, मौनभयो महिपाल ।
पुनि शकुनी बोलेउ बहुरि, सबलसिंह उत्ताल ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० मन्त्र हमार बिचारकरि, सुनुमणिसमुझिभुवार ।
सबल शत्रु तुव धर्मसुत, जोरेउ सेन अपार ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by eGangotri Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जोरेउ धर्मराज निज पच्छी ❋ तुम दलहीन बात नहिं अच्छी
अबलग भूप चेत नहिं कीन्हा ❋ देश काल कछु परत न चीन्हा
पठवो पत्र करहु चित चेता ❋ आवहिं नृप सब सेन समेता
तुम जानत हौ भीम सुभाऊ ❋ अवसर परे न चूकत दांऊ
अरि दलयुक्त आपु दल हीना ❋ करि बैठे कछु कर्म अलीना
सुनहु सकल मैं कहत पुकारे ❋ फिरि सँभरिहि नहिं नाथ सँभारे
बोलहु सकल भूप अब राई ❋ अब बिलम्ब महँ कौन उपाई
बरपर चढ़े खेल महँ भीमा ❋ डारउ अवनि क्रोधकरि जीमा
राखत सदा बैर जिय माने ❋ लाखे प्रताप तुव रहत डराने
जो बलहीन भीम करि पावै ❋ भूप तुमहिं यमलोक पठावै

दो० निजकरणी नरपाल तुम, देखहु चितहि बिचारि।
कसेहु जँजीरनसकलतन, दियो गङ्गमहँ डारि॥

सो सुधि भूप हिये महँ भूली ❋ अजहूं उठत हिये महँ शूली
पठवहु पत्र न करहु बिलम्बा ❋ क्षितिपति आवैं सहित कुटुम्बा
है जेहिके जितनी नृप सामा ❋ आवै साजि करन संग्रामा
खोलि पत्र सबको लिखिदीजै ❋ अब कछु भूप बिलम्ब न कीजै
सुनत नरेश परम सुख पाये ❋ देश देश कहँ पत्र पठाये
श्रीपत्रिका दीन्ह सहिदानी ❋ चलेउ राज कर आयसु मानी
सुनिकै निदेश पुहुमिपति राजा ❋ आये सकल समेत समाजा
आये मगहराज भगदत्ता ❋ अमी लक्ष जाके मदमत्ता
रथनपती अरु बाजि अनेका ❋ अक्षौहिणी संग दल एका
गदा चर्म असि तूण सोहाये ❋ महापिनाक रूप दरशाये
रङ्ग रङ्ग के सङ्ग पताका ❋ अतिउतङ्ग जनु चुम्बतिनाका
बाजत बाजन बिबिध प्रकारा ❋ पणव धेनुमुख शंख नगारा

दो० ऐरावत गज को सुत, दीन्हो तेहि सुरपाल।
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह बिशाल कराल॥

चारिउ चरण स्रवत मद धारा ❋ जनु झरना जल बहत पहारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दन्त बिशाल श्वेत सुर भङ्गा ❋ मानहुँ रजत शैलके शृङ्गा
कञ्चन मणिमय रुचिर अँबारी ❋ गजमुक्ता झालरि शुभकारी
तापर मगहराज असवारी ❋ देखि स्वरूप शत्रु भयकारी
निन्नानबे संग लै राजा ❋ चलेउ साजि निज सेन समाजा
युद्धहेत सब साज बनाये ❋ यहि प्रकार गजपुरकहँ आये
पुनि आयो कलिङ्ग दल साजी ❋ अगणितरथ पदाति अरु बाजी
सौ बान्धव अतिशय बलभारे ❋ द्विरद लक्ष बहु सँग मतवारे
द्वादश नृपति संग बलदाई ❋ सेन बिचित्र बरणि नहिं जाई
टोप सनाह पाणि दस्ताना ❋ असी लक्ष लीन्हे धनुबाना

दो० पटह भेरि करि शंखधुनि, घुर्मत लाल निशान ।
आयोसजिगजपुर कटक, नृपकलिङ्गबलवान ॥

नगर हस्तिनापुरी समीपा ❋ निजनिजरुचिकृतशिबिरमहीपा
आयो यमनराज त्यहि काला ❋ एकबिंश लीन्हे महिपाला
महाबली सब तेज तुरंगा ❋ अक्षौहिणी अनी यक संगा
बड़े धनुष अरु कवच बिशाला ❋ नील बसन तन बेष कराला
हैं सब एक जाति के काछी ❋ अस्त्र शस्त्र धृत सेना आछी
नील रङ्ग के श्याम पताके ❋ पवन लगे निर्तत नभ बांके
बाजत बिपुल अरंबी बाजा ❋ चढ़ि आयो लै सेन समाजा

दो० अक्षौहिणी कलिङ्ग की, परी गङ्ग के तीर ।
तासुनिकट कीन्हे शिबिर, यमनाधिपरणधीर ॥

सुनि आयो तहँ सुरथकुमारा ❋ सिन्धु नरेश बीर बरिआरा
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी ❋ नाम जयद्रथ शिव बरदानी
त्रिभुवनबिदित जान सब कोई ❋ नृप दुर्योधन कर बहनोई
गजरथ बाजि पदाति अपारा ❋ बाजत गोमुख शंख नगारा
जाके दलहि ध्वजा पँचरङ्गा ❋ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा
कुण्डि बर्म तूणी धनु बाणा ❋ धरे बीर सब चर्म कृपाणा
हस्ती रथ कोउ तुरँग सवारी ❋ सप्त सहस्र भूप बल भारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगर हस्तिनापुर चलि आये ❀ कियेशिबिर निजनिजमनभाये
दो० निजनिजरुचि डेरा करत, प्रमुदित हिये मुवार ।
दुर्योधन आदर किये, किये बिबिधसतकार ॥
सजि सजि सेन नरेश अनेका ❀ आये शूर एक ते एका
यहि प्रकार आये सब भूपा ❀ कीन्हशिबिरसबनिजअनुरूपा
प्रथम दूत कुरुखेत पठाये ❀ सुनिसुधि दनुजराजचलिआये
नाम अलम्बुष बीर अभङ्गा ❀ सात कोटि दानवदल सङ्गा
नाना बाहन आयुध धारी ❀ मेचक बरण घटा जनु कारी
नाना बिधि माया सब जाने ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि माने
दानवराज द्विरद असवारी ❀ गर्जत पुनिपुनि अतिबल भारी
पितुकरमधुज बिंदेत जग जासू ❀ बलिसुत बानि पितामह तासू
निजभुजबल सुरगण सबजीते ❀ रहत सुरेश जासु भयभीते
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई ❀ दल न होइ जनु पावस आई
श्यामघटा सम निशिचर धारी ❀ बिज्जुछटा असिपाणि उधारी
सघन घटा बिच पांति बलाकी ❀ गर्जत रव सोहात अतिबांकी
दो० गजघण्टा भेरी पटह, गरजत अति मनुजाद ।
नगर हस्तिनापुरनिकट, भयो भयंकर नाद ॥
कौतुक हेत बिबुध गण आये ❀ देखनको बिमान नभ छाये
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई ❀ बाहर मिलेउ नगर के आई
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा ❀ कुशल पूछि मन संशय मेटा
करि सन्मान अलम्बुष केरा ❀ पुनि महीप करवायो डेरा
सभामध्य फिरि गयउ कुमारा ❀ भइ बड़ि भीर राज्य दरबारा
ताही समय शल्य नृप आये ❀ अक्षौहिणी संग यक लाये
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई ❀ कीन्ह मन्त्र सब सचिव बोलाई
बोलेउ शकुनि भरतकुल टीका ❀ मोते सुनिय मन्त्र यह नीका
दो० मिलिय सपदि आगे निसरि, करिबहुआदरभाय ।
देइ निमन्त्रण युद्ध को, शल्यलेब अपनाय ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब मिलि यहै मन्त्र दृढ़ कीन्हा ❀ आगे चलि कौरवपति लीन्हा
मिलतउभयअभिबादनकीन्ह्यो ❀ तब कुरुनाथ निमन्त्रण दीन्ह्यो
मातुल चलहु हमारे धामा ❀ आये लेन हेत संग्रामा
उन के कृष्ण सहायक ऐहैं ❀ ताकी सरि हम काह लगैहैं
मातुल सुनु प्रसाद बिन तोरे ❀ होइँ न सकल मनोरथ मोरे
सुनिकै शल्य कही मृदुबानी ❀ सुनहु नरेश परम सज्ञानी
धर्मराज नहिं मोहिं बोलाये ❀ हम सुधि पाइ आपुते आये
तुमचलि प्रथम निमन्त्रणदीन्हा ❀ मोहिं महीप अपन करिलीन्हा
हम छांड़ो भैनेनकर संगा ❀ सबते लरब भूप तुव संगा

दो० भीम पार्थ सहदेव पुनि, नकुल सबनकर मोह।
त्यागे तुम्हरे हेत नृप, धर्मराज ते छोह॥

तजि नाते को नेह बिचारा ❀ अब दीन्हे हम संग तुम्हारा
अब नृप धर्मराज पहँ जाइब ❀ आतुरभेंटि सपदि पुनि आइब
यहां राखि सब सेन समाजा ❀ आवहु देखि युधिष्ठिर राजा
गजपुर राखि सेन सब बांकी ❀ चला भूप चढ़ि यान यकाकी
घुरघुरात रथ चक्र कराला ❀ मृदुरव करत किंकिणी जाला
श्वेत संग फहरात पताके ❀ पवन लगे निर्तत नभ बांके
मिले न बर्ष त्रयोदश बीती ❀ दरश लालसा की अतिप्रीती
पुलकितगात नयन जलछाये ❀ यहि प्रकार बिराटपुर आये

दो० दरश लालसा उरअधिक, को करिसकै बखान।
यहिबिधिआयोशल्यनृप, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
षष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

धर्मनरेश सभा सुधि पाई ❀ द्वारपाल इमि जाइ जनाई
शल्य आगमन सुनि सुख पाये ❀ लेन हेत नृप भीम पठाये
द्वार जाय अभिवादन कीन्हों ❀ मातुलनिरखिआशिषहिदीन्हों
रथ तजि चले प्रथम अनुरागे ❀ भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुलकित गात नयनजल छाये ❀ कुशल पूछि तन ताप बुझाये
युगल प्रसन्न भये मिल जीमा ❀ आये सभा शल्य अरु भीमा
आवत निकट धर्मसुत देखी ❀ मिले प्रेमयुत हर्ष बिशेखी
कुशल पूछि तन आनँद छाये ❀ पुलकित नयन सजल ह्वै आये
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ ❀ मिलेउ बहोरि सजलदृग तेऊ
तेहि अवसर पारथ तहँ आये ❀ मातुल देखि चषन जल छाये
कीन्ह प्रणाम निकटभये ठाढ़े ❀ मिले बहुरि अतिआनँद बाढ़े
अभिबादन तब करत नराटा ❀ मिले पार्थसुत द्रुपद बिराटा
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा ❀ भेंटत पुनि पुनि करत जुहारा

दो० सभामध्य नृप शल्य कहँ, तब लैगयो भुवार।
बहुप्रकार आदर कियो, खान पान अधिकार॥

शल्य नरेश कुशल बहु भांती ❀ पूछत नृपहिं जुड़ावत छाती
अहहतात बिधिगति बलवाना ❀ बनबासि सहेउ दुसहदुखआना
तेरह बर्ष बिपिन महँ बीती ❀ कुरुनन्दन यह कीन्ह अनीती
तात कीन्ह छल सभा बुलाई ❀ कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाई
वहअतिकीन्ह शकुन छलकारी ❀ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी
जबते तुम कहँ देश छुड़ावा ❀ तबते हम दारुण दुखपावा
तुम्हरे बिरह दिवस अरु राती ❀ तलफतरह्यों जरत नित छाती
गत तेरह संबत सुधि पाई ❀ तुम्हैं देखि गये नयन जुड़ाई

दो० आयों तुम्हरे मिलनको, छल कीन्हे कुरुनाथ।
दयो निमन्त्रण युद्धको, करिलीन्हो निजहाथ॥

या महँ धर्म अधर्म बिचारी ❀ कहौ करौं सिखमानि तुम्हारी
वहां गये बिन धर्म नशाई ❀ छांड़त तुमहिं परम कठिनाई
तुमते नहिं दूसर संसारा ❀ जाननहार धर्म ब्यवहारा
तज्यो न धर्म सकल तजि दीन्हा ❀ त्यागेउ ना बचनै मग लीन्हा
तुम भगिनी सुत पांचो भाई ❀ मोरे प्राणन ते अधिकाई
कहौ बिचारि करौं अब सोई ❀ जाते धर्म लोप नहिं होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनतहि धर्मराज हँसि बोले ❀ मातुल सुनहु कहत मैं खोले
क्षत्रीधर्म कठिन नृप एहा ❀ तात त्यागहु तुम सन्देहा

दो० दियो निमन्त्रणयुद्धको, उन लीन्हों अपनाय ।
कीन्हें और बिचार अब, क्षत्रीधर्म नशाय ॥

तुम अब दुर्योधन के ओका ❀ मातुल जाउ तज्यो सब शोका
तुम कौरव की कीन्ह गोहारी ❀ अर्जुन कर्ण बैर है भारी
समरभूमि दोनों बलधामा ❀ जब जुरि करहिं कठिन संग्रामा
आपु कर्ण की निन्दा कीजै ❀ मांगत हौं मांगे यह दीजै
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई ❀ कारण सकल कहौ समुझाई
निन्दा किये कर्ण की राजा ❀ यामें सुफल बनत तुव काजा
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा ❀ ते उत्तर मातुल कहँ दीन्हा
निज निन्दा सुनि शत्रु प्रशंशा ❀ घटिहै शल्य कर्ण को अंशा

दो० निजहीनी अरु शत्रुकी, सुनत बड़ाई कान ।
रिसबशह्वैकै कर्ण तब, सूधे लगिहै बान ॥

यह कहि धर्मराज समुझाये ❀ एवमस्तु कहि शल्य सिधाये
बाहर नगर भीम पहुँचाये ❀ बिदाभये पुनि शीश नवाये
दै अशीश नृप शल्य सुजाना ❀ पुनि मतङ्गपुर गत बलवाना
दुर्योधन आदर करिलीन्हा ❀ प्रीतिसहित अभिबादन कीन्हा
उत्तम सदन शिबिर करवाये ❀ सुनहु भूप अब चरित सुहाये
नगर कौशिली को महिपाला ❀ बृहदबली आयो तिहिकाला
अतिदल चलत धरा पुनि हाली ❀ सूर्यबंश की धरे प्रणाली
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठायो ❀ आदर ते सब शिबिर करायो

दो० बहु प्रकार सतकार करि, खानपान सन्मान ।
मिलतशिबिरनितप्रतिअधिक, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० हरिपद पङ्कजध्यानधरि, ऋषयनयनजलपूरि।
कहमुनिजनमेजयसुनहु, कथाअमियरसमूरि॥

नगर अवन्ती ते चलिआयो ❀ भूप बिन्द अनुबिन्द सुहायो
लीन्हें संग चमू चतुरङ्गा ❀ रथ पदाति गज बाजि अभङ्गा
युधामन्यु अरु बीर तमोजा ❀ आये सेन सहित काम्बोजा
राजा राजपुत्र बलवाना ❀ आये अमितकटक बिधिनाना
सेनासहित उलूक नरेशा ❀ पुनि गजपुरमहँ कीन्ह प्रवेशा
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा ❀ साठि सहस्र छत्रधर राजा
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये ❀ भ्राता सुनहु कृष्ण नहिं आये
ताते तुम लै आवहु जाई ❀ दरश पाइ गत बिपति बुझाई
अर्जुन नृप की आज्ञा पाई ❀ चले तुरन्त चरण शिरनाई
बेगवन्त जोते रथ बाजी ❀ लायहु तुरत सारथी साजी
चले किरीटी अति हरषाई ❀ चले जोवत मग बार न लाई
सतयें दिवस गोमती तीरा ❀ उतरि अन्हाये निर्मल नीरा

दो० जलनिर्मलगम्भीरअति, बनज बिपुल बहुरङ्ग।
मधुप मत्त गुञ्जत भ्रमत, कलरवकरतबिहङ्ग॥

आगे चलि द्वारावति देखी ❀ मनमें भवन बिचित्र बिशेखी
कनकरचितमणिखचितदेवाला ❀ अष्टद्वार पुर त्राण बिशाला
अतिगँभीर जलयुत षदवाना ❀ उठत तरङ्ग पयोधि समाना
श्वेत रक्त मणि हरित बँधावा ❀ परम अनुप रुचि रूप सुहावा
दक्षिण ओर समुद्र बिराजा ❀ पश्चिमदिशि रैवत गिरिराजा
कोटिन पुर महँ उड़त पतङ्गा ❀ हंस मयूर कपोत बिहङ्गा
निर्त्तत कोटिन केतु पताका ❀ अति उतङ्ग जनु चुम्बत नाका
कोटिन गज कुन्तल लै आवैं ❀ सरित घाट महँ नीर पियावैं
करत बिहार द्विरद मतवारे ❀ गिरिसम बपुष जूल ते कारे
कोटिन बाज साहनी आवैं ❀ नीर पियाइ नदी अन्हवावैं

दो० अतिउतङ्ग पुरद्वार शुभ, मणिमय मञ्जु केवार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोटिन दरबानी खड़े, लिये हाथ हथियार ॥
कोटिन मणिमय रुचिर कँगूरा ❀ अतिउतङ्ग नभ परसत जूरा
जम्बूनद मणिगणयुत त्राना ❀ शोभित सुभग सुरेश समाना
रङ्ग रङ्ग रत्नन की भाशा ❀ रविकर परसत करत प्रकाशा
पुर शोभा कुन्तीसुत देखत ❀ जीवनजन्म सुफलकरि लेखत
यहिबिधि पवँरिद्वार चलिआये ❀ दरबानिन लखि शीश नवाये
कहे बचन सुधि करत तुम्हारी ❀ संध्या समय रहे बनवारी
रुक्मिणि मन्दिर ते कढ़िआई ❀ सात्यकिसों इमि बचन सुनाई
बीते युगल मास सुनु भाई ❀ अर्जुन की कछु सुधि नहिं पाई
ताते बेगि बिलम्ब न कीजै ❀ लोचन लाहु निरखिचलिलीजै
असकहि शयनभवनमनदीन्हा ❀ अर्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा
तेहि अवसर दुर्योधन आये ❀ शयन किये यदुनन्दन पाये
ताके हृदय गर्व नहिं थोरा ❀ बैठेउ जाइ शिरहने ओरा
गये पार्थ सोवत यदुनाथा ❀ ठाढ़भये सन्मुख करि माथा

दो० परसि चरण ठाढ़े भये, हरि पांयन की ओर।
हियेप्रीति अतिमन बिमल, श्रीसुरराजकिशोर ॥

ताही समय जक्रपति जागे ❀ देखेउ पारथ पांयन आगे
उठे सप्रेम देखि बनवारी ❀ मिलन हेतु दौ भुजा पसारी
अर्जुन गहे चरण लपटाई ❀ भुज गहि हरि लीन्हे उरलाई
कुशल प्रश्न पूछेउ बहुभांती ❀ पुनिपुनि मिलत जुड़ावत छाती
तेहि अवसर कुरुनन्दन आये ❀ अभिबादन कहि आप जनाये
यदुपति कुरुनाथहि पहिंचाना ❀ मिले बहुतबिधि करि सन्माना
गहि भुज लै समीप बैठाये ❀ पूछेहु नृप केहि कारण आये
हँसि बोले दुर्योधन राजा ❀ सुनहु कृष्ण आयहुँ जेहि काजा

दो० करौ सहाय हमार तुम, जो कीन्हो बहु बोध।
बहुत कहा तुमते कहैं, जानत बंश बिरोध ॥

ताते तजि अब पाण्डव सङ्गा ❀ तुम हरि होहु हमारे अङ्गा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्षत्री धर्म सुनहु यदुराई ❋ जाके भवन प्रथम जो जाई
सो ताही को होइ सहायक ❋ करहु बिचार होइ जो लायक
आयउँ भवन प्रथम मैं तुम्हरे ❋ हे हरि होहु सहायक हमरे
सुनि यदुपति बोले मुसुक्याई ❋ दल बल हीन युधिष्ठिरराई
निजआगम कह आपु बिशेखा ❋ हम प्रथमहिं पारथ को देखा
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❋ करहु बिचार बेगि सो कीजै
यह कहिकै हरि माया प्रेरी ❋ बरबस जाय तासु मति फेरी

दो० चारि लक्ष गोपालगण, बाहन अश्व समेत।
एकबार हम शस्त्र बिन, कहो भूप को लेत॥

होत प्रथम छोटे को ऊरा ❋ पाछे लेइ जेठ को पूरा
यह कहि बिहँसे शारँगपानी ❋ मुख देखत माया लपटानी
ज्ञानभङ्ग दुर्योधन भयऊ ❋ हरिमुखनिरखिबचनयहकह्यऊ
हे हरि नटवर बेष तुम्हारा ❋ नाचत गावत लै परदारा
गजपुर सजि आये सब राजा ❋ तिनमहँ कौन तुम्हारो काजा
ताते हरि सेना हम लीन्हेउ ❋ तुमकहँ हम अर्जुनको दीन्हेउ

दो० कह्यो किरीटी बिहँसि तब, सुनिये यादवराइ।
आपु हमारे पग धरिय, दल कोऊ लैजाइ॥

सुनि हरिगण गोपाल बोलाये ❋ मणिमयकुण्डल मुकुट सोहाये
मणिमय भूषण हार बिराजत ❋ जटितबसन तन शोभाछाजत
मणिमय कवच बड़े धनुधारी ❋ शोभित मनहुँ बरात सुधारी
कञ्चन मणिमय स्यन्दन झारी ❋ गजमुक्ता झालरि छबिभारी
सो दल दुर्योधन कहँ दीन्हा ❋ करिसनमान बिदा प्रभु कीन्हा
भयो प्रसन्न हिये महिपाला ❋ चलेउ संग लै गणगोपाला
गयो बहोरि जहां बलदेवा ❋ चरण परसि बिनयी बहुसेवा
अर्जुन साथ जात यदुनाथा ❋ चलहु संग म्वहिं करहु सनाथा
उन पाण्डवको कीन्ह सहारा ❋ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा

दो० भये युधिष्ठिर ओर हरि, सो जानत सब भेव।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनसा बाचा कर्मणा, मैं तुम्हार बलदेव ॥

असकहि परेउचरण कुरुनायक ❀ नाथ कृपाकरि होहु सहायक
राखत सदा भरोस तुम्हारा ❀ तुम बिन कौन मोर रखवारा
हलधर सुनेउ भूपकी बानी ❀ बोले बचन दीनअति जानी
हम इत हरि उत बात न नीकी ❀ सुनहु कहौं तुम्हरे हित हीकी
लेहु सेन सँग मन्त्र हमारा ❀ होइ सोइ जो लिख करतारा
असकहि लक्ष दीन सँग योधा ❀ बिदा कीन्ह बहुभांति प्रबोधा
दुर्योधन लै संग सिधाये ❀ कृतबर्मा के मन्दिर आये
देखत कृत नृप आसन दीन्हा ❀ बहुप्रकार ते आदर कीन्हा

दो० बैठारे आसन बिमल, करि बहुबिधि सतकार।
कुशलप्रश्न पूछत नृपहि, अतिहित बारहिंबार ॥

अहो भूप कछु आज्ञा दीजै ❀ करि अनुकम्प काज सोइ कीजै
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा ❀ तुव आगम मैं भयों सनाथा
सुनि दुर्योधन बचन सुनाये ❀ सुनहु भूप जेहि कारण आये
सो जानी सब बात तुम्हारी ❀ पाण्डव हमैं बैर है भारी
उनके साथ आपु बनवारी ❀ तुम नृप करहु सहाय हमारी
सो सुनि कृतवर्मा तब बोले ❀ धीर बीर अरु समर अडोले
भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा ❀ यह प्रण मैं निश्चयकरि कीन्हा
यह सुनिकै सेना हँकराई ❀ भयउ अरूढ़ निशान बजाई
लीन्हे साथ चमू चतुरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक नृप सङ्गा
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा ❀ करवायो तेहि शिबिर नरेशा
सेन बिचित्र देखि सुख माना ❀ जीते युद्ध शकुनि मन जाना
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे ❀ पुनि पुनि कुरुनन्दनपद बन्दे
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई ❀ बहु अनन्द नहिं हृदय समाई
यहां कृष्ण अर्जुन सँग लीन्हें ❀ अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हें
रुक्मिणि सतभामादिक नारी ❀ आईं सुनि अर्जुन कहँ झारी
बैठे पार्थ सहित बनवारी ❀ सतभामा तब चरण पखारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाम्बवती जल भाजन लाई ❋ पानदान लक्ष्मणा लै आई
रुक्मिणि अतरदान कर लीन्हें ❋ सतभामा भोजनहित कीन्हें
यहि प्रकार आठौ पटरानी ❋ अतिहितकरतकृष्णप्रियजानी

दो० हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मिणी पान।
सतभामादिक नारि सब, करत बिबिध सन्मान॥
कुशल प्रश्न पूछी सबन, अति हित बारम्बार।
हैं अभिमनु नीके तहां, सबके प्राण अधार॥

सो सुधि पाइ देवकी आई ❋ देखि युगलतन आनँद छाई
हरि अर्जुन उठि कीन्ह प्रणामा ❋ दीन्ह अशीश होइ मनकामा
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई ❋ बोली बचन नयन जल छाई
तुम बिन रहेउ हिये अति शोका ❋ तेरह बर्ष बादि अवलोका
सुनहु कृष्ण जो मन्त्र हमारा ❋ प्राणहु ते मोहिं अधिकपियारा
तुमहिंत्यागि कहिं ~~कौर~~ न जाना ❋ रक्षा तुम कीजै भगवाना
कहि अस बचन देवकी रानी ❋ अर्जुन कहँ सौंप्यो गहिपानी
हरि उठि अर्जुन बार न लाये ❋ बसुदेवहिके मँदिर चलि आये

दो० करि प्रणाम अर्जुन सहित, कहेउ कृष्ण सबभेव।
दै अशीश आनन्द सों, बिदा किये बसुदेव॥

निकरि पवँरि ते बाहर आयो ❋ तब श्रीहरि सात्यकी बुलायो
होहु तयार सेन सजि भाई ❋ हेरत बाट युधिष्ठिर राई
सुनि सात्यकि निजसेन हँकारी ❋ आयुध बांधि लीन्ह असवारी
दारुक नाम सारथी साजी ❋ स्यन्दनभानु जानु लखि लाजी
सुग्रीवादिक हय मचिआई ❋ भे अरूढ़ हरि शंख बजाई
भुज गहि अर्जुन संग चढ़ाये ❋ पवन बेग रथ हांकि चलाये
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❋ उठी धूरि छपि गयउ पतङ्गा
पारथ पूछत बिबिध कहानी ❋ कहत जात मग शारँगपानी

दो० पारथ पूछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शत्रुबिजयअरुमोरहित, सबलसिंह चौहान ॥

इति उद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृतेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कहेउ कृष्ण अब सुनु मत मोरा ❋ यामों है अर्जुन हित तोरा
होइहै सकलशत्रु की नासा ❋ मिलिहिराज्यतोहिंबिनहिंप्रयासा
जाके अंश मोर अवतारा ❋ पालत सृजत हरत संसारा
सुमिरण करत शक्ति तुम सोई ❋ पूरण सकल मनोरथ होई
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा ❋ जेहि प्रसाद सुरनाथ कहावा
बिधि कर्ता अरु हर संहर्ता ❋ जासु प्रसाद विष्णु जगभर्ता
पारथ करत तासु को ध्याना ❋ सब प्रकार होइहि कल्याना
सो जानहु सब मोर स्वरूपा ❋ प्रकृति पुरुष है एकस्वरूपा
करहिं भेद जे नर अज्ञाना ❋ परहिं नरक पावहिं दुख नाना

दो० भयउ बोध अर्जुन कहेउ, कहिये श्रीभगवान ।
जेहि प्रकार ते कीजिये,परमशक्तिको ध्यान ॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना ❋ लागे कहन शक्ति को ध्याना
दिशा बसन अरु शक्तिकराला ❋ पहिरे उर मुण्डन के माला
अङ्ग अङ्ग अहिभूषण नाना ❋ शिवारूढ़ अरु बसत मशाना
मुक्तकेश अरु बदन पसारे ❋ जिह्वाललन दशन भयकारे
निकसत अरुणनयन त्रैज्वाला ❋ अष्टबाहु तन श्याम तमाला
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा ❋ शिवानाद पूरित चहुँ ओरा
मुण्ड एक कर एक कृपाना ❋ यक कर अभय एक कर दाना
एक पाणि मदिरा कर भाजन ❋ एक पाणि शृंगीहितु बाजन

दो० एक हाथ में खड्ग धर, यक शूली बर धार ।
उठत प्रभा नभ तेजकी, रवि शत कोटि अपार ॥

यहि प्रकार हरि भेद बतायो ❋ अर्जुन नयन मूंदि तब ध्यायो
कीन्ह ध्यान क्षण एक बहोरी ❋ अस्तुति करत दोउ कर जोरी
जयगिरिजा जयप्रणतपालिका ❋ असुरराज मृगयुद्धजालिका
महिषमर्दिनी मातु कालिका ❋ नितभक्तनकी बिपतिघालिका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जय जय जय महिषासुरमर्दिनि ❋ अजा कुजा जय मातु कपर्दिनि
शिवा शम्भुघरणी शिवदूती ❋ जेहि सुमिरे जग सकल बिभूती
चण्डमुण्डदलनी अरु चण्डी ❋ ललितालालित रूपखलखण्डी
धूमावती सती तुव सीता ❋ होहिं काम सब अरिगण जीता
रिपुखण्डन तुव नाम पुनीता ❋ शीशहि जटा कण्ठ शुभगीता
तारा तरणि तारनी गङ्गा ❋ त्रैपुर की त्रैताप बिभङ्गा
कुला कुरू कुरु कुल महरानी ❋ गिरा हरा जय जय श्रीबानी

दो० छिन्ना तू बगलामुखी, बाराही जगमाय।
चरणशरण जगदम्बिका, कीजै बेगि सहाय॥
करौ राज्य राज्येश्वरी, मातङ्गी दुखहानि।
दण्ड दै दुष्ट निपातिकै, राखिलेहु जन जानि॥

सांची दुखदलनी जय बाला ❋ करहु कृपा अब होहु दयाला
प्रकट्यो एक गगनथल ज्वाला ❋ अस्तुति करैं देव दिगपाला
व्योम गिरा यह भ्यो महाना ❋ मांगु मांगु अर्जुन बरदाना
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई ❋ बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई
शत्रु बिजय अरु नृप कल्याना ❋ मांगत मान देहु बरदाना
ह्वै प्रसन्न सुनि अर्जुन बानी ❋ एवमस्तु कहि गई भवानी
तब दारुक हय हांकि चलायो ❋ चले मरुत गति बार न लायो
सात्यकि चले कृष्ण रथ सङ्गा ❋ लीन्हे साथ चमू चतुरङ्गा
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा ❋ किये शिबिर तब सकल महीपा
जहँजहँ कोटिन तानिनबिताना ❋ जहँ तहँ बाजें नौबतिखाना
गर्जत गज हिंसत बहु घोरा ❋ हाहाकार शब्द चहुँ ओरा
पुर बिराट दल जुरेउ अपारा ❋ नहिं कोउ काहू जाननहारा
होत नाद घरियार घनेरा ❋ धुवां देखि परखिय नृप डेरा

दो० अन्ध धुन्ध दल नृपनके, परत न कतहूं जानि।
रङ्ग रङ्ग झण्डा गड़े, भूपन की पहिंचानि॥

तब दारुक हरि रथहि चलावा ❋ पँवरि अजातशत्रु की लावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्वारपाल तब जाइ जनाये ❀ महाराज हरि अर्जुन आये
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों ❀ बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ❀ रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा
अर्जुन मिलेउ चरण गहि धाई ❀ दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई
कृष्णसमेत सभा पुनि आई ❀ बैठे अति प्रसन्न सुख पाई
प्रभु कहँ सिंहासन बैठारा ❀ बहुबिधि नृप कीन्हे सतकारा
चरण धोइ चरणोदक लीन्हा ❀ पावन भवन सींचि जल कीन्हा
तेहि अवसर भीमादिक भाई ❀ परसे चरण कृष्ण के आई

दो० प्रीतिसहित यदुबंशमणि, भेंटे हृदय लगाय ।
बैठारे सनमान करि, हर्षसहित सुख पाय ॥

दुइ कर जोरि कृष्ण के आगे ❀ बिनती करन धर्मसुत लागे
हे प्रभु तुव करतूति महाना ❀ थके चारि श्रुति अन्त न जाना
महिमा अमित वेद जो गावत ❀ नेतिनेति कहि नेति सुनावत
सहस बदन सो शेष बखानत ❀ पुनि सोउ कहतपार नहिं जानत
शारद सनकादिक सुर नाना ❀ बिधि नारद केहुँ पार न जाना
शिव सामर्थ्य जानि सब पावा ❀ बहुप्रकार कहि नेति सुनावा
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना ❀ जनहित सगुण होत भगवाना
मत्स्यरूप धरि वेद उधारयो ❀ हे प्रभु तुम शङ्खासुर मारयो

दो० हाटकदृग धरणी हरी, सो लै गयो पताल ।
कीन्हबिनयसुरद्योसनिशि, भयोप्रकटततकाल ॥

धरि बराह बपु श्रीभगवाना ❀ पैठि सिन्धुमहँ धरे बिषाना
अधम कनकलोचन तुम मारा ❀ कीन्हेउ बहुरि धरणिबिस्तारा
व्याकुलजन प्रहलादहि जानी ❀ होइ नरहरि मार्यो अभिमानी
हरणाकुश निज लोक पठावा ❀ हरी बिपति हरिदास बचावा
कमठरूप धरि मन्दर लीन्हों ❀ मथ्यो पयोधि सुरन सुखदीन्हों
मधु दै नाथ असुर बौरायो ❀ किये असुर सुर सुधा पिआयो
है बामन अमरेश बचायो ❀ बलिछलि बांधि पताल पठायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुनि प्रभु परशुराम वपु धारेउ ❀ अधम नरेश नाश करि डारेउ
सकल भूमिको भार उतारा ❀ कीन्हो बहुरि धर्म बिस्तारा
दो० देखि देखि महिदेव दुख, धरणि बिलोकि अनाथ।
कीन्ह दया प्रभु अवधपुर, प्रगट भये रघुनाथ॥
रावण कुम्भकरण खल मारा ❀ करि सनाथ महिभार उतारा
कृष्णरूप अब मम हित कारण ❀ कीन्हेउ नाथ धरणिपर धारण
जय मधुसुरअघनरकबिनाशन ❀ चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन
केशी कंस हने चाणूरा ❀ मुष्टिक असुर शकट अघकूरा
जय बृन्दाबन बिपिन बिहारी ❀ महिमा अगम अपार तुम्हारी
होतहि प्रकट पूतना मारी ❀ हरी ताप यशुदा की भारी
तृणावर्त्त बौंडर ह्वै आवा ❀ कण्ठ चापि प्रभु मारि गिरावा
मारेउ अधम भूप शिशुपाला ❀ काटेउ सकल भूमि को शाला
बिप्र सुदामा दारिद नाशा ❀ पूजी सबप्रकार प्रभु आशा
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े ❀ करि सहाय संकट ते काढ़े
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा ❀ आवत नाथ न लागी बारा
ग्राह मारि निज धाम पठावा ❀ मिटीबिपतिगजबिनयसुनावा
परी बिपति प्रहलाद पुकारा ❀ पवि ते प्रकट न लागी बारा
असुर मारि पठयो निज लोका ❀ निजसेवककहँ कीन बिशोका
दशमुख हति बैकुण्ठ पठायो ❀ भयाबिशोक सुरमुनिसुखपायो
तैसेहि कृपादृष्टि अवलोकी ❀ हरहुबिपतिम्वहिंकरहुबिशोकी
दो ०अस कहि भूपति पद गहे, पाहि पाहि यादौन।
काटहु संकट बिकट अब, ह्वै दयाल दुखदौन॥
ह्वै प्रसन्न यदुबंशमणि, तब बोले हरषाय।
गई बिपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय॥
शरणागतपालक बिरद, बिदितभार संसार।
ताते अब तन मन बचन, करब सहाय तुम्हार॥
इति उद्योगपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचितेनवमोऽध्यायः॥६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ हरि सुधि पाइ द्रौपदी आई
परशे चरण प्रेमयुत आनी ❀ नयननीर मुख कढ़त न बानी
हरिहि देखिकै रोवन लागी ❀ बिह्वल बचन शोक ते पागी
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई ❀ द्वारावती गये यदुराई
तब जो भई अवस्था मेरी ❀ सो अब सुनहु जानि निज चेरी
बिभव देखि कुरुपतिहि न भावा ❀ होइ उदास निज मन्दिर आवा
शकुनी करण दुशासन आये ❀ बैठि सबन मिलि मन्त्र दृढ़ाये
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा ❀ लीजै राज्य पाण्डवन केरा
करि मत बुद्धिचक्षु यह आई ❀ सकल कथा तिनकहिसमुझाई

दो० बिन समझे अज्ञानते, तुम मानत मन रोष ।
अबसुतकरहुबिरोधजनि, उनकरकछु नहिं दोष ॥

उनते युद्ध न तुम बरिऐहौ ❀ बिना काज कत बैर बढ़ैहौ
कह्यो भूप तुम कहत बिलीकी ❀ हमरे मते मन्त्र नहिं नीकी
उनकहँ दीन बिभव करतारा ❀ तुमहिं उचितनहिंकरबबिगारा
बोले शकुनि तेज छलकारी ❀ सुनहु भूप यह बात हमारी
युद्ध करहु जनि नृप अज्ञानी ❀ हारिजीति कछु परत न जानी
मोहिं अक्ष बिद्या निपुणाई ❀ लेइय जीति खेलि प्रभुताई
जीते ख्याल बिरोध न होई ❀ काढ़िय द्रव्य हीन करि सोई
सुनि मत धृतराष्ट्रक मनभायो ❀ द्यूत हेत उन नृपति बोलायो
गये नरेश सहित परिवारा ❀ सभय द्यूत को बर्णै पारा
धरत दांव शकुनी यह भाखै ❀ जीतौ जीति लेउ नृप राखै
जीतौं राज्य पाट भंडारा ❀ हय गज रथ समेत परिवारा
नहिं कछु भूपति धर्म बिचारो ❀ चारिउ बन्धु अपनपौ हारो
कह्यो शकुनि अब जो कछु होई ❀ धरहु भूप हम जीतैं सोई
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी ❀ जीतब तेह कही यह बानी
यह कहि शकुनी पांसा डारे ❀ जीतेउ कुरू धर्मसुत हारे

दो० भये दुखित भीषम बिदुर, द्रोण रहे शिरनाय ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गये सभाते उठि तुरत, बाहुलीक अकुलाय ॥
शकुनी कर्ण बहुत हरषाना ❋ अतिशय सुख दुर्योधन माना
कहेउ प्रात कामी ते बोली ❋ मैं जीती नृपनारि अमोली
द्रुपदसुता पाण्डव की रानी ❋ ताकहँ मोहिं मिलावहु आनी
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी ❋ अब तुम दासी भइउ हमारी
मैं अभिमतरूपहि पर तोरे ❋ बैठहु आनि जङ्घ पर मोरे
सकल नरेश आनि त्यहि कहेऊ ❋ पाण्डवनाथ क्रोध उर दहेऊ
रिस करि कहेउ धीर धरि गाढ़ा ❋ ये रे अधम दूरि रहु ठाढ़ा
हम कौरवपति के रिपु तोहूं ❋ नीच सँभारि न बोलत तोहूं
तू शठ मोर प्रभाव न जाना ❋ बोलत बचन सहित अभिमाना
यह सुनि भानमती रिसवाई ❋ जानत नीच मृत्यु तव आई
सुनि अस बचन बहुत भय पावा ❋ सूत बहुरि कुरुपतिपहँ आवा
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी ❋ नहिं आवत कौरवपतिरानी

दो० दुश्शासन तें बोलिकै, कहेउ भूप रिसवाय।
गहिकै केश घसीटिकै, तुम लै आवहु जाय ॥

यहिकी बात सकल मैं जानी ❋ लावा सो न भीम भय मानी
सुनत बचन दुश्शासन आवा ❋ चलहु बेगि तोहिं भूप बोलावा
यहिबिधि बचन दुशासनकीन्हा ❋ सुनु यदुनाथ उतरु हम दीन्हा
पूछति सत्य दुशासन चौंको ❋ हारे प्रथम भूप की मोंको
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा ❋ भये दास नहिं नात हमारा
हारो होय प्रथम मोहिं राजा ❋ दासी होत न मोको लाजा
सुनत दुशासन अतिरिसमानी ❋ गहिकै केश सभामहँ आनी
तब यदुनाथ मोहिं रिस लागी ❋ कहेउ छोड़ मम केश अभागी
रजस्वला मैं यक पट धारी ❋ मुञ्च मुञ्च रे शठ अपकारी

दो० सभामध्य बैठे सबै, कौरव कुल सरदार।
लियेजातमोकहँनिलज, करत अधम अपकार ॥

कस रिस करत पतिन तोरि हारी ❋ अब तुम दासी भई हमारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चेरिन केरि कवन बड़ि लाजा ❀ चलु बोलत दुर्योधन राजा
मम गति देखि सकल रनिवासू ❀ करत बिलाप ढरत दृग आंसू
सो सुधि गन्धारी सुनि पाई ❀ करि बिलाप पाछे उठि धाई
छूटे बार न चीर सँभारा ❀ हा पुत्री कहि करत पुकारा
जबलग काढ़ि भवनते रानी ❀ तबलग नीच सभामहँ आनी
भीषम बिदुर नाइ शिर लीन्हा ❀ कृपअरुद्रोण शोच जियकीन्हा
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा ❀ दुर्योधन यहि भांति सुनावा

दो० दुश्शासन ते तब कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय ।
बस्त्रहीन करि जङ्घ पर, बैठारो त्रिय आय ॥

सुनियहबचनशकुनिहँसिदीन्हा ❀ बिकरण देखि क्रोध जियकीन्हा
उचित न तोहिं कौरवकुलराजा ❀ कहत बिलोकि बचनतजिलाजा
जेठ बन्धु त्रिय मातु समाना ❀ बरणत आगम निगम पुराना
नाथ मानि अब बिनय हमारी ❀ छांड़ि देहु अब द्रुपदकुमारी
तुव कीरति जग पूर्ण मयङ्का ❀ जनि लावहु नृपकुलहि कलङ्का
जब बिकर्ण यहिभांति बखाना ❀ सुनत बचन तब कर्ण रिसाना
अबहिं न बैस तोरि मतलायक ❀ जाहुभवन खेलहु धनुशायक
सुनि यह बचन मवन ह्वै रहेऊ ❀ दुश्शासन ते तब नृप कहेऊ

दो० नगिनिकरौतुमद्रौपदी, निजकर बसन उतारि ।
बैठारौ लै जंघ पर, यह रुचि बन्धुहमारि ॥

भीषम द्रोण रहे चुप साधी ❀ पकरेसि बसन अधम अपराधी
लागेउ खैंचन चीर अभागी ❀ भई बिकल मैं रोवन लागी
मम गति देखि पतिन दुख पावा ❀ अश्रुपात करि महि शिरनावा
टूटी आश भयउ दुखभारी ❀ दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी
हा यादवपति हा दामोदर ❀ हे माधव हे हलधर सोदर
हे गोबिन्द गिरिधर बनवारी ❀ कृष्ण कृष्ण कहि शरण पुकारी
हे मुरलीधर राधानायक ❀ बासुदेव अब होहु सहायक
खैंचत बसन कुमारगगामी ❀ राखहु लाज दया करि स्वामी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाथ बसन महँ आपु समाने ❋ रही लाज कौरव खिसियाने
खैंचत बस्त्र दुशासन हारा ❋ अम्बर के लागे अम्बारा
यह चरित्र देखा सबकाहू ❋ हाली धरा भयो दिग्दाहू
बिन घन आसमान घहराना ❋ कौरवसभा सबहि भयमाना
भूप यज्ञशाला महँ आई ❋ शिवा शब्द कीन्हो अधिकाई
बोलत रासभ श्वान कुमारा ❋ गगन दुष्ट पक्षी गण क्षारा
खैंचत थकेउ दुशासन बासन ❋ बसनछोड़िबैठ्यो निज आसन
शीश नाय नृप बैठ उदासा ❋ छकितभये सब देखि तमासा

दो० अम्बरहीन बिलोकि नृप, बोलिसकेउ नहिं बयन।
रक्षा कीन्ही करि कृपा, तुव प्रभु पङ्कजनयन॥
तजी लाज अर्जुन नकुल, धर्मराज भय मानि।
सहादेव बोले कछुक, भीमसेन बल खानि॥

कहत द्रौपदी करि करि रोसा ❋ मोहिं न कुन्तिहि सुतन भरोसा
इन पतितन कछु पति न हमारी ❋ तुम रक्षा कीन्ही बनवारी
पूछेउ धृतराष्ट्रक संजय सों ❋ होत कहा कहिये सो मोसों
अक्षिहीन कछु परत न जानी ❋ सुनि संजय कछु कथा बखानी
दुश्शासनहिं दीन्ह दुरिआई ❋ करिप्रबोध म्वहिं निकट बोलाई
कीन्ह कृत्ति मैं नहिं कछु जाना ❋ मांगु मांगु पुत्री बरदाना
बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा ❋ बार बार पुत्रन धिक्कारा
तेहि अवसर गन्धारी आई ❋ देखि अनीति सुतन रिसवाई
कहेउ बिलीक कर्म भ्रम त्यागी ❋ परिहौ नरक असाधु अभागी

दो० धृतराष्ट्रक अति प्रीति ते, कहेउ मांगु बरदान।
दासभाव निज पाण्डुसुत, मैं मांगौं भगवान॥

बाहन अस्त्र पतिन के देहू ❋ बिदाकरिय अब करि नृप नेहू
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं ❋ प्राणसमान सुता तुव मोहीं
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्मा ❋ छांड़िनि लोकलाज कुलधर्मा
धर्मराइ दुर्योधन पोचन ❋ कहत सत्य मोरे द्वै लोचन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Kina Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सकोच जानौ जिय मोरे ❋ प्राणन अतिशय हैं प्रिय मोरे
द्रुपदसुता मम बचन प्रमाना ❋ अब तुम मांगि लेहु बरदाना
अब न मनोरथ पूजा आशा ❋ यहि अन्तर पुनि बचन प्रकाशा
अभिमत मिलौ कृपा भय तोरे ❋ तव प्रसाद होइहि सब मोरे
क्षत्री लेइ तीन बरदाना ❋ बिप्र चारि मांगै नहिं आना
दुइ बैश्यस्य शूद्र कांहे एका ❋ मांगै और होइ अबिबेका

दो० बाहन अस्त्र देवाइकै, बिदाकीन्ह महिपाल।
परसिचरणनिजचढ़िरथन, चलेभवनतेहिकाल॥

सौबल नाम शकुनि को भाई ❋ मिल्यो पन्थ महँ गयउलेवाई
प्रीति समेत सभा बैठायहु ❋ बहुरि सार पांसा मँगवायहु
बरजत रहेउ सकल परिवारा ❋ मिटै न जो प्रभु होनेहारा
लीन्हो अक्ष बदी यह बाजू ❋ द्वादश बर्ष तजै सो राजू
बिपिन बास करि बर्ष बिताई ❋ करै न अन्न अशन फलखाई
बर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता ❋ करै निवास जानि नहिं जाता
लीन्हे खोज बहुरि बन जावै ❋ काल बिताइ राज पुनि पावै
रहेउ न कछुक भूप हरि ज्ञाना ❋ धरो दांव कहि बचन प्रमाना
लीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी ❋ दीन्हों डारि गये नृप हारी

दो० होइ उदास भूपाल तब, बन कहँ कीन्ह पयान।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोधकरि, भीमसेन बलवान॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी ❋ आई मीचु दुशासन तोरी
जेहि कर केश गहे अभिमानी ❋ गहे बसन नँगिआवन रानी
सभा मांझ खल कानि न मानी ❋ सो उखारि डारौं तुव पानी
बहुरि जङ्घ ठोंकी कुरुनाथा ❋ तोरौं जङ्घ गदा गहि हाथा
सुनहु सकल निजकाल बिताई ❋ कृष्ण शपथ करिहौं सब आई
सत्य बचन हरि सत्य हमारा ❋ करिहौं सब कौरव संहारा
अर्जुन कही कर्ण के आगे ❋ हँस्यो मोहिं सबते भ्रम त्यागे
शरन मारि जरजर तन तोरा ❋ करिहौं कृष्ण सत्य प्रण मोरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सहदेवहु शकुनी तब बोले ❀ बिषधर मनहुँ बिषै रस खोले
दो० द्यूत हराये नीच तोहिं, करि छलको अधिकार ।
होइहि मोरे करनते, शकुनी मरण तुम्हार ॥
बर्षौं तोहिं नहिं अवधि बिताई ❀ मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई
येही भांति नकुल बनवारी ❀ सभा मध्य कीन्हों प्रणभारी
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे ❀ कह्यो शल्य ते राजा तैसे
हँसेउ मोहिं कछु कानि न मानी ❀ करि बहुबार कितवअभिमानी
बीते काल न तोकहँ मारौं ❀ तौ नहिं धनुष बाण कर धारौं
मोरे उर उपजा अति रोसा ❀ प्रण कीन्हों कहि नाथ भरोसा
करि अस्नान रुधिर तुव धारा ❀ बांधौं तब दुश्शासन बारा
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई ❀ उचित होइ तस करिय उपाई
पुनि हम पञ्च पाण्डुसुत रानी ❀ श्रीमुख भगिनी कहत बखानी
तेंइ तुम साक्षात भगवाना ❀ पाण्डव हैं अतिशय बलवाना
तिनहिं अछत यह हाल हमारा ❀ यथा अनाथ नाथ बिन दारा
तेरह बर्ष न बांधे केशा ❀ फिरत अजहुँ बिधवाके भेशा
दो० सुन्यो द्रौपदी के बचन, लोचन मोचत बारि ।
कहौ प्रतिज्ञा कीन्ह सो, होइहि सत्य तुम्हारि ॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिबश्य भगवान ।
बैठारो पुनि द्रौपदी, करिबहुबिधिसनमान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

पूछेउ सुनि जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र कहौ मुनि गाई
सुनत श्रवण नहिं तृप्त हमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी ❀ लागे कहन कथा मुनि ज्ञानी
तेहि अवसर आये सब राजा ❀ कृष्ण सहित जहँ भूपतिराजा
नाइ नाइ शिर हरिहि जोहारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ सुतन सहित हरिपद शिरनाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि नृपहि बसुदेव कुमारा ❀ मिले बहुरि आसन बैठारा
परसे चरण बिराट भुवाला ❀ सनमाने तब दीनदयाला
कह्यो भूप सुनिये यदुराई ❀ अब करिये प्रभु कौन उपाई
हे हरि यतन बतावहु सोई ❀ जामहँ मोहिं परम हित होई
मोसम को जग और सभागी ❀ अतिदुखसह्यो बन्धुजेहिलागी
मोसम दुखी सुनहु भगवाना ❀ भयो न भूपर भूपति आना
जान्यो कृष्ण भूप दुख पावा ❀ कहि सुरराज कथा समुझावा

दो० बृत्रासुर को बधन करि, भये मुदित सुरराज ।
घेख्यो हत्या आनि तब, छुट्यो राजसमाज ॥

विप्र बंश ताको अवतारा ❀ सुनत कथा दुख मिटा अपारा
भाग्यो अमरनाथ दुख पाई ❀ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला ❀ लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला
सेवहिं सब सुर सहित समाजा ❀ सिंहासन बैठे नहुराजा
बिद्याधर किन्नर गन्धर्बा ❀ सेवहिं मनुज देव मुनि सर्बा
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं ❀ करैं गान अरु नृत्य दिखावैं
आवैं सुरतिय करि शृङ्गारा ❀ रमित रहैं नृप करत बिहारा

दो० यहिबिधि राजसमाजते, बीति गये कछुकाल ।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल ॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी ❀ गुरु गृह गई भागि इन्द्रानी
मार्ग जीव यह बिपति सुनाई ❀ मैं प्रभु चरणशरण अब आई
बहुप्रकार मुनि धीरज दीन्हा ❀ कीन्ही कृपा अभय पुनि कीन्हा
तब सुरगण सब सकल बोलाये ❀ बांटिलेहु अघ कहि समुझाये
सबपर छिटिकि जाइ सब पापू ❀ मिटै सुरेश केर परितापू
कीन्ही सब मिलि अङ्गीकारा ❀ सब पर गयो पाप को भारा
ऊसर भयो धरा जो लयऊ ❀ प्रथम ज्वाल हुतभुक महँ भयऊ
लीन्ह्यो बरुण भई जल काई ❀ यहिप्रकार सब सुरसमुदाई

दो० भयो पाप बिन पाकरी, पूरि रह्यो सुख भूरि ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पठये ढूँढ़न पायकहि, गयो बिलोकत दूरि ॥
पायक ढूँढ़ि फिरे सब देशा ❀ मिले इन्द्र नहिं भयो अँदेशा
सबकथा सुरगुरुहि सुनाई ❀ मिलैं कतहुँ तब शची पठाई
ढूँढ़त फिरत बिकल इन्द्रानी ❀ मगमहँ मिले देवऋषि आनी
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई ❀ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई
इन्द्र भाग गिरिपर भय माने ❀ मानसरोवर इन्द्र छिपाने
सुनि नारद के बचन प्रमाना ❀ गई शची तहँ रोदन ठाना
कीन्ह बिलाप ताप तन भारी ❀ बार बार कहि नाम पुकारी
सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई ❀ निकरि कमलते दीन देखाई
तुमपर गुरु कीन्हो अनुरागा ❀ दीन्ह शाप करि सुरन बिभागा
रह्यो न तव शिर अघलवलेशा ❀ बोले सुरगुरु चलिय सुरेशा

दो० मोकहँ पठयो देवगुरु, लावहु बेगि बोलाइ ।
बचनमानिफुरगुरुबचन, गये इन्द्र हरषाइ ॥

गुरुहि प्रणाम कीन्ह सुरराई ❀ भे प्रसन्न मन आशिष पाई
बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा ❀ मिलै राज तब मिटै अँदेशा
मिलि राजा कहि गुरु सनमाने ❀ दिवस पञ्चदश रहे छिपाने
धर्महीन करि नहुषहि राजा ❀ तब पावहु तुम राज समाजा
यहि प्रकार सुरपति समुझाये ❀ करि प्रबोध निजभवन छिपाये
कह्यो कृष्ण अब सुनहु भुवाला ❀ भयो कामबश नहुमहिपाला
पठये दूत बोलावहु जाई ❀ बड़ अभिमान शची नहिं आई
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी ❀ सुनत उतर दीन्हो इन्द्रानी

दो० जब चाहत सुरराज मोहिं, बाहन चढ़त नवीन ।
जाइ लवाइ सो मानते, होइ मोर आधीन ॥

तेहि गद्दी नहु आइ बिराजा ❀ जाइ लवाइ जहां सुरराजा
दूत जाय यह बचन उचारा ❀ नहु नरेश मन करत बिचारा
कहि नवीनचढ़ियान सिधावहु ❀ शची बोलाइ भवनकहँ लावहु
तब देवन शारदा बोलाई ❀ बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिबिका पकरि बिप्रगण लाये ❀ है अरूढ़ तब भूप सिधाये
द्विजन शाप दीन्हो करि शोका ❀ परइधराणिखलतजि सुरलोका
पुण्यक्षीण होइ नहुमहिपाला ❀ पस्यो धरापर सो ततकाला
अमरनाथ निज पायउ राजा ❀ भय उबरिस सब साजसमाजा
तैसे तुम पैहौ महिपाला ❀ धरहु बीर बीते कछु काला

दो० सबलसिंह धीरज दियो, करि प्रबोध महिपाल ।
लीन्हे बोलि नरेश तब, मन्त्र हेतु त्यहिकाल ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

कहेउ भूप अब सकल नरेशा ❀ निजनिजमत कीजिय उपदेशा
नृपबिराट कह यह मत मोरा ❀ जबलग जिये शत्रु जग तोरा
मिलिहिराज्य नहिं कोटिउपाई ❀ करिय भूप जस तुमहिं सोहाई
सुनत बचन कह द्रुपद सुजाना ❀ सुनहु सकल मिलि मन्त्र हमारा
पहुँचत दूत तुरत अब कोई ❀ समुझाव कुरुपति नृप सोई
सुनत बचन हरि के मनभावा ❀ द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई ❀ नानाभांति कहेउ समुझाई
करि उपाय कीजै बुधि सोई ❀ जामहँ बिप्र भूप हित होई
पृथक् पृथक् कहि सबन सँदेशा ❀ बिदाकीन्ह करि हरि उपदेशा

दो० अतिप्रसन्नद्विजराजमन, है शिबिका असवार ।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी बार ॥

पहुँचे बिप्र भूप के द्वारे ❀ बोले बचन बोलि प्रतिहारे
धर्मराज हरि मोहिं पठायो ❀ कहन सँदेश भूप ते आयो
बेतपाणि सुनि जाइ जनावा ❀ बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा
गयो सभा महँ द्रुपद पुरोधा ❀ त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ❀ बैठारो निज बोलि समीपा
आशिर्बाद बिप्र तब दीन्हा ❀ नृपसनमानबिबिधबिधिकीन्हा
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा ❀ भीषम बाहुलीक महराजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपरु शल्य जयदर्थ महीपा ❀ बैठे जहँ कौरवकुलदीपा
धृतराष्ट्रक नन्दन सौ भाई ❀ बैठे सभा सुबेष बनाई
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना ❀ द्रोणपुत्र गुण ज्ञान निधाना

दो० भूरिश्रवा कलिङ्ग अरु, मकरध्वजौ महान।
बैठिसो बालकुमार तहँ, अरु उलूक बलवान॥

बिप्र सुनाइ कहा सब आगे ❀ कहन सँदेश भूपते लागे
मोहिं पठायो धर्मनरेशा ❀ चितदै सुनहु महीप सँदेशा
निकट बोलाइ धर्मसुत हमको ❀ प्रथम कहेउ अभिबादन तुमको
कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै ❀ बीती अवधि राज्य अब दीजै
किङ्कर जानि करिय अब दाया ❀ हम तुम्हरे छांड़ौ मति माया
तेरह बर्ष सहे दुख नाना ❀ सो हरि किहेउ बिपतिअवसाना
दुर्योधन कीन्ही अनरीती ❀ तुम्हरी कृपा बिपति अब बीती
मिटै कलह सो करिय उपाई ❀ [illegible] कहा युधिष्ठिराई
चलतीबार पार्थ मोहि जाना ❀ कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना

दो० मोते कहेउ सँदेश जो, सो सुनिये दै कान।
मेटो कुलको कलह अब, तुम्हरे सब बुधिमान॥

कह्यो भीम मोहिं चलतीबारा ❀ कहौं जो आयसु होइ तुम्हारा
कही बात जो राखौं गोई ❀ ताते पाप अधिकई होई
कहे न होइ दूत शिर दोषा ❀ ताते सुनिय भूप तजि रोषा
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा ❀ करि छल तुम दारुणदुख दीन्हा
बीते कछु दिन तुम फल पैहौ ❀ समुझत अब नहिं मन पछितैहौ
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं ❀ सौ बान्धव दुर्योधन मरिहौं
कटैं बन्धु जब बिधवा भेशा ❀ तब करिहौ चित चेत नरेशा
करहुँ निपात सेन तुव काटी ❀ देहुँ मिलाइ मांस अरु माटी
रक्त नदी तब बहहिं महाना ❀ करणआदि कटिहैं भटनाना
उठै कबन्ध गिद्ध पल खैहैं ❀ तब नरेश आधो हम पैहैं

दो० अबते चेतहु भूप तुम, सुनिकै बचन हमार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

समुझावै दुर्योधनहि, बचन सबै परिवार ॥
नकुल सँदेश सुनहु दै काना ❀ बुद्धिचक्षु तुम अतिअज्ञाना
अंश हमार समुझि नृप दीजै ❀ अपने जियत कलङ्क न लीजै
जो न देउ नृप अंश हमारा ❀ होइहि युद्ध न लागी बारा
चलतीबार भूप सहदेवा ❀ करि प्रणाम बिनयी बहुसेवा
छांड़ो पिता हमारो मोहा ❀ करि बहु दुर्योधनपर छोहा
अब यह समुझि परी मनमाहीं ❀ उनके दुर्योधन हम नाहीं
मरे बालपन पाण्डु न देखे ❀ तुम पितु हते हमारे लेखे
तुम्हरे ईक्षत हम दुख पावा ❀ करि छल शकुनी देश छुड़ावा
दो० परी बिपति बन बन फिरे, सहे अशेष कलेश ।
समुझावहु दुर्योधनहि, मेटहु सकल नरेश ॥
मोहिं बोलि बसुदेवकुमारा ❀ तुमते कहेउ नरेश जोहारा
जो कछु दीनबन्धु [illegible] ❀ [illegible] सँदेश सुनिय दै काना
तुमते काह कहिय बहुतेरा ❀ दीजै अंश युधिष्ठिर केरा
प्रथमहिं बहुप्रकार समुझावा ❀ दुर्योधन के मनहिं न आवा
मानत सो न बहुत अभिमाना ❀ कालबिबश सब ज्ञान भुलाना
तज्यो बिबेक पाप प्रिय लागा ❀ उपज्यो हंसबंस जिमि कागा
लीन्हे अयश सकल यश खोई ❀ बांस बंश महँ भयो घमोई
कौरव कुल यश पूर्ण मयङ्का ❀ भा दुर्योधन तिनहिं कलङ्का
दो० समुझावत तुम अबहिं नहिं, सब जानत सज्ञान ।
बहुरि कह्यो संदेश सब, सुनहु भूप दै कान ॥
चलत बार कह द्रुपद सँदेशा ❀ सुनत कृपा करि कहत नरेशा
अपने जियत कलङ्क न लावहु ❀ कलह गोत्र को भूप बचावहु
धृष्टद्युम्न मम सुत अरिखण्डी ❀ अबलगु राखो बर्जि शिखण्डी
कीजै संधि मिटै उतपाता ❀ बढ़ै भूप की कीरति दाता
मैं सिख देत जानि समबन्धी ❀ चक्षुहीन कछु बुद्धि न अन्धी
बेगि उपाय करहु नृप सोई ❀ संधि होइ जेहि कलह न होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्योधन अरु पाण्डुकुमारा ❀ जानहु हेतु समान हमारा
हम चाहत हैं तुम्हरे हित की ❀ करहु बिचार होइ जो नीकी

दो० चलतिबिलोकि बोलाइ मोहिं, कह्यो बिराटसँदेश ।
सावधान होइ लाइ मन, सोअबसुनहुनरेश ॥

दुर्योधन कीन्हो अपकारा ❀ धर्मराज कहँ देश निकारा
तुम्हरे योग न बात अलीका ❀ देखहु समुझि भरतकुलटीका
करहु होइ जो नीक बिचारा ❀ यह नृप कहेउ बिराट भुवारा
बिप्र बचन सुनि भा उरदाहू ❀ बिहँसि बचन बोला नरनाहू
बहुत बिप्र कत बाद बढ़ावहु ❀ पाण्डुसुतनकी कुशल सुनावहु
प्राण समान परमप्रिय जीके ❀ हैं सब भ्रात जान मम नीके
दुर्योधन उनते छल कीन्हा ❀ द्यूत खेलाइ राज्य हरिलीन्हा
करि कुबुद्धि याहि दीन निकारी ❀ बनबसिसहेउबिपतिअतिभारी ।
द्रुपदसुता अतिशय [illegible] रूप न इन्दु तमारी
बन बसि फिरी लाज सबत्यागी ❀ कीन कुमति मम पुत्र अभागी

दो० अबहूं तजत कुचाल नहिं, कालबिबश कुरुनाथ ।
अक्षिहीन अरु ज्येष्ठतन, मैं तन भयों अनाथ ॥

सुनत बिप्र नहिं मोर सिखावन ❀ भयो पुलस्त्यबंश जेहि रावन
जैसे उग्रसेन सुत कंसू ❀ प्रकट्यो कालनेमि कर अंसू
पितहि पकरि कारागृह डारे ❀ तैसे यहु कछु बश न हमारे
जब ते धर्मराज बन गयऊ ❀ तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ
उनके बिरह दिवस अरु राती ❀ तलफत रहत जरत नित छाती
दुर्योधनहि बहुत समुझावत ❀ पै वाके कछु मनहिं न आवत
अब हौं बहुत भांति समुझैहौं ❀ अपने चलत मिलाप करैहौं
अस कहि बुद्धिचक्षु समुझाये ❀ द्विज प्रबोधि अन्तःपुर आये
संजय संग पाणि पकराई ❀ भूप भवन कहँ गयउ लवाई

दो० बैठारे पुनि सेज पर, गन्धारी दै पान ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबलसिंहचौहानकहि, करत बिबिध सनमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

भीषम और हरि द्विज रह्यऊ ❋ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कह्यऊ
अब तुमते कछु कह्यउ सँदेशा ❋ सुनहु पितामह तजहु अँदेशा
कुरुनन्दन कीनो अपकारा ❋ सुनि शकुनी सिख देशनिकारा
रहे बिपिन बसि जाय उदासी ❋ तुम्हरी कृपा बिपति सब नासी
मुये पाण्डु हम सबते बालक ❋ तब तुमहीं कीन्हों प्रतिपालक
रहत सदा तुव चख अनुकूले ❋ भलेहि नाथ हमरी सुधिभूले
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी ❋ अनुचर जानि न फेरिय आंखी
सुनत बचन छाये जल कोये ❋ करि सुधि बिकल पितामह रोये

दो० पुलकि गात गदगदगिरा, भरिआये जल नैन ।
[illegible] ...लेउ द्विज बैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा ❋ कुशल अबहिलग पाण्डुकुमारा
सुनि भीषम यह बचन उचारा ❋ उनहीं कुल राखै करतारा
धर्मराज निज राज्यहि पैहैं ❋ निश्चय सब कौरव मिटिजैहैं
दुर्योधनहि गर्ब अति भारी ❋ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी
सदा बिश्वम्भर गर्बप्रहारी ❋ धर्म क्षेमकर श्रीबनवारी
पाण्डव क्षेम मानु बिश्वाशू ❋ द्विज जानहु कौरवकुलनाशू
यहि बिधि बचन बिप्रते खोले ❋ गङ्गासुत कुरुपति से बोले
मानि बचन मम कलह बहावहु ❋ करहु संधि सब मिलि सुखपावहु
सुने बचन लागे जिमि शायक ❋ ह्वै सक्रोध बोले कुरुनायक
तुमहिं न उचित पितामह ऐसी ❋ कही सभा सत बात अनैसी

दो० तुमहिं त्यागि मनबचनकहि, हम नहिं जानैं और ।
उचित न कटुबाणी कहत, कौरवकुलशिरमौर ॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना ❋ उठि अपने गृह कीन पयाना
अपने भवन पितामह आयो ❋ बिप्र द्रोण ते बचन सुनायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहे प्रणाम तुमहिं गुरुभूपा ❋ कीन बिनय कछु मति अनुरूपा
चतुर वेद धनु वेद निधाना ❋ आचारज नहिं तुमहिं समाना
हौ समर्थ प्रभु सबहिप्रकारा ❋ शापदेन अरु बाण प्रहारा
देव अदेव जगत भय मानत ❋ तव तप तेज सकल उर आनत
शशिसमकोटिनदिशनप्रकाशा ❋ कुरुपाण्डव तुम्हरे सब दाशा
सब प्रकार जानत बुधिबोधन ❋ तुम नहिं समुझावत दुर्योधन

दो० तपबल बुधिबल अस्त्रबल, बिद्याबल बलबाह ।
कर्म धर्म अरु ब्रह्मबल, बिदितजगतसबकाह ॥

तुव बलको भरोस उर मोरे ❋ की हरि और न जानत भोरे
यह सँदेश अरु पुनि पदवन्दन ❋ तुमते कहेउ पाण्डु के नन्दन
सुनत बचन भे द्रोण सशोके ❋ कमलनयनजल रहत न रोके
पुलकितगात कृपा अधिकाई ❋ बिबिध भांति पूछी कुशलाई
शिष्य बर्ग हैं सकल हमारे ❋ [illegible]
धर्मशील निधि [illegible] भाई ❋ मोरे प्राणन ते अधिकाई
ताते उनकी कुशल बतावहु ❋ मोरे जिय की ताप बुतावहु
कह द्विज हैं पाण्डव सब नीके ❋ नाथ तुम्हार दास जगतीके

दो० दुर्योधन काढ़ेउ बिपिन, देखरायो अति त्रास ।
रहत पाण्डुसुत कुशल हैं, तव चरणनकी आस ॥
मनसा बाचा कर्मणा, नाथ तुम्हारो दास ।
मानत ज्यों हरिको तुमहिं, धर्म सहित बिश्वास ॥

कहि यह बचन मौन द्विज भयऊ ❋ उठि गुरुद्रोण भवनते गयऊ
बिप्र संग लै अश्वत्थामा ❋ करवायो गृह निज बिश्रामा
बहु बिधि खान पान करवाई ❋ शयन हेत शय्या बिछवाई
कीन्ह द्राणसुत प्रीति घनेरी ❋ पूछी कुशल पाण्डवन केरी
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके ❋ प्राण अधार बन्धु मम हीके
अभिमन्युसहित सकलपरिवारा ❋ अरु आयो द्रौपदी कुमारा
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु ❋ भिन्न भिन्न करि बरणि सुनावहु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन हम को कछु कहेउ सँदेशा ❀ सो द्विज कह नृप सहित कलेशा

दो० बड़ी बिपति तेरह बरष, सही भूप कुन्तेव ।
सो बीती हरि की कृपा, हैं नीके सहदेव ॥

यह कहि भूप नयन जल छाये ❀ गदगद कण्ठ बचन नहिं आये
देखी बहुत प्रीति अधिकाई ❀ कुशल प्रश्न कहि बिप्र सुनाई
पाण्डव सकल सहित सुतदारा ❀ कुशल आजुलग सब परिवारा
करहु यत्न कछु कहत पुकारे ❀ यथाकुशल अब हाथ तुम्हारे
अबते तुम भूपहि समुझावहु ❀ कलह मेटिकै संधि करावहु
कहेउ प्रणाम तुमहिं कुन्तेवा ❀ सुनत सँदेश कहौ महिदेवा
हम जानत जिमि अर्जुन भीमा ❀ तैसे तुमहिं आजुलग जीमा
इन भ्रातन बर बिपति बँटाई ❀ गुरु बान्धव तुम सुधि बिसराई
जानत सो कौरव जो कीन्हा ❀ तुमहिं न उचितकृपातजिदीन्हा
दो० [illegible] सुनिलीजै ❀ अपने मन बिचार तुम कीजै
[illegible] कुरुनाथ ।
दो० खान पान सनमान दे, सब [illegible] कुरुनाथ ।
दास भाव मोते रहत, करिलीन्हो निजहाथ ॥

चित महँ उनसन प्रीति घनेरी ❀ परबश भयो लाग नहिं मेरी
अनभल चहत पाण्डवन केरा ❀ कौरव बश मम फिरत न फेरा
अस कहि शयनकरन द्वउलागे ❀ अब नृप सुनहु चरित जस आगे
यहां भूप मन शोच अपारा ❀ कह संजय ते बारहिं बारा
देखिपरत मोहिं बात न नीका ❀ दुर्योधन की चली अलीका
सुनतश्रवण नहिं कछु उतपाती ❀ परी न नींद शोकबश राती
भीमस्वभाव बिदित सबकाहू ❀ अस कहि बिकल भयो नरनाहू
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी ❀ समुझावहु निजसुत अपकारी
सुनि संजय पुनि तुरत पठाये ❀ दुर्योधनहिं बोलि लै आये
रावण कुम्भकरण जिन मारा ❀ सुरबिजयी जानत संसारा
हैहयराज प्रचारि प्रचारी ❀ काटेउ सहसबाहु बलभारी

दो० केशी कंस अघा बका, मुष्टिक औ चाणूर ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धेनुक हति वृष पूतना, तृणावर्त्त खल क्रूर ॥
मार्यो बालि बत्ससुर नीचा ❀ सुभट ताड़का अरु मारीचा
खरदूषण त्रिशिरादि कबन्धा ❀ बिपिन बिराध असुर कृतबन्धा
शंखचूड़ भस्मासुर मारा ❀ राख्यो शम्भु बिदित संसारा
ते पाण्डव के भयो सहायक ❀ जीति को सकै तात रघुनायक
तिनते बैर किये भल नाहीं ❀ संधि नीकि समुझौ मनमाहीं
पुनि तुम्हरे हैं बन्धु नजीकी ❀ दीजै अंश बात यह नीकी
तुव पितु के लघुबन्धु भुवारा ❀ भये पाण्डु जानत संसारा
धर्मराज कछु पाप न कीन्हा ❀ छलकरि राज तात तुम लीन्हा

दो० उन नहिं कीन्ह बिरोध सुत, ना कछु लियो तुम्हार।
छल करि अक्ष खेलाइकै, तैं कीन्हों अपकार ॥

अजहूं कहा हमारो कीजै ❀ मिटै बिरोध अंश दैदीजै
अतिहित गन्धारी की बानी ❀ [illegible]
धृतराष्ट्रहु बहुबिधि समुझावा ❀ कालबिबशकछुमनहिं न आवा
मातु पिता कर बचन न माना ❀ जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना
भावीबश जानहु सब लोगा ❀ भावीबश न होइ सब योगा
भावी सुमति कुमति उपराजै ❀ हानि लाभ अरु बिजय पराजै
कह बैशम्पायन सुनु राजा ❀ सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा
हरि कहि परशुराम जग जाये ❀ जीति पितामह बनहिं पठाये
दानव देव मनुज बल भारी ❀ भीषम पद कोऊ नहिं टारी
जीति सकल रण बन्धु बिवाही ❀ बानर ऋक्ष बिदित सबकाही
गुरू द्रोण दशहू दिशि जीते ❀ सुर अरु असुर जासु भयभीते
जो हठि कर्ण करै संग्रामा ❀ करिनहिंसकैं बिजयघनश्यामा

दो० कह्यो मातु ते जोरिकर, चुपकरिरहु अरगाइ।
तिलभरिदेउँ न जियतमहि, सकै को टेक छुड़ाइ ॥

अस कहि अपने भवन भुवाला ❀ जात भयो राजा ततकाला
होतहि प्रात सभामहँ आयो ❀ बुद्धिचक्षु द्विज बोलि पठायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वर्ण पञ्चशत दीन्ह्यो दाना ❀ कीन्ह दान नृप करि सनमाना
आजु काल्हि महँ संजय ऐहैं ❀ सत्य सँदेश यहां को लैहैं
करि बहुयतन सुतन समुझाई ❀ देहौं तात मिलाप कराई
कहि द्विजते यहिभांति सँदेशा ❀ कीन्ह बिदा यहिभांति नरेशा
कहत प्रात संजय को आवन ❀ तिनके हाथ सँदेश पठावन

दो० धृतराष्ट्र आशिष कह्यो, लै पाण्डव को नाम ।
नृपमण्डली जोहारकरि, हरिको कह्यो प्रणाम ॥

यहि प्रकार कहि द्विजबरबाणी ❀ भूपसहित सुनि शारँगपाणी
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं ❀ और बिचार कही कछु नाहीं
उन सगरी संजय पर राखी ❀ हरिते कहत धर्मसुत भाखी
तब हरि कहत चुपौ दिनचारी ❀ आवैं जो न करिय पुनि रारी
बुद्धिमान पञ्चाल पुरोहित ❀ इनते को चाहत तुम्हरो हित
येऊ गये ~~न इन करि~~ आये ❀ कारज रह्यो सँदेश न लाये
इनते को जाई अब ज्ञानी ❀ बिहसि बिहँसि कह शारँगपानी
सुनत बचन नृप द्रुपद लजाने ❀ करी कृपा श्रीहरि सनमाने

दो० हरिपदपंकज नाइ शिर, निजनिजशिबिरभुवाल।
गयेसकलप्रमुदितअधिक, हिये राखि गोपाल ॥

इहां प्रात मतिद्दग जब जागे ❀ संजय बोलि कहन अस लागे
धर्मराज हरि पहँ तुम जाई ❀ कह्यो बचन निजमति निपुणाई
कलह घटै ज्यहि सम्मति होई ❀ बुद्धि बिचारि कह्यो तुम सोई
मम दिशिते पूछेउ कुशलाता ❀ प्रीति समेत मनोहर बाता
बुद्धिमान कह तुमहिं सिखैये ❀ करहु गहरु जनि तुम अब जैये
सुनि संजय नायो पद शीशा ❀ बिदाकीन्ह नृप दीन्ह अशीशा
रथ अरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये ❀ प्रमुदित धर्मराज पहँ आये
देखि पाण्डुसुत सैन महाना ❀ सुरपति सरिस अचंभौ माना
घण्टानाद मनुज रव नाना ❀ होत कुलाहल सिन्धु समाना
पँवरि द्वार संजय चलि आये ❀ शयन किये हरि अर्जुन पाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नैन।
कनकपलँगअर्जुनसहित, करतकृपानिधि शैन॥

दोऊ कर पुनि दोऊ पानी ❀ चापत चरण द्रौपदी रानी
संजय को आगमन सुनावा ❀ द्रुपदसुता हँसि बोलि पठावा
सुनि सँदेश अन्तःपुर आये ❀ प्रीतिसहित पुनि पद शिरनाये
हरुये चरण धरहु कह रानी ❀ परैं जागि जनि शारँगपानी
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे ❀ अर्जुन सहित उठे रबिनींदे
जीवबन्धु को रङ्ग लजाये ❀ दृग बिलोकि संजय भय पाये
उग्ररूप देखत घनश्यामा ❀ कम्पिततन पुनि करत प्रणामा
संजय दिशि देखा यदुबीरा ❀ बोले घनइव गिरा गँभीरा

दो० कह संजय दुर्योधनहि, समुझावततुमनाहिं।
मरो चहत सबमिलिशठहि, समुझिपरीमनमाहिं॥

धर्मराज को देत न हींसा ❀ अपने बिभव करत बल खीसा
मस्तक काटि सहित परिवारा ❀ लेहौं अंश बाँटि दुइ फारा
भूलो अधम करण बल पाई ❀ वहि पापी सब कुमति सिखाई
सकै न जीति पार्थ के आगे ❀ मरिहै नीच एक शर लागे
जो कदापि अर्जुन कदराई ❀ हनहुँ चक्र गहि शम्भु दोहाई
सुनत बचन संजय भयमाना ❀ करि प्रबोध अर्जुन सनमाना
हे यदुनाथ कृपा अब कीजै ❀ अभयदान संजय कहँ दीजै
पारथ बचन मानि भगवाना ❀ निज सेवक संजय कहँ जाना
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी ❀ बोले मधुर गिरा बनवारी

दो० हरि अर्जुन संजय सहित, चले युधिष्ठिर पास।
सबलसिंह हित सों करत, मगमें बागबिलास॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

कह मुनि जनमेजय सुनि लीजै ❀ कथा अमिय सम पानहि कीजै
धर्मसभा हरि पारथ आये ❀ संजय सहित मोद मन छाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्मराज आगे चलि लीन्हा ❀ हरिहि समेत दण्डवत कीन्हा
अर्जुन धर्मराज पद बन्दे ❀ बैठि सभा हरिसहित अनन्दे
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❀ करि बिनती बहु पद शिर नाये
धर्मराज निज निकट बोलाई ❀ बूझत कुशल सनेह बढ़ाई
कुशलप्रश्न कहि कहत सँदेशा ❀ ज्यहिप्रकार कहिदीन नरेशा
मानत अबहिं नाहिं दुर्योधन ❀ समुझैहौं करिकै बुधि बोधन
तुम सुत चुपकि रहौ दिनचारी ❀ होई मनभावती तुम्हारी
होइ न कलह मिलाप कराई ❀ देव तात तुव अंश देवाई
आशिष कहौ कुशल पुनि बूझी ❀ है नृपकी हति तुमहिं अबूझी
जबते तुम कीन्हों बनबासा ❀ उर न चैन नृप रहत उदासा
नितप्रति दुर्योधन की निन्दा ❀ करत कहत यहु है मतिमन्दा
तुमते कृपा रहत अधिकाई ❀ चलत कहेउ निज निकट बोलाई
आवहु तात देखिनिज आंखिन ❀ मानत मैं न औरहीं साखिन

दो० भ्रातजान मम प्राण सम, जानत सब संसार।
सुनिशकुनी सिख नीच यहि, काढ़ेबिन अपकार॥
दुर्योधन मति परिहरी, बैठिअलीकनबीच।
दृगविहीन मैं जरठ तन, मानतबात ननीच॥

यदपि न मानत बश कुटिलाई ❀ करवैहौं मिलाप बरिआई
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा ❀ कहिहौ सुतन कृपा पुनि कीन्हा
बिन कलङ्क नहिं दोष तुम्हारा ❀ करिकुबुद्धिवहिबिपिन निकारा
तुम पर कृपा करत बनवारी ❀ सकै तात को बात बिगारी
सब बिधि सुत तुम्हार कल्याना ❀ करिहैं कृपासिन्धु भगवाना
गन्धारी आशिष सुनि काना ❀ कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना
पतिव्रता पुनि मातु हमारी ❀ गन्धारी जानत श्रुति चारी
आशिष दीन्ह कृपा करि भारी ❀ सब प्रकार बिधि बात सुधारी

दो० गन्धारी आशिष दियो, बिबिधभांति सनमान।
सुनु संजय कह धर्मसुत, होइ हमार कल्यान॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूछो भीमसेन संजयसे ❀ कहेउ सँदेश पिता कछु हमसे
पाप बुद्धि देखत को सीधे ❀ सुतन नेह ममता महँ बीधे
बिधिवत नृप जानत सब साधू ❀ लीजै मौन न कछु अपराधू
तैसे मौन रहत दिन राती ❀ है पुनि अन्ध सकल कुलघाती
सिखे कुचालि बचन मृदुभाखी ❀ पापमूल बिधि दीन्ह न आँखी
है अति क्रूर सुभाव प्रपञ्ची ❀ भुलवत तुमहिं भूप अब बञ्ची
आँधर आपु अक्ष बिन जाना ❀ बहु पापी अब सकल जहाना
क्रूर बचन सुनि भूपति लरजे ❀ रहउ चुपाइ भीम कहँ बरजे
हीन न कहिय बड़ेन कहँ भीमा ❀ पातक बढ़त बिचारहु जीमा
पिता समान पिता को भाई ❀ कहउ न कछु तुम रहउ चुपाई
उन कहँ पुत्र लोभ अति जीते ❀ मोह हमार तज्यो कबहीते
भूप बचन सुनि भीम चुपाने ❀ बोले नकुल बीररस साने

दो० सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार ।
दुर्योधन होइ काल बश, करत क्रूर अपकार ॥

नहिं कछु कोउवा कहँ समुझावत ❀ नाहक सब मिलि बैर बढ़ावत
फिरि पाछे सब तुम पछितैहौ ❀ मेरे युद्ध ते फेरि न लहिहौ
भीषम बिदित सत्य ब्रत धारी ❀ त्यागेउ राज्य लोभ अरु नारी
बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना ❀ गतबिलोकि कहै सकल जहाना
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ ❀ सब लायक जानत सब कोऊ
भूरिश्रवा बीरता माते ❀ सकैं न युद्ध जीति सुर ताते
बाहलीक की बड़ि प्रभुताई ❀ जीति धरा जिन बाँह पुजाई
सभा मांझ शठ द्रुपदकुमारी ❀ केश पकरि वह कीन्ह उघारी
दुर्योधन की बिभव बिलोकी ❀ कुरुपाण्डव कोउ सक्यो न रोकी
कृप अरु द्रोण बड़े बलधामा ❀ रहे चुपके तहँ अश्वत्थामा
समुझिपरी सम्मति सबहीकी ❀ करणहु कही बात नहिं नीकी
एक एक जीतहिं संसारा ❀ उनहिं निदरि पावत को पारा
एकौ कोऊ भये न सङ्गी ❀ समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जस उनके तस सकल हमारे ❀ पापबुद्धि करि केहु न निवारे
सुनि सहदेव कहत सुन भ्राता ❀ हैं हमरे रक्षक सुरत्राता

दो० नग्न करन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय ।
रही लाज पट ना घट्यो, कृतसहाय यदुराय ॥

हैं यदुनाथ हमार सहायक ❀ कहौ कवन उत इनके लायक
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी ❀ कह संजय ते नयन तरेरी
नीचन के बल खल बौराना ❀ धर्मराज कहँ तृणसम जाना
याही भूल मीचु शठ केरी ❀ संजय सत्य प्रतिज्ञा मेरी
पाण्डुसुतन को काज सुधरिहौं ❀ वंश नाश कौरव को करिहौं
जो नहिं देइ युधिष्ठिर अंशू ❀ रहै न धृतराष्ट्रक को बंशू
ताते तुम संजय समुझावहु ❀ धर्मराज को अंश देवावहु
सुनि संजय बिनवै करजोरी ❀ सुनहु नाथ यक बिनती मोरी

दो० अरुणनयनभृकुटीकुटिल, लखिहरिरूपकराल ।
संजय शोच सँकोच बश, बिनवत श्रीगोपाल ॥

दूत कर्म ते बचन बखाना ❀ मैं तुम्हार अनुचर भगवाना
लै संदेश नरेश पठायो ❀ सत्यबचन बलि तुमहिं सुनायो
अब जस कहब करौं तस जाई ❀ दोष हमार कवन यदुराई
करब न करब भूप के हाथा ❀ अस कहि प्रभुपद नायो माथा
परम चतुर संजय कहँ जाना ❀ बिहँसे कृपासिन्धु भगवाना
बुद्धि सराहि करी अतिदाया ❀ प्रीतिसहितनिजनिकटबोलाया
मोर सँदेश तात कहि दीजो ❀ निज नरेशते भय मति लीजो
राज्य युधिष्ठिर को तुम देहू ❀ तजि अभिमानकलह किनलेहू
जो न सुनहु यह बचन हमारा ❀ करहुँ निपात सकल परिवारा

दो० अंश युधिष्ठिर को तजहु, मानहु बचन हमार ।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार ॥

अस कहिपुनि राजीवबिलोचन ❀ रहे चुपाइ दास दुखमोचन
भीमसेन संजय के आगे ❀ कहन सँदेश क्रोध करि लागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठि सभामहँ मारि चपेटा ❀ फारौं गाल बिदारौं पेटा
दुर्योधन क्षणमहँ संहारौं ❀ दुश्शासन के भुजा उखारौं
कौरव जियत जान नहिं देहौं ❀ एकौ युद्ध भूमि जब ऐहौं
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें ❀ तबलग कुशल गदाकरलीन्हें
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा ❀ भीमसेन जो बचन उचारा
दीन्हे अंश मिटै सब रारी ❀ समुझौ दिशिते कहेउ हमारी

दो० समुझावहु निजतनयअब, देइ अंश नरनाह ।
तात तुमहिं हित होइगो, अनहिततजुमनमाह॥

यह संदेश कह्यो तुम मोरा ❀ यामें भूप होत हित तोरा
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे ❀ जैहैं भूप उभय दिशि मारे
ताते तात सो करिय उपाई ❀ होइ संधि जेहि मिटै लड़ाई
धर्मराज कहि दीन्ह सँदेशा ❀ भल जानेहु तस करेहु नरेशा
देउ भूमि तब मिटै लड़ाई ❀ बाढ़ै भूप कीर्त्ति सुखदाई
अस कहि संजय फेरि पठाई ❀ रहौ कृष्ण पद शीश नवाई
धर्मराज ते बिदा कराये ❀ तब अरूढ़ होइ गजपुर आये
अन्तःपुर जहँ बैठ नरेशा ❀ गालवगण तहँ कीन्ह प्रवेशा
करि प्रणाम पुनि आप जनाये ❀ सुनि महीप निजनिकटबुलाये
कुशलप्रश्नम्वहिंसकलबतावहु ❀ जो उन कह्यो सँदेश सुनावहु

दो० गात कम्प गहवर भये, कहिनसकत कछु बैन ।
जो कछु कह्यो सँदेशनृप, पीतम पङ्कजनैन ॥

धरि धीरज सञ्जय अस भाखत ❀ सुनहु भूप कछु गोइ न राखत
अब उनके नृप सेन अपारा ❀ गजरथ अरु पदाति असवारा
चालिस सहस भूप जिन जोरा ❀ अक्षौहिणी सप्त घनघोरा
नृपति बिराट द्रव्य समुदाई ❀ दीन्हो द्रुपद राज्य यदुराई
बिभव बिलोकि धनेश लजाहीं ❀ केहि पटतर दीजै कोउ नाहीं
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई ❀ देखे बनै न बरणि सिराई
दीन्हो एक द्विरद भगवन्ता ❀ शङ्ख बरण सुन्दर चौदन्ता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तापर भूप करत असवारी ❀ मन्दर से उन्नत है भारी
गन्धर्वन जे दीन्ह तुरङ्गा ❀ चित्र बिचित्र मनोहर अङ्गा
ते तुरंग नाकुल के घोरे ❀ धावल चपल चलत शिरमोरे
अरुण बाजि सहदेव सोहाये ❀ जीवबन्धु को रङ्ग लजाये

दो० भीमसेन के हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरङ्ग ।
बायुबेग मग अतिचपल, हरित सुआ के रङ्ग ॥

श्वेतबरण अर्जुन हय राजत ❀ उच्चश्रवहु देखि मन लाजत
मुकुट समेत अमोलिक माला ❀ करि अतिकृपा दीन सुरपाला
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❀ पहिराये जेहि मृत्यु न होई
अछै तूण दीन्ह्यो जलनायक ❀ घटइ न शर साधे जेहि शायक
तस पँचकर्म धनुष गण्डीवा ❀ दीन्हो अनल जगत की सीवा
देवदत्त दीन्हे भगवाना ❀ शङ्ख अनूपम सब जग जाना
जासु महारव घोर प्रचण्डा ❀ पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा
बृषपर्वा की गदा बिशाला ❀ दीन्ह्यो भीम कही नँदलाला
नकुलहि की बरणत तरवारी ❀ दीन्ही अतिप्रचण्ड बनवारी
शङ्कर नन्दिघोष रथ दीन्हा ❀ अर्जुनकहँ निर्भय पुनि कीन्हा

दो० धर्मराज अब इन्द्रसम, बिभव को सकै बखानि ।
सुनहु भूप सन्देह नहिं, जहँ श्रीपति सुखदानि ॥

अर्जुन कीन सखा हनुमाना ❀ लङ्का बिजय सकल जगजाना
सावधान होइ सुनहु नरेशा ❀ अब पाण्डवको सुनौ सँदेशा
छलकरिदीन्ह्यो बिपिन निकारी ❀ दीजै अंश न कीजै रारी
दुइमा भूप भली जो जानौ ❀ अब न बिलम्ब बेगि सो ठानौ
याही भांति कह्यो यदुराई ❀ तजहु अंश नहिं रचहु लराई
रणमहँ पकरि सुदर्शन पानी ❀ कौरवकुल की घालौं छानी
करत अनीति करण बलसेती ❀ तेहिकी बात नीच कहु केती
क्षणमहँ सब कौरवदल मरिहौं ❀ राज्य युधिष्ठिर को बैठरिहौं
उनको अंश छांड़ि तुम देहू ❀ तजि अभिमान अभयपद लेहू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश ।
सुनि उपदेश जो चित चहै, सो अब करहु नरेश ॥

सञ्जय बचन सुनत उर दहेऊ ❀ बिकल बिशेषि भूप अस कहेऊ
मात पिता को करि अपमाना ❀ कालबिबशासिखसुनतनकाना
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखी ❀ समुझावहुँ सबबिधि तुम साखी
बल बिहीन ते जरठ न आंखी ❀ सुनत न बचन पाप अभिलाखी
तृणसमान मोको शठ जानत ❀ सुनत श्रवण एकौ नहिं मानत
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई ❀ सत्य नाथ कहि पद शिरनाई
सब जानत तुम ज्ञान अरूढ़ा ❀ पुनि कहिगयो गिरा यह गूढ़ा
हमहूँ नाथ तुम्हार सिखाये ❀ सब प्रकार कहि भेद बताये
भयो द्यूत तब तुमहिं न जाना ❀ लक्षभवन बिनमत निर्माना

दो० तजि मनकी अवरेव अब, समुझावहु कुरुनाथ ।
रहत रैनि दिन मैं सदा, नाथ तुम्हारे साथ ॥

मेटहु कलह भूप सज्ञाना ❀ जग भल कहै लहै कल्याना
होइ सुयश कीरति उजियारी ❀ मिटै कलङ्क होइ सुख भारी
होइ प्रसन्न त्यागि नृप रञ्जय ❀ असकहि भवनगये पुनि सञ्जय
धृत्तराष्ट्र सबही के आगे ❀ सुतकी करन धर्षणा लागे
कपट द्यूत रचि नीच निकारा ❀ करण सीखते करि अपकारा
सौबल शकुनि कुमन्त्र सिखावा ❀ उन यह बन्धु बिरोध करावा
सञ्जय बचन कहत हैं सांचो ❀ सम प्रिय पुत्र एकसौ पांचो
जो सब सम कत बैर करावत ❀ संधि कराइ न कलह बहावत
यह सम्भव तन बात अरूठी ❀ तात न समुझिपरत कछु झूठी
दीन्ह धरा धन साज समाजा ❀ तुम कीन्हे दुर्योधन राजा
भीषम बिदुर तुम्हारइ अज्ञा ❀ कृप अरु बाहुलीक तुव सज्ञा
द्रोणी द्रोण तुम्हार सहायक ❀ त्रिभुवन बिजयकरन केलायक
धरि कारागृह देहु बँधाई ❀ दुर्योधनहि निगड़ पहिराई
निब्बानबे पुत्र बल भारी ❀ तेइ नरेश तुव आज्ञाकारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और सुतहि राज्य नृप दीजै ❀ फिरि मन चहै बात सो कीजै
सुनि निष्ठुर संजयमुख भासा ❀ गयो जानि नृप भयो उदासा

दो० सबलसिंह चौहान कह, वाक्य बिलास बनाइ ।
बोलेउ बिहँसि नरेश तब, संजय को बहलाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

जनमेजय सुनि मन अनुरागे ❀ पूछै बहुरि ऋषै सों लागे
कथा अमृत रस मोहिं सुनाई ❀ होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई
अब प्रभु कहौ सहित बिस्तारा ❀ मिटै नाथ संदेह हमारा
कह मुनि समुझिपरै भ्रम त्यागे ❀ चित्र बिचित्र चरित जस आगे
धृत्तराष्ट्र मन अति संदेहा ❀ कहत बचन संजय से एहा
उरअतिदाह नींद नहिं आवत ❀ कलहदेखि मन शोच जनावत
पाण्डुतनय मम घोर भ्रकारी ❀ कुलमहँ होत मिटत नहिं रारी
चुपकै दैन मिलैगदा बिशाला ❀ यह नहिं देन कहत अवनीशा
अस बिचारि असमंजस मोही ❀ दुर्योधन खल अतिकुलद्रोही

दो० संजय ते बोले बिलखि, करि चितचेत भुवार ।
भ्रात जनावत तनै इत, बाढ़यो कलह अपार ॥

यामें उभय प्रकार बिगारा ❀ ताते मन कछु थिर न हमारा
तुम सुत जाहु बिलम्ब न लावहु ❀ बिदुर बोलाइ इहां लै आवहु
सुनि संजय उठि तुरत सिधाये ❀ पलमहँ बिदुर भवन कहँ आये
कुशआसन पर ज्ञान अरूढ़ा ❀ साधत योग बैठि गतिगूढ़ा
कुण्डलनी तजि मूल उठाये ❀ निरखत परम ज्योति सुखपाये
सहस पत्र को कमल जो फूला ❀ तापर पुनि हरिध्यान अमूला
इड़ा पिङ्गला दूनों श्वासा ❀ साधत करत सुषुमना वासा
नासा ऊपर करि अनुरूपा ❀ निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा
रसना उलटि कण्ठ अवरोधी ❀ सूधो कीन्ह कमल तन शोधी
मेरु दण्ड सम आसन लीन्हे ❀ पुनि षटचक्र बिदारण कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० पापिनिसाँपिनिदुःखगति, करि रसना पुनि रोक ।
पित्रतसुधारस यतनयुत, जेहितनरहत विशोक ॥
अङ्गन सहित योगगति साधी ❀ करत ध्यान पुनि लाइ समाधी
तब संजय करि यतन जगावा ❀ चलहु बेगि अब भूप बोलावा
अर्द्धनिशा सुनि आयसु पाये ❀ बिदुर बेगि पुनि मन्दिर आये
गान्धारी अरु भूप अकन्ता ❀ अभिबादन पुनि कीन्ह तुरन्ता
कहेउ नरेश बिदुर इत आवहु ❀ मम समीप चिततपनि बुतावहु
संजय कह्यो सँदेशो बते ❀ मोकहँ नींद न आवत तबते
अब उपाय कह्यो तुम्ह ई ❀ बुधि बिचारि ज्याहि बचै लराई
संजय सो सँदे ध्व पायउ ❀ सो नरेश सब बरणि सुनायउ
दो० कहेउ बिदुर तब भूपते, तुवसुतबशअभिमान।
जोसिखवतमनमानिहित, करत न सो कछुकान॥
देइअमियकोउप्रीतिकरि, त्यागि करत बिषपान।
दुर्योधन मति परिहरी, बिधिगतिअतिबलवान॥
कृत नरेश को सब परिवारा ❀ करहि नाश यह तोर कुमारा
देखहु शठ हठशील अभागी ❀ प्रकटो यथा दारु ते आगी
हस्तीकुलहि न लागी बारा ❀ एकहि साथ करहि सब छारा
शत कुमार गान्धारी जाये ❀ बेश्या पुनि युयुत्सु उपजाये
जब भये तनय एकशतएका ❀ गर्दभ शब्द भयो अरु एका
श्वान शृगाल भयंकर बोला ❀ कररत काग धरा गइ डोला
भूप यज्ञ थल आनि शृगाली ❀ करत फेकार क्रूर भयवाली
सुरज्ञानिन इमि बचन उचारा ❀ कुलनाशक नृपतनय तुम्हारा
उपजेउ कहो हमारो कीजै ❀ गढ़ा खोदाय गाड़ि अब दीजै
दो० पुत्रलोभते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ ।
होनी होइ सो होइ नृप, को करिसकै मिटाइ ॥
कुलघालक नृप तनय तुम्हारा ❀ जगमहँ प्रकट कीन्ह करतारा
बरजत बात करत चतुराई ❀ अन्तर भूप अनीति सिखाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कपट निपुण अरु परसन्तापी ❀ हौ तुम नाथ जन्म के पापी
तुम्हरे मन की जाननहारा ❀ है नरेश सब दास तुम्हारा
तुव भल चहत कहत अस बानी ❀ म्वहिं नरेश कछु लाभ न हानी
बिन पूछे मैं यहहू कहहूं ❀ सहिदुखदुसह चुप्प पुनि रहहूं

दो० जो पूछा तो करो अब, तजि मन की अवरेव।
अंश युधिष्ठिर को तजहु, करि करुणा नरदेव॥

जानेउ राव मर्म सब जाना ❀ बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना
सो बहराइ कहत अस राजा ❀ भ्राता सुनहु हिये जस भ्राजा
अब उपाय कछु बन्धु बतावत ❀ शोच बिबश कछु नींद न आवत
पाण्डुतनय ममतनय कुचाली ❀ करत बिरोध सुनहु गुणशाली
सो मेटहु कछु यतन बिचारी ❀ सुनत बिदुर मृदुगिरा उचारी
पाण्डुसुतन की कछुन अनीती ❀ उन अपने बल जो महि जीती
सोऊ देत न तनय तुम्हारा ❀ मिटै कलह क्यहि भांति भुवारा
पितृ पितामह अंश न देहू ❀ जीति देहु करिये नृप नेहू

दो० लेहु सुयश मेटहु कलह, करि करुणा तुम राइ।
ऐसे हीने पाण्डुसुत, जो वै रहैं चुपाइ॥

वै नहिं कालहु को भय मानत ❀ तृणसमान तुव पुत्रन जानत
हैं सहाय यदुनायक जाके ❀ कस न होइँ निर्भय मन ताके
कृष्ण भरोस मानि मन माहीं ❀ जीतत समर डरत कछु नाहीं
अबलग मोहनिशा तुम शोचते ❀ मन जानत उनकहँ हम प्रभुते
बरजत प्रभू युधिष्ठिर भाई ❀ त्यहि कारण नृप रची लराई
जब जब भीमसेन मन माखत ❀ तब तब बरजि बरजि नृप राखत
दुर्योधन कहँ नृप समुझाई ❀ मिटै कलह सो करहु उपाई
है महिपाल बात यह नीकी ❀ तुम्हरे कहत परम हितहीकी

दो० मनसा बाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहिं, अनहित बचै तुम्हार॥

जबलगि भीमसेन बलदाई ❀ रचत युद्ध नहिं तलहिं भलाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ ❀ है साहसी बिदित सबकाऊ
कालहु की भय नेक न मानत ❀ सो नरेश नीके तुम जानत
यक्षराज अर्जुन ते हारे ❀ सो जाने सब भेद तुम्हारे
लङ्कापुर दांड़ेउ सहदेऊ ❀ सो तुम्हार जाना है भेऊ
शंकर शत्रु धनंजय जीते ❀ देव अदेव जासु भयभीते
सके जीति नहिं पवनकुमारा ❀ कीन्हे सखा बिदित संसारा
त्रिभुवनपति बैकुण्ठ बिहारी ❀ हैं तिनके सहाय गिरिधारी
है अनन्य हरिभक्त अतीवा ❀ जीतै को पाण्डव बलसीवा
पश्चिम देश नकुल सब झारी ❀ जीते यमन जाल बल भारी
ते सब धर्मराज अनुगामी ❀ दीजै अंश बात सुनु स्वामी
कह भूपाल सत्य सुनु भाई ❀ देत मीच नहिं मोरि देवाई
यह सुनि बिदुर उतर पुनि दीन्हा ❀ बरजत रह्यो भूप जब कीन्हा
तब रुख लखि मैं रह्यउँ चुपाई ❀ कह्यउँ नाथ तुम सबै सुनाई
दुर्योधन कह तुम दुखदाई ❀ सुनहु नाथ नहिं मोरि सिखाई
राज्ययोग नहिं लक्षण चीन्हो ❀ मन्त्री कर्म त्यागि हम दीन्हो

दो० राजछोड़ि नरनाह सुन, कबहुँ न होइ उछाहु ।
करहिं अवज्ञा पुत्र जब, तब नितनित पछिताहु ॥
राज दियो दुर्योधनहिं, पुत्र प्रीति ह्वै लीन ।
तुम्हरो भोजन पानअब, नृप उनके आधीन ॥

दुर्योधन कहँ कीन्ह्यउ नाथा ❀ सर्बस भूप तज्यउ निज हाथा
अब शोचत नहिं प्रथम सँभारे ❀ असकहि बिदुर नयनजलढारे
सुनौ भूप बिधि रेख लिलारा ❀ लिखी ताहि को मेटनहारा
दासीयोनि जन्म जहँ पावा ❀ ताते तात न बनै बनावा
हमहुँ बिचित्रबीर्य के बेटा ❀ मगमहँ चलत भई नहिं भेटा
धनुबिद्या भीषम जो दयऊ ❀ सो मोहिं नाथ बिसरिनहिंगयऊ
तुम अरु पाण्डव सखा हमारे ❀ पातक होइ दोउ के मारे
पाण्डुपुत्र तुव पुत्र अभागे ❀ कलह बिलोकि अस्त्र हम त्यागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करि नहिं सकै और कोऊकी ❀ समगति हम न भूप दोऊकी
दो० दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहिं बात।
परमचतुरगुणनिधिबिदुर,समुझिसमुझिपछितात॥
अहोदेव तुम मति हरिलीन्ही ❀ अति कुबुद्धि कुरुनाथहि दीन्ही
हानि लाभ तुव बश मैं जाने ❀ अस कहि बिदुर बहुत पछिताने
धृत्तराष्ट्र मन शोच अपारा ❀ कहत बिदुर ते बारहिं बारा
दुर्योधन अति कीन अनीती ❀ सो मैं भलीभांति सब चीती
संजय गिरा मानि बिश्वाशू ❀ जानेउ बन्धु भरत कुलनाशू
धन मदमत्त अधम अपकारी ❀ कीन नगिनि शठ द्रुपदकुमारी
सोसुधि उनहिं बिसरिकिमिजैहै ❀ दुर्योधन के आगे ऐहै
अबहुँ न शठ समुझत समुझावा ❀ बिन कारण को बैर बढ़ावा
अबम्वहिं समुझिपरतमनमाहीं ❀ बाढ़्यो कलह बार कछु नाहीं
दो० दुर्योधन के मन बढ़ेउ, सुनहुबिदुरअभिमान।
सिखवत मैं बिधि कोटिते, सो कछु करत न कान॥
बीतिगई यामिनि युग यामा ❀ आवत नींद न मन बिश्रामा
करहु बिचार यतन अब सोई ❀ जाते बन्धु बोध मन होई
भये बिकल लखि मन दुख पावा ❀ कीन बोध पुनि पद शिरनावा
आवाहन करि बिदुर बोलाये ❀ सनकादिकबिधिसुतचलिआये
नृप प्रबोधि मन मोद बढ़ाये ❀ पुनि मुनि सत्यलोक कहँ आये
संजय पठवो बोलि सुयोधन ❀ लागे भूप करन सब बोधन
गन्धारी अरु बिदुर बुझावा ❀ कालबिबशकछुमनहिंन आवा
सबकहँ प्रीति उतरु पुनि दीन्हा ❀ गयोभवन सिखकान न कीन्हा
दो० भानुमती तब हँसि कह्यो, कहिये नाथ हेवाल।
गये बेगि पितु भवनते, आये बहुरि भुवाल॥
अन्ध बधिर हठशील अनामी ❀ कूर कुबुद्धि कृपण अरु कामी
मत्त प्रमत्त जरठ बश ओरे ❀ नीचप्रसङ्गी अरु मति भोरे
ऐसे पितुको कहा न कीजै ❀ पकरि ताहि कारागृह दीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नीचप्रसङ्गी पिता हमारा ❀ दासीसुतहि दीन्ह अधिकारा
कहत भूप जो बिदुर सिखावत ❀ ताते कछु मो मन नहिं आवत
द्वै करजोरि कहत तब रानी ❀ करि करुणा करिये मम बानी
देखहु समुझि भरत कुलटीका ❀ पितु निदेश परिहरब न नीका
सो सुनि अधम बहुत रिसबाई ❀ कहि कटु बचनन दीन्ह दुराई
भइ मन त्रासग्रसित तब रानी ❀ गई पराइ भवन भय मानी
प्रातहिं यहां धर्मसुत जागे ❀ हरिहि समोद जगावन लागे

दो० अस्ताचल हरनी रुचिर, शृङ्ग शृङ्ग उतमङ्ग ।
खजुआवत सुखते सुखी, चूं चूं करत बिहङ्ग ॥
करत प्रकट पुनि प्रातरबि, बालक सहित उछाहु ।
कूक कपोतन की मनहुँ, प्राचीदिशि को राहु ॥

अरुणचूड़ बर बोलन लागे ❀ फूले कमल भ्रमर अनुरागे
वहत पक्षिगण तजन बसेरा ❀ करत मधुरस्वर नाद घनेरा
चरन मानसर हंस सिधाये ❀ उड़त हलावत परन सोहाये
सकुचे कुमुद उलूक निवासा ❀ अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा
यथा अनीति सुराज नशाने ❀ बञ्चक चोर सभीत छिपाने
शशिद्युतिरह्योचरणगिरिआधी ❀ जिमि निर्बलनृप बिगत उपाधी
रबिभयमानि शरणतकिआवा ❀ मनहुँ प्रतीची शशिहि छिपावा
तरुबर बास शिखण्डिन त्यागे ❀ करि मृदुरव निर्त्तत सुख पागे

दो० भयो प्रात अब करि कृपा, जागे राजिवनैन ।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्मराज के बैन ॥

तेहि अवसर बन्दीगण बागे ❀ पुनि यदुबंश प्रशंसन लागे
धर्मराय हरिपद शिरनाये ❀ पुलकितगात नयन जल छाये
परमानन्द प्रेम उर आवा ❀ प्रभुछबि देखि निमेष न लावा
श्याम सजल घन सरिस शरीरा ❀ दृग राजीव हरण जन पीरा
आनन इन्दु सहित मृदु हासा ❀ लोल कपोल मनोहर नासा
खुलत दशन अतिद्युति दरशाई ❀ तड़ितप्रभा जेहि देखि लजाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्नतभालभृकुटिश्रुतिकुण्डल ❀ जनुयुगरबिअहिगहिशशिमण्डल
करत बिचार सुयश यह लीजै ❀ अमि अँचवाइ अमरपद दीजै
रबि रथ बन्धन कहि करगाये ❀ प्रतिउपकार करण जनु लाये
बृषभ कन्ध अरु कम्बुक ग्रीवा ❀ अति बिचित्र शोभा की सीवा
क्रीट मुकुट शिर सोह बिशाला ❀ नवतुलसीदल गजमणिमाला

दो० भुजप्रलम्ब पुनि करकमल, मुखउदार केयूर ।
उरबिशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जनशूर ॥

कटि केहरी उदर त्रयरेखा ❀ कहि न सकैंबबिकबिशतशेखा
नाभि गँभीर देखि मति धुमरी ❀ मानहुँ तरणितनयजलकुमरी
पीतबसन शोभित शुचि फेटा ❀ सजल जलद जनुजटित लपेटा
जङ्घ पींड़नी नयन निहारे ❀ उपमा कहि न सकत कबि हारे
हरिपद ते प्रकटी पुनि गङ्गा ❀ धरी शीश पर बैरि अनङ्गा
तापद की उपमा का दीजै ❀ जो कछु कहिय सो अल्प गनीजै
शापशिला गौतम की नारी ❀ जे पद परशि पलक में तारी
जे पदपद्म पखारि निषादू ❀ भयोबिदितजगबिदित बिषादू
जे पदपद्म चारि श्रुति गाये ❀ चापत सिन्धुसुता उर लाये
ते पद निरखि युधिष्ठिरराई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई
अस्तुति करत भरत जललोचन ❀ जय रुक्मिणीरमण अघमोचन

दो० जय जय श्रीवृन्दाबिपिन, बासी नाशी पाय ।
अबिनाशी गति देत तुम, दास न देव दुराय ॥

चरणशरण कहि नाम पुकारत ❀ ताके नहिं गुण दोष बिचारत
चरण शरण कहि द्विरद सुनायो ❀ त्याग्यो गरुड़ गगनपथ धायो
कहुँ पट पीत गिरी कहुँ माला ❀ हरी बिपति पुनि दीनदयाला
ग्राहनिधनकरि शुभगति दीन्ही ❀ तहँ गजराज बिनय बहु कीन्ही
शापकथा कहि दोष मिटावा ❀ पुनि गजेन्द्र निजलोक पठावा
शबरी नाम अपावन नारी ❀ परी चरण कहि शरण पुकारी
कृपा दृष्टि देखी बनवारी ❀ चढ़ि बिमान बैकुण्ठ सिधारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपा निषादराज पर कीन्हा ❋ भालुकीशनिजसमकरिलीन्हा
रावणबन्धु बिभीषण नामा ❋ कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा
करि करुणा हरिलीन्ह बिषादा ❋ भक्तशिरोमणि भे प्रहलादा
अगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा ❋ अबिचलपदवी ध्रुव कहँ दीन्हा

दो० केशी हर कल्याण कर, कृपासिन्धु भगवान।
क्रूर कपूतन को सुगति, कवन देय बिन कान॥
बालमीकि उलटा जपे, कह्यो आधही नाम।
सबलसिंह चौहान कहि, दीन्ह्यो अबिचल ठाम॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गणिका गीध अजामिलतारण ❋ गोपीपति गोत्रास निवारण
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन ❋ जनकसुता दुखदुसहबिखण्डन
हरिजनहृदय पयोधि मराला ❋ रहत बिहार करत सब काला
गिरिवरधारी नाथ छबीला ❋ नारायण श्रीकन्त रँगीला
माखनचोर चतुर्भुज स्वामी ❋ पद्म गदाधर अन्तरयामी
ताते बिनय मानि प्रभु मोरी ❋ दुर्योधन गृह जाहु बहोरी
मानहि सो न बिबशअभिमाना ❋ पुनरागमन करिय भगवाना
करि बहुयतन ताहि समुझावहु ❋ अपनी दिशिते चूक न लावहु

दो० समुझावहुप्रभुबिबिधबिधि, जाइय अबतीबार।
होइहि होनेहार पुनि, जोबिधिलिखालिलार॥

सुनि यह बचन कृष्णहँसिदीन्हा ❋ नीक बिचार भूप तुम कीन्हा
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ ❋ बोलिय सकल भूप अब तेऊ
सब मिलि करहिं मन्त्र उपदेशा ❋ कहेउ कृष्ण तस करिय नरेशा
सुनि नरेश सोइ बेगि बोलाये ❋ भीमादिक भ्राता चलिआये
द्रुपद बिराट और सब राजा ❋ धर्मराज पहँ जुरेउ समाजा
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी ❋ चलि आई जहँ शारँगपानी
कह हरि सुनहु सकल मनलाई ❋ पठवत हमहिं युधिष्ठिरराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सन्धि हेतु दुर्योधन भवनहिं ❀ कहिये मन्त्र रहौ जनि मौनहिं
निजनिजमति जनि राखौ गोई ❀ सबमिलिकहौ करिय अब सोई

दो० धर्मराज सुनि हरिबचन, कही सबनते बात।
कहिये मन्त्र बिचारिकै, कृष्णदेव उत जात॥

बुद्धिबिचारि सकलमिलिभाखौ ❀ अबनिजमन्त्र गोइ नहिं राखौ
करियमिलाप कि कीजियरारी ❀ तौन बात अब कहौ बिचारी
कहेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्मा ❀ त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा
केशपाणि धरि द्रुपदकुमारी ❀ सभामध्य वह कीन्ह उघारी
सुमिरण तुमहिं दीन ह्वै कीन्हो ❀ दीनदयाल राखि तब लीन्हो
लाक्षसदन चलि हमहिं पठायो ❀ अर्द्धराति महँ अनल लगायो
लीन्हेउ राखि तहां ते बाचे ❀ हरिकी कृपा अल्प नहिं आंचे
बिषमोदक वहि नीच खवायो ❀ रह्यउ न चेत जँजीर मँगायो

दो० कसेउ लोहगुण सकलतन, डारि दियो ततकाल।
परेउँ गङ्ग की धार महँ, ततक्षण गयोंपताल॥

गयों भूमितल कछु सुधि नाहीं ❀ छहरिगयो बिष सब तनमाहीं
सर्पलोक पहुँचे यदुराई ❀ सुनि सुधि नागसुता तहँ आई
ग्रसिनिआइकरि मोहिं तमासा ❀ नाना भांति करैं परिहासा
बिषतन भरे खुलत नहिं नयना ❀ कछु कछु सुनौं श्रवणपुटबयना
अस्तुति करैं मोहिं लखि मोही ❀ नागकुमारि कामबश भोही
आप सहित मम सुन्दरताई ❀ बर्णत प्रीति करत अधिकाई
करै कष्ट तन हरि हर ध्यावै ❀ बड़े भाग ऐसे पति पावै
देवसुता जाको ललचाहीं ❀ नर नारी क्यहि लेखे माहीं
कर्कोटक तनया सुनि बाता ❀ आई मम समीप हरषाता
अमियसींचिमुखमोहिंजियायउ ❀ जानि बिषयतन ताप बुझायउ

दो० सहरावत पद पाणि गहि, करतप्रीतिअधिकारि।
श्रमितदेखि मोतन करत, बारहिंबार बयारि॥
मृगनयनी हिमकरबदनि, पहिरे भूषण चीर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तननवीन कटिखीनअति, व्याप्यो काम शरीर॥
म्वहिं बिलोकि तनदशा बिसारी ❀ चित्रपुत्रिका की अनुहारी
मम गति लीन्ह बढ़ो अनुरागा ❀ त्यागे लाज मनोभव जागा
देख्यो नागसुता गति लोगन ❀ जाइ जनायो तिन पुनि भोगन
नागसुता मानुष तन राची ❀ भये सक्रोध बात सुनि सांची
गुणमञ्जरी मनुज पति लीन्हो ❀ केहुँ कर्कोटक से कहिदीन्हो
समुझि हिये यह बात अयोगी ❀ चला सकोपि अरुणदृग भोगी
यहां कामबश छांड़ि बिचारा ❀ बरहु मोहिं कह बारहिंबारा
मैं समुझाय कही वहि पाहीं ❀ गुणमञ्जरी उचित अस नाहीं
सुनि यह तोहिं निन्द सबलोगा ❀ नागसुता नहिं मानुष योगा
दो० योगमनुजबर तुमहिं नहिं, देवयोनिमहँ ब्याल।
काम बिबश बरबस हिये, पहिरायो जयमाल॥
क्रोधित व्यथा सर्प समुदाई ❀ ग्रसन मोहिं तेहि थलमहँ आई
कोउ फण एक उभय त्रयचारी ❀ चपलजिह्व चष अतिरतनारी
पञ्च सप्त षट फण को सर्पा ❀ कोउ फण अष्ट करत अतिदर्पा
दश फण नाग पञ्चदश सोऊ ❀ कोउ फण बीस तीस है कोऊ
चालिसकोउ पचास फणयोगी ❀ सत्तरि साठि असी फणभोगी
शतफण एक पञ्चशत एका ❀ नानाबिधि फण सर्प अनेका
उगिलत बिष अरु दृगरतनारे ❀ आशीबिष भारे तन कारे
धूमर लाल श्वेत रँग नागा ❀ हरितपीतअरुबिबिधबिभागा
ग्रसिनिआइमोहिंरिसकरिभारी ❀ देखि बिकल भै नागकुमारी
त्यहि अवसर कर्कोटक आये ❀ चञ्चलजिह्व बदन फैलाये
दो० श्यामबर्ण जनु जलद सम, रसना चलत निहारि।
खुले दशन अवलोकिपुनि, उपमा कहत बिचारि॥
चपलजिह्वमुखबिचअभिरामिनि ❀ चमकत थिरतरहतजिमिदामिनि
श्यामबर्ण सित दशन बिभांती ❀ सघनघटा महँ जनु बगपांती
डरी मनहिं मन नागकुमारी ❀ बिनय कहै बिधि बिष्णु पुरारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उमा रमा हे शारद माता ❋ बिनयकरत राख्यो अहिवाता
तब सुमिरेउ भयहरण कृपाला ❋ आयो गरुड़ सर्पकुलकाला
ताहि देखि सब उरग पराने ❋ जहँ तहँ गये जात नहिं जाने
कर्कोटक खगनाथ निहारी ❋ बलभा थकित करत मनुहारी
प्राण दान दै प्रथम बचाये ❋ अबसक्रोध क्यहि कारण आये

दो० पक्षिराज बोले बिहँसि, सुनहु सर्प शिरताज।
पाण्डव के सन्देह नहिं, रक्षक श्री ब्रजराज॥

सो यदुनाथ चराचर स्वामी ❋ जगतबिदित मैं त्याहिअनुगामी
जो कुलकुशल चहौ अहिराई ❋ मिलि पाण्डव कहँ बैर बिहाई
बचन हमार मानि तुम लेहू ❋ दुहिता भीमसेन कहँ देहू
गरुड़ बचन सुनि तजि सन्देहू ❋ सुता बिवाहिदीन्ह करि नेहू
गुणमञ्जरी सहित भगवन्ता ❋ रह्यो शेष पुनि बर्ष प्रयन्ता
सर्प दया करि तहँ पहुँचाये ❋ गजपुर धर्मराजपहँ आये
समाचार सुनि परम अनन्दा ❋ रक्षा तुम कीन्ही ब्रजचन्दा
मन्त्र हमार सुनिय यदुनायक ❋ कुरुपति निधनकरनके लायक

दो० बिनकारण काढ़े बिपिन, कीन्हेसि शठ अपकार।
तातेकीजियअवशिरण, यह मत नाथ हमार॥

भीम बचन सुनि पुनि सहदेवा ❋ कही नाथ सुनिये जगदेवा
उन हमार कीन्हो अपमाना ❋ नाथ तुम्हार भेद सब जाना
केशाकर्षण शठ अपकारी ❋ सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी
भीषम द्रोण कर्ण के आगे ❋ रञ्चक कानि न कीन्ह अभागे
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत ❋ सुमिरि सुमिरि अजहूंउरशूलत
भूप बचन गजपुर कहँ जैये ❋ हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये
सोवत जागत शरण तुम्हारी ❋ बनै सो करिय उचित बनवारी
श्रुतिकीरति सो धाम सतायो ❋ सन्तानिकमिलि बचनसुनायो
युत प्रतिविम्ब कृष्ण के आगे ❋ क्रोधित बचन कहन सब लागे
द्रुपदसुता कह खल अभिमानी ❋ नाथ तुम्हारि बात सब जानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ताते और बिचार न करहू ❀ अब प्रभु दुर्योधन ते लरहू
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो ❀ सहितबिराटशिखण्डीभाख्यो
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना ❀ अभिमन्यु काशिराजमनमाना

दो० धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबनकरो मत ठीक।
शूरसेन यहि बिधि कह्यो, और बिचार न नीक॥

मैं हरि कहत आपने जीकी ❀ है बिनु युद्ध बात नहिं नीकी
धर्मराज वहि शठ अपमाने ❀ तुम समेत निर्बल करि जाने
और बात सब तजि घनश्यामा ❀ ताते करिय अवशि संग्रामा
कहत नाइ शिर बचन घटूका ❀ सुनिये नाथ क्षमाकरि चूका
पाण्डव सहित अच्छत गोपाला ❀ द्रुपदसुता पुनि फिरत बिहाला

दो० छलकरि दुर्योधन अधम, काढ़ेसि हमहिंबिदेश।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी, गहे दुशासन केश॥

तेरह बर्ष गई हरि बीती ❀ सुधि न लई केहुँ निपट अनीती
पाण्डव सबल जान संसारा ❀ तुम ईश्वर बसुदेव कुमारा
तिनते कछु निसरेउ नहिं काजा ❀ भै बड़िलाज सुनहु ब्रजराजा
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ ❀ द्रुपदसुता को शोक निवारौ
कोटिहु यतन रहौ जनि बरजे ❀ गरजत देखि चराचर लरजे
धर्मराज तब क्रोध निवारो ❀ कहि प्रिय बचन निकट बैठारो
सबलायक तुमको हम जानत ❀ है बड़ पाप गोतके मारत
हे हरि सम्मत कहत पुकारे ❀ होइ नाथ भल मन्त्र हमारे

दो० सुने बचन नरपाल के, द्रुपदसुता अकुलाइ।
बोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिरनाइ॥

क्रूर शूर नहिं भूप हमारा ❀ जानत तुम यदुबंश कुमारा
गहिकै केश सभा शठ आनी ❀ मानत सो न कछुक गिलानी
इन ते होत भली सो नारी ❀ रोदन करत पुकारि पुकारी
तौ कछु बोध हिये हरि होई ❀ सभामध्य वहि खल निदरोई
पुरुषाकार पाण्डुसुत नारी ❀ इनके बल रोंपत महिरारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभिमन्युआदि सप्त सुत मोरे ❀ करिहैं बिजय दास प्रभु तोरे
ममगति देखि लाज पञ्चालहिं ❀ डरैं न कछु निडरैं रणकालहिं
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे ❀ भये कुण्ड ते संग हमारे
रण महँ लरैं टरैं नहिं टारे ❀ करिहैं बिजय प्रसाद तुम्हारे
युधामन्यु मम बन्धु तमोजा ❀ नाम शिखण्डी नयन सरोजा

दो० ममगति देखि सलज्ज सब, करिहैं कठिनमशान।
अस कहिकै पुनि द्रौपदी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
युधिष्ठिरश्रीकृष्णसंवादोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

कहेउ धनञ्जय सुनिये श्रीहरि ❀ काढ़ेसि धर्मराज हीने करि
सब प्रकार जानत जगबन्दन ❀ बली व छली अधमकुरुनन्दन
कपट अक्ष शकुनी निर्मायो ❀ करि छल कीन्हें जूप हरायो
औरो छल कीन्ह्यसि भगवाना ❀ सो चरित्र सुनिये दै काना
कुरु पाण्डव बालक सब भीरा ❀ खेलत रहे गङ्ग के तीरा
विषमोदक भीमहिं तहँ दीन्हो ❀ तबते हम प्रतीति तजि दीन्हो
धर्मराज बन गयउ शिकारा ❀ श्वानसंग युत तुरँग सवारा
परम अकिंचन बिप्र बोलायो ❀ विषमोदक तेहि हाथ पठायो
स्वर्ण सप्तदश दीन अकोरा ❀ पठयहु करहु परमहित तोरा
मोदक धर्मराज कहँ दीजै ❀ पठये हैं कुन्ती कहि दीजै

दो० अशन करायो यतनकरि, कह्यो न नाम हमार।
करि बिनती पठये द्विजहिं, जहँनृपफिरतशिकार॥

जान्यो भेद न द्विज तहँ आयो ❀ धर्मराजते आनि सुनायो
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी ❀ मोदक तुमहिं दियो निजपानी
क्षुधित जानिकै मोहिं पठायो ❀ करहुअशनअसकहिसमुझायो
परम गहन बांधेउ नृप घोरा ❀ बैठे बिटप छाहँ घन घोरा
क्षुधित तृषाते बिकल शरीरा ❀ जानि निवास जलाश्रय तीरा
भोजन तुरत करन नृप लागा ❀ विषगा छहरि देखि द्विजभागा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्राहि त्राहि करि हृदय डराना ❀ छलकीन्हेसि शठ मैं नहिं जाना
तृषावन्त नृप बिष की पीरा ❀ परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा
बिकल बिलोकि कृपाप्रभुकीन्हो ❀ उदक पिआइ त्रास हरिलीन्हो

दो० निकसिततक्षण भूमिते, जल भाजनयुत हाथ ।
पान करायो हरि तृषा, करी कृपा यदुनाथ ॥

जल पिआइ फेरे तन पानी ❀ मिटी तृषा तन ताप बुझानी
छलकरणी मैं तुमहिं सुनाई ❀ बनकी सुनहु बात यदुराई
बन काढ़ेसि शठ करि अपकारा ❀ निधनहेत नित करै बिचारा
दूत आय यह बात जनाई ❀ बनमहँ निकट युधिष्ठिरराई
परम दीन द्विज बेष बनाई ❀ बसहिं बिपिन पर्णशालाछाई
भोजन कबहुँ मिलै कहुँ नाहीं ❀ बसन मलिन जीरण तनमाहीं
तेजहीन तन बिकल बिशेखी ❀ आयों नाथ आजु मैं देखी
दूतबचन सुनि अति सुखपाये ❀ बिहँसि सचिवसबनिकटबोलाये

दो० चरबर आयो सुनु सचिव, धर्मराज कहँ देखि ।
कह्यो सेन ह्वैकै चली, भोजनहीनबिशेखि ॥
कबहुँ खातहैं मूल फल, कबहुँक अँचवतनीर ।
निर्बल भयो शरीर सब, टूटी पर्णकुटीर ॥

सबमिलिचलौ सेनसजिजाइय ❀ मानभङ्ग उनको करि आइय
असकहि चलेउ तुरत कुरुनायक ❀ सेन साजि कर्णादि सहायक
पर्णकुटी ढिग खल चलि आयो ❀ सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो
देखि अनीति सुरेश रिसाना ❀ चलेउ चित्र तब साजि बिमाना
शरनमारि दलब्याकुलकीन्ह्यासे ❀ दुर्योधनहिंबाँधिपुनिलीन्ह्यासि
करि निबन्ध लैगयो अकासा ❀ आरत शब्द करत मन त्रासा
नृपति धनञ्जय आनि छड़ायो ❀ शरन मारि गन्धर्ब भजायो
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी ❀ बलकी बात नाथ सब जानी

दो० सहि न सकत प्रभु एकक्षण, रोवत द्रुपदकुमारि ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हनौं नाथ कुरुनाथ कहँ, बाणशरासन धारि ॥
अस कहि भयो बिलोचन राते ❀ मोचत खुलत मनहुँ मदमाते
जीभनिकारि अधर पुनि चाटत ❀ फरकत जात दशनते काटत
मुखअतिअरुण कुटिलभइभौंहैं ❀ श्वासलेत जिमि ब्याल रिसौंहैं
क्रोध बिवश अर्जुन कहँ जानी ❀ बरजत भूप कहत मृदुबानी
अपनी दिशिते चूक न करहू ❀ मानै जब न बन्धु तब लरहू
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई ❀ जाय उनहिं देवैं समुझाई
जो वह देइँ गाउँ दुइ चारी ❀ रहउ चुपाइ नीकि नहिं रारी
सुनत बचन द्रौपदी रिसानी ❀ हे नृप फेरि कही यह बानी
ममगति देखि न आवत लाजा ❀ निपट अनीति सुनहु ब्रजराजा

दो० बिकल बिलोक्यो द्रौपदी, करि प्रबोध यदुराय ।
जो तुम्हरे मन भावना, सोहम करब उपाय ॥

यहि बिधि कहि यदुनाथ बुझाई ❀ करि प्रबोध पुनि भवन पठाई
नृपसन बिदा मांगि भगवाना ❀ सात्यकि सहित चले चढ़ियाना
पठवन चले नकुल हरि साथा ❀ स्यन्दनकी पटिका गहि हाथा
बिनयकरतनिजबिपतिसुनावत ❀ पुनिपुनिचरणकमलशिरनावत
फिरेउ तात हरिमुख सुनि बानी ❀ बोले नकुल ढरत दृगपानी
गदगद कण्ठ गरे भरि आवा ❀ ऊर्ध्वश्वास लै बचन सुनावा
कौरवपति अतिकीन्ह अनीती ❀ बर्ष त्रयोदश बनमहँ बीती
केश पकरिकै शठ अभिमानी ❀ द्रुपदसुता मन्दिर ते आनी
मारन कह्यो भीम मन रूठी ❀ हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी

दो० क्षत्री ह्वै प्रण भाषई, फिरि न करै ब्रजराज ।
बिदित सकलसंसारमहँ, यातेअधिक न लाज ॥

सभामध्य सुनिये भगवाना ❀ करि रिस द्रुपदसुता प्रण ठाना
दुश्शासन के रक्त नहाई ❀ बांधब कच तब कृष्ण दोहाई
मृषा न प्रण करिहैं निज रानी ❀ सो दुख समुझि सुदर्शनपानी
रहत नाथ मन मोर मलीना ❀ धर्मराज पुनि राज बिहीना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेहि दुखते दुख अति भगवाना ❋ सो अब कहौं सुनिय दै काना
बृद्ध मातु परघर प्रतिपालक ❋ यथा अनाथ होत बिन बालक
पञ्च पुत्र जेहि सब परिवारा ❋ भ्रातजात तुम हरि अवतारा
सो कुन्ती ऐसो दुख पावत ❋ हे हरि नेकु लाज नहिं आवत
अर्जुन कहेउ कर्ण कहँ मारण ❋ तेहि प्रण के रक्षक जगतारण
मन्त्र हमार सुनिय यदुराई ❋ मिटै कलङ्क सो करिय उपाई

दो० हम देखत शठ द्रौपदी, आनीसभा निशङ्क।
खण्डियअरिरणमण्डिकरि, तबयहमिटैकलङ्क॥

असकहिनकुलचरणशिरनावा ❋ करि प्रबोध हरि कण्ठ लगावा
बिहँसि बचन भाष्यो बनवारी ❋ पूजी मन कामना तुम्हारी
मिटिहैं सब सामर्थ कलेशा ❋ धरहु धीर तजि सकल अँदेशा
धर्मशील को कबहुँ अकाजा ❋ होय न नकुल कहत ब्रजराजा
पापिन को सुख स्वप्न समाना ❋ जानहु तात न ठीक ठिकाना
वो अनीतिरत नीति न जानत ❋ तृणसमान त्रैलोकहि मानत
धर्मशील है भूप तुम्हारा ❋ गति अलीक जानत संसारा
नीतिनिपुण मम भक्त प्रबीना ❋ सुर महिसुर गुरुपद मतिलीना
ऐसेन को नहिं होत अकाजा ❋ याहिबिधि करि प्रबोध ब्रजराजा
अब बिलम्ब नहिं दिनदशबीते ❋ करिहौं काज तात मन चीते
भये मुदित सुनि श्रीपति बानी ❋ प्रीति प्रतीति न जाय बखानी

दो० भयो बिदा मन हर्ष अति, पद गहि गोकुलचन्द।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नँदनन्द॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई ❋ सात्यकि सहित चले यदुराई
नगर बारणावर्त्त बसेरा ❋ कीन्हजाइ हरि जाइ अबेरा
हरि सुधि पाइ सकल पुरबासी ❋ आये मिलन ज्ञानगुणरासी
बिबिधप्रकार कीन्ह सतकारा ❋ जोरिजोरि कर हरिहि जोहारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुत भाँति कीन्हे पहुनाई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई
तेहि निशितहां शीलगुणधामा ❀ सात्यकि सहित कीन्ह बिश्रामा
अरुणचूड़ अरुणोदय बोले ❀ कमल बिलोचन लोचन खोले
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो ❀ दारुक बाजि साजि रथ लायो
पुरजनसकल बिदा हरि कीन्हो ❀ भोर भये पुनि मारग लीन्हो
नाना भांति कहत इतिहासा ❀ चलेजात मग सहित हुलासा

दो० पूछेउ सात्यकि जोरिकर, सुनहु रुक्मिणीरौन ।
भारत पद कुरुबंश को, कहौ सो कारण कौन ॥

बोले बिहँसि बचन यदुराई ❀ पूरब कथा सुनहु तुम भाई
यहि कुल भयो भूप दुष्यंतू ❀ शील सनेह सत्यनिधि सेतू
सो शकुन्तला बिदित न काही ❀ भूप बिपिन महँ ताहि बिवाही
भरत नाम तिन सुत उपजायो ❀ भारत सब शशिबंश कहायो
हँसि बोले सैनेश कुमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा
स्वल्प कहे मन बोध न होई ❀ गुप्त कथा जनि राखौ गोई
तब हरि चित्रबिचित्रकहानी ❀ लगे कहन सुनि सात्यकिबानी
सावधान मन थिर करि भाई ❀ अब तुम सुनहु कथा सुखदाई

दो० चन्द्रबंश महँ आइ नृप, प्रकट भयो दुष्यन्त ।
तिनके गुण वर्णन करत, कबेपण्डितशुचिसन्त॥

जनु रचना निज बिश्व सँवारी ❀ रचि बिरञ्चि तेहि दै करतारी
कामकला अबला मन जानहिं ❀ काल समान शत्रुको मानहिं
प्रजा जानि मन पूरण लाहू ❀ सदा उछाह करत सबकाहू
द्विजगण धर्म केर अवतारा ❀ जानहिं हृदय अनन्द अपारा
कुल के बृद्ध स्वल्प सूजाने ❀ सेवक सेवहिं नृपहिं डराने
जाके राज्य अनीति न होई ❀ प्रजा प्रसन्न जान सब कोई
साम दाम पुनि दण्ड बिभेदा ❀ करैं भूप जिमि बरणै बेदा
अतिथि क्षुधारत की सुधिलेई ❀ यथायोग याचक कहँ देई
सुनिसमबुधि बिबेक जिमिहंसा ❀ सुर सिहात करि भूप प्रशंसा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० कल्पवृक्षसम दानकहँ, कीरति शशि अवदात।
भानुसमानप्रतापजग, अधिकअधिकसरसात॥

राजसूय आदिक बिधि नाना ❀ कीन्हे भूप दये बहु दाना
करे अमित जिन यज्ञ अरम्भन ❀ पूरि रहे पुहुमी महँ खम्भन
तासु तेज रवि उदय बिलोके ❀ नृपकिरीट सब कुमुद सशोके
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं ❀ तनसमीप जिमि तनपरछाहीं
बञ्चक चोर उलूक समाना ❀ हेरत मिले न ठीक ठिकाना
सुजन कमल फूले बहुभांती ❀ खलमलीन जिमिउडुगणपांती
भये कोकनद बनिक बिशोका ❀ सुरपूरण बिलसहिं निजलोका
जीवबन्धु सम मित्र सुखारे ❀ फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे

दो० नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्ताहार।
हिमगिरिकी कैलासकी, किधौं देवसरि धार॥
शरद चन्द्र की चन्द्रिका, मानहुँ करत प्रकास।
धवलध्वजासी देवपुरि, ऊपर करत बिलास॥

कुन्द कलीसी कुमुद कलीसी ❀ हाटकसी बगपांति भलीसी
क्षीर फेनु सी गङ्ग रेनुसी ❀ बासुकिसी सुरपति कि धेनुसी
कामधेनुसी फटिक शिलासी ❀ बेलासी करपूर बिलासी
गणपतिसी हरसी गिरिजासी ❀ कीरति बिशद नदी बिरजासी
शांति सत्यसी संतबसनसी ❀ उदधि उदधसी द्विरददसनसी
की तुषार की तरणि तरङ्गा ❀ किधौं बिष्णुतन बिशद कुरङ्गा
नृपतिकीर्ति जनु श्वेतबिताना ❀ भरतखण्डमण्डल महँ ताना
दान ज्ञान द्वौखंभ बिभागे ❀ नाना सुत सिरसाकसि लागे
बुधि कनात हरिभक्त चँदोवा ❀ हिंसायुत परदा तहँ जोवा
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा ❀ गुण अनेक को बरणै पारा
अपर कथा अब कहौं बुझाई ❀ चितदै सुनहु श्रवणसुखदाई

दो० कथा भूप दुष्यन्त की, भाषी चित्र बिचित्र।
ज्यहिबिधि भई शकुंतला, सो अबसुनहु चरित्र॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिश्वामित्र महामुनि आये ❀ करत बिपिन तप ध्यान लगाये
तहँ मेनका रूप गुण रासी ❀ जात गगनपथ देवबिलासी
भूषण बसन बिभूषित अङ्गन ❀ गावत राग बसन्त तरङ्गन
बीण बजावत ताल अभङ्गन ❀ निर्त्तगति संगीत उमङ्गन
फूलनको गजरा जु तरङ्गन ❀ उठत सुगन्ध समीर प्रसङ्गन
मुखते मोल कपूर लवङ्गन ❀ अलि गुञ्जतसँग अरग प्रसङ्गन
मुनि समीप उतरी सो आई ❀ करी कलान समाधि जगाई
देखि मेनकहि बिकल शरीरा ❀ मुनिमन भयो मनोभव पीरा
बहुतबार लगि रह्यो निहारी ❀ सुधि न रही तनसुरति बिसारी
बीण बजाइ मधुरस्वर गावत ❀ खेलत फाग गुलाल उड़ावत

दो० मुनित्रिय ऋषितियगाधिसुत, निरखत बारहिंबार।
बिकल युगल तन काम बश, भूलो सब आचार॥

बिश्वामित्र मनोभव जीता ❀ बर्ष एक सम बासर बीता
भई निशा सो मुनि ढिगआनी ❀ करि ढिठाइ तनमहँ लपटानी
जङ्घ जङ्घ सों कटि कटि जोरी ❀ उरसे उर मुनिमति भइ थोरी
अधराधर ऊपर रद दीन्हा ❀ करि चुम्बन आलिङ्गन कीन्हा
करि बिपरीत सुरति बहुभांती ❀ द्वादश मास गये जनु राती
भये बिकल तब मन सुधि आई ❀ खोयो तप बहु कीन भोगाई
रतिकरिकै मुनिबर पछिताने ❀ त्यहि बनते कहुँ अनतपराने
भई सुता बीते नौ मासा ❀ गई डारि सो सुरपति पासा
एक बार नहिं क्षीर पियाये ❀ रोदन करत क्षुधा तन छाये
दीन शब्द सुनि मुनिबर आई ❀ तृणशाला लै जाइ जिआई
मुनि उतंग कीन्ही प्रतिपाला ❀ भई तरुणि बीते कछु काला

दो० सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द।
दिनदिनद्युतिबाढ़ीअधिक, जिमिद्वितियाकोचन्द॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तनसे निकसिज्योतिद्युति भारी ❋ फैलिरही चहुँ दिशि उजियारी
लाजसहित चपअरुण नुकीली ❋ करुणामय सब भांति छबीली
अञ्जन दै दृग रञ्जित कीन्हे ❋ खञ्जन की उपमा हरिलीन्हे
मृग निजदृगपटतर नहिं जाने ❋ लाजमानिमन बिपिन छिपाने
त्रियदृगकरत कमल करि कोऊ ❋ मम मनमें भासित नहिं सोऊ
कमलज फूल तज्यो तन ताहू ❋ ऐसि ज्योति मोहत सबकाहू
नासा सुभग अनूप सज्योती ❋ जगमगात नथबेसरि मोती
नाक समीप मोद अधिकाई ❋ गुरु कबि मन्त्र करत मनलाई
आनन सुभग चन्द्र मदहारी ❋ अधरप्रबाल लाल सुखकारी
भृकुटी बाम श्याम अहिछौना ❋ शशिसमीप जनु रचे खिलौना
कच मेचक तल श्रुति ताटङ्का ❋ घनघमण्ड दामिनी दमङ्का
अधरबीचद्युतिदशन बिभांती ❋ जनु बिद्रुम मुक्ताहल पांती
करि न सकतकबिकण्ठलुनाई ❋ फिरिनरच्योबिधिकरिनिपुणाई
भुज मृणाल भूषण सब अङ्गा ❋ देखि अनङ्ग नारि मन भङ्गा
अति उन्नत कठोर बक्षोजा ❋ गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा
कटिसूक्ष्म कचअँगुली परना ❋ नखअतिअरुणलालद्युतिहरना

दो० अतिसूक्ष्म मृदुउदरपुनि, पुनिअमोलअभिराम।
उपमा कहत बिचारि जनु, रच्यो दुलीची काम॥
जङ्घथम्भ सम कदलिके, उन्नत सुभग नितम्ब।
अतिसुन्दर पिंडुरी लखे, करत मदन आलम्ब॥

अम्बुज सम कर पद अरुणारे ❋ थिर न बुद्धि मोरवान निहारे
तन मन काम सरिस उजियारा ❋ मनहुँ दीप ते दीपक बारा
एक समय दुष्यन्त नरेशा ❋ देखि चकित भे अदभुतभेशा
मृगया फिरत बिलोकत राजा ❋ बिहरत बिपिन करततनसाजा
भयो कामबश ताहि बिलोकी ❋ चितवतचकितनयनजलरोकी
देखि स्वरूप नराधिप फूले ❋ जनु मनमथहि डोल कढ़ि झूले
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे ❋ कबहुँ उरध मन कबहूँ नीचे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करत बिचार नरेश सुजाना ❀ प्रियबश भयो हरे बिधि ज्ञाना
रम्य अरम्य जानि नहिं जाई ❀ समुझिसमुझिनृपमनपछिताई
द्विजकुमारि की भूपकिशोरी ❀ मनमथबिबश करी मति भोरी
बिप्रसुता तब बात अयागा ❀ सुनि परन्तु हँसिहैं सबलोगा

दो० भूप सुता जो होइ तव, बनिआई सब बात।
होइअगम्यतबनीकनहिं,समुझिसमुझिपछितात॥

बिस्मय हर्ष बिबश नरनाहू ❀ धीरे धीरज मन करत उछाहू
मैं अपने मन की गति जानत ❀ कबहुँअसतपथपदनहिंआनत
इत बिधि रच्यउ मोर संयोगा ❀ योग त्यागि नहिं होइ अयोगा
मन्मथ बिबश भूप कहँ जानी ❀ तब यह भई गगनपथ बानी
बिश्वामित्र मेनका नारी ❀ भा बिहार भइ प्रकट कुमारी
सो शकुन्तला सब गुण खानी ❀ तुम नरेश होई यह रानी
गाधिसुवन क्षत्रीकुल माहीं ❀ जानत सब अयोग कछु नाहीं
सुनि उतङ्ग कीन्हा प्रतिपाला ❀ गगनगिरासुनि मगन भुवाला
निकट गये नृप बिबशअनङ्गा ❀ प्रेम सहित करि चपल तुरङ्गा

दो० पूछेउ नृप कित बनफिरत, का पुनि नाम तुम्हार।
सुता अलौकिक कौनकी, मन बश करे हमार॥
बोली बिहँसि शकुन्तला, सुनिये भूप प्रसंग।
तुम क्षत्री हम बिप्र की, सुता मनोहर अंग॥

सुनि उत्तंग बिदित सुखरासी ❀ तासु सुता मैं बिपिनबिलासी
अगम सदा क्षत्रीकुल माहीं ❀ बात अयोग उचित नृप नाहीं
तासु गिरा सुनि कह्यउ नरेशा ❀ जनि बोलहु अस बचन भदेशा
बिधिसुत अत्रि बिदित संसारा ❀ भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा
शशिसुतबुध बुधसुत जगजाना ❀ इला पुरूरव नाम बखाना
त्याहि कुल भयो मोर अवतारा ❀ सम संयोग हमार तुम्हारा
जिमि रतिकाम शचीसुरनायक ❀ जलदयथादामिनि सुखदायक
तिमि संयोग हमार तुम्हारा ❀ बुद्धि बिचार रचेउ करतारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तव स्वरूप सुन्दर जलरामी ❀ मगन होत कुरुपार बिलासी
दो० तुमहिं बिलोकत कुसुमधनु, लिये कुसुमशर हाथ।
तिलतिल तन जर्जर करेउ, ह्वै सकोप रतिनाथ ॥
तब त्रिय रूप ठगोरी डारी ❀ मन्दहास जनु फांस पँवारी
असिपुत्रिका कटाक्ष अमोला ❀ करषत प्राण मन्त्र मिठबोला
बिषमोदक कपोल युग तोरे ❀ निरखत छहरिगयो तन मोरे
अधर सुधारस मोहिं पियावउ ❀ करि करुणा अबबेगिजियावउ
तुम बिन मैं न जियउँ घटिकाहू ❀ समुझत अब न बहुरिपछिताहू
मूरि बिशल्य करन कुच तोरे ❀ परसत मिटै बिथा तब मोरे
संजीवनी तोर सम्भोगा ❀ रहै न काम जो नितमहँ भोगा
है यह योग अवर कोउ नाहीं ❀ ताते बिनय करत तुम पाहीं
दो० नयन बयन तन मिलि रहौ, रही मिलन कहँ देह।
सो मिलाइ असनेह ते, त्यागहु सब सन्देह ॥
कहेउ उतङ्ग सुता सुनु राजा ❀ धीरज धरे सरै सब काजा
पितुआयसु बिन यह बाड़ि हांसी ❀ रहौ चुपाइ जानि निजदासी
कह नृप और बिचार न कीजै ❀ अङ्गदान हितकरि मोहिं दीजै
नैनबैन मिलि मिलेउ सनेहा ❀ यह अभिलाष मिलै सब देहा
सुनि सालज्ज उतङ्ग किशोरी ❀ बोली मधुर गिरा करजोरी
तन इत मन तुम्हरे मन साथा ❀ करि सङ्कल्प रहत नरनाथा
कछु दिन में करिहैं जयमाला ❀ बोलि पिता मुनिदेव भुवाला
डारब सुमनमाल तव ग्रीवा ❀ होइ बिवाह रहै श्रुति सीवा
तुमकहँ देह देइ हम राखी ❀ तजौ शोच नृप सबसुरसाखी
दो० रचेउ बिरञ्चि बिचारिकै, मोर तुम्हार बिवाह।
तुम तजि करहुँ न आनपति, धरहु धीर नरनाह ॥
श्रीहरि हरगिरिजापति आना ❀ बरहुँ तुमहिं की त्यागहुँ प्राना
भजौं न अन पुरुष तन छूटै ❀ पितु निदेश तजि पी कलकूटै
बूड़ौं बारि अनल तन जारी ❀ बरौं तुमहिं की रहौं कुमारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि प्रियबचन तुरँगतजिदीन्हा ❀ तहँ गन्धर्वब्याह करिलीन्हा
काम बिबश नृप ज्ञान भुलाना ❀ आलिङ्गन कीन्हो बिधिनाना
शकुन्तला निज नाम बतावा ❀ पुनिनृपगमनि भवनकहँआवा
तब शकुन्तला मन्दिर आई ❀ दोहद भयो शोच अधिकाई
सो चरित्र मुनिनायक जाना ❀ जोकछुभयोसकलधरिध्याना
पूँछेउ ऋषै सर्ब कहि दीन्हा ❀ जिमि गन्धर्वब्याह नृप कीन्हा

दो० धीरजदियो शकुन्तलै, उत्तम कुल नरनाह ।
यामें सुता कलङ्क नहिं, करिलीन्हो तुम ब्याह ॥

ताके भयो भरत महिपाला ❀ धर्मशील बलबुद्धि बिशाला
षोड़श बर्ष भयो नरपालक ❀ खेलहिंबिपिनख्यालसँगबालक
महिष शृङ्ग धरि कबहुँ उखारैं ❀ कबहूँ अँगुलि ब्यालमुखडारैं
सिंह लूम धरि कबहुँ भ्रमावैं ❀ द्विरदमतङ्ग गहि दशाननलावैं
अदिति कुमार पुरन्दर जैसे ❀ सुत शकुन्तला जायो तैसे
अनसूया के यथा निशाकर ❀ कश्यपके जिमि भये प्रभाकर
रवि के मनु मनुतनय प्रियब्रत ❀ तिमि शकुन्तलातनय धर्मब्रत
तरणि समान तेज तन माहीं ❀ बल पटतरिय बली कोउ नाहीं
धनुर्बेद मुनि ज्ञान पढ़ाई ❀ अस्त्रशस्त्रसिखि करि निपुणाई
राज्यनीति बहुभांति पढ़ायो ❀ हयगयरथहि सो युद्धसिखायो

दो० पढ़ौ कि पुनि चटसारमहँ, खेलन जाइ शिकार ।
सबलसिंह चौहान कहि, सुनि मनमोदअपार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

राज्य योग सब लक्षण जानी ❀ निकटबोलाय कहतमुनिज्ञानी
पितु तुम्हार शशिबंश नरेशा ❀ नृप दुष्यन्त सब जानत देशा
अतिबलिष्ठ दुहिता सुत मोरा ❀ सकल धरा मण्डल है तोरा
भूपति रहै कृपा अभिलाखे ❀ रहै सुरेश जासु रुख राखे
तुम पितुसभा अलौकिकलीला ❀ बसै दिगीशनकेर उकीला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोमबंश महँ जन्म तुम्हारा ❀ अत्रि गोत्र जानै संसारा
इला पुरूरव पितामह नामा ❀ तेज निधान शूर बलधामा
पितु गृह चलहु करहु निजराजू ❀ सहित धरा धन सेन समाजू
पुनि बहिक्रम भूप बुढ़ाना ❀ औरनसुत तुमकहँ नहिं जाना
चिन्ता बिबश भयो नृप अङ्गा ❀ प्रातहि तात चलहु मम सङ्गा
तुमहिंबिलोकि भूपसुख पाइहि ❀ राज्य देइ पुनि कानन जाइहि
तपचर्या की करत बिचारा ❀ सुतहित बिपिन न जाइँ भुवारा
तुमहिंबिलोकित्यागि सबशूला ❀ नृप तपकरहिं सहित अनुकूला

दो० प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ।
सुखी करहु दुष्यन्तकहँ, होहु पुत्र नरनाथ॥

अस कहि पुनि मुनि सेवनलागे ❀ उदित होत उदयकर जागे
सुत शकुन्तला सहित पयाना ❀ कीन्ह कहा मुनि ज्ञाननिधाना
आये चन्द्रबंश रजधानी ❀ दरशन दीन्ह सभामहँ आनी
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा ❀ दीन्हअशीश मुनीश अकामा
अर्घ देत आसन बैठारे ❀ है प्रसन्न तब बचन उचारे
सुनहु भूप यहु भरत कुमारा ❀ तनय तुम्हार बिदित संसारा
असकहि पुनि प्रणाम करवावा ❀ प्रीतिसहित निजढिग बैठावा
देखत भूप भरत की ओरा ❀ अतिसुन्दरतन बयसकिशोरा

दो० वृषभकन्ध दीरघभुजा, दीरघ बक्ष बिशाल।
चन्द्रबदन कटि केहरी, कमलबिलोचनलाल॥

कछु शिशुता कछु तन तरुणाई ❀ सहित बीरता कढ़त लोनाई
तब शकुन्तला सभा मँझारी ❀ आई तुरत दिशा तम हारी
नृपहि देखि मनहीं मन माहीं ❀ कीन्ह प्रणाम प्रकट कछु नाहीं
देखत चकित सभा सब कोई ❀ शची किधौं रम्भा रति होई
मञ्जुघोष मेनका घृतासी ❀ बिश्वमोहनी कुलकी रासी
प्रभा सरस शोभा तन जाके ❀ नहिं तिलोक पटतरमहँ ताके
जातनकी सुन्दरता ताकी ❀ सलज होत उरबशी बराकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

की रोहिणी किधौं अनुसैया ❀ अरुन्धती की उदित जोन्हैया

दो० रहेमौन नहिंकहतकछु, शोभा बिपुल निहारि ।
देखी भूप शकुन्तला, पहिंचानी निज नारि ॥

कह नृप कौन कहां ते आई ❀ बोली मधुर गिरा शिरनाई
करत हँसी की बिन पहिंचाने ❀ पूछत नाथ कि हमहिं भुलाने
भूली सुरति भई मति भोरी ❀ मैं शकुन्तला अनुचरि तोरी
दृग नीचे करि कहत सलाजा ❀ बनमहँ मिली समुझ मन राजा
जहां उतङ्ग केर पर्णशाला ❀ परमगहन सुधि करहु भुवाला
नदी पुनीत तरणितनया तट ❀ सुन्दर सुखद छांह शीतलवट
नाम बताय भवन तुम आयो ❀ करिप्रबोध मोहिं भवन पठायो
भरत जन्म की कथा सुनाई ❀ तुम्हरे दर्शहेत इत आई
यह लालसा न दूसर काजा ❀ छांड़ी बिपिन भूल सुधि राजा

दो० देखी सुनी न मैं कछू, बिहँसिकहीमहिपाल ।
सुनहुसभासदमिलिसकल, मृषा कहत यह बाल ॥

यह त्रिय रत्न पुरुष के लोभा ❀ सानत मोहिं चहत निज शोभा
बारबधू की गति पहिंचानी ❀ है कुलटा मन में मैं जानी
सुनि शकुन्तला कह मनमाखी ❀ तब नरेश दीन्हों सुरसाखी
पतिव्रत जो छांड़ौं मैं नाथा ❀ तौ तुम करौ खण्ड शतमाथा
अस कहि पतिव्रता रिसवाई ❀ कहत सुरनते भुजा उठाई
सुनत श्रवण तुम देत न साखी ❀ ह्वैहै तेज हीन बिन आंखी
सुनि यह पतिव्रता भय माना ❀ भई गगन सुर गिरा प्रमाना
सम संयोग कलङ्क बिहीना ❀ अतिपुनीत नृप नारि प्रवीना
भरत नाम यह तनय तुम्हारा ❀ करहु भूप तुम अङ्गीकारा

दो० सुनहु नरेश शकुन्तला, सब बिधि सम संयोग ।
भइ सुरगिरा प्रमाण नभ, सुनि हर्षे सब लोग ॥

सकल सभासद निकट बोलाई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई
कहत सुनाइ सबन ते राजा ❀ गगनगिरा सब सुनहु समाजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है शकुन्तला मम पटरानी ❋ निश्चय भरत पुत्र सुखदानी
लोक बेद ते नारि कुमारा ❋ कीन्ह प्रथम नहिं अङ्गीकारा
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने ❋ तरुणत्रिया अरु सुत बिन जाने
राख्यो गृह बड़ि कीन्ह ढिठाई ❋ अस बिचारि सुरगिरा सुनाई
प्रथमहिं भई बिपिन नभबानी ❋ करि बिवाह तब कीन्ही रानी

दो० असकहि भूपशकुन्तला, दीन्ही भवन पठाइ।
बैठारे पुनि मोदते, भरत समीप बोलाइ॥

कह नरेश तब सुनहु उतङ्का ❋ कहिये नाथ मिटै आशङ्का
दैवन सम संयोग बखाना ❋ क्यहि प्रकार ते मैं नहिं जाना
सुनि उतङ्ग मोदक अधिकाई ❋ कथा प्रथम मुनि बरणि सुनाई
तुम शकुन्तलहि मुनिबर भाखी ❋ सुनहु भूप बिधि ते षटसाखी
एकै भांति प्रकट भय दोऊ ❋ कथा बिचित्र सुनहु नृप सोऊ
बिधि युत कुश जानत संसारा ❋ प्रकट करे कुश नाम कुमारा
तिनके गाधिराज बलखानी ❋ अङ्गदेश कीन्हीं रजधानी
कौशिकतनय कौशिकी नामा ❋ तनया बिदित शीलगुणधामा
काम बिपिन तप कीन्ह महाना ❋ भई पुनीत नदी जग जाना
कौशिकमुनितनजनित अनङ्गा ❋ भई सुता मेनका प्रसङ्गा

दो० सोजगबिदितशकुन्तला, सबबिधिसमसंयोग।
भये तुम्हारे भूप अब, अरधसिंहासनयोग॥

सुनहु कथा चित लाइ नरेशा ❋ निजकुलकी सबत्यागि अँदेशा
कीन्ह बिरञ्चि अत्रिसुतनामा ❋ तपमूरति मुनिबर गुणधामा
भे जग बिदित चन्द्रसुत ताके ❋ निशितम रहत कण्ठतरजाके
अमियमयी अरु सुरपति भीता ❋ धरो शीश शिवजानि पुनीता
सप्तबिंश त्रिय जग उजियारी ❋ अतिप्रिय तिनहिं रोहिणीनारी
तिनके सुत बुध बुद्धिनिधाना ❋ भये सौम्यग्रह सब जग जाना
इला पुरुरवा भय बुध बालक ❋ अतिबलिष्ठश्रुतिपथप्रतिपालक
भयो कामबश चेत न आवा ❋ बिपिन फिरत उरबशी भ्रमावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ ❀ बिसरी देह कामबश भयऊ
हँसि दरशाइ बिलोचन तीछे ❀ चली पराइ चला नृप पीछे
नगिन शरीर नगिन तरवारी ❀ हा उरबशी पुकारि पुकारी

दो० प्रकटहोइ कहुँनिकटहोइ, कबहुँ जाइँ द्रुमओट ।
कबहुँ दिखावत हास मृदु, कबहुँ करत दृगचोट ॥

कबहुँक प्रकट होत त्रिय आगे ❀ चले जात नृप पाछे लागे
निकटबिलोकि गगन उड़िजाई ❀ दूरि देखि पुनि देइ दिखाई
कबहुँ बाम दक्षिणदिशि पूरा ❀ राग अलाप बजाइ तँबूरा
यहि बिधि गगन बीच लै जाई ❀ श्रमितनिहारि प्रीतिअधिकाई
निजबशजानि दया अति बाढ़ी ❀ भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी
करि बिनती नृप भवन लवाये ❀ करि प्रसंग तुमको उपजाये
यथा पुरुष तुम तिमि वह दारा ❀ सबबिधि सम संयोग तुम्हारा
कहि यहि बिधि मुनिबरउत्तङ्गा ❀ गये मण्डली मेटि असङ्गा

दो० बानप्रस्थ बिचारि अब, बिपिन गये ततकाल ।
लै निजहाथ शकुन्तला, भरत भये महिपाल ॥

जिनको सुयश पयोनिधि पारा ❀ गये उलङ्घि पहाड़ अपारा
तिन पुरु नाम तनय उपराजा ❀ भयो सकल पुहुमीपति राजा
नहुष नृपति तिनके बलदाई ❀ लीन्ह इन्द्रपद इन्द्र भगाई
तिनके सुत पुनि भयो ययाती ❀ तेज प्रताप बिदित सब भांती
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा ❀ नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा
शुक्रसुता ज्येष्ठी देवयन्या ❀ लघुत्रिय बृषपर्बा की कन्या
युग पत्नी दश सुत उपजाये ❀ तिनके भारत सकल कहाये
कथा बिचित्र सुनत सुख पावा ❀ पुनिसात्यकि हरिपदशिरनावा
आगे चलि हस्तिनपुर देखी ❀ चित्रित चित्रबिचित्र बिशेखी
अति उतङ्ग सोहत पुर फाटक ❀ रचित केवार द्वारमणि हाटक
बसत लसतपुर द्युतिअधिकाई ❀ जनु सुरनगर बास तहँ आई
बसत तहां दुर्योधन पोचा ❀ कहत इन्द्रसन मन संकोचा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० पुरजन देवी देव से, पाण्डव गये बिदेश ।
करतनहुष जनुइन्द्रपथ, भोगि निकारि सुरेश ॥
नन्दन बन निन्दित बन बागा ❀ रुचिर बापिका कूप तड़ागा
मन्दाकिनि सम सोहत गङ्गा ❀ उपमा उठत अनूप तरङ्गा
बरण बरण पक्षी रव शोरा ❀ बेद पढ़त जनु सुर दुहुँ ओरा
शङ्करगिरि जनु रुचिर अटारी ❀ चातुर चारु सहित गच ढारी
रङ्ग रङ्ग ध्वजपांति बिभाती ❀ मनहुँ सपक्ष शैल उतपाती
सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा ❀ त्रिय नगरी शिर सुन्दर जूरा
खुले द्वार सोहत सुखरासी ❀ सुरपुरसरिस करत जनु हासी
कोटिन गुड़ि उड़िउड़िरँगराची ❀ नगर नगारन की धुनि माची
दो० पुरशोभा हरषत निरखि, गये निकट भगवान ।
सबलसिंह चौहान कहि, को करिसकै बखान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

दो० दारुक हांक्यो अश्व रथ, सुमिरि महेश गणेश ।
नगर हस्तिनापुर तबै, कीन्हो तुरत प्रबेश ॥
बनित मनोहर रूप बिलोके ❀ यकटक लखैं नयनपल रोके
हरि शोभा सागर सुखसारा ❀ त्रियलोचन झखकरत बिहारा
गली बजार छतीसौ कोमा ❀ निरखतमुखचकोरजिमिसोमा
सात्यकिसहित अलौकिकबेखा ❀ चले जात पुरबासिन देखा
तरणितमीशकितरणिकिशोरा ❀ की मधुमदन मनोहर जोरा
हरि हर कहि बरणत हैं कोऊ ❀ नर नारायण हैं की दोऊ
सात्यकि सहित सोह भगवन्ता ❀ इन्द्र सहित जनु जात जयन्ता
मारग महँ शोभा अधिकाई ❀ मनहुँ राम लक्ष्मण दोउ भाई
दो० पीतबसन सुन्दर ललित, कलित बिभूषण गात ।
फलित मनोरथ सबनके, निरखत सुखसरसात ॥
प्रभु शोभा बरणत नर नारी ❀ निरखिनिरखितनदशाबिसारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, New Delhi.

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बि अभिराम कामशतकोटी ❀ हरि पटतरिय बात यह छोटी
भु शोभा सागर अवगाहा ❀ सुर नर मुनि कोउ पावन थाहा
कटक चितै परस्पर कहईं ❀ इनकी सरि येई जग अहईं
उपमा काहि देइ को योगा ❀ कहत परस्पर सब पुरलोगा
हरिसात्यकिकरिउभयबिभागा ❀ कोऊ कहत ज्ञान बैरागा
तहँ प्रभु मोहनतन देखरायउ ❀ मोहे सब तन सुधि बिसरायउ
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढ़े ❀ बर्णत कोउ नयन जल बाढ़े

दो० मनहरिबशसरबस्व सहित, बिसरिगई सुधिदेह।
प्रभु तनद्युति बर्णन करत, पुरजन सहितसनेह॥

कमलनयन कुण्डल द्वै कानन ❀ अतिकमनीयकलानिधिआनन
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा ❀ उर बनमाल मनोहर हीरा
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारे ❀ दाड़िमदशन अधर अरुणारे
उन्नतभाल सुजन मनभावन ❀ सुन्दर लोल कपोल सुहावन
बृषभकन्ध अरु दीरघ बाहू ❀ बक्षबिशाल सुखद सबकाहू
पानपीठि उर भृगुपद रेखा ❀ कटिकेहरि ऊदर त्रय रेखा
पीताम्बर तापर कसि बांधे ❀ श्यामजलद तन यज्ञपकांधे
पद्मपाणि पद पदम अनूपा ❀ अतिबिशाल दोउयदुकुलभूपा
हरिहि बिलोकि नागपुर नारी ❀ कामबिबश तनदशा बिसारी
भूषण हीन न चीर सँभारा ❀ निरखैं आइ लाज तजि दारा

दो० दधि दूर्वा अक्षत अमल, एलादिकभरिलाय।
करैंसुमङ्गल बिबिधबिधि, मोहनराग सुनाय॥

जात राज मारग प्रभु सोहे ❀ पुरनरनारि देखि छबि मोहे
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा ❀ कहि न सकैं कबि शारद शेखा
शारद शम्भु गणेश षड़ानन ❀ बर्णत बृद्ध भये चतुरानन
नारदादि केहुँ पार न पाये ❀ बिबिधभांतिकहि नेति सुनाये
सुर सुरेश कहि पार न पावा ❀ अब नृपसुनहु व्यास जस गावा
प्रभु छबिबारिधि कोटिमहाना ❀ सीकरसम त्रिभुवनछबि नाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तदपि तासु उपमा सम नाहीं ❋ तुमते कहत सुनी गुरुपाहीं
सुनिये गिरा अमियरस बोरी ❋ कीन प्रश्न पुनि नृप करजोरी
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई ❋ कहिय कृपाकरि अब ऋषिराई
सुनि नृप बचन प्रीतिरस पागे ❋ कथा बिचित्र कहन मुनि लागे

दो० दोषहरणिसबसुखकरणि, भारत कथा रसाल।
जनमेजय चित दै सुनहु, मिटैमोह जगजाल॥

भीषम बिदुर सुनी यह बाता ❋ नगर प्रवेश कीन्ह जनत्राता
कृप अरु द्रोण सहित अनुरागे ❋ करत प्रणाम लीन्ह चलिआगे
भीषम द्रोण देखि हरि आये ❋ पुरजन सहित प्रेम उर छाये
उतरे कृपासिन्धु भगवाना ❋ मिले बहुत कीन्हे सनमाना
भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई ❋ कुशल प्रश्न पूछत यदुराई
नाथ कुशल देखत अब तुमको ❋ हृदयलाय भेंटव प्रभु हमको
पतितउधारण बिरद सँभारा ❋ भयो सकल अघ दूरि हमारा
ताही समय बिदुर चलिआये ❋ परे चरण नहिं उठत उठाये
गहि भुज कृपासिन्धु भगवाना ❋ लीन्ह लाय उर करि सनमाना
सुनहु बिदुर तुम अतिबिज्ञानी ❋ जिनका मुख देखत अघहानी
ज्ञान बिराग योगगति आनत ❋ धर्मस्वरूप भक्तिरस जानत
जीतेउ काम क्रोध मद लोभा ❋ करि न सकै माया मन क्षोभा
हरिसेवक प्रहलाद समाना ❋ बिधिसमबुद्धि बिबेकनिधाना
रबिनन्दन सम नीतिबिचारा ❋ योगिनमहँ जिमि सनतकुमारा
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता ❋ अम्बरीष नृप सम शुचिसन्ता
करि सन्मान कृष्ण बहुभांती ❋ पुनिपुनि मिलतलगावतछाती
बोलेउ बिदुर अकिञ्चन मीता ❋ नाम तुम्हार बिदित जनहीता
बिरद तुम्हार निगम कहि गाई ❋ निज दासनकहँ देत बड़ाई

दो० मोते को संसार महँ, महाअधम यदुबीर।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होत उरधीर॥
भक्तबछल तुव नामसुनि, तब मन बड़ो डराय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुने पतितपावन बिरद, हर्ष न हृदय समाय ॥
पूरब नाथ पाप हम कीन्हा ❀ दासीयोनिजन्म बिधि दीन्हा
अधभाजन नहिं भजन तुम्हारा ❀ केहिबिधि नाथ मोर निस्तारा
परम अधीन बिरद मुखबानी ❀ सुनि श्रीकृष्ण भक्तिरससानी
कीन्ह प्रबोध नाथ बिधि नाना ❀ हृदयलाय कीन्हों सनमाना
तुमहौ बिदुर धर्म अवतारा ❀ परमभक्त अरु ज्ञानउदारा
पुरवासिन अभिबन्दन कीन्हा ❀ सौम्यरूप प्रभु दर्शन दीन्हा
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला ❀ पहिरे श्वेत द्विरदमणिमाला
अङ्ग अङ्ग महँ भूषणभूरी ❀ मृदुमुसक्यानिबिलोकनिरूरी
पीत बसन कलकुण्डल कानन ❀ अतिकमनीय सुधाधरआनन
सात्त्विकरूप लखे बनवारी ❀ निरखिनिरखिछबिहोतसुखारी
भीषम द्रोण सहित यदुराई ❀ भूप भवन कहँ चलेउलवाई

दो० सुनी श्रवण आयो निकट, पँवरि द्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दीन्हें अनुज पठाय ॥

बिकरण दुश्शासन बलधामा ❀ दुर्मुख दुसुत द्विरद पुनि नामा
निपट निकटजबआनिनिहारा ❀ मदसमेत तिन कीन्ह जोहारा
दुर्योधन के बान्धव आये ❀ तहँ प्रभु उग्ररूप दरशाये
चक्र एक कर शारँग पाणी ❀ एकपाणि महँ निशितकृपाणी
जैसे प्रलय कालमहँ शंकर ❀ अरुण नयन अरु बेष भयंकर
रूप त्रिबिक्रम समर महाना ❀ कुरुगण देखि अचम्भव माना
डरपे दुर्योधन के भाई ❀ हरिहि देखि मुख गे कुम्हिलाई
तमगुण उनहिं कृष्ण देखरावा ❀ भूपभेद केहुँ जानि न पावा
मोहन रूप देखि नर नारी ❀ लोकलाज तजि चलीं पछारी
सात्त्विकरूप बिदुर तहँ देखा ❀ कहत नाइ मन हर्ष बिशेखा
राजा देखि प्रजा सुख पाये ❀ भयेमुदित निज निजगृहआये
यह चरित्र कीन्हों भगवाना ❀ औरको भेद और नहिं जाना

दो० जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पल महँ दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥
पँवरि दुआर गये यदुनाथा ❀ भीषम द्रोण बिदुर कृपसाथा
द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा ❀ दुर्मुख बिकरण बीर अभङ्गा
दुर्योधन को बिभव निहारा ❀ इन्द्र सरिस को बरणै पारा
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी ❀ रक्षक तरुणपुरुष बलभारी
दूसर दुर्योधन कर चेला ❀ उमड़ेउ मनहुँ सिन्धुतजिबेला
ते सब शक्ति भुशुण्डी लीन्हें ❀ रक्षहिं द्वार सजग चित दीन्हें
तिसरे द्वार करहिं बहु हूहा ❀ कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा ❀ रक्षक महामल्ल बहु दक्षा
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ सांगी ❀ गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी
पञ्चम पँवरि द्वार हरि आये ❀ बिबिध भांति तहँ यन्त्र लगाये
तीनि लक्ष भट मत्त शराबी ❀ लीन्हे पाणि ज्वलित मस्ताबी

दो० द्रोण करण सम तूल के, अयुत बीर बरियार ।
गर्जि गदा गहि गर्बते, ठाढ़े छठयें द्वार ॥

सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा ❀ केहरि से किरात काम्बोजा
नाना भांति अस्त्र करमाहीं ❀ जिनहिं देखिसुर असुरसकाहीं
बरणत बिरद बन्दिजन जूहा ❀ बेतपाणि दरबानि समूहा
बेतपाणि तहँ जाय जनाये ❀ मिलन हेत यदुनन्दन आये
लावहु कहि नृप आयसु दीन्हा ❀ तेहि अवसर हरि दर्शन दीन्हा
प्रभुहिबिलोकि उठ्यो कुरुनाथा ❀ सौबल शकुनि कर्ण लै साथा
ताके हृदय गर्ब अति भारी ❀ गयोनिकटचलिहरिहिजोहारी
धनमद अन्ध अधमअभिमानी ❀ ज्ञानहीन कछु कानि न मानी

दो० उत्पति थिति नाशन करण, बिश्वभरण भगवान।
नर करि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

कृष्ण समेत चला कुरुराजा ❀ धृत्तराष्ट्र यह सकल समाजा
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हे ❀ बान्धव सब परिवारित कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उ भूप पहँ विदुर अगारी ❋ कह्यो जाय आवत बनवारी
त भूप कोउ मोहिं उठावहु ❋ चलहु बेगि लै हरिहि मिलावहु
ञ्जय गहि कर नृपहि उठायो ❋ कृष्ण समीप तुरत पहुँचायो
ट कृपासिन्धु उरलाई ❋ नृप आनँद अति उर न समाई
शल प्रश्न पूँछत ब्रजराजहिं ❋ गयो भूप लै सहित समाजहिं
निज समीप हरि कहँ बैठारा ❋ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा

दो० बाहलीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत ।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, बैठे सभा निकेत ॥

कृप अरु शल्य जान सब काऊ ❋ भूरिश्रवा हलम्बुष दोऊ
पुत्र पौत्र भूपति के जेते ❋ बैठे दुर्योधन ढिग तेते
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❋ मगहराज तेहि सभा बिराजा
भूप कलिङ्ग और कृतबर्मा ❋ नृपति बृहद्बल सहित सुशर्मा
जयनराज शशिबेद नरेशा ❋ नृपति सुलूक बनाइ सुबेशा
औरौ देश देश के नायक ❋ दुर्योधन के सकल सहायक
हरिआगमन सुनतसजिसाजा ❋ धृतराष्ट्रक गृह जुरो समाजा
यथायोग्य बैठे नृप झारी ❋ विदुरसभा बिधिवत बैठारी
बैठे भूप सहित बनवारी ❋ सञ्जय नृप के बैठ पछारी

दो० अस्थित अति आनन्द ते, नृपसमीप घनश्याम ।
हरिदक्षिणदिशिसात्यकी, लखैबिलोकनिबाम ॥

यदुनन्दन दिशि बारहिंबारा ❋ निरखतबिदुर अनन्द अपारा
परत निमेष न यकटक ठाढ़े ❋ मानहुँ चित्रमांझ लिखि काढ़े
हरि छवि देखत चष अनुकूली ❋ जनित सनेह देह सुधि भूली
क्षणक्षण प्रभुपद मञ्जुकपोला ❋ भ्रमत विदुरचित प्रेमहिं डोला
देखत होत न मन संतोखा ❋ यथा अडोल खेल को धोखा
बिदुर दशा जब कृष्ण निहारी ❋ करणहिं निकट लीन्ह बैठारी
कृप अरु द्रोण विदुर दिशि दोऊ ❋ देखि सप्रेम सराहत सोऊ
धन्य बिदुर बिज्ञाननिधाना ❋ नरतन पाइ भक्तिरस जाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काम क्रोध तजि सब संसारी ❀ भजत सदा अघहरण मुरारी
दो० बिषरसइव त्यागी बिषय, चरणकमललौलाय ।
रहत शरण यदुनाथकी, नाते नेह बिहाय ॥
कृपादृष्टि प्रभु बिदुर बिलोकी ❀ भरे मोद मन कहेउ बिशोकी
हरि की देखि प्रीति अधिकाई ❀ अति अनन्द नहिं हिये समाई
गालवगण मन मोद अपारा ❀ पुलकावली नयन जलधारा
देखत रूप चक्षु पल रोके ❀ सुरसिद्धात तेहिभाग बिलोके
कह मुनीश यह कथा सुहाई ❀ तुव हित हेत भूप मैं गाई
अब मैं कहब बिचित्र कहानी ❀ सावधान सुनु नृप सज्ञानी
सुनत रहत नहिं अघलवलेशा ❀ शोक मोह भ्रम मिटे नरेशा
धृत्तराष्ट्र अति आदर कीन्हा ❀ भोजन हेत उतर हरि दीन्हा
दो० प्रीतिनरंचक तुम बिषय, नहिं हमरे आपांति ।
कौन हेत कीजै अशन, सुनहु भूप तापांति ॥
कहेउ भूप सुनिये जगतारण ❀ तुम तापांति कहौ केहि कारण
सुनि नृप बचन कहत हँसि केशो ❀ सुनहु भूप तब मिटै अँदेशो
हस्ती नाम भरत कुल जायो ❀ नगर हस्तिनापुरी बसायो
तरणि सुता ते भयउ बिवाहू ❀ तापत नाम बिदित सबकाहू
तिन यह कौरव बंश चलायो ❀ ताते तुम तापती कहायो
सुनि हरिबचन भेद सब जाना ❀ धृत्तराष्ट्र मनमहँ सुख माना
कथा अपर तब श्री मुख गाई ❀ सुनि सुख लहौ सभासमुदाई
अमृत सरस कृष्ण मुख बानी ❀ भीषम बिदुर सुनत सुखमानी
कह बैशम्पायन सुनु राई ❀ कथा बिचित्र श्रवणसुखदाई
दो० बुद्धिचक्षु बोले बिहँसि, कहिये दीनदयाल ।
केहि बिधिते तपतीबरी, सुनिहस्तीमहिपाल ॥
केहि बिधिते भा भूप मिलापू ❀ किमि उतपति कहिये अबआपू
सुनि नृप बचन कृष्ण अनुरागे ❀ कथा बिचित्र कहन अस लागे
रबिमण्डल होइ जात बराकी ❀ भये दिनेश कामबश ताकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

म बाण ताहू के लागा ❀ रविदिशि देखि भयो अनुरागा
चरित्र सुरनायक जाना ❀ दीन्हो शाप क्रोध उर आना
रिमानुषतन ह्वै व्यभिचारिणि ❀ बर्ष प्रयंत रहौ अपकारिणि
मानुषी रूप सोइ दारा ❀ रविमण्डल महँ करत बिहारा
ोच्यो शाप काल जब बीता ❀ तहौं गर्भ पुनि सुरपति मीता
भई सुता कर्दम ऋषि जानी ❀ सो उठाय निजआश्रम आनी
गई सुरेश भवन पुनि बाला ❀ कीन्हो मुनिकन्या प्रतिपाला
शशिसमबढ़तकढ़तद्युतितनकी ❀ जगरमगरजिमिदामिनिघनकी
थिरनरहतलखिमतिमुनिजनकी ❀ होतलाजबशनारि अतनकी

दो० तरणिप्रभातनशशिबदनि, मृगनयनीकटिखीन।
पीन पयोधर मधु अधर, षोड़श बर्ष नवीन॥

तेहि पटतर रम्भादिक नाहीं ❀ सुरी किन्नरी देखि लजाहीं
तप्त स्वर्ण आभा तन जानी ❀ तपती नाम धरो मुनि ज्ञानी
हस्तीभूपति फिरत शिकारा ❀ रविनन्दनिगइ बिपिन बिहारा
औचक मिले पंथ महँ सोऊ ❀ देखि परस्पर बरबस दोऊ
राजकुँवर रविजा अवलोकी ❀ देखत रूप दृगञ्चल रोकी
तरुणबहिक्रम तरणिकिशोरी ❀ दामिनि बर्ण देह अतिगोरी
पहिरे तन शुचि बसन सुरङ्गा ❀ मणिगणखचित बिभूषणअङ्गा
इन्दु बदनि मृगशावक नयनी ❀ भृकुटीकुटिल बिलोकिप्रबीनी
लोल कपोल हँसनि मृदु बङ्का ❀ दमकत श्रवण तड़ित ताटङ्का
अधर प्रबाल लाल अरुणारे ❀ अहि उपमा लम्बित कच कारे
दाड़िम दशन नासिका नीकी ❀ देखत कीर तुण्ड मति फीकी
कम्बु कण्ठ अरु बाहु मृणाला ❀ कोमलकलित कमलकरलाला
श्रीफल से कठोर बक्षोजा ❀ गेंदखेल जनु रच्यउ मनोजा
सूक्ष्म कटि अरु रूप अपारा ❀ लचकत पुनिपुनिकचघुँघुवारा
शुभनितम्ब पुनि नाभि गँभीरा ❀ देखि भूपमन मनसिजपीरा
मनो मनोज कुसुम शर लीन्हा ❀ बाणनमारि लक्षि लखिकीन्हा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सूघर पेंडुरि पद कमल, सूक्षम अँगुली बीश ।
कदलिपत्रसमपीठि पुनि, जनु बिरची जगदीश ॥
बीस अंगुली कमलकर, लसत बीस नखलाल ।
बीसकला जनु भौमधरि, करतप्रकाश बिशाल ॥

राजकुँवर तन शोभा भारी ❋ देखि कामबश तरणिकुमारी
बय किशोर तन सुन्दरताई ❋ बरणि न जाइ देखि मनभाई
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारा ❋ जगमगातमणिगण उजियारा
आनन मनहुँ शरदशशिमण्डल ❋ झलझलातकानन दोउकुण्डल
भृकुटी कुटिल लसत यहिताका ❋ बिनगुणमनहुँ मनोज पिनाका
नासा की उपमा कबि गावत ❋ अतिबिचित्रशुकतुण्डलजावत
दृग कछुश्याम कछुक अरुणारे ❋ सोहत जनु बन्धुक अतिकारे
सोहत कच मेचक मुख नेरे ❋ अतिहिहेतु जनु शशि अहिघेरे
बृषभ कन्ध युगबाहु बिशाला ❋ कम्बुक कण्ठ द्विरदमणिमाला
बक्ष बिशाल नाभि गम्भीरा ❋ कटि केहरि जङ्घा बिस्तीरा
अरुण चरण कर अरुण सोहाये ❋ अमल कमल शोभा दर्शाये

दो० मनसिज सरिस महीपसुत, रूप शील गुणगेह ।
नखशिख देखि अशेष छबि, तपती भई बिदेह ॥

देखि भूपसुत तरणिकिशोरी ❋ जनित सनेह देह भै भोरी
शीशफूल कानन ताटङ्का ❋ अतिप्रकाश जनु बिज्जु दमङ्का
मुक्तमाल उर मणिगण हारा ❋ जनु कर निकर निशेष पसारा
अङ्गनजटित ललितकरभूषण ❋ करत प्रकाशकमलपर पूषण
दशौ अंगुलिन महँ दश मुद्रा ❋ चलत हलत बाजत कटिक्षुद्रा
आस पास बिछिया टोरवारे ❋ पायँ पैंजनी नेवर न्यारे
बसन बिभूषण बैस नवेली ❋ पूछत भूप बिलोकि अकेली
की तुम राजसुता सुरकन्या ❋ कवनहेतु केहि फिरत अरन्या
तुव बश भयो प्राण अब मेरा ❋ कवनिउँ यतनाफिरत नहिं फेरा
ताते कहो हमारो कीजै ❋ अब गन्धर्व ब्याह करि लीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुमहिं बिलोकि मदनधनुलीन्हो ❀ शरनमारि जर्जर तनु कीन्हो
मूरि बिशल्य करन तुम देही ❀ परसत मिटै ब्यथा तन येही

दो० सुन्दर सरलशरीर तव, जिमिमनासिजकीपास ।
फँसो जाइ तावीच मन, देखि मनोहर हास ॥

तरणिसुता नृप सुत बश कीन्हा ❀ नृपकिशोरतेहिचितहरिलीन्हा
निजवश रहो न कछु ताहू को ❀ फेरे फिरत न मन वाहू को
दूनौं तन मनोज बश भयऊ ❀ तहँ गन्धर्व ब्याह करि लयऊ
यह करतब कर्दमऋषि जानी ❀ दीन्ही सौंपि नृपहि गहिपानी
हर्षि भूप तेहि निजगृह आनी ❀ ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी

दो० हस्ती नृपके तनय कुरु, पतिनी ते उपतीय ।
तिनकेसुत शन्तनुनृपति, तेहिते तुम तपनीय ॥

शन्तनु सागर को अवतारा ❀ भयो बड़ो तेजसी भुवारा
गङ्गासागर को भा सङ्गम ❀ तेहिते भीषम अविचल जङ्गम
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी ❀ जब सुरसरि निजधार समानी
ताको सत्यवती अस नामा ❀ चित्राङ्गद सुत बल के धामा
चित्रवीर्य पुनि दूमर बेटा ❀ भयो भूप संग्राम अपेटा

दो० चित्रबीर्य के पाण्डु नृप, चित्राङ्गद के आप ।
हौ एकै कछु भेद नहिं, ताते करहु मिलाप ॥

विग्रह आपुस की नहिं नीका ❀ छांड़हु अब सब बात अलीका
कलह तुम्हार न काहुहि भावत ❀ ताते बार बार हम आवत
हरिमुख हेरि कहत दुर्योधन ❀ तुम आये इत कवन प्रयोजन
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा ❀ पठयनि तुम्हरे ढिग यहि काजा
कहिनि किहमकहँ जुग्रा हरायो ❀ छलबल करिकै बनहिं पठायो
ते गे बर्ष त्रयोदश बीती ❀ अबहूं तौ तजि देहिं अनीती
सो अब कहा हमारो कीजै ❀ आधी भूमि बांटि नृप दीजै
उन बन बसि बहु महे कलशू ❀ तेहिते तुमकहँ उचित नरेशू
यह जो नाहिं तुमहिं मनिआई ❀ तौ हम कहैं करौ तुम राई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पञ्च ग्राम पाण्डव कहँ देहू ❋ कलह निवारण होइ सनेहू
इन्द्रप्रस्थ तिलप्रस्थ बरुणागर ❋ बाराणसि हस्तीपुर आगर
इनके दिये मिटत है रारी ❋ नातरु होइहि अनरथ भारी
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना ❋ नारायण मैं कौरव जाना
तेरे कहे देइ सब देशू ❋ हम जो कहैं करिय सो भेशू
सुई अग्र महि उठो जो जेती ❋ बिना युद्ध हौं देउँ न तेती
ग्वाल बंश हौ जाति के नीचा ❋ परत आय राजन के बीचा
यह कहि कह्यो दुशासन भाई ❋ कर गहि याहि देहु दुरिआई
कितौ पकरि कारागृह दीजै ❋ मिटै प्रपञ्च बात यह कीजै
वे हमते सरवरि कब करते ❋ जो पै उनकर पक्ष न धरते
इनहीं के बल वे बरिआरा ❋ यहु अहीर है बड़ा गँवारा
नृप रुख लखि हरि अन्तर्यामी ❋ भे अतिउग्र उरगअरिगामी
उठे तुरत तब शारँगपानी ❋ कहि तुव मृत्यु आइ नियरानी

दो० हरिसँग भारद्वाज सुत, गङ्गासुत गाङ्गेय।
बाहलीक बिकरणकरण, चले संग उठितेय॥
करत बतकही सबन ते, चलेजात घनश्याम।
राखिलोग सब द्वार पर, गयो बिदुर के धाम॥
श्वेतकेश शिर शोभिये, ओढ़े श्वेत दुकूल।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादर के समतूल॥

पितास्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा ❋ आशिष दियो होय मनकामा
हरिहि बिलोकि नयन जलछाये ❋ माथ सूंघि हरि कण्ठ लगाये
कुशल रहे बसुदेव कुमारा ❋ मैं अनाथ के प्राण अधारा
बोले कमलनयन यह बाता ❋ तुम्हरी कृपा परम कुशलाता
धर्म नरेश समेत कुटुम्बा ❋ कह्यहु प्रणाम सुनहु अब अम्बा
सुनि यह बचन भयो परितापा ❋ लागी कुन्ती करन बिलापा
उर दुख दुसह बरत ज्वरहोली ❋ पुनि कुन्ती श्रीपतिसों बोली
सबकाउ कहत पञ्चसुत शूरा ❋ हमरे जान भये अब कूरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लाज तजी सुत काम न आये ❀ बिदुर अन्न दै हमहिं जिआये
अब तुमते कहियत बनवारी ❀ तुमहूं छांड़ी सुरति हमारी
पालन योग्य तिहूंपुर दारा ❀ बाल पिता तरुणी भरतारा

दो० वृद्ध बैस सुत चाहिये, करहि मातु प्रतिपाल ।
अपनो काटो कृष्ण हम, बिदुर अन्नते काल ॥

धर्मराज छांड़ी सब शर्महि ❀ त्याग कीन्ह क्षत्रिन के धर्महि
नृप बिराट की करि सेवकाई ❀ राज तजी अरु लाज बिहाई
उदरपालिसुत दिवस बितावहिं ❀ दुर्योधन भय मानि न आवहिं
सुनहु कथा यक कहत बखाना ❀ यद्यपि सब जानत भगवाना
बिन्दुल नाम एक क्षत्रानी ❀ राजा शक्तिकेतु की रानी
सोहति नगर अवन्ती बासी ❀ सब चरित्र हम कहत प्रकासी
माहिषमती भूप बलधामा ❀ ताको चन्द्रसेन अस नामा
निज दलसाजि निशान बजाई ❀ घेरो नगर अवन्ती आई
सत्यकेतु निसरे भूपाला ❀ भयो युद्ध जूझे तेहिकाला
लूट्यो नगर लगायो आगी ❀ गर्भवती बिन्दुल उठिभागी
चली पराइ दुखिय अधिकाई ❀ दारानाम नगर चलिआई
ब्रह्मदत्त तहँ रह्यो भुवाला ❀ सबप्रकार कीन्हो प्रतिपाला

दो० यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल ।
नृपतरुणीकहँ त्यहि नगर, बीतिगये कछुकाल ॥

उपजे ताके सुत अभिरामा ❀ ताको कृष्ण युद्धजित नामा
प्रौढ़ बिलोकि मातु सुख पावा ❀ शशिसम बढ़त बार नहिं लावा
दिनप्रति नगरबालकन सङ्गा ❀ खेलत रहत बिहंग पतङ्गा
मातु पढ़ायो पुनि धनुबेदा ❀ समरथ देखि तज्यो मनखेदा
सुतहि बोलाइ मातु उपदेशा ❀ तुम पितु रह्यो उजैन नरेशा
माहिषमती भूप बध कीन्हा ❀ राज तुम्हार छीनि तेहिलीन्हा
अब सुत और न बाद बिचारहु ❀ लेहु भूमि निजअरिका मारहु
जबलगि मरत न तुवपितुघाती ❀ तबलगि पुत्र जुड़ात न छाती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शत्रु तुम्हार जियत संसारा ❀ नाहक क्षत्रि बंश अवतारा
दो० कह्यउ भूपसुत मातुते, सुनिये बचन प्रमान।
मैं दलबल अरु द्रव्यबिन, अरिसँग सेन महान॥
तासु मातु हरि कहत रिसानी ❀ बालक ते बोली मृदु बानी
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा ❀ ताते मन मानत तुम भर्मा
लड़े अकेल न मन भ्रम आनै ❀ कीट समान कोटिदल मानै
ताते तात तजो सब शोका ❀ जीते सुयश मरे सुरलोका
मातुबचन ते उठि रण कीन्हा ❀ करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा
करि साहस सोइ भयउ भुवाला ❀ और कथा सुनु दीनदयाला
जैसे धर्मराज अवतारा ❀ सो हरि सुनहु सकलव्यवहारा
भयो हमार भूप नरनाहू ❀ दीन्हो दण्ड धरा सबकाहू
दो० शशिसमकीरतिलिखिरही, भानुसमान प्रताप।
देव बिटप सम दान कहँ, बलसुरेशजनुआप॥
राज करहिं नृपसुख अधिकाई ❀ बुद्धिचक्षु की फिरी दोहाई
सचिव बिदुर अतिभयउसुजाना ❀ धर्मशील बिज्ञान निधाना
बाहलीक गङ्गासुत दोऊ ❀ अरिघालक जानै सब कोऊ
आज्ञाभङ्ग जवनि दिशि होई ❀ आनै बांधि होइ किन कोई
एकदिवस निज सहित समाजा ❀ सभामध्य नृप पाण्डु बिराजा
भीषम ते तब बचन उचारा ❀ सुनहु मनोरथ सुभग हमारा
महिपर्यटन होत मन मोरा ❀ होइ पिता जो आयसु तोरा
दो० हँसि बोले गाङ्गेय तब, जो इच्छा मनमाह।
सेन लेहु चतुरङ्गिनी, शुभ कीजै नरनाह॥
भीषम की आज्ञा जब पाई ❀ चल्यो भूपसँग दलसमुदाई
माद्री संग सहित म्वहिं लीन्हा ❀ पटह बजाइ गमन पुनि कीन्हा
पूरब दक्षिण पश्चिम देशा ❀ जीति जीति लियदण्ड नरेशा
जो कछु बस्तु जीति नृप पायो ❀ बुद्धिचक्षु कहँ सकल पठायो
सेन समेत बजाइ निशाना ❀ उत्तरदिशि नृप कीन्ह पयाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लैलै दण्ड भूप सब आये ❀ द्वैपायन के शीश नवाये
यथायोग्य सब ते नृप लीन्हा ❀ तिनकहँ अभयदान पुनि दीन्हा
लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा ❀ चढ़्यो भूमि गिरिशृङ्ग उतङ्गा
करि दर्शन नारायण केरा ❀ शैल हिमालय कीन्हे डेरा
तहँ सब नृप परबतिया आये ❀ दोऊ पायन शीश नवाये

दो० जलसुन्दर अरु फल सुभग, फूले कुसुमसुबास ।
गिरिपर देखि सुपास अति, कीन्ह नरेश निवास॥

एक दिवस मृगया कहँ राजा ❀ गयो भूपसँग सुभट समाजा
तहँ ऋषि परम गहन यक रहई ❀ कामबिबश निज तियसन कहई
ज्ञान ध्यान तन सकल भुलाना ❀ बासर महँ मांग्यो रतिदाना
सुनि द्विज बचन कहत तिय सोई ❀ रति दिन नाथ पशुन की होई
कह द्विज नारि मृगातन लीजै ❀ हम मृग होइ तुमते रति कीजै
काम बाण तुम्हरे उर लागा ❀ ज्ञान बिबेक सकल तुम त्यागा
अस कहि तुरत मृगीतन धारा ❀ ह्वै मृग तब द्विज करत बिहारा
पतिको बचन तजै जो नारी ❀ परइ नरक पावइ दुखभारी

दो० यह बिचार द्विजत्रिय कियो, पियको बचनप्रमान।
गयो पाण्डु ततक्षण तहां, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वाविंशोऽध्यायः॥ २२॥

दो० कह कुन्ती गोपाल ते, सुनिये दीनदयाल ।
मृग बिलोकि भूपाल तब, तज्योबाण ततकाल॥

लागत बाण बिकल ह्वै घूमी ❀ मानुषरूप परयो द्विज भूमी
गिरतहि तुरत प्राण तजि दीन्हा ❀ ऋषितरुणी अतिरोदन कीन्हा
कह्यो बचन करि क्रोध अपारा ❀ लै मम शाप भूप चण्डारा
मो रति करत मर्यो पति जैसे ❀ तजौ नरेश प्राण तुम तैसे
आयो शिबिर मानि गिलानी ❀ करै न सुरति भूप भयमानी
ज्यहिबिधिशापबिप्रतियदीन्हा ❀ सो नरेश मोते कहि दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भयो भूपउर नाथ बियोगा ❀ बिदाकिये घरकहँ सबलोगा
दोउ तिय सङ्ग भये बनबासी ❀ उदासीन जिमि फिरै उदासी
परम गहन गिरि देखत फिरहीं ❀ जप तप योग नेम ब्रत करहीं

दो० चन्द्रभाग पर्बत गये, लै युवती युग साथ।
बिरची पर्णकुटी तहां, कीन्ह बास नरनाथ॥

पावन मानसरोवर तीरा ❀ करहिं महातप सुनु यदुबीरा
मास नन्दिनी करि असनाना ❀ ऋषिसमाज नित सुनहिं पुराना
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं ❀ होत अस्त रबि अशन न करहीं
एक दिवस पर्णशालहि आये ❀ मोहिं बिलोकि नयनजल छाये
मैं पूछा क्यहि हेतु उदासा ❀ तब नरेश इमि बचन प्रकासा
संतति हीन हवों मैं रानी ❀ करहुँ न रतिहि शाप भयमानी
तब श्रीपति मैं धीरज कीन्ह्यों ❀ सिखये मन्त्र ऋषय कहिदीन्ह्यों
सुर आकर्षणबिद्या जानी ❀ सुनत नरेश धीर तब आनी
आज्ञा दीन्ह करो सुर जापू ❀ तब मैं कह्यो भूप यह पापू
पतिब्रता परपति मन देई ❀ सुकृत जाइ जग अपयश लेई
बेद पुराण बिदित कह राजा ❀ होइ दोष नहिं सन्तति काजा
तनसुख हेतु नारि जो करही ❀ सुकृत नशाइ नरक सो परही

दो० सुरआकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि।
करहु बंश उद्धार अब, तजि मनकी गिल्लानि॥

पति निदेश मेटो नहिं जाता ❀ धर्माऽऽकर्ष जप्यो सुरत्राता
आवत धर्म न लागी बारा ❀ दोहद भयो बिदित संसारा
जादिन जन्म युधिष्ठिर लीन्हो ❀ अतिउतसाह पाण्डुनृप कीन्हो
छाये नभ पथ गगन बिमाना ❀ सुरसुन्दरी करहिं कलगाना
शङ्ख बजाइ दुन्दुभी दीन्हो ❀ पुहुपमयी बसुधा सब कीन्हो
तब यह भई गगनमहँ बानी ❀ तुव सुत भयो भागवत रानी
धर्म स्वरूप भूप अति भारी ❀ एक छत्र बसुधा अधिकारी
होई बालक बलिसम दानी ❀ नारद सम होई बिज्ञानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरि सेवक प्रहलाद समाना ❀ सुरपति सम होई बलवाना
दो० रबिसुत सम जगनाथ कह, तेज तरणि को रूप ।
जाके सम तिहुँलोक महँ, होइ न औरौ भूप ॥
धर्मशील अति कुल उजियारा ❀ होइ अजातशत्रु संसारा
याके राज अकाज न होइहि ❀ होइनिश्चिन्तप्रजासुखभोगिहि
कहि मृदुगिरा बोधकरि मोका ❀ गये बिबुधसब निजनिजलोका
जूप ब्यसन करि कर्म अलीना ❀ भये धर्मसुत राज बिहीना
यह हरि अद्भुत बात अनूठी ❀ होइ गइ गिरा सुरन की झूठी
यहिप्रकार बहुकाल बितायो ❀ नृप समोद प्रणशालहि आयो
मोते बिहँसि कही नरपालक ❀ अबतुमप्रकटकरहु यक बालक
बिना सहायक राज न होई ❀ ताते चहिय भूप सुत दोई
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जग भाषा ❀ पूरण करहु मोरि अभिलाषा
यहिविधि नृपसंभाषण कीन्हा ❀ सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा
दो० मैं नहिं आज्ञा करिसकौं, मानत हौं मन भीति ।
उचित सिखावन नाथ तुम, यहकुलटनकीरीति ॥
सुनि नरेश बोल्यो तब आपू ❀ देवपरस कीन्हे नहिं पापू
देवाकर्षण सब तुम जानहु ❀ करि जप तप देवनको आनहु
पवनमन्त्र मैं सुमिरण कीन्हा ❀ आइ प्रभञ्जन दर्शन दीन्हा
भये रमित आनँद अति जीमा ❀ दोहद भयउ प्रकट भय भीमा
भयो गगन सुरगिरा प्रमाना ❀ होइहि बालक अतिबलवाना
महाबीर जानिहि संसारा ❀ याते सब अरिकुल संहारा
कौरवसहित कुशल ना उनके ❀ हरि भे बचन झूठ देवनके
यहि बिधि बर्षबीति यक गयऊ ❀ तादिन नाथ चरित यह भयऊ
परणकुटी ते उठेउ समोदा ❀ लीन्हों भीमसेन कहँ गोदा
दो० जाइबिलोक्यउँरुचिरयक, चन्द्रभाग को शृङ्ग ।
तापर भई अरूढ़ मैं, बालकलियोउछङ्ग ॥
तहँ बालधी सिंह फटकारे ❀ गर्जत सम्मुख चला हमारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं सभीत तन सुधि बिसराई ❀ परा भीम गिरि गोद बिहाई
होइ सरोष केहरि की ओरा ❀ चला निशङ्क करत रवघोरा
हाली धरा शिला गे फूटी ❀ जहँ तहँ परे बृक्ष बहु टूटी
गर्जत भीम भयउ अति शोरा ❀ गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा
देखि समीप बार नहिं लाग्यो ❀ अतिसभीतपुनिसोउठिभाग्यो
लक्ष भवन महँ खंभ उपारा ❀ जरत बचाइलीन परिवारा
एक चक्र बकबदन बिदारा ❀ दैत्यहि एक बिपिनमहँ मारा
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा ❀ अस बल बिदित भीम संसारा
सो सुधि भीमसेन कहँ भूली ❀ की हरि भई बांह युग लूली
अब सुनि अतिकीचकसौभाई ❀ मारेउ भीम बार नहिं लाई
जरासन्ध कीन्हो दुइ फारा ❀ अतिबलवान न लागी बारा

दो० अति निलज्ज भे पाण्डुसुत, भई टेक की हानि ।
अब आवत नहिं युद्ध कहँ, दुर्योधन भय मानि ॥

पकरेउ केश दुशासन आनी ❀ भई बिकल पाण्डव की रानी
सकेउ न देखि भयो मन माषा ❀ तादिन भीमसेन प्रण भाषा
तुव शोणित अस्नान करावों ❀ तादिन सुनु त्रिय केश बँधावों
क्षत्री करै न प्रण प्रतिपाला ❀ कही निलज त्यहि दीनदयाला
जियत दुशासन अरु कुरुराजा ❀ वहुअतिअधम न आवतलाजा
अबलगि सुनत रही सुत शूरा ❀ बसुधा मध्य शब्द बहु पूरा
अब सुनियत अक्रूर अमानी ❀ पूरि रही जगमहँ यह बानी
त्याग्यो प्रण मन लाज न आई ❀ भई कान्ह अब जगत हँसाई

दो० यद्यपि जानत नाथ तुम, तीनि काल व्यवहार ।
तदपिकहतजेहिबिधिभयो, पारथ को अवतार ॥

मोते कही भूप यह बानी ❀ बचन हमार सुनहु सुखदानी
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई ❀ अब सो करिय मध्यसुत होई
सुनि नृपगिरा शीशधरिलीन्हा ❀ सुनासीर आकर्षण कीन्हा
आवत शक्र न लागी बारा ❀ दोहद भयो बिदित संसारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुभदिनशुभघटिका जब भयऊ ❀ तादिन जन्म पार्थ जग लयऊ
सुरन सहित सुरनायक आयो ❀ देखनको बिमान नभ छायो
बिश्वाबसु घटसुत गन्धर्बा ❀ गावत बिबिध राग सुर सर्बा
मञ्जुघोष मेनका घृताची ❀ तोरहिं ताल तानगति नाची
बाजहिं पटह शङ्ख करनाला ❀ बर्षहिं बिबुध कल्पतरुमाला

दो० बिबुध नटी आईं सकल, करत सुमङ्गल गान।
पूरिरहो आनन्द जग, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते त्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

यहिबिधि बीति याम यक गयऊ ❀ मधुर गिरा नभमण्डल भयऊ
होइहि बालक अति धनुधारी ❀ परम धर्म श्रीहरि हितकारी
ब्रजमहँ होइ कृष्ण अवतारा ❀ सो याको होइहै रखवारा
हम सब देवन के तारायण ❀ ते दोऊ हैं नर नारायण
नर अर्जुन नारायण यदुपति ❀ ये दोऊ जानौं एकै गति
कह्यो करण शूली यह नामा ❀ गये अमर सब निजनिज धामा
तुव बललीन जगत महँ पारथ ❀ यह मेरोतन और अकारथ
भयो न अमर बचन कछु सांचा ❀ मरेउ न कर्ण आजु लग बांचा
दियो काढ़ि दुर्योधन राई ❀ बन बन फिरत लाज नहिं आई
ऐसी सहै होइ जो हीना ❀ है बलिष्ठ अरु अस्त्र प्रबीना

दो० गर्ब कियो हनुमान से, बांध्यो सागर बारि।
बाणन कीन्हो बाट नभ, हाथी लियो उतारि॥

असुर निवातकवचबध कीन्हा ❀ धनपति जीति दण्ड लै लीन्हा
फूंके बन खाण्डीव गरेरा ❀ नाश्यो गर्ब पुरन्दर केरा
द्रुपद नरेश स्वयम्बर मांही ❀ भेदि मत्स्य द्रौपदी बिवाही
इन्द्रकील रण शम्भु रिझायो ❀ है प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो
सकलधरा निजबलबशकीन्हा ❀ द्रुपद जीति गुरुदक्षिण दीन्हा
देव दैत्य मानव बल भारी ❀ तुव प्रसाद जीते बनवारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गये साजि कौरव दल भारी ❋ भीषम द्रोण करण बलभारी
ते अर्जुन बिराटपुर जीते ❋ अब क्यहि काज होत भयभीते
क्यहि कारण अब बार लगाई ❋ मिलि रणभूमि करे कदराई
कह कुन्ती सुनिये यदुराई ❋ पारथ ते कहिये समुझाई
दुर्योधन भय मनहिं न आवत ❋ अपने कुलहि कलङ्क लगावत
सिंहबंश महँ भयो सियारा ❋ देखत तुमहिं नग्न भै दारा
क्षत्रिधर्म दीन्हो सब खोई ❋ बांस बंशमहँ भयो घमोई
तुम अतिनिलजलाजसबत्यागा ❋ उपजे हंसबंस जिमि कागा
शत्रु तुम्हार शीशपर गाजत ❋ देखत नयन नेक नहिं लाजत
की तुम मरहु सकल बिष खाई ❋ की आयुध धरि लेहु लराई
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ❋ तुमअतिनिलजनआवतलाजा

दो० की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय ।
करैं युद्ध नत नाथ मैं, मरौं हलाहल खाय ॥
यहिप्रकार कहि कृष्णते, हृदय बहुत संताप ।
सुधिकरिकुन्तीसुतनकी, लागी करन बिलाप ॥

कह्यो कृष्ण माता सुनि लीजै ❋ दिन दश पांच धीर मन कीजै
बन्धुन सहित धर्म नरपालक ❋ आवत हैं कौरवकुलघालक
करिहैं युद्ध बिजय सबहीते ❋ होइहैं काज सकल मन चीते
सुनि हरिबचन धीर मनआनी ❋ लगीकहन निज प्रथम कहानी
मम सुत देखि हृदय अकुलाई ❋ माद्री निकट भूप के आई
सुत न भये दारुण दुख ब्यापा ❋ नृपसमीप अतिकीन्हबिलापा
कारण पूछि भूप दुख पावा ❋ निकटबोलिम्वहिंबचनसुनावा
बिप्र बधू की शाप सयानी ❋ तुम कह कह्यो बात सब जानी
मोते कछु निसरी नहिं काजा ❋ असकहि भये सकल दिगराजा
करहु उपाय तोरि यह दासी ❋ उपजै सुत पावै सुखरासी
तब हरि दुखित भये मैं जाना ❋ धीरज दीन कीन सनमाना
आवाहनकरि अश्विनिकुमारा ❋ आये धरणि न लागी बारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिबुधबयदमिलिब्योमसिधायो ❀ भयो गर्भ माद्री सुख पायो
दो० भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देवके देव ।
अतिबिचित्र तब माद्रिसुत, भये नकुल सहदेव ॥
यकदिन भयो चरित भगवाना ❀ मुनिसमाज नृप सुने पुराना
भोजन को मैं साज बनावा ❀ रह्यो शेष दिन भूप न आवा
गह्वर भई नाथ मोहीते ❀ करत न अशन भूप दिन बीते
माद्री करि शृँगार गिरि ठाढ़ी ❀ तनतेनिकसिज्योतिअतिबाढ़ी
लखि स्वरूप दिननायक मोहे ❀ भये न अस्त यान पर सोहे
भोजन कीन्ह भूप सुख पाई ❀ मद्रसुता प्रणशालहि आई
होतहि अस्त ओट रबि भयऊ ❀ दीख नरेश शयननिशि गयऊ
कारण हमहिं महीपति पूछा ❀ मैं कहिदीन्ह सकल छलछूछा
दो० भावी कौनिउ यतनते, मिटि न सकै यदुबीर ।
कामबिबश नरनाह ह्वै, सके न मन धरि धीर ॥
मोते कहेउ भूप बहु बेरा ❀ माद्री बिबश भयो मन मेरा
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई ❀ सुनी श्रवण कछु मन नहिं आई
मद्रसुता ते करि अनुरागा ❀ परसत देह भूप तन त्यागा
माद्री सहित मोहिं दुख ब्यापा ❀ उच्चस्वर करि कीन्ह बिलापा
रोदन सुनत महामुनि आये ❀ कोल किरात भील सब धाये
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी ❀ आरत शब्द रहा तहँ पूरी
जे मुनि नृप के परम सनेही ❀ ज्ञानकथा कहि धीरज देहीं
म्वहिं प्रबोध करि चेत बहोरी ❀ चिता बनायसि काठ बटोरी
दो० जरनचली मैं भूपसँग, पाछिलि प्रीति दृढ़ाय ।
मद्रसुता तब बिकलह्वै, गहे चरण लपटाय ॥
हमरे हेत भूप तन त्यागा ❀ भा कलङ्क अरु पातक लागा
तुम्हरे पञ्चसुतन सम प्रीती ❀ तसि हमरे नहिं निपट अनीती
जो तुम रहौ करौ प्रतिपालक ❀ जौ लगि पुष्ट होयँ सब बालक
म्वहिं प्रबोधि लैकरि नृपअङ्गा ❀ चढ़ी चिता लै शीश उछङ्गा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्यहिक्षण धन्य भूप की भामिनि ❀ प्रियके संग भई सहगामिनि
चढ़ि बिमान पतिसँग सुरलोका ❀ गई भई सो परमबिशोका
जीवत रहिउ छांड़ि निजनेता ❀ हम तजि लाज दुसहदुखहेता
सुतन लागि कृत जन्म खुवारी ❀ तिन हरि तजी बृद्ध महतारी
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा ❀ करत युद्ध नहिं मानि अँदेशा
क्षत्रीधर्म दूरि है याते ❀ बिरद सँभारि लरौ सुत ताते
नाहिंन हीन बंश अवतारा ❀ भे कादर सुत मनहिं बिचारा
कुरुबंशिन कर अनुचर होई ❀ अबलग युद्ध सकात न सोई
तुम शन्तनु नृप के कुलमाहीं ❀ जासु युद्ध सुर असुर सकाहीं
मातुपक्ष नहिं हीन तुम्हारा ❀ है यदुबंश बिदित संसारा
शूरसेन के हौ तुम नाती ❀ तिनकोसुयशाबिदितसबभांती
पुहुमी के राजा बहु जीते ❀ बचे रहत अजहूं भय भीते

दो० मातुपक्ष पितुपक्ष अब, बिदित सकल संसार।
शूरबीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार॥
कहाकृष्ण समुझायतुम, यह सिख मानि हमारि।
करहु राज्य तुम आपनो, अब निज बैरिन मारि॥

जो चुपरहौ साधिनिजमौनहि ❀ मिलहिनराज्यकरहुबनगमनहि
अस्त्र सनाह त्याग करि देहू ❀ भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू
कितौ करहु तुम मोरि सिखाई ❀ मारहु शत्रु सरौ मनुसाई
जो न लरहु कौरवसन आई ❀ तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई
भीमहि कहेउ सँदेश हमारा ❀ कस कादर भा जीव तुम्हारा
शूरबीर तुम्हरी जगलीका ❀ लरत न सुत तुमकरत ननीका
सबते मोहिं भरोस तुम्हारा ❀ बलपौरुष कित गयउ तुम्हारा
तुम बिराटपुर बैठि लुकाने ❀ मिलिहि भूमि नहिं पुत्र डेराने

दो० करत तपस्या चारियुग, सब नरेश जेहिलागि।
दूरिबैठि सुतनारि इव, राज्य दियो तुमत्यागि॥

रहे बैठि चुप लाज अकाजन ❀ सिखीधनुषबिद्या केहि काजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गदायुद्ध केहि काजन सीखा ❀ सो प्रभाव कछु नयन न दीखा
कहेउ सँदेश भूप के आगे ❀ करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे
जो नहिं लरहु मानि डर हारेहु ❀ नारिबचनकरिबनहिंसिधारेहु
हम नहिं जियब पुत्र यहि लाजा ❀ हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा
पुरबिराट हारेउ कुरुनायक ❀ अबसुत निफलभये तुवशायक
कीन्ह प्रथम प्रण सो बिसरावा ❀ भूली बृद्ध मातु रण दावा
सबते बहुत तुम्हारी आसा ❀ आवत सो न मानि अरित्रासा
देव दैत्य गंध्रब बलभारी ❀ तुव शर सहि न सकैं धनुधारी
यक्षराज निज युद्ध हरायो ❀ करि मद भङ्ग दण्ड लैआयो
दुर्योधनहि तुम्हारी सरिके ❀ करहु युद्ध निजप्रणसुधिकरिके

दो० सो पौरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहिं आय ।
क्षत्रिधर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय ॥

जो नहिं लरत देखि दुख मोरा ❀ अर्जुन धनुष बाण धिक तोरा
जीवन आश पुत्र कदराने ❀ कर्णबाण भय मानि छपाने
अरित्रियहँसहिंश्रवणसुनिबाता❀ मरै लाजबश कायर माता
क्षत्री धर्म नहीं तन माहीं ❀ तुमअतिनिलजलाजमननाहीं
कह्यो सँदेश नकुल सन जाई ❀ जीरण मातु तात बिष खाई
तुम ते सुत न और बरजोरा ❀ जीत्यउ नृप सबपश्चिम ओरा
बलपौरुष तव नाहिंन जानत ❀ तुमहूँ दुर्योधन भय मानत
धनु पकरे धरती थहराई ❀ लाज तजी अरु भूमि गँवाई
धर्मशील अतिशय बलदाई ❀ सो तुम बृद्ध मातु बिसराई
मोकहँ हरि अतिप्रिय सहदेऊ ❀ भूले हमहिं बिपति महँ तेऊ
तुम हरि कह्यो हमार सँदेशा ❀ करहु युद्ध तजि सकल अँदेशा
मिलिहै राज्य सत्य मत येहा ❀ ह्वै है बिजय न कछु संदेहा

दो० बहु अधर्म तुम धर्मरत, गत बिलोक मदमान ।
ह्वै है जय संशय नहीं, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह तुम कह्यो द्रौपदीते हरि ❋ कछु दिनरहौ हिये धीरज धरि
पैहौ राज्य साज तुम येहू ❋ प्रभु की कृपा न कछु संदेहू
तुम प्रभु धर्मराज समुझाई ❋ करहु यतन ज्यहि होइ लड़ाई
सब जग कहत सुनतकहँखोटी ❋ है बिन युद्ध बात अब छोटी
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा ❋ कृपासिन्धु तब धीरज दीन्हा
दिन दश धीर धरौ मन अम्बा ❋ मरिहैं कुरुपति सहित कुटुम्बा
असकहिकृष्णबिदापुनिकीन्हा ❋ करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
दै अशीश कुन्ती सुख पाये ❋ बाहर भवन दयानिधि आये

दो० पँवरि द्वार भे आयकै, रथ अरूढ़ यदुनाथ।
पुर बाहर लग लोगसब, गये पठावन साथ॥

भीषम द्रोण बिदा हरि कीन्हे ❋ करि प्रणाम निजगृहमगलीन्हे
बाहुलीक बिकरन पुरलोगा ❋ फिरे सकल हरि दीन्ह नियोगा
करत प्रणाम करण कहँ जानी ❋ रथ बैठारि लीन गहि पानी
हँसिकै कृष्ण कही यह भासा ❋ सुनहु करण पूरब इतिहासा
शूरसेन नृप अतिबल भारे ❋ भये पितामह बिदित हमारे
कुन्ती नाम सुता उपजाई ❋ सो तप हेत नदी तट आई
तहँवां दुर्बासा ऋषि आये ❋ देव अकर्षण मन्त्र सिखाये
एक दिवस सुखता अधिकाई ❋ मन्त्र परीक्षा की मति आई

दो० बालभाव के ब्याजते, नहिं कामना बिचारि।
जपेउअकर्षणमन्त्रतब, दीन्हउ दरश तमारि॥

सहस किरणि तनतेज अपारा ❋ भईबिकल नहिं रह्यो सँभारा
मूंद्यो नैन बैन नहिं आवा ❋ कीन्ह प्रभाकर निजमनभावा
मूर्च्छा बिगत नैन जब खोली ❋ तब कुन्ती लज्जित होइ बोली
यह सुर कीन्ह नीकि नहिं बाता ❋ भा कलङ्क यहि अब पितु माता
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई ❋ याते तुमहिं कलङ्क न होई
अङ्ग भङ्ग नहिं होइ तुम्हारा ❋ ले तिय आशिर्बाद हमारा
भये दिवाकर अन्तरधाना ❋ यह चरित्र काहू नहिं जाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चढ़ि बिमान रबि गगन सिधाये ❀ दोहद भयउ गर्भ तुम आये
लज्जित मातु पिता भय मानी ❀ भवन कोन महँ रही लुकानी
चोरवत तुम कहँ कुन्ती जायो ❀ डारि मँजूषा सहित बहायो

दो० प्रकट भये तुम गर्भ ते, तन द्युति पुञ्ज अपार ।
धनुषबाण कुण्डलकवच, सहितलीन्हअवतार ॥

देखि तरणि सम तेज अपारा ❀ दीन्ह बहाइ सरित की धारा
बहत नदी तनतेज बिराजा ❀ जलते प्रकट मनहुँ दिनराजा
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा ❀ बहत प्रबाह देखि तेहिं पावा
ताकी तरुणि रही बिनु बालक ❀ लैगा भवन कीन्ह प्रतिपालक
तुम हौ धर्मराज के भाई ❀ तजहु शत्रु सँग करहु सहाई
बचन हमार समुझि मन अपने ❀ और बिचार करहु जनि सपने
सुनेउ श्रवण श्रीपतिमुख बाता ❀ बोले बचन करण मुसक्याता
सुनी श्रवण तुमते जब बानी ❀ निश्चय मातु प्रथम हम जानी
जानेउ धर्मराज हम भाई ❀ भयो बहुत सुख कहा न जाई
क्षत्रीधर्म नाथ यह नाई ❀ कौरव तजि पाण्डवपहँ जाई
सहित बिबेक कहौ हरि जोई ❀ तुव शिष मानि करब हम सोई
चहौ नाथ जो सत्य छड़ाई ❀ सो हम करब न कोटि उपाई
यह कहि करण मौन गहि रह्यऊ ❀ तब यदुनाथ बिहँसि इमि कह्यऊ
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा ❀ षष्ठम अंश द्रौपदी केरा

दो० पांच बन्धु सेवा करहिं, तुम्हरी सहित समाज ।
चलहु करणजहँ धर्मसुत, अब हूजिय महराज ॥

सुनि हरिबचनकरणहँसिदीन्हा ❀ नीक बिचार नाथ तुम कीन्हा
जानहिं मोहिं युधिष्ठिर भाई ❀ करैं राज्य नहिं धर्म बिहाई
वै हमको देहैं सब जबहीं ❀ हम देइब कुरुपतिकहँ तबहीं
यामें होइहि परम अकाजू ❀ रहेउ न नाथ पाण्डुकुलराजू
और बिचार करौ जनि स्वामी ❀ रहे चुपाइ जानि अनुगामी
कह हरि कहेउ परमहित तोरा ❀ चलहु करण सुनि मोर निहोरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम कुन्ती के जेठे बालक ❋ करहुराज्यअरु कुलप्रतिपालक
तुम हरि कही सांचु सब सोई ❋ ऐसे समय उचित नहिं होई
कुरु पाण्डवन बैर है भारी ❋ मोरे बल रोपी उन रारी
मोहिं कुरुनाथ बन्धुकरि भाखा ❋ अशन बसन कछु बीच न राखा
सहित धरा धन सेन समाजा ❋ कीन्हेउ अङ्ग कोष को राजा

दो० पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुहदेह ।
शीश समर्पण स्वामि सँग, पूरुब मानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनौ मत मोरा ❋ सो अब करिय दास मैं तोरा
लक्ष भूप दोउ ओर प्रतापी ❋ तिन महँ पुण्यवान को पापी
समर कराय करिय प्रभु सोई ❋ सुख गर्वा पावै सब कोई
अब तुम जाहु बिलम्ब न लावहु ❋ पाण्डवकटक साजि लै आवहु
श्रीहरि और न करहु बिचारा ❋ अब रण होय हमार तुम्हारा
अस कहि कर्ण बिदा पुनि मांगी ❋ प्रभुपद परसि चलेउ अनुरागी
तन उत चल मन हरिके साथा ❋ पहुँचे करण जहां कुरुनाथा
साम दाम भय भेद दिखाई ❋ कही कर्ण के मनहिं न आई

दो० दारुक हाँके अश्व पुनि, चले बेगि भगवान ।
जाय युधिष्ठिर कटकमहँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
श्रीकृष्णगमनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

कथा सकल मुनि बरणि सुनायो ❋ जनमेजय नृप सुनि सुख पायो
पाछे बहुरि सहित अनुरागा ❋ लगेकहन इमि सकल बिभागा
कटक समीप कृष्ण जब आये ❋ धर्मराज सुनि आतुर धाये
सब बन्धुन मिलि कीन्ह प्रणामा ❋ लइगे जहां भूप बिश्रामा
अरघ देत आसन बैठारे ❋ शीतलजल लै चरण पखारे
पूछेउ भूप कहा करि आये ❋ बासुदेव हँसि बचन सुनाये
कह हरि तेहि एकौ नहिं मानी ❋ देन न कहत भूप अभिमानी
मिलिहि न और यतनते राजा ❋ करहु युद्ध कीजै दल साजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सुनत श्रवण नहिं बातकछु, देबेकी नहिं चाह।
बिना युद्ध नहिं महि मिली, कोटियतन नरनाह॥
मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ साजौ सेन बिलम्ब न कीजै
होइ निशङ्क अब करहु तयारी ❀ ह्वैहै बिजय कहत गिरिधारी
समुझत कृष्ण बचन कछु हीमा ❀ लरहु नरेश कही यह भीमा
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै ❀ सजि निजकटक दुन्दुभी दीजै
करहु युद्ध यह मन्त्र हमारा ❀ होई सो जो लिखी करतारा
बोले बचन नकुल मुसकाता ❀ अब नृप लरौ न दूसरि बाता
जानत हमहिं दीन प्रतिपच्छी ❀ रहा चुपाय बात नहिं अच्छी
अब जनि लरिय डरिय नरदेवा ❀ बोले बचन नकुल सहदेवा
दो० नहिं मानत हरिके कहे, भूले देखि समाज।
लरहु न करहु बिलम्ब अब, कही द्रुपद महराज॥
कही सात्यकी सुन्दरि बानी ❀ बिन संग्राम क्षत्रियन हानी
ताते अवशि युद्ध अब कीजै ❀ रिपु रण जीति देश सब लीजै
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो ❀ सहितबिराटशिखण्डीभाख्यो
धर्मराज हरि मिलि ठहरावा ❀ करब युद्ध यह मन्त्र दृढ़ावा
तेहि अवसर निज साज बनाये ❀ भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये
कुण्डिनपुर नरेश बरिआरा ❀ सो नृप बासुदेव को सारा
है लघु बंधु रुक्मिणी केरा ❀ लीन्हे साथ कटक बहुतेरा
गजरथ पदचर बिपुल तुरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा
दो० तेहि अवसर प्रापत भयो, भूपति सभा मँझार।
बैठारे पारथ निकट, सबहि जोहारि जोहार॥
देखेउ धर्मराज की ओरा ❀ बोले बचन गुमान न थोरा
जो आरत ह्वै राखो मोहीं ❀ भूप अशत्रु करौं मैं तोहीं
बुद्धिचक्षु को नाम मिटावों ❀ एक छत्र महिराज करावों
हमते होउ भूप आधीना ❀ करौं भूमि सब शत्रु बिहीना
सुनत बचन मन भीम न भायो ❀ ह्वै सरोष यहि भांति सुनायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहत सदा हम कान्ह भरोसे ❀ कीट समान गनैं नर तोसे
फिरि ऐसी जो बात बिचारी ❀ तौ डारौं पुनि जीभ निकारी
मारौं तोहिं न अधम अभिमानी ❀ मानत कृष्णदेव की कानी
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी ❀ ताते बची मृत्यु सुनु तोरी
जस तैं बचन भूप ते बागे ❀ अस जो कहत हमारे आगे
रुक्मिणि बन्धु जो न तुम होते ❀ मारि तुरत यमलोक पठोते
छाँड़त कृष्णदेव के नाते ❀ मुँह मसिलाय जाउ उठि ताते
अस कहि भीमसेन रिसवाई ❀ भुजा पकरिकै दीन्ह उठाई
चला तुरत जिय लज्जा पायो ❀ दुर्योधन के भवन सिधायो

दो० गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना लै साथ ।
अतिआदरते उठिमिले, बैठारे कुरुनाथ ॥

बैठतही इमि बचन बखाने ❀ जो कुरुपति तुम होउ डराने
तौ हम होई तुम्हरे सङ्गा ❀ पाण्डव रण जीतौं रणरङ्गा
जो तुम होउ अधीन हमारे ❀ करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई ❀ कहि कटुबचन दीन्ह दुरिआई
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे ❀ जीतिसकै जगमहँ अस कोरे
गुरू द्रोण जो अस्त्र सँभारै ❀ देव अदेव सकल रण हारै
बृद्ध पितामह बिदित हमारे ❀ जिनसे परशुराम रण हारे
ते भृगुनाथ बिष्णु अवतारा ❀ और को जीति सकै संसारा
मोरा बल कोउ थाह न पावत ❀ ताहि मूढ़ तैं भरम देखावत
बल तुम्हार हमरो सब जाना ❀ जादिन कृष्ण बांधिकै आना
शीश मुण्डि कीन्हे अपमाना ❀ बलि छड़ाइ दीन्हे जियदाना
हरि पाण्डव के भयउ सहायक ❀ तेऊ नहिं मोरे रण लायक

दो० होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ ।
अतिलज्जितहोइनाइशिर, गयो भवनसकुचाइ ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई ❀ अब नृप सुनहु कथा मनलाई
गये कृष्ण पाण्डव घर जबते ❀ भाअतिबिकल कुरूपति तबते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेजहीन मन अति दुचिताई ❀ शोचबिबशनिशि नींद न आई
प्रातहि होत द्रोण गृह आये ❀ करि प्रणाम इमि बचन सुनाये
पाण्डव हमहिं बैरु सरसाना ❀ शरण तुम्हार भरोस न आना
होइय आपु सहायक मोरे ❀ अब मैं चरण शरण गुरु तोरे
अस कहि नयननीर भरिलीन्हा ❀ सुनिकै द्रोण उतरु तेहि दीन्हा
भरत बंश में जन्म तुम्हारा ❀ सुयश तुम्हार बिदित संसारा
राज्यनीति महँ बहुत प्रबीना ❀ करत भूप तुम कर्म मलीना
कपट यूप कछु सत्य न हारे ❀ तुम पाण्डव केहि हेत निकारे
शकुनी मन्त्र मानि छल कीन्हा ❀ आप कृष्ण कहे अंश न दीन्हा

दो० आपु बली हैं पाण्डुसुत, अरु सहाय भगवान ।
करहुभूप बिधिकोटितुम, जीति न सकहु मशान॥
उनको कछुअ न दोषनृप, तुमअतिकीन्हअनीति।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

बासुदेव हैं हरि अवतारा ❀ उनहिं को जीतिसकै संसारा
ते दयालु पाण्डव के जानौ ❀ ह्वैहै बिजय सत्य करि मानौ
भीषम आदि सकल रणधीरा ❀ रण तीरथ महँ तजैं शरीरा
जानौ सब कौरव संहारे ❀ हमहूं करण जाब रण मारे
होइहि सुनि सबको मदभङ्गा ❀ हम नृप करब तुम्हारो सङ्गा
हम मानत मनमें नहिं त्रासा ❀ भये बृद्ध नहिं जीवन आसा
होइ निश्चिन्त बैठु अब राजा ❀ हम तन तजब तुम्हारे काजा
छोड़त तुम्हैं बहुत कठिनाई ❀ जुरै काल तौ करौं लराई

दो० युद्ध जुरे पाण्डव सहित, मैं रोकौंघनश्याम ।
कोटि शपथ भृगुराम की, करौं घोर संग्राम ॥

धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा ❀ अब तुम अभय होहु नरनाहा
द्रौणी कही बन्धु सुनिलीजे ❀ भय त्यागहु मन धीरज कीजे
तीन्यों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै
हम मन बच क्रम तोर सहाई ❀ अब तुम अभय होहु कुरुराई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीषम भवन गयउ तब राजा ❀ द्रोण कर्ण लै सकल समाजा
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा ❀ गङ्गासुत आदर करि लीन्हा
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा ❀ सतिब्रत कै बैठे सामीपा
कह भीषम केहि कारण आये ❀ सुनि महीप तब बचन सुनाये
बन्धु बैर शालत उर मोरे ❀ आयों शरण पितामह तोरे

दो० एक सबल तौ पाण्डुसुत, औ सहाय भगवान।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान॥

अब उनके दल जुरे अपारा ❀ शूर एक ते एक जुझारा
नृपको बचन श्रवण सुनि लीन्हा ❀ हँसि गाङ्गेय उतरु तब दीन्हा
उन न करेव अपराध हमारा ❀ तुम छलकरि परदेश निसारा
शकुनी करण कुबुद्धि सिखाई ❀ खोयहु तुमहिं सुनहु कुरुराई
पुनि यदुनाथ बसीठी आये ❀ मांगे पांच ग्राम नहिं पाये
हम सब तुमहिं रहे समुझाई ❀ सुनत नहीं धौं कुमति सिखाई
करण भरोस मानि मन राजा ❀ करत अनीति नशावत काजा
कहा हमार श्रवण सुनि कीजै ❀ नीच जाति को मन्त्र न लीजै
यह है करण जाति को हीना ❀ तुमहिं सिखावत मन्त्र अलीना
जाति अहीर अधम अभिमानी ❀ सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी
उचित न कछु उत्तर पुनि जानी ❀ उठिगा भवन मानि गिल्यानी

दो० होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ।
जियत पितामह जबलगे, तौ न छुवों धनुहाथ॥

यह कहि बचन करण उठि गयऊ ❀ दुर्योधन मन बिस्मय भयऊ
मुख मलीन कुरुनायक चीन्हा ❀ देखि पितामह धीरज दीन्हा
पाण्डवसहित आपु घनश्यामा ❀ जीति न सकहिं भूप संग्रामा
करि मन कोप धनुष कर धारौं ❀ सकल क्षितीश धरणि के मारौं
को नरेश मोरे रण लायक ❀ करौं निपात साधि धनुशायक
चौबिसदिन भृगुपतिरणकीन्हा ❀ तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना ❀ आये भूप भूमि के नाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देव दैत्य नर तनु धरि आये ❀ जीति युद्ध में सकल हराये
दो० धीर धरौ चिन्ता तजौ, कीजै मन बिश्राम ।
अभय होउ भूपाल अब, को जीतै संग्राम ॥
राउ तुम्हारी ओर जो, देखै नयन उघारि ।
शत्रुभावकरि ताहि की, डारैं आंखि निकारि॥
सुनि यह बचन धीरता आनी ❀ कृपके भवन चला अभिमानी
कृपाचार्य पद परशन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा
पूछेउ मुनि केहि कारण आये ❀ समाचार कहि भूप सुनाये
कुरु पाण्डव को कलह महाना ❀ सो चरित्र तुम्हरो सब जाना
हम उनपर साजी अवधारी ❀ भये सहायक श्री बनवारी
बूझि परत नहिं मोहिं उबारा ❀ अब मुनि एक भरोस तुम्हारा
असकहि लोचन बारि बिमोचे ❀ सुनत बचनमुनिमनमहँ शोचे
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ शोकत्यागि करि धीरज कीजै
तजब देह भारत रण एहा ❀ तजब न तुमहिं तजौ संदेहा
दो० यहि प्रकार सनमान करि, कीन्हे बिदा भुवार ।
सबलसिंह चौहान कह, गये करण के द्वार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दुर्योधनभीष्मसंवादोनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

दो० करण कुरूपति केर मत, बर्णत बरहि बिभाग ।
कह मुनि जनमेजय सुनहु, कथासहितअनुराग ॥
पँवरि दुवार भूप जब आये ❀ समाचार प्रतिहार सुनाये
सुनत करण मन अति अनुरागू ❀ करतप्रणाम लीन्ह चलि आगू
देइ उपायन भवन लै आये ❀ अति अनूप आसन बैठाये
जोरि पाणि पुनि आयसु मांगा ❀ बोलेउ राउ सहित अनुरागा
अनल सहाय पवन कब यांचे ❀ करैं सहाय सखा ये सांचे
तुम ते और मित्र को मेरे ❀ मैं रण रच्यउ बांहबल तोरे
जानत तुम गाङ्गेय रुठाने ❀ तासु बचन सुनि मित्र रिसाने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालक जरठ बचन परतीती ❋ तात न करियकहतअसिनीती
बालापन महँ बहु बुधि होई ❋ जरा जनित डारै सब खोई
ताते मित्र क्रोध तजि दीजै ❋ उठिकै युद्ध शत्रु ते कीजै

दो० लरहु शत्रुमन क्रोधकरि, लेहु धनुष शर हाथ।
तुव बलते मैं रचेउँ रण, बिहँसि कही कुरुनाथ॥

सुनिकै करण चित्त सुखमाना ❋ बार बार यह बचन बखाना
भूपति सत्य कहौं प्रण कीन्हे ❋ तुमते उऋण न प्राणहुँ दीन्हे
अब निशङ्क होइय भूपाला ❋ तव हित मैं करिहौं शरजाला
बरुण कुबेर इन्द्र यम आवैं ❋ ते मोते जयपत्र न पावैं
द्रुपद बिराट भूप बहुतेरे ❋ पाण्डव नहिं हमरी सरिकेरे
उन कहँ कृष्णदेव उपजावा ❋ चहत बराबर युद्ध करावा
जबते भवन कूबरी डारी ❋ बुद्धि बिहीन भये बनवारी
मम बल जानत भूप कन्हाई ❋ गई भूलि सुधि कुमति सिखाई

दो० नाथ पठाइय दूत कोउ, धर्मराज पहँ जाइ।
करैं युद्ध की जाइँ बन, उनहिं कहै समुझाइ॥

करणबचन सुनि नृप सुख पाये ❋ बोलि उलूक उकील पठाये
पृथक पृथक कहि सबन सँदेशा ❋ करहु युद्ध की छांड़हु देशा
सुनत सँदेश जो तुम नहिं आये ❋ अब नहिं बचो जीव दबराये
की अब बेगि आनि तुम लरहू ❋ की बन जाहु अस्त्र परिहरहू
जो तुम मान भये भय पावत ❋ तौ अबहम बिराटपुर आवत
लै संदेश उलूक सिधाये ❋ धर्मराज की सेनहिं आये
पँवरि दुवार बेगि लै आये ❋ द्वारपाल तब जाइ जनाये
नृप कुरुनाथ उकील पठाये ❋ कहन सँदेश स्वामि पहँ आये
तब उलूक इमि बचन सुनावा ❋ धर्मराज सुनि निकट बोलावा
कहत सँदेश भूप को यांची ❋ सो अब सुनहु बात सब सांची
दूतन केरि रीति अस होई ❋ कहैं सँदेश सत्य सब सोई
अब नृप और बिचार न कीजै ❋ कीउठिलड़हु कि बनमग लीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० करण भूप संदेश तुम, सुनहु भूप दै कान ।
कौरव पाण्डव भूमि सब, छाइ दशो दिशिबान ॥

पाहि पुकारि शरण जब ऐहौ ❀ तौ तुम जीव दान नृप पैहौ
जो भूलत हौ कृष्ण भरोसे ❀ तुम न बचहु दुर्योधनरोसे
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई ❀ त्यहि त्यागहु जो चहहु भलाई
जो उठि लड़हु बात नहिं मानहु ❀ कृष्ण समेत मरे सब जानहु
सो सुनि भीमहिं पै रिस व्यापी ❀ कहत सँभारि बचन नहिं पापी
भे दृगअरुण खड्ग कर लीन्हा ❀ बरजेउ कृष्ण पाणिगहिलीन्हा
अब जय बिजय सुनो सब बाता ❀ करइ न भूप दूत कर घाता
यदपि कहै कटु बचन उकीला ❀ करै न क्रोध नरेश सुशीला
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी ❀ गयो उलूक भागि भय मानी

दो० बोलिनिकट नृप धर्मसुत, कह्यो बचन समुझाइ ।
दुर्योधन ते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ ॥

अब तुम मृषा न जानहु बाता ❀ कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु भ्राता
निजपौरुष तुम करहु सँभारा ❀ कोटि यतन नहिं होइ उबारा
अस कहि पठयो फेरि उलूका ❀ चला हृदय उपजी अतिहूका
रथ अरूढ़ होइ तुरत सिधाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
पँवरि दुवार तज्यो असवारी ❀ गा दुर्योधन सभा मँझारी
भीषम द्रोण कर्ण सब राजा ❀ सभामध्य कुरुनाथ बिराजा
देखी राज मण्डली भारी ❀ बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी
कह नृप कहन सँदेश पठाये ❀ समाचार उनके कछु लाये
हँसि बोले तब बचन उलूका ❀ कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका
हम आवत तुम होहु तयारा ❀ करहु युद्ध नहिं और बिचारा
सकलसभामहँ तुमहिं सुनावत ❀ होहु सचेत धर्मसुत आवत

दो० शपथकीन्ह भगवानकी, यह उन कह्यो सँदेश ।
प्रात होत अब आइहैं, अब न बिलम्ब नरेश ॥

सुनहु सँदेश न राखो गोई ❀ करौ भूप अब जो रुचि होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई ❋ कहे बचन पुनि सबहिं सुनाई
अब नृप धर्मराज मम नेरे ❋ आवत कठिन काल के प्रेरे
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावों ❋ मारि सकल यमलोक पठावों
शरपिंजर करि भीम दबावों ❋ मारि सकल पाण्डव बिचलावों
बांधि युधिष्ठिर करि मनुसाई ❋ जयतिपत्र देहौं लिखवाई
सहि न सकै पाण्डव मम शायक ❋ अबतुम अभय होहु नरनायक
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई ❋ अब सुनु अपर कथा कुरुराई

दो० होत प्रात उठि धर्मसुत, गये जहां यदुराय ।
करहिं बन्दना जोरिकर, चरण कमल शिरनाय॥

कही युधिष्ठिर अब बनवारी ❋ साजि कटक अब करहु तयारी
चलत उलूक सुनहु भगवाना ❋ प्रात होत कहिदीन पयाना
कृष्ण तुम्हारि शपथ हम खाई ❋ अबबिलम्बमहँ अतिकठिनाई
पठै दिये चरवर बनवारी ❋ कहेउ नृपनसन करहु तयारी
निज निज सेन नरेशन साजी ❋ उठे निशान दुन्दुभी बाजी
पलटनितान लदायो चारू ❋ और लदायो सकल बजारू
अगणित ऊंट बृषभ शकटादी ❋ खच्चर महिष चले लै लादी
सकल बस्तु कारीगर नाना ❋ लै लै लादि चले निज बाना
गजरथबाजिसाजिशिबिकाली ❋ भये अरूढ़ मेदिनी हाली

दो० सहनाई अरु पणव घन, ढोल ठौंकि झनकार ।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे बिबिध प्रकार॥
बन्दीगण बोले बिरद, रही शंख ध्वनि पूरि ।
हिरद घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वाणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना ❋ भयो अरूढ़ बजाय निशाना
धृष्टद्युम्न शिखण्डी आवत ❋ रथ अरूढ़ है शंख बजावत
युद्धमान सेना सब साजे ❋ पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० करण भूप संदेश तुम, सुनहु भूप दै कान ।
कौरव पाण्डव भूमि सब, छाइ दशो दिशिबान ॥

पाहि पुकारि शरण जब ऐहौ ❀ तौ तुम जीव दान नृप पैहौ
जो भूलत हौ कृष्ण भरोसे ❀ तुम न बचहु दुर्योधनरोसे
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई ❀ त्यहि त्यागहु जो चहहु भलाई
जो उठि लड़हु बात नहिं मानहु ❀ कृष्ण समेत मरे सब जानहु
सो सुनि भीमहिं पै रिस ब्यापी ❀ कहत सँभारि बचन नहिं पापी
भे दृगअरुण खड्ग कर लीन्हा ❀ बरजेउ कृष्ण पाणिगहिलीन्हा
अब जय बिजय सुनो सब बाता ❀ करइ न भूप दूत कर घाता
यदपि कहै कटु बचन उकीला ❀ करै न क्रोध नरेश सुशीला
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी ❀ गयो उलूक भागि भय मानी

दो० बोलिनिकट नृप धर्मसुत, कह्यो बचन समुझाइ ।
दुर्योधन ते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ ॥

अब तुम मृषा न जानहु बाता ❀ कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु भ्राता
निजपौरुष तुम करहु सँभारा ❀ कोटि यतन नहिं होइ उबारा
अस कहि पठयो फेरि उलूका ❀ चला हृदय उपजी अतिहूका
रथ अरूढ़ होइ तुरत सिधाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
पँवरि दुवार तज्यो असवारी ❀ गा दुर्योधन सभा मँझारी
भीषम द्रोण कर्ण सब राजा ❀ सभामध्य कुरुनाथ बिराजा
देखी राज मण्डली भारी ❀ बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी
कह नृप कहन सँदेश पठाये ❀ समाचार उनके कछु लाये
हँसि बोले तब बचन उलूका ❀ कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका
हम आवत तुम होहु तयारा ❀ करहु युद्ध नहिं और बिचारा
सकलसभामहँ तुमहिं सुनावत ❀ होहु सचेत धर्मसुत आवत

दो० शपथकीन्ह भगवानकी, यह उन कह्यो सँदेश ।
प्रात होत अब आइहैं, अब न बिलम्ब नरेश ॥

सुनहु सँदेश न राखो गोई ❀ करौ भूप अब जो रुचि होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई ❋ कहे बचन पुनि सबहिं सुनाई
अब नृप धर्मराज मम नेरे ❋ आवत कठिन काल के प्रेरे
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावों ❋ मारि सकल यमलोक पठावों
शरपिंजर करि भीम दबावों ❋ मारि सकल पाण्डव बिचलावों
बांधि युधिष्ठिर करि मनुसाई ❋ जयतिपत्र देहौं लिखवाई
सहि न सकै पाण्डव मम शायक ❋ अबतुम अभय होहु नरनायक
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई ❋ अब सुनु अपर कथा कुरुराई

दो० होत प्रात उठि धर्मसुत, गये जहां यदुराय।
करहिं बन्दना जोरिकर, चरण कमल शिरनाय॥

कही युधिष्ठिर अब बनवारी ❋ साजि कटक अब करहु तयारी
चलत उलूक सुनहु भगवाना ❋ प्रात होत कहिदीन पयाना
कृष्ण तुम्हारि शपथ हम खाई ❋ अबबिलम्बमहँ अतिकठिनाई
पठै दिये चरवर बनवारी ❋ कहेउ नृपनसन करहु तयारी
निज निज सेन नरेशन साजी ❋ उठे निशान दुन्दुभी बाजी
पलटनितान लदायो चारू ❋ और लदायो सकल बजारू
अगणित ऊंट बृषभ शकटादी ❋ खच्चर महिष चले लै लादी
सकल बस्तु कारीगर नाना ❋ लै लै लादि चले निज बाना
गजरथबाजिसाजिशिबिकाली ❋ भये अरूढ़ मेदिनी हाली

दो० सहनाई अरु पणव घन, ढोल ठौंकि झनकार।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे बिबिध प्रकार॥
बन्दीगण बोले बिरद, रही शंख ध्वनि पूरि।
हिरद घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वाणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना ❋ भयो अरूढ़ बजाय निशाना
धृष्टद्युम्न शिखण्डी आवत ❋ रथ अरूढ़ ह्वै शंख बजावत
युद्धमान सेना सब साजे ❋ पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्विरद अरूढ़ बीर बरियारा ❀ चल्यो तमौजा द्रुपदकुमारा
पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे ❀ भे असवार नृपति दल गाजे
पुनि रथ साजि सात्यकी आयो ❀ सेन संग निज शंख बजायो
सुतन समेत बिराट भुवारा ❀ लै निज कटक चले सरदारा
काशिराज सेना सँग लीन्ही ❀ रथअरूढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्ही
शूरसेन अपनो दल साजे ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे
जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ लै निज कटक चलो पुनि तेऊ
चालिस सहस छत्रधर राजा ❀ भे अरूढ़ बाजे पुनि बाजा

दो० साजे सकल नरेश पुनि, गजरथ तुरँग पदात ।
रथी महारथ गजरथी, कटक क्षौहिणी सात ॥

मिलिजुरि पँवरिद्वार जबआवा ❀ धर्मराज निज द्विरद मँगावा
कुन्तल सजि लायो मयमत्ता ❀ शंख बर्ण सुन्दर चौदन्ता
देखत रूप परम बिकरारा ❀ चारिउ चरण बहत मदधारा
कनकरचितमणिखचितअँबारी ❀ गजमुक्ता झालरि छबिकारी
धर्मराज हरिपद शिर नाई ❀ भे अरूढ़ प्रभु आयसु पाई
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे ❀ करि अतिनाद नकीबन टेरे
भयो शोर बहुदिग्गज डोले ❀ करिउदबाद बन्दिजन बोले
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे ❀ जहँ तहँ बिपुल नकीब पुकारे
होत महारव भयो अतङ्का ❀ बाजि उठे दल में बहु डङ्का
भीमसेन अपनो रथ साजे ❀ भये अरूढ़ बार बहु गाजे
पुनि पांचौ द्रौपदी कुमारा ❀ शंख बजाय भये असवारा

दो० मणिमय चित्रबिचित्र रथ, भये नकुल असवार ।
पांचकोटि यकसठ लिये, साज्यो भीम कुमार ॥

तब सहदेव कीन असवारी ❀ अर्जुन लै साजे बनवारी
लै शंकर सनाह पहिरायो ❀ इन्द्रदत्त शिर मुकुट बँधायो
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❀ पहिरायो जेहि मृत्यु न होई
अक्षय तूण बरुण जो दीन्हा ❀ सोई लै हरि पदि ढिग कीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना ❀ गाण्डिवनाम सकलजगजाना
सप्त पञ्च लागी हैं जामें ❀ बिद्युत्कोटि प्रभा है तामें
सो लै हरि अर्जुन कहँ दीन्हो ❀ धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हो
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ रण महँ शत्रु जाय तुम मारे
पुनि दीन्हो प्रभु आशिष येहा ❀ निश्चय बिजय न कछु संदेहा
अस कहि नान्दिघोष रथ आना ❀ सारथिरूप धरेउ भगवाना
श्वेत बरण लै चारो घोरे ❀ ते हरि आनि यानमहँ जोरे
करि अतिकृपा बार नहिं लायउ ❀ पाणि पकरि हरि पार्थ चढ़ायउ
करि सारथी बेष बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
शीशमुकुट जनु तरणि अभङ्गा ❀ चन्दन ते चर्चित सब अङ्गा
पीतबसन तनु श्याम सोहावन ❀ मणियुत पीत बिराजत पावन
कौस्तुभ कण्ठ रुचिर बनमाला ❀ अङ्गद युत द्वौ बाहु बिशाला

दो० कमलनयनकुण्डलकलित, ललितमधुरमुसकान
कच कारे कटि केहरी, कोटि काम हरमान ॥
पाणिकल्पतरु पदकमल, कमलबदन कमनीय ।
केशी कंस कलेश हर, कीन्ह कृपाकरि जीय ॥
कह्यो सारथी बेष जब, रथ हांक्यो भगवान ।
पार्थ ध्वजापर बैठिकै, तब गर्ज्यो हनुमान ॥

है प्रसन्न बोले भगवाना ❀ सुनहु युधिष्ठिर बचन प्रमाना
मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ ब्यूह बनाय गमन पुनि कीजै
बिरचि पिपीलब्यूह भगवाना ❀ कीन्ह बजाय निशान पयाना
अर्जुन रथ हांकेउ बनवारी ❀ सकल सेनके भयो अगारी
युद्धमान पुनि दक्षिण ओरा ❀ चले संग लै दल घन घोरा
सेनसहित दिशि बाम तमोजा ❀ रथ अरूढ़ मनो अपर मनोजा
धृष्टद्युम्न अति बल धनुधारी ❀ अर्जुन रथके चलेउ पछारी
नाना बस्तु लादि लै चारू ❀ ता पीछे सब लोग बजारू
ताके दक्षिण भाग शिखण्डी ❀ लिये साथ निजसेन अखण्डी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दल चतुरङ्ग सङ्ग पुनि साजे ❋ धृष्टकेतु दिशि बाम बिराजे
लिये धनुष कर शायक तीछे ❋ सेन समेत सात्यकी पीछे
दो० चलत कटक हाली धरा, लागी रेणु अकास ।
चले नकुल सहदेव सँग, लिये सङ्ग रनिवास ॥
दक्षिण दिशि द्रौपदी कुमारा ❋ चले सङ्ग लै कटक अपारा
घटउत्कच दल लै दिशि बामा ❋ पांच कोटि राक्षस बलधामा
अभिमन्यु रथ पाछे पुनि आवत ❋ लिये धनुष कर बाण फिरावत
अभिमन्यु सङ्ग बीर बरियारा ❋ उत्तर शंख बिराट कुमारा
लीन्हे साथ सेन समुदाई ❋ कीन्ह पयान निशान बजाई
धर्मराज पुनि कीन्ह पयाना ❋ बाजे दल गहगहे निशाना
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❋ बाजे शंख चले दल जूहा
चालिस सहस छत्रधर राजा ❋ चले सङ्ग लै सेन समाजा
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी ❋ भयउ अरूढ़ दुन्दुभी बाजी
उठी धूरि गो छाय अकाशा ❋ रबि अलोप पूरी सब आशा
लैकर धनुष चले पुनि गाजत ❋ नृप के दक्षिण भाग बिराजत
बायें ओर बिराट भुवारा ❋ कीन्ह पयान बजाय नगारा
काशिराज नृप गज के पाछे ❋ सेन समेत बिराजत आछे
दो० रथ अरूढ़ कर धनुषधरि, शूरसेन महराज ।
नृपगज के आगे चले, लै निजसाज समाज ॥
पीछे अनी बृकोदर आवत ❋ करत घोररव गदा फिरावत
बाम पाणि लीन्हे करवाली ❋ भीमहिं चलत धरा सब हाली
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले ❋ कमलनाल अहिदिग्गज बोले
कौतुक देखि चकित सुर डीठी ❋ परेउ भार कच्छप की पीठी
कदरव भीम बार बहु गाजे ❋ रबि तुरंग तजि मारग भाजे
सुरपुर भेदि भीम की हांका ❋ परी जाय ध्रुवलोकप हांका
चलीजात मग सेन अपारा ❋ बाजत शंख मृदङ्ग नगारा
भाट भरत कुल बिरद बखानत ❋ सुनिसुनि शब्द शत्रुभयमानत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दल बिलोकि मग होत अतङ्का ❀ रघुबर प्रथम गये जिमि लङ्का
दो० गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल।
गजघण्टा गाजत सुभट, सुरपुर शब्द कराल॥
कम्पत शेष बिकल भुजगेशा ❀ उठी धूलि छपिगयो दिनेशा
सुर बिमान नभ ऊपर छायउ ❀ सुमन बर्षि शुभ सगुन जनायउ
कह नृप तुम हरि अन्तरयामी ❀ बिजयउपाय कहौ अब स्वामी
बोले बिहँसि बचन भगवाना ❀ करहु नरेश शक्तिको ध्याना
तासु प्रसाद बिजय नृप होई ❀ यह तजि और उपाय न कोई
सुनि हरिबचन भूप अनुरागे ❀ करन ध्यान अम्बा को लागे
करि आचमन मूंदि दृग लीन्हें ❀ प्राणायाम बेदबिधि कीन्हें
करि अष्टाङ्ग सकल सुर साधी ❀ करत ध्यान नृप लागि समाधी
दो० मुक्तकेश कर खड्गधर, मुण्ड माल दृग लाल।
को सहाय मेरी करै, बिन काली यहि काल॥
उरग किंकिणी कटिलसै, शवारूढ़ भुज चारि।
हरन हमारे दुसह दुख, हे त्रिपुरारि पियारि॥
यहिबिधिबिनयभूपजबकीन्हा ❀ ह्वै प्रसन्न तब दर्शन दीन्हा
सानुकूल तब भई भवानी ❀ बरंबूहि बोली हँसि बानी
हे नरेश तुव हरिहि पियारे ❀ मांगहु जो अभिलाष तुम्हारे
सुनि प्रियगिराअमियरससानी ❀ बोलेउ राउ जोरि युग पानी
मिटे कलेश सुनी तव भाषा ❀ दरश देखि पूजी अभिलाषा
जानहु मातु मनोरथ मोरा ❀ मैं का कहौं दास मैं तोरा
तब यह कही अनुग्रह मोरे ❀ ह्वैहैं सफल मनोरथ तोरे
धर्मराज कहँ दै बरदाना ❀ भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना
हरि नरेश मन सुख अधिकाई ❀ कीन्ह पयान निशान बजाई
मग सर सरित सूखिगा पानी ❀ पङ्क रेणु ह्वै गगन उड़ानी
दो० चलेजात मग धर्मसुत, लीन्हे दल निज साथ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजनाथ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Ahasargon.in Mahavir

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करत शिबिर पुनि करत पयाना ❀ तब कुरुदेश आय नियराना
बीच बीच मग करत बसेरा ❀ कबहुँ पतान होय कहुँ डेरा
नगर बारुणावर्त्त समीपा ❀ कीन्ह्यो शिबिर पाण्डुकुलदीपा
जागे सकल निशा अवसाना ❀ प्रातहोत पुनि कीन्ह पयाना
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा ❀ गज अरूढ़ ह्वै चले नरेशा
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा ❀ कीन्हे धर्मराज तहँ डेरा
अमल अमोल बितान तनाये ❀ पटल कनात सहित छबि छाये
बाजत दल घरियार घनेरे ❀ जहँ तहँ परे नृपन के डेरे
परो धर्मसुत सेन अखण्डा ❀ परखहिं शिबिर देखि निज झण्डा

दो० धर्मराज की पाइ सुधि, कुन्ती पहुँची आय ।
देखि पुत्र अरु पुत्रतिय, आनँद उर न समाय ॥

धर्मराज पदबन्दन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा
बन्दत चरण नकुल सहदेऊ ❀ पाइ अशीष मुदितमन भयऊ
अर्जुन भीम आइ पद बन्दे ❀ अभिमन्यु आशिषपाइअनन्दे
परसे चरण द्रौपदी रानी ❀ उर लपटाइ लीन्ह गहि पानी
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी ❀ भीतर पलटि गई दुख मेटी
सुनि सब पुत्रबधू उठि धाई ❀ परी चरण अति आनँद छाई
कुशल पूछिकै कण्ठ लगाई ❀ दीन्ह अशीष निकट बैठाई
अभिमन्यु आदि परे पग नाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावत छाती

दो० कुन्ती गोद समोद तब, बैठारे सुत नन्द ।
सबलसिंह चौहान कह, पूरि रह्यो आनन्द ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

कह ऋषि सुनु जनमेजयराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण सुखदाई
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई ❀ भयउ अरूढ़ निशान बजाई
भीषम करण द्रोण धनुधारी ❀ साजी सेन भयंकर भारी
कृपाचार्य द्रोणी रण रङ्गा ❀ लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाहुलीक लै कटक अपारा ❀ भये अरूढ़ बजाइ नगारा
सोमदत्त सँग दल समुदाई ❀ बाजत पटह शंख सहनाई
भूरिश्रवा सेन सब साजे ❀ गज्ञाधर कम्बोज बिराजे
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना ❀ दुर्योधन सँग कीन्ह पयाना
शल्य नरेश हलम्बुष साजे ❀ पवन निशान शंख बहु बाजे
साज्यो पुनि कलिङ्ग नरनाथा ❀ लै नवलाख द्विरद पुनि साथा

दो० रथ तुरङ्ग बहु रङ्ग के, सेना साथ अनन्त।
असी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदन्त॥

सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा ❀ अति रणधीर बीर बलधामा
लैकर धनुष बजाइ नगारा ❀ कौरव संग भयो असवारा
शकुनी औ बिकरण रणरङ्गा ❀ द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा
सौ बन्धव दुर्योधन केरे ❀ भ्रातजात अरु तनय घनेरे
निजनिज रथन भये असवारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा
सेन समेत त्यागि सब धर्मा ❀ द्विरद अरूढ़ चल्यउ कृतबर्मा
नृप उलूक बृषसेन भुवाला ❀ चले सङ्ग लै कटक बिशाला
नृप शशिबिन्दु चले दलसाजे ❀ तुरँग अरूढ़ दमामे बाजे
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❀ चले साथ लै सेन समाजा
अस्त्रनिपुण अरु अति बलदाई ❀ ज्येष्ठ मित्रबिन्दा के भाई
कह हरि कथा भूप तुव जानी ❀ अति प्रिय कृष्ण देवकी रानी
तासु बन्धु द्वौ अति बलदाई ❀ दुर्योधन के भये सहाई

दो० साठि सहस नृप छत्रधर, दै गहगहे निशान।
निजनिज दल सँग लै चले, गर्द लोपिगे भान॥

एकादश क्षौहिणि दल साथा ❀ करत अकूत चल्यो कुरुनाथा
बाजे बाजन भांति अनेका ❀ उठी धूरि रबिमण्डल छेका
भा अँधियार जानि निशि घोरा ❀ बिछुरे चक्रबाक के जोरा
बाजत बिपुल नृपन के डङ्का ❀ हाली धरा परम आतङ्का
दलके भार धराधर डोले ❀ बिरदावली भाट बहु बोले

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि सुनि नाद नकीबन केरा ❋ खग मृग त्यागो भागि बसेरा
गर्जत बिपुल सुभट मग जाहीं ❋ अति आतङ्क होत दलमाहीं
पीत ध्वजा रथ पीत बिराजे ❋ पीत धनुष पीतै गुण साजे
पीत बरण चारो हैं घोरे ❋ बसन बिचित्र पीत रँग बोरे
धनुष चिह्न ध्वज ऊपर राजत ❋ पीतबर्ण दल कर्ण बिराजत

दो० श्वेतबर्ण तन बसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान ।
श्वेतकेश रथ बाजि हैं, श्वेतध्वजा फहरान ॥

ताल चिह्न ध्वज शोभा पावत ❋ लै दल श्वेत पितामह आवत
श्यामबर्ण रथ अधिक सोहावत ❋ श्यामबर्ण घोड़े छबि पावत
नील कञ्जरित धनु कर लीन्हे ❋ नीलबर्ण तामें गुण दीन्हे
नीलरङ्ग फहरात पताका ❋ खड्ग चिह्न तामें अतिबांका
नील निचोल बिभूषण साजे ❋ नीलबर्ण दल द्रोण बिराजे
अरुणबर्ण दल साजि सुशर्मा ❋ अरुणबर्ण शोभित धनु कर्मा
अरुण चमर शोभित रथकेतू ❋ चलेउ साजि कुरुपति जयहेतू
सिन्धुराज के तुरै हरेवा ❋ अति लाघव गति मनहुँ परेवा
हरित केतु सोहत रथ ऊपर ❋ हरित बसन छायो दल भूपर
कौरव सब कुरुनायक सङ्गा ❋ तिनके रथन ध्वजा पचरङ्गा
द्विरद चिह्न नृप स्यन्दन सोहत ❋ अतिबिचित्र रणको मनमोहत

दो० निज निज रथन अरूढ़ नृप, सोह ध्वजा बहुरङ्ग ।
हरितपीत कोउ श्यामसित, राजत सुघर सुरङ्ग ॥

यहि प्रकार कौरवपति सैना ❋ चलीजात उपमा कछु हैना
अतिअगाधकछुअन्त न जाना ❋ प्रलयसिन्धुकहि ब्यासबखाना
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा ❋ कौरव कटक टिका घनघोरा
तनवायो तहँ बिपुल बिताना ❋ बजत घोर रव नौबतखाना
गड़े केतु दल नानाकारा ❋ बाजत पँवरि पँवरि घरियारा
शिबिरशिबिरप्रतिसबबलधामा ❋ कीन्हेउ खानपान बिश्रामा
दोउ नरेश बहु खनक पठायउ ❋ ऊंच नीच महि सुढव बनायउ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

का सब भूमि गये यहि ताका ❋ अटकै जहां न स्यन्दन चाका
दो० ऊंचनीच खनि खनकगन, कीन्ही भूमि समान ।
सबलसिंह चौहान कहि, योजन सप्त प्रमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

जनमेजय पूछत अनुरागे ❋ पुनि मुनि कथा कहन सो लागे
करन हेतु कुलको सम्बोधन ❋ आये व्यास जहां दुर्योधन
उठि प्रणाम कीन्हो तब राजा ❋ आशिष दीन्ह रहै नृपलाजा
क्षत्री धर्म बढ़ै तन भारी ❋ जीवत छुटै न बानि तुम्हारी
असकहि व्यास बहुत समुझावा ❋ बंशबैर क्यहि काज बढ़ावा
सो अब भूप त्यागि करि दीजै ❋ कलह नीक नहिं सम्मत कीजै
देहु अंश सुनि शीष हमारी ❋ पाण्डव सबल होइ बाड़ि रारी
बिनकारण कीन्हो अपकारा ❋ लै कलङ्क तुम बिपिन निकारा
समुझि परस्पर करहु मिताई ❋ देहु अंश नृप मिटै लड़ाई
व्यास कही कछु चित्त न आनी ❋ सुनतबिहँसि बोला अभिमानी
दो० द्रोण कर्ण भीषम प्रबल, मो हित ये धनुधारि ।
देहुँ न भूमि मुनीश मैं, करौं भयंकर रारि ॥
जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❋ सब गुरुद्रोण मारि बिचलावैं
लरै पितामह जो करि क्रोधा ❋ सकै रोकि रण को जग योधा
चलहिं सरोष करण धनुतानी ❋ को रण बचहि महामुनि ज्ञानी
सुनिनृपबचनजानि अभिमानी ❋ कही व्यासमुनि प्रथम कहानी
पुर कम्पिला देश पञ्चाला ❋ प्रषद नाम तहँ भयो भुवाला
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा ❋ द्रुपदनाम त्यहि सुत उपजावा
बिद्या कारण भूप पठाये ❋ अग्निबेष के आश्रम आये
ऋषि के भवन बड़ी चटशारा ❋ द्विजकुमार अरु राजकुमारा
प्राकृत देव बचन को भाखा ❋ ताते दूरिकिये नहिं राखा
भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा ❋ पढ़हिं द्रोण तहँ बुद्धि उदारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रषद पुत्र ते परी मिताई ❀ एकहि संग पढ़े मन लाई
रह्यउ न बीच प्रीति अतिबाढ़ी ❀ नृप सुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी
जब पाइब हम साज समाजू ❀ आधा बांटि देहुँ तोहिं राजू
यहि प्रकार बीते कछु काला ❀ मरे प्रषद भे द्रुपद भुवाला
बिद्या सकल द्रोण पढ़िलीन्हा ❀ जाइ महाबन पुनि तप कीन्हा
गौतम सुता द्रोण पुनि ब्याही ❀ कृपभगिनी जानत जग ताही
ताके सुत भे अश्वत्थामा ❀ जगतबिदितगुणसबअभिरामा

दो० द्रोण द्रुपद भूपालते, सुत हित मांगी गाइ ।
नहिं दीन्हों अपमानकरि, दियो तुरत दुरिआइ ॥
जानत जग समरथ हते, मुनिबर उभय प्रकार ।
दियो शाप नहिं क्रोधकरि, कियो न अस्त्रप्रहार ॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये
गेंद काढ़ि बालकन देखावा ❀ सुनिभीषमनिजनिकटबोलावा
चरण परस कीन्हों सनमाना ❀ दीन्हों धेनु धरा मणि नाना
सौंपो पुनि कौरव कुल केतू ❀ बालक सब धनु बिद्या हेतू
अर्जुन ते मानत अति प्रीती ❀ अस्त्र सिखायो अदभुत रीती
अस्त्रसिखाय निपुण पुनि कीन्हो ❀ भीषम जाय परीक्षा लीन्हो
तुङ्ग बिशाल एक बट भूपर ❀ कृतमा भार धरा ता ऊपर
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो ❀ भेद हेत सब शिष्य बोलायो

दो० गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सबै यक साथ ।
कटि निषंग करबाल कसि, चले धनुष धरि हाथ॥

भीषम द्रोण बिदुर तहँ ठाढ़े ❀ द्रोण समीप मोद मन बाढ़े
जायप्रणाम सबनमिलि कीन्हा ❀ चिरञ्जीव कहि आशिष दीन्हा
पंगति बांधि ठाढ़ गुरु कीन्हा ❀ हनहु लक्ष यह आशिष दीन्हा
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपहि ❀ देखत पुत्र पक्षि के रूपहि
देखत वृक्ष माहँ की नाहीं ❀ सुनि यह बचन कह्यो गुरु पाहीं
सब देखत बोले कुरुराजा ❀ कहिऋषितुमतेसराहि न काजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुनि मुनि धर्मराज ते पूछा ❋ उन कहिदीन सकल छल छूछा
सब देखतहौं सुनि यह बानी ❋ सरिहि न काम महामुनिज्ञानी
सकल शिष्य पूछे यहि भांती ❋ कहो बात नहिं गुरुहि सोहाती
पुनि पूछी मुनि अर्जुन पाहीं ❋ देखत हमहिं कहेउ उनयाहीं
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत ❋ दृष्टि लगाय तुण्ड कहँ देखत

दो० पार्थबचन सुनि द्रोणगुरु, बोले गिरा प्रमान।
तुम ते निसरी काज सुत, करहु बिशिखसन्धान॥

सुनि अर्जुन छांड़े तब बाना ❋ कटी तुण्ड सबही सुखमाना
अति अनन्द भीषम उरछायो ❋ साधु साधु कहि कण्ठलगायो
तुमसबमिलिगुरुदक्षिणादीन्हेउ ❋ अर्जुनद्रव्य द्रोण नहिं लीन्हेउ
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना ❋ लावहु बांधि देहु यह दाना
गुरुशासन अपने शिर धारा ❋ नृपहि जीति चरणनतर डारा
देखि द्रोण तब दीन छड़ाई ❋ गयो नरेश भवन खिसिआई
श्रीहत भयो तेज तन नाहीं ❋ नृप प्रण कीन्हो यह मनमाहीं
मोते बैर द्रोण उपजावा ❋ शिष्य हाथ अपमान करावा
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना ❋ करवावों ताको अपमाना
बोलि लीन बहु बिप्र समाजा ❋ कीन अरम्भ यज्ञकर राजा
वेद ऋचा पढ़ि बिप्र अनन्ता ❋ कीन यज्ञ पुनि बर्ष प्रयन्ता
है प्रसन्न सुरनायक आये ❋ सिद्धकाज कहि भवन सिधाये

दो० प्रथम प्रकट भइ द्रौपदी, उपमा कहत बनैन।
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते, कढ़ो पुत्र जनु मैन॥
शीशमुकुटकुण्डलकवच, लिये धनुष शर हाथ।
द्रोणनिधन हित निर्मयो, कमलयोनिकुरुनाथ॥

भीषम निधन हेत संसारा ❋ भयो शिखण्डी को अवतारा
काशिराज त्रैसुता सयानी ❋ भीषम जीति स्वयम्बर आनी
नाम अम्बिका सब गुणरामी ❋ अम्बा नाम रूप कमलासी
युगल विचित्रबीर्य कहँ ब्याही ❋ अम्बालिका न ब्याह्या ताही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नयन सनीर गरे भरि आवा ❀ बोली बचन शोच उपजावा
गङ्गासुत तुमहीं हरि आनी ❀ मोको अब लीजै गहि पानी
सुनि भीषम बोले यह बानी ❀ राजसुता तुव बात न जानी
मात पिता सन कीन करारा ❀ देखौं मैं न नयन भरि दारा
परशुराम जहँ पुरुष अनादी ❀ भा मन शोक गई फिरियादी
कही कथा पुनि रोदन कीन्हा ❀ है दयाल तिन धीरज दीन्हा

दो० आज्ञा भङ्ग न करिसकै, भीषम शिष्य हमार।
तोका सौंपौं पानि गहि, यह मुनि कीन करार॥

प्रात होत मन परम अनन्दन ❀ लै नृप सुता चले भृगुनन्दन
पुरी हस्तिना को चलि आये ❀ भीषम देखि चरण शिर नाये
आदर ते पुनि भवन लवाये ❀ अतिपुनीत आसन बैठाये
आवतही इमि बचन सुनायो ❀ सुनहु पुत्र जा कारण आयो
की याको लीजै गहि पानी ❀ की रण रचिय कही यह बानी
मो सम कौन भयो जग अत्री ❀ इकइस बार हने सब क्षत्री
कोउ कोउ बचे नारिके बोले ❀ सुनि सक्रोध गङ्गासुत बोले
क्षत्री बंश बैर भरि लेहौं ❀ समर हराय जान तब देहौं
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई ❀ कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई

दो० द्वन्द्व युद्ध तहँ अति भयो, शर छूटे पुनि बाम।
गुरू शिष्य सम्मित करो, तेइस दिन संग्राम॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा ❀ कठिनबाण धनु तानि प्रहारा
बाम पार्श्व लागेउ जब शायक ❀ रथते बिकल गिरेउ भृगुनायक
उठे सँभारि कीन संधाना ❀ भीषम के मारे बहु बाना
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनि मारी ❀ परेउ गङ्गसुत भूमि दुखारी
शक्ति घात लागी अति पीरा ❀ सुधि न रही कछुबिकलशरीरा
ताही समय सकल बसु आये ❀ पाणि पकरि गाङ्गेय उठाये
हौ अष्टम बसु को अवतारा ❀ तुम पीड़ित नहिं करहु सँभारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस कहि गयो सप्तबसु जबहीं ❀ रथ अरूढ़ गङ्गासुत तबहीं

दो० ब्रह्म अस्त्र संधानि करि, कीन्हो तुरत प्रहार।
छिटकी ज्योति अकाश महँ, चले करत हुङ्कार॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❀ चलेउ अकाश भयो उजियारा
भये शिथिल आयो द्यौ धरणी ❀ युद्ध कियो करि अद्भुत करणी
जामदग्नि निज शक्ति प्रहारी ❀ भयो अघातशब्द अतिभारी
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे ❀ ग्रीषम के प्रचण्ड रबि जैसे
लागी हृदय परत नहिं सूझी ❀ महि गिरिपरो सारथी जूझी
जोती छूटि स्ववश होइ बाजी ❀ चले पलटि स्यन्दन लै भाजी
रथ अरूढ़ ह्वै कृप करि गङ्गा ❀ गही बांह लै फिरे तुरङ्गा
होइहि बिजय पुत्र सुनि लीजै ❀ होइ निश्चिन्त युद्ध अब कीजै
यह कहिकै स्यन्दन पलटाई ❀ भृगुनन्दन के सम्मुख लाई
चतुर्बिंश दिन युद्ध महाना ❀ अब नृप कहौं सुनौ दै काना
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा ❀ करहिंनिवारण बिबिधप्रकारा
नारायण शर भीषम लीन्हा ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा

दो० तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हो पशुपति बान।
अतिलाघवद्दगअरुणकरि, कीन्हो धनुषसँधान॥

छिटकी ज्योति भयो उजियारा ❀ नभपथ चले करत सुसकारा
अस्त्र शस्त्रते भयो निवारण ❀ तब लागेउ तीक्षण शर मारण
नील बाण भीषम फटकारा ❀ भृगुपति के मस्तक महँ मारा
रहेउ न धीर भई अतिपीरा ❀ गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा
भीषम देखि बहुत पछिताने ❀ धाये उतरि छत्र शिरताने
कहत न बनै नयन जल बाढ़े ❀ मुखपर छत्र छांह किय ठाढ़े
उठहु न नाथ गङ्गसुत बोले ❀ सुनि भृगुराम युगल दृग खोले
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा ❀ भीषम कहँ बहु बार प्रशंसा
तुमसम कोउ गुरुभक्त न आना ❀ अब सुत मांगि लेहु बरदाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Project

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मांगत हौं मांगे यह दीजै ❀ रथचढ़ि लड़हु कृपा पुनि कीजै

दो० परशुराम अरु गङ्गसुत, चढ़े रथन पर जाइ।
धनुषबाण पुनि कर गहे, निज निज शंख बजाइ॥

त्यहि अवसर मरीचिऋषि आये ❀ गहि कर परशुराम समुझाये
अब तुम तात तजो यह काजै ❀ शिष्य पुत्र ते नीक पराजै
भीषम ते बोले ऋषिराजा ❀ गुरु ते रण जीते बड़िलाजा
ताते युद्ध त्याग करिदीजै ❀ है मत नीक भवनमग लीजै
सुनि शुभ गिरा गङ्गसुत बोले ❀ कहे नाथ तुम बचन अमोले
क्षत्री समर बिमुख होजाई ❀ लोक अयश परलोक नशाई
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहौं ❀ अपने कुलहि कलङ्क न लैहौं
परशुराम हैं हरि अवतारा ❀ जीते भूमि भूप बहु बारा
अर्जुन भुज गहि पानि कुठारा ❀ काटे सुयश बिदित संसारा
यकइस बार भूप बिन कीन्ही ❀ धरा सकल बिप्रन कहँ दीन्ही

दो० ताते प्रथमहिं नाथ तुम, उनहिं देउ पलटाय।
तबलगि मैं नहिं रण तजौं, कीन्हे कोटि उपाय॥

अस कहि मवन गङ्गसुत भयऊ ❀ पुनि मुनि परशुरामपहँ गयऊ
गहि जोती कर बाजि फिरायो ❀ बहु बुझाय स्यन्दन पलटायो
चले निरखि भृगुनन्दन जाना ❀ हर्षि गङ्गसुत कीन्ह पयाना
बिनय बचन बहुभांति सुनाये ❀ करि प्रणाम अपने थल आये
है निराश तब राजकिशोरी ❀ चिता बनायो काठ बटोरी
सुरसरि निकट मांगि बर लीन्हा ❀ भीषम निधन हेतु प्रण कीन्हा
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी ❀ द्रुपदपुत्र तेहि भयो शिखण्डी
करण निधनहित सुनहु भुवारा ❀ है जग पारथ को अवतारा
तुम्हरी मीचु भीम के हाथा ❀ है निश्चय जानहु कुरुनाथा

दो० मृषा होय नहिं तुव बचन, जानिपरी अब सोय।
भावी कौन्यउ यतनते, मेटि सकै नहिं कोय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम जानत भवितव्यता, कह नृप बारहिंबार ।
करब युद्ध होइहि सोई, जोबिधिलिखालिलार ॥
सुनत ब्यास उठि कीन्ह पयाना ❋ भावी चित्त प्रबल हम जाना
सुमिरत मन हरि ध्यान लगाये ❋ नगर हस्तिनापुर चलि आये
धृत्तराष्ट्र आदर करि लीन्हा ❋ दण्डप्रणाम बार बहु कीन्हा
गहि पद भूप ब्यासते बूझा ❋ होइहि सम्मति की अब जूझा
कह मुनि होइहि बिकट लराई ❋ बोल्यो राउ बहुरि शिर नाई
मैं जानौं जेहि सब संग्रामा ❋ करि उपाय सोइ सेव्य अकामा
दिव्यदृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा ❋ ये कहि हैं तुम ते रण चीन्हा
जो होई संग्राम तमासा ❋ असकहिगयेबिपिनऋषिब्यासा

दो० बैशम्पायनकर चरित, समझायो सब भूप ।
सबलसिंह चौहान कह, निजबल के अनुरूप ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दो० कह मुनि जनमेजय सुनहु, निज कुलके गुणगाथ ।
बोलि सकलमन्त्री निकट, करत मन्त्र कुरुनाथ ॥
कहहु सचिव का करिय बिचारा ❋ बैरी धर्मराज बरिआरा
लागत हमैं सकल मत फीका ❋ शकुनी कह्यो मन्त्र अब नीका
ईहै मन्त्र करण पुनि दीन्हा ❋ चहिये शत्रु संग रण कीन्हा
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ ❋ सबन बैठि दृढ़ मन्त्र ठहायउ
इहां कृष्ण लै सकल समाजा ❋ अर्जुन भीम धर्मसुत राजा
द्रुपद बिराट आदि भटभारी ❋ पूछत सबहिं मन्त्र बनवारी
बुद्धिमान हौ तुम सब भूपा ❋ कहौ मन्त्र निज निज अनुरूपा
तब इमि कहेउ बिराट भुवारा ❋ सुनहु मन्त्र बसुदेव कुमारा
और बिचार कौन यहि माहीं ❋ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं

दो० कही द्रुपद नरनाह तब, सुनिये श्रीब्रजराज ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और बिचार न कीजिये, करहु युद्ध कर साज ॥

कही सात्यकी सुनिये मोमति ❀ मिलिहिनभूमियुद्धबिनुयदुपति
ताते कीजै अवशि लराई ❀ शत्रु जीति महि लेब छुड़ाई
नीक मन्त्र सात्यकी बिचारा ❀ कह्यो नकुल यह बारहिंबारा
कुन्ती कह्यो मन्त्र सुनि लीजै ❀ करिअरिनिधन राजनिजकीजै
हैं यदुनाथ सहायक तोरे ❀ ह्वैहै बिजय पुत्र मत मोरे
सहदेवहु दीन्हों मत येहा ❀ कीजै रण त्यागो संदेहा
धर्मराज कीन्हे रण करणी ❀ जीतौ शत्रु मिलै निज धरणी
दुर्योधन कीन्हो अभिमाना ❀ समुझायो हरि बात न माना
बिना युद्ध कैसे महि देहै ❀ अब नृप त्याग करौ संदेहै

दो० भीमसेन यहि बिधि कहेउ, बिहँसि कृष्णते बैन ।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन ॥

अब देख्यो पुरुषारथ मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा
सम्मुख दुर्योधन सन लरऊं ❀ रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊं
सुनहु भूप कौरव बिन मारे ❀ नहिं आइहि सन्तोष हमारे
दुर्योधन जीतौं रण माहीं ❀ कृष्णकृपा कछु निजबल नाहीं
ताते और बिचार न करहू ❀ अब भय त्यागि भूप तुम लरहू
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा ❀ करहु युद्ध सब छांड़ि अँदेशा
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे ❀ करिहौंनिधन बिजयहिततुम्हरे
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला ❀ करहु युद्ध जनि डरहु भुवाला
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई ❀ मारौं करौं महा प्रभुताई
काशिराज दीन्हे मत येहा ❀ लड़हु नरेश तजहु संदेहा
भये सहायक श्रीबनवारी ❀ निश्चयबिजय न हारि तुम्हारी

दो० धर्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल ।
जाके शिर तुव करकमल, ताहि न जीतै काल ॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा ❀ छांड़े लोकलाज अरु धर्मा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तृण समान तिहुँ लोकहि जानी ❀ कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी
बढ़हि पाप मारे रण भाई ❀ मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजै ❀ कीजै संधि युद्ध जनि कीजै
करहु न निधन यदपि अपराधी ❀ जो वहु बांटि देय महिआधी
फरकत अधर द्रौपदी बोली ❀ हे हरि धर्मराज मति डोली
क्षत्रिधर्म सब दीन्ह गँवाई ❀ है नृप निलज लाज नहिं आई
कहिबे को हमरे पति पांचा ❀ पति न रही सुनिये प्रभु सांचा
बिधवा भली बिना पति नारी ❀ पतिन जिअत गइलाजहमारी
येइ पति पतित रहे शिर नाई ❀ पकरेउ केश दुशासन धाई
बार बार तुव नाम पुकारी ❀ बसन बैठि प्रभु लाज उबारी
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी ❀ बहेउ नीर दृग अति अकुलानी

दो० बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौ न छुवौं धनुहाथ॥

प्रभुपदशपथ धनुष जब धरिहौं ❀ कीर समान कर्ण कहँ मरिहौं
सुनिकै बचन धीरता आनी ❀ रही चुपाय द्रौपदी रानी
तब हरि धर्मराज सन बोले ❀ मधुर हास श्रुतिकुण्डल डोले
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत ❀ अजहूं दुर्योधन भय मानत
तजहु नृपति सब संशय शोका ❀ हौ रण अजय को जीतै तोका
है नरेश कादर मन तोरा ❀ होत न धीर बचन सुनु मोरा
कुरुदल देखत चित्त डराने ❀ तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने ❀ मिलहि न भूमि भूप कदराने
मांगे भीख धरा जो पावहि ❀ तौ दीनहु भूपाल कहावहि
अब होइ निडर अस्त्र करलीजै ❀ करि अरिनाश राज नृप कीजै

दो० क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ।
है निशङ्क अरिते लड़ै, शूर कहावै सोइ॥

क्षत्री समर पराभव पावै ❀ लोक अयश परलोक नशावै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और बिचार न कीजिये, करहु युद्ध कर साज ॥

कही सात्यकी सुनिये मोमति ❀ मिलिहिनभूमियुद्धबिनुयदुपति
ताते कीजै अवाशि लराई ❀ शत्रु जीति महि लेब छुड़ाई
नीक मन्त्र सात्यकी बिचारा ❀ कह्यो नकुल यह बारहिंबारा
कुन्ती कह्यो मन्त्र सुनि लीजै ❀ करिअरिनिधन राजनिजकीजै
हैं यदुनाथ सहायक तोरे ❀ ह्वैहै बिजय पुत्र मत मोरे
सहदेवहु दीन्हों मत येहा ❀ कीजै रण त्यागो संदेहा
धर्मराज कीन्हे रण करणी ❀ जीतौ शत्रु मिलै निज धरणी
दुर्योधन कीन्हो अभिमाना ❀ समुझायो हरि बात न माना
बिना युद्ध कैसे महि देहै ❀ अब नृप त्याग करौ संदेहै

दो० भीमसेन यहि बिधि कहेउ, बिहँसि कृष्णते बैन ।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन ॥

अब देख्यो पुरुषारथ मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा
सम्मुख दुर्योधन सन लरऊं ❀ रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊं
सुनहु भूप कौरव बिन मारे ❀ नहिं आइहि सन्तोष हमारे
दुर्योधन जीतौं रण माहीं ❀ कृष्णकृपा कछु निजबल नाहीं
ताते और बिचार न करहू ❀ अब भय त्यागि भूप तुम लरहू
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा ❀ करहु युद्ध सब छांड़ि अँदेशा
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे ❀ करिहौंनिधन बिजयहिततुम्हरे
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला ❀ करहु युद्ध जनि डरहु भुवाला
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई ❀ मारौं करौं महा प्रभुताई
काशिराज दीन्हे मत येहा ❀ लड़हु नरेश तजहु संदेहा
भये सहायक श्रीबनवारी ❀ निश्चयबिजय न हारि तुम्हारी

दो० धर्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल ।
जाके शिर तुव करकमल, ताहि न जीतै काल ॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा ❀ छांड़े लोकलाज अरु धर्मा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तृण समान तिहुँ लोकहि जानी ❋ कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी
बढ़हि पाप मारे रण भाई ❋ मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजै ❋ कीजै संधि युद्ध जनि कीजै
करहु न निधन यदपि अपराधी ❋ जो वहु बांटि देय महिआधी
फरकत अधर द्रौपदी बोली ❋ हे हरि धर्मराज मति डोली
क्षत्रिधर्म सब दीन्ह गँवाई ❋ है नृप निलज लाज नहिं आई
कहिबे को हमरे पति पांचा ❋ पति न रही सुनिये प्रभु सांचा
बिधवा भली बिना पति नारी ❋ पतिन जिअत गइलाजहमारी
येइ पति पतित रहे शिर नाई ❋ पकरेउ केश दुशासन धाई
बार बार तुव नाम पुकारी ❋ बसन बैठि प्रभु लाज उबारी
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी ❋ बहेउ नीर दृग अति अकुलानी

दो० बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौ न छुवौं धनुहाथ॥

प्रभुपदशपथ धनुष जब धरिहौं ❋ कीर समान कर्ण कहँ मरिहौं
सुनिकै बचन धीरता आनी ❋ रही चुपाय द्रौपदी रानी
तब हरि धर्मराज सन बोले ❋ मधुर हास श्रुतिकुण्डल डोले
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत ❋ अजहूं दुर्योधन भय मानत
तजहु नृपति सब संशय शोका ❋ हौ रण अजय को जीतै तोका
है नरेश कादर मन तोरा ❋ होत न धीर बचन सुनु मोरा
कुरुदल देखत चित्त डराने ❋ तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने ❋ मिलहि न भूमि भूप कदराने
मांगे भीख धरा जो पावहि ❋ तौ दीनहु भूपाल कहावहि
अब होइ निडर अस्त्र करलीजै ❋ करि अरिनाश राज नृप कीजै

दो० क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ।
है निशङ्क अरिते लड़ै, शूर कहावै सोइ॥

क्षत्री समर पराभव पावै ❋ लोक अयश परलोक नशावै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्मुख लड़हु छांड़ि सबलोभा ❀ तन परिहरे होत कुलशोभा
तुम नृप क्षत्री धर्म न जानत ❀ ताते युद्ध करत भय मानत
भोगी बीर धरा को नामा ❀ करहिं भोग जे नृप बलधामा
जे नृप क्रूर तजहिं कदराई ❀ मिलहि न महि तेहि आनउपाई
ताते नृपति त्यागि संदेहू ❀ होइ निशङ्क कर आयुध लेहू
सम्मुख दुर्योधन सन लरहू ❀ क्षत्री धर्म प्रकट अब करहू
पुनि हँसि कह्यो द्रौपदी रानी ❀ हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी
भय छांड़हु अब रचहु लड़ाई ❀ सुनि मम बचन तजहु कदराई
भरत बंश भये भूप अनेका ❀ शूर समर्थ एक ते एका

दो० होइ जो मेरुसमान अरि, तृण अवलोकित दीठि ।
महाबीर अरु धीर धर, कालहु देत न पीठि ॥

की अब बुद्धिभ्रष्ट तुव भयऊ ❀ की वह बिजय पलट होइगयऊ
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा ❀ आयुध छोड़ि धरहु त्रियभेशा
धर्मराज पुनि लज्जा पायो ❀ अरुणनयन करि बचनसुनायो
बोलत नारि न बचन सँभारे ❀ लड़हुँ शत्रुसन टरहुँ न टारे
मेरे श्रीब्रजराज सहायक ❀ सकै न जीति युद्ध कुरुनायक
धीरज धरहु आजु निशिबीते ❀ करिहौं युद्ध नारि सबहीते
अपनो करो नीच फल पैहै ❀ है पापी कौरव मरि जैहै
कृष्ण देव की सीख न मानी ❀ उनकी मृत्यु आइ नियरानी

दो० दुर्योधन के उर बढ़ेउ, द्रुपदसुता अभिमान ।
गर्वप्रहारी हरि बिदित, मरे सकल अरिजान ॥

प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे ❀ होइहि निधन सकल रिपु मोरे
कहत असत्य बचन नहिं तोसे ❀ सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे
हरि की कृपा सुफल सब काजा ❀ अस कहि भयो मवन मुख राजा
हँसत बचन बोल्यउ बनवारी ❀ सुनहु बात भूपाल हमारी
अब नरेश छांड़हु संदेहा ❀ कीजै युद्ध सत्य मत येहा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बचन हमार मृषा जनि मानहु ❀ होइहै बिजय सत्य नृप जानहु
करिहौं मैं होई यश तोरा ❀ शरणागतपालक प्रण मोरा
हौ नरेश अब शरण हमारे ❀ करहुँ सुफल सब काज तुम्हारे

दो० मनसा बाचा कर्मणा, करहुँ तुम्हारो काज।
अभय होहु नरनाह अब, तुमहिं देहुँ सबराज॥
उचित सकलसामर्थकह, शरणागत प्रतिपाल।
तदपि मोरिबाणी बिदित, धर्मराज तिहुँकाल॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौं तव शीश।
बचै न खल जीवितजगत, शपथ शिवाअजईश॥
भयो मुदित मन धर्मसुत, सुनि हरिगिराप्रमान।
भणित पर्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकत्रिंशोऽध्यायः॥ ३१॥

इति उद्योगपर्व समाप्तम्॥

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भीष्मपर्व ॥

गुरु गोबिंद के चरण मनैये ❋ ज्याहि प्रसाद उत्तम गति पैये
कै प्रणाम रघुपति के पांयन ❋ चारि बेद जाके गुण गायन
अवधनाथ सीतापति सुन्दर ❋ दीनबन्धु रघुबंश पुरन्दर
शिव सनकादिक अन्त न पावैं ❋ नरमुखते केहिबिधि यश गावैं
शुक शारद नारद से पाठक ❋ हनूमान गावैं गुण नाटक
बालमीकि रामायण करता ❋ राम चरित्र पाप को हरता
अष्टादश पुराण श्री भारथ ❋ भाष्यो ब्यास ज्ञान पुरुषारथ

दो० पाराशरते जन्म है, ब्यासदेव ऋषिराज।
यामुखभारतप्रकटभो, करिकुलको सिरताज ॥

गुरु गणेश शारद के पांयन ❋ करौं प्रणाम होहु सुखदायन
महिमा निगम कहत नहिं आवै ❋ शेष सहस मुखते गुण गावै
संबत सत्रह सै अट्ठारहि ❋ पुनिवातिथि मंगल के बारहि
माघ मास में कथा बिचारी ❋ औरँगशाह दिलीपति भारी
सब पुराण पारायण भारथ ❋ यामहँ कुरुपाण्डव पुरुषारथ
ब्यासदेव भुवभार निवारण ❋ भारत रचो जगत के तारण

दो० योग युद्ध रस मंत्रणा, भारत मों है सर्व।
सबलसिंहचौहान कह, भाषा भीषमपर्व ॥

नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये ❋ पञ्च ग्राम मांगन प्रभु आये
दुर्योधन सुनिकै हठ गहेऊ ❋ सूजी अग्र देन नहिं कहेऊ
कहि हरि चले छीनि सब लेहैं ❋ अर्जुन भीम शाक तब देहैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गयो आपु जहँ धर्म नरेशव ❋ इतकी कथा कही सब केशव
मांगे पांच ग्राम नहिं पाये ❋ गर्ब बचन कुरुनाथ सुनाये
हित की बात छांड़ि सब दीजै ❋ पहिरि सनाह युद्ध अब कीजै
सुनेउ युधिष्ठिर बिग्रह मान्यो ❋ बिग्रह भयो उचित मैं जान्यो
अहो कृष्ण सन्तन सुखदायक ❋ हम नहिं युद्ध करनके लायक

दो० भीषम द्रोण करणकृप, लक्ष छत्रधर साथ।
तासों युद्ध खेत चढ़ि, किमि जीतहिं यदुनाथ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे ❋ अपनो राज देत को मांगे
साहस कै रण को मन लैये ❋ मारिहि रिपुहि देश तब पैये
द्रुपद बिराट आदि क्षत्रीगन ❋ हम सारथि पारथ के स्यन्दन
अर्जुन भीम देहु रण को मन ❋ जीतहु युद्ध कही जगबन्दन
अर्जुन कही युधिष्ठिर राजहि ❋ अब बिलम्ब कीजै केहिकाजहि
भीमसेन यहि भांति बखानेउ ❋ कृष्ण कही मेरे मन मानेउ
कीजै युद्ध भयानक भारथ ❋ अब देखौ मेरो पुरुषारथ
दुर्योधन सौ बंधु सँहारौं ❋ भीषम करण खेत चढ़ि मारौं
आपु सहाय जगत के तारण ❋ शोच नरेश करौ केहि कारण

दो० सभा मध्य रक्षा कर्यो, द्रुपदसुता की लाज।
कौरव दल तृण सम गनौं, जो सहाय ब्रजराज॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन ❋ साजहु सैन कहेउ माधवसन
नृप की आज्ञा श्रीहरि पायो ❋ साजत सैन बिलम्ब न लायो
द्रुपद बिराट शंख रथ साजे ❋ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे
धृष्टद्युम्न रथ पर चढ़ि आयो ❋ जाके शिर हरि मुकुट बँधायो
कञ्चन रथ सहदेव सुहाये ❋ तेज तुरङ्ग नकुल चढ़ि आये
लोह चक्र जो हरि निर्मायो ❋ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे ❋ गदा लिये कर शारँग कांधे
कालरूप सम भीम भयंकर ❋ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर
चढ़े सात्यकी उत्तम स्यन्दन ❋ अभिमनु चढ़े सहोद्रानन्दन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर ❀ जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर
धृष्टकेतु कीन्ही असवारी ❀ काशीराज महा बलभारी
पञ्चकुमार द्रौपदी जाये ❀ हर्षित चले सुबेष बनाये
चले शिखण्डी रण के शूरा ❀ साजे सैन महाबल पूरा

दो० हीरा मणि चामर लगे, श्वेत बरण गजराज।
दण्डछत्रधरि शीशपर, कियो युधिष्ठिरसाज॥

कञ्चन मणिमय बनी अमारी ❀ तेहिपरनृपति कीन्ह असवारी
पारथ कहँ यदुनाथ बनायो ❀ निज कर लै सनाह पहिरायो
मणिमयकुण्डल मुकुटबिराजत ❀ बांधे अस्त्र मनोहर छाजत
कर गहि धनुष बाण बहु साजैं ❀ अभय त्रोण देखि रिपु भाजैं
नन्दिघोषरथ कीन्हेउ मण्डित ❀ शोभानिरखिहोतरिपुखण्डित
औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❀ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते
तिनके नयन परीं अँधियारी ❀ ठाढ़े जो हालत बलभारी
लीला चारि तुरङ्ग लगायो ❀ जाको बेग पवन नहिं पायो
हनूमान ध्वज ऊपर आयो ❀ ज्याहिबल से सब लङ्क छुड़ायो
कृष्णचरण कीन्हेउ तब बन्दन ❀ पारथ जाइ चढ़े निज स्यन्दन
श्रीहरि निरखि बहुतसुख पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो

दो० आपु कृष्ण जोती गहेउ, अर्जुन पुलकित गात।
हांकत हय हिय हर्ष ते, पीताम्बर फहरात॥

पांचौ बन्धु करी असवारी ❀ कुन्ती तब आरती उतारी
भांति अनेक शकुन शुभ कीन्हेउ ❀ सुतनसौंपि हरिके कर दीन्हेउ
मम अनाथ के पांचौ बालक ❀ प्रभु रणमें कीन्हेउ प्रतिपालक
कही कृष्ण तुम भवन सिधारहु ❀ जय होइहि जिय शोच निवारहु
यहकहि गमन आपुहरिकीन्हो ❀ आनन्दित शंखध्वनि कीन्हो
गजपर सरस दमामें बोलत ❀ शब्दअघात शेष शिर डोलत
ढाक ढोल औ भेरी बाजत ❀ सहनाई में मारू राजत
करिकै बम्ब चले तब राजन ❀ अरु अघात बाजे बहु बाजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सप्त क्षौहिणी फौज सँवारी ❀ चालिस सहस छत्र के धारी
तीनि कोटि कुञ्जर मतवारे ❀ पञ्चकोटि रथ सरस सँवारे
बीस कोटि असवार महाबल ❀ तीस कोटि सब लेखो पैदल

दो० कुरुक्षेत्र आये सकल, जहां युद्ध को ठाट।
बिप्रबेदध्वनि पढ़त हैं, बोलत मागध भाट॥

अब यह कथा चली शुभ आगे ❀ कुरुपति साज करन दल लागे
भीषम द्रोण करण कृप आये ❀ भूरिश्रवा बृषसेन सुहाये
सौमदत्त कृतबर्मा अत्री ❀ बाहुलीक अशुथामा क्षत्री
है भगदत्त नृपति को साथी ❀ योजन पांच तासु को हाथी
चले अलम्बुष दानव राजन ❀ शकुनी शल्य कियो रणको मन
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल ❀ चले कलिङ्ग लिये कुञ्जरदल
हैं नवलाख महाबल हाथी ❀ सौ बान्धव कलिङ्ग के साथी
आये मगन महाबल भारी ❀ तेज तुरंग करी असवारी
तब सारथि नृप रथ लै आये ❀ कञ्चन के चाके निर्माये
गजमुक्ता की झालरि सोहै ❀ मानुष कह शंकर मन मोहै
लाल प्रवाल जड़ित बहुमणी ❀ जगमगात हीरन की कणी
आनि तुरंग तेज रथ जोरे ❀ पवन बेग दुइ चारिउ घोरे
चढ़े साजि दुर्योधन नीके ❀ संपति देखि इन्द्र मन फीके

दो० दुश्शासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ।
साठि सहस नृप छत्रधर, चढ़े साजि कुरुनाथ॥

औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❀ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते
तिनके नयन परीं अँधियारी ❀ ठाढ़े जो हालत बल भारी
कञ्चनरथ अति दिब्य अनूपा ❀ जाहि देखि मोहत सुरभूपा
दिब्य अनूपम झालरि सोहै ❀ गजमुक्ता देखत मन मोहै
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर ❀ देखत शोचन लाग पुरन्दर
रथको ठाट भूमि सब मण्डित ❀ हयपदाति धाये रणपण्डित
कुरुसागर के ब्यास बखानेउ ❀ अतिअघात कोउअन्तनजानेउ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भानुमती आरति लै आयो ❋ कियो शकुन शुभमङ्गल गायो
भयो बम्ब बैरख फहराने ❋ प्रलयकाल जनु घन घहराने
धूरि धुंधि महँ रबि नहिं सूझैं ❋ ध्वजघनसघन पवन आरूझैं
डोली अनी शेष शिर थाकेउ ❋ भूमि चली पर्वत सब कांपेउ

दो० दशन बराहन दृढ़रहे, दबी कमठ की पीठि।
दिग्गजकरहिंचिकारसब, दिगपतिचक्रितदीठि॥

कुरुक्षेत्र कौरवपति आये ❋ तब भीषम कछु बचन सुनाये
द्रोण आपु शारँग कर गहिये ❋ सावधान होइ रण में रहिये
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ ❋ सब आगे अचरज करि लेखेउ
नृप मन महँ तब मन्त्र बिचारी ❋ तुरत तजी गज की असवारी
आपु पयादे चले नरेशू ❋ अर्जुन कह देखिय हृषिकेशू
शत्रुसेन मों कीन्हेउ गमनहिं ❋ आनन्दित जैसे चल भवनहिं
जो कुरुनाथ बांधिकै राखै ❋ कीजै कहा भीम यह भाखै
जौन बुद्धि कै पांसा खेले ❋ वहै बुद्धि कै चले अकेले
बिनु आज्ञा कैसे सँग जैये ❋ बिना गये पाछे पछितैये
कही कृष्ण अब चुपकरि रहिये ❋ नृपकी कठिनकथा नहिंकहिये
धर्मराज धर्मै हित जानत ❋ शत्रु मित्र समता करि मानत
यामों यहै मन्त्र को कारण ❋ कही आपु यह त्रासनिवारण
सब सेना मिलि थिर ह्वै रहिये ❋ देखहु खड़े कछू नहिं कहिये

दो० कुरुदल सब चक्रित भये, कहैं परस्पर बैन।
मिलो बिचारो दीन ह्वै, देखि भयानक सैन॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरशो ❋ छांड़ो रथ गङ्गासुत हरषो
आतुर चरण बन्द तब कीन्हो ❋ हँसि भीषम अंकमभरि लीन्हो
सदा होहि कल्याण तुम्हारो ❋ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो
धर्मराज यहि भांति बखानत ❋ हम तौ तुमहिं पाण्डु कै मानत
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक ❋ तब तुमहीं कीन्हो प्रतिपालक
कपटपांस करि बनहिं पठाये ❋ तेरह बर्ष महादुख पाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज लियो दुर्योधन भाई ❋ पञ्चग्राम मांगे नहिं पाई
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हो ❋ तो सब ठाट वृथा हम कीन्हो
तुमते परशुराम रण हारे ❋ तेहि समान हम कहा बिचारे
एक भरोसो मन में आयो ❋ जय होइहै तुव आशिष पायो
हँसि गाङ्गेय कहन अस लागे ❋ बड़े साधु तुम परम सभागे
जहां धर्म तहँ कृष्ण बिराजे ❋ जहां कृष्ण तहँई जय साजै

दो० धर्म भरोसो धर्म बल, धर्म भोगियो राज।
सबलसिंहचौहान कहि, धर्मै हित शुभकाज॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

आइ द्रोण पद परशन कीन्हो ❋ आनन्दित होइ आशिषदीन्हो
नृपति होइ कल्याण तुम्हारो ❋ अपनो शत्रु खेत मों मारो
नृपति युधिष्ठिर आपु बखानो ❋ तुम गुरुद्रोण जगत सब जानो
जो आपन शारँग कर धरिये ❋ तीन लोक क्षण में वश करिये
जो तुम युद्ध बिषे मन लाउब ❋ तब कैसे कै हम जय पाउब
हँसि कह द्रोण युधिष्ठिर आगे ❋ मधुर बचन कहिबे कछु लागे
अहो नृपति सन्तन हितकारी ❋ तेरे सदा सहाय मुरारी
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवै ❋ चक्रपाणि सों जय नहिं पावै
जाके सदा सहायक केशव ❋ ताके जयको कौन अँदेशव

दो० जय होइहै तव सर्वदा, सुनहु पाण्डु के नन्द।
जाके पारथ से रथी, औ सारथि जगबन्द॥

कृपाचार्य पद बन्दन कीन्हो ❋ जयतिपत्र को आशिष दीन्हो
भीषम द्रोण कही यह बानी ❋ जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी
कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे ❋ धर्म पुकार पुकारन लागे
यहि दल में जेहि जीवन भावै ❋ तुरत कृष्ण शरणागत आवै
सुनि युयुत्सु चलि आयो आगे ❋ नृपसों बचन कहन अस लागे
अहो धर्मसुत शरण तुम्हारी ❋ चलो जाइ दरशो बनवारी
नृप युयुत्सु रथ चढ़िकै लीन्हो ❋ तुरत आपनो दल शुभ कीन्हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गयो युयुत्सु पाण्डुसुत सङ्गहि ❋ सुनि कुरुनाथ भयो मन भङ्गहि
रथते उतरि तुरत चलि आयो ❋ भीषम ते यहि भांति सुनायो
हौ सेनापति सब के रक्षक ❋ गयो युयुत्सु तुम्हैं परतक्षक

दो० धर्मपुत्र इत आइकै, कीन्हो कहा बिचार।
लक्ष सैन सँग लैगयो, तुम दल के सरदार॥

भीषम कहो सुनहु हो राजन ❋ आये हमहिं बन्दिबे काजन
कादर है युयुत्सु शरणागत ❋ हम मारेउ नहिं देखत भागत
अब यह शोच चित्त नहिं कीजै ❋ सावधान रण को मन दीजै
भृगुपति सप्तदिवस रण कीन्हो ❋ तिनते जयतिपत्र हम लीन्हो
सुर अरु असुरनृपति रणमाखो ❋ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाह्यो
पाण्डवसुत के कृष्ण सहायक ❋ तेऊ नहिं मेरे रण लायक
प्रण राखों हरिको प्रण टारों ❋ नितक्रम दशसहस्र रथ मारों
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन ❋ हरषि बचन भाष्यो भीषमसन
अष्टादश क्षौहिणि दल दोऊ ❋ एकै रथ चढ़ि जीतै कोऊ
कह भीषम जो तेज सँभारों ❋ एक दिवस दोऊ दल मारों
द्रोण कोपि जो शर संधानै ❋ तीनि दिवस में करै निदानै
कर्ण पांच दिन जो रण रचै ❋ दोऊ दल में कोउ न बचै

दो० द्रोणी तीनै दण्ड में, दोउ दल करै निदान।
पल लागत अर्जुन बधै, छुवै न दूजो बान॥

दुर्योधन सुनि मौनहि गहेऊ ❋ बिस्मय भयो मान नहिं रहेऊ
जो तुम अर्जुन जानत ऐसे ❋ रण में जय तुम करिहौ कैसे
भीषम कह कौरव दल नाथहि ❋ दश दिनकेर भार मम माथहि
अपनो कटक करों सब रक्षक ❋ पाण्डव दल मारों परतक्षक
सुनि दुर्योधन आनँद पायो ❋ अपने दलहि युधिष्ठिर आयो
ले युयुत्सु हरि पांयन डारे ❋ अहोकृष्ण यह शरण तुम्हारे
जैसे हम हैं पांचो भाई ❋ तेहि समान जानो यदुराई
कहो कृष्ण शुभ होहि तुम्हारो ❋ सावधान ह्वै युद्ध बिचारो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्मराज कीन्हो असवारी ❀ श्वेत गयन्द महाबल धारी
दो० सिंहनाद बीरन कर्यो, भयो भयानक शोर।
दिशा दशौ पूरित भई, ज्यों घुमरे घन घोर॥
पारथ कही सुनहु जगबन्दन ❀ द्वै दल मध्य राखिये स्यन्दन
सुनिकै कृष्ण हांकि रथ दीन्हो ❀ मध्य भूमि लै ठाढ़ो कीन्हो
पारथआनि सबहि दिशि देखेउ ❀ सब के अग्र पितामह लेखेउ
श्वेतबरण रथ सरस सुहायो ❀ श्वेतबरण तन शोभा पायो
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे ❀ श्वेत बरण हैं चारिउ घोरे
गुरू द्रोण रथ श्याम सुहायो ❀ श्याम बरण घोड़े छबिपायो
कृपाचार्य को अर्जुन देख्यो ❀ मनमहँअतिबिस्मयकरिलेख्यो
देख्यो दुर्योधन सौ भाई ❀ धवल छत्र शिर शोभा पाई
सिन्धुराज देख्यो बहनोई ❀ मामा शल्य जान सब कोई
दो० गुरू पितामह बन्धु सुत, देख्यो सब परिवार।
इन्हैं मारि जय का करै, दीन्हो धनु शर डार॥
कही कृष्ण पारथ सुनि लीजै ❀ क्षत्री धर्म त्याग नहिं कीजै
रण देखे क्षत्री जो डरहीं ❀ अन्तकाल सो नरकहि परहीं
प्रथम क्रोध करि रण में आयहु ❀ अब यह ज्ञान कहांते पायहु
गहहु अस्त्र कर युद्ध सँवारहु ❀ छांड़हु शोच शत्रु संहारहु
बालक युवा बृद्धता आवै ❀ अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि ❀ जो सिरजै सोई संहारहि
काल बश्य है सब संसारा ❀ यामें कछु नहिं दोष तुम्हारा
क्षत्री के साहस ते कामहिं ❀ कीजै युद्ध होइ यश जामहिं
दो० दान मरण रण शूरता, क्षत्री धर्म प्रमान।
पारथ अस्त्रहि गहौ कहि, सबलसिंह चौहान॥
इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥
अर्जुन कहेउ सुनहु जगतारण ❀ गोत्र बद्ध कीजै केहि कारण
बाढ़ै पाप पुण्य सब नाशहि ❀ पावों अन्तअधोगति बासहि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh [illegible] Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-0. Dr. Shyama Prasad Mukherjee Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुरुपरिवार बधौं केहि काजहि ❀ जैहौं बनहिं छोड़िकै राजहि
अर्जुन को माधव समुझायो ❀ चारि बेद को सार सुनायो
मात पिता सुत बन्धु कहावै ❀ अन्तकाल नहिं साथ सिधावै
अपनो धर्म कर्म पै साथी ❀ सुखसम्पति झूठो सब साथी
जो बन जाय तपस्या करिहौ ❀ अन्त भये जग में अवतरिहौ
दान अनेक यज्ञ जो करहीं ❀ स्वर्ग भोग करि महि अवतरहीं
ताते जन्म मरण नहिं छूटै ❀ अचल न होहिं कोटिशत कूटै
पुण्य पाप दोऊ जब नाशहिं ❀ तब पावहिं मेरे पुर बासहिं

दो० पुण्य पाप बांधो जगत, को काटन समरत्थ।
निर्मल ज्ञान बिबेकता, कै मन अपने हत्थ॥

मन भौ भुक्ति मुक्ति नर पावै ❀ मन के चले कर्म गति आवै
सब इन्द्रिन मों है मन नायक ❀ बन्धन मुक्ति देन के लायक
जाके हृदय दया के बासहिं ❀ ताके धर्म सदा परकासहिं
जहँ लगि जीव जगत में अहई ❀ सबके हृदय बास मम रहई
नदिन मध्य गङ्गा कहँ जानहु ❀ तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु
ब्रह्मऋषिन में नारद जानहु ❀ कपिलदेव सिद्धन मों मानहु
गजन माहिं ऐरावत देखौ ❀ उच्चैःश्रव हय मध्य बिशेखौ
सामबेद बेदन महँ गनई ❀ साधुन में शंकर सब भनई
नरन माहिं राजा कै राखित ❀ देवन माहिं इन्द्र मम भाखित
सर्पन मध्य बासुकी कहिये ❀ नागन महँ अनेन्त मों रहिये

दो० ग्रहन माहिं रबि हम अहैं, तेज अग्नि मो जान।
नारिन महँ रम्भा अहैं, गुण सात्त्विकी प्रमान॥

चारिबरण महँ जो अवतरिहौ ❀ जो कुलधर्म सोई सब करिहौ
ताते कर्म लागि सब करिये ❀ केवल नाम हमारे धरिये
कहौ कहां लगि ज्ञान बुझावैं ❀ मृतकसैन सब नैन दिखावैं
पारथ कही सुनहु हो केशव ❀ नयन लखौं तौ मिटै अँदेशव
दिब्य दृष्टि अर्जुन तब पायउ ❀ मुख में सब ब्रह्माण्ड दिखायउ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेघाबरण शीश आकाशहि ❋ रबिशशिनयनकियेपरकाशहि
मुख भौ अग्नि शारदा रसना ❋ कन्ध रुद्र तारागण दसना
इन्द्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ ❋ नाभी सिन्धु देखि मन मोहेउ
पृष्ठ अष्ट बसु शोभा पायउ ❋ जङ्घ दशो दिशिपाल सुहायउ
चरणबिष्णु रोमावलि तरुगन ❋ आस्थि पहार बेदश्रुति है मन
धरणी मांस नदी नख लेखेउ ❋ महाबिराटरूप यह देखेउ

दो० मुख बिस्तारेउ कृष्ण तब, पारथ देखेउ नैन।
जूझे सब सैना मृतक, रण में कीन्हें शैन॥

सर्ब मृतक पारथ जब देखेउ ❋ अपने जिय अचरज करि लेखेउ
त्रासित भयो तन कम्प जनायो ❋ मूंदेउ नैन बचन नहिं आयो
अर्जुनकाहिं त्रासित करिजाना ❋ कठिनरूप छांड़ेउ भगवाना
अर्जुन अब युग नैन उघारौ ❋ सखारूप मम त्रास निवारौ
तब पारथ देखेउ बनवारी ❋ जोती गहे पिताम्बर धारी
अर्जुन तब कमलापति आगे ❋ अस्तुति करन जोरि कर लागे
तुम प्रभु तीनि लोक के करता ❋ दाता जन्म प्राण के हरता
अब संशय प्रभु मिटी हमारी ❋ करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी
यह कहि धनुषहाथ करि लीन्हेउ ❋ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हेउ
दोउ दल सिंहनाद करि आयो ❋ युद्धभूमि में शोभा पायो

दो० दोऊ दल बाजन बजे, गर्जे सिंह समान।
क्षत्री गण रण हांक दै, साधे शारँग बान॥

भयो कुलाहल दल में भारी ❋ आगे भये महाधनुधारी
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये ❋ शंखध्वनि करि नाद सुनाये
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❋ मानहुँ काल देह धरि आयउ
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये ❋ भीषम के सन्मुख ह्वै लरिये
तबहिं धनंजय धनु कर गहेऊ ❋ आगे ह्वै भीषम सन कहेऊ
करि प्रणाम शायक दश छण्डेउ ❋ गङ्गासुत बीचहि शर खण्डेउ
भीषम कहेउ सुनहु जगतारण ❋ सारथि भयो भक्त के कारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डव धन्य धन्य ये पारथ ❋ जाके रथपर श्रीपति सारथ
यह कहिकै रणको मन लायो ❋ महारथी सब युद्ध मचायो
भीमसेन दुश्शासन क्षत्री ❋ दोऊ जुरे महाबल अत्री
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे ❋ क्रोधित बाण चलावन लागे
नकुल और जयदर्थ सुहावैं ❋ क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं

दो० शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयंकर मारि॥

भूरिश्रवा सात्यकी सङ्गहि ❋ कृतबर्मा बिराट रण रङ्गहि
भगदत्तहि क्रोधित जब जान्यो ❋ द्रुपद नरेश आपु रण ठान्यो
सोमदत्त उतरा रण मण्ड्यो ❋ बाणनते रिपुसैन बिहण्ड्यो
कृपाचार्य सन्मुख ह्वै धाये ❋ तिनसों काशिराज रण पाये
घटउत्कच कीन्ह्यो संधानहिं ❋ जुरे अलम्बु तेज रणधामहिं
नृप शशिबिन्दु शंख संग्रामहिं ❋ क्रोधित लगे चलावन बाणहिं
तब द्रोणी निजकर धनुशरगहि ❋ जुरे शिखण्डी ते रण रङ्गहि
कुरुदल में बृषसेन सुहाये ❋ तिनते चेतिकरण रण लाये
जुरे बीर सब लै शारँग शर ❋ होनलगी अतिमारु परस्पर
दोऊ दल कीन्हेउ संधानहिं ❋ क्रोधित लगे चलावन बानहिं
शतते सहस सहस ते लाखन ❋ बरषैं बाण सकै को भाखन

दो० दोउ दल वीरन रण रचे, जलद बुन्दसम बान।
महाभयानक युद्ध कह, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

अर्जुन सों भीषम पुरुषारथ ❋ कीन्ह्यो प्रलयभयानक भारथ
क्रुद्धित चले चलावत बानहिं ❋ बिंशतिशर मार्‌यो हनुमानहिं
महाबीर रण दोउ समानहिं ❋ कृष्णशरीर हन्यो दश बानहिं
सहस बाण भीषम कर लीन्ह्यो ❋ ताते मारु पारथहि दीन्ह्यो
अष्ट बिशिख क्रुद्धित ह्वै जोरे ❋ घायल किय रथ चारिउ घोरे
और लक्ष शर क्रोधित मारा ❋ बहै प्रबाह रुधिरकै धारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सप्त बाण ते ध्वजा निशानहिं ❋ बाणन ते सैना घमसानहिं
कृष्णअङ्ग दश बिशिखसुमार्‍यो ❋ तब अर्जुन शर धनुष सुधार्‍यो
षष्टि बाण भीषम उर मारा ❋ मानहुँ बज्रपात फटकारा
सप्तबाण हनि ध्वजानिशानहिं ❋ सारथिउर मार्‍यो दश बानहिं
चञ्चल अश्व रहे रथ जोरे ❋ घायल भे रथ चारिउ घोरे
अर्जुन बाण चमू पर मार्‍यो ❋ हय गज रथ पदाति संहार्‍यो

दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो, कीन्ह्यो लघुसंधान ।
जलथल भारतभूमिसब, शरछायो असमान ॥

एकै शर पारथ संधानहिं ❋ गुणमें धरत होहिं दश बानहिं
चलत होहिं शत लगे सहस्रन ❋ यहिप्रकारकियो सैननिकन्दन
जब पारथ बहुकटक सँहार्‍यो ❋ भीषम अपनो तेज सँभार्‍यो
लघु संधान लगे शरबर्षन ❋ जूझे सैन सहस्र सहस्रन
दोउ सुभट अतिसमर जुझारा ❋ बरषहिं बाण मनो जलधारा
भीषम अग्निबाण संधान्यो ❋ लखि पाण्डवदल शङ्का मान्यो
प्रकटो अग्निबाण ते ऐसो ❋ प्रलयकाल बड़वानल जैसो
प्रकटी शिखा सहस्र सहस्रन ❋ पाण्डवदल लागे जारनतन
जब पाण्डव सैना अकुलान्यो ❋ बरुण बाण अर्जुन संधान्यो
बरुण बिशिखते बरष्यो पानी ❋ निमिष एकमहँ अग्नि बुतानी
रणमें मेघ घुमरिकै आयो ❋ महाबृष्टि बरषा झरिलायो
बसन सनाह भीजि तन लागे ❋ पर भीजे शर चलत न आगे

दो० पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्योनीर तुरन्त ।
हय पदाति रथ उड़त हैं, मतवारे मैमन्त ॥

ऐसी तेज समीर चलाई ❋ मानहुँ घरी प्रलय की आई
नाग बिशिख तब फल्गु प्रहारा ❋ सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा
फन काढ़े अजगर सब धावहिं ❋ लीलहिं सैन बिलम्ब न लावहिं
बिषके तेज कटकब्याकुलअति ❋ भीषम शर संधान्यो खगपति
गरुड़ देखि सब सर्प पराने ❋ भये अलोप जात नहिं जाने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीक्ष्ण पञ्चबाण कर लीन्ह्यो ❋ ते शरचोट शीशपर दीन्ह्यो
अर्जुनइमिअतिबिशिखचलायो ❋ शरसों भीषम को रथ छायो
गङ्गतनय हँसि बिशिख प्रँवारे ❋ पारथ शर बीचहि कर डारे
कृष्ण देव रथ हांकि चलायो ❋ भीषम के सम्मुख पहुँचायो

दो० अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखेउ नैन।
क्रोधवन्त शर साधिकै, कह्यो कृष्णसों बैन॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❋ पारथ नहिं मेरे रण लायक
पाण्डु बंश के रक्षा कारण ❋ सारथि आप जगत के तारण
आपु सो दृढ़ जोती कर गहिये ❋ मारतहौं तीक्षण शर सहिये
ऐसो शर भीषम संधान्यो ❋ देवलोक सब शङ्का मान्यो
कम्पत है पाण्डव दल ऐसो ❋ कदलीपात मरुतलगि जैसो
दिगपालन देखत भय मानी ❋ बसुधा शायकनिरखि सकानी
जो शर परशुराम ते पायो ❋ क्रुद्धित ह्वै सोइ बाण चलायो
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❋ दशदिशिअतिकीन्हीउजियारी
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ सावधान रण को मन दीजै
जब पारथ सुरपुर पगुधार्‌यो ❋ देवकाज सब दैत्य सँहार्‌यो
तब सुरपति शिरमुकुट बँधायो ❋ तहां किरीटी नव शर पायो

दो० हँसि दीन्हो सुरनाथ तब, पारथ लीजै बान।
महाकष्ट रणमहँ परै, तब कीन्ह्यो संधान॥

स्वइ शरपाणिबिजयनरलीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो
जिष्णुक्रुद्धहोइ बिशिख चलायो ❋ आवत बाण सो काटि खसायो
काट्योशर श्रीपति सुखमान्यो ❋ तब अर्जुन बहु भांति बखान्यो
अहो पितामह धनु दृढ़ धरिये ❋ सावधान मोते रण करिये
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ ❋ कीन्ह्यो महाभयानक भारथ
पाण्डवदल भीषम बहु मार्‌यो ❋ भीमसेन तब आप सँभार्‌यो
रथते उतरि गदा गहि धायो ❋ कौरव दल में युद्ध मचायो
गदा घाव गजको शिर फोर्‌यो ❋ सहितभुशुण्डिदशनसबतोर्‌यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोपि गदा रथ ऊपर मारे ❀ सहित रथी सारथी सँहारे
हय पदाति आगे जो पावै ❀ भीमसेन तेहि मारे गिरावै
रथहि पकरि रथ ऊपर मारै ❀ गहि मयन्द गज ऊपर डारै
आरत लगे जात लोटत गज ❀ लागे धुका उताइल गत सज

दो० कौरव दल त्रासित भयो, धरै न कोऊ धीर ।
सहसा कै रण में जुरे, एक बार शतबीर ॥

दै करि हांक कियो दृढ़ ठानहिं ❀ सबै रथिन मिलि मारे बानहिं
काल समान तेज रण छूटे ❀ बज्र शरीर लागि सब टूटे
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये ❀ मारि सबै यमलोक पठाये
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारे ❀ जे अभिरे ते सकल पछारे
कौरव दलहि प्राणभय कीन्ह्यो ❀ क्रोधित द्रोण हांक तब दीन्ह्यो
रहु रहु अरे बृकोदर ठाढ़ो ❀ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो
यह कहि धनुनराच दृढ़धास्यो ❀ भीमअङ्ग दश बिशिख प्रहास्यो
गुरूद्रोण अगणित शर मास्यो ❀ तब निजरथहिभीमपगुधास्यो
भीषम ते अर्जुन संग्रामहिं ❀ दोऊ जुरे खेत जयकामहिं
पारथ जब लगि भीम निहास्यो ❀ दशसहस्र रथ भीष्महि मास्यो
तब भीषम जय शंख बजायो ❀ संध्यालखि निजरथहि घुमायो
फिरिकैसुभटकियो जबगवनहिं ❀ पाण्डव गये आपने भवनहिं
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो ❀ रणमों भीषम को प्रण रह्यो
दश सहस्र मास्यो रथ नीके ❀ पाण्डव गये युद्ध में फीके
सेन सकल कीन्हेउ बिश्रामहिं ❀ धर्मराज आये निज धामहिं

दो० अस्त्र खोलि धरणी धस्यो, टोप सनाह उतारि ।
श्रमनाश्यो असनान करि, जेवैं सहित मुरारि ॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई ❀ आजु युद्ध केहि की प्रभुताई
कही कृष्ण भीषम रण मण्ड्यो ❀ दशसहस्र रथ क्षणमें खण्ड्यो
प्रात शंख कीजै सेनापति ❀ कुरुदल अर्जुन संहारहु अति
कही द्रौपदी सुनिये केशव ❀ मेरे मन यह बड़ो अँदेशव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो पै शंख भीष्मते लरिहैं ❀ अर्जुन भीमसेन का करिहै
कही कृष्ण यामों है कारण ❀ शत्रु सेन कीजै संहारण
प्रात होत दोऊ दल साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं
श्रीहरि कह बिराट सुनु भूपति ❀ शंखहि कीजै आजु चमूपति
सुनि बिराटकह आनन्दितमन ❀ जो आज्ञा कीजै जगबन्दन
मैं कुल में सपुत्र सुत जायो ❀ भारत सेनापती कहायो
धर्मराज श्रीपति के आगे ❀ बांधन मुकुट शंख शिर लागे

दो० कह्यो शंख करजोरिकै, सुनि लीजै सुखधाम।
तुम समान सारथिभये, भीषम ते संग्राम॥

पारथ रथी आपु प्रभु सारथ ❀ भीषम कियो सरस पुरुषारथ
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो ❀ समता युद्ध होइ रण कैसो
जो श्रीपति सम सारथि पावों ❀ मारि सबै कौरव बिचलावों
कही कृष्ण सात्यकि सुनिलीजै ❀ आज आप सारथि प्रण कीजै
बैठि शंख रथ जोती धरिये ❀ भीषम के सन्मुख रण करिये
प्रभु आज्ञा सात्यकि जब पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो
चारि तुरंग आनि रथ जोरे ❀ घूंघुटसहित चलत मुख मोरे
बांध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि ❀ राजयुधिष्ठिर के पुनि पद गहि
तब बिराट के पद सोइ लाग्यो ❀ कृष्णचरण परस्यो अनुराग्यो
कियो सात्यकी को पग बन्दन ❀ चढ़्यो जाइ रथ परमानन्दन
नन्दिघोष अर्जुन असवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी
भीम सहित सेना सब साज्यो ❀ सिंहनाद करि रण में गाज्यो

दो० सबके आगे शंख रथ, साधे कर धनु बान।
सबलसिंह चौहानकह, भारत के रणथान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

कुरुदल साज करन सब लागे ❀ राजा कहेउ पितामह आगे
आजु अस्त्र यहिबिधि ते धरिये ❀ कृष्णसहित अर्जुन बध करिये
भीषम कही युद्ध को चलिये ❀ शोच कहा ह्वैहै सब भलिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महागँभीर कियो दलसाजन ❀ बाजन लगे युद्ध के बाजन
कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल ❀ देखत हांक दियो दोऊ दल
भीषम अति अचरज करि लेख्यो ❀ ध्यो मुकुट शंख शिर देख्यो
तब सात्यकि रथ हांकि चलायो ❀ भीषम के सन्मुख पहुँचायो
शंख प्रथम दश बाण चलायो ❀ ते शर भीषम काटि गिरायो
हँसि भीषम दश शायक जोरे ❀ ते शर शंख बीचही तोरे
कोपि कुँवर शतबाण प्रहार्यो ❀ भीषम के उरमध्य सो मार्यो
शर लागत भीषम रिस बाढ़्यो ❀ शोणितशर तूणीरते काढ़्यो
काल समान बाण सब छूटैं ❀ भेदि सनाह अंगमें फूटैं

दो० क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हो लघु संधान।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अङ्ग बहुबान॥

नृप विराटसुत तेज सँभार्यो ❀ षष्टिबाण भीषम उर मार्यो
भीषम शंख लरे रण अङ्गन ❀ दोऊदल बहु कियो निकन्दन
गजसों गज चौदन्त लराई ❀ रथी रथी सों मारु मचाई
जुरे आइ असवार महाबल ❀ लगे पदाति पदातिन करिबल
महारथी रथ हांकि चलायो ❀ कौरवकटक मध्य तब आयो
तब अर्जुन कोदण्ड सुधार्यो ❀ क्रुद्धितह्वै बहुबिशिख प्रहार्यो
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो ❀ क्षण में अर्जुन मारि गिरायो
रुण्ड मुण्ड बसुधा में तोप्यो ❀ सूझि न परयो मांसमहि रोप्यो

दो० घोर युद्ध कपिध्वज कियो, सेना बध्यो अनन्त।
गज रथ हय पदचर गिरे, कहूं शीश कहुँ दन्त॥

अर्जुन बध्यो सेन यहि रूपहि ❀ देखि क्रोध उपज्यो तब भूपहि
दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो ❀ छत्र छांह रबि दृष्टि छपायो
नन्दिघोष रथ राजन घेर्यो ❀ मारु मारु दुर्योधन टेर्यो
दुश्शासन सब राजन लीन्हे ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे
चहूं ओर बर्षत शर कैसे ❀ भादौं बुन्द सघन घन जैसे
नन्दिघोष रथ शरते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे ❀ अन्तरिक्ष ही सब शर तोरे
अरु सहस्र राजा बध कीन्हो ❀ शंखध्वनि अर्जुन तब दीन्हो
मणिमय मुकुट जरायन जरे ❀ शीश सहित बसुधा में परे
जहां जहां अर्जुन रण ताक्यो ❀ तहां तहां माधव रथ हांक्यो
और अनेक निशित शर मार्यो ❀ युत चौरासि तुरग महि पार्यो
कीन्ह धनंजय सेन सुखण्डित ❀ नर के शीश मेदिनी मण्डित

दो० यहि बिधि पारथ रणरच्यो, कहि न सकै कबिबैन।
रथ हांकत हैं हांक दै, प्रीतम पंकज नैन॥

सिंहनाद दुश्शासन कीन्ह्यो ❀ क्रुद्धित धनुषफोंक शर दीन्ह्यो
सप्त बाण पारथ उर मार्यो ❀ एक बाण यहि भांति प्रहार्यो
सारथि शीशकाटि महि डार्यो ❀ कृष्णअंग दशबाण प्रहार्यो
रथ ते दुश्शासन महि आयो ❀ देखि बिरथ दुर्योधन धायो
तब कुरुनाथ धनुष शर लीन्ह्यो ❀ महामारु कपिध्वजपर दीन्ह्यो
सुनिकै शोर बृकोदर धायो ❀ द्रोणजाय बीचहि अटकायो
भीषम कही द्रोण रणरङ्गहि ❀ जुरे धनंजय कुरुपति सङ्गहि
आप शंखसन समर जो कीजै ❀ हम पारथ पर शायक दीजै
जाह्नविसुत यह कहि लघु धायो ❀ शर बर्षा पारथ पर लायो
दुर्योधन को पाछे घाल्यो ❀ आगे रथ गङ्गासुत चाल्यो
सिंहनाद करि हांक जनायो ❀ रहु अर्जुन भीषम अब आयो

दो० अबलौं जो सेना बध्यो, हौं न रह्यों यहि ठौर।
तौ पारथ बल जानिबो, जो दल बधिहौ और॥

कोटिन अर्जुन करहुँ सँहारण ❀ कृष्णसहाय बचौ त्यहिकारण
अर्जुन सुनि क्रुद्धित परिजरचऊ ❀ दृढ़होइ धनुषबाण कर धरचऊ
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेर्यो ❀ जब तुम सब बिराटपुर घेर्यो
तादिन मैं सबको बल जान्यो ❀ गोधन सबै फेरि गृह आन्यो
बड़े अहहु बड़ बचन न कहहू ❀ दृढ़ ह्वै धनुष बाण कर गहहू
यह कहिकै लागे शर बर्षन ❀ शतते सहस सहस्र सहस्रन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपर चरित्र सुनहु मनलाई ❀ शंख द्रोण जहँ करत लड़ाई
एकहि एक क्रोध ते मारत ❀ आवत बाण बाण ते टारत
श्रमित युद्ध दुर्योधन देख्यो ❀ अपने जियअनुज करिलेख्यो
शंखकुँवर अतिबिशिख पँवार्‌यो ❀ रथके चारिउ अश्व सँहार्‌यो
कियो सारथी को शिर खण्डित ❀ पुत्र बिराट महारण मण्डित

दो० द्रोण अपर रथपर चढ़्यो, कछु लज्जा कछु क्रोध ।
महारथी देखत सकल, बालक पर अनरोध ॥

जबलग द्रोण आपु संभार्‌यो ❀ तनयबिराट सैन्य बहु मार्‌यो
कौरव दल बहु शंख निपातो ❀ गुरु तब भयो क्रोधते तातो
रहु रे शंख ठाढ़ रण रङ्गहि ❀ एकै शर कृत जीवन भङ्गहि
दूजो बाण करौं संधानहिं ❀ तौम्वहिं परशुरामकी आनहिं
यह कहि ब्रह्मअस्त्र कर लीन्ह्यो ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंकशर दीन्ह्यो
शरको तेज अकाशहि ब्याप्यो ❀ सुर नर नाग देखिकै कांप्यो
छिटक्यो किरणि बाण ते कैसे ❀ ग्रीषमऋतु प्रचण्ड रबि जैसे
देखि त्रास सात्यकि जिय बाढ़ो ❀ द्रोण त्रोण ते जब शर काढ़ो
कहहु कुँवर तव रथहि फिरावों ❀ अर्जुन के पीछे पहुँचावों
शंख कह्यो अस्थिर ह्वै रहिये ❀ क्षत्रिधर्मकिमि जियनहिंगहिये

दो० बांध्यो मुकुट जु कृष्णकर, भारत के रणखेत ।
द्विजसों पृष्ठि दिखायकै, तनु राखौं केहिहेत ॥

कार्मुक द्रोण श्रवणलगि तान्यो ❀ छूटत बाण शब्द घहरान्यो
बाण प्रताप अग्नि बहु बाढ़्यो ❀ बड़वानल मनोदधिते काढ़्यो
सप्ततालभयो अग्नि उँचाई ❀ चौदह ताल रह्यो चकलाई
देखेउ ब्रह्मअस्त्र ढिग आवत ❀ सात्यकि बहुरिकुँवरसमुझावत
फेरों रथ सुनु बचन बावरो ❀ काह मरत बिन काज रावरो
रथ समेत याहिबिधि जरिजैहो ❀ खोजतकतहुँ अस्थि नहिं पैहो
जो मेरो रथ फेरहु भाई ❀ कृष्णचरण युग कोटि दुहाई
गुरुहति द्विजहति पाप सुपावहु ❀ जो सात्यकि रथफेरि चलावहु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जन्म भये ते मृत्यु न छूटै ❀ सो सपूत जग में यश लूटै
रणते भागि भवन जब जैबो ❀ क्षत्रिनमों किमि बदन दिखैबो
कुँवर लग्यो जल बाण चलावन ❀ ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन
रण में द्रोण अधर्म बिचारयो ❀ त्राहि त्राहि सब देव पुकारयो

दो० सुरगण सब यहिबिधि कहैं, द्रोण अधर्म बिचार।
बालक ते रण ठानिकै, ब्रह्म सो अस्त्र प्रहार॥

अस्त्र तेज सब अङ्गहि व्याप्यो ❀ सहित तुरङ्ग सात्यकी कांप्यो
तब सात्यकि रथ फेरि चलायो ❀ कुँवर कूदि धरणी पर आयो
सन्मुख रह्यो नेकु नाहिं मुरो ❀ ब्रह्म अस्त्र मों ठाढ़े जरो
दोऊ दल पेखत हैं नयनहिं ❀ साधु शंख भाष्यो सब वयनहिं
भस्म भयो मन नेकु न मोरो ❀ भाजो सात्यकि लै सब घोरो
देखत द्वै दल शंख जरायो ❀ फिरिकै द्रोण त्रोण शर आयो
द्रोण आपु जय शंख बजायो ❀ सुनिकै धृष्टद्युम्न मन लायो
रे गुरु द्रोण ज्ञान कर हीनो ❀ करि अधर्म खोयो पन तीनो
द्वैकै बिप्र अस्त्र जै बांध्यो ❀ बालक पर ब्रह्मास्त्रै साध्यो
अब मोते संग्राम बिचारहु ❀ अहो बिप्र पहिले शर मारहु
सुनि गुरु द्रोण क्रोध ते जाग्यो ❀ तीक्ष्ण बाण चलावन लाग्यो
कुँवर सबै वे बाण सँभारयो ❀ द्रोण ललाट तीनि शर मारयो

दो० ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन।
तौलगि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथ सैन॥

भीषम शंख दयो जय हेतू ❀ सुनिकै शब्द फिर्‌यो कुरुकेतू
सब मिलि गये आपने धामहिं ❀ दोऊदल कीन्ह्यो बिश्रामहिं
अब यह कथा चली जो आगे ❀ भोजन पान करन सब लागे
बोलि बाढ़ि धर बाढ़ि धरायो ❀ कोउ शायकमहँ सान करायो
कोउ निषङ्गमहँ शायक पोखत ❀ चाराचारु तबल कोउ देखत
कोउ स्यन्दन महँ साज लगावत ❀ कोऊ शक्ति सनाह बनावत
धर्मराज माधव सँग लीन्हे ❀ गमन बिराट भवन शुभ कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महीनृपति मन शोच निवारहु ❀ क्षत्रिधर्म निज हृदय बिचारहु
कह्यो बिराट सुनहु नृपनायक ❀ जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक
धर्मराज के काजहि आयो ❀ शोच कहा बहुतै सुख पायो

दो० धर्मराज बन्धुन सहित, साथ लिये घनश्याम।
भोजन को बैठे सकल, द्रुपदसुता के धाम॥

षटरस भोजन आनि बनाये ❀ जेंवत भीम महासुख पाये
द्रुपदसुता कछु बचन उचारो ❀ आजु युद्ध केहिभांति सँवारो
कहेउ कृष्ण अर्जुन बल भारी ❀ मारे सहस छत्र के धारी
द्रोण अधर्म युद्ध मन लायो ❀ ब्रह्म अस्त्र ते शंख जरायो
धर्मराज कह सुनहु मुरारी ❀ ममउर यह संशय अतिभारी
दशसहस्र रथ नित क्रम जूझै ❀ भीषम ते जय मोहिं न सूझै
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये ❀ बनकी कथा आपु सुधि करिये
दुर्वासा कुरुनाथ पठायो ❀ अर्द्धरात्रि पर्णशाला आयो
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे ❀ भोजन आय द्वार ह्वै मांगे
क्षुधावन्त हम भोजन दीजै ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप अब लीजै

दो० भोजन दीजै कवन बिधि, एक अन्न नहिं भौन।
ब्रह्म शाप के त्रास ते, सबै रहे ह्वै मौन॥

तब मैं कह्यो ऋषिय सुनि लीजै ❀ आप जाय अस्नानहिं कीजै
मैं भोजन कर साज बनावों ❀ आवहु तुरत सबन बैठावों
छलकरि मैं ऋषिको छिन टारो ❀ बहुत त्रास जियमध्य बिचारो
प्रभु यहि समय दया अबकरिये ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप मों जरिये
सब मिलि कृष्णचरणयुगध्याये ❀ सुमिरतही तुरन्त प्रभु आये
करि प्रणाम बहुतै सुख पायो ❀ क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो
तब मैं कह्यों अन्न नहिं लेशव ❀ भोजन काह दीजिये केशव
रन्धन को भाजन प्रभु देख्यो ❀ तामें शाक कना यक पेख्यो
तब घनश्याम शाक वह खायो ❀ मुनिगण केर उदरभरि आयो
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहिं ❀ कोऊ पत्रन्ह सेज बनावहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काहुको दूध घीव तब आवहिं ❀ मन्त्र अगस्त्य कोऊ मन लावहिं
भीमसेन तब जाय बुलायहु ❀ द्विजगणचलहुगहरुकिमिलायहु
दो० दुर्बासा यहिबिधि कह्यो, नाहिंन भक्त विनाश ।
सबलसिंहचौहान कह, चरण कमलकी आश ॥
इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
आये कृष्ण साधुसुखदायक ❀ पाण्डुबंश के सदा सहायक
दुर्बासा कह सुनहु बृकोदर ❀ व्याप्यो कृष्ण सबनके ओदर
जैसो हम याचज्ञा लायो ❀ अपनो कियो आपुते पायो
यह कहिकै सब द्विजगण भागे ❀ आये भीम कृष्ण के आगे
हँसि प्रभु द्वारावति पगु धारयो ❀ वे चरित्र नृप चित्त बिसारयो
यहसुधि सबबिसरी केहिकारण ❀ कहां शोच जहँ त्रासनिवारण
द्रुपदसुतायहिभांति बखान्यो ❀ सुनियदुपतिअतिशयसुखमान्यो
कौरव कटक समर महँ आये ❀ धनु कर शर निषङ्ग कटि लाये
होत प्रभात सजे कुरुकेतू ❀ बजे निशान युद्ध के हेतू
सिंहनाद करि शब्द सुनायो ❀ पाण्डवसकल अजिररणआयो
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ ❀ बीरन धनुष फोंक शर दयऊ
दो० रथगज पदचर नृपति सब, करनलगे रणघोर ।
महारथी सेनापती, भिरे जोरसों जोर ॥
आंदू खोलि दये अँधियारी ❀ धाये गज पर्बत से भारी
भादौं घटा वरै जनु आयो ❀ गजन युद्ध चौदन्त मचायो
बाणबुन्दझरि रथिकर बलकै ❀ शायक खड्ग दामिनी दमकै
करिकै नाद भीम तब धायो ❀ भयो शब्द जनु घन घहरायो
शक्ती शेल्ह उपर सब टूटहिं ❀ बज्रपात अर्जुन शर छूटहिं
बिषमखड्ग बाज्यो शरखण्डित ❀ भीषम रथ हांक्यो परचण्डित
नन्दिघोष के सन्मुख आयो ❀ बाणबृष्टि अर्जुन पर लायो
पारथ ते शर काटि निवार्यो ❀ पञ्चबिशिख भीषम उर मार्यो
लागत बिशिख क्रोधउरबाढ़्यो ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हन्योताकि कपिध्वज के हियमों ❋ गङ्गासुत क्रुद्धित ह्वै जियमों

दो० भीषम अर्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अतिघोर ।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, पर्‍यो आनि अति जोर ॥

क्रुद्धित ह्वै बहु बिशिख चलायो ❋ धारी व्योम महाशर छायो
गुरू द्रोण बहु शायक छांड़्यो ❋ धृष्टद्युम्न क्रुद्धित ह्वै खांड़्यो
भरद्वाज सुत बाण चलायो ❋ कुँवर उत्तरा खड्ग लै धायो
झपटै बाज चर्मपर जैसे ❋ पहुँचो आय द्रोण ढिग तैसे
निकट जानिकै गुरू सँभार्‍यो ❋ लघुसंधान बाण तब मार्‍यो
बरषहिं बाण घात नहिं पायो ❋ कुँवर पेलि अपने दल आयो
लै कोदण्ड लग्यो शर मारन ❋ छांड़्यो बाण सहस्र अपारन
कृपाचार्य किय शर संधानहिं ❋ भिरे नकुल तिनते जयकामहिं
मन्त्री शकुनी रण सहदेवहि ❋ पण्डित दोऊ युद्ध के भेवहि
हांक्यो जबहिं अलम्बू स्यन्दन ❋ तिनते भिर्‍यो हिडम्बीनन्दन
शल्य नरेश सात्यकी लरई ❋ कृतबर्मा बिराट रण करई
युद्ध देखि भगदत्त रिसानो ❋ चढ़ि गयन्दपर कियो पयानो

दो० ऐरावत को सुत अहै, ताहि दियो सुरराज ।
तापर चढ़ि भगदत्त नृप, कियो युद्ध को साज ॥

मन्दर सों देखत नर डरई ❋ योजन ऊपर पांव सो धरई
दन्तबिशाल कहत नहिं आवै ❋ मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै
कालरूप सम कुञ्जर धायो ❋ पाण्डव के दल ऊपर आयो
कटक अमित पांयनसों मार्‍यो ❋ शुण्ड लपेटि रथी फटकार्‍यो
अपनो दल डोलत अनुमान्यो ❋ भीम अग्र ह्वै हांक सुठान्यो
क्रुद्धित शर कोदण्ड सुधार्‍यो ❋ कुञ्जरशीश बिशिखशतमार्‍यो
शायकअमित हते गजमत्तहि ❋ षष्टिबाण मार्‍यो भगदत्तहि
तब भगदत्त क्रोध उर कीन्ह्यो ❋ पंचबिंश शरफोंक सो दीन्ह्यो
भीमसेन उर मध्य प्रहारा ❋ बहै प्रवाह रुधिर की धारा

दो० तब गयन्द अतिक्रोध करि, गह्यो भीमरथ आय ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फेंकि दियो रथ भूमि में, परो कोस पर जाय॥

कहूं तुरंग कहूं रथ टूट्यो ❋ कहूं सारथी कर शिर फूट्यो
भीमसेन तब लज्जा पायो ❋ रहु भगदत्त वृकोदर आयो
हांक मारि यहि भांति जनायो ❋ लैकर गदा क्रोध करि धायो
एकहि गदा शीश पर दयऊ ❋ चारि पैग पाछे गज गयऊ
गदा घाव गजराज सँभाख्यो ❋ झारि शीश आगे पग धाख्यो
तब भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यो ❋ हांकि शेल उरमध्य सो दीन्ह्यो
शेल घात्र ते मोह जनायो ❋ धका मारि गजराज गिरायो
गिख्यो भीम धरणी महँ कैसे ❋ भूधर परत भूमितल जैसे
द्रुपद नरेश देखि करि धायो ❋ उतरा काशिराज सँग आयो
जुख्यो शिखण्डी अति रण धीरा ❋ चारिउ बीर महाबल बीरा
सहस सहस शर सबन चलायो ❋ शीश गयन्द बाण ते छायो
गज पर शर बर्षत तब कैसे ❋ गिरि पर बृष्टि नीर घन जैसे

दो० नृपभगदत्त क्रोध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड।
चारिउभट मोहितकिये, भारत रण बरबण्ड॥

चारिउ बीर बिमोहित कीन्ह्यो ❋ पेलि गयन्द कटक पर दीन्ह्यो
संमुख आइ शूर शर जोरहिं ❋ झपटि गयन्द सबनशिरतोरहिं
ठोकर अपर पखोरते मारहिं ❋ काहुहि छेदि दण्ड ते डारहिं
बिडरी अनी व्यूह सब फूटे ❋ बिपुल सङ्ग निज सङ्गते छूटे
भयो शोर दल बैरख डोल्यो ❋ क्रुद्धित धर्मराज तब बोल्यो
अहो मूढ़ भागत केहि कामहिं ❋ संमुख युद्ध करहु रणधामहिं
प्राण गये उत्तम गति पैहहु ❋ चढ़ि बिमान सुरलोक सिधैहहु
क्षत्री बंश जन्म जो पावै ❋ सो सुपुत्र रण प्राण गँवावै
धर्मराज यहि बिधि ते कह्यऊ ❋ फिरकै अस्त्र सबन कर गह्यऊ
शर अरु शक्ति शेल ते मारहिं ❋ तोमर फरसा कोऊ प्रहारहिं
शायक क्रोधवन्त ह्वै धाये ❋ तूणिन माहँ खांड़ अजमाये

दो० साहस करि क्षत्री सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महा भयंकर देवगज, होत घाव नहिं बार ॥

तब भगदत्त निकर शर डास्यो ❀ क्षत्री बिपुल समरमहि मास्यो
रथ अनेक गज गहि फटकारै ❀ ऊपर शर भगदत्त जो मारै
ब्याकुलसैन्य त्रसित होइ भागे ❀ दबे ते सकल परे यम आगे
शत नरेश तेहि ठाहर जूझे ❀ चले न लाज पंक आरूझे
गजरथ अरु असवार सहस्रन ❀ धर्मराज हित मृत्यु भये रन
कायर सकल जीव लै भाजे ❀ तब भगदत्त समरमहि गाजे
सिंहनाद करि हांक सुनायो ❀ है कोउ सुभट जो संमुख आयो
पाण्डु बंश सब मारि गिरावों ❀ एक छत्र कुरुनाथ करावों
तब अपनो पुरुषारथ लेखौं ❀ अर्जुन कृष्ण नयन जब देखौं
धर्मराज के संमुख आयो ❀ अर्जुन को माधव समुझायो

दो० अर्जुन अब देखत कहा, धर्मराज पर भीर।
चलहु जाइ उत रण करिय, रथ हांको यदुबीर ॥

सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ ❀ जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ
करि टङ्कोर धनुष कर लीन्ह्यो ❀ अर्जुन आइ हांक रण दीन्ह्यो
गज के जोर सैन्य सब मारे ❀ परेहु आय अब घात हमारे
अब छांड़हु जीवनकी आशहि ❀ गज समेत जैहौ यमपासहि
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो ❀ अर्जुन मैं खोजत त्वहिं रह्यो
भली भई बिधि कीन्ही भेटहि ❀ जैहौ आजु काल के पेटहि
सुनि अर्जुन धनु शायक लायो ❀ क्रोधित ह्वै अतिबाण चलायो
कुण्डकेश असि बिशिखचलाये ❀ गज समेत भगदत्तहि छाये
तब भगदत्त बाण सब काटे ❀ कुद्धित ह्वै सब शायक पाटे
षष्टि बाण मारेउ अर्जुन तन ❀ असी नराचहन्यो श्यामहिघन
सहस बाण मास्यो हनुमानहिं ❀ पंचबाण ते ध्वजा निशानहिं
अष्ट बिशिख अश्वन उरलागे ❀ थकितभयो रथ चलत न आगे
तबशर बिंशति बिजयनमास्यो ❀ नृप को चाप खण्डिकै डास्यो
पुनि पारथ कीन्ह्यो संधानहिं ❀ शक्ति बीच मास्यो दश बानहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निष्फल भयो शक्ति जब जान्यो ❀ लैकर चाप बिशिख संधान्यो
क्रुद्धित नृप मार्‍यो तीक्ष्णशर ❀ घायल भये आपु धरणीधर
गजहि पेलि अर्जुन पर आयो ❀ ऊपर ते बहु शर झरि लायो
गज समेटि कै फेंक्यो स्यन्दन ❀ अर्जुन कहीं कहीं जगबन्दन
तीक्ष्ण बाण घाव उर दीन्ह्यो ❀ अर्जुनकृष्ण बिमोहित कीन्ह्यो
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी ❀ हनूमान रथ रक्षाकारी

दो० हम पारथ अरु रथ सहित, तुम रक्षक हनुमान।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान॥

अर्जुन कृष्ण मोह जब पायो ❀ तब भगदत्त क्रोधकरि धायो
गज के पांयन ते रथ तोरौं ❀ ठोकर ते अर्जुन शिर फोरौं
हनूमान हँसि बचन सुनायो ❀ नृप यह मन्त्र अकारथलायो
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक ❀ ऐरावत नहिं तूरन लायक
यम अरु इन्द्र बरुण जो आवहिं ❀ तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं
बेष्टि लँगूर सबै रथ दीन्ह्यो ❀ धायो मत्तहस्ति रिस कीन्ह्यो
क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभार्‍यो ❀ लक्षबाण हनुमानहिं मार्‍यो
प्रबल तेज सानित शर छूट्यो ❀ बज्र शरीर लागि सब टूट्यो
दोउ दंत गहि पेलेउ बलकै ❀ कछुकढील दीन्ह्यो कपि छलकै
द्वौ सधनीच दंत जब धस्यो ❀ तब हनुमान लँगूरहि कस्यो
पेंच लँगूर दशन दोउ टूटे ❀ तब गज महाकष्ट ते छूटे
उखरे दशन चकित सब कोऊ ❀ शोणित बहै रदनकर दोऊ

दो० हरि जागे अर्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान।
पेंच लँगूर समेटिकै, रथ छाँड़्यो हनुमान॥

सुनु भगदत्त कह्यो यह पारथ ❀ तुम कीन्ह्यो आतिशय पुरुषारथ
अब मेरो प्रण नृप सुनि लीजै ❀ एक बाण कुञ्जर बध कीजै
दूजो शर संधान जो करऊं ❀ नहिं कोदण्ड बहुरि कर धरऊं
जो यह बाण गजहि सम्भार्‍यो ❀ क्षत्री धर्म आजु ते हार्‍यो
तब भगदत्त कह्यो यह कारन ❀ मैं यह प्रण कीन्ह्यो अपने मन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो यह शर गजराज गिरावै ❋ मेरो अयश सकल जग गावै
कृष्ण कही अर्जुन सुनि लीजै ❋ अब अपनो प्रण रक्षा कीजै
पारथ ब्रह्मबाण संधान्यो ❋ श्रवण प्रयंत शरासन तान्यो
कुंभस्थल तकि मारत भयऊ ❋ भेदिशीश शरनि कसिसो गयऊ
छूट्यउ प्राण गिरन गज चह्या ❋ तब भगदत्त जङ्घ सौं गह्यो
राख्यो साधि झुकन नहिं पायो ❋ बाण बृष्टि अर्जुन पर लायो
गजहिदेखिजिय शोचबिचारा ❋ पारथ धनुष हाथ ते डारा

दो० कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज।
राख्यो है भगदत्त गहि, अस्त्रतजौ केहिकाज॥

सुनत बिजयनरधनुशर लीन्ह्यो ❋ क्रुद्धित ह्वै संधान सो कीन्ह्यो
अर्द्धचन्द्र शर अर्जुन छरयो ❋ नृपको शीश कंध ते खरयो
मृतक गयंद सहित नृप परेऊ ❋ झलकत मुकुट जरायनजरेऊ
अर्जुन रण कीन्ह्यो यह करणी ❋ योजन तीनिपरयो गज धरणी
हर्षित भये देखि जगतारण ❋ धरि यह देह भक्त के कारण
पाण्डव सेन देखि सुख पायो ❋ फिरिकै सकलसमरमहि आयो
हर्षित बचन युधिष्ठिर भाख्यो ❋ अर्जुन रण अपनो प्रण राख्यो
रुण्डमुण्ड बसुधा अब छायो ❋ रण में रुधिरनदी बहिआयो
भूत पिशाच योगिनी गावहिं ❋ बिकटरूप भैरवगण धावहिं
श्रीहरि कही चलौ अब पारथ ❋ भीषमसों कीजै पुरुषारथ
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो ❋ तब भीषम जय शंख बजायो

दो० दशसहस्र रथ मारिकै, चले आपने धाम।
सबलसिंह चौहानकहि, भारत के संग्राम॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्ह्यो ❋ सेन समेत गमन गृह कीन्ह्यो
तब कुरुराज भवन निज आयो ❋ सकल सेन बिश्राम करायो
आप गमन अन्तःपुर कीन्ह्यो ❋ भानुमती आदर करि लीन्ह्यो
चमर छत्र सब लिये सहेली ❋ मणिमय भूषण रूप गहेली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नृपहिं सिंहासन लै बैठारयो ❀ रानी तब आरती उतारयो
उत्तम नीर सुगन्ध सँवारयो ❀ सखिनआयतबचरणपखारयो
तेल सुगन्ध राज तन लाया ❀ कनककलश अस्नान करायो
भूषण बसन अङ्ग पहिरायो ❀ अमृत भोजन सरिस ज्यँवायो
कञ्चन मणिमय भवन सँवारी ❀ हीरा रत्न करत उजियारी
तामिच गजमणि झालरि जोरे ❀ देखत धनद कहहिं हम थोरे
बहुत भांतिकै सेज सँवारी ❀ पय फेना सम आनँदकारी
शयन करन भूपति पगुधास्यो ❀ नृत्यनि मङ्गल गान उचास्यो
आगिलि कथा कहन मन लायो ❀ यदुपतिसहित सकलगृहआयो

दो० अशन करन बैठे सकल, द्रुपदसुता के जाय।
धर्मराज पूछत भये, बचन सुनहु यदुराय॥

हनूमान रथ आपु सँभास्यो ❀ तब पारथ भगदत्तहिं मास्यो
दश सहस्र रथ भीषम मारै ❀ नितक्रमसों नहिं एक उबारै
भीषम रहत कुशल नहिं देख्यो ❀ बन्धुबिरोध कठिनकरि लेख्यो
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशौ ❀ केहिकारण जियकरहु अँदेशौ
जो हरिचरण कमल मन लावै ❀ सो जगमें कलेश नहिं पावै
सदा भक्त की रक्षा कारण ❀ दीनबन्धु कीन्ह्यो तन धारण
जब प्रहलाद खम्भ में कह्यो ❀ नरहरिरूप तहां प्रभु गह्यो
असुर फारि यमलोक पठायो ❀ भक्त शीश पर छत्र धरायो
ते प्रभु सदा रहत तुम सङ्गहि ❀ कारण कौन करहु मन भङ्गहि
करिभोजन शयनहि मनलायो ❀ प्रात होत रण साज बनायो

दो० दल चतुरङ्ग सुसङ्ग लै, सब नृप तेजनिधान।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान॥

कौरव साजि समरमहि आये ❀ हूह मारि दोऊ दल धाये
शर अनेक बर्षन रण लागे ❀ धावहिं बीर क्रोध ते पागे
शायक घाव करत अति चाँड़े ❀ उछरहिं गिरहिं तर्कियत खाँड़े
असवारहि असवार प्रहारहिं ❀ पकरहिंसुभटशीशअसिझारहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रथी रथी सों कीन्ह्यो जोरहि ❋ दन्ती सों दन्ती रणघोरहि
सन्मुख जुरे समर अति पण्डित ❋ दोउ दल मारुमारुधुनिमण्डित
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा ❋ घाल्यो घाव महाबल भीरा
क्षत्री अतिपौरुष निजकरिकर ❋ कीन्ह्यो भारत प्रलय भयंकर
बासुदेव स्यन्दनहि चलायो ❋ गङ्गातनय के सन्मुख आयो
दोऊ सुभट मिले अतियुद्धहि ❋ शर छांड़नलाग्यो अतिक्रुद्धहि
कर कोदण्ड बृकोदर लीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि अरि ऊपर कीन्ह्यो
यहि प्रकार बहु बिशिख पँवारे ❋ सहसन बीर समरमहि पारे
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु ❋ पांडव सेनहि मारि गिरावहु

दो० दश सहस्र रथ संग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान।
सिंहनादकियसमरमहि, साधेउ शारँग बान॥

क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण ❋ पाण्डव दल कृत बहु संहारण
गिरा गँभीर सों भीम सुनायो ❋ स्यन्दनत्यागि गदा गहि धायो
तबहिं सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यो ❋ भीमअङ्ग शत शर क्षत कीन्ह्यो
दश सहस्र स्यन्दन रथ आयो ❋ दशदश शर तिनसबनचलायो
लक्ष बिशिख बेधे जब तनमें ❋ तबहिं बृकोदर क्रुद्धेउ मनमें
गदाघाव यहि बिधिते मार्‍यो ❋ दुइसै रथ चूरण करिडार्‍यो
सहित रथी सारथी न देखत ❋ मांस मृत्तिका समुझे लेखत
अरु बहुस्यन्दन पदनते तोर्‍यो ❋ करतलहतिबहुमौलिसोफोर्‍यो
गहि बहु भीम चलाया स्यन्दन ❋ यहिप्रकार किय सेननिकन्दन
भीमसेन बहु कटक सँहार्‍यो ❋ नृपति सुशर्मा आपु सँभार्‍यो

दो० क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यो शरसंधान।
हृदय बृकोदर के हन्यो, एकबार दशबान॥

घायलभयो सह्यो सब बानहि ❋ क्रुधित गदागहिकियोपयानहि
करिकै नाद सुगदा प्रहार्‍यो ❋ कूदि सुशर्मा आपु सँभार्‍यो
भाज्यो तुरत तज्यो रणरङ्गहि ❋ सारथि सहित कियोरथभङ्गहि
कह्यो भीम भागत केहि कामहिं ❋ सन्मुख जुरौ करौ सग्रामहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ सिंहनाद करि हांक सुनायो
भीमसेन अस्थिर होइ रहिये ❀ मारतहौं तीक्ष्ण शर सहिये
तब सारथि लै रथ पहुँचायो ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो
भूरिश्रवा बाण दश डार्‌यो ❀ ते शर भीम सो काटि निवार्‌यो
दोउ बीर सन्धान्यो धनुकर ❀ क्रुद्धित लगे चलावन बहुशर
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु सङ्गहि ❀ दोउ भट मच्यो महारणरङ्गहि
शल्य नरेश सात्यकी योधहि ❀ कृतवर्मा बिराट रण क्रोधहि

दो० द्रोणी अरु अभिमन्युरण, कठिन बजायो मार।
बाणबुन्द बर्षत सघन, जिमि श्रावणजलधार॥

नृपजयद्रथरु नकुल कृत मारहिं ❀ कठिन अस्त्र दोउसुभट सँभारहिं
घटउत्कच क्रुद्धित ह्वै धायो ❀ सप्ततालबहु वृक्ष चलायो
लै पषाण शिर ऊपर डारहि ❀ यहिबिधिबहुत कटकसंहारहि
सकल पदाति पकरिकै खायो ❀ गजहि समेटि पेट पहुँचायो
कुरुपति कह्यो अलम्बू धावहु ❀ दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु
सप्त कोटि राक्षस लै सङ्गहि ❀ धायो धनु कर धरि रणरङ्गहि
दनुजराज शत बिशिखचलायो ❀ शर सों भीमपुत्र रथ छायो
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यन्दन ❀ धायो उतरि हिडम्बीनन्दन
लयो गदा कर दानवराजहि ❀ सन्मुख जुर्‌यो युद्ध के काजहि
मुद्गर गदा सु दोऊ प्रहारहिं ❀ एकहियक क्रुद्धित ह्वै मारहिं

दो० नृपति अलम्बू भीमसुत, भयो सुघोर बिरुद्ध।
बिकट भयंकर रूप धरि, कियो युद्ध अतिक्रुद्ध॥

गदाघाव जब तनमों लागत ❀ शब्द अघात महारण छाजत
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने ❀ अटके मल्लयुद्ध अरुझाने
दन्त दन्त नख नखन प्रहारहिं ❀ गहे केश मुष्टिक सों मारहिं
मेघघटा सम अङ्ग सोहाये ❀ क्रुद्धित दशन बिज्जु चमकाये
अरुण नयन सोहत हैं कैसे ❀ प्रातहि उदय दिवाकर जैसे
रथके स्तम्भ शीश पर मारहिं ❀ पकरि शुण्ड कुम्भस्थल फारहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महायुद्ध अति अद्भुत करणी ❋ कियो महाभय भारत धरणी
भीमतनय तब तज सँभार्यो ❋ दनुजराज गहि केश पछार्यो
तब दनुजेश धरणिपर गिर्यो ❋ महाअचल मानहुँ महि पर्यो
तासु हृदय पुनि चरण प्रहारा ❋ मुख ते चली रुधिर की धारा

दो० सबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हो खेत।
भैरव भूत पिशाच गण, नाचत योगिनि प्रेत॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

तब भीषम शारँग कर लीन्हो ❋ बाण बृष्टि अर्जुनपर कीन्हो
कृष्ण शरीर बिंशिखदश बेध्यो ❋ हनूमान बिंशति तन शोध्यो
पारथ के शर शोणित छूट्यो ❋ काटि सनाह भीष्म उर फूट्यो
पांच बाण मनमोहन मार्यो ❋ सहस पैग पाछे रथ टार्यो
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक ❋ अर्जुन यहि पुरुषारथ लायक
अब अपनो रथ रक्ष कीजै ❋ कमलनयन जोती कर लीजै
यह कहिकै तीक्षण शर मार्यो ❋ रथको पैग तीनिशत टार्यो
नन्दिघोष रथ श्रीजगबन्दन ❋ पारथ सहित पवनके नन्दन
लग्यो बाण रथ पीछे आयो ❋ साधुबचन यदुनाथ सुनायो
जीवन सफल गङ्गसुत तेरो ❋ बाण घात रथ डोल्यो मेरो

दो० श्रीहरि तुरँग सँभारिकै, लै आयो तेहि ठौर।
तौलगि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथ और॥

हर्षित ह्वै जय शंख बजायो ❋ तब सारथि रथ फेरि चलायो
सकलसुभट निजधाम सिधाये ❋ किये जाय बिश्राम सुहाये
धर्मराज सँग लिये सब भाई ❋ सहित गोबिन्द भवननिजजाई
अमृत भोजन सरस बनाये ❋ जेंवत भीम बहुत सचुपाये
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे ❋ कोमलबचन कहन कछु लागे
भीषम सरिस रच्यो पुरुषारथ ❋ केहिबिधि युद्ध जीतिये भारथ
धर्मराज तब भये दुखारे ❋ तब कुन्ती कछु बचन उचारे
सब संसार कहत परतक्षक ❋ पाण्डुबंश के माधव रक्षक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब तुम सकलरहे यक भवनहिं ❀ खेलनका बालक सब गवनहिं
भीम और दुर्योधन सङ्गहि ❀ सदा बिषाद करत मन भङ्गहि
बुद्धिचक्षु तब हमहिं बुलायो ❀ मधुर बचन कहिकै समझायो

दो० दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं यक ठौर।
ताते बसिये अनत ह्वै, रचि देहौं गृह और॥

दुर्योधन अरु करण बुलायो ❀ शकुनी सहित मन्त्र ठहरायो
थवइ बोलाय दयो धनदानहिं ❀ लाखभवन करिये निर्मानहिं
नगर बारुणा महल उठायो ❀ लाखसाज मन्दिर सब लायो
लाख कोट सब ईंट सँवास्यो ❀ दैकरि लक्ष सघन बैठास्यो
बुद्धिचक्षु कह बिदुर सिधावहु ❀ अपने नयन देखि तुम आवहु
नृपआज्ञा माथे करि लीन्ह्यो ❀ चढ़िबरबाजिगमनशुभकीन्ह्यो
आइउतरि देख्यो सब धामहिं ❀ लाग्यो सकल लाहको कामहिं
थवइन ते तब पूछन लागे ❀ यह बृत्तान्त कहहु मम आगे
यह सुनि थवई कहत सुभयऊ ❀ दुर्योधन मोहिं आयसु दयऊ
लाखभवन कीजो निर्मानहिं ❀ गुप्तरूप पाण्डव नहिं जानहिं
बिदुर बात मन में अनुमानत ❀ पापी दुर्योधन जग जानत

दो० देख्यों सुन्यों न जगत में, लक्ष भवन निर्मान।
दुर्योधन रचना रची, पाण्डव मुये निदान॥

चुपकरि रहौं पाण्डुसुत मरेऊ ❀ हत्या करन बीर नृप चहेऊ
रब मुद्रिका करते लीन्ह्यो ❀ थवई बोलि हस्त करि दीन्ह्यो
अब यक सुरँग करहु निर्मानहिं ❀ जैसे दुर्योधन नहिं जानहिं
सुनिकै बढ़ई द्वार बनायो ❀ ता ऊपर यक खम्भ लगायो
बिदुर गयो धृतराष्ट्र के आगे ❀ उत्तमभवन कहन अस लागे
द्विजबोलाय शुभदिवस धरायो ❀ गृहप्रबेश हम सब मन लायो
भीषम द्रोण साथ करि दीन्हे ❀ यज्ञ होम बहु बिधि ते कीन्हे
संध्याजानि किये सब गवनहिं ❀ सुतन समेत रहे हम भवनहिं
ब्याधा एक पाण्डु तेहि नामहिं ❀ सदा भ्रमै मृगया के कामहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मृगन मारि कानन ते ल्यावै ❋ बिक्रयमांस सों सुतन जियावै
एक दिवस आहेर सिधायो ❋ देखन एक जन्तु नहिं पायो
शोच बढ़ो जिय भयो निराशहि ❋ बालकसबबिधि परे उपासहि

दो० मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सों दिननप्रमाण ।
हर्षितहोइ ब्याधाचल्यो, साध्यो शारँग बाण ॥

पश्चिमदिशा जाल दै आयो ❋ उत्तरदिशिसों अनल लगायो
पूरबदिशा श्वान दृढ़ कीन्ह्यो ❋ दक्षिणदिशा फोंक शर दीन्ह्यो
चहुँदिशि मृगी देखिकै आयो ❋ कौनिउ दिशि निर्बाह न पायो
पश्चिम गये जाल में परिये ❋ उत्तर गये अग्नि में जरिये
पूरब गमने श्वान पछारै ❋ दक्षिण गये बधिक मोहिं मारै
प्रसवकाल स्वइ निकटहि आयो ❋ उदरमध्य स्वइ ब्यथा जनायो
करुणा करै मृगी यह भाखै ❋ दीनबन्धु बिनु को म्वहिं राखै
तृण बन चरौं करौं जल पाना ❋ अपनो मांस बैर सब जाना
अहो कृष्ण सन्तन सुखकारी ❋ दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी
अब तुम दया करहु जगनायक ❋ यहिअवसर प्रभु होहु सहायक

दो० घूमत है मन भँवर में, सुखकी नदी अथाह ।
चहूंओर संकट पर्‍यो, हरिके हाथ निबाह ॥

जब यहिभांति मृगी अकुलानी ❋ दीनबन्धु यह रचना ठानी
बन में मेघ घुमरि करि आयो ❋ बरषि नीर तब अनल बुतायो
पवन तेज सब जाल उड़ायो ❋ श्वानहि झपटि ब्याघ्र लैखायो
तड़प्यो बज्र ब्याध शिर पर्‍यो ❋ चहूंओर प्रभु रक्षा कर्‍यो
दीनदयाल राखि तेहिं लीन्ह्यो ❋ सुखते मृगी प्रसव तब कीन्ह्यो
बधिक जबै आयो नहिं भवनहिं ❋ सुतसमेत नारी कियो गवनहिं
द्विज भोजन तब सुनिकै धायो ❋ मोते तब याचज्ञा लायो
पञ्च पुत्र तब देख्यो नयनहि ❋ शबरी ते तब पूछेहु बयनहि
कहा नाम तुम मोहिं सुनावहु ❋ क्यहिउद्यम तुम दिवसगँवावहु
कुंती नाम मोहिं द्विज राख्यो ❋ स्वामीनाम पाण्डु तिन भाख्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुतको नाम युधिष्ठिर अहई ❋ दूजो भीमसेन यह कहई
तीजो अर्जुन सरिस सोहायो ❋ नकुल और सहदेव कहायो
दो० तब मैं हर्षित भई बहु, बैस सखी सुनु बात।
पति सुत एकै नाम है, हम तुम भयो सँघात॥
उत्तम भोजन सरिस जेंवायो ❋ सुतन समेत सेज बैठायो
शकुनीसुत उलका तेहि नामहि ❋ दुर्योधन ऐसे यहि कामहि
मध्य द्वार में अनल लगायो ❋ दृढ़ करि बज्रकपाट दिवायो
पसरी अग्नि लख भिहलाने ❋ बाढ़यो धूम सकल अकुलाने
चुइकै लाख देह मों परई ❋ उधिरै त्वचा बाहि सब जरई
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी ❋ दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी
कही भीम क्रुद्धित सहदेवहि ❋ तैं नीके जानत है भेवहि
हँसि सहदेव कह्यो यह बानी ❋ भले ठौर पूछेहु सज्ञानी
भीम कीजिये कहा हमारो ❋ बलते यह गहि खम्भ उखारो
बिदुर सुरँग कीन्ह्यो निर्मानहिं ❋ धर्मशरीर नीति सब जानहिं
भीमसेन गहि खम्भ उखारो ❋ देख्यो उत्तम पन्थ सँवारो
दो० वहिमारगसबमिलिधसे, आतुर कीन्ह्यो गौन।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन॥
लै कर गदा चलन जब ताक्यो ❋ धरिकै देह अग्नि तब हांक्यो
सप्तजिह्व देखत भय पायो ❋ भीमसेन तब बिनय सुनायो
आपु समान तीनिसौ दैहौं ❋ भाषत सत्य समय जब पैहौं
द्वारावति महँ रह बनवारी ❋ सुखशय्या सँग रुक्मिणिप्यारी
तासु समीर अङ्ग में लागी ❋ भीष्मकसुता नींद सों जागी
अहो नाथ यह कारण कहिये ❋ शय्या अग्निआंचते दहिये
हँसि प्रभु कह्यो मौन ह्वै रहिये ❋ गुप्तबात काहुहि नहिं कहिये
लाखभवन कुरुनाथ सँवास्यो ❋ पाण्डुतनय हम जरत उबास्यो
अनलआंच अपने तनु लीन्ह्यो ❋ उन सबको निबाह करदीन्ह्यो
कृष्ण सहायक चितमें धरहू ❋ हे सुत शोच काज कयहि करहू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० जरत उबार्‌यो बह्नि ते, मदा भक्त की लाज ।
सबलसिंह चौहान कह, शोचकरहुक्यहिकाज ॥

करिभोजन शयनहिंमनदीन्ह्यो ❀ प्रात होत रणउद्यम कीन्ह्यो
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांध्या ❀ हर्षित बदन चल्यो शर मांध्यो
दोऊ दल रण भूमिहि आये ❀ हांक मारि पायक गण धाये
रहुरहुकहि कृपाण तबखोलहिं ❀ मारत हांक पदादि सुडोलहिं
बज निशान भयो आघाता ❀ कोउ नहिं सुन केहूकरि बाता
पेलि गयन्द महाउत आये ❀ पर्बत मनहुँ भूमि पर धाये
असवारहिं असवार सँभारहिं ❀ सम्मुख जुरे खड्ग शिरझारहिं
रथी रथी सों युद्ध लगायो ❀ क्रुद्धित ह्वै बहु बाण चलायो
क्षत्री सकल करहिं संग्रामहिं ❀ जूझहिं स्वामिधर्म के कामहिं
कुरुक्षेत्र में प्राण गँवावहिं ❀ चढ़ि बिमानसुरलोकसिधावहिं
नन्दिघोष श्रीपति रथ चाल्यो ❀ डोली धरणि शेष शिर हाल्यो

दो० भीषम सों अर्जुन जुरे, कीन्ह्यों धनु टंकोर ।
दोऊ दल चकित भये, जनु घुमरो घनघोर ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

भीषमसों अर्जुन यह भाख्यो ❀ चारिदिवस अपनोप्रण राख्यो
दशसहस्र नित क्रम रथ माख्यो ❀ दैकर शंख भवन पग धाख्यो
यहिबिधिकरौं धनुष कर धारण ❀ सकहु न आजु सेन संहारण
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ कीजै जो सो है पुरुषारथ
साखी आपु अहैं यदुनन्दन ❀ दशसहस्र रथ करौं निकन्दन
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ ठान्यो ❀ पञ्च बिशिख शायक संधान्यो
निशितबिशिखगङ्गासतमाख्यो ❀ अर्जुन ते शर काटि नवाख्या
शायक बिंश बिजयनर जाख्यो ❀ शन्तनुसुत बीचहि शर तोख्यो
दोउ वज्र अतिबिशिखप्रहारहिं ❀ जिमिजलधरबरषतजलधारहिं
बहुत युद्ध रण समता जान्यो ❀ पारथ अग्निबाण संधान्यो

दो० प्रकट अग्नि बारन चली, झपटत लपट कराल ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गजरथ हय पदचर जरत, कौरव कटक बिहाल ॥
भीषम बरुणबाण कर लीन्ह्यो ❋ ताते अग्निनिवारण कीन्ह्यो
पाण्डव दल बूड़त सब जान्या ❋ अर्जुन पवन बाण संधान्या
पवन तेज सब नीर सुखायो ❋ ध्वजा टूटि धरणी पर आयो
भीषम तज्यो सर्प के बानहिं ❋ नागन मरुत कियो तबपानहिं
धाय डसैं सब बिषधर कारे ❋ याहेबिधि बहुत सैन्य संहारे
अर्जुन बरही बाण चलाये ❋ मोरन पकरि सर्प सब खाये
भीषम अन्धकार शर छाजे ❋ देखत सकल पक्षिगण भाजे
अन्धकार भो कछू न सूझै ❋ अपनो पर कोऊ नहिं बूझै
हितअरुअहित देखिमहिपावहिं ❋ हांक मारिकर आपु जनावहिं
गजरथ हय पदाति सब धावहिं ❋ आभरहिंगिरहिंपन्थनहिंपावहिं
पाण्डव सैन्य देखि नहिं पायो ❋ तब पारथ रविबाण चलायो
भानुतेज कीन्ह्यो तम नाशहि ❋ पाण्डव दल पायो परकाशहि

दो० मार्तण्ड मण्डल उये, देखत अति हि प्रचण्ड।
तब अर्जुन यहिबिधिदियो, भीषम बाहुकोदण्ड ॥

गङ्गासुत क्रुद्धित भयो मनमें ❋ शर मास्यो पारथ उर रनमें
अष्टबाण तब यहि बिधि जोरे ❋ घायलकिय रथ चारिउ घोरे
सप्त बिंशिख मास्यो हनुमन्ताहि ❋ सत्तरिशर बेध्यो भगवन्ताहि
बिंशति शर रथ ऊपर मास्यो ❋ चाके चारि धरणि मों डास्यो
लै ताजन्ह प्रभु अश्वहि मारयो ❋ महाकष्ट ते रथहि निकारयो
अर्जुन देखि क्रोध जिय बाढ़यो ❋ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ़यो
भीषम के उर मध्य प्रहारा ❋ बहै प्रबाह रुधिर की धारा
चारि बाण छूटे अति पायल ❋ ताते भये अश्व रथ घायल
तीनि बाण सारथि पर लायो ❋ एक बाण ते ध्वजा गिरायो
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्या ❋ भीषम कोपि हांकि रथ दीन्ह्यो

दो० अर्जुन रण अस्थिर रहो, रक्षा कीजै मैन।
आपु सदृढ़ जोती गहो, पीतम पङ्कजनैन ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह कहि तीक्ष्ण बाण चलायो ❋ शर सों नन्दिघोष रथ छायो
पाण्डुतनय असबिशिख पँवास्यो ❋ आवत शायक काटि निवास्यो
भीषम के शर मारि गिरायो ❋ तब अर्जुन शत बाण चलायो
मारत शर शर सों शरखण्डित ❋ दोऊ जुरे सरस रणपण्डित
भीषम पर्वत शर संधान्यो ❋ देखि देव सब शङ्का मान्यो
चलैं पहार सकै को भाखन ❋ शतते सहस सहस ते लाखन
लक्ष पहार गगन में धायो ❋ भादों मेघ उमहि जनु आयो
शब्द अघात होत हैं कैसे ❋ सागर मथत कुलाहल जैसे
पाण्डव दल त्रासित होइभागे ❋ हाहा शब्द पुकारन लागे
नन्दिघोष राख्यो जगबन्दन ❋ भीमरु रहे सुभद्रानन्दन
तीन महारथि रण महँ गाजैं ❋ सहित नरेश सकल भट भाजैं
अन्धकार यहि बिधिते छायो ❋ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो

दो० सुरगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम।
पारथ शर शारँग गहहु, कहे आपु सुखधाम॥

साधि बाग राख्यो हरि घोड़े ❋ अर्जुन बज्रबाण गुण जोड़े
गिरिते भयो बज्र तब दूनो ❋ फोरि पहार कियो तब चूनो
ऐसे बज्र बाण तब छूट्यो ❋ लक्ष पहार क्षार सम फूट्यो
बिबुध लोग देखत सुख पायो ❋ सेना सकल समरमहि आयो
पुष्पमाल सुर कन्या डारहिं ❋ नन्दिघोषरथ सरस सँवारहिं
जयजय शब्द गगनमहँ बोलत ❋ चढ़े बिमान अनन्दित डोलत
भीषम निरखि क्रोध उर छायो ❋ पारथसों कछु बचन सुनायो
अब अपनो दल रक्षा करिये ❋ सावधान कोदण्डहि धरिये
लघु संधान बिपुल शर त्याग्यो ❋ सहस सहस शर छूटन लाग्यो
गङ्गातनय तेज संभास्यो ❋ अर्जुन काटि भूमिमहँ पास्यो
भीषम चहहिं सैन्य संहारण ❋ पारथ प्रण रक्षा के कारण
नयनपलक लागन नहिं पावहिं ❋ श्रमजल दृटि नयनपर आवहिं
शर संधान घात नहिं पायो ❋ धनुष खींचि पोंछन मन लायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गासुत तब अवसर पायो ❋ बाणन वृष्टि महा झरिलायो
दशसहस्र कृतखण्डित स्यन्दन ❋ कियो शंखध्वनि शन्तनुनन्दन
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई ❋ भीषम किमि यह शंख बजाई
बध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो ❋ गङ्गासुत अपनो प्रण राख्यो
गजरथ हय पदाति सब जूझे ❋ रुण्डमुण्ड कछु जात न बूझे
अर्जुनलखिअचरजकरि मान्यो ❋ महाबीर भीषम कहँ जान्यो
संध्या जानि रथहि पलटायो ❋ कौरवदल सब भवनहिं आयो

दो० नन्दिघोष रथ फेरकै, पारथ कीन्ह्यो गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेनवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सकल सैन्य बिश्राम सो कर्‌यो ❋ खान पान कर्महि अनुसर्‌यो
दुर्योधन भीषम पहँ आये ❋ बैठि बचन यहिभांति सुनाये
पांच दिवस कीन्हें संग्रामहिं ❋ पाण्डवकुशलगये निजधामहिं
तव बल नाथ जगत सब जानत ❋ देव दनुज गन्धर्ब बखानत
क्षणमों पाण्डव सकहु सँहारण ❋ आप दया कीजै क्यहि कारण
तब भीषम कह बचन सही अति ❋ पूर्वकथा अब सुनहु महीपति
नन्द भवन जब रहे मुरारी ❋ धेनु चरावत अतिहितकारी
सुरपति यज्ञ गोप सब कीन्ह्यो ❋ सो हरि मेटि शैलकहँ दीन्ह्यो
यह सुनि देवराज दुख पाये ❋ प्रलयकाल के मेघ बोलाये
उठी घटा बारिद घहराने ❋ देखत ब्रजबासी अकुलाने
कृष्ण कृष्ण कहि सबन पुकारी ❋ अहो नाथ हम शरण तुम्हारी
तब हरि गोबर्द्धनहि निहार्‌यो ❋ भुजबल पकरि पहार उपार्‌यो
बायें कर पर राख्यो मन्दर ❋ यहिबिधि नाश्यो गर्ब पुरन्दर

दो० सप्त दिवस झरिलाइकै, बर्षा घोर अपार ।
ग्राम गोप रक्षा कियो, करसों धर्‌यो पहार ॥

ते प्रभु हैं पारथ रथ सारथ ❋ कहो कहा कीजै पुरुषारथ
बधौं काल्हि पाण्डव परतक्षक ❋ जो नहिं होइँ कृष्ण रणरक्षक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होत प्रभात दोउ दल सज्जित ❋ शब्द अघात दमाम सुबज्जित
भांति भांति बैरख फहराने ❋ राजहंस जिमि गगन उड़ाने
सिंहनाद कार हांक सुनाये ❋ त्री सकल क्रोध करि धाये
महारथी सब बड़े धनुर्द्धर ❋ सम्मुख जुरे गहे कर धनुशर
ऐसे बिशिख बृष्टि शर कियऊ ❋ शर के छांह भानु छिपिगयऊ
कोउ भट शल शूल परिहारहिं ❋ कोऊ खड्ग शीशपर मारहिं
गदा अपर मुद्गर कर लीन्ह्यो ❋ ताते मारु भयंकर कीन्ह्यो
कोउ भूप गाह खड्गन चाखे ❋ बाहत जहां रहत नहिं मोखे
तब सहदेव खड्ग निजकरधरि ❋ धर्मराजहित हतत सैन्यअरि
छत्र समेत बीर सुतअन्धहि ❋ भृकुटी सहित काटगजकन्धहि

दो० यहिबिधिते सहदेव रण, कीन्हेउ गीधमशान।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबान॥

लघुसंधान बिशिख त्रय मार्‌यो ❋ ते सहदेव फेरि परतार्‌यो
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी ❋ लागे करन युद्ध अति भारी
सप्त नराच निशित कर लीन्हेउ ❋ ते शर बिद्धि मौलिपर कीन्हेउ
जयद्रथ नृपरु नकुल ते भारथ ❋ दौ भट करत महापुरुषारथ
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❋ तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो
द्विभट सरस लागे शर मारन ❋ जूझे सैन्य सहस्र अपारन
द्रोण आप रथ हांकि चलायो ❋ श्यामध्वजा रण शोभा पायो
बर्षहिं बाण सकै को भाखन ❋ पाण्डव दल जूझे तब लाखन
यहिबिधिकृतबहुसैन्यनिकन्दन ❋ आगे भये सुभद्रानन्दन
गुरु के चरण प्रणाम जनायो ❋ एक बार शत बाण चलायो
सहस बिशिख औरौ कर लीन्हे ❋ ताते निकर सैन्य बध कीन्हे

दो० अभिमनुरण यहिबिधिकियो, सेना बध्योअनन्त।
मारेउ तीक्ष्ण बाण ते, मतवारे मयमन्त॥

द्रोणसुगुरु निज तेज सँभार्‌यो ❋ अभिमन्युउर बिंशतिशरमार्‌यो
अर्जुन सुत कृत शरसंधानहि ❋ द्रोणललाट हन्यो दशबानहि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहिबिधिकरतसमरअतिकरणी ❋ अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी
महारथी सब अपने घातहि ❋ क्रोधित करनलगे शरपातहि
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े ❋ हांक देत हरि हांकत घोड़े
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा ❋ पीत बसन तन शोभा पावा
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ❋ भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ
बासर पञ्च कियो संग्रामहिं ❋ सबमिलिकुशलगयेतुमधामहिं
होइहै आजु महाबल भारथ ❋ पारथ समुझि करौ पुरुषारथ
कृष्ण देव रण को चित दीजै ❋ पाण्डुबंश की रक्षा कीजै

दो० यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छांड़्यो तीक्षण बान।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित बाजि हनुमान॥

चारि बिशिख यहिभांतिपँवार्यो ❋ नन्दिघोष हयघोष सुकार्यो
क्रुद्धि बिजयनर धनुकरलीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि भीषम पर कीन्ह्यो
अग्नी बाण उर मध्य सुबेध्यो ❋ अष्टबिशिखअश्वनतनशोध्यो
दश शर सारथि के उर दयऊ ❋ शायक पञ्च केतुध्वज हयऊ
कोटि बिशिख सेना पर छोड़ेउ ❋ हयगज गिरे अमित रथतोरेउ
गङ्गासुत शर बर्षत कोप्यो ❋ पाण्डवचमू शरन सों तोप्यो
जूझे सुभट गिरे रण ओकहि ❋ चढ़े बिमान चले सुरलोकहि
जयमाला सुरकन्या डारहिं ❋ उत्तम रूप सुबेष सँवारहिं
यहि बिधि गिरे बीर सब जेते ❋ स्वर्ग भोग सुख पायो तेते
भीषम कीन्ह्यो सेन निकन्दन ❋ क्रुद्धित भयो पाण्डु को नन्दन

दो० अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि ब्यवहार।
कुरुसेना मरिमरि पर्यो, छर छांड़्यो संसार॥

महायुद्ध करि सकै न बरणी ❋ लक्षण सुभट खसे हति धरणी
उठहिं कबन्ध शीश बिनु धावहिं ❋ खड्ग पाणिगहि मारण आवहिं
यहिबिधि कीन्ह्यो समरभयंकर ❋ मुण्डमाल बहु लीन्ह्यो शंकर
भीषम कह्यो धनंजय सुनहू ❋ अब मेरो पुरुषारथ गुनहू
यह कहि नारायणशर लीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होत प्रभात दोउ दल सज्जित ❋ शब्द अघात दमाम सुबज्जित
भांति भांति बैरख फहराने ❋ राजहंस जिमि गगन उड़ाने
सिंहनाद कार हांक सुनाये ❋ "त्री सकल क्रोध करि धाये
महारथी सब बड़े धनुर्द्धर ❋ सम्मुख जुरे गहे कर धनुशर
ऐसे बिशिख बृष्टि शर कियऊ ❋ शरके छांह भानु छिपिगयऊ
कोउ भट शल शूल परिहारहिं ❋ कोऊ खड्ग शीशपर मारहिं
गदा अपर मुद्गर कर लीन्ह्यो ❋ ताते मारु भयंकर कीन्ह्यो
कोउ भूप गाह खड्गन चाखे ❋ बाहत जहां रहत नहिं मोखे
तब सहदेव खड्ग निजकरधरि ❋ धर्मराजहित हतत सैन्यअरि
छत्र समेत बीर सुतअन्धहि ❋ भृकुटी सहित काटगजकन्धहि

दो० यहिबिधिते सहदेव रण, कीन्हेउ गीधमशान।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबान॥

लघुसंधान बिशिख त्रय मार्‌यो ❋ ते सहदेव फेरि परतार्‌यो
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी ❋ लागे करन युद्ध अति भारी
सप्त नराच निशित कर लीन्हेउ ❋ ते शर बिद्धि मौलिपर कीन्हेउ
जयद्रथ नृपरु नकुल ते भारथ ❋ दौ भट करत महापुरुषारथ
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❋ तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो
द्विभट सरस लागे शर मारन ❋ जूझे सैन्य सहस्र अपारन
द्रोण आप रथ हांकि चलायो ❋ श्यामध्वजा रण शोभा पायो
बर्षहिं बाण सकै को भाखन ❋ पाण्डव दल जूझे तब लाखन
यहिबिधिकृतबहुसैन्यनिकन्दन ❋ आगे भये सुभद्रानन्दन
गुरु के चरण प्रणाम जनायो ❋ एक बार शत बाण चलायो
सहस बिशिख औरो कर लीन्हे ❋ ताते निकर सैन्य बध कीन्हे

दो० अभिमनुरण यहिबिधिकियो, सेना बध्योअनन्त।
मारेउ तीक्ष्ण बाण ते, मतवारे मयमन्त॥

द्रोणसुगुरु निज तेज सँभार्‌यो ❋ अभिमन्युउर बिंशतिशरमार्‌यो
अर्जुन सुत कृत शरसंधानहि ❋ द्रोणललाट हन्यो दशबानहि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहिबिधिकरतसमरअतिकरणी ❋ अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी
महारथी सब अपने घातहि ❋ क्रोधित करनलगे शरपातहि
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े ❋ हांक देत हरि हांकत घोड़े
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा ❋ पीत बसन तन शोभा पावा
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ❋ भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ
बासर पञ्च कियो संग्रामहिं ❋ सबमिलिकुशलगयेतुमधामहिं
होइहै आजु महाबल भारथ ❋ पारथ समुझि करौ पुरुषारथ
कृष्ण देव रण को चित दीजै ❋ पाण्डुबंश की रक्षा कीजै

दो० यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छांड़्यो तीक्षण बान।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित बाजि हनुमान॥

चारि बिशिख यहिभांतिपँवार्यो ❋ नन्दिघोष हयघोष सुकार्यो
क्रुद्धि बिजयनर धनुकरलीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि भीषम पर कीन्ह्यो
अमी बाण उर मध्य सुबेध्यो ❋ अष्टबिशिखअश्वनतनशोध्यो
दश शर सारथि के उर दयऊ ❋ शायक पञ्च केतुध्वज हयऊ
कोटि बिशिख सेना पर छोड़ेउ ❋ हयगज गिरे अमित रथतोरेउ
गङ्गासुत शर बर्षत कोप्यो ❋ पाण्डवचमू शरन सों तोप्यो
जूझे सुभट गिरे रण ओकहि ❋ चढ़े बिमान चले सुरलोकहि
जयमाला सुरकन्या डारहिं ❋ उत्तम रूप सुबेष सँवारहिं
यहि बिधि गिरे बीर सब जेते ❋ स्वर्ग भोग सुख पायो तेते
भीषम कीन्ह्यो सेन निकन्दन ❋ क्रुद्धित भयो पाण्डु को नन्दन

दो० अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि ब्यवहार।
कुरुसेना मरिमरि पर्यो, डर छांड़्यो संसार॥

महायुद्ध करि सकै न बरणी ❋ लक्षण सुभट खसे हति धरणी
उठहिं कबन्ध शीश बिनु धावहिं ❋ खड्ग पाणिगहि मारण आवहिं
यहिबिधि कीन्ह्यो समरभयंकर ❋ मुण्डमाल बहु लीन्ह्यो शंकर
भीषम कह्यो धनंजय सुनहू ❋ अब मेरो पुरुषारथ गुनहू
यह कहि नारायणशर लीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिद्युतइवशर कियो प्रकाशहि ❀ कोटितरणिजिमिउयोअकाशहि
देवलोक सब देखि डेरान्यो ❀ पाण्डव दल देखत भय मान्यो
बाणउदोतभयो अतिकेहिबिधि ❀ प्रलयकालबड़वानलजेहिबिधि
कुपितगङ्गसुत बिशिखबचलायो ❀ डाटिहांक यहि भांति सुनायो
पाण्डव बंश न एक उबारौं ❀ सेना सहित सबै भट मारौं
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❀ पारथ सों भाष्यो बनवारी

दो० सब मिलिकै अस्त्रहि तजौ, तब पावहु जियदान।
तीनि लोक नाशिय सकै, यह नारायण बान॥

अर्जुन तुमहिं हमारी आनहिं ❀ त्यागकीजिये अब धनु बानहिं
यहि बिधिते माधव जब देख्यो ❀ अर्जुन धनुष डारि मुख फेर्‌यो
श्रीहरि आपु कहन अस लागे ❀ पाण्डवदल सब सुनहु सभागे
डारहु अस्त्र गहरु जनि लावहु ❀ बदन फेरि मुख पृष्ठि देखावहु
आपु कृष्ण यहि भाँति पुकार्‌यो ❀ सहित नरेश अस्त्र सब डार्‌यो
बिन अस्त्रन क्षत्री नहिं मारहिं ❀ बिमुख भये शर नहिं संहारहिं
रणमें सबहि देखि शर आयो ❀ अस्त्र हाथ काहुहि नहिं पायो
भीमअस्त्र त्यागन नहिं कीन्हे ❀ सन्मुख रह्यो गदा कर लीन्हे
श्रीपति कह्यो भीम के आगे ❀ यह हठ तजो हमारे मांगे
कह्यो भीम सुनिये जगतारण ❀ कादरबचनकहियक्यहिकारण
भारत में इतनो यश लेहौं ❀ प्राण देउँ पै पीठि न देहौं
अस्त्र गहे भीमहि तकि पायो ❀ प्रबल बाण संहारण आयो
बाण तेज महिमण्डल छायो ❀ नन्दिघोष हरि तजिकै धायो

दो० पृष्ठि न दीन्हेउ पाण्डुसुत, जान्यो निपट निदान।
भीमहि राख्यो पेटतर, शस्त्र लीन्हो भगवान॥

अपनो तेज आपु प्रभु लीन्ह्यो ❀ यहिबिधिबाणनिवारणकीन्ह्यो
ज्यहिबिधि धेनु बत्स पर धावै ❀ प्रीति पाइकै जठर लगावै
त्यहिबिधितेभीमहि प्रभुराख्यो ❀ जयजयशब्द बिबुधगणभाख्यो
पाण्डवदल देखत सुख मान्यो ❀ तब भीषम यहि भांति बखान्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साधु साधु श्रीपति गिरिधारी ❋ पाण्डुवंश के रक्षाकारी
कुन्ती सुदिन बालकन जायो ❋ हरि से हितू जगत में पायो
भीषम बचन सुनत सुख पाये ❋ तब हरि नन्दिघोष पर आये
धनुष बाण अर्जुनकर लीन्हे ❋ बाणवृष्टि हरि ऊपर कीन्हे
पञ्च बिशिख भीषम कर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर दीन्हे
करगहि पारथ शरहि निकारै ❋ दशसहस्र रथ भीषम मारै

दो० शंख शब्द करिकै चले, सबै आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सेन बिश्राम॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

धर्मराज कछु कहन सुलागे ❋ मधुर बचन मोहन के आगे
भीषम कीन्ह्यो सेन सँहारण ❋ केहिबिधियुद्धकरियजगतारण
नारायण शर भीषम मार्‌यो ❋ मरत भीम प्रभु आपु उबार्‌यो
बरु बन जाय तपस्या करिये ❋ भीषम के सन्मुख नहिं लरिये
अर्जुन कह्यो नृपति सुनिलीजै ❋ नितहिं शोचक्यहिकारणकीजै
सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो ❋ कथा पुरातन पारथ भाख्यो
पारिजात सतिभामहि दीन्ह्यो ❋ रुक्मिणिसुनतगहरुमनकीन्ह्यो
वाते सरिस पुष्प जब पावौं ❋ तबनिजनाथहि बदन देखावौं
कह्यो कृष्ण अर्जुन सुनिलीजै ❋ आपु गमन कदलीबन कीजै
पुष्प सुगन्धराज लै आवहु ❋ धावहु तुरत गहरु जनि लावहु

दो० कसि निषङ्ग कोदण्डगहि, कीन्ह्यो तुरत पयान।
कदली बन पहुँचे तबै, उदित होतही भान॥

पुष्प सुगन्ध देखि जब पायो ❋ तब पारथ तोड़न मन लायो
बानर चारि रहे तहँ रक्षक ❋ धाय कह्यो हनुमत परतक्षक
मनुज एक लीन्हे धनु बानहिं ❋ तोरत पुष्प मनो नहिं मानहिं
यह सुनि हनूमान चलि आयो ❋ क्रुद्धित तासों बचन सुनायो
अरे किरात चोर अपकारी ❋ यमपुर की इच्छा तैं धारी
नित क्रम हम पूजा मनलावहिं ❋ श्रीरघुबीर के शीश चढ़ावहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्जुन सुनत क्रोधजिय कीन्ह्यो ❋ यहिबिधि ते प्रतिउत्तर दीन्ह्यो
तरु शाखा शाखा पर डोलत ❋ मर्कट झूठ समुझिनहिं बोलत
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत ❋ तिनको मैं नीको करि जानत
किये रहे शारँग कर धारण ❋ कपिपषाण ढोये क्यहि कारण

दो० शरते शारँग बांधिकै, जाइ सके नहिं पार ।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन बिचार ॥

हनूमान यहि भांति बखानत ❋ अधमकिरात रामनहिंजानत
जिन मारेउ रावण दशकन्धर ❋ कुम्भकरणजिन बध्यो धनुर्द्धर
बालि मारि सुग्रीव नेवाजा ❋ लङ्का कियो बिभीषण राजा
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे ❋ दलको भार सही शर कैसे
अर्जुन कह निज तेज सँभारौं ❋ सब संसारहि पार उतारौं
बाँध बांधिकै मोहिं देखावहु ❋ तोपै प्राणदान तुम पावहु
पवनतनय इमि बचन सुनाये ❋ दोऊ बीर सिन्धुतट आये
जैसे मधुमाखी गण छाये ❋ यहिबिधि पारथ बाण चलाये
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांड्यो ❋ शत योजन बाणनते पाड्यो
हनूमान मन बिस्मय मान्यो ❋ नहिं किरात अपने उर आन्यो
है कोई यह बीर महाबल ❋ कपटरूप कीन्ह्यो मोते छल

दो० मेरे भारते शर चलैं, तो त्वहिं बधौं निदान ।
भार रहै दृढ़ सिन्धुमें, करि निज सखा प्रमान ॥

अर्जुन कहा बांध जो टूटै ❋ तौ मेरी परतिज्ञा छूटै
क्षणक रहो यहि भांति जनायो ❋ हनूमान उत्तर दिशि धायो
रोम रोम में शैल सुबांधे ❋ कलुक अग्र कलु लीन्हो कांधे
यहिबिधि रूप भयंकर कीन्ह्यो ❋ धरणिअकाशपरतनहिंचीन्ह्यो
रवि छपिगयो भई अँधियारी ❋ योजन सहस देह बिस्तारी
अर्जुन अन्धकार जब देख्यो ❋ अपने जियअचरजकरि लेख्यो
धुंधि मिट्यो तन देखन पायो ❋ रविमण्डल में शीश लगायो
रूप भयंकर देखि डेरान्यो ❋ सूखे प्राण बिकल अकुलान्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौन कुबुद्धि मोहिं बिधि दीन्ह्यो ❋ हनूमान ते सरबरि कीन्ह्यो
परमभक्त जग में बलभारी ❋ जाके प्रभु रघुपति धनुधारी
जिमि पिपीलिकहि पर है आवै ❋ परे दीप महँ प्राण गँवावै

दो० पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश।
सुमिरणकीन्हेउ ज्ञानकरि, तुमराखहु जगदीश॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❋ यहिअवसर प्रभु होहु सहायक
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो ❋ परमभक्त दोऊ अरुझान्यो
हनूभार बसुधा नहिं सहई ❋ शरको बांध कहौ किमि रहई
जो हनुमान जीतिकरि पावहिं ❋ पारथ को यमलोक पठावहिं
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई ❋ जाते रहै दोऊ सरसाई
कमठरूप जल भीतर कीन्ह्यो ❋ शरके हेठ पृष्ठ प्रभु दीन्ह्यो
अरे शबर सुनु बचन हमारो ❋ धरत चरण अब बांध सँभारो
अर्जुन तब सहसा करि भाख्यो ❋ जाहु निशङ्क बांध मैं राख्यो
सुनि हनुमत अतिकुद्धित भयऊ ❋ आय पांव शर ऊपर दयऊ
दबी पृष्ठ हरि कपि के भारहि ❋ मुखते चली रुधिर की धारहि

दो० अरुण बर्ण सागर निरखि, कीन्हो हनू बिचार।
ऐसो को संसार मों, सहै मोर जो भार॥

ज्ञानदृष्टि धरि ध्यान लगायो ❋ शर के तरे देखि प्रभु पायो
कूदि हनू तट कियो पयानो ❋ त्राहि त्राहि यह भेद न जानो
मैं पशु मूढ़ अकर्महि कीन्ह्यो ❋ हरिके शीश चरण निजदीन्ह्यो
कामरूप छांड़्यो बनवारी ❋ आपु भये तब शारँगधारी
हनुमत सों प्रभु कहन सो लागे ❋ दोऊ भक्त तुम परम सभागे
प्रीति बिचारहु छांड़हु रोषहि ❋ क्षमा करहु पारथ के दोषहि
यहिबिधिहरि मिलापकरिदीन्ह्यो ❋ आपु गमन द्वारावति कीन्ह्यो
हम लै आयो सुमन घनेरो ❋ सब दिन प्रभु राख्यो प्रण मेरो
अर्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं ❋ आपु शोच कीजै केहि काजहिं
दृढ़ ह्वैकै रण को मन लैये ❋ मारि शत्रु यमलोक पठैये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० मनबचक्रमजो हरि भजै, तजै और की आश ।
सबलसिंह चौहान कह, नाहिंनभक्त बिनाश ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

प्रात होत कीन्ह्यो असवारी ❋ साजै सैन्य महाबल भारी
दोउ कटक बहु बाजन बाजत ❋ गहे अस्त्र क्षत्री गलगाजत
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❋ मारु मारु करि सन्मुख आये
चतुरङ्गिणि सेना रण जूट्यो ❋ क्रुद्धितअमितबिशिखसबछूट्यो
शेल त्रिशूल अरुशक्तिन मारहिं ❋ मुद्गर गदा शीश पर डारहिं
कोउ तहँ भये कटारिन मारहिं ❋ गिरत अन्त महि गिरे करारहिं
शर धारा गजदन्तहिं लागै ❋ चिनगी उठि बहु पावक जागै
पायक हाथ खड्ग लै फेरत ❋ मारत मारु मारु धुनि टेरत
दोऊ कटक लगे संग्रामहिं ❋ कुरुपति धर्मराज के कामहिं
मूशल घाव मारि शिर फोरहिं ❋ जूझि परे मुख नेकु न मोरहिं

दो० सेनासब यहिबिधि लरै, करै भयंकर मारि ।
महारथी रण हांकदै, भिरे प्रचारि प्रचारि ॥

महावीर अतिबल शर शोधहिं ❋ हृदय खरिड धरणी शर बेधहिं
भीमसेन बहु बिशिख पँवार्यो ❋ छादित शर भारत महि कार्यो
लखि कलिङ्ग क्रोधितहोइधायो ❋ महामत्त गज लक्षण आयो
सौ बान्धव कलिङ्ग के साथी ❋ औ नवलाख महाबल हाथी
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं ❋ शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं
लागत क्षत अतिकोप बढ़ायो ❋ रथते उतरि गदा गहि धायो
गदा घाव गज मस्तक फोर्यो ❋ पाँयन ते अनेक रथ तोर्यो
नृपकलिङ्ग कीन्ह्यो दृढ़ ठानहिं ❋ भीम अङ्ग मारेउ दश बानहिं
अपरबिशिखत्रयअतिबलकीन्ह्यो ❋ ते शर बिद्धशीश पर दीन्ह्यो
भीमसेन परतिज्ञा भाखत ❋ रे कलिङ्ग अबको तोहिं राखत
गदापवन ते सबहिं उड़ायो ❋ सेन सहित सब नभ पहुँचायो
हैं नव लक्ष संग तव हाथी ❋ सकल करौं तारागण साथी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० भीमसेन है नाम मम, जग परतज्ञ प्रमान ।
यहमिथ्या नहिं जानिबो, कोटि आन भगवान ॥
अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ ❋ भीम अंग प्रबिशत सो भयऊ
अरु बनबास पवनगण आये ❋ गदा बैठि निज भाव जनाये
धाये भीम गदा कर फेरत ❋ उड़े गयन्द महौ तड़ गेरत
पवनको तेज अकाश समाने ❋ ज्यों बबूर के पत्र उड़ाने
कुञ्जर सबै गगन मों लागे ❋ कौतुक छोंड़ि देव सब भागे
योजन एक सेन जो खायो ❋ गदा पवन ते सेन उड़ायो
कौरवदल देखत दुख मान्यो ❋ कालसमान भीम को जान्यो
पकरि शुण्ड गज मत्त चलाये ❋ ते कुञ्जर लङ्का पहुँचाये
अभिरे कनक कोटि शिर फूट्यो ❋ सहितभुशुण्ड दशन सब टूट्यो
बहुतक परे सिन्धु के धारहिं ❋ पकरिमत्स्यसबकरहिंअहारहिं
रबिमण्डल मो जो पहुँचायो ❋ अजहूंफिरत गिरन नहिं पायो

दो० भीम भयंकर गज घने, फेंकै यहि व्यवहार ।
भारत के संग्राम में, कियो सिन्धु के पार ॥
देखत द्रोण क्रोध तब कीन्ह्यो ❋ रहुरहु भीम हांक तब दीन्ह्यो
सहस बाण उर मध्य सो मार्‌यो ❋ शरते तन जर्जर करि डार्‌यो
शायक छूटे जात न जाने ❋ कवच भेदि शर अङ्ग समाने
लघु संधान द्रोण शर मार्‌यो ❋ अपने रथहि भीम पगु धार्‌यो
लैकरि धनु दश साधेउ शायक ❋ द्रोण शरीर हनेउ बलशायक
नकुलहि और जयद्रथ भारथ ❋ दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ
शकुनी अरु सहदेव लराई ❋ महायुद्ध कीन्ह्यो प्रभुताई
द्रोणपुत्र अभिमन्यु संग्रामहिं ❋ सरसबिशिखछांड़तरणधामहिं
ऐसे शर क्रुद्धित ह्वै जोरहिं ❋ मनुज कहा पर्बत कहँ फोरहिं

दो० षष्टिबाण अभिमनु हते, कीन्ह्यो स्यन्दन भङ्ग ।
ध्वजा सहित वैसारथी, मारे चारि तुरङ्ग ॥
कीन्ह्यो अपर रथहि असवारी ❋ सहस बाण जोरे धनुधारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्जुनतनय बिशिख असजोस्यो ❀ द्रोणीशर निजशरनते तोस्यो
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहिं ❀ जुरे बीर अपने जयकामहिं
बासुदेव रथ कियो पयानो ❀ भीषम के सन्मुख लै ठानो
दोऊ बीर महा धनुधारी ❀ लागे करन भयानक भारी
दिब्य बाण अर्जुन तब मास्यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टास्यो
भीषम कह्यो धनञ्जय सुनिये ❀ अब मेरो पुरुषारथ गुनिये

दो० श्रवण मूल आकर्षि धनु, हन्यो बिशिख समरत्थ।
तीनि पैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो ❀ साधु बचन यदुनाथ सुनायो
अर्जुन कह सुनिये गिरिधारी ❀ मम उर यह संशय है भारी
ममयहिबिधिनिजबिशिखचलायो ❀ सहसपैग रथ को बिचलायो
तीनि पैग मेरो रथ आयो ❀ साधु बचन केहि काज सुनायो
हँसि भाष्यो तब शारँगपानी ❀ पारथ तुम यह चरित न जानी
ज्यों सब बिबुध गगनमो अहहीं ❀ ते सब नन्दिघोष महँ रहहीं
मेरु समान भार हनुमानहिं ❀ जगन्नाथ करि मोहिं बखानहिं
ऐसो रथ शर टास्यो पारथ ❀ भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ
अर्जुन सुनत सत्य करि जान्यो ❀ महाक्रुद्ध ह्वै कार्मुक तान्यो
धाये बाण तेज अति पायल ❀ ताते भे गङ्गासुत घायल
अष्ट बाण ते हत्यो तुरङ्गहिं ❀ पुनित्रयबिशिखसारथीअङ्गहिं

दो० कोटि बाण अर्जुन तज्यो, कीन्हो लघुसंधान।
चारि लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझेउ लागत बान॥

अर्जुनयहिबिधि अतिबलकस्यो ❀ भीषम कोपि धनुष कर धस्यो
असी बाण अर्जुन उर मास्यो ❀ गजरथ हय पदाति संहास्यो
यहिबिधि करहि युद्ध की करणी ❀ जूझहिं बीर परहिं रणधरणी
भीषम कियो सरिस प्रभुताई ❀ नरके शीश मेदिनी छाई
एकबिशिख यहिबिधिते जोस्यो ❀ ताते पारथ को गुण तोस्यो
तबकपिध्वजनिजधनुगुणदीन्ह्यो ❀ पारथ हर्षि धनुष कर लीन्ह्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गासुत तब समय बिचार्‌यो ❀ दश सहस्र स्यन्दन तब मार्‌यो

दो० शंखध्वनि करिकै चले, सकल आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कह, भारत के संग्राम॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये ❀ दुर्योधन तब भीष्म बोलाये
सुनहु पितामह बचन कहौं बर ❀ तुमते कोउ नहिं बड़ो धनुर्द्धर
सप्तदिवस रणकृत जयहित यह ❀ पाण्डवक्षेम सहित गये निजगृह
यह कलङ्क नहिं मिटै तुम्हारो ❀ जो न प्रात दल पाण्डव मारो
सुनत क्रोध तन भीषम बाढ़्यो ❀ तीक्ष्णशर निषङ्गते काढ़्यो
महाकाल शर नाम कहावै ❀ इन्द्रबज्र नहिं पटतर पावै
यहि शर ते पाण्डव दल मारौं ❀ तब अपने भवनहिं पगु धारौं
दुर्योधन सुनिकै सुख मान्यो ❀ जीत्यों युद्ध चित्त में जान्यो
तम्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो ❀ तामहँ बास पितामह कीन्ह्यो
धर्मराज बन्धुन सँग गयऊ ❀ युत कमलापति निजगृह गयऊ

दो० सभामध्य बैठे सकल, द्रुपद बिराट नरेश।
मधुर बचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश॥

प्रात युद्ध होइहै केहि रूपहि ❀ मन्त्री कहहु भेद सब भूपहि
हँसि सहदेव कही सुनु स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तर्यामी
महाकाल शर भीषम राख्यो ❀ पाण्डव बद्ध प्रतिज्ञा भाख्यो
द्वारहि बस्यो गयो नहिं धामहिं ❀ समुझि कीजिये श्रीहरिकामहिं
सुनत युधिष्ठिर बिस्मय मान्यो ❀ बन्धुन सहित मुये यह जान्यो
कहो कृष्ण नृप शोच न करिये ❀ मेरो मन्त्र चित्त निज धरिये
अर्जुन को मेरे सँग दीजै ❀ छलकरि महाकाल शर लीजै
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो ❀ किमि तुम वह शर पैहौ केशो
कमलनयन नृपको समझायो ❀ जब तुम सब बनबास सिधायो
काम्यकबन पर्णशाला छाये ❀ दूत आनि कुरुनाथ जनाये

दो० पाण्डव बनमों हैं निकट, बचन सुनो कुरुनाथ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सकल कटक सँग लैचलो, भीष्म द्रोण निज साथ॥
गोधन धन देखन मनलायो ❀ यहै आगमन सबहिं सुनायो
सुरगण सब जान्यो यह कारण ❀ कुरुपति जात पाण्डवन मारण
सुरपति कह्यो चित्ररथ धावहु ❀ दुर्योधनहि बांधि लैआवहु
आज्ञालै चढ़ि चलो बिमानहिं ❀ कटिनिषङ्ग लीन्हो धनुबानहिं
गन्धब राय आइ तब हांक्यो ❀ चकित सबहिं गगनमुख ताक्यो
यहि बिधि बाण बुन्द झरिलायो ❀ मारि सबै सेना बिचलायो
अतितीक्ष्ण गन्धब शर लाग्यो ❀ धनुगुण कट्यो करण तब भाग्यो
नागफांस शर यहि बिधि सांध्यो ❀ बलते गहि दुर्योधन बांध्यो

दो० अपने रथकरि लै चल्यो, गगनपन्थ मो गौन।
त्राहि त्राहि टेर्यो बिकल, सुन्यो युधिष्ठिर बैन॥

यह तो है दुर्योधन भ्राता ❀ अपकारी गन्धब लिये जाता
अर्जुन कर कोदण्डहि धरिये ❀ बन्धनमुक्त बन्धुको करिये
भीम कही नृप चुप करि रहिये ❀ भूलि बात क्यहि कारण कहिये
गन्धब कियो हमारहि कामहिं ❀ चलहु राज कीजै सुखधामहिं
धर्मराज कह सुनिये पारथ ❀ आज्ञा मानि करहु पुरुषारथ
यह सुनि अर्जुन धनु कर लीन्ह्यो ❀ शायकबृष्टि अकाशहि कीन्ह्यो
शरते रथ रोक्यो दिबि धामहि ❀ गन्धब उर मारयो दश बानहि
मनहिं बिचार चित्ररथ कीन्ह्यो ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्ह्यो
पारथ तब इमि शायक साध्यो ❀ भूमि अकाश बाणते बांध्यो
दुर्योधन शरपर चलिआयो ❀ धर्मराज को दर्शन पायो

दो० लज्जितह्वै यहिबिधि कह्यो, अर्जुन राख्यो प्रान।
जो इच्छा सो मांगिये, कहत सुबचनप्रमान॥

पारथ कही सत्य दृढ़ कीजै ❀ समय परे मांगे बर दीजै
कुरुपति कह आजुइ बरलीजै ❀ अर्जुन को मेरे सँग दीजै
हरि अर्जुन कीन्ह्यो तब गवनहि ❀ आये दुर्योधन के भवनहि
कह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये ❀ सुनहु किरीटी यह मत कहिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकुट मांगि नृपसों लै आवहु ❋ तब भीषम पहँ आपु सिधावहु
तब अर्जुन आयो नृप द्वारे ❋ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे
दुर्योधन सुनि तुरत बोलायो ❋ अन्तःपुरमहँ कपिध्वज आयो
आदर करि आसन बैठारे ❋ कहहु बन्धु क्यहि काम सिधारे
अर्जुन कह कुरुपति के आगे ❋ पावहुँ आजु पूर्बबर माँगे
मुकुटदान मणि भूपति दीजै ❋ अपनी सत्य पालनो कीजै
मन गोबिन्द सुनत सुख पायो ❋ दीन्ह्यो मुकुट गहरु नहिं लायो

दो० मुकुट बांधि पारथ चले, भीषम के अस्थान।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधन के जान॥

भीषम कह्यो जानि कुरुराजहि ❋ आपुगमनकीन्ह्योक्यहिकाजहि
मांगे महाकाल शर दीजै ❋ निजकर हम पाण्डव बध कीजै
हँसि भीषम दीन्ह्यो तब बानहिं ❋ प्रात युद्ध कीन्ह्यो संधानहिं
हर्षवन्त ह्वै अर्जुन लयऊ ❋ यहि अवसर प्रगटत प्रभु भयऊ
कृष्णहिं देखि भयो छल जान्यो ❋ गङ्गासुत यहि भांति बखान्यो
हे प्रभु तुम पाण्डव के स्वारथ ❋ मेरो प्रण किमि कियो अकारथ
भारत में यश नेक न पायो ❋ नितप्रति तुम पारथहिं बचायो
शिवसनकादिकअन्त न जान्यो ❋ तुम पाण्डव के हाथ बिकान्यो
भक्ति हेतु केशव मन भायो ❋ बिना भक्ति प्रभु को नहिं पायो
कह्यो कृष्ण भीषम के आगे ❋ यश पैहौ रण सरस सभागे

दो० अपनो प्रण मैं टारिकै, तवप्रणकरौंनिदान।
भक्तिबिबशलखिप्रकटकह, सबलसिंहचौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो ❋ पारथ धर्मराज पहँ आयो
जिमि चातकमुखस्वातीबरष्यो ❋ बाण देखि पाण्डव दल हरष्यो
दुर्योधन सुनिकै दुख मान्यो ❋ प्रात होत रण कियो पयान्यो
हर्षितहोइ पाण्डव दल साजहिं ❋ भेरि दुन्दुभी मारू बाजहिं
दल चतुरङ्ग साजिकै आयो ❋ युद्धभूमि में शोभा पायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रथम पेलिदीन्ह्यो गजमत्तहि ❀ गज रिपुदंति भयो चौदन्तहि
पदचर धाये बहुधा दमकै ❀ फेरत फरी खड्ग कर चमकै
चढ़े तुरङ्ग शेल कर लीन्ह्यो ❀ महामारु असवारन कीन्ह्यो
मारत शूल सजोवा टूटहिं ❀ बाहत घाव खड्ग शिर फूटहिं
मुरै न लरै खेत मो ठाढ़े ❀ महाशूर सब जिय के गाढ़े
रथी रथी करिबे रण लागे ❀ चलत न एक एक के आगे

दो० महारथी रण हांकदै, करहिं युद्ध यहि रूप ।
जोर जोर अरुझे सबै, भिरे भूपसों भूप ॥

सहस लाख कोटिन शर छूट्यो ❀ बाणन बाण बीचही टूट्यो
यहि बिधि युद्ध करैं रण सरसैं ❀ बहुबिधि बाण बुन्दसम बरसैं
काढ़हिं धनुष क्रोध कै रण में ❀ बाहे शेल हांक दै रण में
रथ ते उतरि गदा लै धावहिं ❀ आगे परहि सो मारि गिरावहिं
तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ❀ शक्ति शेल मुद्गर कर मारहिं
जूझि गिरे भारत रण धावहिं ❀ आनन्दित चढ़ि चले बिमानहिं
अर्जुन रथ हांक्यो कंसारी ❀ जोती गहे पिताम्बरधारी
श्यामशरीर कमलदललोचन ❀ सदा भक्तकर शोचबिमोचन
नन्दिघोष रथ आगे आयो ❀ तब भीषम यहिभांति जनायो
मुकुट बांधि कीन्हो मोसों छल ❀ आजु जानिबो पारथ को बल
जो हरि के कर अस्त्र गहावों ❀ तो शन्तनुसुत जगत कहावों

दो० धर्मराज कुरुपति सुन्यो, भीषम भाष्यो बैन ।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनौ सैन ॥

गङ्गा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यों ❀ तौ यह प्रण भारत में कीन्ह्यों
प्रभु को प्रण टारों परतक्षक ❀ आजु करौं अपनो प्रणरक्षक
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलायो ❀ शोणित नदी अथाह बहायो
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों ❀ तौ मैं बास अधोगति पावों
कठिन बाण शारँगगुण जोस्यो ❀ शरसागर पाण्डवदल बोस्यो
भीषम याहि प्रतिज्ञा ठान्यो ❀ दौदलअतिअचरजकरिमान्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सुनि देवलोक सब धाये ❀ कौतुक को बिमान सब छाये
प्रथम कियो है प्रण जगतारण ❀ हम नहिं करैं धनुष कर धारण
प्रभु पारथ को सारथि अहई ❀ भीषम अस्त्र गहावन कहई
यह चरित्र देखत सब मुनिगण ❀ रणमों आज रहै काको प्रण

दो० भीषम तब यहिबिधिकह्यो, करिहौं युद्ध अनन्त।
पारथ रण अस्थिर रहौ, सारथि श्रीभगवन्त॥

यह कहि लगे चलावन शायक ❀ दोऊ भट रणमहँ सब लायक
अर्जुन बाण हाथ ते छूटहिं ❀ मानहुँ बज्र गगन ते टूटहिं
लघु संधान कियो तब पारथ ❀ निजशायक छायो सब भारथ
दशदिशि सब बाणनमय सूझै ❀ निज पर नाहिंन कोऊ बूझै
यहिबिधि शर अकाशमें छायो ❀ रबिमण्डल देखन नहिं पायो
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ़्यो ❀ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ़्यो
ऐसे सबल बाण गुण जोरे ❀ क्षण महँ अर्जुन के शर तोरे
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो ❀ पाण्डवदल बाणन ते तोप्यो
बीर सकल शर छांह समाने ❀ दृष्टि न परत जात नहिं जाने
क्रुद्धित यहिबिधि कृतसंधानहिं ❀ जलथल सूझिपरत सबबानहिं

दो० महाघोर संग्राम मों, अर्जुन धनु सन्धान।
सबशरकाटे निमिषमों, तमखण्ड्योजिमिभान॥

अर्जुन पाणि निशित शर छूटत ❀ भेद सनाह बपुष महँ फूटत
सारथि उर शत शायक मारे ❀ बिंशति बिशिख केतुध्वजपारे
अश्वनतनु यहिबिधि शरलागे ❀ थकितभये पगचलत न आगे
लक्ष नराच कटक पर डार्यो ❀ ते शर चोट मौलि अनुसार्यो
तब भीषम निजतेज सँभार्यो ❀ सहस बाण अर्जुन उर मार्यो
कोटि बिशिखलाग्योहनुमानहिं ❀ षष्टि नराच हन्यो भगवानहिं
गङ्गतनय शर अपर सुजोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे
शर अनेक सेना पर प्रेरो ❀ पाण्डव कटक हत्यो बहुतेरो

दो० सहस एक राजा गिर्यो, सेन सुबध्यो अनन्त।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अरुण बरण सब देखिये, खेलत मनहुँ बसन्त ॥
भीषम अमित तेज महि साज्यो ❀ रुण्ड मुण्ड महि भारत माज्यो
महाशूर रण जूझत घायल ❀ मनहुँ नाद मोहे करसायल
यहिबिधि कृतअतिरणभयकारी ❀ अर्जुन सों तब कह्यो मुरारी
अब अपनो दल रक्षन कीजै ❀ दृढ़ ह्वै शर कोदण्डहि लीजै
सुनि पारथ लीन्ह्यो करधनुशर ❀ प्रात समय जनु उदय दिवाकर
अति क्रुद्धित ह्वै कृत संधानहिं ❀ हृदय ताकि मास्यो बहुबानहिं
भेदि सनाह अङ्ग में लाग्यो ❀ क्रोधअनल उर अन्तर जाग्यो
भीषमबिशिखनिशितअतिछूट्यो ❀ अर्जुन बपुष भेदिकै फूट्यो
घायल भयो सह्यो सब बानहिं ❀ ब्रह्मअस्त्र तब कृत संधानहिं
बाण उदोत तेज महि छायो ❀ देवलोक लखि अतिभय पायो

दो० पारथ अतिशय बल कियो, कृष्णअस्त्रसन्धान ।
चलत तेज अति उदित कृत, मनहुँ दूसरो भान ॥

कौरवदल अति देखि सकान्यो ❀ भीषम ब्रह्म अस्त्र संधान्यो
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण ❀ तब लाग्यो तीक्ष्ण शर मारण
अयुत बाण हनुमन्तहि मार्‌यो ❀ गरुड़ध्वज तनु सहस प्रहार्‌यो
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मास्यो ❀ शरते तनु झांझर करि डास्यो
सहित बाजि स्यन्दन करिघायल ❀ थकित भये पदचलत न पायल
भीषम बाणबृष्टि अति लायो ❀ नन्दिघोष रथ शर ते छायो
तीक्ष्णबाण श्याम उर मार्‌यो ❀ पीतबसन रँग अरुण सँवास्यो
क्रुद्धित जलज नयन रतनारे ❀ चक्रपाणि कर चक्र सँवारे
रथ ते उतरि चले नारायन ❀ धाये आप उघारे पांयन
सजल श्यामघन अङ्ग सुहायो ❀ मर्कतमणि पटुतर नहिं पायो
मकराकृत कुण्डल मन मोहै ❀ डोलत झलक कपोलन सोहै

दो० गहे चक्रधर चक्र कर, चकृत चाहत खेत ।
चञ्चल धावनि बरण की, भीषम के प्रण हेत ॥

करमें चक्र सुदर्शन राजत ❀ कोटिभानु द्युतिसरिस बिराजत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रमजल रुधिर चलतयकसङ्गहि ❋ शोभित अङ्ग अनूपम रङ्गहि
बिश्वम्भर क्रुद्धित ह्वै धायो ❋ भूमि चली फण शेष उठायो
यहिबिधिप्रभुआतुरकियगवनहिं ❋ फहरतपीतबस्त्र लगिपवनहिं
गिस्यो छूटि ऊपर रण धरणी ❋ कबिपै छबिकलुजात नबरणी
कौरव दल देखत सब डरप्यो ❋ मानहुँ बाज बिहँगपर फरक्यो
तब अर्जुन छांड़्यो निजस्यन्दन ❋ धाइ जाइ पकस्यो जगबन्दन
अहो नाथ अस्थिर ह्वै रहिये ❋ आपु अस्त्र क्यहिकारण गहिये
मोते अघ कह भयो जगतारण ❋ कर गहि चक्र चल्यो तुम मारण
यहई अयश जगत में पायो ❋ प्रभुकर भीषम अस्त्र गहायो

दो० प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर अपमान।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्तबश्य भगवान॥

चरणकमल गहि पारथ फेस्यो ❋ देखि पृष्ठ गङ्गासुत टेस्यो
साधु साधु श्रीपति बनवारी ❋ सदा भक्त प्रण रक्षाकारी
धनुषडारिकर कियो प्रणामहिं ❋ अस्तुति करनलगेघनश्यामहिं
तब भीषम यहि बिधिते भाख्यो ❋ दीनबन्धु मेरो प्रण राख्यो
बिप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❋ भक्तबश्य गोपिन मन रञ्जन
गणिका ब्याध गीध गजतारण ❋ गोरक्षक गोबर्द्धन धारण
ध्रुवको अचल कियो परतक्ष ❋ द्रुपदसुता की लज्जा रक्षक
महाकष्ट प्रहलाद उबार्यो ❋ निकसि खम्भ दनुजेशहि मार्यो
रावण कुल समेत बध कीन्ह्यो ❋ लङ्का राज्य बिभीषण दीन्ह्यो
शाप शिला गौतम की नारी ❋ परसत चरण अहल्या तारी

दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि, करत चरण निजध्यान।
सबलसिंह चौहान कह, भीषम कियो बखान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥

जय बृन्दाबन बिपिन बिहारी ❋ श्रीपति श्रीधर श्रीबनवारी
चढ़े आइ हरि पारथ स्यन्दन ❋ जोती गहे आपु जगबन्दन
अर्जुन कोपि धनुष कर लीन्ह्यो ❋ इन्द्र अस्त्र संधानहिं कीन्ह्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौरवदल सम्मुख जो पायो ❋ क्षण में अर्जुन मारि गिरायो
महायुद्ध कीन्ह्यो नररूपहि ❋ मार्‌यो समर पंचशत भूपहि
सोहत मुकुटन अति मणिपूरी ❋ लोटत धरणि शीश ते भूरी
लागत उर अर्जुन के बानहिं ❋ कुरुदल रणमरि खसो निदानहिं
गङ्गासुत धनु क्रुद्धित लयऊ ❋ गुड़ाकेशपर शरझरि कियऊ
यहिबिधि लगे हनन शर तीक्ष्ण ❋ पाण्डवदलसहसनगिरेमहिरण
दशसहस्ररथ भीष्म निखरण्यो ❋ भवन चलत शंखध्वनि मण्ड्यो

दो० कुरु पाण्डव फिरिकै चले, आये अपने धाम।
धर्मराज बन्धुन सहित, संगलिये घनश्याम॥

भोजन को सबही मनलायो ❋ द्रुपदसुता यहिभांति ज्यँवायो
धर्मराज दुर्योधन भूपहि ❋ आजु युद्धकीन्ह्यो कयहि रूपहि
तब पारथ यहि भांति बखानहिं ❋ हरि मेरो कीन्ह्यो अपमानहिं
रण में भीषम को प्रण रह्यो ❋ दीनबन्धु रण अस्त्रहि गह्यो
द्रुपदसुता यहि भांति बखान्यो ❋ पारथ तुम यह भेद न जान्यो
सदा भक्त प्रभु रक्षा कारण ❋ ब्रह्मरूप कीन्ह्यो प्रभु धारण
शिव सनकादिक अन्त न पायो ❋ शबरी के जूठे फल खायो
महिमा अगम अगोचर मोहन ❋ डोलत सदा भक्त के गोहन
बलिराजा हनुमान सयाने ❋ चरणकमल मन मधुप लोभाने
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ ❋ भीषमजन्म भक्तमय स्वारथ

दो० धन्य धन्य ते साधु तनु, भजत साँवरे अङ्ग।
सुखदुखसम्पति विपतिमें, होत नहीं चितभङ्ग॥

सुनि माधव अतिशयसुखपायो ❋ करिभोजन शयनहिं मनलायो
होत प्रभात सजैं दौ अनी ❋ बजत दमाम भई ध्वनि घनी
बीर सकल रणधरणिहिं आये ❋ बँधे अस्त्र कर धनु शर लाये
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❋ महाशूर सन्मुख ह्वै आये
लैकर धनुशर कृत संधानहिं ❋ क्रुद्धित लगे पँवारन बानहिं
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❋ आगे परे ताहि यम लीन्ह्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाबीर सब बिरद सुबांधे ❀ अरुझे ठांव ठांव रण कांधे
दल चतुरङ्ग करत रण घोरहि ❀ मण्डे समर जोरसों जोरहि
तेज तुरङ्ग नकुल त्यहि राज्यो ❀ आते भयदायक सङ्गर साज्यो
महारथी बहु शर हत करहीं ❀ सहस सहस भट रणमहि परहीं
भीषम पर अर्जुन रण साजी ❀ हांक देत हरि हांकत बाजी
जोती गहे पतित के पावन ❀ बर्षत शर मानहुँ जल सावन

दो० पारथ कर कोदण्ड गहि, छायो बिशिख अपार।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर बिबिध प्रकार॥

तब भीषम निजकर धनुलायो ❀ अतिशयसरिस नराच चलायो
तीक्षण बाण प्रहारन करई ❀ पाण्डव दल बहु भट संहरई
भीषम उर निज तेज सुधास्यो ❀ सहस नरेश युद्धमहि मास्यो
बीर सबै लागे शर मारन ❀ तब आये कोते हथियारन
शूल गदा मुद्गरन प्रहारहिं ❀ सन्मुख आय खड्ग शिरझारहिं
अभिरहिं सुभटकटारिनमारहिं ❀ पकरि केश रण चपरि पछारहिं
द्रोण करण कुरुपति के साथहि ❀ यहिबिधि लरैं अस्त्र गहिहाथहि
इतते तबहिं बृकोदर धायो ❀ गदा घाव बहु मारि गिरायो
बहुतक मींजि पांव ते डास्यो ❀ बहुतक गहि अवनीपर डास्यो
अरु बहु स्यन्दन चूरण कीन्हेउ ❀ हयगज फेंकि व्योमपथ दीन्हेउ

दो० घोरयुद्ध यहिबिधि कियो, भीम भयंकर रूप।
सहित सेन रणमें बधेउ, प्रबल तीनिशत भूप॥

नन्दिघोष हांकत जगबन्दन ❀ अर्जुन कीन्हेउ सेन निकन्दन
तीक्षण बाण क्रुद्ध के मास्यो ❀ तीनि सहस्र नृपति संहारयो
मरि भट पस्यो धरणि सब छायो ❀ रणमें रुधिरनदी बहि आयो
शोणितनदी जाति नहिं बरणी ❀ मन अथाह हमका बैतरणी
भीमसेन गजराज सँहारे ❀ परे समर सब भये करारे
धवल छत्र चमकत हैं कैसे ❀ बाढ़त नदी फेन जल जैसे
शक्ती झलक मीन सम चमकैं ❀ कठिन ढाल कच्छप मम दमकैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

केश स्यवार सरिस अरुझाने ❀ मृतक तुरंग ग्राह सम जाने
कटे भुशुण्डि सरिस अबि पाई ❀ मनहुँ भूमि जल में उतराई
रुधिरनदी यहि रूप भयङ्कर ❀ नाचत महा मगन है शङ्कर

दो० भैरव भूत पिशाचगण, योगिनि मङ्गलचार ।
अन्त्र लपेटहिं कण्ठ में, सरिसि बिराजत हार ॥

कोऊ गजमुक्ता लै आवहिं ❀ एक एक के श्रुति पहिरावहिं
नृत्यत भूत पिशाच सयाने ❀ रुधिर मांस सब खाइ अघाने
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं ❀ मांस खाइ मनमें सचुपावहिं
गगन उड़हिं पक्षीगण जेते ❀ रणमें भये तृप्त मन तेते
घायल मग्न सुभये रुधिरसरि ❀ उठेमँभरि पुनि शोकसिन्धुपरि
शूरन शीशकुण्डि लै आवहिं ❀ पीवहिं रुधिर योगिनी गावहिं
उठि कबन्ध धावहिं पुनि माथहि ❀ मारन आव खड्ग गहि हाथहि
भीषम सों अर्जुन बलभारी ❀ कीन्हेउ अतिभारत भयकारी
अरुणबदन देखत दिन भूल्यउ ❀ जिमिबसन्तकिंशुकतरुफूल्यउ
भूत पिशाच सुब्याह बिचारहिं ❀ धरहिं टोप शिर मौरसँवारहिं

दो० सबलसिंह चौहान कह, अर्जुन कृत रणखेत ।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गोधन मण्डल मण्डप छायो ❀ जम्बुक सकल बराती आयो
यहिविधिकरत कोलाहल भारी ❀ भैरव सहित देहिं करतारी
तब पारथ संधान्यउ धनु शर ❀ गङ्गासुत मारेउ उर शत शर
अरुअतिनिशितअमितशरडाट्यो ❀ रथको ध्वजापताका काट्यो
तब भीषम दृढ़ कर धृत धनुशर ❀ होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर
दश शायक अर्जुनतन साध्यो ❀ सप्तविशिख यदुपति अवराध्यो
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो ❀ नन्दिघोष हय रथ छत साध्यो
लाग्यउ षष्टिविशिख हनुमन्तहि ❀ दशसहस्र रथ तब हतवन्तहि
दै जय शंख चल्यो गङ्गासुत ❀ पाण्डवदल सब चले भवन उत

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्योधन सब सेना लीन्हे ❀ अपने भवन गवन तब कीन्हे
दो० धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकन्त।
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनन्त॥
करि बिश्राम अस्त्र सब खोले ❀ नृपति युधिष्ठिर माधव बोले
चले सकल भोजन के कामहिं ❀ बैठे द्रुपदसुता के धामहिं
धर्मराज अति बचन सुनाये ❀ कंस निकन्दन प्रभुहि जनाये
नव दिन भयो महाबल भारथ ❀ भीषम खेत सरिस पुरुषारथ
दश सहस्र रथ नितक्रम मारहिं ❀ अरु अनेक सेना संहारहिं
कह्यो कृष्ण अब कीजै गवना ❀ चलिजैये भीषम के भवना
हम तुम अरु पारथ सँग लीजै ❀ गङ्गासुत के दरशन कीजै
पूछहिं जाइ मृत्यु को कारण ❀ यहिबिधिकहतभये जगतारण
अर्जुन सहित चले तब केशौ ❀ निशाकाल उठि चले नरेशौ
आये तुरत गङ्गसुत द्वारहि ❀ धायकह्यो यहिबिधिप्रतिहारहि
दो० गङ्गासुत चितदै सुनौ, कह्यो जोरि युग हाथ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्जुन हैं साथ॥
सुनि भीषम आतुर होइ धाये ❀ कृष्ण दरश आनन्दित पाये
धर्मराज अभिवन्दन कीन्हा ❀ हँसि भीषम अङ्कम भरिलीन्हा
होय पाण्डुसुत कुशल तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो
पुलक सहित हरिके पद परश्यो ❀ बदन चन्द्र आनन्दित दरश्यो
आदर करि आसन बैठाख्यो ❀ शीतलजल सों चरणपखाख्यो
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहि ❀ आपुगमनकीन्ह्यो केहि काजहि
धर्मराज यहि भांति जनायो ❀ बन बन फिरत महादुख पायो
कै बसीठ यदुनाथ पठायों ❀ पांच ग्राम मांगे नहिं पायों
तब हरि रच्यो युद्ध यह भारथ ❀ नवदिन किये आपु पुरुषारथ
दश सहस्र रथ नितक्रम माख्यो ❀ सेन अनेक समर संहाख्यो
दो० आपुयुद्धयहि बिधि करयो, तौ हम छांड़ी आस।
पञ्चबन्धु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो बनबास॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि भीषम यहि भांति बखान्यो ❀ धर्मराज यह बात न जान्यो
जाके सदा सहायक हरि हैं ❀ सो रणमों निश्चय जय करिहैं
जहां धर्म तहँ कृष्ण सो आवैं ❀ जहां कृष्ण तहँई जय पावैं
यह सुनि कह पाण्डवदलकेतू ❀ आपु युद्ध कीजै केहि हेतू
जो हमको जय दीन्हो चाहिये ❀ अपनी मृत्यु आपु ते कहिये
तब गङ्गासुत हँसिकै कहई ❀ जबलगि अस्त्र गहे हम रहई
इन्द्र आदि जो रणमों आवहिं ❀ म्वहिंते जयतिपत्र नहिं पावहिं
तुमते कहौं सुनो यह कारण ❀ सन्मुख अर्जुन सकै न मारण
होत प्रात यहि बिधित लरिये ❀ आगे आनि शिखण्डी करिये
द्रुपद कुमार अग्र जब ऐहहिं ❀ धनुष डारि हम बदन दुरैहहिं

दो० कन्याते भयो पुरुषतन, जानत हैं सबलोग।
ताते बदन न देखिहौं, प्रथम तज्यो तियभोग॥

सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❀ जब हम अस्त्र डारिकै रहिये
और बीर के शर नहिं फूटहिं ❀ परसत अङ्ग समर शर टूटहिं
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहिं ❀ मेरे उर करिहैं शर चोटहिं
यहि बिधिते भीषम समझायो ❀ सुनिकै धर्मराज सुख पायो
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो ❀ तब भीषम माधवसन कह्यो
दीनबन्धु पारथ के स्वारथ ❀ मेरो बल तुम करत अकारथ
हे प्रभु तीनिलोक के स्वामी ❀ सब जीवन के अन्तर्यामी
अर्जुन धन्य जगत यश छायो ❀ हरिसे सखा सहजहीं पायो
यह कहिकै तब कीन्ह्यो गवना ❀ धर्मराज आये निज भवना
भीषम कह्यो मृत्युको कारण ❀ सुनिहरषितभयोअधमउधारण

दो० धर्मराज पारथ सहित, हरषित पङ्कज नैन।
अमृतभोजनसरिसकरि, सबमिलिकीन्ह्योशैन॥

प्रात होत कीन्हे असवारी ❀ साजे सेन महाबल भारी
दोऊ दल अतिक्रुद्धित साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं
ठोकठोक अपनी गति बोलहिं ❀ मारत हांक पदाति सुडोलहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोटिन गज साजे मतवारे ❋ बाजत घण्टा चमर सँवारे
चले सुभट सब अस्त्रन धारे ❋ क्रुद्धित भये सैन्य ते न्यारे
रणमों करहिं शत्रुको अन्तहि ❋ छनता देखि देहि भुवदन्तहि
सारथि रथ जोते हय चोखे ❋ इन्द्रबिमान परत हैं धोखे
ध्वजा तुरंग सहस फहराने ❋ चलत तेज बांके घहराने
तेज तुरंग बीर सब चढ़्यो ❋ मानहुँ विधि अपने कर गढ़्यो
पांवर लगे सरिस छवि राजत ❋ तवल अपर गजगाह बिराजत
पदचर करत कोलाहल धाये ❋ खड्ग हस्त लै शोभा पाये
समरभूमि केहरि सम गाजे ❋ युद्धभूमि में सरिस विराजे

दो० कुरु पाण्डव चतुरङ्गदल, जुरे आनि कुरुखेत।
क्षत्रीगण सब हांकदै, शारँग गह्यो सचेत॥

सेन गँभीर कहत नहिं आवै ❋ कहै जो कवि सो अपयश पावै
क्रुद्धित बीर लगे शर वर्षन ❋ शतते सहस सहसते कर्षन
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❋ महामारु मयमन्तहि कीन्ह्यो
जस ऐसे क्रोधित गज धावहिं ❋ आगे परहिं सो मारि गिरावहिं
महारथी सब मारहिं अत्री ❋ ध्वजा पताका काटहिं क्षत्री
बरषत बाण कहत को बैनहिं ❋ लक्षण बीर समरकृत सैनहिं
दोऊ दल कीन्ह्यो रण घोरहि ❋ परे भीम दुश्शासन जोरहि
बिंशतिशर दुश्शासन लीन्ह्यो ❋ भीमअङ्ग शरभेदन कीन्ह्यो
क्रुद्धित भयो पवन के नन्दन ❋ धायो उतरि छांड़िकै स्यन्दन
लैकर गदा कोप करि धायो ❋ हांक मारि दुश्शासन आयो

दो० दोऊभट यहिबिधि भिरयो, भारतभूमि प्रमान।
कौतुक देखत देवगण, हरषितचढ़ेबिमान॥

मारत गदा कोप करि तनमें ❋ लागत घाव शब्द जिमि घनमें
शोभित रुधिर अङ्गमें कैसे ❋ ऋतुबसन्त किंशुक तरु जैसे
भीमसेन तब तेज सँभाख्यो ❋ हांकि गदा उर मध्य सो माख्यो
दुश्शासन तन मोह जनायो ❋ अपने रथहि बृकोदर आयो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स द्रोण गुरु शर संधान्यो ❋ भीम अङ्ग शायक ठहरान्यो
भीषण बाण षष्टि गुण जोरे ❋ घायल किये सारथी घोरे
अश्व बाण ते तोस्यो स्यन्दन ❋ आगे भयो सुभद्रानन्दन
अभिमन्यु हाथ तेज शर छूट्यो ❋ भेदि सनाह अङ्ग में फूट्यो
एक बार सारथि शिर खण्ड्यो ❋ चारिबिशिखहयहतिरणमण्ड्यो
कीन्ह्यो बिरथ द्रोण से क्षत्री ❋ अर्जुन पुत्र महाबल अत्री

दो० द्रोण अपरस्यन्दनचढ़्यो, लीन्ह्यो चाप सँभारि ।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मारि ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

भीषमदेव कहन यह लागे ❋ सारथि रथहि चलावहु आगे
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❋ तिनते रण कीजै पुरुषारथ
यह कहिकै हांक्यो रथ जबहीं ❋ असगुनभये बहुतबिधि तबहीं
बोलत काक भयंकर बानी ❋ बिना मेघ बर्षत है पानी
गीध निकर कर ऊपर छायो ❋ जम्बुक अपनो भाव देखायो
उगिलहिं खड्ग छांड़िकैखापहिं ❋ रथके खम्भ पवनबिनु कांपहिं
यह असगुन जब देख्यो नैनहिं ❋ कुरुदल कहनलगे सब बैनहिं
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो ❋ यहिबिधिते कबहूं नहिं देख्यो
सारथि कहै गङ्गसुत आगे ❋ असगुन होन बहुत बिधि लागे
भीषम बिहँसि कही यह बानी ❋ अहो मूढ़ यह बात न जानी

दो० पारथ के सारथि अहैं, निरखहु श्रीभगवन्त ।
असगुनकछुनहिंकरिसकैं, सन्मुख कमलाकन्त ॥

यह कहि भीषम रथहि चलायो ❋ डोली धरणि शेष शिर नायो
सिंहनाद करि हांक सुनायो ❋ मानहुँ जलद घटा घहरायो
क्रोधित ह्वै शारँग कर गह्यो ❋ नमित बचन नर हरिते कह्यो
सावधान हरि जोती गहिये ❋ पारथ की रक्षामहँ रहिये
यह कहि बाण सहस्र प्रहार्यो ❋ अर्जुन के उर मध्य सो मार्यो
दश शर श्याम अङ्ग हत कीन्ह्यो ❋ बिंशतिशर हनुमन्तहि दीन्ह्यो

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपरचारिशरधनुगुण दृढ़किय ❀ धाये नन्दिघोष तुरगन दिय
तब अर्जुन लीन्ह्यो कर धनुशर ❀ युद्ध परस्पर होत भयंकर
दोऊ भट अरुझे रणधरणी ❀ क्रुद्धित शर छांड़त अतिकरणी

दो० यहिबिधिते अर्जुन जुटे, गङ्गतनय के युद्ध।
जलथलभारतभूमिनभ, शरपूरित कृतयुद्ध॥

बाणतजतअतिशययहिकरणी ❀ जिमिजलधरजलबृष्टि सुबरणी
सहस बाण पारथ गुण मोखे ❀ तुरगन हरि हांकत अति चोखे
तीक्षण बाण पाण्डुसुत डास्यो ❀ भीषम अन्तरिक्ष हति पारयो
अपर षष्टि शर कार्मुक धास्यो ❀ ते सब अश्वन के तन मारयो
लगे असी शर कपि के अङ्गन ❀ सत्तरि शर मारयो यदुनन्दन
श्यामअङ्गशोणितछबि छाजत ❀ पीतबरण रँग अरुण बिराजत
जोती गह्यो धन्य अति चापल ❀ बर्षतशरश्रावण जिमिघनजल
यहिबिधि ते शर बरषा कियो ❀ शरके छांह भानु छपिगयो
नन्दिघोष रथ माधव सारथ ❀ बाणबृष्टि ते छायो भारथ
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यो ❀ तब अर्जुन धनु कर दृढ़ लीन्ह्यो
श्रीहरि कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ सहि न जाइ भीषम को भारथ

दो० हांके पग नहिं चलत हय, शर छाये सब अङ्ग।
भीषम के संग्राम ते, रणमें अचल तुरङ्ग॥

अर्जुन जिय बिस्मयकरि मान्यो ❀ महाक्रुद्ध होइ निजधनु तान्यो
देवअस्त्र पारथ तन डाट्यो ❀ गङ्गासुत बीचहि ते काट्यो
अपरबिशिखतीक्ष्ण कर धास्यो ❀ ते शर पारथ के शिर मास्यो
अर्जुनसहित भये घायल हरि ❀ तुरँगथकेन चलतलघुगतिकरि
बरषत बाण बराणि को कहई ❀ पाण्डवदल लक्षणगति लहई
श्रीपति कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ रचहु उपाय तजो पुरुषारथ
यह कहिकै हरि शंख बजायो ❀ सुनिकै नाम शिखण्डी आयो
अर्जुनसों हरि कहन सो लागे ❀ रणमें करहु शिखण्डी आगे
पाछे होइ शारँग कर धरिये ❀ यहिबेधि ते भीषमबध करिये

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

र्जुन कह्यो सुनहु बृषकेतू ❋ कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू
नहिं शिखण्डी आगे आयो ❋ भीषम धनुष डारि शिर नायो

दो० बिना अस्त्र लज्जित बदन, हेरत नीचे नैन।
अस्थिर ह्वै रथपर रह्यो, कह्यो कृष्णसों बैन॥

दीनबन्धु पाण्डव हित कारण ❋ कपटयुद्ध करि चाहहु मारण
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहि ❋ भीषम उर कीन्ह्यो शर चोटहि
पारथबाण कुलिश सम छूटहिं ❋ कवचभेदि भीषमतन फूटहिं
गङ्गासुत यहि बिधिते कह्यो ❋ पै शर नहीं शिखण्डी गह्यो
शर मारत अर्जुन मम हिये ❋ यह बिचार कीन्ह्यो चित दिये
घायल भे कांपत तनु कैसे ❋ शिशिर काल में गोधन जैसे
तब पारथ कृत पुनि संधानहिं ❋ हृदय ताकिकरि मास्यो बानहिं
चरणकमल मनकीन्ह्योध्यानहिं ❋ रसना रटत कृष्ण के नामहिं
रोम रोम यहि बिधि शर मारा ❋ बहै प्रबाह रुधिर की धारा
तीक्ष्ण अपर बिशिख कर धस्यो ❋ ते शर कठिन मौलिपर पस्यो

दो० भीषमको बल थकितभो, मारत अर्जुन तीर।
तिलभरि देह न देखिये, झाझरभयोशरीर॥

रथते गिरे गङ्गसुत धरणी ❋ जगमहँ रही सदा यह करणी
देखत सब कौरवगण धाये ❋ हाहा शब्दाघात सुनाये
द्रोण करण दुश्शासन अत्री ❋ धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री
करुणा करत कहत यह बैनहिं ❋ अहो पितामह राखहु सैनहिं
कुरुपति तबआंड्योनिजस्यन्दन ❋ आये जहँ गङ्गा के नन्दन
सेनापति ह्वै मुकुट बँधायो ❋ आपु कृष्णकर अस्त्र गहायो
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्ह्यो ❋ दोऊबन्धु ब्याह करिदीन्ह्यो
परशुराम ते युद्ध बिचारयो ❋ उठिकै बाण धनुष कर धारयो
रोदनकरि यहिभांति बखानत ❋ बिधिचरित्र कोऊनहिं जानत
मोरे जिय यह बड़ो अँदेशौ ❋ पाण्डव सहित जीतिहौं केशौ
तुम पायो क्षत्री के धर्महिं ❋ यह सब दोष हमारे कर्महिं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो० भीषम घेरे खेतमा, रोवत सबै नरेश।
सबलसिंहचौहानकह, चल्यो आपु हृषिकेश॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

धर्मराज माधव सँग लीन्ह्यो ❋ रथते उतरि गमन तब कीन्ह्यो
अर्जुन और भीम सब राजा ❋ चले पितामह देखन काजा
यहि अवसर गङ्गासुत बोले ❋ सुन्दर अधर मनोहर डोले
शरशय्या सब अङ्ग बिराजै ❋ लटकत शीश भूमिपर राजै
कुरुपति कहो हमारो कीजै ❋ उत्तम भांति शिरहनो दीजै
कोमल तूल पटम्बर भरचऊ ❋ आनि तुरत शिरहानो धरचऊ
तब भीषम भाष्यो यह बानी ❋ दुर्योधन तुम बात न जानी
अर्जुन समय बिचारहु मन में ❋ उचित शिरहनो दीजै तन में
सुनि अर्जुन शारँग कर लीन्ह्यो ❋ तीनि बाण संधारण कीन्ह्यो
सन्मुख ह्वै ललाट महँ मारचो ❋ भेदिशीशशरनिकरिसोपारचो

दो० फोंक बेधि शर पार होइ, गड़्यो भूमिमें आन।
यहिबिधिशरशय्यादियो, भारत के परधान॥

धर्मराज बहु रोदन कीन्हो ❋ भीषमसों कछु कहबे लीन्हो
केवल दुर्योधन के पापहि ❋ परशुराम दीन्हो रण शापहि
ताते भयो मृत्यु को कारण ❋ सन्मुख दरश करहु जगतारण
हँसि भीषम यहिभांति बखानी ❋ साधु नरेश परम सज्ञानी
दक्षिणायन रबि घातक कहिये ❋ ताते शरशय्या मों रहिये
उतरायण रबि होइ हैं जबहीं ❋ करिहौं देहत्याग निज तबहीं
तबलगि क्षत्रिनको बल पेखहिं ❋ भारतयुद्ध नयन निज देखहिं
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं ❋ भीषम कछु भाष्यो उपदेशहिं
अजहुँ कीजिये कहा हमारो ❋ कुरुपाण्डवमिलिप्रीतिबिचारो
बांटि राज्य लीजै दोउ भाई ❋ बसुधा भोग करहु सुख पाई

दो० बिग्रह कुलको अन्त है, अजहुँ कीजिये प्रीति।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाके सखा आपु जगतारण ❀ तासों युद्ध करहु क्यहि कारण
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो ❀ यह प्रण मैं अपने मन गह्यो
सुई अग्र महि देव न औरहि ❀ करौं युद्ध भारत रण ठौरहि
यह सुनिकै भीषम यह कही ❀ हरिकी शरण जाइये सही
जो रणको कुरुपति मन लावहु ❀ करणबीरशिर मुकुट बँधावहु
द्रोण करण सेना अधिकारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी
पारथ नहिं जीतहिं अपने बल ❀ जो नहिं कृष्ण करहिं रणमें छल
जहँ भीषम शरशय्या लीन्ह्यो ❀ तम्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो
गङ्गासुत कीन्हो जब मवनहिं ❀ धर्मराज आये तब भवनहिं

दो० पाण्डवदल आनन्द मन, जीति चले मैदान।
अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान॥

धेनु सहस्र दिये जो दानहिं ❀ जो फल सबतीरथ अस्नानहिं
जो फल होइ साधु के दरशे ❀ जो फल शम्भुनाथ के परशे
जो फल व्रत एकादशि कीन्हे ❀ जो फल होइ भूमि के दीन्हे
जो फल रणमें प्राण गँवाये ❀ जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये
जो फल कोटिन बिप्र जेंवाये ❀ सो फल भारत सुने सुनाये
ब्यासदेव भारत के कर्त्ता ❀ बाढ़ै पुण्य पापके हर्त्ता

दो० रामसिंह गोविन्द हरि, कीजै सदा बखान।
भाषा भीषमपर्व कह, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
भीष्मार्जुनयुद्धवर्णनंनामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

इति भीष्मपर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ द्रोणपर्व ॥

श्रीगुरुचरण दण्डवत करिये ❋ जेहि प्रसाद भवसागर तरिये
बन्दौं रामचरण रघुनन्दन ❋ महाबीर दशकन्ध निकन्दन
दीरघबाहु कमल दल लोचन ❋ गणिका व्याध अहल्यामोचन
व्यासदेव कलियुग अघहरता ❋ चारि बेद श्रीभारत करता
श्रोता जनमेजय गुणसागर ❋ महाबीर कुरुबंश उजागर
बैशम्पायन ऋषिबर ज्ञानी ❋ बक्ता महा सुधारस बानी
सत्रह शत सत्ताइस जाने ❋ गनिसम्बत यहिभांति बखाने
पुनि बुधबार घरी शुभ जाने ❋ जादिन लङ्का राम पयाने
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❋ दशमीतिथि करि ग्रन्थ प्रकासा
उत्तम नगर सुरचना छाजा ❋ भूपति मित्रसेन तहँ राजा

दो० रघुपतिचरण मनाइकै, व्यासदेव धरि ध्यान।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥

जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ ❋ दुर्योधन मन बहुदुख कीन्हेउ
अब काको सेनापति कीजै ❋ जाके बल भारत करिलीजै
कही करण राजा सुनि लीजै ❋ जो मोकहँ सेनापति कीजै
अर्जुन भीम खेत महँ मारौं ❋ सेना सहित न एक उबारौं
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला ❋ नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला
सूर्यपुत्र सेनापति करिहौ ❋ ताके बल पाण्डव सों लरिहौ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ोरे शिर जो मुकुट बँधैये ❋ अबहीं जयतिपत्र नृप पैये
ो सुनि करण क्रोधयुत भयऊ ❋ कम्पितअधर कहन कछु लयऊ
क्षणमहँ तो कहँ सकौं सँहारण ❋ हौं गुरुपुत्र सहौं तेहि कारण
यहसुनि नयनअरुण होइआयउ ❋ लैकर खड्ग कहन मन लायउ

दो० अरध रथी भीषम गनो, कुलहीनो जग जान।
सेनापति तोकहँ किये, क्षत्रिन को अपमान॥

क्रोधित करण खड्ग लै धायउ ❋ पकरि बांह राजा समुझायउ
अहो मित्र अब समय बिचारौ ❋ तजिकै कलह शत्रु संहारौ
सब मिलि यहै मन्त्र ठहरैये ❋ कहौ जाइ तेहि मुकुट बँधैये
कह्यो करण राजा सुनि लीजै ❋ सेनापति गुरुद्रोणहिं कीजै
महारथी अरु अस्त्रहि जानत ❋ कुरु पाण्डव दोऊ दल मानत
सुनि शकुनी के मनमों भायउ ❋ साधु करणहित बात सुनायउ
जयद्रथ कृपरु शल्य ते भाखो ❋ दलकर भार द्रोणशिर राखो
जब जानी सबके मन माने ❋ दुर्योधन सुनि आपु बखाने
गुरू होहु सेनाकर रक्षक ❋ भारत युद्ध करौं परतक्षक
यहकहिआनिमुकुटशिरदीन्हेउ ❋ बहुबिधिबिप्रबेदधुनि कीन्हेउ

दो० कही द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रशुराम।
पांच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❋ मारों सबहिं जान नहिं पावैं
जो अर्जुनहिं जुदा करि पावौं ❋ बांधि युधिष्ठिर नृप लैआवौं
जब गुरुद्रोण कहै अस लीन्हेउ ❋ दुर्योधन प्रति उत्तर दीन्हेउ
जो आपुहि रणको मन लाये ❋ कोटिन अर्जुन मारि गिराये
तुमसों सबहिं सीखिये शायक ❋ पारथ कहा भये यहि लायक
हँसिकै द्रोण कही यह बानी ❋ राजा तुम यह बात न जानी
महारथी जगमों है पारथ ❋ नन्दिघोषरथ श्रीपति सारथ
धनुगाण्डीवअगिनिजेहि दीन्हे ❋ अक्षयत्रोण वरुण सों लीन्हे
सात बर्ष सुरपुरहि सिधाये ❋ देवअस्त्र सब सिखिकै आये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुर बिराट रण कियो भयंकर ❋ बनोबास महँ जीतो शंकर
दो० शरसों सागर बांधिकै, जीति लियो हनुमान।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहिं समान॥
ताते यह उपाय चित धरिये ❋ पारथ बिलग कटकते करिये
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै ❋ यहि कामहिं आज्ञा मोहिं दीजै
परन करत पारथ संग्रामा ❋ लै जैहौं निश्चय निजधामा
चौदह सहस रथी धनुधारी ❋ बंश प्रकाशन के अधिकारी
जो अर्जुन कहँ पीठि दिखावैं ❋ हमसब बास अधोगति पावैं
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो ❋ अपने परम हितूकै जान्यो
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवां ❋ पाण्डव दलमहँ पारथ जहँवां
हरि अर्जुन बैठे यक सङ्गा ❋ कहत कथा भीषम रणरङ्गा
यहि अन्तर इन दर्शन दीन्ह्यो ❋ पारथ उठि सम्भाषण कीन्ह्यो
आदर कै आसन बैठायो ❋ भूप सुशर्मा बचन सुनायो
दो० परन करत पारथ तुम्हें, युद्ध करन के हेत।
करहु और जो चित्त महँ, शपथ कृष्ण की देत॥
पारथ कोपवन्त तब कह्यो ❋ हांकत मोहिं कहसि धनु गह्यो
मानो परन काल्हि रण करिहौ ❋ ह्वै पतङ्ग दीपक महँ परिहौ
यह सुनि भूप सुशर्मा आये ❋ कुरुपति सों सब बात जनाये
प्रात होत दोऊ दल साजे ❋ शब्द अघात दमामे बाजे
गज काछे पर्बत से भारी ❋ पांव जँजीर नयन अँधियारी
रथपर रथी सरिस छबि बनी ❋ जगमगात हीरन की कनी
अरु अनेक असवार महाबल ❋ उदधि समान पियादन के दल
दुर्योधन अस कहिबे लागे ❋ सेनापति द्रोणहि के आगे
सब मिलि एकमतो ह्वै लरिये ❋ बलसों बांधि युधिष्ठिर धरिये
पाण्डव दल आये मैदाना ❋ तब पारथ यहिभांति बखाना
दो० आयसु हमरो सुनिय सब, अब हम करहिं पयान।
सावधान क्षत्री सबै, लरहु द्रोण मैदान॥

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मराय सुनिये कहि पारथ ❋ रणमों द्रोणसरिस पुरुषारथ
तीनिलोक जो अस्त्रहि धरई ❋ गुरू द्रोण सबको बश करई
धनुबिद्या भृगुपति जेहि दीन्ह्यो ❋ आपु समान महारथि कीन्ह्यो
भये द्रोण गुरु सेनाधिपक ❋ महा युद्ध होई परतापक
भीमादिक क्षत्री तेहि कहिये ❋ सावधान नृप के सँग रहिये
शूरसेन है बड़ो धनुर्द्धर ❋ जौलौं रहै गहे शारँग शर
तौलगि नृप रण को मन दीजै ❋ नातरु गवन भवन को कीजै
हम अब जाहिं युद्ध के कारण ❋ शिशपकागण करहिं सँहारण

दो० अस कहिकै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान ।
दश योजन दक्षिण दिशा, समर केर मैदान ॥

नन्दिघोष रथ देखन आये ❋ सेना सहित सुशर्मा धाये
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे ❋ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे
तब अर्जुन मारे तीक्षण शर ❋ होन लगी अतिमारु परस्पर
शिशपकागण के शर छूटहिं ❋ मानहु बज्र गगन ते टूटहिं
अर्जुन सों लोहा उत बाजो ❋ इतहि द्रोण गुरु सेना साजो
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांधे ❋ युगल तुणीर बिराजत कांधे
शीश टोप हाथन दस्ताने ❋ जनु बानरगण सों अनुमाने
बख्तर झलकैं जोशन राजैं ❋ जिरह मेखला सरिस बिराजैं
चौमा चारु आनि कै दीन्हे ❋ गदा लयो साजहि दृढ़ कीन्हे
भूरिश्रवा करण सम क्षत्री ❋ कृतवर्मा अश्वथामा अत्री

दो० कोऊ काञ्चन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरङ्ग ।
दुर्योधन रथ साजिकै, शतभाइन लै सङ्ग ॥

श्याम तुरंग द्रोण रथ जोरे ❋ पवन बेग वे चारिउ घोरे
जानत हैं सारथि के मनकी ❋ बढ़त चलत तकि छाय सुतनकी
पाखर करी समे छबि छाजे ❋ हंस ग्रीष्म उल्लास बिराजे
चारिउ चरण नालकी चमकनि ❋ ज्यों घन में दामिनि सी दमकनि
आगे कुञ्जर शोभा पाये ❋ प्रावृट मेघ भूमि पर आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चमर ढरत चौरासी बाजत ❋ श्वेतदशनअतिसरिसबिराजत
फेरत फरी खड्ग कर चमकत ❋ पग के भार मेदिनी धमकत
ता पाछे असवारन को दल ❋ शेल सांग कर लिये महाबल
कोटिन रथी महाबल भारी ❋ क्षत्री शूर बड़े धनुधारी

दो० महारथी सब साथ लै, कीन्हो द्रोण पयान।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपिगे भान॥

पाण्डव दल आये मैदानहिं ❋ आगे भीम गहे धनुबानहिं
कुञ्जर सों कुञ्जर लै जोरहिं ❋ दशनघाव मुख नेकु न मोरहिं
ठोकर अरु बृषोरसों मारहिं ❋ गहिकर शुण्डरथहि फटकारहिं
पैदर सों पैदर अरुझाने ❋ महाबीर सब बांधे बाने
असवारहि असवार प्रचारहिं ❋ सन्मुख जुरत खड्ग शिरझारहिं
लैकर धनुष रथी रण मण्डे ❋ बाणन ते अरिसैन्य बिहण्डे
आगे द्रोण पेलि रथ आये ❋ कृपा करण क्रोधित ह्वै धाये
भूरिश्रवा अलम्बुष क्षत्री ❋ जान्यो कृतबर्मा से अत्री
भीमसेन औ द्रोण हि भारथ ❋ महायुद्ध कीन्हो पुरुषारथ
भूरिश्रवा सात्यकिहि दोऊ ❋ लड़त हारि मानत नहिं कोऊ

दो० करणसाथ अभिमन्युभिर, कीन्हेउ शरसंधान।
द्रुपद राउ जयदर्थ सों, महाभूरि मैदान॥

कृपसों नकुल करहिं संग्रामा ❋ दोऊ बीर युद्ध जय कामा
भूप बिराट सुशर्मा क्षत्री ❋ उतर कुमार अलम्बुष अत्री
धृष्टद्युम्न कृतबर्मा सङ्गा ❋ शकुनी सहदेवहि रणरङ्गा
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❋ जुरे शिखण्डि गहे शारँग शर
घटउत्कच कीन्हो रण ठाना ❋ शल्य नरेश संग मैदाना
काशिराज जम्भन को भारथ ❋ कीन्हो खेत महापुरुषारथ
पांच कुमार द्रौपदिहि जाये ❋ ते शशिबिंदु युद्ध अरुझाये
जोर जोर अरुझे सब जबहीं ❋ धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं
अतिप्रचण्ड धनुशर कर लीन्हे ❋ तीक्षण बाण फोंक शर दीन्हे

CC-0. Vinay Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० पेलि फौज आये तहां, जहां धर्म सों राज।
सबलसिंह चौहान कह, द्रोण कियो यह काज॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सेना सहित द्रोण जब आये ❀ धर्मराज कहँ देखन पाये
परी भीर राजा पर जाने ❀ शूरसेन तब शारँग ताने
धर्मराय कहँ पाछे घाल्यो ❀ क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो
बहुविधि बाणबुन्द झरिलाये ❀ तीन सहस रथ मारि गिराये
बहुरि अनेक चलाये साँगी ❀ कुञ्जर गिरे सहित चौराँगी
हय पैदल जो आगे पाये ❀ शूरसेन सब मारि गिराये
अटकी अनी देखि जब पाये ❀ तब गुरु द्रोण क्रोधकै धाये
आठ बाण तीक्ष्ण कर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीशपर कीन्हे
शूरसेन शर सबहि सँभारे ❀ बाण पचीस द्रोण उर मारे
महावीर दोउ बड़े धनुर्द्धर ❀ होनलागि तब मारु परस्पर

दो० शूरसेन नृप द्रोणसों, भयो जोर मैदान।
जलथलभारतभूमि सब, शर छायो असमान॥

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे ❀ रथ के चारि अश्व संहारे
सारथि युद्धखेत महँ आये ❀ रथते उतरि शैल लै धाये
तबहिं शैल नृप करते छूट्यो ❀ लाग्यो बाण बीचते टूट्यो
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे ❀ क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शर मारे
टूटि शीश धरणी पर पर्‍यो ❀ झलकत मुकुट जरायन जर्‍यो
शूरसेन जूझे मैदाना ❀ धर्मराय लीन्हो धनु बाना
दश शर भूप क्रोध करि छांटे ❀ ते गुरु द्रोण बीचही काटे
लगे द्रोणगुरु मनहिं बिचारन ❀ धर्मराय बधिये केहि कारन
रुधिर परे वसुधा सब जरई ❀ अर्जुन सुनै प्रलय पुनि करई
ताते गहि बन्धन अब कीजै ❀ दुर्योधन आगे करिदीजै

दो० अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ।
धर्मराय रथ तजि भजे, रहा न कोऊ साथ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि द्रोण राजा कहँ लीन्हे ❀ डारहि पाश चित्त महँ कीन्हे
अब यह कथा तहां चलि आई ❀ पारथ सों जहँ होत लड़ाई
जब तिन कीन्हो शर संधाना ❀ तब श्रीहरि यह बात बखाना
अर्जुन मेरो जिय गहवरयो ❀ धर्मराज पर संकट पर्यो
मारहु बाण गहरु केहि काजा ❀ बांधत द्रोण युधिष्ठिर राजा
अर्जुन नयन अरुण ह्वै आये ❀ मनव्यापक शर तुरत चलाये
धावहु बाण बिलम्ब न लावहु ❀ संकट ते धर्मजहि छुटावहु
द्रोण गुरू कर पाश उठाये ❀ तेहि अन्तर पारथ शर आये
बाण उदोत होत हैं कैसे ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसे
दोऊ कर भेदन शर कर्यो ❀ नागपाश धरणी गिरिपर्यो

दो० दश शर लाग्यो द्रोणउर, भेदन कीन्हो अङ्ग।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरङ्ग॥

अर्जुन बाण द्रोण जब लेखो ❀ गरुड़ पक्ष शर माथे पेखो
कनक फोंक लागे बहु दामा ❀ अङ्कित है पारथ को नामा
देखत बाण जानि गुरु मनमों ❀ पारथ फिरि आयो यहि रनमों
तबहिं द्रोण फिरि कीन्हों गवना ❀ धर्मराज पहुँचे निज भवना
कौरव दल जो खेतहि पाये ❀ चल्यो चल्यो करि अर्जुन आये
फिरे द्रोण लीन्हे सब सैना ❀ कुरुपतिनिरखिकह्यो तब बैना
धर्मराय कहँ बांधन धाये ❀ काह गुरू फिरिकै तुम आये
सुनि तब द्रोण कहै मनलाये ❀ ग्रसे हते अर्जुन शर आये
अर्जुन शर ते चेत न धर्यो ❀ करते पाश भूमि गिरिपर्यो
सन्ध्या जानि किये तब गवना ❀ कुरु पाण्डव आये फिरि भवना

दो० उभय सैन कुरु पाण्डव, सब आये निज धाम।
अर्जुन सावकाश नहिं, राति दिवस संग्राम॥

कुरुपति तबहिं द्रोण पहँ आये ❀ बैठि बात यहि भांति जनाये
सबके गुरु तुम बीर महाबल ❀ पाण्डव नाश कहा करिये छल
जो आपुहि रण को मन दीजै ❀ रणहिं पांच पाण्डवबध कीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मराय सों बैन ।
चक्रब्यूह रण नहिं सुनो, काहु न देखो नैन ॥

जब बीरन यहि भांति जनाये ❋ सुनिकै धर्मराज दुख पाये
हरि रचना यह कीन्ह्यो भारथ ❋ सब उद्यम अब भयो अकारथ
चारि बन्धु सेना सब सङ्गा ❋ पारथ बिना भयो रण भङ्गा
भाष्यो भूप देखि सहदेवा ❋ जानत कोउ ब्यूह का भेवा
सो सुनिकै सहदेव बखानी ❋ तीनि बिना चौथो नहिं जानी
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई ❋ की प्रद्युम्न यह जान लराई
भूप युधिष्ठिर कहिबे लीन्हे ❋ शिशपका गण मोहिं दुखदीन्हे
भूप सुशर्मा द्रोण पठाये ❋ छलकै अर्जुन को अटकाये
जब राजा हिय शोक जनाये ❋ सभामध्य अभिमनु तब आये
दोउ करजोरि कहा तब राजहिं ❋ आपु शोच कीजै केहि काजहिं

दो० चक्रब्यूह रचि द्रोण गुरु, कियो चहत संग्राम ।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो बिधाता बाम ॥

अभिमनु कही सुनो तुम राजा ❋ अब बिलम्ब कीजै केहि काजा
ब्यूह भेद मैं जानत अहऊं ❋ सो बृत्तान्त आपुते कहऊं
छहौं द्वार भेदन कर ज्ञाना ❋ सतवां द्वार भेद नहिं जाना
यम अरु इन्द्र बरुण जो रक्षक ❋ छहौं द्वार तोरौं परतक्षक
सतवां द्वार भेद नहिं जाना ❋ सुनि राजा यहि भांति बखाना
भीमादिक कोउ भेद न पाये ❋ ब्यूह युद्ध केहि तुमहिं सिखाये
अभिमनु कही भूप के पासा ❋ कीन्हे जबहिं गर्भ हम बासा
प्रसव काल माता दुख पाई ❋ तबहिं पिता यह ब्यूह सुनाई
पारथ कही सुभद्रा आगे ❋ गर्भ मांझ सुनिबे हम लागे
छठौं द्वार को भेद बखाना ❋ सो हम सब अपने जिय जाना

दो० सातों द्वारके कहतही, हम लीन्हें अवतार ।
गीत नाद आनन्दते, मगन भये परिवार ॥

ताते अपर भेद नहिं पाये ❋ सत्यवचन नृप तुम्हें सुनाये

CC-0. New Delhi Digital Library of India. Digitized by eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम्हैं कवन बिधि आज्ञा दीजै ❀ ब्यूह युद्ध बीरन ते कीजै
पन्द्रह बर्ष बीर सुकुमारा ❀ तुम हमसबके प्राण अधारा
सुनिअभिमनुयहिभांतिबखाना ❀ नृप हम कहँ बालककरिजाना
अर्जुन पुत्र सहोद्रा नन्दन ❀ आजु करौं नृपसैन निकन्दन
द्रोण कर्ण सब बीर घनेरे ❀ आजु देखिहहु भुजबल मेरे
मारि सबै सरदार गिरावों ❀ तब अर्जुन को पुत्र कहावों
बांधौं भुजबल बली पुरन्दर ❀ सेना उदधि होइ किमि मन्दर
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलैहौं ❀ शोणित नदी अथाह बहैहौं
शोच करत नृप आपु अकारथ ❀ अब देखौ मेरो पुरुषारथ

दो० भीमसेन ऐसी कही, राजा सुनहु बिचार।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवां मो शिर भार॥

क्षत्री सबहि अस्त्र गहि हाथा ❀ पेलि जाहिं अभिमनु के साथा
सतवां द्वार पलक महँ मोरौं ❀ गदा घाव सों पर्बत फोरौं
भीमसेन यहि भांति बखाने ❀ सो सुनि धर्मराय मनमाने
साजेउ सेन दमामा बाजे ❀ बांधे अस्त्र बीरगण गाजे
भांति भांति बैरख फहराने ❀ सुर बिमान को खोज उड़ाने
आगे कुञ्जर शोभा पाये ❀ सावन मेघ उनै जनु आये
चारौं पाट बहत मदधारा ❀ जिमि झरना जल बहै पहारा
श्वेत दशन कबि किये बिचारा ❀ कज्जल गिरि जनु गङ्गकि धारा
अंकुशलगे चलत गज ठनकत ❀ ठोकर पाँव लगत हय हनकत
नयनन मों दीन्हीं अँधियारी ❀ देखत रूप शत्रु भयकारी

दो० तुङ्गस्थल अतिक्रोध में, राजत ऊर्ध्व भुशुण्ड।
भूमि भ्रमै पर्बत मनहुँ, भये झुण्ड के झुण्ड॥

तेहि पीछे पैदल दल राजै ❀ बिबिध अस्त्र करमाहँ बिराजै
चले अश्व असवार फँदावत ❀ नृत्यकरत मानहुँ नट आवत
चले सारथी सब रथ हांकत ❀ युद्ध हेत क्षत्री रण डांकत
सैन सहित योजित रथ आये ❀ चक्रब्यूह जहँ द्रोण बनाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनु अभिमनु पारथ नहिं आयो ❀ ब्यूहभेद कहँ तुमहिं पठायो
अभिमनु सुनि प्रतिउत्तर दीन्ह्यो ❀ बालककरि तुम हमकहँचीन्ह्यो
दृढ़ कै गहहु ब्यूह द्वारो थल ❀ बूझि देखिहौ बालक को बल
ब्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो ❀ कोपि करण तब बाण चलायो
सहस बाण अर्जुनसुत छांड्यो ❀ सब शर अन्तरिक्षमहँ काट्यो
तासे कीन्हो सेननिकन्दन ❀ क्रोधित भये देव रविनन्दन
तीक्ष्ण बाण करण गुण जोरे ❀ सो अभिमनु सब बीचहि तोरे
दिब्य बाण अभिमन्यु चलायो ❀ भूमिअकाश दशहुँदिशि छायो
देखि अनीक सबहिं भ्रम भयऊ ❀ तौ लगि ब्यूह भेदिकै गयऊ

दो० पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागी बार।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य सरदार॥

आये अभिमनु सबहिं पुकारे ❀ कृपाचार्य तब धनुष सँभारे
महायुद्ध कीन्ह्यो पुरुषारथ ❀ तेहि क्षण भयो अनेकन भारथ
पुनि अनेक सेना बध कीन्ह्यो ❀ रुण्डमुण्डकछुजात न चीन्ह्यो
कृपाचार्य क्रोधित शर जोरे ❀ ते अभिमनु बीचहि सब तोरे
अपर पांच शर मार्यो लै जब ❀ चेत न रह्यो भयो घायल तब
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो ❀ द्रोण पुत्र तब देखन पायो
कर धनुशर गहिकै कत आवत ❀ मारु मारु कहि हांक सुनावत
अश्वत्थामा लीन्हेउ शर कर ❀ जलधरसम लागेउ बर्षहिं शर
क्रोधित होइ सहोद्रानन्दन ❀ क्षणमहँ कीन्हो सेननिकन्दन

दो० अर्जुनसुत अरु द्रोणसुत, परो आनि जब जोर।
रण करकश दोऊ सरस, भयो युद्ध अतिघोर॥

तब अभिमन्यु कीन्ह संधाना ❀ हृदय ताकि मार्यो दश बाना
एक बाण याबिधि ते छूट्यो ❀ काटो धनुष सहित गुण टूट्यो
औरौ साठि सहस शर मारे ❀ तिन बाणन सब सेन सँहारे
जबलगि द्रोणी धनुष चढ़ाये ❀ पेलि द्वार अभिमनु तब आये
पँचवां द्वार पेलि जब गयऊ ❀ छठयें द्वार उपस्थित भयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभिमनु जब आगे हांको रथ ❀ भूरिश्रवा आइ रोंकेउ पथ
या बिधि बाण बुन्द झरिलायो ❀ रथ समेत अभिमन्यु छिपायो
इन्द्रअस्त्र अभिमनु तब छांड्यो ❀ सब शर निमिष एक महँ काट्यो
बाण काटि शर किये प्रकाशा ❀ जिमि प्रचण्डरबिउयोअकाशा

दो० सहसबाणयहिबिधिहनो, रह्यो न तनु में चेत।
पैलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत॥

सतयें द्वार आइ अरुझान्यो ❀ जासु प्रबेश भेद नहिं जान्यो
दुर्योधन सेना सँग भारी ❀ तीस सहस नृप छत्र के धारी
ते सब बीर आनि कै घेरे ❀ मारु मारु दुर्योधन टेरे
रथ पर शर बर्षत हैं कैसे ❀ मन्दर शीश बृष्टिजल जैसे
महारथी सब मेघ समाना ❀ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना
धनु टंकोर मेघ की गर्जनि ❀ खड्गछटा दामिनि की तर्जनि
शक्ति शूल बीरन कर छूटत ❀ मानहुँ बज्र गगन ते टूटत
महामारु क्षत्रिन जब कियऊ ❀ तब अभिमन्यु क्रोधतनु भयऊ
जो शर अर्जुन आपु सिखाये ❀ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये

दो० सब शर काटे निमिष महँ, सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखा समेत॥

सम्मुख सेन दृष्टि जो आई ❀ क्षणमहँ अभिमनु मारि गिराई
फौज मध्य अभिमनु है कैसे ❀ मृगदल महाकेशरी जैसे
हय गज रथ पैदर संहारे ❀ भूप अनेक खेत महँ मारे
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये ❀ कर्ण समेत बीर सब आये
सब मिलि घेरि लगे शर मारन ❀ एक बीर इत उतै हजारन
सारथि कही कुँवर सों बचना ❀ युद्ध अधर्म द्रोण की रचना
एक एक ते उचित लड़ाई ❀ यह अनीति हम देखी भाई
इत अभिमनु है एक जुझारा ❀ उत आये लाखन सरदारा
चहुँदिशिबाणबुन्दझरिलावहिं ❀ कहोकवनिदिशिरथहिचलावहिं
सुनि अभिमनु भाष्यउ यह बानी ❀ सारथि तुम यह बात न जानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० चक्रव्यूह भीतर परे, शत्रुहि कीजै नाश।
आनि परी शिरआपने, छांडु बिरानी आश॥

सुनु सारथि अब शोचन करिये ❀ सन्मुख सब योधन सों लरिये
चाक कृत्य तुम रथहि घुमैये ❀ चहूँ ओर हम बाण चलैये
सारथि रथ हांको तब बांको ❀ जैसे चलत कुम्हार को चाको
द्रोण कर्ण जेतिक हैं आगे ❀ शत शत बाण सबन के लागे
सारथि तनु दश दश शर मारे ❀ दै दै शर आसन परिहारे
पांच पांच शर हस्ति बिदारे ❀ एक एक शर पैदल मारे
अर्जुन सुत याबिधि शर खाचो ❀ घायल सबहि एक नहिं बाचो
क्रोधवन्त होइ कुरुपति धाये ❀ सब बीरन सों बचन सुनाये
बालक एक करत संग्रामा ❀ तुम सबको पाल्योंकेहि कामा

दो० सब मिलिमारौ घेरि रथ, गहरु करहु केहि काज।
शिशुहोइ सेना बधतु है, आवत तुम्हैं न लाज॥

सुनिकै द्रोण कहन अस लागे ❀ दुर्योधन भूपति के आगे
यह अर्जुनसुत बड़ो धनुर्द्धर ❀ जबलगि धनुष रहै याके कर
महारथी जो कोटिन आवैं ❀ यहि ते जयतिपत्र नहिं पावैं
अर्जुन सम अभिमनु धनुधारी ❀ प्रलयसमय जैसे त्रिपुरारी
कही द्रोण दुर्योधन राजहि ❀ पक्षी युद्ध जीति किमि बाजहि
गज अनेक जो मारन आवैं ❀ एक सिंह की सरि नहिं पावैं
जो वाको धनु काटत कोई ❀ तौ रण में अभिमनु बध होई
अस सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ करणादिक आगे चलि आये
सेन मध्य अभिमनु है कैसे ❀ क्षीरसिन्धु महँ मन्दर जैसे

दो० अर्जुनसुत अति क्रोधकै, छांड़े तीक्षण बान।
या बिधि सेना बधकिये, जिमिलङ्का हनुमान॥

सब मिलि एक मतो ह्वै धाये ❀ रथहि घेरि चहुँदिशि ते आये
बहुतक कोपि बाण सों मारे ❀ शेल शूल मुद्गर परिहारे
जो शर कृष्णराय सों पाये ❀ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ताते अस्त्र भये क्षय कैसे ❀ तिमिर जाइ देखत रवि जैसे
जूझि गिरे कुञ्जर मतवारे ❀ रथ सारथि अश्वन संहारे
अभिमनु कीन्ही है यह करणी ❀ रुण्डमुण्ड तोपी सब धरणी
देखत कर्ण क्रोध जिय कीन्हे ❀ दैकर हांक धनुष कर लीन्हे
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा ❀ अभिमनु जारि करेउ धरिछारा
बरत अग्नि चलिभा तब जारन ❀ प्रकटीं शिखा हजार हजारन
तब अभिमनु जलबाण चलाये ❀ क्षण भीतर सब अग्नि बुझाये

दो० अग्नि बुतायो नीरसों, बाढ़ी जल की धार।
कौरव दल बूड़नलगे, चहुँ दिशि परी पुकार॥

रविसुत मारुत बाण चलायो ❀ पवन तेज सब नीर सुखायो
अभिमनु तज्यो सर्पकर बाना ❀ नागन कियो पवन सब पाना
डसि धाये तब बिषधर कारे ❀ याबिधि बहुत सेन संहारे
बरहि बाण तब करण चलाये ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाये
अभिमनु क्रोधवन्त होइ रन में ❀ मारे बाण कर्ण के तन में
अपर साठि शर छांड़े पायल ❀ ताते भये द्रोण गुरु घायल
कृपके हृदय बाण दश मारे ❀ असी बाण द्रोणहि परिहारे
अपर पांच शर भालुक छूटे ❀ भूरिश्रवा हृदय महँ टूटे
ताते धनुष पन्थ सुत अत्री ❀ मोहित भे दुश्शासन क्षत्री
मारे बाण काल के आके ❀ काटे रथ के ध्वजा पताके

दो० सात लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझि गिरे मैदान।
जिमिबर्षतजलधरजलहि, इमि बर्षत ते बान॥

अभिमनु कीन्हो सेन निकन्दन ❀ क्रोधितभये आपु रविनन्दन
पांच बाण तीक्षण कर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्हे
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े ❀ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ़े
दै गुण फोंक बाण परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे
बिरथ भये कर्णहि जब जाने ❀ तब गुरु द्रोण शरासन ताने
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये ❀ अश्वत्थाम कृपा तब आये

CC-0. Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुश्शासन सब बन्धुन लीन्हे ❀ महामारु अभिमनु सों कीन्हे
रथी महारथि पैदल हाथी ❀ अभिमनु एक न दूजो साथी
कर्ण बीर रथ पर चढ़ि आये ❀ सब मिलि बाणबृष्टि झरि लाये

दो० उत सेना सरदार सब, इत अर्जुनसुत एक।
सबै बीर घायल किये, अभिमनु राखी टेक॥

कुरुपतितबहिं क्रोधअति कीन्हे ❀ मारु मारु कै आज्ञा दीन्हे
सुनिकै कर्ण बाण कर लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे
जो शर परशुराम ते पाये ❀ क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये
दैकै हांक बाण तब छांटे ❀ करते धनुष कुँवर को काटे
टूटो धनुष कुँवर तब डारे ❀ करगहि शक्ति तबहिं परिहारे
तब अभिमनु अस कहा बुझाई ❀ देखि तुम्हारि अधर्म लराई
तुम हम ऊपर बाणहिं छांटे ❀ बीचहि कर्ण धनुष मम काटे
यह कहि कुँवर शक्ति परिहारे ❀ कर्णहिं हृदय ताकिकै मारे
मूर्च्छित किये कर्ण ते क्षत्री ❀ अर्जुनपुत्र महाबल अत्री
बिनु धनुपाणि कुँवर को पाये ❀ घेरि बीर सब निकटहि आये

दो० अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगगण के यूथमहँ, डरत न केहरि एक॥

लैकै शूल कियो परिहारा ❀ बीर अनेक खेत महँ मारा
जूझी अनी भभरि कै भागे ❀ हँसिकै द्रोण कहन अस लागे
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर ❀ सब क्षत्रिन महँ बड़ो उजागर
धन्य सहोद्रा जग में जाई ❀ ऐसे बीर जठर जनमाई
धन्य धन्य जग में पितु पारथ ❀ अभिमनु धन्य धन्य पुरुषारथ
एक बीर लाखन दल मारे ❀ अरु अनेक राजा संहारे
धनु काटे शङ्का नहिं मनमों ❀ रुधिर प्रबाह चलत सब तनमों
यहि अन्तर बोले कुरुराजा ❀ धनुष नाहिं भाजत केहि काजा
एक बीर को सबै डरत हैं ❀ घेरि क्यों न रथ धाइ धरत हैं
बालक देखु करी यह करणी ❀ सेना जूझि परी सब धरणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० दुर्योधन या बिधि कह्यो, कर्ण द्रोण सों बैन।
बालक सब सेना बधी, तुम सब देखत नैन॥

यह कहिकै दुर्योधन आये ❋ शब्द बीर आगे ह्वै धाये
क्षत्री घेरो अभिमनु रणमों ❋ मानहुँ रबि आच्छादित घनमों
लैकै खड्ग फरी गहि हाथा ❋ काट्यो बहु क्षत्रिन को माथा
अभिमनु धाइ खड्ग परिहारा ❋ सम्मुख ज्याहि पावै त्याहि मारा
भूरिश्रवा बाण दश छांटे ❋ कुँवर हाथ को खड्गहि काटे
तीनि बाण सारथि उर मारे ❋ आठ बाण ते अश्व सँहारे
सारथि जूझि गिरे मैदाना ❋ अभिमनु बीर चित्त अनुमाना
यहि अन्तर सेना सब धाये ❋ मारु मारु कै मारन आये
रथको खैंचि कुँवर कर लीन्हे ❋ ताते मारु भयानक कीन्हे
अभिमनु कोपि खम्भ परिहारे ❋ यक यक घाव बीर सब मारे

दो० अर्जुनसुत इमिमारुकिय, महाबीर परचण्ड।
रूप भयानक देखियतु, जिमियमलीन्हेदण्ड॥

क्रोधित होइ चहूंदिशि धाये ❋ मारि सबै सेना बिचलाये
यहिबिधि किये भयानक भारथ ❋ साहस धन्य धन्य पुरुषारथ
ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हे ❋ दश सहस्र राजा बध लीन्हे
मारि सबै राजा बिचलाये ❋ करलै गदा कुरूपति धाये
शतबान्धव नृप संगहि आये ❋ अरु अनेक राजा मिलि धाये
चहुँदिशि महारथी सब घेरे ❋ क्षत्री सबै बीर बहुतेरे
नाना अस्त्र सबहिं परिहारे ❋ निकट न जाहिं दूरि ते मारे
दुर्योधन कहँ देखन पाये ❋ गहे खम्भ अभिमनु तब धाये
जुरे बीर क्षत्री बहुतेरे ❋ खम्भ घाव ते बधेउ घनेरे
जब नरेश के निकटहि आये ❋ द्रोण गुरू दश बाण चलाये

दो० गुरू द्रोण अतिक्रोध कै, मारे बाण अचूक।
कुँवर हाथको खम्भ तब, काटि कियेदुइटूक॥

खम्भ कटे अभिमनु भे कैसे ❋ मणिबिनुफणिकबिकलजगजैसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रोधित भये सहोद्रा नंदनु ❀ चरणघात कै तोरेउ सो धनु
रथते कूदि कुँवर कर लीन्हे ❀ चका उठाय रणहि शुभकीन्हे
चका कुँवर कर शोभित कैसे ❀ हरि कर चक्र सुदर्शन जैसे
रुधिर प्रबाह चलत सब अङ्गा ❀ महाशूर मन नेकु न भङ्गा
गहिकै चका चहूं दिशि धावै ❀ जेहि पावै तेहि मारि गिरावै
दुर्योधन पर चका चलाये ❀ गदा रोंपि कुरुनाथ बचाये
क्षत्री घेरि लगे शर मारन ❀ जुरे आइ केते हथियारन
दुश्शासन सुत गदा प्रहारे ❀ अभिमनु के शिर ऊपर मारे
जूझे कुँवर परे तब धरणी ❀ जगमहँ रही सदा यह करणी

दो० धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहौ मैदान ।
पै गुरु द्रोण मलीन मुख, कहे बचन परिमान ॥

गुरू द्रोण यहि भांति बखाने ❀ हर्षि नरेश सबै सुख माने
अभिमनु मरण सुनैगो पारथ ❀ करिहै महाभयानक भारथ
इन्द्र वरुण यम होयँ सहायक ❀ कइ नहिं अर्जुनजितिबेलायक
भीमादिक यह युद्ध बिचारे ❀ पै जयदर्थ सबहि शर मारे
क्रोधित भये पाण्डु के नन्दन ❀ फेंको सिन्धुराज को स्यन्दन
गिरे दूरि उठि निकटहि आये ❀ भीम उपर शत बाण चलाये
धर्मराय तब कीन्ह दरेरो ❀ पै जयदर्थ मारि मुख फेरो
लै अनीक सब कुरुपति धाये ❀ जहँ जयदर्थ लरत तहँ आये
कौरवदल जय शंख बजाये ❀ अभिमनु गिरे भूमि सुनि पाये
धर्मराय सुनि मौनहि गहेऊ ❀ सन्ध्या भयो युद्ध तब रहेऊ

दो० कुरुपाण्डव फिरिकै चल्यो, भयो युद्धको शेश ।
भीमादिक क्षत्री सबै, रोदत धर्मनरेश ॥

हाहा अभिमनुअभिमनु भाखेउ ❀ देखे बिना प्राण किमि राखेउ
सुत सपूत तोसों नहिं पावों ❀ अर्जुन को किमि बदन देखावों
रोवत भीम नकुल अरु मन्त्री ❀ सेना सबै महाबल क्षत्री
रोवत सबै भवन कहँ आये ❀ ऊर्ध्वबाहु केशहि छिटकाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभिमनु कहिकै सबै पुकारत ❋ दोऊ हाथ शीश पै मारत
अन्तःपुर पहुँची यह बानी ❋ श्रवणन सुनी सहोद्रा रानी
कुन्ती सुनत महादुख पाई ❋ रोदन करत शूल उर छाई
सुनत सहोद्रा जननी कैसे ❋ बिना जीव कठपुतरी जैसे
बहत प्रबाह नयन को पानी ❋ हिमऋतु मनो कमल कुँभिलानी
हा हा पुत्र परम सुखकारी ❋ सुन्दर मुख पै मैं बलिहारी

दो० पुत्र शोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत।
नयन नीर कज्जल सहित, मनो तिलाञ्जलि देत॥

जो तुम्हरे पितु होते सङ्ग ❋ तुमसों को जीतत रणरङ्ग
कुन्ती सहित द्रौपदी रानी ❋ बहत प्रबाह नयन भरि पानी
करुणा करहि ठोंकिकै माथा ❋ रत्न गये पैये नहिं हाथा
यह सुधि सुनि बैराट कुमारी ❋ बारह बर्ष बयस सुकुमारी
पति जूझे रण सुनिकै मर्यो ❋ मानहुँ शोक समुद्रहि पर्यो
कहां गयो प्रीतम सुखदायक ❋ चकाब्यूह के भेदनलायक
जूझे खेत जगत यश लीन्हे ❋ जयमाला सुरकन्यन दीन्हे
तुम सुरपुर बिलसहु सुकुमारा ❋ म्वहिं अनाथ को नाथ बिसारा
हे स्वामी म्वहिं दरशन दीजै ❋ नातरु संग आपने लीजै
पांच मास मम भये बिवाहा ❋ बिधि यहि समय बिछोहा नाहा

दो० लग्न ब्यास गनि थापेऊ, दाता त्रिय बैराट।
अर्जुनसुत बर कृष्णहित, बिधि दुख लिखा ललाट॥

यह सुनि रोइ उठीं दुख बानी ❋ कुन्ती सहित द्रौपदी रानी
ठोंकि ललाट कर्म बिधि सोये ❋ सुनि दुख पशु पक्षी सब रोये
करुणा कर सब रानिन जाई ❋ उत अर्जुन ने रची उपाई
पारथ ब्रह्म अस्त्र परिहारे ❋ रणमा शिशपकागण मारे
जय करि कह कीजै हरि गवना ❋ हांको रथ जैये त्रियभवना
आजु चित्त कछु चञ्चल मेरे ❋ ताते उपजत शोच घनेरे
बाम आंखि बायों भुज फरकै ❋ जिय अकुलात चहत हिय दरकै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मीहरि सुनि यहिभांति बखानो ❀ मोरहु जिय अब है अकुलानो
की गुरु द्रोण सूझ क्षत करयो ❀ धर्मराय पर संकट परयो
सब जानत हैं अन्तरयामी ❀ अभिमनुमरणकहो नहिं स्वामी

दो० हांको रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरङ्ग ।
अशकुन देखो पन्थ महँ, भा पारथ मनभङ्ग ॥

आतुर ह्वै चलि आये तहँवां ❀ रोदन करत भूमिपति जहँवां
चलत प्रवाह अश्रु हैं नयना ❀ अर्जुन कही कृष्णसों बयना
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव ❀ नहिं जानत बिधि कीन्हो काधव
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां ❀ रोदन करत सबै हैं जहँवां
अभिमनु नाहिं सभामहँ देख्यो ❀ जूझ्यो पुत्र सत्य करि लेख्यो
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना ❀ अभिमनु कहाँ न देखहुँ नयना
धर्मराज सब बात सुनाई ❀ अकथकथा बिधिकी प्रभुताई
चक्राव्यूह गुरु द्रोण बनाये ❀ दुर्योधन कहि दूत पठाये
भेदहु व्यूह आनिकै लरिये ❀ नातौ हारि गवन बन करिये
सो सुनिकै हम बहुदुख कीन्हेउ ❀ सब क्षत्रिन को आज्ञा दीन्हेउ

दो० व्यूह भेद जानहिं नहीं, कहहिं सबहिं परिमान ।
सब क्षत्री हिय हारिगे, अभिमनु लीन्हो पान ॥

बहुत भांति मैं कहि समुझायो ❀ अभिमनुकैसहु मनहिं न आयो
छहों द्वार तोरौं सतिभावा ❀ सतवां को रण मोहिं न आवा
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ ❀ सतवां द्वार भार मम गहेऊ
सो सुनिकै साजी हम सयना ❀ चक्राव्यूह देखत तब नयना
देखत सबहि अचम्भव भयऊ ❀ अभिमनु व्यूह भेदिकै गयऊ
भीमादिक क्षत्री सब धाये ❀ पै जयदर्थ सबहिं अटकाये
छहौ द्वार सुत पेलिकै गयऊ ❀ सतयें द्वार महारण भयऊ
सो सब काहुन देखो नयना ❀ जूझेउ पुत्र सुनेउ यह बयना
यह सुनि अर्जुन मूर्च्छित भयऊ ❀ रोइकै कृष्ण अङ्क महँ लयऊ
अर्जुन कृष्ण बिकल ह्वै रोये ❀ पुत्र शोक चाहत जिय खोये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० अर्जुन भाष्यो भीम सों, प्राण कि कीन्हे गौन ।
सुतहिं जुझायो खेतमहँ, तुम सब आयो भौन ॥

चौदह बर्ष बैस अति बारा ❋ द्रोण कर्ण के युद्ध बिचारा
याही समय होत हम साथा ❋ बधे घेरि सुत मनहुँ अनाथा
सुन्दर रूप मनोहर आनन ❋ खण्ड खण्ड बीरन किये बानन
करुणा के पारथ यह भाखैं ❋ पुत्र बिना हम प्राण न राखैं
सुनु हो बीर महाधनुधारी ❋ तुमपर प्राण करौं बलिहारी
हम जीवत तुम जीवत रनमों ❋ यहै शोच आवत है मनमों
धर्मराय के कामहिं आयो ❋ हमहिं छांड़ि तुमकहां सिधायो
क्षत्री सबै बीर सरदारा ❋ सबहि कुशल जूझे तुम बारा
भीमसेन बहुतै गल गाजे ❋ सुतै जुझाय खेत तजि भाजे
सुनिकै भीम कहन अस लागे ❋ लज्जावन्त क्रोध सों पागे

दो० सब मिलिकै भारत रचो, राज्य भोग के हेत ।
अब रोवत बिलखत कहा, जब सुत जूझेउ खेत ॥

जो मैं होतिउँ सुत के साथा ❋ सेनसहित बधतिउँ कुरुनाथा
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ चलहु गवन अन्तःपुर कीजै
अर्जुन कही सुनो हो माधव ❋ अब उत जाइ कीजिये काधव
आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं ❋ रानिन में का बदन दिखैहैं
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये ❋ बहिन सहोद्रा देखन पाये
धाइ सहोद्रा चरणन लागी ❋ हे माधव हम परम अभागी
श्रीहरि तुम कीन्हे प्रतिपालक ❋ भारथ जूझिगयो मम बालक
अर्जुन से पितु मातुल केशव ❋ रण जूझे सुत बड़ो अँदेशव
करुणा करै सहोद्रा लागी ❋ बिह्वल बिकल शोक ते पागी

दो० बधू उतरि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजै जाहिं हम, पति सँग यादवराइ ॥

तेरे गर्भ बाल भाषो गनि ❋ कुरुपाण्डव को वंश शिरोमनि
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी ❋ एक छत्र बसुधा अधिकारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हीहरिसुनि यहिभांति बखानो ❀ मोरहु जिय अब है अकुलानो
की गुरु द्रोण सूझ क्षत करयो ❀ धर्मराय पर संकट परयो
सब जानत हैं अन्तरयामी ❀ अभिमनुमरणकहो नहिं स्वामी

दो० हांको रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरङ्ग ।
अशकुन देखो पन्थ महँ, भा पारथ मनभङ्ग ॥

आतुर ह्वै चलि आये तहँवां ❀ रोदन करत भूमिपति जहँवां
चलत प्रबाह अश्रु हैं नयना ❀ अर्जुन कही कृष्णसों बयना
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव ❀ नहिं जानत बिधि कीन्हो काधव
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां ❀ रोदन करत सबै हैं जहँवां
अभिमनु नाहिं सभामहँ देख्यो ❀ जूझ्यो पुत्र सत्य करि लेख्यो
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना ❀ अभिमनु कहाँ न देखहुँ नयना
धर्मराज सब बात सुनाई ❀ अकथकथा बिधिकी प्रभुताई
चक्राव्यूह गुरु द्रोण बनाये ❀ दुर्योधन कहि दूत पठाये
भेदहु ब्यूह आनिकै लरिये ❀ नातौ हारि गवन बन करिये
सो सुनिकै हम बहुदुख कीन्हेउ ❀ सब क्षत्रिन को आज्ञा दीन्हेउ

दो० ब्यूह भेद जानहिं नहीं, कहहिं सबहिं परिमान ।
सब क्षत्री हिय हारिगे, अभिमनु लीन्हो पान ॥

बहुत भांति मैं कहि समुझायो ❀ अभिमनु कैसहु मनहिं न आयो
छहों द्वार तोरौं सतिभावा ❀ सतवां को रण मोहिं न आवा
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ ❀ सतवां द्वार भार मम गहेऊ
सो सुनिकै साजी हम सयना ❀ चक्राव्यूह देखत तब नयना
देखत सबहि अचम्भव भयऊ ❀ अभिमनु ब्यूह भेदिकै गयऊ
भीमादिक क्षत्री सब धाये ❀ पै जयदर्थ सबहिं अटकाये
छहौ द्वार सुत पेलिकै गयऊ ❀ सतयें द्वार महारण भयऊ
सो सब काहुन देखो नयना ❀ जूझेउ पुत्र सुनेउ यह बयना
यह सुनि अर्जुन मूर्च्छित भयऊ ❀ रोइकै कृष्ण अङ्क महँ लयऊ
अर्जुन कृष्ण बिकल ह्वै रोये ❀ पुत्र शोक चाहत जिय खोये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० अर्जुन भाष्यो भीम सों, प्राण कि कीन्हे गौन ।
सुतहिं जुझायो खेतमहँ, तुम सब आयो भौन ॥

चौदह बर्ष बैस अति बारा ❋ द्रोण कर्ण के युद्ध बिचारा
याही समय होत हम साथा ❋ बधे घेरि सुत मनहुँ अनाथा
सुन्दर रूप मनोहर आनन ❋ खण्ड खण्ड बीरन किये बानन
करुणा के पारथ यह भाखैं ❋ पुत्र बिना हम प्राण न राखैं
सुनु हो बीर महाधनुधारी ❋ तुमपर प्राण करौं बलिहारी
हम जीवत तुम जीवत रनमों ❋ यहै शोच आवत है मनमों
धर्मराय के कामहिं आयो ❋ हमहिं छांड़ि तुमकहां सिधायो
क्षत्री सबै बीर सरदारा ❋ सबहि कुशल जूझे तुम बारा
भीमसेन बहुतै गल गाजे ❋ सुतै जुझाय खेत तजि भाजे
सुनिकै भीम कहन अस लागे ❋ लज्जावन्त क्रोध सों पागे

दो० सब मिलिकै भारत रचो, राज्य भोग के हेत ।
अब रोवत बिलखत कहा, जब सुत जूझेउ खेत ॥

जो मैं होतिउँ सुत के साथा ❋ सेनसहित बधतिउँ कुरुनाथा
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ चलहु गवन अन्तःपुर कीजै
अर्जुन कही सुनो हो माधव ❋ अब उत जाइ कीजिये काधव
आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं ❋ रानिन में का बदन दिखैहैं
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये ❋ बहिन सहोद्रा देखन पाये
धाइ सहोद्रा चरणन लागी ❋ हे माधव हम परम अभागी
श्रीहरि तुम कीन्हे प्रतिपालक ❋ भारथ जूझिगयो मम बालक
अर्जुन से पितु मातुल केशव ❋ रण जूझे सुत बड़ो अँदेशव
करुणा करै सहोद्रा लागी ❋ बिह्वल बिकल शोक ते पागी

दो० बधू उतरि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजै जाहिं हम, पति सँग यादवराइ ॥

तेरे गर्भ बाल भाषो गनि ❋ कुरुपाण्डव को वंश शिरोमनि
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी ❋ एक छत्र बसुधा अधिकारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

या विधि ते श्रीपति समुझाये ❀ अन्तःपुर ते बाहर आये
भोजन पान कहूं नहिं कीन्हे ❀ सेना सबहि समर मन दीन्हे
अर्जुन निकरि चले बनबासा ❀ पुत्र शोक ते जीव निरासा
श्रीपति अग्र न देखो पारथ ❀ पाछे चले सखा के सारथ
बनमों पारथ भेंटि मुरारी ❀ गहि कर बचन कहेउ बनवारी
पारथ शोच छांड़ि अब दीजै ❀ निर्मल ज्ञान चित्त में कीजै
काको सुत बान्धव पितु जगमों ❀ पन्थिकमित्रआहिजिमिजगमों
सगरादिक ऐसे नृप भयऊ ❀ ते सब यहि धरणीमहँ गयऊ

दो० कोइ न काहूको अहै, कीजै हृदय बिचार।
सबलसिंह चौहान कह, मिथ्या है संसार॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

सुनिकै अर्जुन तब यह भाखो ❀ दीनबन्धु जिय जात न राखो
पारथ संग हमारे ऐये ❀ अभिमनु तुमकहँ आनि देखैये
यह सुनि पारथको मन हरश्यो ❀ करि प्रणाम हरिके पग परश्यो
बिनतासुतकहँ सुमिरण कीन्हे ❀ आये गरुड़ कहन मन दीन्हे
मेरे संग चलहु तुम पारथ ❀ सुरपुर जाइँ तुम्हारे स्वारथ
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना ❀ क्षणमहँ गयो देवनिशि भवना
देखो जाइ महारण रङ्गा ❀ अभिमनु लरत दैत्य के सङ्गा
कृष्ण कही अभिमनु पहँ जैये ❀ पकरि बांह सुत हरि लै ऐये
सुत कहँ देखि महासुख पाये ❀ मिलिबे को आतुर होइ धाये
मोहिं छांड़ि कित कीन्हे गवना ❀ हे सुत बेगि चलो निजभवना

दो० सो सुनिकै अभिमनुकही, काह बकत बिन काज।
पुत्र पुत्र भाषत कहा, जीव न आवत लाज॥

काको सुत काको रथ हाथी ❀ जैसे मिलत सपनमहँ साथी
पितु ते सुत सुत ते पितु करणी ❀ जैसे चलत रहट को ठरणी
हम शशि पुत्र बुद्ध है नामा ❀ रोदन काह करत बेकामा
यह सुनि अर्जुन बहुत लजाये ❀ रहे मौन कछु बचन न आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मन महँ ज्ञान किये तब पारथ ❋ सत्य कहत जग सबै अकारथ
अर्जुन गये कृष्ण के पासा ❋ कही कहत सुनि बचन उदासा
शशि को पुत्र कहै बुध नामा ❋ काको सुत आयो केहि कामा
सुत नातो छांड़ो केहि कारण ❋ मोते भाषौ त्रास निवारण
आदि कथा हरि भाषन लागे ❋ सुनिये भारत परम सभागे
जब हम जठर देवकी जाये ❋ देव दैत्य सब जगमहँ आये

दो० क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीला के काज।
कुरुपति कलिको अंश है, धर्म युधिष्ठिर राज॥

सुरगण सब पाण्डव हितकारी ❋ कुरुपति असुरनको अधिकारी
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजे ❋ बुध सुत देहु जन्म जग कीजै
बिधि सों बिनय सुधाकर कह्यो ❋ इहई पुत्र मोर घर अह्यो
जौलगि सुतहि जन्मजग करिहौं ❋ काहि देखि धीरज मन धरिहौं
हँसि बिधि कही निशापति आगे ❋ पन्द्रह बर्ष देहु म्वहिं मांगे
जन्म सहोद्रा गर्भहि लैहै ❋ भारत मों बहुतै यश पैहै
पन्द्रह बर्ष लागि हम मांगे ❋ एकौ दिन नहिं रहिहै आगे
जो यहि बीच आव नहिं पैहै ❋ दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै
तुम ते कही सुनो हो पारथ ❋ शोच न कीजै आपु अकारथ

दो० अर्जुन को परबोध कै, लै आये प्रभु ऐन।
शोक मिटा तन क्रोध भो, कहो कृष्ण सों बैन॥

काल्हि युद्ध जयदर्थहि मारौं ❋ नातरु देह अग्नि मों जारौं
यह प्रण मैं कीन्हो अपने मन ❋ बधौं शत्रु की देहुँ अपन तन
प्रणसुनि श्रीहरि कहिबे लीन्हे ❋ जयद्रथ कहँ शंकर बर दीन्हे
ताते अजय भयो है पारथ ❋ केहिबिधितुम करिहौपुरुषारथ
हम तुम मिलि कीजै अब गवना ❋ चलु जाई शंकर के भवना
नर नारायण सङ्ग सिधाये ❋ क्षणमहँ गिरिकैलासहि आये
चहुँदिशि बनसपती सब फूले ❋ मत्त मधुप गुञ्जत रस भूले
बटतर बैठे हैं गङ्गाधर ❋ उमासहित हरिनाम जपत हर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अङ्ग बिभूति बसन मृगछाला ❀ चन्द्र ललाट गरे शिरमाला
शीश जटा महँ गङ्ग बिराजत ❀ लोचन तीनि मनोहर छाजत
दो० शंकर देख्यो कृष्ण कहँ, उपजो चित्त अनन्द।
बिहँसि बदन पूछन लगे, शरदश्याममुखचन्द॥
करि आदर आसन बैठारे ❀ कहौ आपु केहि काज सिधारे
हँसि हरि कही सुनहु गङ्गाधर ❀ तुम दीन्हो जयदर्थहि को बर
अभिमनु जूझिगिरे भारत रण ❀ ता कारण पारथ कीन्हो प्रण
काल्हि बधौं नहिं सिन्धुनरेशहि ❀ तौ मैं अग्नि में करौं प्रवेशहि
पारथही अब या बर दीजै ❀ काल्हि बधहि जयदर्थहि कीजै
शंकर कही दीन्ह बर पारथ ❀ बधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ
जाको सखा आपु श्रीकेशव ❀ जय करिहौ रण कौन अँदेशव
लैकर धनुष बतावब बाना ❀ यहि बिधिते कीजहि संधाना
लै अर्जुन माधव गृह आये ❀ समाचार सब कुरुपति पाये
अर्जुन प्रण कीन्हेउ यहि कारण ❀ काल्हि चहत जयदर्थहि मारण
दो० जो न बधौं जयदर्थहि, करहुँ अग्नि परवेश।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये, सुधि सब सुनी नरेश॥
सुनि जयदर्थ महाभय मानी ❀ इतई रहब मरण निज जानी
कुरुपति पहँ कीन्हो तब गवना ❀ कही जात हम अपने भवना
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै ❀ को सन्मुख होइ तिनसन लरिहै
तेहि कारण भवनहिं बसि कीजै ❀ शंकर शरण जाइकै लीजै
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना ❀ अबनहिं कीजिय ममअपमाना
हम सब तव रक्षा रण करिहैं ❀ कर्णादिक लै आगे लरिहैं
सब मिलिकै करिये पुरुषारथ ❀ कैसे तुमहिं बधैंगे पारथ
भागि गये पुनि अमर न होइहौ ❀ क्षत्रिन मध्य लाज बहु पैहौ
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं ❀ सांझ समय तब अर्जुन मरिहैं
पारथ मरैं युद्ध हम जीतैं ❀ तुम काहेक जिय मानत भीतैं
दो० सेनापति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहिं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सांझभये अर्जुनमरहिं, बिधि जयदीन्हो मोहिं ॥
ताते अब हम तुमसों कहिये ❋ करि सहसा अस्थिर ह्वै लहिये
सिन्धुराज तब बोले बयना ❋ कहूं न ऐसो देखेहुँ नयना
पारथ कोप धनुष जब धरिहै ❋ को समरथ जो सन्मुख लरिहै
जब बिराटपुर गोधन हरेऊ ❋ अर्जुन एक सबै बश करेऊ
मोहिं ते कहेउ यहै त्रिपुरारी ❋ पारथसम नहिं कोउ धनुधारी
उठिकै करण कही परतक्षक ❋ काल्हि दिवस हम होबे रक्षक
तब जयदर्थ कहा समुझाई ❋ सबको बल हम जानत भाई
जो गुरु द्रोण बांह गहि राखैं ❋ रक्षा करहिं पैज करि भाखैं
तौ मैं रहौं सुनो नृप बयना ❋ नतरु जाइहौं अपने अयना
कुरुपति कही सबहि मिलि जैये ❋ जाय द्रोण सों बात जनैये

दो० यहकहिकैसबमिलिचले, गये द्रोण के भौन।
आदर कै आसन दिये, किमिनृपकीन्हेउगौन॥

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ ❋ अर्जुन प्रण कीन्हेउ अस अहेऊ
काल्हि दिवस जयदर्थहि मारौं ❋ नहिं तौ देह अगिनिमहँ जारौं
जो गुरुद्रोण होहु तुम रक्षक ❋ दृढ़कै बांह गहौ परतक्षक
काल्हि दिवस जयदर्थ बचैये ❋ पारथ मरत युद्ध जय पैये
यह सुनि द्रोण कहे तव लीन्हे ❋ अब मन अपने मैं प्रण कीन्हे
ऐसो ब्यूह करौं निर्माना ❋ जाको भेद कोउ नहिं जाना
सब आगे होइहैं हम रक्षक ❋ देखो को आवत परतक्षक
जो कोटिन अर्जुन चलिआवैं ❋ तौ मोते नहिं द्वार छड़ावैं
काल्हिकरौंयहिबिधि पुरुषारथ ❋ कृष्ण समेत जीतिये पारथ
यहि बिधि बाणबुन्द झरिलाई ❋ पाण्डव सेन मारि बिचलाई

दो० या प्रण मैं तुमते करहुँ, सुनहु बचन परमान।
पारथ अन्त न पावहीं, करौं ब्यूह निर्मान॥

कही द्रोण अब साजहु सैना ❋ रचत ब्यूह अब देखो नैना
कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे ❋ सुनिकै सबहि भूपगण गाजे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्र बिमान परतहैं धोखे
चढ़े अश्व असवार महाबल ❀ उदधिसमान पियादनको दल
सब जुरिकै आये मैदाना ❀ कीन्हे द्रोण ब्यूह निर्माना
बिकटब्यूह अति निकट बनाये ❀ जाको अन्त कहूँ नहिं पाये
कमलब्यूह तेहि मध्यहि फेरेउ ❀ शतदलको ब्यूहहि तेहिघेरेउ
कमलब्यूह महँ ब्युह बहुतेरे ❀ ते सब रहेउ अस्त्र गहि घेरे
आपु द्रोण राखो है चक्रहि ❀ सोमदत्त बल समता शक्रहि

दो० बाहुलीक गन्धार नृप, दोउ बाजिरहि ताहि।
करणमध्य अस्थलरहो, सबहि सराहत जाहि॥

अग्रभाग गुरु द्रोण बिराजत ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजत
कमल मध्यमहँ जयद्रथ राखो ❀ महाबिकट बलजात न भाखो
षट योजन रचि ब्यूह बनाई ❀ योजन तीनि बनी चौड़ाई
आठ क्षौहिणी दल सब राखे ❀ है समूह दल जात न भाखे
कही क्षौहिणी दल परिमाना ❀ यहि ते बुध करिहैं अनुमाना
रथपर एक रथी छबि पावै ❀ तेहि पाछे पचास गज धावै
गज पाछे शत शत असवारा ❀ बन महँ करत शत्रु संहारा
एक एक असवारन पाछे ❀ शत शत पैदल आवत आछे
इतनो होय रथी त्यहि कहिये ❀ शूरबीर कोई रण लहिये
ऐसो रथी पांच शत आये ❀ ताकी सेना एक कहाये

दो० ऐसो दल सेना जुरी, प्रतिनी कहिये ताहि।
दश प्रतिनी जुरिकै चले, यही बाहिनी आहि॥

ऐसे दल बाहिनि जुरि आई ❀ एक क्षौहिणी फौज कहाई
आठ क्षौहिणी दल परिमाना ❀ कीन्हो ब्यूह निकट निर्माना
गहिकै धनुष द्रोण गुरु कह्यो ❀ सब क्षत्री दृढ़ कै थल गह्यो
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये ❀ अर्जुनसों कीन्हो रण चहिये
अरुण उदय पाण्डव दल साजे ❀ शन्द अघात दमामे बाजे
स्वकर रथहि जोते बनवारी ❀ चढ़े आइ पारथ धनुधारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हे ❋ दोउ तुणीर कसिकै दृढ़ कीन्हे
शिरपर मुकुट मनोहर नीको ❋ भाल उदित हरिमंदिर टीको
यज्ञोपवीत बिराजत कांधे ❋ पीताम्बर कटि कसिकै बांधे
सुन्दर श्याम शरीर बिराजत ❋ कुण्डल कान मनोहर छाजत

दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि, नहिं पायो ज्यहिअन्त।
भक्त हेतु जोती गहे, महिमा अगमअनन्त॥

धर्मराय मैदानहि आये ❋ तब श्रीपति यह बचन सुनाये
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❋ लै सेना इतही अब रहिये
जो सब मिलि रण को उरझैये ❋ व्यूह भेद को अन्त न पैये
अर्जुन रथी संग हम सारथ ❋ देखो नृप नयनन पुरुषारथ
धर्मराय कछु कहिबे लीन्हे ❋ अर्जुन सौंपि कृष्ण को दीन्हे
तीनि लोक भाषत परतक्षक ❋ पाण्डुबंश के माधव रक्षक
पारथ बीर अहैं हम सारथ ❋ कहा शोच करिये पुरुषारथ
अस कहिकै माधव रथ हांको ❋ गर्जत नन्दिघोष के चाको
ध्वजा उपर हनुमत छबि पाये ❋ चञ्चल पवन अश्वगति धाये
पहुँचो निकट व्यूह जब पेख्यो ❋ अतिअगाधदल परत न लेख्यो

दो० अर्जुन देख्यो द्रोण तब, संग कोउ नहिं सैन।
क्रोधित शर संधानिकै, कह्यो कृष्ण सों बैन॥

हे श्रीपति तुम अन्तरयामी ❋ मेरो प्रण यह सुन्यो न स्वामी
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं ❋ व्यूह द्वार में जान न पावैं
श्रीपति कही धरहु धनु पारथ ❋ देखत कहा करहु पुरुषारथ
अर्जुन गुरुहि कीन्ह परणामा ❋ आशिष दीन्ह होय मनकामा
द्रोण प्रथम कीन्ह्यो संधाना ❋ एकहि बार तजे दोउ बाना
गुरु अरु शिष्य करत रण सरसे ❋ दोउदिशि बाणबुन्द समबरसे
साठि बाण अर्जुन तन मारे ❋ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे
सहस बाण लागे हनुमानहिं ❋ लघुसंधान तजत गुरु बानहिं

दो० अर्जुन बर्षत बाण इमि, जिमि सावन जलधार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सघन सेन भेदन करत, निकरि जात शर पार॥
तब गुरुद्रोण क्रोध जिय कीन्ह्यो ❀ महामारु पारथ पर दीन्ह्यो
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे ❀ शरते पग ठहरात न घोरे
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ सरसनिरस कहि जात न बाना
इन्द्र अस्त्र पारथ तब कीन्हेउ ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हेउ
छूटत बाण शब्द घहरानेउ ❀ अचरज कै सबहीं जियजानेउ
हँसिकै द्रोण किये संधाना ❀ तजेउ स्वामिकार्त्तिककर बाना
ताते इन्द्र अस्त्र छवि कीन्हेउ ❀ तब पारथ यमअस्त्रहि लीन्हेउ
मृत्युक अस्त्र द्रोण परिहारेउ ❀ तब यम अस्त्रहि पारथ मारेउ
अस्त्र अस्त्र सों कीन्ह निवारण ❀ तब लागे तीक्ष्णशर मारण
पारथ बाण कीन्ह संधाना ❀ इत गुरु द्रोण सरस मैदाना

दो० कही द्रोण अर्जुन सुनो, द्वार न छांड़ौं आज।
दीनबन्धु पारथ सहित, समुझि कीजिये काज॥

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ ❀ गुरुसों होइ न सकै पुरुषारथ
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो ❀ ब्यूह भेद अजहूं नहिं पायो
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं ❀ भेदि ब्यूह जयदर्थहि मारहिं
अर्जुन कही उतै होइ जैये ❀ रणमों कैसे पीठि दिखैये
माधव कही न जानत पारथ ❀ भूलि बात यह कही अकारथ
कहा न कीजै अपने काजा ❀ द्विज गुरुते भाजे नहिं लाजा
अस कहिकै हरि रथहि चलायो ❀ द्रोणहि तजि अन्तरहोइ आयो
लै ताजन हरि अश्वन मारेउ ❀ दै करि हांक ब्यूह पर डारेउ
बहुतक पारथ मारि गिरायो ❀ कछु रथचाक कृष्ण कचरायो
कछु हय धका उलटिकै डारेउ ❀ ताजन घाव कृष्ण कछु मारेउ

दो० नन्दिघोष रथ जाइकै, ब्यूह किये परवेश।
चहूं ओर शर बर्षहीं, क्षत्री सबै नरेश॥

सेन मध्य रथ धावत कैसे ❀ बोहित चलत सिन्धुमहँ जैसे
अर्जुन कीन्हेउ शर संधाना ❀ मारन लगे क्रोधकरि बाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अगणित कीन्हेउ सेन निकन्दन ❀ नन्दिघोष हांकत जगवन्दन
बीर अनेक आनि कै घेरहिं ❀ मारहिं मारु मारु कहि टेरहिं
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❀ लागे करन सरस पुरुषारथ
रथ पर लाग शूल शर बर्षै ❀ युद्ध देखि पारथ मन हर्षै
बीर अनेक अस्त्र परिहारे ❀ खड्ग घाव रथ ऊपर मारे
अर्जुन कोपि चलायो बाना ❀ योजन एक कियो मैदाना
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बरधारी
योजन एक किये रथ आगे ❀ धर्मराय तब कहिबे लागे

दो० धनुटँकोर ध्वनि सुनिपरत, कहा होत धौं आहि।
हरि अर्जुन सुधि लेनको, अब पठवौं मैं काहि॥

कह्यो नरेश सात्यकी जैये ❀ सुधि लैकै मोपर फिरि ऐये
नृप आज्ञा माथे धरि लीन्हेउ ❀ रणको गमन सात्यकी कीन्हेउ
तब सात्यकि देखेउ परतक्षक ❀ द्वारहि ब्यूह द्रोणगुरु रक्षक
जबसात्यकिअतिनिकटहिआये ❀ हँसिकै द्रोण कहन मनलाये
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा ❀ निश्चय भयो काल को खावा
यह सुनि क्रोध भये बहु नाना ❀ एक बार मारे शत बाना
ते सब शर गुरु बीचहि काटे ❀ पांच बाण तिन फिरिकै छांटे
द्रोण सात्यकी भा रणरङ्गा ❀ दूनों बीर महाबल अङ्गा
दोऊ सरस रचेउ पुरुषारथ ❀ कीन्हेउ महाभयानक भारथ
द्रोण गुरू या बिधि शर जोरे ❀ ब्यूह द्वार ठहरात न घोरे

दो० हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकि अज्ञान।
बाहर होइ अर्जुन गयो, तुम चाहत इत जान॥

यम अरु इन्द्र बरुण जो आवैं ❀ ब्यूह द्वार होइ जान न पावैं
सुनि सात्यकी किये पदबन्दन ❀ बेखटके हांकेउ तब स्यन्दन
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ ❀ चक्रलीक मारग धरिलीन्हेउ
जाइ ब्यूह कीन्हा परबेशा ❀ रण महँ जीते बहुत नरेशा
चहूं ओर क्षत्री शर मारत ❀ नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना ❀ चले सात्यकी मारत बाना
लरत सात्यकी आयउ तहँवां ❀ भूरिश्रवा भूप है जहँवां
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ क्रोधित लाग चलावन बाना
आयो रथ अति निकटहि जाने ❀ भूरिश्रवा आनि लपटाने
रथते उतरि परे दोउ धरणी ❀ मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहु करणी

दो० भूरिश्रवा महाबल, बर दीन्हो तेहि ईश।
गहे केश तेहि खड्गलै, काटन चाहत शीश॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हे ❀ शीश चलाय घात नहिं कीन्हे
ताते घात नहीं बनि आई ❀ इहां कृष्ण अर्जुनहिं चेताई
भूरिश्रवा खड्ग गहि हाथा ❀ काटत आहि सात्यकी माथा
मन व्यापक शर अर्जुन छांटे ❀ खड्ग समेत बाहु तेहि काटे
उठि युयुधान खड्ग जब लीन्हे ❀ भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे
बधि नरेश अपने रथ आवा ❀ हांकि तुरँग आगे पथ आवा
बिक्रम युद्ध करत पुरुषारथ ❀ पहुँचो जाइ लरत जहँ पारथ
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये ❀ भले भये सात्यकि तुम आये
अर्जुन युद्ध करत परतक्षक ❀ नंदिघोष पाछे तुम रक्षक
अस कहि रथ हांकेउ बनवारी ❀ दल मारत अर्जुन धनुधारी

दो० एकै शर अर्जुन हने, गुण जोरत दश बाण।
छूटतही शत होतहै, बधत सहस परमाण॥

यहि बिधिते सेना संहारे ❀ सन्मुख बीर जुरे ते मारे
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ सौहैं जुरे गहे शारँग शर
रहु रहु करि कीन्हो संधाना ❀ अर्जुन उर मारे दश बाना
कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ❀ बीस बाण हनुमानहिं मारे
सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ ❀ क्रोधित ह्वै जोरे शर पारथ
पढ़ि रविमन्त्र बाण सब छांटे ❀ सोमदत्त को शीशहि काटे
मुकुट समेत परो शिर धरणी ❀ अर्जुन रण कीन्हीं यह करणी
बाहुलीक गन्धार महारथ ❀ सेन समेत करत पुरुषारथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jhandewalan. Digitized by eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नृप कौमोद धनुष कर लीन्हे ❋ महाभार्थ पारथ पर कीन्हे
चहुँदिशि ते लागे शर मारन ❋ बहुतक जुरे कुन्त हथियारन

दो० शर बर्षत हैं बीर सब, शक्तिखड्ग की धार।
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँ ओर की मार॥

सेना सबै आनि रथ घेरे ❋ मारु मारु कहि चहुँदिशि टेरे
पै पारथ मन नेकु न भङ्गा ❋ शर संधान करत रण रङ्गा
अर्जुन बधत सेन यहि रूपहि ❋ प्रलय होत जैसे जल भूपहि
लाखन दल कीन्हे शर खण्डित ❋ रुण्डमुण्ड धरणीसब मण्डित
जुरे आइ सब बीर महाबल ❋ पलभरि पारथ नहिं पावतकल
यहिबिधि करत घोर संग्रामा ❋ जूझिगिरे कुरुपति के कामा
पारथ बीरन करत निकन्दन ❋ नन्दिघोष हांकत जगबन्दन
जो दल अर्जुन मारि गिराये ❋ लोथिनपर हरि रथहि चलाये
याबिधिसघन फौज अतिभारी ❋ प्रभु सारथि पारथ धनुधारी
महारथी सब बाण चलावहिं ❋ नन्दिघोष रथ छांह छिपावहिं

दो० कठिनअस्त्र आवतजबहिं, जाहि न रिपुबचिजाइ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर, अर्जुन अङ्ग बचाइ॥

नृप काम्बोज कठिन शर मारे ❋ कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे
श्याम शरीर रुधिर छबि पाये ❋ पीतबसन तनु अरुण सुहाये
क्रोधवन्त अर्जुन शर छांटे ❋ शायक मोद के शीशहि काटे
हांकत अश्व जगत के तारन ❋ हर्षि बीर लागे शर मारन
बहुतक आनि रथहि लपटाने ❋ महाशूर सब बांधे बाने
नन्दिघोष रथ राजन घेरे ❋ सावधान अर्जुन हरिटेरे
बाहु बिशाल कृष्ण परिहारत ❋ अभिरत ताजन तासों मारत
पुनि अनेक शर अर्जुन छांटत ❋ रुण्ड मुण्ड बसुधा सब पाटत
याबिधि होत युद्ध की करणी ❋ महामारु कछु जाइ न बरणी
रथ पाछे सात्यकि है रक्षक ❋ बीर अनेक बधे परतक्षक

दो० याबिधि अर्जुन रण करत, होत घोर संग्राम।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हांक देत हय हांकहीं, सारथिश्रीघनश्याम॥

याबिधि अर्जुन करत मसाना ❀ भारत अवनि करत मैदाना
जोती गह्यो पतित के पावन ❀ थके तुरङ्ग सकैं नहिं धावन
अश्व कियो चाहत जल पाना ❀ पारथ सों हरि आपु बखाना
दोइ प्रहर दुइ ऊर्ध्वहि भयऊ ❀ तृषित तुरङ्ग तेज घटि गयऊ
अर्जुन कहा न करौ अँदेशव ❀ जल उपाय करिहैं हम केशव
अस कहि पारथ करि संधाना ❀ भूमि निरखिकै मास्यो बाना
भेदि पताल गयउ शर तहँवां ❀ भोगावति गङ्गा हैं जहँवां
याबिधिते शायक परिहारा ❀ निकरी फूटि गङ्ग कै धारा
ताते भयो सरोवर ऐसो ❀ निर्मल नीर सुधा को जैसो
पारथ कही कृष्ण सुनि लीजै ❀ रथते तुरँग खोलि जल दीजै

दो० अस्त्र घाव क्षत्री करत, अभिरतबीर अनन्त।
केहिबिधितेजलदीजिये, भाषैं श्रीभगवन्त॥

अर्जुन कोपि किये संधाना ❀ मास्यो सेन कियो मैदाना
तब पारथ शर पंजर छाये ❀ अर्ध नीर शर ओट छिपाये
ताते बीर निकट नहिं आयो ❀ नन्दिघोष नहिं देखन पायो
तब अर्जुन भाषेउ भगवानहिं ❀ खोलहु अश्वकरहिं जलपानहिं
श्रीहरि सुनिकै जोती छोरे ❀ किये पान जल चारिउ घोरे
स्वकर नाथ अश्वन को धोये ❀ फरकन लगे सबै श्रम खोये
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे ❀ मिश्रितकरि मिश्रिततेहिदीन्हे
और दवा प्रभु आपु खवाये ❀ होइ बलवन्त भये सचुपाये
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे ❀ गङ्गोदक झारी भरि लीन्हे
चारिउ तुरँग आनि रथ जोरे ❀ चञ्चल चपल दिनन के थोरे

दो० कुरुदल सबै अनन्द सों, करन लगे जलपान।
धन्य धन्य पारथजगत, अरिदल करत बखान॥

शर पंजर ते भारत आगे ❀ चहूंओर शर बर्षन लागे
महाशूर जो आगे आवत ❀ क्षणमहँ अर्जुन मारि गिरावत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चपल तुरंग हांकि रथ दीन्हे ❀ पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे
अर्जुन बाण गिरत दल ऐसो ❀ प्रबलपवन कदलीबन जैसो
यहिबिधिलरत शङ्कनहिंमनमों ❀ रुधिर प्रबाह चलत सब तनमों
बीरन अङ्ग देखि दृग भूले ❀ जिमि बसन्त किंशुकतरु फूले
अरुण बरण शोणित लपिटाने ❀ खेलत मनहुँ अबीरन साने
पेलि फौज रथ याबिधि धावत ❀ जिमि मैनाकधराणिपर आवत
याबिधिते रथ हांकत केशव ❀ धर्मराज इत करत अँदेशव
खबरि हेतु सात्यकी पठाये ❀ सुधि लैकै अजहूं नहिं आये

दो० भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्जुन के ठौर।
उत चाहत सुधि लेनको, बीर न देखौं और॥

साहस कै बांधव शुभ कीजै ❀ अर्जुनखबारिआनि म्वहिं दीजै
पहर अढ़ाई दिन भा आई ❀ अबलौं जिनकै खबरि न पाई
नृप आज्ञा माथेपर लीन्हे ❀ रण को भीमसेन शुभ कीन्हे
ब्यूहद्वार जब रथ पहुँचाये ❀ द्रोणगुरू देखन तब पाये
क्रोधवन्त शारँग कर लीन्हे ❀ ते शर गुरु बीचहिं क्षय कीन्हे
अपर पांच शर मारे पायल ❀ ताते किये अश्व रथ घायल
हँसि गुरुद्रोण कही यह बानी ❀ सब दिन भीम परम अज्ञानी
नन्दिघोष रथ हरिसम सारथ ❀ सके न द्वार जान यह पारथ
यहि मारग ह्वै जान न पैहौ ❀ पारथ गये तितहि ह्वै जैहौ

दो० भीमसेन अतिक्रोधकरि, कहे द्रोण सों बैन।
द्वार पेलि अब जातहौं, तुमदेखत बधि सैन॥

अर्जुन के धोखे जनि रहिये ❀ सावधान होइ शारँग गहिये
धावा उतरि छांड़िकै स्यन्दन ❀ मनमें सुमिरे श्रीजगबन्दन
लघु संधान द्रोण गुरु मारत ❀ बायें अङ्ग भीम सब ढारत
प्रबल तेज शोणित शर छूटत ❀ बज्र शरीर लागि सब टूटत
जाइ गदा रथ हेठ लगाये ❀ लै भुजबल गुरुसहित उठाये
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ ❀ गिरेउ न बीच कोश दुइ गयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिस्यो भूमि टूट्यो तब स्यन्दन ❀ अश्व सारथी भयो निकन्दन
उठिकै द्रोण पयादे धाये ❀ तबलगि भीम व्यूह महँ आये
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे ❀ सन्मुख ज्यहि पाये तेहि मारे
गज मारे अनेक मय कीन्हे ❀ बहुतक फेंकि गगनमहँ दीन्हे

दो० बहुतक मारे चरणते, बहु मुष्टिका प्रहार।
भीमसेन सेना सबै, याबिधि कीन सँहार॥

रथ ते रथ गज सों गज मारे ❀ पकरि अश्व पर अश्वप्रहारे
सन्मुख आय बीर शर जोरत ❀ गदाघाव तिनको शिर फोरत
यहिबिधि कीन्हे सेन निकन्दन ❀ हय गज मत्त तोर बहु स्यन्दन
लैकर गदा क्रोध करि धाये ❀ बीरन मारत बार न लाये
हांक मारिकै गदा प्रहारे ❀ एक बार सहसन दल मारे
यहि बिधि लरत चले परतक्षक ❀ पहुँचे जाय कर्ण तहँ रक्षक
देख्यो कर्ण बृकोदर आये ❀ रहु रहु कहि गुण धनुष चढ़ाये
आवत कहा और के धोखे ❀ असकहि बाण चलायो चोखे
भीम अङ्ग मारे शर जबहीं ❀ हांक मारिकै धायो तबहीं

दो० रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीम रणरङ्ग॥

अर्जुन कही भीम प्रभु आवत ❀ युद्ध करत हैं हांक सुनावत
श्रीहरि कही दूरि अति पारथ ❀ योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ
करण अपर रथही चढ़ि आये ❀ क्रोधित ह्वै बहु बाण चलाये
लाग्यो घाव भीम के तन में ❀ अधिकक्रोधउपज्यो तब मन में
लैकर गदा कोपि परिहारे ❀ चारि तुरंग सारथी मारे
चक्र सहित टूटो तब स्यन्दन ❀ आतुर भागि चले रविनन्दन
औरहि रथ कीन्हो असवारी ❀ सन्मुख जुरे बीर धनुधारी
तब याबिधि कीन्हो संधाना ❀ भीम अङ्ग मारे दश बाना
अपर साठि शर भलुक लीन्हे ❀ ते शर चोट शीशपर कीन्हे
तीन सहस शर ऊपर लागे ❀ थके भीम पग चलत न आगे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० कर्ण धनुर्द्धर अतिप्रबल, याबिधि मारे बान।
भीम अङ्ग झांझर सबै, मोहि गिरे मैदान॥

श्रमजल रुधिर अङ्गमहँ बह्यो ❋ गजलोथिन के बीचहि रह्यो
मूर्च्छित भये पाण्डु के नन्दन ❋ कर्ण बीर हांक्यो तब स्यन्दन
रहे दूरि अति निकटहि आये ❋ धनुष अङ्गतन खोदि जगाये
उठो भीम कीजै रण करणी ❋ मोहित कहा पस्यो है धरणी
स्वाहु बहुत सोवहु निजधामा ❋ रणमहँ काह तुम्हारो कामा
जीवदान मैं ताते दीन्ह्यो ❋ कुन्ती मातु मांगिके लीन्ह्यो
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे ❋ भीमसेन मूर्च्छा तब जागे
शीतलपवन परस तन कीन्हे ❋ श्रम भा दूरि गदा कर लीन्हे
अपनो बल तब भीम सँभारो ❋ सेना पेलि अग्र पगु धारो
याबिधि चल्यो करत पुरुषारथ ❋ कृष्णसमेत लरत जहँ पारथ

दो० भीमसेन कह हांक दै, मैं पहुँच्यों अब आय।
पारथ तुम निरखत कहा, बधौ सेन मन लाय॥

भीम सात्यकी पाछे आवत ❋ आगे नन्दिघोष रथ धावत
भीमसेन राजन संहारे ❋ पुनि सात्यकी श्रमित दल मारे
हांके तुरँग पतित के पावन ❋ रुधिर नदी अति बढ़ी भयावन
मत्त गयन्द भिरे हैं कैसे ❋ दोऊ ओर कगारक जैसे
बार सेवार सरस अरुझाने ❋ फेन समान जो पग उतराने
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं ❋ ढाल मनहुँ कच्छपसमदमकहिं
कटे शीशधर बखतर राजैं ❋ मनहुँ ग्राह जलमाहिं बिराजैं
याबिधि कीन्हेउ खेत भयंकर ❋ नाचत मुण्ड लिये हैं शंकर
भूत बेताल पिशाच सयाने ❋ रुधिर मांस सब खाइ अघाने

दो० योगिनि खप्पर भरत हैं, काक कङ्क की भीर।
गीध शृगाल अनन्दसों, बोलत सरितातीर॥

यहि बिधिते कीन्हेउ रण भारथ ❋ पारथ करत जहां पुरुषारथ
महाबीर कोटिन शर मारत ❋ बाणन ते अर्जुन संहारत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधि होत महारण शरसे ❀ अस्त्रसमूह बुन्द सम बरसे
सबै शूर सरदार महाबल ❀ पलभरि नहिं पारथ पावत कल
अर्जुन हाथ बाण जो छूटत ❀ सेना बेधि धरणि महँ फूटत
धर्मराय कुरुपति के सैनहि ❀ हित अनहित रबि देखत नैनहि
चक्रवाक पाण्डवदल जानत ❀ समउलूक कुरुदल निशिमानत
बध जयदर्थ पाण्डुदल भावत ❀ कौरवदल सब चहत बचावत

दो० व्यासदेव उपमा कही, दोऊ दलहि बिचारि।
अर्जुनप्रण जयदर्थबध, बाल अप्रौढ़ा नारि॥

आतुर ह्वै अर्जुन शर छांटत ❀ बीर अनेकन के शिर काटत
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ हांक देत हांकत रथ सारथ
बाहुलीक कृतबर्मा अत्री ❀ सन्मुख आनि जुरे सब क्षत्री
मारु मारु कै सब रण टेरे ❀ चहुँदिशि नन्दिघोष रथ घेरे
अश्वत्थाम कृपा तब आये ❀ सब मिलि बाणबुन्द झरिलाये
सेन अनेक अस्त्र परिहारत ❀ सांग शूल मुद्गर सों मारत
यहिबिधि होत महारण भारी ❀ हरि सारथि पारथ धनुधारी
श्रीहरि तब अपने मन जाने ❀ पहर दिवस बाकी अनुमाने
जो सब दिवस बीति कै जैहै ❀ सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै
जो अर्जुन निजप्राण गँवावा ❀ मेरो अयश सबै जग गावा

दो० पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान।
अर्जुनकेहिबिधिराखिये, करत शोच भगवान॥

श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु ❀ बेंड़े होइकै सूर्य छिपावहु
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा ❀ तब रबि ओट सुदर्शन कीन्हा
गगन दिवस तकि तेज निहारी ❀ भई सांझ कुरुसेन पुकारी
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा ❀ पाण्डवदल सब भयो निराशा
संध्या देखि थकित भे पारथ ❀ डारेउ धनुष तजेउ पुरुषारथ
पारथ धनुष डारि जब दीन्हे ❀ मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे
दुर्योधन आनँद ह्वै आये ❀ सेन समूह सबै पलटाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब पारथ यहिभाँति बखाना ❋ कुरुपति करहु चित्त अनुमाना
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ ❋ जिमिचातक जलस्वाती वर्षेउ
कुरुपति की आज्ञा जब पायो ❋ शतबन्धुनमिलिचिता बनायो

दो० चिता चढ़न अर्जुन चल्यउ, कहेउ कृष्ण समुझाय।
धनुषबाण लैकर चढ़उ, क्षत्री धर्म न जाय॥

हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ ❋ लैकर धनुष चितापर चढ़ेऊ
कुरुपति तब निरखनको लागे ❋ कही शकुनि जयदर्थहि आगे
तुव कारण मारेउँ सब सैना ❋ पारथ मरण देखिये नैना
याते और न है सुख कोई ❋ देखत नयन शत्रु क्षय होई
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं ❋ श्रीहरि गगन तकायो तबहीं
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये ❋ रवि प्रकाश भा दिवस लखाये
चकित सबहिं अचंभा माने ❋ तब श्रीहरि पारथहिं बखाने
अर्जुन गहरु करत क्यहिकाजा ❋ देखत तुमहिं सिन्धु के राजा
तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना
जूझे शीश परन महि चह्यऊ ❋ तब अर्जुनसों माधव कह्यऊ

दो० अन्तरिक्षशिरलैचलहु, सुनहु बचन परिमान।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ लै शर शीश चल्यउ असमाना
हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये ❋ शरलागत शिर गिरन न पाये
पहुँचायो शिर पारथ बाणन ❋ जहां सुरथ तप साधत कानन
धरयो ध्यान अञ्जलिकर साधत ❋ पुत्र हेतु शंकर अवराधत
कही कृष्ण अर्जुन सों ऐसो ❋ वाके हाथ परत शिर जैसो
यहि बिधिते अर्जुन शर मारे ❋ नृपके हाथ शीश लै डारे
छूट ध्यान चिन्ता मन कीन्हेउ ❋ मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं ❋ माथो सुरथ काटि गा तबहीं
छूटे प्राण गिरयो तब धरणी ❋ कहिनजातिबिधिकीयहकरणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधि होत महारण शरसे ❀ अस्त्रसमूह बुन्द सम बरसे
सबै शूर सरदार महाबल ❀ पलभरि नहिं पारथ पावत कल
अर्जुन हाथ बाण जो छूटत ❀ सेना बेधि धरणि महँ फूटत
धर्मराय कुरुपति के सैनहि ❀ हित अनहित रबि देखत नैनहि
चक्रवाक पाण्डवदल जानत ❀ समउलूक कुरुदल निशिमानत
बध जयदर्थ पाण्डुदल भावत ❀ कौरवदल सब चहत बचावत

दो० व्यासदेव उपमा कही, दोऊ दलहि बिचारि।
अर्जुनप्रण जयदर्थबध, बाल अप्रौढ़ा नारि॥

आतुर ह्वै अर्जुन शर छांटत ❀ बीर अनेकन के शिर काटत
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ हांक देत हांकत रथ सारथ
बाहुलीक कृतबर्मा अत्री ❀ सन्मुख आनि जुरे सब क्षत्री
मारु मारु कै सब रण टेरे ❀ चहुँदिशि नन्दिघोष रथ घेरे
अश्वत्थाम कृपा तब आये ❀ सब मिलि बाणबुन्द झरिलाये
सेन अनेक अस्त्र परिहारत ❀ सांग शूल मुद्गर सों मारत
यहिबिधि होत महारण भारी ❀ हरि सारथि पारथ धनुधारी
श्रीहरि तब अपने मन जाने ❀ पहर दिवस बाकी अनुमाने
जो सब दिवस बीति कै जैहै ❀ सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै
जो अर्जुन निजप्राण गँवावा ❀ मेरो अयश सबै जग गावा

दो० पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान।
अर्जुनकेहिबिधिराखिये, करत शोच भगवान॥

श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु ❀ बेंड़े होइकै सूर्य छिपावहु
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा ❀ तब रबि ओट सुदर्शन कीन्हा
गगन दिवस तकि तेज निहारी ❀ भई सांझ कुरुसेन पुकारी
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा ❀ पाण्डवदल सब भयो निराशा
संध्या देखि थकित भे पारथ ❀ डारेउ धनुष तजेउ पुरुषारथ
पारथ धनुष डारि जब दीन्हे ❀ मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे
दुर्योधन आनँद ह्वै आये ❀ सेन समूह सबै पलटाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Vasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब पारथ यहिभांति बखाना ❋ कुरुपति करहु चित्त अनुमाना
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ ❋ जिमिचातक जलस्वाती बर्षेउ
कुरुपति की आज्ञा जब पायो ❋ शतबन्धुनमिलिचिता बनायो

दो० चिता चढ़न अर्जुन चल्यउ, कहेउ कृष्ण समुझाय।
धनुषबाण लैकर चढ़उ, क्षत्री धर्म न जाय॥

हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ ❋ लैकर धनुष चितापर चढ़ेऊ
कुरुपति तब निरखनको लागे ❋ कही शकुनि जयदर्थहि आगे
तुव कारण मारेउँ सब सैना ❋ पारथ मरण देखिये नैना
याते और न है सुख कोई ❋ देखत नयन शत्रु क्षय होई
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं ❋ श्रीहरि गगन तकायो तबहीं
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये ❋ रवि प्रकाश भा दिवस लखाये
चकित सबहिं अचंभा माने ❋ तब श्रीहरि पारथहिं बखाने
अर्जुन गहरु करत क्याहिकाजा ❋ देखत तुमहिं सिन्धु के राजा
तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना
जूझे शीश परन महि चह्यऊ ❋ तब अर्जुनसों माधव कह्यऊ

दो० अन्तरिक्षशिरलैचलहु, सुनहु बचन परिमान।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ लै शर शीश चल्यउ असमाना
हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये ❋ शरलागत शिर गिरन न पाये
पहुँचायो शिर पारथ बाणन ❋ जहां सुरथ तप साधत कानन
धस्यो ध्यान अञ्जलिकर साधत ❋ पुत्र हेतु शंकर अवराधत
कही कृष्ण अर्जुन सों ऐसो ❋ वाके हाथ परत शिर जैसो
यहि बिधिते अर्जुन शर मारे ❋ नृपके हाथ शीश लै डारे
छूट ध्यान चिन्ता मन कीन्हेउ ❋ मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं ❋ माथो सुरथ काटि गा तबहीं
छूटे प्राण गिस्यो तब धरणी ❋ कहिनजातिबिधिकीयहकरणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्जुन देखि भये भ्रम भारी ❋ यह चरित्र कहिये बनवारी

दो० शीश गिरो वाके करहि, भूमिसो दीन्हेउ डारि।
प्राण तज्यो क्यहि कारण, हमसों कहिय मुरारि॥

कथा पुरातन श्रीहरि कह्यऊ ❋ सुरथ नाम राजा यह रह्यऊ
सिन्धूराज महाबल भारी ❋ क्षत्री प्रबल बीर धनुधारी
राज भोग इन बहुबिधि कीन्हा ❋ पुनि तपहेतु जाय मन दीन्हा
शंकर की पूजा अवराधे ❋ सेवा करि गौरी ब्रत साधे
भयो प्रसन्न कहेउ गङ्गाधर ❋ जो इच्छा मांगहु सोई बर
दीजै पुत्र सुरथ यह कह्यऊ ❋ मरै न अमर सदा जग रह्यऊ
सुनिकै शंकर कहा बुझाई ❋ अमर छांड़ि मांगो बर भाई
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी ❋ यह बर दीजै अन्तर्यामी
जो वाको शिर करहुँ निपाता ❋ तुरत मरै तब ताकत ताता
एवमस्तु कहि शिव बर दीन्हे ❋ तब जयदर्थ जन्म जग लीन्हे

दो० दिनदिन सुतबाढ़नलग्यो, गयो महारथ बीर।
शिव पूजा संतत करत, श्रीसुरसरि के तीर॥

दुर्योधन की बहिनि दुसाला ❋ कै बिवाह दीन्हेउ जयमाला
जब भारत रणको पग दीन्हेउ ❋ सुरथ जाइ तप बन में कीन्हेउ
सुत के कुशल तपस्या करई ❋ इनहिं कहै जयदर्थ सो मरई
ता कारण इनको शिर ल्याये ❋ ताहि मारिकै तुम्हैं बचाये
यहिबिधि सबमाधवकहि दीन्हो ❋ हांको रथ भवनहिं शुभकीन्हो
धर्मराय सेना सब लीन्हे ❋ पारथ पन्थ चितै चित दीन्हे
यहि अन्तर रथ देखन पाये ❋ सबहिं कहे हरि अर्जुन आये
पारथ तब नृप के पग परसे ❋ आनन्दित सबके मन हरसे
धर्मराय माधव सों भेंटे ❋ त्रिबिध ताप तनुकी सब मेटे
हरिभाख्यउ प्रण राख्यउ पारथ ❋ बधि जयदर्थ कियो पुरुषारथ

दो० धर्मराय भाषन लग्यो, श्रीहरि सों यह बैन।
पारथप्रण रक्षा सदा, तुमहीं पङ्कज नैन॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जहँ जहँ गाढ़ पर्‍यो परतक्षक ❋ सबदिन तहां भये तुम रक्षक
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❋ जरत तहां प्रभु तुमहिं बचाये
रहौ पास सब दिन बनवारी ❋ द्रुपदसुताकी लाज निवारी
बन में दुर्बासा छल कीन्हेउ ❋ हेजगदीश राखि तुम लीन्हेउ
युद्ध के हेतु बिभीषण आये ❋ मारत प्रभु तुम हमहिं बचाये
जब कौरव बिष भोजन दीन्हे ❋ तहँहुँ आप रक्षा तब कीन्हे
बनमों तृषित भये बनवारी ❋ कर उठाय दीन्हेउ तुम झारी
दीनबन्धु मोरे हित काजा ❋ चरण धोइ बैठारेउ राजा
नारायण शर भीषम मार्‍यो ❋ मरत भीम प्रभु तुमहिं उबार्‍यो
हनुमत सों हठ पारथ कीन्हेउ ❋ दीनदयाल राखि तुम लीन्हेउ

दो० पारथ प्रणरक्षक सदा, श्रीबर दीनदयाल।
जाके तुमसे सारथी, ताहि न जीतै काल॥

जो जो चरण तुम्हारे ध्यावै ❋ संकट मों प्रभु सबहिं बचावै
ग्रह गृहीत प्रभु सुमिरण कीन्हे ❋ धाये त्वरित राखित्यहि लीन्हे
प्रण प्रहलाद राखि बिन कारण ❋ नरहरि रूप धरो जगतारण
ध्रुवकहँ अटल करेउ सब ऊपर ❋ बिद्यमान बिभीषण भूपर
भक्तबश्य भीषम प्रण कारण ❋ रणमहँ अस्त्र गह्यो जगतारण
धर्मराय यहि भांति बखाने ❋ श्रीपति सुनत बहुत सुख माने
दुर्योधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ ❋ आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ
तुम सब भये न कोऊ रक्षक ❋ बधि जयदर्थ गयो परतक्षक
सो सुनि द्रोण कहन असलागे ❋ सत्य बचन राजा के आगे
बलते अर्जुन सक्यउ न मारण ❋ रच्यो उपाय जगत के तारण

दो० रबि अस्थित निशि ह्वै गई, छलकीन्ह्योभगवान।
भक्तपरण राख्यो कही, सबलासिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वपञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

अब राजा जिय शोच न करिये ❋ आजुयुद्ध निशिकालाहिलरिये
साजी सेन बिलम्ब न लाये ❋ रथप्रति सबहि मशाल बराये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रथ प्रति चारि अश्व प्रति दोई ❀ यहिबिधि साज किये सब कोई
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे ❀ इत दिशि भीम पाण्डुदल साजे
बरत मशाल ज्योति उजियारी ❀ शोभा मानहुँ बरत सवारी
सुबरण शीश मुकुट छबिछाजै ❀ मौर मनहुँ बर शीश बिराजै
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे ❀ सुरकन्यन ब्याहन मन दीन्हे
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे ❀ बीरन धनुषफोंक मन दीन्हे
गजसों गज रथ सों रथ जोरे ❀ पैदल सों पैदल रण घोरे
यहि बिधि लरत जोरसों जोरे ❀ महाशूर मन नेकु न मोरे

दो० अर्जुन लीन्ह्यो धनुषकर, कीन्हो शर संधान ।
श्रीमुनिसोंकरउदितछबि, रथ हांको भगवान ॥

पाण्डवदल अनेक रण मारे ❀ तब गुरु द्रोण बाण परिहारे
अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना ❀ कुरुदल जूझि गिरेउ मैदाना
निशाकालमहँ अति पुरुषारथ ❀ द्वउदल कीन्हेउअतिशय भारथ
शकुनी ते सहदेव लराई ❀ महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई
जुरे भीम दुश्शासन साथा ❀ दोऊ सबल गदा लै हाथा
नकुल भिरे कृतवर्मा क्षत्री ❀ कृपाचार्य अरु सात्यकि अत्री
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा ❀ दोऊ मचे महा रणरङ्गा
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा ❀ दोऊ लरत आपु जय काजा
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ ❀ बाणनसों छायो सब भारथ
अन्धकार भा निशि अँधियारी ❀ चमकतअस्त्र होत उजियारी

दो० सुनियत धनुटङ्कोर अति, निरखत अस्त्र उदोत ।
हांक देत क्षत्री सबहिं, निशा युद्ध इमि होत ॥

द्रुपद नरेश द्रोण गुरु साथा ❀ खड्ग लेइ गुरु काट्यउ माथा
गिरेउ द्रुपद धरणी महँ जबहीं ❀ पाछे को गुरुजान्यउ तबहीं
धोखे मित्र बध्यो हम रनमें ❀ उपज्यो शोच द्रोण के मनमें
महारथी करि एक न लागे ❀ चलहिं न एक एक के आगे
सूझि न परत सघन अँधियारी ❀ आगे परत जात सो मारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकुट अनेक धरणि महँ परेऊ ❀ झलकतज्योति जरायनजरेऊ
गुरू द्रोण सबही ते कह्यो ❀ निशि को युद्ध अचेतो रह्यो
दोऊ दल बिश्रामहिं लीन्ह्यो ❀ गुरूद्रोण मन में दुख कीन्ह्यो
यहिबिधिकहासो कुरुपतिराजा ❀ गुरू शोच कीजै क्यहि काजा
अन्धकार निशि गये न चीन्हे ❀ अपने हाथ मित्र बध कीन्हे

दो० दुर्योधन भाषन लगे, कहोगुरुहिसमुझाय।
द्रुपदमित्रक्यहिबिधिभये, सुनि संदेह नशाय॥

द्रोण गुरू आये यहि बातन ❀ हे नरेश सुनु कथा पुरातन
तप कारण बन में हम आये ❀ यमुना मज्जन करन सिधाये
द्रुपद देखि कीन्हो परणामा ❀ आशिषदीन्ह होहु मनकामा
तब हम कहा कौन तुम अहहू ❀ कौन बर्ण क्यहि आश्रम रहहू
राजा द्रुपद अहै मम नामा ❀ बिधिबशताजिआयेनिजधामा
लिये किरातन राज हमारे ❀ हारे युद्ध बनै पगु धारे
रानी अरु मन्त्री लै साथा ❀ आये बनहिं अस्त्र नहिं हाथा
हम भाषो राजा सुनिलीजै ❀ मेरे साथ गमन अब कीजै
बधि किरात तुम कहँ बैठावों ❀ द्रोणनाम तब जगत कहावों
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर ❀ जूझी सैन्य सकल जाके कर

दो० क्षत्री ह्वै जुरिनहिं सके, तुम द्विज कोमल अङ्ग।
धनुबिद्याजानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग॥

तब हम याबिधि बचन सुनाये ❀ ज्यहि प्रकार धनुबिद्या पाये
परशुराम जब यज्ञ बिचारे ❀ मुनि सब सुनत तुरत पगु धारे
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा ❀ लै सब बिप्र भवन शुभ कीन्हा
बच्यो न कछू सबै उन दयऊ ❀ तब हम जाय उपस्थित भयऊ
परशुराम यह बचन सुनाये ❀ अवसर गये बिप्र तुम आये
बच्यो कमण्डलु और कुशासन ❀ धनुषबाणकर एकन आसन
तब हम कही सुनौ हे स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तरयामी
बहुत भांति दारिद्र सताये ❀ तब हम तुम्हैं ताकिकै आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रथ प्रति चारि अश्व प्रति दोई ❀ यहिबिधि साज किये सब कोई
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे ❀ इत दिशि भीम पाण्डुदल साजे
बरत मशाल ज्योति उजियारी ❀ शोभा मानहुँ बरत सवारी
सुबरण शीश मुकुट छबिछाजैं ❀ मौर मनहुँ बर शीश बिराजै
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे ❀ सुरकन्यन ब्याहन मन दीन्हे
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे ❀ बीरन धनुषफोंक मन दीन्हे
गजसों गज रथ सों रथ जोरे ❀ पैदल सों पैदल रण घोरे
यहि बिधि लरत जोरसों जोरे ❀ महाशूर मन नेकु न मोरे

दो० अर्जुन लीन्ह्यो धनुषकर, कीन्हो शर संधान।
श्रीमुनिसोंकरउदितछबि, रथ हांको भगवान॥

पाण्डवदल अनेक रण मारे ❀ तब गुरु द्रोण बाण परिहारे
अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना ❀ कुरुदल जूझि गिरेउ मैदाना
निशाकालमहँ अति पुरुषारथ ❀ द्वउदल कीन्हेउअतिशय भारथ
शकुनी ते सहदेव लराई ❀ महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई
जुरे भीम दुश्शासन साथा ❀ दोऊ सबल गदा लै हाथा
नकुल भिरे कृतवर्मा क्षत्री ❀ कृपाचार्य अरु सात्यकि अत्री
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा ❀ दोऊ मचे महा रणरङ्गा
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा ❀ दोऊ लरत आपु जय काजा
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ ❀ बाणनसों छायो सब भारथ
अन्धकार भा निशि अँधियारी ❀ चमकतअस्त्र होत उजियारी

दो० सुनियत धनुटङ्कोर अति, निरखत अस्त्र उदोत।
हांक देत क्षत्री सबहिं, निशा युद्ध इमि होत॥

द्रुपद नरेश द्रोण गुरु साथा ❀ खड्ग लेइ गुरु काट्यउ माथा
गिरेउ द्रुपद धरणी महँ जबहीं ❀ पाछे को गुरुजान्यउ तबहीं
धोखे मित्र बध्यो हम रनमें ❀ उपज्यो शोच द्रोण के मनमें
महारथी करि एक न लागे ❀ चलहिं न एक एक के आगे
सूझि न परत सघन अँधियारी ❀ आगे परत जात सो मारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकुट अनेक धरणि महँ परेऊ ❀ झलकतज्योति जरायनजरेऊ
गुरू द्रोण सबही ते कह्यो ❀ निशि को युद्ध अचेतो रह्यो
दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यो ❀ गुरूद्रोण मन में दुख कीन्ह्यो
यहिविधिकहासो कुरुपतिराजा ❀ गुरू शोच कीजै कयहि काजा
अन्धकार निशि गये न चीन्हे ❀ अपने हाथ मित्र बध कीन्हे

दो० दुर्योधन भाषन लगे, कहोगुरुहिसमुझाय।
द्रुपदमित्रक्यहिविधिभये, सुनि संदेह नशाय॥

द्रोण गुरू आये यहि बातन ❀ हे नरेश सुनु कथा पुरातन
तप कारण बन में हम आये ❀ यमुना मज्जन करन सिधाये
द्रुपद देखि कीन्हो परणामा ❀ आशिषदीन्ह होहु मनकामा
तब हम कहा कौन तुम अहहू ❀ कौन वर्ण क्यहि आश्रम रहहू
राजा द्रुपद अहै मम नामा ❀ विधिवशताजिआयेनिजधामा
लिये किरातन राज हमारे ❀ हारे युद्ध बनै पगु धारे
रानी अरु मन्त्री लै साथा ❀ आये बनहिं अस्त्र नहिं हाथा
हम भाषो राजा सुनिलीजै ❀ मेरे साथ गमन अब कीजै
वधि किरात तुम कहँ बैठावों ❀ द्रोणनाम तब जगत कहावों
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर ❀ जूझी सैन्य सकल जाके कर

दो० क्षत्री ह्वै जुरिनहिं सके, तुम द्विज कोमल अङ्ग।
धनुविद्याजानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग॥

तब हम याविधि बचन सुनाये ❀ ज्यहि प्रकार धनुविद्या पाये
परशुराम जब यज्ञ बिचारे ❀ मुनि सब सुनत तुरत पगु धारे
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा ❀ लै सब बिप्र भवन शुभ कीन्हा
बच्यो न कछू सबै उन दयऊ ❀ तब हम जाय उपस्थित भयऊ
परशुराम यह बचन सुनाये ❀ अवसर गये बिप्र तुम आये
बच्यो कमण्डलु और कुशासन ❀ धनुषबाणकर एकन आसन
तब हम कही सुनौ हे स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तरयामी
बहुत भांति दारिद्र सताये ❀ तब हम तुम्हैं ताकिकै आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यकइस बार निक्षत्रिन कीन्हे ❀ धरती धन बिप्रन कहँ दीन्हे
कही नारि तुम बेगि सिधावो ❀ परशुराम ते धन लै आवो
दो० आशाकरि आये हते, पै बिधि कीन्ह निरास।
कर्महीन जो जगतमों, भवन कुबेर उपास॥
भृगुपति चित्त दया ह्वै आई ❀ निकट बोलि म्वहिं बैन सुनाई
धनुबिद्या चाहहु तौ लीजै ❀ दुखी बिप्रत्वहिं बिमुख न कीजै
यह कहि धनुबिद्या म्वहिं दीन्हे ❀ पुनि सब अस्त्र समर्पण कीन्हे
परशुराम दीन्हे धनु शायक ❀ तीनि लोकके जीतन लायक
जब सब भेद द्रुपद सुनि लीन्हो ❀ आनँदसहित मित्रता कीन्हो
जो आपुहि किरात बध कीजै ❀ आधो राज्य बांटिकै लीजै
लै द्रुपदहि प्रणशालहि आये ❀ फल अरु मूल अहार कराये
प्रात होत लीन्हे धनु बाना ❀ द्रुपद द्रोण मिलि कीन्ह पयाना
सुनि किरात सब आतुरधाये ❀ तीनि कोटि सेना जुरि आये
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❀ आये शत्रु युद्ध अब कीजै
दो० ब्रह्म अस्त्र संधानिकै, हम कीन्हो परिहार।
तीनिकोटि चतुरङ्गदल, जारि कीन्ह सबछार॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठाये ❀ तिलक देइ शिर छत्र धराये
भाषो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❀ आधो राज्य भोग अब कीजै
रहै राज्य अस्थिर तव पासा ❀ हम तप हेतु जात बनबासा
असकहि हम प्रणशालहि आये ❀ मुनिसमाज सँग तप मनलाये
बिधिवश पुत्र जन्म जग लीन्हे ❀ अश्वत्थाम नाम त्यहि कीन्हे
मुनिकुँवरनसँग खेलत डोलत ❀ बातैं मधुर अमीसम बोलत
सब मिलि कह्यो दूध हम पाये ❀ सुनि सो पुत्र मातुपहँ आये
बालक कही दूध अब दीजै ❀ माता कही कहा अब कीजै
तण्डुल हुते भवन महँ थोरे ❀ शिला ते बांटि नीरते घोरे
भरी द्रोण द्रोणी का दीन्हे ❀ हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हे
दो० हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निरखि नारि रोवनलगी, जियमों भई गलान ॥
त्यहिअन्तर हम भवनहिं आये ❀ रोवत देखि महादुख पाये
तिय लागी करसों शिर मारन ❀ हम पूछी रोवत क्यहि कारन
दूध स्वादु मम पुत्र न जानत ❀ उज्ज्वल नीर दूध करि मानत
हम भाषो जनि होहु निरासा ❀ चलहु तुरत द्रौपद के पासा
देखि नगर आनन्दित भयऊ ❀ तब चलि भूपति द्वारहि गयऊ
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो ❀ कहौ कि जाय मित्र नृप आयो
सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा ❀ राजा मित्र खड़े तव द्वारा
द्विजअतिदुखित बसनतनुफाटे ❀ सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे
द्विज संग्रह है बड़ो अपावन ❀ दूरि करौ पावै नहिं आवन
यह सुनि द्वारपाल सब धाये ❀ खेदिदिये हम जान न पाये
दो० शाप दिये हम क्रोधकरि, जानि परम बिपरीति ।
धनमदते अपमान करि, अतिउदासचितथीति ॥
पुरी हस्तिना तब हम आये ❀ तुम बालक खेलन मन लाये
कूपहि परो गेंद जब जाने ❀ तुम सब शोच चित्त अनुमाने
सिद्धबाण संधानहिं कीन्हे ❀ गेंद उठाय हाथ तब दीन्हे
तुम सब देखि अचम्भव भयऊ ❀ लयो गेंद भीषमपहँ गयऊ
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ❀ आये द्रोण सत्य हम जाने
आदर करि निजगृह लै आयो ❀ चरण धोय आसन बैठायो
धेनु अनेक बहुत बिधि दीन्हे ❀ पांचक गांव समर्पण कीन्हे
मेरे संग रहौ सुख पैहौ ❀ बालक सब लै अस्त्र सिखैहौ
सिखये अस्त्रनिपुण सब कीन्हे ❀ सब मिलिकै गुरुदक्षिण दीन्हे
पारथ ते कछु बाणहि लीन्हे ❀ यहै बात याचज्ञा कीन्हे
दो० द्रुपद मित्र मेरो रहै, तिन कीन्हो अपमान ।
बांधि चरणतर डारिये, मांगतहौं यह दान ॥
अर्जुन जाइ किये तहँ भारथ ❀ महायुद्ध कीन्हे पुरुषारथ
यहि बिधिते पारथ शर सांध्यो ❀ नागफांस महँ द्रुपदहि बांध्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मम चरणन तर बांधि कै डारे ❀ गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे
तब हम छांड़ि द्रुपद कहँ दीन्हा ❀ मित्र जानिकै भाषण कीन्हा
यहिबिधि मित्रद्रुपद सुनु राजा ❀ मारेउँ आजु तुम्हारे काजा
सब मिलिकै आये निजधामा ❀ दोऊ दल कीन्हेउ बिश्रामा
होत प्रात कुरु पाण्डव साजे ❀ कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे
बेगि अनी आये मैदाना ❀ क्षत्री लगे चलावन बाना
दल चतुरङ्ग चले सब आगे ❀ नन्दिघोष हांकन हरि लागे
अर्जुन कीन्हे सेन निपाता ❀ कुरुपति कही द्रोणसों बाता

दो० हम अर्जुन सम्मुख लरैं, यह इच्छा मनमाह ।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु, को चलिहै नरनाह ॥

पढ़ि नारायणकवचहि दीन्हे ❀ रामकवच तेहि ऊपर कीन्हे
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये ❀ सन्मुख अर्जुन ते रण करिये
दृढ़ ह्वै धनुषबाण कर धरिये ❀ शत्रु निपाति राज्य पुनिकरिये
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ हृदय ताकिकै मारेउ बाना
निष्फल भये बाण सब टूटे ❀ कवच प्रताप अङ्ग नहिं फूटे
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हे ❀ तीक्षण बाण दिव्य कर लीन्हे
मारेउ दुर्योधन के अङ्गा ❀ भेद न भये बचे सब अङ्गा
तब पारथ यहि भांति बखाने ❀ अहो नाथ यह भेद न जाने
सुनि श्रीपति यहि भांति बुझाये ❀ कवच भेद नृप द्रोण बताये

दो० द्रोणकवचपढ़िकै दये, बाण न फूटत अङ्ग ।
ताकारण पारथ सुनहु, होत सकल शर भङ्ग ॥

भेद जानिकै शर परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे
बिरथ भयो दुर्योधन जाना ❀ तब गुरुद्रोण बाण संधाना
पांच बाण पारथ उर मारे ❀ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे
अश्वन तनु मारे दश बाना ❀ सहस बाण मारे हनुमाना
पारथ कोपि गहे शारँग कर ❀ होनलागि अति मारु परस्पर
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े ❀ मारेउ रथ के चारिउ घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपर और रथ किये सवारी ❀ अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी
महारथी सब हतैं धनुर्द्धर ❀ कठिनयुद्ध कीन्हे तेहि अवसर
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ ❀ सन्मुखरचो शैलसों भारथ
क्षत्री सकल करत संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराज के कामा

दो० बाणवृष्टि अतिहोतितब, शूलशक्ति परिहार ।
मुद्गर तोमर फरी कर, गदा खड्गकी मार ॥

सबहिं अस्त्र क्षत्री परिहारहिं ❀ सन्मुखज्यहिपावहिंत्यहिमारहिं
यहि बिधि युद्ध करै मनलाये ❀ लै कर गदा भीम तब धाये
गज अनेक मारे तरवारा ❀ रथी अश्व पैदल संहारा
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना ❀ भीम अङ्ग मारे दश बाना
रथचढ़ि भीम धनुष कर लीन्हे ❀ बाणवृष्टि त्यहि दलपर कीन्हे
धृष्टद्युम्न दुश्शासन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महाबल अत्री
कृपाचार्य कीन्हे संधाना ❀ फिरे नकुल त्यहिसन मैदाना
काशीराज द्रोण रण मण्डे ❀ बाणन ते रिपु सेन बिहण्डे
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ ❀ बाणन ते छाये सब भारथ
द्रोणी अङ्ग तीनि शर मारे ❀ चारि बाण अश्वन परिहारे

दो० क्रोधवन्त द्रोणी भये, कीन्हेउ शर सन्धान ।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

संध्या जानि किये बिश्रामा ❀ दोऊ दल आये निज धामा
भूप युधिष्ठिर कहिबे लागे ❀ मनमलीन मोहन के आगे
चौदह दिवस भये रण भारथ ❀ भीषमद्रोण सरिस पुरुषारथ
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे ❀ तब भीषम शरशय्या लीन्हे
गुरू कीन्ह सब सेन सँहारण ❀ अब उपाय कहिये जगतारण
श्रीहरि आपु कहन असलागे ❀ राजा धर्मराज के आगे
काल्हि प्रात याबिधि रण कीजै ❀ आज्ञा नृपति भीमको दीजै
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं ❀ आपु द्रोण मरिहैं बिनु मारहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह्यो भीम सुनिये जगबन्दन ❀ द्रोणपुत्र फेंकौं गहि स्यन्दन
यहिबिधि कहि भूपहि समुझाई ❀ शयन किये निद्रा तब आई
होत प्रात कीन्ही असवारी ❀ कुरुपाण्डव साज्यो दलभारी

दो० बम्ब दमामा होत हैं, अरु बैरख फहरात।
क्रोधवन्त रिससों भरे, बीरचले सब जात॥

महामत्त कुञ्जर बहु आवत ❀ कम्बु मनहुँ घन शब्द सुनावत
उड़िकै गरद लागि असमानू ❀ सूझि न परत अलोप्यउ भानू
हरित अरुण बैरख फहराने ❀ उपमा इन्द्रधनुष समजाने
दोऊ दल अतिशोभा पावत ❀ हिंसत तुरँग जु पैदल धावत
धनु टङ्कोर घोर धुनि राजै ❀ उभय फौज महँ मारु बिराजै
क्षत्री सकल करन रण लागे ❀ अर्जुन द्रोण करण के आगे
श्वेतबर्ण पारथ रथ राजे ❀ श्यामबर्ण रथ द्रोण बिराजे
हांक देत हांकत जगतारण ❀ सारथि भये भक्त के कारण
अर्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ ❀ दल चतुरङ्ग भयानक भारथ

दो० दोउदलबीरनरणरचेउ, कहिन सकहिं कबि बैन।
शरसमूह छाये गगन, रबि नहिं सूझत नैन॥

कुञ्जर भिरत करत रण घोरा ❀ होइ चौदन्त जोर सों जोरा
रथी रथी सों सरस लराई ❀ छूटत बाण बुन्द की नाई
अश्व अश्व लै सम्मुख जोरहिं ❀ शूलघाव सों बखतर फोरहिं
पैदल ते पैदल रण घोरा ❀ अरुझे सबहिं जोरसे जोरा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ तोमर गदा खड्ग सों मारे
जूझि गिरहिं भारत मैदाना ❀ सुरपुर गवनहिं चढ़े बिमाना
यहिबिधि करहिं युद्धकी करणी ❀ रुण्डमुण्ड पाटे सब धरणी
भूत बिताल योगिनी गावहिं ❀ जम्बुक अपनो भाव दिखावहिं
उड़हिं काक अन्त्रहि लै कैसे ❀ टूटे डोरि चङ्ग गति जैसे
यहि बिधि होत भयानक भारथ ❀ क्षत्री सबै करत पुरुषारथ

दो० गुरू द्रोण अति क्रोधकै, मारेउ तीक्षण बान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डव दल जूझे घने, शर छाये असमान ॥
अर्जुन बाण वृष्टि झरिलाये ❋ कौरव दल बहु मारि गिराये
उरझे खेत जोर सों जोरा ❋ लागे करन महारण घोरा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❋ सम्मुख जाइ खड्ग शिरझारे
कोतल भये कटारन जोरहिं ❋ जूझिजायँ मुखनेकु न मोरहिं
जहां जहां अर्जुन मन धावत ❋ तहां तहां हरि रथ पहुँचावत
सारथि भये भक्तके कारण ❋ करिताजन हांकत जगतारण
पारथ करते जे शर छूटत ❋ अङ्ग भेदि धरणीमहँ फूटत
गुरू द्रोण उत बाण चलावत ❋ श्वेतश्याम रथ शोभा पावत
अर्जुन कोपि किये संधाना ❋ द्रोण अङ्ग मारे शत बाना
गुरू द्रोण शर कोपि प्रहारे ❋ सो शर पारथ के उर मारे

दो० तीस बाण अश्वन हने, लक्षबाण हनुमान ।
पीताम्बर तन अरुणकरि, महाबीर बलवान ॥

अर्जुन देखि क्रोध जिय सरषे ❋ गुरुपर लागि बाण बहु बरषे
पारथ द्रोण करत पुरुषारथ ❋ बलसम दोउ करत महभारथ
दोऊदल महँ लोहा बाजत ❋ सिंहनाद क्षत्री गण गाजत
अर्जुन द्रोण सरस शर छांटत ❋ बाणन ते बसुधा सब पाटत
शरशर भिरत होत चिग्घारा ❋ योगिनि हाँकदेत करिहारा
रथ ते उतरि भीम तब धाये ❋ गदा धाव सब बीर गिराये
कृतबर्मा राजा सँग साथी ❋ अश्वत्थाम नाम त्यहि हाथी
भीम उपर कुञ्जर जब धावा ❋ बीचहिं अर्जुन मारि गिरावा
द्रोण पुत्र कीन्हों सन्धाना ❋ क्रोधित भीम जुरे मैदाना
गुरुसुत लग्यो कठिन शर मारन ❋ पाण्डवदल रण गिरेउ हजारन

दो० भीमसेन अति क्रोधकै, गहिउठायकैरत्थ ।
द्रोणसुतहि फेंक्यउ तबहिं, महाबीर समरत्थ ॥

तीनि शतहि योजन परिवेशा ❋ विधिवश गयउ उड़ेउ सो देशा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भुवनेश्वर शंकर अस्थाना ❀ अमर हतेउ नहिं त्याग्यउ प्राना
चूरण भये सहित रथ सारथ ❀ लाग्यो धक त्याग्यो पुरुषारथ
शंकर त्वरित नीर लै धाये ❀ बदन सींचिकै बिप्र बचाये
अर्जुन द्रोण सरिस रण माच्यउ ❀ जूझे घने अल्प दल बाच्यउ
सब सेना यहि भांति बखाना ❀ जूझे द्रोणपुत्र मैदाना
निजसेना सों द्रोण बखानत ❀ कितसुतगयोकहहु तुम जानत
सब मिलि कहैं गुरू सों बैना ❀ लरत भीमसों देख्यो नैना
की भाजो की जूझो रनमों ❀ यहकछुजानिपरेउनहिंमनमों

दो० कही द्रोण तब भीम सों, जुरो हुतो तुम सङ्ग ।
कहा भयो सुत कितगयो, कहौ सांच रणरङ्ग ॥

भाषो भीम गदा परिहारे ❀ रथ समेत चूरण करि डारे
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने ❀ मिथ्या बात भीम की जाने
कह्यो द्रोण सों पारथ बैना ❀ बध्यो भीम देख्यों मैं नैना
अर्जुन बचन सुनत मन ऊबो ❀ करुणासिन्धु बीच जिय डूबो
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना ❀ पूर्व आपदा बिधि निर्माना
अर्जुन के मन भयो अँदेशव ❀ केहिबिधि आपद पाई केशव
श्रीहरि कही सुनहु हो पारथ ❀ अकथकथाबिधिकी पुरुषारथ
तप साधत जब बनमहँ हते ❀ मुनि सबके आश्रम यकमते

दो० मुनिकुमार क्रीड़ा करत, सब मिलि एकै सङ्ग ।
उद्दालकसुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रङ्ग ॥

बाघ समान शब्द जो कीन्हा ❀ ऋषिनारिन कहँ बहुभयदीन्हा
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा ❀ शब्द बेधि इन बाण चलावा
मुखलाग्योशर बिधिकी करणी ❀ छूटे प्राण परेउ तब धरणी
सब बालक मिलि शोर मचायो ❀ सुनिकै सकल बिप्रगण धायो
द्रोणआइ देख्यो शिशु मर्यो ❀ अपने चित्त शोच बहु कर्यो
क्रोधवन्त उद्दालक भयऊ ❀ द्रोणहिंनिरखि शापतब दयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र शोक हा त्यागत प्राना ❀ तुम ऐसे मरिहौ रण ठाना
यहिबिधि शाप द्रोण कहँ दीन्हा ❀ तबद्विजप्राणत्याग सो कीन्हा
वही समय अब आयो पारथ ❀ मुये द्रोण जीते हम भारथ
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों बचना ❀ करत सदा तुम मिथ्यारचना

दो० भूप युधिष्ठिर बूझिकै, तब त्यागहिं हम प्रान।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदा बचन परिमान॥

जबहिं द्रोण यह बचन सुनाये ❀ तब हरि धर्मराय ढिग आये
तबहिं द्रोण राजा के आगे ❀ कर उठाइ कै पूछन लागे
सत्यबचन तुम सबदिन भाष्यउ ❀ हम दृढ़ता तुम ऊपर राख्यउ
जूझे सुत तुम देखे नैना ❀ हे नृप सत्य कहौ यह बैना
श्रीहरि कही भूप कहि दीजै ❀ अपने काज कहा नहिं कीजै
कही भूप सुनिये जगतारण ❀ मिथ्याबचनकहहुक्यहिकारण
सात द्वीप संपति जो दीजै ❀ तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजै
तब श्रीहरि अस कहा बखानी ❀ क्यहि कारण तुम भारतठानी
जबहिं भूप पांसा मन लाये ❀ तब यह धर्म बिचार न आये
राजा द्रुपद सुता पटरानी ❀ गहिकर केश सभामहँ आनी

दो० दुश्शासन अञ्चल गहे, हरण चीरके काल।
तब यह धर्म कहां रहै, भाष्यो दीनदयाल॥

तुम जब लाज छांड़िकै दीन्हेउ ❀ द्रुपदसुता ममसुमिरण कीन्हेउ
ये बातैं बिसरीं क्यहि कारण ❀ यहिबिधि कही जगतकेतारण
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❀ अर्द्धरात्रि महँ अनल लगाये
बिदुर खम्भ को मारग लयऊ ❀ तब तव धर्म कहां नृप गयऊ
जब भीमहिं बिषभोजन दीन्हेउ ❀ सुरसरि बोरिगमनघर कीन्हेउ
पुर पाताल कोन गहि गह्यऊ ❀ तब यह धर्म कहां तव रह्यऊ
कृष्ण बचन नृप के मन आये ❀ तब द्रोणहिं याबिधि समुझाये
अश्वत्थामा हत रण भयऊ ❀ की नर की कुंजर कहिदयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आधे बचन द्रोण सुनि पाये ❋ आधे महँ हरि शंख बजाये
सुनिकै द्रोण सत्य करि जानो ❋ अपनो मरण हृदयमहँ मानो

दो० यहि अन्तरमहँ सप्त ऋषि, गगनपन्थमहँ आय।
भरद्वाज मुनि साथ लै, द्रोणहि कहा बुझाय॥

तुम ऋषिबंश महा अभिमानी ❋ क्षत्री धर्म करत अज्ञानी
अस्त्रघाव जो प्राण गँवावहु ❋ तौ तुम स्वर्गबास नहिं पावहु
सुनि सब देखि दण्डवत कीन्हे ❋ तब करजोरि कहन कछु लीन्हे
तुम आज्ञा माथे पर लीजै ❋ ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब कीजै
धरो धनुष झारी कर लीन्हो ❋ कै आचमन देह शुचि कीन्हो
अङ्गन्यासकरि नासहि गह्यऊ ❋ धरिकर ध्यान मौन ह्वै रह्यऊ
यहि अन्तर बिराट नृप आये ❋ सिंहनाद कै हांक सुनाये
द्रोण सँभारि अस्त्र कर गहहू ❋ मारत हौं तीक्ष्णशर सहहू
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा ❋ ध्यान छांड़ि शारँगकर लीन्हा

दो० दिव्यबाण संधानिकै, किये द्रोण परिहार।
मुकुटसहितशिरकटिकै, पस्योधरणिबिकरार॥

भाषो ऋषिन द्रोण के आगे ❋ छांड़ि ध्यान तुम लरिबेलागे
दोउकर जोरि द्रोण तब कह्यऊ ❋ बीर हांक सुनि ज्ञान न रह्यऊ
ताते मैं बिराट बध कीन्हे ❋ यह कहि बहुरि नीरकर लीन्हे
करि अस्नान ध्यान दृढ़ साधो ❋ परमज्योति मनमों अवराधो
खैंची पवन ऊर्ध्वगति ध्याये ❋ ब्रह्मरन्ध्र भेदन कहँ आये
निसरो पवन ऊर्ध्वगति भयऊ ❋ हरि अर्जुन देखन को गयऊ
भरदाज ऋषि सप्तक जेते ❋ ब्रह्मलोक सँग पहुँचे तेते
भारत मन क्षत्री तब लाये ❋ धृष्टद्युम्न क्रोधित होइ धाये
रथते उतरि खड्ग लै हाथा ❋ मारो जाय द्रोण को माथा
शीश समेत परो तन धरणी ❋ द्रुपदपुत्र कीन्हेउ यह करणी

दो० पाण्डवदलजयजयकरत, जीतिखड़े मैदान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौरवदलहिं मलीन मन, ज्योंसंध्याकोभान॥
तब रथ हांकि करणचलिआये ❀ आगे ह्वै सेना अटकाये
संध्या जानि कीन्ह तब गवना ❀ कुरु पाण्डव आये फिरि भवना
आगे कथा कहन मन लायउ ❀ अश्वत्थाम कछु चेतन पायउ
द्वउ करजोरि शम्भु के आगे ❀ यहिबिधि बिनयकरनतब लागे
फेंको रणते भीम भयंकर ❀ प्राणदान दीन्हेउ मोहिं शंकर
यहिबिधि बरदीजै म्वहिं स्वामी ❀ होहुँ जगत में मनसागामी
आजु राति पहुँचों कुरुखेता ❀ कुरु पाण्डव जहँ सेन समेता
शंकर कही बिलम्ब न लैहौ ❀ एक पहर महँ जाइ तुलैहौ
पहर एक महँ आयो तहँवाँ ❀ दलसमेत कुरुपतिरह जहँवाँ

दो० दुर्योधन भाषनलग्यो, द्रोणी सुनिये बात।
आजु युद्ध जूझे गुरू, धृष्टद्युम्न असिघात॥

सो सुनि द्रोणी कीन्ह्यउ क्रोधा ❀ पाण्डव सहित बधौं सब योधा
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना ❀ तब पितृहिं देहौं जलदाना
यह सब कथा यहांतक रह्यो ❀ धर्मराय उत हरिसों कह्यो
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो ❀ इहै शोच मेरे मन रह्यो
मिथ्या दोष रहो है माधव ❀ नहिं जानों करिहैं बिधि काधव
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानी ❀ धर्म कि गति सूक्ष्म यह जानी
मिथ्या करिकै स्वर्ग सिधाये ❀ सत्य कही ते नरकहि पाये
समय बिचारि बात जो कहिये ❀ अन्तकालमहँ ते सुख लहिये
धर्मराय परशंसा कीन्हा ❀ हरिसों कथा सु पूछै लीन्हा
तब श्रीहरि यह कह्यउ बुझाई ❀ नृप हरिचन्द्र राज जब पाई

दो० सत्यधर्मपथ नेमब्रत, सबहि चलत संसार।
साहभवन मूसनगयो, गहो चोर कोउबार॥

लैकै नृप आगे त्यहि कीन्हा ❀ बधहु तुरत यह आज्ञा दीन्हा
तब कोटवार मारिबे लाग्यो ❀ बन्धन तोरि चोरसम भाग्यो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Jain Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऋषि आश्रमके निकटहिं आवा ❀ देख्यो लता सघनद्रुम छावा
चोर दूत नृप देख न नैना ❀ यहिविधि छियेउ इहां मनु हैना
आइ गयो सब पाछे लागे ❀ कह्यो जोरिकर ऋषिके आगे
चोर एक भागो इत आवा ❀ सत्यकहौ मुनि जो लखि पावा
तब ऋषि कह्यो सत्य यह बैना ❀ लता ओट मैं देख्यों नैना
लै कोटवार बांधि तेहि टस्यो ❀ तब नृप चोर केर बध कस्यो
यह अपराध ऋषय शिरपस्यो ❀ अन्तकाल नरकहि थल कस्यो
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी ❀ समयजानि कै बोलिय बानी

दो० सत्यवचन सों भाषि कै, परो नरक अति घोर ।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ, नृपबध कीन्हे चोर ॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई ❀ श्रीमाधव यह कथा सुनाई
परशुराम त्रेता अवतारा ❀ क्षत्रिनमारि उतारेउ भारा
पिता बैर कारण व्रत लीन्हे ❀ इकइस बार निक्षत्रक कीन्हे
भूप सुबाहु बधो बल भारी ❀ पुर हस्तिना केर अधिकारी
भूप मारि सेना सब जीते ❀ भागे युग कुमार भयभीते
भृगुपति तिनके पाछे धाये ❀ विप्रभवनमहँ बालक आये
महा त्रास तब वदन सुखाने ❀ हिमऋतुमनहुँकमलकुम्हिलाने
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक ❀ शरणागत कीजे प्रतिपालक
परशुराम त्यहि अन्तर आये ❀ महाक्रोध करि हांक सुनाये
बालकबेगि निकरिनहिंआवत ❀ नहिंतौयहिघर आगिलगावत

दो० सभय होय तब विप्रबर, परे चरण तब आय ।
स्वामी यह कारणकहा, आपुहि आयो धाय ॥

क्षत्री के बालक दुइ आये ❀ तेरे भवन देखि हम पाये
देहु निकारि तुरत बध करऊं ❀ तब अपनेभवनहिं अनुसरऊं
दुइ बालक मेरे घर अहईं ❀ हैं द्विज जाति पढ़त इतरहईं
परशुराम कहि बालक लावहु ❀ तुरतआनिकै मोहिं दिखावहु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिप्र कही चलिये अब भवना ❀ अभिअन्तरकहँ कीजै गवना
जबद्विज अभिअन्तर लै आयो ❀ द्वउबालकतब आनिदिखायो
परशुराम देखत अनुमाना ❀ क्षत्रियकरिनिश्चय जियजाना
मिथ्या कहौ बिप्र क्यहिकारण ❀ हैं क्षत्री दीजै म्वहिं मारण
कोटि शपथ कै विप्र बखाना ❀ द्विजबालक हम निश्चयजाना
रन्धन करि बालक के हाथा ❀ भोजन करहु बिप्र इनसाथा

दो० सो सुनि बिप्र अनन्दहै, करि रन्धन शिशुहाथ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ॥

परशुराम तब क्रोध निवारेउ ❀ उठिकै अपने भवन सिधारेउ
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये ❀ अन्त विप्र बैकुण्ठ सिधाये
संशय धर्म भूप के कारण ❀ यहिबिधि आपकही जगतारण
श्रीमाधव यह आप बखाने ❀ भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने
कही कृष्ण राजा सुनि लीजै ❀ प्रात होत रण उद्यम कीजै
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ ❀ पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं ❀ कुरुपति कर्ण मुकुटशिर धरिहैं
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक ❀ महा मारु करि हैं परतक्षक
सुरपति शक्ति लई यहि कारण ❀ कर्ण वीर अर्जुन के मारण
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै ❀ बज्र शक्ति सों कौन बचैहै

दो० धर्मराय यहिबिधिकही, सुनिये श्रीभगवान।
पाण्डव संकट परहिं जब, तुम रक्षक परधान॥

दीनबन्धु जाके रथ सारथ ❀ मारिसकै को रणमहँ पारथ
कुरुपति जरत सेनबल कारण ❀ मेरेबल तुमहीं जगतारण
यहसुनिकृष्ण बहुतसुखमान्यो ❀ नृपकहँ परम हितूकै जान्यो
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये ❀ करि आदर आसन बैठाये
तुम बल यह भारत हम ठाना ❀ मृत्युशेष आयो नियराना
मुकुट बांधि सेनापति हूजै ❀ अर्जुन रण समता नहिं दूजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ ❀ पाण्डव सैन्य बधौं रण भारथ
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि ❀ निश्चय अर्जुन बन्धु सँहारहि
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये ❀ सेनापति करि मुकुट बँधाये

दो० पाण्डव के रक्षक सदा, भक्त बश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचितेद्रोणार्जुनयुद्धवद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्वसमाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ कर्णपर्व ॥

प्रथमहिं करि गुरु चरण प्रणामा ❋ जाते होहिं सिद्ध सब कामा
बन्दौं रामचन्द्र गुणसागर ❋ सीतापति रघुबंश उजागर
महिमा अगम और नहिं जाना ❋ परम भक्त जानत हनुमाना
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❋ तिथिपञ्चमि यह कथा प्रकासा
सम्बत सत्रह शत चौबीशा ❋ नौरँगशाह दिलीपति ईशा

दो० रघुपति चरण मनाइ कै, व्यासदेव धरिध्यान।
कर्ण पर्व भाषा रचत, सबल सिंह चौहान॥

गुरू द्रोण जूझे मैदाना ❋ दुर्योधन तब आपु बखाना
द्रौणी कर्ण शल्य सब अत्री ❋ अरु अनेक बैठे हैं क्षत्री
अब काके शिर मुकुट बँधैये ❋ जाते जयति पत्र रण पैये
द्रौणी कहा भूप सुनि लीजै ❋ आपु शोच केहि कारण कीजै
की मेरे शिर दीजै भारा ❋ नातरु कर्ण करहु सरदारा
रबिसुत कर्ण महाबल भारी ❋ अर्जुन के समान धनुधारी
तब राजा यहि भांति बखाना ❋ गुरुसुतबचन कह्यो परमाना
शकुनी शल्य दुशासन भाखो ❋ दल को भार कर्ण पर राखो
कही कर्ण कुरुनाथ भुवारा ❋ जो सौंपत मोरे शिर भारा
करिकै युद्ध पाण्डवन मारहुँ ❋ सेना सहित न एक उबारहुँ
अर्जुन सहित एक गुण मारथ ❋ मनगामी श्रीपति हैं सारथ
कृष्ण समान सारथी पावों ❋ कोटिन अर्जुन मारिगिरावों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० शकुनी कह्यो बिचारिकै, दुर्योधन सों बैन।
शल्य सारथी कृष्णसम, और न देखो नैन॥

मामा शल्य रचहु पुरुषारथ ❀ कर्णरथाह होवहु तुम सारथ
कही शल्य नृप लोग न थोरे ❀ कर्णरथाहे हम हांकहिं घोरे
कुरुपति कही शल्य सुनु राजा ❀ कहा न कीजतु अपनो काजा
सारथि होहु हमारे स्वारथ ❀ कृष्णसमेत जीतिये पारथ
करगहि नृप बहुभांति बुझाये ❀ शल्यहि लिये कर्ण पहँ आये
कृष्णसमान सारथी लीजै ❀ रणमहँ सब पाण्डव बध कीजै
सुनिकै कर्ण अनन्दहि छाये ❀ धाइ शल्य कहँ कण्ठ लगाये
शल्य नरेश सारथी मेरो ❀ अब अर्जुनसम बधौं घनेरो
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ ❀ एकते एक सरिस नहिं कोऊ
बिप्रन सकल बेदध्वनि कीन्हे ❀ मुकुट नरेश कर्णशिर दीन्हे
सब दिन मेरो मित्र भरोसव ❀ अर्जुन सहित जीतिहैं केशव

दो० सेनापति कर्णहिं किये, मुकुट बांधिकै शीश।
धर्मराय सों इतकहत, सत्यसिन्धु जगदीश॥

अब अनर्थ उपजा अति भारी ❀ रविसुत कुरुसेना अधिकारी
लिये बोलि सहदेवहि आय ❀ सब मिलिमन्त्रबिचारन लाये
कही कृष्ण कुन्ती पहँ जैये ❀ पांचौ बाण मांगि लै ऐये
जे शर परशुराम तेहि दीन्हे ❀ अर्जुन बधन प्रतिज्ञा कीन्हे
नितप्रति वह पूजत है बाना ❀ पारथ पर करिहै संधाना
तब हमहूँ नहिं सकैं बचावन ❀ यहि बिधि कही पतितकेपावन
हम नीके जानत हैं भेवा ❀ की पूछहु मन्त्री सहदेवा
की कुन्ती जानति है तनमों ❀ पाप धर्म दोऊ हैं मन मों
द्रौणी कर्ण बिलम्ब न लइहै ❀ माता जानि त्वरितसो दइहै
सुनि कुन्ती उठिकीन्हेउ गवना ❀ आई त्वरित कर्ण के भवना
उठिकै कर्ण किये परणामा ❀ मातु गमन कीन्हे केहि कामा
सुनि कुन्ती यह बात जनाई ❀ अर्जुन कर्ण सहोदर भाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राजको भार।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार॥

सुनिकै कर्ण कही यह बाता ❋ क्षत्री धर्म कठिन है माता
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक ❋ अब तुम कही हमारे बालक
अशन बसन बहुभांति बड़ाई ❋ दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल ❋ ऐसे समय कहा कीजै छल
सात द्वीप इन्द्रासन पावों ❋ तौयहिसमय न चित्त डोलावों
तब कुन्ती मांग्यो सो बाना ❋ कर्णदीन्ह मन भय नहिं आना
जे दिनकर दीन्ह्यों ते बाना ❋ माता को दीन्हों करिदाना
कर्ण भये सेनापति भाई ❋ इन्द्रलोक महँ परी अवाई
सुनिकै इन्द्र चितहि दुख मानो ❋ अब अर्जुन को भयो निदानो
सुत सनेह हित तुरत सिधाये ❋ चढ़ि बिमान कुरुखेतहि आये
रथ ते उतरि द्वार पगुधारे ❋ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे
द्रौणी तब तहँ आय जनायो ❋ देवनाथ द्वारे पर आयो
आतुर चल्यो बहुत सुखमाना ❋ अपनो जन्म सुफल करि जाना
परदक्षिणा प्रणाम जनाये ❋ चरण रेणु लै माथ लगाये
आजु सुफल दिनभयो हमारा ❋ देवनाथ द्वारे पगु धारा
तुम तौ तीन लोक के स्वामी ❋ कहिय जानि आपन अनुगामी
सहस नयन तब कहा बिचारी ❋ सुनहु करण यह बात हमारी
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो ❋ हमहूँ कछु मांगन को आयो
कहौं सत्य जो मांगे दीजै ❋ तब तुम ते याचज्ञा कीजै

दो० कही कर्ण आनन्द सों, कियो सत्य यहजान।
नाहिं न कीन्हा जन्मभरि, दीजै तन धन प्रान॥

मेरो कर्म सबन सों भारी ❋ जो सुरपति भयोआयभिखारी
मांगो तुरत गहरु जनि लावहु ❋ जो इच्छाकरिहौ स्वइ पावहु
दाता हौ सब लोक बखाना ❋ कुण्डल कवच दीजिये दाना
जन्मसमय जो दिनकर दीन्हा ❋ ते हम अब याचज्ञा कीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो ❀ तालझोरिकै कवचहि काढ़्यो
हँसिकै कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो ❀ साधुसाधु सब देवन कीन्ह्यो
देवराज तब बाहर आये ❀ चढ़िबिमान चलिबे मन लाये
अति अटको धरणी रथ जोरे ❀ हांके थके मातलि सो घोरे
चकित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर ❀ अचल बिमान भयो ज्यों मन्दर
तब मातलि याहिभांति बखाना ❀ पापभार नहिं चलत बिमाना
सुर राजा याचज्ञा लायो ❀ भख्यो पाप रथ चलै न पायो
धन्य कर्ण जग में यश पायो ❀ जिन सुरपति को हाथ वँदायो

दो० कहमातलितबइन्द्रसों, बचन सुनौ परमान ।
कर्णहि हाथ उठाइयै, जाहिप्रकाश बिमान ॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये ❀ धन्यधन्य कहि बचन सुनाये
मांगहु बर जो इच्छा होई ❀ तव समान दाता नहिं कोई
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये ❀ आखर चारि न गुरू पढ़ाये
नाहिंन पढ़े ज्ञान मो अपने ❀ कहूं कह्यो कबहूं नहिं सपने
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो ❀ निष्फल दर्शन होइ हमारो
मांगहु बर तुम को कछु दीजै ❀ तबहम गमन अमरपुर कीजै
कही कर्ण मांगहुँ नहिं मुखते ❀ लियो चहहु तौ देहौं मुखते
निकरहिं प्राण देह बरु छांड़ै ❀ कबहुं न कर्ण हाथ को वाड़ै
कह्यो इन्द्र जब दानहिं दीजै ❀ बिप्रमुखहिं कछुआशिष लीजै
परशुराम धनु बिद्या दीन्हे ❀ तबतुम चरण परशिकै लीन्हे
कह्या इन्द्र यह नीति बिचारो ❀ सुनो कर्ण यक बचन हमारो
अस्त्री होइ दान जो लेई ❀ ता कहँ दोष कोउ नहिं देई

दो० कर्णअस्त्र गहि लीजिये, बिदित बेद यह बैन ।
भाष्यो व्यास बिचारिकै, जहां देन तहँ लैन ॥

कही कर्ण जो अति हठ कीजै ❀ बज्र शक्ति म्वहिं मांगे दीजै
सुनिकै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे ❀ बहुरि बचन यह कहिबे लीन्हे
बज्र शक्ति जानत संसारा ❀ यह तौ है निज अस्त्र हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्ण बीर जो यहै चलैहौ ❋ ताहि मारि मेरे कर ऐहौ
चढ़े जाइ रथ कीन्ह्यो गवना ❋ आये धर्मराय के भवना
राजा देखि दण्डवत कीन्हा ❋ हृदय लगाय शक्र तब लीन्हा
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये ❋ कुण्डलकवच मांगि हम लाये
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई ❋ कवचभेद भेदहि नहिं कोई
ता कारण दोऊ हम लीन्हे ❋ तोहिते बज्रशक्ति वहिं दीन्हे
अर्जुन कर्ण बैर है भारी ❋ तुम रक्षा करिहौ बनवारी
कहि सुरसाइँ गमन तब कीन्हे ❋ धर्मराय सेनहिं मन दीन्हे
प्रातहोत दोऊ दल साजे ❋ शब्द अघात बाजने बाजे

दो० गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ।
पहिरि सजोदल अस्त्रलै, चढ़े बीर समरत्थ॥

शैल नरेश आपु रथ साजे ❋ पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे
द्रौणी बीर दुशासन चढ़्यो ❋ अरु अनेक बीरन मन बढ़्यो
शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री ❋ दुर्मुख द्विरद महाबल अत्री
दुर्योधन रथ सोहै कैसे ❋ इन्द्र बिमान देखिये जैसे
यहिबिधि चढ़े साजि सब सैना ❋ कहो कर्ण राजा सों बैना
अक्षयत्रोण है अर्जुन बांधे ❋ घटत नाहिं कोटिनशर सांधे
मेरे रथ जो शर पहुँचैहौ ❋ रणमहँ बिजयपत्र तब पैहौ
राजा कही धरौ जनि धोखा ❋ दोऊ हाथ चलतशर चोखा
दशहजार हाथिन पर लादे ❋ चित्रितसबहि एकनहिं सादे
दशहजार भरि ऊंट लदाये ❋ दशहजार गाड़िन भरवाये
बीस हजार कहारन दीन्हे ❋ चलेसाथ सब बहिंगिन लीन्हे
कनकफोंक अति तीक्षण धारा ❋ गीध पक्ष ते सबहिं सँवारा

दो० कुरुपति चले साजिदल, सेना सिन्धुसमान।
कर्ण तेज इमि देखिये, मनहुँ दूसरो भान॥

श्वेत पीत बैरख फहराने ❋ अरुणश्याम रँग सबुजसोहाने
यहिबिधि ते कीन्हेउ दलसाजा ❋ बाजन लाग युद्ध के बाजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो ❋ तालखोरिकै कवचहि काढ़्यो
हँसिकै कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो ❋ साधुसाधु सब देवन कीन्ह्यो
देवराज तब बाहर आये ❋ चढ़िबिमान चलिबे मन लाये
अति अटको धरणी रथ जोरे ❋ हांके थके मातलि सो घोरे
चकित है तब कह्यो पुरन्दर ❋ अचल बिमान भयो ज्यों मन्दर
तब मातलि यहिभांति बखाना ❋ पापभार नहिं चलत बिमाना
सुर राजा यहचज्ञा लायो ❋ भस्यो पाप रथ चलै न पायो
धन्य कर्ण जग में यश पायो ❋ जिन सुरपति को हाथ बँदायो

दो० कहमातलितबइन्द्रसों, बचन सुनौ परमान।
कर्णहि हाथ उठाइयै, जाहिअकाश बिमान॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये ❋ धन्यधन्य कहि बचन सुनाये
मांगहु बर जो इच्छा होई ❋ तव समान दाता नहिं कोई
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये ❋ आखर चारि न गुरू पढ़ाये
नाहिंन पढ़े ज्ञान मो अपने ❋ कहूं कह्यो कबहूं नहिं सपने
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो ❋ निष्फल दर्शन होइ हमारो
मांगहु बर तुम को कछु दीजै ❋ तबहम गमन अमरपुर कीजै
कही कर्ण मांगहुँ नहिं मुखते ❋ लियो चहहु तौ देहौं मुखते
निकरहिं प्राण देह बरु छांड़ै ❋ कबहुं न कर्ण हाथ को वाड़ै
कह्यो इन्द्र जब दानहिं दीजै ❋ बिप्रमुखहिं कछुआशिष लीजै
परशुराम धनु बिद्या दीन्हे ❋ तबतुम चरण परशिकै लीन्हे
कह्या इन्द्र यह नीति बिचारो ❋ सुनो कर्ण यक बचन हमारो
क्षत्री होइ दान जो लेई ❋ ता कहँ दोष कोउ नहिं देई

दो० कर्णअस्त्र गहि लीजिये, बिदित बेद यह बैन।
भाष्यो व्यास बिचारिकै, जहां देन तहँ लैन॥

कही कर्ण जो अति हठ कीजै ❋ बज्र शक्ति मोहिं मांगे दीजै
सुनिकै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे ❋ बहुरि बचन यह कहिबे लीन्हे
बज्र शक्ति जानत संसारा ❋ यह तौ है निज अस्त्र हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्ण बीर जो यहै चलैहौ ❋ ताहि मारि मेरे कर ऐहौ
चढ़े जाइ रथ कीन्ह्यो गवना ❋ आये धर्मराय के भवना
राजा देखि दण्डवत कीन्हा ❋ हृदय लगाय शक्र तब लीन्हा
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये ❋ कुण्डलकवच मांगि हम लाये
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई ❋ कवचभेद भेदहि नहिं कोई
ता कारण दोऊ हम लीन्हे ❋ तोहिते बज्रशक्ति वहिं दीन्हे
अर्जुन कर्ण बैर है भारी ❋ तुम रक्षा करिहौ बनवारी
कहि सुरसाइँ गमन तब कीन्हे ❋ धर्मराय सेनहिं मन दीन्हे
प्रातहोत दोऊ दल साजे ❋ शब्द अघात बाजने बाजे

दो० गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ।
पहिरि सजोदल अस्त्रलै, चढ़े बीर समरत्थ॥

शैल नरेश आपु रथ साजे ❋ पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे
द्रौणी बीर दुशासन चढ़्यो ❋ अरु अनेक बीरन मन बढ़्यो
शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री ❋ दुर्मुख द्विरद महाबल अत्री
दुर्योधन रथ सोहै कैसे ❋ इन्द्र बिमान देखिये जैसे
यहिबिधि चढ़े साजि सब सैना ❋ कहो कर्ण राजा सों बैना
अक्षयत्रोण है अर्जुन बांधे ❋ घटत नाहिं कोटिनशर सांधे
मेरे रथ जो शर पहुँचैहौ ❋ रणमहँ बिजयपत्र तब पैहौ
राजा कही धरौ जनि धोखा ❋ दोऊ हाथ चलतशर चोखा
दशहजार हाथिन पर लादे ❋ चित्रितसबहि एकनहिं सादे
दशहजार भरि ऊंट लदाये ❋ दशहजार गाड़िन भरवाये
बीस हजार कहारन दीन्हे ❋ चलेसाथ सब बहिंगिन लीन्हे
कनकफोंक अति तीक्षण धारा ❋ गीध पक्ष ते सबहिं सँवारा

दो० कुरुपति चले साजिदल, सेना सिन्धुसमान।
कर्ण तेज इमि देखिये, मनहुँ दूसरो भान॥

श्वेत पीत बैरख फहराने ❋ अरुणश्याम रँग सबुजसोहाने
यहिबिधि ते कीन्हेउ दलसाजा ❋ बाजन लाग युद्ध के बाजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्मराय कीन्हेउ असवारी ❋ श्वेत गयन्द महाबल भारी
भीमसेन अति शोभा पाये ❋ नकुल बीर सहदेव सोहाये
धृष्टद्युम्न लीन्हे सब साथा ❋ चढ़े तुरंग अस्त्र गहि हाथा
अर्जुन रथ कीन्हेउ असवारी ❋ जोती गहे पिताम्बर धारी
पीत बसन तन शोभित नीका ❋ भालउदित हरिमन्दिर टीका
बाजन बजत शब्द आघाता ❋ श्रीहरि कही भीमसों बाता
धृष्टद्युम्न को साथहि लीजै ❋ सन्मुखयुद्ध कर्ण चितदीजै
भीमसेन यह साहस करिये ❋ अर्जुन के सन्मुख ह्वै लरिये
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❋ यहिबिधिआपकह्योकेहिकारण
हांको रथ आगे भे लरिये ❋ सन्मुख युद्ध कर्ण सों करिये

दो० अर्जुन सुनिये मन्त्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जौलौं शक्ति कर्ण के हाथा ❋ करौ युद्ध जनि वाके साथा
इतना कहा हमारो कीजै ❋ चलौ जाय द्रौणी रण लीजै
दोऊ दल महँ बाजन बाजैं ❋ हांक देत क्षत्री गण गाजैं
गज सों गज रथसों रथजोरे ❋ मुख लागत हिंसत हैं घोरे
पैदल सों पैदल अरुझाने ❋ महाबीर सब बांधे बाने
बर्षैं बाण सकै को भाखन ❋ शत ते सहस सहस ते लाखन
शल्य सारथी रथहि चलायउ ❋ आगे कर्ण पेलिकै आयउ
गहे धनुष कर बाणहिं फेरत ❋ अर्जुन कहां हांक दै टेरत
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❋ अस्थिररहौनिकटनहिंआयउ
यह कहि बीसबाण करलीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
करि संधान कर्ण तब भाषेउ ❋ जुरेउ आपुअर्जुनकित राखेउ
बाण पचीस भीमउर मारे ❋ सात बाण अश्वन परिहारे

दो० इतहि कर्ण उत भीमसों, युद्धभयो अति घोर ।
महारथी सब हांकदै, जुरे जोरसों जोर ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शकुनी सहदेवहि संग्रामा ❀ जुरे बीर अपने जय कामा
नकुलहि कृतबर्मा सों भारथ ❀ दोऊ सबल रच्यउ पुरुषारथ
कुरुपति धर्मराय तब सरसे ❀ छूटे बाण बूंद सम बरसे
घटउत्कचहिं द्विरद संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराय के कामा
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ कोऊ गदा कोपि शिर मारे
खड्ग कटार उबाहहिं चोखे ❀ लागत जहां रहत नहिं धोखे
कोऊ पाश साजि शिर मेले ❀ अरस परसकरि आगे पेले
भीम कर्ण ते सरस लराई ❀ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई
कर्ण बीर ऐसे शर जोड़े ❀ मारे रथके चारिउ घोड़े
बिरथ भये भीमहिं जब जाने ❀ धृष्टद्युम्न तब शारँग ताने
यहि बिधि सरस बाण संधाने ❀ कुरुदल के शर छाँह छिपाने
बिरथहु भीम घात बनिआये ❀ लैकर गदा क्रोधकरि धाये

दो० कर मुष्टिका प्रहार ते, मारेउ सेन अनन्त ।
गदा घाव लोटत परे, मतवारे मयमन्त ॥

देखि द्विरद आगे चलिआयउ ❀ भीम उपर शतबाण चलायउ
द्विरद संग आये शत भाई ❀ ते सब बाण बृष्टि झरिलाई
भीमहिं घेरि लगे शर मारन ❀ इत अकेल उत बीर हजारन
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे ❀ भीमसेन बायें कर मारे
युगरद शीश परो तब धरणी ❀ देखी सबन भीम की करणी
द्विरदहिगिरतसबैमिलि धायउ ❀ शूल शेल सब बाण चलायउ
बहुतक आनि गदा परिहारे ❀ बहुतकआनि खड्ग शिरझारे
क्रोधित भीम भयो अति ताते ❀ शतबान्धव महँ बीस निपाते
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे
शल्य सारथी रथ पहुँचावा ❀ रहुरे भीम कर्ण अब आवा
यह कहिकै मारे तीक्ष्ण शर ❀ घायल ह्वै कै फिरे बृकोदर

दो० पाण्डव दल जूझे घने, लगत कर्ण के बान ।
धर्मराय यह देखिकै, कीन्हे शर संधान ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करगहि धनु कीन्हें संधाना ❋ कर्ण अङ्ग मारे दश बाना
अपर बीस शर पायल छूटे ❋ ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हे ❋ भूप अङ्ग शर भेदन कीन्हे
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई ❋ तुम मोसों रण रची लराई
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ ❋ मेरे बल समान है पारथ
शल्य सारथी कर्ण चेताये ❋ बांधौ नृपति घात भलपाये
जो लगि धर्मराय लै आये ❋ जयतिपत्र भारत महँ पाये
नागफांस को उद्यम कीन्हे ❋ धर्मराय खगपति शर लीन्हे
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ ❋ धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयंकर ❋ मुण्डमाल कीन्हेउ गर शंकर
द्रौणी सों अर्जुन पुरुषारथ ❋ कीन्हो महा भयंकर भारथ
सहस बाण द्रौणी तब छांटे ❋ आवत बीचहि पारथ काटे

दो० अर्जुन द्रौणी रणमचो, छूटत बाण अनन्त ।
हयरथ पैदल गिरत हैं, मतवारे मयमन्त ॥

दूनों दल महँ परी लराई ❋ संध्या काल आइ नियराई
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना ❋ आपु युद्ध कहँ करहु पयाना
माया युद्ध करिय यहि रूपा ❋ मारौ मिलि कौरवपति भूपा
करत प्रणाम असुर सब धाये ❋ कुरुसेना के ऊपर आये
गगन पन्थ कीन्ही अँधियारी ❋ बरषहिं बाण मनहुँ घनभारी
वृक्ष अनेक गगन ते छूटत ❋ लागत शिला सेन शिर फूटत
यहिबिधि मारु भयानक कीन्हे ❋ अन्धकार कछु जात न चीन्हे
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा ❋ कोउ न रहेउ काहु के साथा
अपने मन सांचो करि जानेउ ❋ प्रलयकाल अब आय तुलानेउ
दुर्योधन तब आपु पुकारे ❋ कहां कर्ण हैं मित्र हमारे
मारहु असुर बिलंब न लावहु ❋ संकट ते अब मोहिं छुड़ावहु

दो० कर्ण कही राजा सुनहु, बधहुँ असुर जो आज ।
बज्र शक्ति मेरे अहै, राखेउँ अर्जुन काज ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजुराति अस्थिर है रहिये ❋ सबमिलिकै धीरज मन गहिये
राजा कही कर्ण सों ऐसो ❋ अहो मित्र बोलत हौ कैसो
जो सबमिलि अर्जुनकहँ मारिये ❋ अर्जुनमारि काल्हि का करिये
सांग शूल मुद्गर परिहारत ❋ बृक्ष पषाण शीश पर डारत
अब जनि गहरु करो तुम भाई ❋ मारि असुर कहँ देहु गिराई
कर्ण पुकारि कही यह बानी ❋ राजा तुम तौ बात न जानी
अहैं कृष्ण पारथ के रक्षक ❋ तिन उपाय कीन्हेउ परतक्षक
मृत्यु बिना कोऊ नहिं मरही ❋ भये मृत्यु को रक्षा करही
धीरज धरहु करहु मन गाढ़ा ❋ मैं अब धनुष लिये कर ठाढ़ा
बज्रशक्ति ते असुर न मारहुँ ❋ काल्हि युद्ध अर्जुन संहारहुँ
अर्जुन मारि जीतिहौं भारथ ❋ कुरुपति करहुँ तुम्हारो स्वारथ
राजा कही मतिहि बौरानी ❋ आजुहिं मरे काल्हि को जानी

दो० कर्ण कही बिधिकी रचित, टारिसकै सो कौन।
मारतहौं अब असुरकहँ, रहैं सबै होइ मौन॥

यह कहि बज्रशक्ति कर लीन्हे ❋ सहसनयन को सुमिरण कीन्हे
मारि असुरको कर्ण चलायउ ❋ छिटकीज्योतिअकाशहि आयउ
लागी शक्ति असुर उर कैसे ❋ लगतबज्र गिरिवर गिरिजैसे
पस्यो भूमितल असुरभयंकर ❋ मुण्डमाल लीन्हेउ सो शंकर
गई शक्ति सुरपति के हाथा ❋ बहुत अनन्द भये जगनाथा
साधु कर्ण सेना सब भाखे ❋ ऐसे समय कवन केहिराखे
उभय सैन्य अपने गृह आयहु ❋ सब मिलि खानपानमनलायहु
रोदन करै हिडम्बी कैसे ❋ बिछुरी गाय बच्छ सों जैसे
भीमसेन करुणा बहुकीन्हे ❋ कृष्णदेव कछु कहिबे लीन्हे
करुणा करहु कछू नहिं होई ❋ जगमहँ अमर भये नहिं कोई
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गँवाये ❋ आपु मरे अर्जुनहि बचाये
भीमसेन अब साहस करिये ❋ अपनो प्रण रक्षा मन धरिये

दो० क्षत्री होय प्रणको धरै, करै सत्य परमान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

त्रय दश बर्ष छूट भा देशहि ❋ द्रुपदसुता नहिं बाँधे केशहि
जब यह बात कही बनवारी ❋ छूटो शोक क्रोध भा भारी
घायल धर्मराय दुख पावा ❋ अर्जुनसों यह बचन सुनावा
धृग अर्जुन धृग धनुशर तोरे ❋ कर्ण बाण झरझर तन मोरे
सो सुनि अर्जुन क्रोधहि पायउ ❋ करगहिके यदुनाथ बुझायउ
सेना सबहि शयन मन दीन्हे ❋ प्रात होत रण उद्यम कीन्हे
कीन्हे बम्ब दमामे बाजे ❋ सावधान क्षत्री सब गाजे
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे ❋ बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हे
पहिरि सनाह किये रण साजैं ❋ चहुँदिशि भेरि दुन्दुभी बाजैं
माथे मुकुट बिराजत कैसे ❋ सूर्य प्रकाश अकाशहिं जैसे
शल्य सारथी जोते घोरे ❋ चञ्चल चपल दिनन के थोरे
खोदत महि फहरात हैं ठाढ़े ❋ मानहुँ सिन्धु मथन के काढ़े

दो० पाखर लाल लगाइकै, पुनि बाँधे गजगाह ।
चढ़े कर्ण गज कोपिकै, मनलरिबे की चाह ॥

दुर्योधन कीन्हे असवारी ❋ साजी सेन महाबल भारी
भई बम्ब बैरख फहराने ❋ चले बीर सब बाँधे बाने
पाण्डव के दल बाजन बाजे ❋ नन्दिघोषरथ श्रीपति साजे
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे ❋ अक्षय तूण बिराजत कांधे
करगहि धनुष चढ़े रथ पारथ ❋ जोती गहे कृष्ण से सारथ
धर्मराय कीन्हे असवारी ❋ आगे भये भीम धनुधारी
दल चतुरङ्ग रङ्ग करि आई ❋ युद्ध भूमि महँ शोभा पाई
मूर्ख महाउत लइ अधिकारी ❋ भिरे गयन्द युद्ध भा भारी
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा ❋ उरझे सबै जोर सों जोरा
कहीकर्ण अब रथहि चलावहु ❋ अर्जुन के सन्मुख पहुँचावहु
मारौं आजु खेत महँ पारथ ❋ देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हँसि के शल्य कही यह बानी ❀ रविनन्दन यह बात न जानी
दो० हंस काग जैसी भई, तैसी भई निदान।
अबहिं कर्ण बलदेखिबो, भारत के मैदान॥
क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने ❀ हंस काग को भेद न जाने
भाषो शल्य कर्ण सुन बीरा ❀ एक दिवस सरिवर के तीरा
राज हंस सब चले उड़ाई ❀ सिन्धु पार महँ बनी चराई
तिनसों काग कही अस बानी ❀ हमकहँ साथ लेहु खग ज्ञानी
कही हंस तुम जाइ न पैहौ ❀ मारिहौ बूड़ि पार नहिं लहिहौ
कही कागगति सबहि उड़ैहौं ❀ तुम सब साथ पार मैं जैहौं
यह कहि चले हंस के सङ्गा ❀ कोश चारि लै उपज्यो रङ्गा
थको काग तब ढिग ह्वै आयो ❀ बूड़त हौं यह बचन सुनायो
कही हंस सुधि अबहिं भुलानी ❀ अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी
सुनिकै हंस निकट तब आयो ❀ पीठि उपर तब काग चढ़ायो
फेरि बहुरि लाये यहि पारा ❀ राख्यो काग नींब की डारा
सिन्धु पार सब गयो उड़ाई ❀ यह चरित्र हम देख्यो भाई
दो० शरसों सागर बांधिकै, जिन जीते हनुमान।
शरपञ्जररथ राखिकरि, तिनसों तुमहिं समान॥
जब बिराटको गोधन गह्यऊ ❀ तादिन कर्ण कहां तुम रह्यऊ
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना ❀ देखहु आजु युद्ध तुम नैना
हाँको रथहि बिलम्ब न लाओ ❀ अर्जुन के सम्मुख पहुँचाओ
सुनिकै शल्य तेज रथ हांको ❀ पवन लगे फहरात पताको
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे ❀ बाणबृष्टि करिबे मन दीन्हे
कह तब कर्ण भीम तुम अहहू ❀ अर्जुन कहां सो मोसन कहहू
यहै कहत अर्जुन तब आये ❀ नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो ❀ दुश्शासन सों युद्ध बिचारो
आजु कर्ण सों हमहिं लराई ❀ पुरुषारथ देखो सब भाई
यह कहिकै कीन्ह्यो सन्धाना ❀ लागे सरस चलावन बाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❋ आवत बाण बीचहीं तोरे
दोऊ बीर बाण सन्धाना ❋ शर के छांह छिपाये भाना

दो० अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्ह्यो शर संधान।
अन्धकारभा दिवसमों, सूझिपरहिं नहिंभान॥

चले बाण कबि सकहिं न भाखन ❋ शतसों सहस सहससों लाखन
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❋ शल्य सारथी उत अधिकारी
अर्जुनकर्ण करत मन जितको ❋ कृष्ण शल्यहांकतरथ तितको
अग्निबाण अर्जुन कर लीन्हे ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक गुण दीन्हे
चले बाण कौरवदल जारन ❋ प्रकटीं शिखा हजार हजारन
देखि कर्ण जल बाण चलाये ❋ क्षणभीतर सबअग्नि बुताये
जलकी धार सेन बिकलाने ❋ पवन बाण अर्जुन संधाने
परम बेगि ताते जेहि ताका ❋ टुटनलगे सब ध्वजा पताका
छांड़े कर्ण सर्प के बाना ❋ नागन कीन्ह पवन सब पाना
तब अर्जुन स्वग बाण चलाई ❋ मोरन पकरि सर्प सब खाई
दोऊ बीर चलावत हैं शर ❋ बलसमान सो बली धनुर्द्धर
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला ❋ बाण मारि सूखे सरि ताला

दो० पक्षी उड़त गगन महँ, ताको दिशाअधार।
देव न देखत युद्ध कछु, शर छायो संसार॥

कोटिन अर्ब खर्ब शर छांड्यो ❋ दोऊ दल बाणन ते पाट्यो
कुरु पाण्डव दल सब भरमाये ❋ अर्जुन कर्ण न देखन पाये
दोऊ बीर सरस पुरुषारथ ❋ कीन्हे महाभयानक भारथ
चुश्चुक कही कर्ण के आगे ❋ अब मोकहँ सन्धान सभागे
लीलों कृष्ण सहित रथ पारथ ❋ अब देखहु मेरो पुरुषारथ
सो सुनि कर्ण बीर सन्धाना ❋ चुश्चुकसहित त्याग तब बाना
कही कर्ण अर्जुन संहारहु ❋ आजु जानिबो तेज तुम्हारहु
हांक मारिकै बाण चलाये ❋ चुश्चुक प्रकट देह धरिआये
देखत रूप भयंकर भावा ❋ भादौं घटा उमड़ि जनु आवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दरबि बाढ़ि लाग्यो असमाना ❋ फण के छाँह छिपाये भाना
दो० रबि अक्षत निशि ह्वैगई, अर्जुन भाषे बैन।
अन्धकार कस देखिये, कहिये राजिवनैन॥
तब श्रीहरि आये याहि बातन ❋ पारथ सुनिये कथा पुरातन
जब खाण्डव बन दाहन कीन्हा ❋ सारथि होइ जोती हम लीन्हा
शर पञ्जर छाये तुम कानन ❋ शत योजन घेरे तुम बानन
तादिन रथ ऐसो मैं हांका ❋ घुमिरत मनहुँ कुम्हारको चाका
खग मृग पशु जारत दवकानन ❋ बाहर होय न बचत है बानन
घुर्मि नाम नागिनि जब जानी ❋ तेजवन्त आकाश उड़ानी
तब तुम बेगवन्त शर छाँटे ❋ नागिनि गई पूंछ त्यहि काटे
ताको सुत यह चुञ्चुक नामा ❋ बसै पताल शेष के धामा
करकोटक को पुत्र कहावा ❋ बैरलेन भारत मों आवा
कर्ण के त्रोण रहत है तबसों ❋ कीन्हो युद्ध अरम्भन जबसों
तब अर्जुन यह भेदहि जाने ❋ क्रोधित बाण कीन्ह संधाने
अर्जुन क्रोध लगे शर मारन ❋ शत ते सहस सहस्र हजारन
दो० अर्जुन मारत कोपिकै, नाहिंन फूटत अङ्ग।
चुञ्चुक के फण लागिकै, होत बाण सब भङ्ग॥
गर्जत सर्प क्रोध ते कैसा ❋ प्रलयकाल बोलत घन जैसा
चुञ्चुक कही सुनौ हो पारथ ❋ लीलत अहौं करौ पुरुषारथ
यह कहि बदन किये बिस्तारा ❋ मनहुँ उदर नहिं अहहि पनारा
जो शर अर्जुन के कर छूटत ❋ गड़े न नेकु लागि सब टूटत
पाण्डव दल देखत भय माने ❋ धर्मराय अचरज करि जाने
नन्दिघोष रथ लीलै लीन्हेउ ❋ हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ
सुरपति देखि महाभय पायो ❋ हनूमान सों ऐस जनायो
दाबहु रथ सो जाइ पताला ❋ यहिबिधिबञ्चितकीजियज्याला
ऊपर बल कीन्हेउ हनुमाना ❋ रथ गाड़िगयो पताल समाना
चुञ्चुक के मुख पीत पताका ❋ पवन लगे डोलत है बाका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोऊ दल कीन्हेउ अनुमाना ❀ नन्दिघोष अहिउदर समाना
चुञ्चुक फिरेउ कर्ण ढिगआवा ❀ साधु साधु कहि कर्ण सुनावा
दो० शल्य कही तब कर्णसों, झूंठ कहो क्यहि काज।
पारथको को ग्रासि है, जेहि सारथि ब्रजराज॥
यहि अन्तर हरि रथहि उठायउ ❀ नन्दिघोष धरणी पर आयउ
पाण्डव दल देखत सुख मानेउ ❀ तबहिं कर्णसों शल्य बखानेउ
रथ समेत देखहु यहि पारथ ❀ हनूमान रथ पारथ सारथ
कर्ण कही चुञ्चुक सों बानी ❀ मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी
चुञ्चुक कही भयो छल भाई ❀ मैं तो कछु यह भेद न पाई
फिरि मोको कीजै संधाना ❀ करौं प्रसन पारथ भगवाना
कही कर्ण यह उचित न होई ❀ बाण बटोरि चलाव न कोई
आश देइकै कीन्ह निरासा ❀ पैहौ नाग नरकमहँ बासा
यह कहि नाग किये तब गवना ❀ जैहौ कर्ण काल के भवना
चुञ्चुक जब भवनहिंशुभ कीन्हे ❀ अर्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हे
कब आवे कब शर सन्धाने ❀ कब छूटहि कोई नहिं जाने
यहि बिधि करत युद्धकी करणी ❀ अङ्ग भेदि फूटत शर धरणी
दो० महाबीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार।
रण देखत मुनिदेवगण, कठिन बजाये सार॥
अर्जुन कर्ण भयो रण घोरा ❀ परो भीम दुश्शासन जोरा
भीमसेन ऐसे शर जोरे ❀ मारे रथ के चारिउ घोरे
दुश्शासन शारँग कर लीन्हे ❀ बाणन बृष्टि भीम पर कीन्हे
चारि बाण ते अश्व सँहारे ❀ एक बाण ते सारथि मारे
शत शर भीमसेन उर लागे ❀ कोध अनल तनु अन्तर जागे
कर गहि गदा भीम तब धाये ❀ हांक मारि दुश्शासन आये
दोऊ बीर खेत महँ कैसे ❀ महामत्तगज उरझे जैसे
कर गहि गदा कोपि परिहारहिं ❀ एकहि एक कोप करि मारहिं
घमकत घाव लगेउ जब तनमें ❀ बाढ़त कोप दोऊ के मनमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस्त्र झारिकै दोउ लपटानेउ ❋ क्रुद्धित तरल युद्ध अरुझानेउ
करगहि कच मुष्टिक परिहारहिं ❋ शीशहि शीश कोपिकै मारहिं
उरसों उर पेलत हैं दोऊ ❋ पारिसकत नहिं टरत हैं कोऊ
दो० भीमसेन अतिक्रोधकरि, अभिरतअमितअनन्द।
आनि पछारेउ धरणिपर, मानहुँ सिंह गयन्द॥
डरेउ भीम दुश्शासन कैसे ❋ ब्याध कुरङ्ग पछारहिं जैसे
कहेउ भीम दुश्शासन बीरहि ❋ खैंचत कस न द्रौपदी चीरहि
खेलहु पांशा मुकुट बनावहु ❋ गहौ केश द्रौपदि लै आवहु
अबहिं सबहि सुधि बिसरी भाई ❋ मेरे चितहि आजु सब आई
भीमसेन कह नकुलहि धावहु ❋ जाइ तुरत द्रुपदी लै आवहु
पलमहँ नकुल गयो चलि भवना ❋ द्रुपदसुता अब कीजै गवना
मेलेउ भीमसेन अभिमानी ❋ हँसिकै चली आपु तहँ रानी
आई तुरत बिलम्ब न कीन्हे ❋ पौढ़े भीम दुशासन लीन्हे
कही पुकारि द्रौपदी रानी ❋ सुनिये बात भीम तुम ज्ञानी
ऐसे तौ तुम पांच सहोदर ❋ धन्य धन्य तुम धन्य बृकोदर
जब कीचक बिराटपुर मारे ❋ तादिन मेरे लाज निवारे
तनमन धनहि निछावरि कीजै ❋ तोपर प्राण वारिकै दीजै
दो० भीम भयंकर रूपधरि, कहेउ सुनौ दोउ सैन।
है कोऊ रक्षा करै, मोसे कहिये बैन॥
कुरु पाण्डव जेते हैं क्षत्री ❋ कृष्ण सहित यदुबंशी अत्री
असुर नाग नर सुरहु पुरन्दर ❋ धरणी सिन्धु मेरु गिरिकन्दर
चन्द्र सूर्य तुम दोऊ साखी ❋ तीनि लोक देखत हैं आंखी
रक्षा करहु दुशासन मारत ❋ कही भीम हम भुजा उपारत
सुनि पारथ के जिय रिस बाढ़ी ❋ तीक्ष्ण शर निषङ्गते काढ़ी
मारि भीम अब करौं निपाता ❋ कैसेउ सहि न जाति यह बाता
श्रीपति कही उचित नहिं होई ❋ आजु भीम सों जितहि न कोई
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा ❋ भीम अङ्ग परवेशित कीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हांक मारिके भुजा उपारे ❋ रुधिर द्रौपदी के शिर डारे
शिरसों परत रुधिर की धारा ❋ द्रुपदसुता तब बाँधेउ बारा
अरुण बरण तन सोहत कैसे ❋ असुर युद्धमहँ देवी जैसे
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी ❋ अर्जुन कर्ण रचेउ रण भारी

दो० शर बर्षत हर्षत दोऊ, हांकत रथ भगवान।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

दोउ बीर हैं मेघ समाना ❋ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना
घन घहरात घहर रथ चाके ❋ बकपांती सम श्वेत पताके
ऐसे बाण गगन मों धावहिं ❋ शर रोंकत शरपन्थ न पावहिं
कुरु पाण्डव दल नाहिंन सूझै ❋ अपन पराइ कोई नहिं बूझै
गज अरु शकट हजारनधावहिं ❋ कर्ण के रथहि बाण पहुँचावहिं

दो० अर्जुन कर्णहिं रण मच्यो, जलदबुन्दसमबान।
सरस निरस कहिजात नहिं, रह्यो मण्डिमैदान॥

कर्ण पांच शर भालुक लीन्हे ❋ लघु संधान किरीटन कीन्हे
दोऊ सारथि रथहि चलावत ❋ बोहित मनहुँ सिन्धुमहँ धावत
जूझी सेन लगे तीक्षण शर ❋ होनलागि अति मारु परस्पर
अर्जुन कर्ण करत रण करणी ❋ रुण्ड मुण्ड मरण्यो सब धरणी
अर्जुन बाण कोपि परिहास्यो ❋ सहस पैग पाछे रथ टास्यो
देखि कर्ण तब शर संधाना ❋ मास्यो नन्दिघोष तकि बाना
पैग अढ़ाई पाछे टास्यो ❋ साधु कर्ण यदुनाथ पुकास्यो
सुफल जन्म जग जीवन तेरा ❋ बाण घात डोलत रथ मेरा
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❋ साधुबचन भाष्यो क्यहिकारण
सहस पैग हम रथहि चलायो ❋ पैग अढ़ाई मम रथ आयो
तब श्रीपति बोले यह बानी ❋ अर्जुन तुम यह भेद न जानी
नन्दिघोष रथ मेरु समाना ❋ ध्वजपर परम भार हनुमाना

दो० महाविश्वम्भर रूप धरि, हांकत हैं यह रत्थ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

टारो रविसुत बाणते, महाबीर समरत्थ ॥
यह सुनि बाण लगे परिहारन ❀ जूझी सेना बीर हजारन
कर्ण कोपि भालुक शर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे ❀ सहस बाण हनुमानहिं मारे
श्याम शरीर रुधिर छबि छाये ❀ पीत बसन तन शोभा पाये
अर्जुन को तन झाँझर कीन्हे ❀ क्रोधित भये एक शर लीन्हे
कर्ण के हृदय ताकि कै मार्‌यो ❀ भेदिकै अङ्ग निसरि शर पार्‌यो
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हे ❀ घायल करि तन झाँझर कीन्हे
अरुण बरण देखत तन भूले ❀ मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले
यहि बिधि कीन्ह्यो बाण दरेरो ❀ दशहू दिशा दोउ रथ घेरो
दोऊ रथ यहि बिधि छबि पाये ❀ पर्वत मनहुँ भूमि पर आये
कही कर्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ सावधान मोते रण कीजै
अब यहिबिधिते बाण चलायो ❀ काटो शीश बिलम्ब न लायो

दो० मारतहौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह बैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पङ्कजनैन ॥

यह कहि नीलबाण कर लीन्हे ❀ जो शर ऋषि दुर्बासा दीन्हे
कृष्ण देव रण को मन दीजै ❀ अब पारथ की रक्षा कीजै
क्रोधित बाण किये संधाना ❀ देखिशल्य यहि भांति बखाना
जाके रक्षक श्रीजगत्राता ❀ ताको कर्ण कीन्ह चहै घाता
हृदय ताकि मारेउ तब बाना ❀ पलटि न करहुँ फेरि संधाना
यह कहि धनुषकरणलगितानाः ❀ कर्ण हाथ छूट्यो तब बाना
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे ❀ छूटै बज्र इन्द्र कर जैसे
अर्जुन लगे कठिन शर मारण ❀ पै न सके यह बाण निवारण
आयो बाणकण्ठ ताकि जबहीं ❀ नान्दिघोष दाबेउ प्रभु तबहीं
जुटिके अश्वरथहि ढिग आयो ❀ कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो
मुकुट काटि शर बेधेउ धरणी ❀ जग में रही सदा यह करणी
धन्य कृष्ण पाण्डव मन भाखा ❀ दीनदयाल पारथहि राखा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० जाके सारथि चक्रधर, मारि सकै तेहि कौन।
अर्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधारौन॥

हाँक देत हांकत हरि घोरे ❀ अर्जुन कोपि कठिन शर जोरे
दोऊ बीर बाण परिहारे ❀ एकहि एक क्रोध ते मारे
शर अनेक बरषत हैं कैसे ❀ श्रावण मेघ महाझरि जैसे
पक्षी गगन उड़न नहिं पावत ❀ शर लागत धरणीपर आवत
अरुणबरण आये सँग आवहिं ❀ शर समूह ते पन्थ न पावहिं
ऐसे लाग चलावन बाना ❀ शर पञ्जर छाये असमाना
जूझी सेना पन्थ न पावहिं ❀ लोथिन पर रथ हांकि चलावहिं
गरजत नन्दिघोष के चाके ❀ पवन बेग फहरात पताके
शल्य सारथी रथहि चलावा ❀ नन्दिघोष सम्मुख पहुँचावा
अर्जुन करण जुरे हैं कैसे ❀ रघुपति सों रावण रण जैसे
इकते एक महाबल भारी ❀ बरण शूर दोऊ धनुधारी
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ रणसमबली करण अरु पारथ

दो० अर्जुनकरणहिंरणमच्यो, छूटत तीक्षण बान।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन, भाजे छांड़ि बिमान॥

शल्यहि कही करण तब ऐसो ❀ चाक भूमि परसै नहिं जैसो
जेहि दिन मैं बिराटपुर घेरी ❀ बैठी गाइ अहीरन टेरी
तब सहदेव बुद्धि उपराजो ❀ खरदै बांधि आपु उठि भाजो
लाठी छांड़ि बहुत बिधि मारो ❀ अचल गाइ तन टरत न टारो
मैथुनि नाम गाय यक रहेऊ ❀ क्रोधित ह्वै अस मोसन कहेऊ
जैसे अचल भयो तन मोरा ❀ रथ अटकै भारथ में तोरा
चाके चारि ग्रसैं जब धरणी ❀ तब न बनै कछु तोसों करणी
यह सुधि मेरे मन में आई ❀ सावधान हांको रथ भाई
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी ❀ चाक छुवै नहिं पावत धरणी
अर्जुन कर्ण करत संग्रामा ❀ पलभरि नहिं पावत बिश्रामा
देवअस्त्र दउदिशि परिहारहिं ❀ एकहि एक क्रोधकरि मारहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गजरथ पैदल जूझे लाखन ❀ महा मारु कोउ सकै न भाखन
दो० नदी भयंकर रुधिर की, गजन करारे जान।
भरत मांस जलफेन सम, लहरी चमकैं बान॥
ढाल मनहुँ कच्छप उतराने ❀ बार सेवार सरिस अरुझाने
बख्तर सहित परे धर जेते ❀ ग्राह समान देखियत तेते
गज भुशुण्डि टूटे कस जाने ❀ मनहुँ सूसि जल में उतराने
चक्रित फरी लसत हैं कैसे ❀ रुचिर पत्र पुरइनि के जैसे
शूर शीश देखत दिग भूले ❀ जैसे कमल सहस दल फूले
मांस बहुत सम सरस सोहावा ❀ नाव चलत जिमि रथ उतरावा
परि जँजीर जल शोभा पावहिं ❀ धीवर मनहुँ जाल छिटकावहिं
भूत प्रेत करते असनाना ❀ योगिनि मनहुँ करैं सो पाना
जम्बुक गीध काकगण आवहिं ❀ मांस खाहिं मन मोल चुकावहिं
नन्दी चढ़ि डोलत हैं शंकर ❀ मुण्डमाल गर रूप भयंकर
गज शुण्डहिलै योगिनि आवहिं ❀ दै मुख बिच करताल बजावहिं
नाचि कबन्ध देहिं करतारी ❀ कौतुक रचि रणभूमिहिं भारी
दो० आंत लपेटे गज चरण, किये पखाउज साज।
भैरवगण या बिधि फिरत, खेत भयंकर लाज॥
यहि बिधि युद्ध भयंकर भारी ❀ दोऊ भिरे खेत परचारी
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे ❀ भोरहिं उदित दिवाकर जैसे
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे
तीक्ष्ण बाण कृष्ण उर दीन्हे ❀ हनूमान तन जर्जर कीन्हे
तब अर्जुन कीन्हे संधाना ❀ करण हृदय तकि मारेउ बाना
घायल किये शल्य से सारथि ❀ एकते एक सरिस पुरुषारथि
बाणहिं त्यागत यहि व्यवहारा ❀ जिमि बरषा बरषै जलधारा
रविमण्डलमहँ शब्द सुनावहिं ❀ करण मारि अर्जुन यश पावहिं
सुरपति कही जीतिहैं पारथ ❀ मारौ कर्ण करहु पुरुषारथ
यहिबिधि कहहिं देवगण बानी ❀ सुनिकै शल्य अचम्भव मानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोऊ कहूं लरो नहिं ऐसो ❋ अर्जुन करण भयो रण जैसो
रुधिर प्रवाह चलै सब अङ्गा ❋ महाशूर मन नेकु न भङ्गा

दो० घोर युद्ध यहि बिधि करत, दोऊ बीर समान।
शल्य सारथी करणरथ, पारथरथ भगवान॥

भीमसेन कीन्ही बहु करणी ❋ परे बीर लोटत सब धरणी
गजते गज हयते हय मारे ❋ रथहि पकरि रथ ऊपर डारे
सम्मुख जुरे गिरे गण जेते ❋ गगन पन्थ कहँ फेंकत तेते
जे अभिरे ते सबै पछारे ❋ बहुतक मींजि चरण ते डारे
लागे बीर गदा सों मारण ❋ दुर्योधन के बन्धु सँहारण
ते सब बहुरि कठिन शर मारे ❋ मुद्गर गदा शूल परिहारे
भूमि परे पर भीम न डरपै ❋ मनहुँ बाज पक्षिन पर झरपै
क्रोधित भये पाण्डु के नन्दन ❋ यहि बिधि कीन्हे सेननिकन्दन
तब अर्जुन छांड़े शर पायल ❋ शल्यसहित रविनन्दन घायल
करण बाण ऐसे परिहारे ❋ अर्जुन हृदय ताकिकै मारे
कही कृष्ण सुनिये अब पारथ ❋ प्रणकहँ सुमिरि करहु पुरुषारथ
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❋ हांकत पद ठहरात न घोरे

दो० अर्जुन करणहिं रण मचेउ, उपमा और न तासु।
मारत शरके अग्र ते, उड़तगगनमहँमासु॥

सखा साथ धरणी के ऊपर ❋ ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर
होनहार सो होय निदाना ❋ बिधि चरित्र कोऊ नहिं जाना
भाषो शल्य कर्ण सों ऐसा ❋ अटको चाक चलत रथ कैसा
सुनिकै कर्ण कियो दृढ़ ठाना ❋ मारो नन्दिघोष तकि बाना
सहस बाण अश्वन उर मारे ❋ थकित भये पगु टरत न टारे
असी बाण मारेहु हनुमानहिं ❋ शर अनेक घाले भगवानहिं
तीनि बाण पारथ उर मारे ❋ नन्दिघोष रथ टरत न टारे
कृष्णदेव हांको रथ बांको ❋ जैसे फिरत कुम्हार को चाको
चहूं ओर शर बर्षत कैसे ❋ भाद्र बृष्टि मन्दर पर जैसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जेहिदिशि अर्जुन को रथ धावै ❀ तेहिदिशि कर्ण बाण झरिलावै
छूटत बाण कर्ण के करसों ❀ नन्दिघोष रथ घेरेउ शरसों
हांक देत हांकत रथ घोरे ❀ अर्जुन कठिन बाण गुण जोरे

दो० मार्‌यो पारथ क्रोधकरि, चल्यो बाण परचण्ड ।
कर्ण धनुर्द्धर श्री प्रबल, काटि कियेशतखण्ड॥

अरवन शल्य बहुत बिधि हांको ❀ छूटत नाहिं भूमि ते चाको
कूदि कर्ण रथ ते ढिग आये ❀ गहि चाका तेहि चहत उठाये
कर्ण बीर कीन्ह्यो बल भारी ❀ अर्जुन सों भाष्यो बनवारी
मारहु बाण गहरु जनि लावहु ❀ कर्णशीश अब मारि गिरावहु
पारथ कही उचित नहिं होई ❀ बिना अस्त्र नहिं मारहि कोई
यह अधरम करिये केहि कारण ❀ यह सुनि कही जगतके तारण
चक्रव्यूह महँ अभिमन्यु मारे ❀ तादिन कर्ण न धर्म बिचारे
आजु धर्म तुम शोचौ पारथ ❀ तौ भारत रण किये अकारथ
कुन्ती दिये बाण सो लीजै ❀ अर्जुन करण बधन तेहि कीजै
मारहु तुरत गहरु जनि लावहु ❀ बहुरि न ऐसो अवसर पावहु
रथ उठाइ करिहै धनु धारण ❀ तब अर्जुन तुम सकियन मारण
सुनि अर्जुन कीन्हे संधाना ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताना

दो० दीन्हे हांक प्रचारिकै, चलो बज्र सम बान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

लाग्यो बाण कर्ण के कैसे ❀ इन्द्र बज्र पर्वत पर जैसे
काटो शीश परा तब धरणी ❀ जग में रही सदा यह करणी
कृष्ण आपु जय शंख बजायो ❀ पाण्डव सैन्य देखि सुख पायो
हर्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ पुष्पबृष्टि सब देवन कीन्हा
जयजय शब्द गगनमहँ बोल्यो ❀ चढ़ि बिमान आनन्दितडोल्यो
जूझेउ कर्ण जगत यश पायो ❀ निसरो रथ महि ऊपर आयो
छूटो चक्र धरणि ते जबहीं ❀ फेस्यो शल्य हांकि रथ तबहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छूछो रथ दुर्योधन देखा ❀ जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा
बिचलि सेन कौरवपति जान्यो ❀ आगे ह्वैकै शारँग तान्यो
शरसों मारु भयंकर दीन्हे ❀ सेना सबै निवारण कीन्हे
संध्या जानि किये तब गवना ❀ दउ सेना आई निज भवना
असअहमिति अर्जुन मन कीन्हे ❀ कर्ण मारि जग में यश लीन्हे

दो० महाबीर रबिसुत निरखि, कही कृष्ण यह बात ।
अर्जुन सुनिये श्रवण दै, षटजन किये निपात ॥

परशुराम जब शापहि दीन्हे ❀ कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हे
तुम हम धरणी कुन्ती माता ❀ छहउ जने मिलि कीन्ह निपाता
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ भृगुपति शापदियोक्यहिकारण
तब श्रीहरि आये यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन
रतन बर्ष ब्याकरण पढ़ायो ❀ भृगुपति पहँ पढ़िबे को आयो
कटि में मूंज मेखला बाँधे ❀ कीन्हे तिलक जनेऊ कांधे
निकट जाय परणाम जनाये ❀ कौन जाति कहँवां ते आये
मैं हौं बिप्र श्रवण सुनि लीजै ❀ आये पढ़न अनुग्रह कीजै
बिद्या मोपहँ आय घनेरो ❀ पढ़िये जो मन आवै तेरो
तब भाष्यो धनुबिद्या दीजै ❀ बालक जानि कृपा म्वहिं कीजै
धनुबिद्या सिखइय मुनि ज्ञानी ❀ करण चतुर्दशि आय तुलानी

दो० धनुष बाण लै हाथ महँ, करन चले अस्नान ।
खरी तुरत लै आयहु, पाछे शिष्य सुजान ॥

आगे चलत बृक्ष यक देखा ❀ फूले फूल कदम्ब अशेषा
परशुराम हँसि शारँग साधो ❀ मार्यो फूल कटो तब आधो
एक शरहि यहि भांति चलायो ❀ कटे सबै नहिं एक बचायो
परशुराम जलतीरहि गयऊ ❀ पाछे कर्ण बृक्षतर अयऊ
आधो फूल लाग है ऊपर ❀ आधो कटो परो है भूपर
मनहिं कही मैं बाण चलावों ❀ आधो है त्यहि मारि गिरावों
भूपर खरी धरै जो कोई ❀ बाढ़ै दोष पवित्र न होई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उछलाये तब कनक कटोरा ❋ लै धनु बाण हाथ गुण जोरा
यहि बिधि ते कीन्हो संधाना ❋ कट्यो फूल सब एकहि बाना
बायें हाथ धनुष शर लीन्हे ❋ दहिने हाथ कटोरा कीन्हे
आये परशुराम के पासहि ❋ खरी लगाय पढ़ै सो आसहि
करि अस्नान ध्यान तब कीन्हे ❋ चले तुरत भवनहिं मन दीन्हे

दो० आये वृक्ष कदम्बतर, देखिरहे होइ मौन।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन॥

सुनिकै कर्ण कही यह बानी ❋ आधो काटो मैं अभिमानी
परशुराम मन माहिं बिचारी ❋ भयो सपूत सिद्ध धनुधारी
यहिबिधिते कछु दिवस गँवायो ❋ एक दिवस निद्रा मन लायो
आलस भयो शयन तब कीन्हा ❋ कर्ण जङ्घ ऊपर शिर दीन्हा
बज्र कीट कीरा जो रह्यऊ ❋ जटासों निकसि जङ्घ सो गह्यऊ
भेदेउ जङ्घ निकरि तब पारा ❋ तासों चली रुधिर की धारा
तातो रुधिर अङ्ग सों लागा ❋ उठ्यो चौंकि भृगुनायक जागा
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो ❋ लाग्यो बज्र कीट यह जान्यो
सुधि अजहूं नाहीं त्यहि केरी ❋ कहु रे शिष्य जाति का तेरी
ऐसो बिप्र कहां ते आयो ❋ बिनु डोले जिन जङ्घ छेदायो
क्षत्री जाति अहो मैं जाना ❋ छल काहेक कीन्हों अज्ञाना
बिद्या दै बिनाश का कीजै ❋ बर अरु शाप एक सँग दीजै

दो० पांच बाण मैं देतहौं, जौलौं रहिहैं हत्थ।
अजय होहि संसार मों, जीतै तौ समरत्थ॥

जब यह बाण शत्रु कर जैहै ❋ तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै
बर अरु शाप दोउ जब जाने ❋ सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने
अर्जुन के जिय संशय रह्यऊ ❋ ता कारण या माधव कह्यऊ
धर्मराय तब बात जनाई ❋ मेरे जिय कस संशय आई
बिप्र जानिकै बिद्या दीन्ह्यउ ❋ क्षत्री जानि शाप किमिकीन्ह्यउ
या बिधि कही जगत के तारण ❋ धर्मराय सुनिये यह कारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीषम गये रहे तहँ आगे ❀ परशुराम ते सिखै सो लागे
बिद्या अस्त्र बहुत बिधि दीन्हे ❀ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हे
बिद्या पाइ भवन कहँ आये ❀ तब माता यह बचन सुनाये
मेरो कहा कियो तुम चाहौ ❀ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाहौ
दोऊ बन्धु साथ लै लीन्हे ❀ बाराणसी गवन शुभ कीन्हे
जानि स्वयम्बर सब नृप आये ❀ रङ्गभूमि सब राजन छाये

दो० अम्बे अम्बा अम्बली, तीनों कन्या साथ।
निकरीं भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ॥

जब कन्या इत पाँव न दीन्ह्यो ❀ भीषम देखि क्रोध जिय कीन्ह्यो
तीनिउँ गहि कर रथहि चढ़ाये ❀ तब भीषम चलिबे मनलाये
भिरे नरेश किये रण क्रोधा ❀ गङ्गासुत जीते सब योधा
कन्या लै भवनहिं पहुँचाये ❀ माता सों तब बचन सुनाये
चित्राङ्गदहि अम्बिकहि दीन्हे ❀ अम्बहि चित्रबीज तब लीन्हे
अम्बालिका कोउ नहिं चाहे ❀ द्वउ कन्या द्वउ बन्धु बिवाहे
जो भीषम अपनो भल चाहौ ❀ तौ मोको अब भाय बिवाहौ
जो अपने मन इच्छा कीन्हे ❀ जाहु शाल्व पर आज्ञा दीन्हे
कन्या चली शाल्व पहँ आई ❀ भीषम मोकहँ दीन पठाई
शाल्व कही यह उचित न होई ❀ अब तोकहँ ब्याहै नहिं कोई
अम्बालिका बचन सुनि पाई ❀ तब फिरि परशुराम पहँ आई
गङ्गासुत मोकहँ हरि लाये ❀ करैं न ब्याह बीच टरकाये

दो० परशुराम सुनि क्रोधकै, कहा चलो मम साथ।
भीषमको हौं सौंपिहौं, पकरि हाथसों हाथ॥

भृगुपति आय दिये तब दरशन ❀ भीषम दौरि किये पग परशन
इतना कहो हमारो कीजै ❀ जयमाला कन्या सों लीजै
कीन्हो कौल पिता सों अपने ❀ संगम नारि करहुँ नहिं सपने
की मानौ तुम कहा हमारो ❀ की अब मोते युद्ध बिचारो
गङ्गासुत सुनि क्रोधहि पाये ❀ बांधि अस्त्र मैदानहिं आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिषि गुरु रच्यउ महारण भारत ❋ चौबिस दिवस रच्यो पुरुषारथ
देवन आइ बीच कर दीन्हा ❋ तब कन्या कछु कहिबे लीन्हा
गङ्गतीर शुचि चिता बनाई ❋ देखत सबहि जरत हौं भाई
क्षत्री होइ लेहौं अवतारा ❋ तब भीषम को करहुँ सँहारा
अस कहिकै निज देहै जारौं ❋ जन्म शिखण्डी भीषम मारौं
तबसों परशुराम प्रण कीन्ह्यो ❋ क्षत्री को बिद्या नहिं दीन्ह्यो
सुनिकै धर्मराय सुख माना ❋ सत्य बचन भाष्यो भगवाना

दो० जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहँ हरि बिजय प्रमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषा
विरचितेकर्णार्जुनयुद्धेकर्णवधवर्णनो
नामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति कर्णपर्व समाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शल्यपर्व ॥

जय जय गुरुचरणन चित दीजै ❋ रघुपतिपद अभिबन्दन कीजै
शारद चरण करहुँ परणामा ❋ बन्दौं बालमीकि गुणग्रामा
सम्बत सत्रह सै जग जाना ❋ त्यहि ऊपर चौबीस बखाना
कार्त्तिकमास पक्ष उजियारा ❋ दशमी तिथि को कथा उचारा
नौरँग शाह दिली सुल्ताना ❋ प्रबल प्रताप जगत सब जाना

दो० व्यासदेव पद बन्दिकै, जा मुख बेद पुरान।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

जूझे कर्ण जगत यश पाये ❋ दुर्योधन यह बचन सुनाये
हा हा मित्र परम सुखदायक ❋ महायुद्ध करिबे के लायक
तुम पाये निज क्षत्री धर्मा ❋ यह सब दोष हमारे कर्मा
बलसों अर्जुन सके न मारण ❋ छलकरि बधे जगत के तारण
अब काको सेनापति कीजै ❋ जाके बल भारत यश लीजै
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❋ राजा सुनिये बिनय हमारी
जब पाण्डव निज देशहि आये ❋ करि बसीठ यदुनाथ पठाये
पांच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ ❋ हठ करिकै भारत तुम कीन्हेउ
अब करुणा कीजै क्यहि काजा ❋ साहस सदा चाहिये राजा
सदा धर्म अपने मन राखउ ❋ सत्य छांड़ि मिथ्या नहिं भाखउ
ब्राह्मण गउन की रक्षा करही ❋ परधन परनारी नहिं हरही
सुतसम प्रजा करो प्रतिपालक ❋ ज्यों जननी पालै निजबालक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सदा दान सन्मान करि, तजौं न शील स्वभाव ।
शरणागत रक्षा करत, देश प्राण बरु जाव ॥

मातु पिता की सेवा करई ❀ आज्ञा तासु शीश पर धरई
कृतबर्मा यहिबिधि कहिदीन्हेउ ❀ तब शकुनी कछु कहिबे लीन्हेउ
शोच करत नृप काह अकारथ ❀ अर्जुन तोहिं रचहुँ महभारथ
कृपाचार्य द्रौणी सम अत्री ❀ हमहूं हैं कृतबर्मा क्षत्री
शल्य नरेश अहै बल भारी ❀ क्षत्री महाबीर धनुधारी
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा ❀ दीजै भूप शल्य शिर भारा
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये ❀ मुकुट शल्य के शीश बँधाये
बिप्रन आइ बेदध्वनि भाख्यउ ❀ आगे कलश नीर भरि राख्यउ
बहुत भाँति शकुनी शुभ कीन्हे ❀ दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हे
शल्य नरेश आपु यश लीजै ❀ रण पांचौ पाण्डव बध कीजै
भीषम प्रथम गिरे मैदाना ❀ द्रोण गुरू को भयो निदाना

दो० सेन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्ण से मित्र ।
शल्य पाण्डवन जीतिहै, ऐसी नृप के चित्र ॥

कही शल्य देखहु पुरुषारथ ❀ मारि पाण्डवन जीतहुँ भारथ
महायुद्ध करिहौं परतक्षक ❀ पै अर्जुन रथ श्रीपति रक्षक
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना ❀ रविके उदय साजि सब सैना
कृपाचार्य अश्वथामा साज्यउ ❀ भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ
कृतबर्मा कीन्हेउ असवारी ❀ सेन अनेक बीर धनुधारी
अस्त्र बाँधि शकुनी तब आयउ ❀ चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ
कुरुपति रथ साजो है कैसे ❀ इन्द्र बिमान देखिये जैसे
चञ्चल चपल आनि रथ जोरे ❀ पवन बेग सों चारिउ घोरे
ध्वजा पताका बाँधेउ बाना ❀ बहुत भाँति बैरख फहराना
गज पाछे पर्बत सम भारी ❀ पांव जँजीर नैन अँधियारी
चारिहु पाट बहत मद धारा ❀ ज्यों झरना झर बहै पनारा
अति उतंग देखत छबि पावत ❀ मनहुँ मेघ धरणी पर आवत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० कुरुपति चले साजि दल, सेना सिन्धु समान।
हय रथ पैदल चले बहु, गर्द लोपिगे भान॥

धर्मराय कीन्ही असवारी ❀ पारथ रथ जोते बनवारी
अर्जुन अङ्ग सनाह बिराजै ❀ अक्षयत्रोण गाण्डिव सो भ्राजै
चढ़े कोपि रथ भीम भयंकर ❀ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर
चढ़ि तुरंग पर नकुल स्वहाये ❀ धर्मराय कहँ शीश नवाये
कञ्चन रथ सहदेव बिराजै ❀ करअसुफरी सरिस शर छाजै
धृष्टद्युम्न क्षत्री गण राजे ❀ चढ़े तुरङ्ग बीर सब गाजे
गजअरूढ़ अगणित बल भारी ❀ जिनके नयन परी अँधियारी
पहिरि सनाह महावत चढ़े ❀ मानहुँ बिधि अपने कर गढ़े
क्रोधवन्त जानत रण घोरा ❀ छायालखि देखहिं भुज ओरा
कोपमान पैदल रण चांड़े ❀ फरी लेइ चमकावत खांड़े
सांगि शूल लीन्हे कोऊ कर ❀ कोउ मुगदर लै कोउ धनुर्द्धर

दो० धर्मराययहिबिधिचल्यो, दलबलकीन्ह्योसाज।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजराज॥

सेन साजि कुरु खेतहि आये ❀ द्वउ दल बीरन शोभा पाये
बम्ब निशान बाजने बाजे ❀ होत शब्द मानहु घन गाजे
कोहकत गज हींसत हैं धारे ❀ आगे होयँ शूर रण जोरे
अग्रहि पेलि देहिं मयमन्ता ❀ क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता
रथी रथी शर बर्षन लागे ❀ कोप अनल उर अन्तर जागे
खमसी अनी जुरे असवारा ❀ मुगदर गदा शेल परिहारा
हांक मारिकै पैदल धाये ❀ महायुद्ध करिबे मन लाये
यहिबिधि लरत करत घनघारा ❀ मण्डउ खेत जोर सों झोरा
आगे शल्य हांकि रथ आये ❀ बाण बृष्टि रथ ऊपर लाये
शर अनेक बर्षत हैं कैसे ❀ जलद मनहुँ श्रावण महँ जैसे
नन्दिघोष श्रीपाते पहुँचायो ❀ अर्जुन बाण बुन्द झरिलायो
द्रौणी भीम करत संग्रामा ❀ दोऊ जुरे खेत जय कामा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० कृतबर्मा अरु नकुल सों, भिरे सेत परिचारु ।
शकुनी रण सहदेव सों, भई भयंकर मारु ॥

कृपाचार्य कीन्यो पुरुषारथ ❋ धृष्टद्युम्न सों मण्ड्यो भारथ
कुरुपति धर्मराय रण सरसे ❋ छूटत बाण बुन्द सम बरसे
दउ दल महा बाजने बाजे ❋ करहिं युद्ध क्षत्रीगण गाजे
यहिबिधि सरिस लरावत बाना ❋ जूझे बीर गिरे मैदाना
शल्य हाथ तीक्षण शर छूटे ❋ सेन बेधि धरणी महँ फूटे
अर्जुन के बाणन के मारे ❋ कुरुदल लोटे परे निनारे
परे शूर महि लोटत कैसे ❋ लागत पवन पाकफल जैसे
क्षत्री सदा अस्त्र परिहारहिं ❋ एकहि एक क्रोध करि मारहिं
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे ❋ घायल नन्दिघोष के घोरे
सहस बाण मारे हनुमानहिं ❋ असी बाण ते श्रीभगवानहिं
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मारे ❋ शरते तन जरजर कैडारे
तब पारथ कीन्हेउ संधाना ❋ शल्य अङ्ग मारे बहुबाना

दो० आठ बाणते रथ हन्यो, तुरग अङ्ग शरबीश ।
एकबाण यहिबिधिचल्यो, कट्यो सारथी शीश ॥

शल्यहि भयो क्रोध अतिभारी ❋ करेउ अवर रथपर असवारी
यहिबिधि बाण बुन्द झरिलाये ❋ पाण्डवदल बहु मारि गिराये
अर्जुन त्यागि बाण यहि रूपा ❋ प्रलयकाल जैसे यम भूपा
कुरुदल पारथ किये निपाता ❋ जानत सबै युद्ध की बाता
ऐसे बाण क्रोध करि जोरे ❋ मानुष कहा शेष शिर फोरे
शल्य कोपि लागे शर मारन ❋ जूझे सेन हजार हजारन
भीमसेन द्रौणी ते भारथ ❋ दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ
मारे बाण क्रोध ते पागे ❋ चल्यउ न एक एक के आगे
सत्तरि बाण भीम उर लागे ❋ क्रोधवान उर अन्तर जागे
किये भीम तब लघु संधाना ❋ गुरुसुत अङ्ग हने शत बाना
दोऊ बीर करत घमसाना ❋ जरजर भये लगे तन बाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donation

क्रोधवन्त यहिबिधि शर छांड्यो ❋ भारत भूमि बाण ते गाड्यो

दो० यहिबिधि कीन्हेउ युद्ध बहु, दोऊ बीर समान।
सात लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझि गिरे मैदान॥

अर्द्धचन्द्र शर द्रौणी छांड्यो ❋ धनुगुण भीमसेन को काड्यो
करते धनुष डारि महि दीन्ह्यो ❋ रथ ते उतरि गदा कर लीन्ह्यो
दैकरि हांक बृकोदर धाये ❋ मानहुँ काल देह धरि आये
द्रौणी कोपि बहुत शर मारे ❋ बायें अङ्ग भीम सब टारे
क्रोधित भये गदा परिहारे ❋ बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे ❋ सेना बधन भीम मन दीन्हे
धर्मराय दुर्योधन सारन ❋ बरषैं बाण मनो घन श्रावन
दोऊ भूप छत्र के धारी ❋ महाशूर क्षत्री अधिकारी
भालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर कीन्हे
दुर्योधन कीन्हेउ संधाना ❋ धर्मराय उर मारेउ बाना
क्षत्री सबै करत रण सरसे ❋ चहुँदिशि बाणबुन्द से बरसे
कृतबर्मा सन नकुल लराई ❋ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई

दो० अर्जुन शल्यहि रण मचो, रथ चाके घहरात।
हांकत हरि रथ हांकदै, पीताम्बर फहरात॥

श्याम शरीर जगत मन मोहै ❋ कुण्डल झलक कपोलन सोहै
श्रम जल बुन्द बदन पर कैसे ❋ मरकत मणि मुक्ताहल जैसे
सारथिरूप धरो बनवारी ❋ भक्त हेतु पाण्डव हितकारी
कही कृष्ण अर्जुन सों बैना ❋ चित धरि करौ शल्यसन सैना
सुनि अर्जुन लागे शर मारन ❋ जूझी फौज हजार हजारन
शल्य नरेश पाण्डुदल मारत ❋ जैसे अग्नि सघन बन जारत
बीरन हाथ तेज शर छूटत ❋ भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटत
महामत्त लाखन गज धावत ❋ आगे परत सो मारि गिरावत
ठोकर पुनि बखोरिसों मारत ❋ बहुतक छेदि दन्तसों डारत
बहुत लपेटि शुण्ड सों लीन्हे ❋ डारि चरणतर चूरण कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तोरि शीश फेंकत हैं कैसे ❀ पाके ताल गिरहिं महि जैसे
अति उतंग देखत भयकारी ❀ यहि बिधि बहुतक सेन सँहारी

दो० पाण्डवदल जूझे घने, भई भयंकर मारि।
लैकर गदा हांक दै, धाये भीम प्रचारि॥

गदा घाव कुञ्जर संहारेउ ❀ ताते बदन फोरिकै डारेउ
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ ❀ गहिकरशुण्डधरणिमहँ पटकेउ
फेंके पैदल जात न जाने ❀ ज्यों बकुला को पंख उड़ाने
यहिबिधिकीन्ह्योसेननिकन्दन ❀ दौरे देखि द्रोणगुरुनन्दन
क्रोधित ह्वै कीन्हे संधाना ❀ भीमअङ्ग मारे शत बाना
तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हे ❀ ते शर घाव शीश पर दीन्हे
भीमसेन तब धनुष सँभारे ❀ द्रौणी अङ्ग बाण दश मारे
यहिबिधि दोउ युद्ध अरुझाने ❀ अरुणबरण शोणित लपटाने
शकुनी कही भूपसों बाता ❀ कुरुपति सुनो युद्ध की घाता
दोऊ दल अटके अरुझाने ❀ महायुद्ध कछु जात न जाने

दो० अब आज्ञा म्वहिं दीजिये, लै धावों कछु सैन।
बेड़े होइ अरिपर परैं, आपु देखिये नैन॥

कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हे ❀ अपनी अनी साथ कै लीन्हे
दश सहस्र कुञ्जर मतवारे ❀ तीनि सहस रथ सरिस सँवारे
साठिसहस असवार महाबल ❀ डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल
क्रोधवन्त होइ शकुनी धाये ❀ बिदरि होइ पाछे कहँ आये
पैठे पेलि फौज महँ कैसे ❀ गङ्गा मिलीं सिन्धु महँ जैसे
शल्य खड्ग मुद्गर फटकारहिं ❀ शरते बीर शैल बहु मारहिं
मारे बहु पाण्डव दल बीरा ❀ भरकीं अनी धरहिं नहिं धीरा
शकुनी रची युद्ध की करणी ❀ जूझी सेन परी सब धरणी
भयो शोर दल बैरख डोले ❀ दगा दगा पाण्डव दल बोले
छूटे बाण सकै को भाखन ❀ पाण्डव दल जूझे तब लाखन
महाशूर रण पलटि सँभारे ❀ मारु मारु कै सबन पुकारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चलैं न एक एक के आगे ❀ उरझे सबै क्रोध ते पागे

दो० यहिबिधि शकुनी सेनकी, जूझी फौज अनन्त।
पारथ अब निरखत कहा, भाष्यउ कमलाकन्त॥

नन्दिघोष फेरे बनवारी ❀ भये अघात शब्द अधिकारी
तब अर्जुन शर छांड़त कैसे ❀ प्रलयकाल घन बरषत जैसे
हय गजरथ कीन्हेउ बहुखण्डित ❀ रुण्ड मुण्ड धरणी महँ मण्डित
यहि बिधि कीन्हेउ सेननिकन्दन ❀ हांक देत हांकत जगबन्दन
तब शकुनी कीन्हे संधाना ❀ अर्जुन उर मारे शत बाना
कृष्ण अङ्ग बहु बाण प्रहारे ❀ बीस बाण अश्वन उर मारे
तब पारथ तीक्षण शर छांटे ❀ मारे अश्व धनुष गुण काटे
सेना बधि अर्जुन रण गाजे ❀ चढ़ि तुरंग पर शकुनी भाजे
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं ❀ पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं
यहि बिधिते अर्जुन धनु खांचे ❀ जूझे सकल एक नहिं बांचे
बिरथ भये आये तब तुमपै ❀ मन्त्र एक नृप सुनिये हमपै

दो० धनुधारी अर्जुन सरिस, जीति सकै नहिं कोइ।
कोताह्वै सब मिलि जुरहिं, होनी होइ सु होइ॥

कुरुपति के मन में तब आई ❀ कहा शल्य सों बूझौ जाई
उरझे शल्य युद्ध के घाता ❀ शकुनी आय कही तब बाता
शरते अर्जुन सकहिं न मारन ❀ अब लरिये कोता हथियारन
यहि बिधि कीन्हे क्षत्री धर्महिं ❀ हारि जीति राजा के कर्महिं
सेवक धर्म करहिं प्रतिपालहिं ❀ होई अन्त लिखा जो भालहिं
शकुनी शल्य लगे यहि बाता ❀ उत पारथ दल करत निपाता
शल्य नरेश क्रोध कै धाये ❀ धर्मराय के सन्मुख आये
भाष्यो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं ❀ धर्मयुद्ध करिये केहि रूपहिं
छांड़ेउ धनुष बाण की करणी ❀ रथहि छांड़ि धाये सब धरणी
सत्रह दिवस भयो रणभारथ ❀ भीषम द्रोण करण पुरुषारथ
आजु युद्ध मेरे शिर भारा ❀ उतरि लरहु कोता हथियारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Funding by Sarayu Trust. Adi Shakti Samb Bhuvan Vani Trust Donations

भूप शल्य भाष्यो यह बानी ❋ धर्मराय बोलेउ सज्ञानी

दो० भूप युधिष्ठिर क्रोध करि, कहेउ बचन परमान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेशल्यपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें ❋ निज कर आजु मारिहौं रनमें
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ ❋ रथते उतरि बचन यह भाखेउ
रथहि छांड़ि उतरे सब धरणी ❋ धर्मयुद्ध कीन्हो यह करणी
धर्मराय त्यागी असवारी ❋ उतरे भूमि क्रोध करि भारी
दोऊ दल छांड़े निज स्यन्दन ❋ नन्दिघोष बैठे जगबन्दन
अर्जुन उतरि खड्ग लै हाथा ❋ धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हे साथा
नृप आगे सहदेव बिराजे ❋ बांधे अस्त्र फरी कर साजे
भीमसेन गहि गदा फिरावत ❋ नकुल शेल कर शोभा पावत
उतरे सबहिं युद्ध के शूरा ❋ क्षत्री धर्म महाबल पूरा
कुरुपति उतरि रथहि ते आये ❋ गहे अस्त्र कर शोभा पाये
महाबीर सब बांधे बाना ❋ अटके ठौर ठौर मैदाना

दो० दोऊदल यहिबिधि जुरे, कठिन बजाये सार ।
मुद्गर गदा शेल कर, छूटत खड्ग कि धार ॥

लागत खड्ग घाव शिर फूटे ❋ बाहत शेल सजोइल टूटे
मुद्गर धरत करत चकचूरन ❋ जूझि गिरे धर केतिक शूरन
फेरि खड्ग सहदेव सँभारत ❋ कौरव दल बहुते रण मारत
ऐसे हनत खड्ग कर साधे ❋ टूटि परहिं हय गय गिरे कांधे
क्रोधित शकुनि खड्ग परिहारे ❋ शिर काटत सहदेव सँभारे
हँसि सहदेव कही यह बानी ❋ सुनु मन्त्री शकुनी अभिमानी
तेरेहि मन्त्र भये सब नासा ❋ करहुँ आजुतोहिं यमपुर बासा
दोऊ बीर भिरेउ रण चांड़े ❋ उछरत तर्जि बचावत खांड़े
तब सहदेव घात करि पाये ❋ मारि खड्ग शिर काटि गिराये
कुण्डल सहित परेउ शिरधरणी ❋ महामारु कछु जात न बरणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीमसेन कर गदा सँभारे ❋ एकै घाव बीर सब मारे
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ ❋ मारेउ सेन कियो रण भारथ

दो० गदा हाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार।
हय गज रथ चूर्ण किये, सेना बीस हजार॥

हाथन शूर कटारिन मारहिं ❋ पकरि केश गहि भूमि पछारहिं
यहि बिधि महायुद्ध रण होई ❋ पाछे पांव धरहिं नहिं कोई
जुरे शिखण्डी द्रौणी सङ्गा ❋ महायुद्ध कीन्हे रणरङ्गा
क्रोधित खड्ग घाव परिहारहिं ❋ दोऊ बीर ढालपर टारहिं
गुरुसुत क्रोधित औझरझारो ❋ कटो शीश ह्वै परेउ नियारो
अर्जुन गह्यउ खड्ग तब हाथा ❋ काटे बहु क्षत्रिन के माथा
कहूं शीश कहुँ परे अधर धर ❋ खड्ग सहित कहुँ परे कटे कर
कोऊ युद्ध करत रण करणी ❋ कोऊ कटे अधरधर धरणी
लगे शल्य महि परे कराहत ❋ कोऊ खड्ग कोपि शिर बाहत
कहूं देखियत गज को शुण्डा ❋ कहूं मुण्ड कहुँ लखिये रुण्डा
कहूं कबन्ध धरणि पर धावत ❋ शीशपरे महि जय जय गावत
कुञ्जर शीश रुधिर की धारा ❋ जनु गेरू रँग स्रवत पहारा

दो० कुन्त फरी तोमर गहे, लरत शूर परचारि।
मारत बीरन क्रोध कै, निसरत पञ्जर फारि॥

सेन सबहि लोटत लपटाने ❋ खेलत फागु अबीरन साने
मारत शेल सजोइल फूटत ❋ रुधिरधार पिचिकासम छूटत
यहिबिधि खेलत चांचरि रन में ❋ महाशूर शङ्का नहिं मन में
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी ❋ कौरवदल लोटत सब धरणी
कृतबर्मा तब आपु सँभारे ❋ पाण्डव दल बहुतै संहारे
कोऊ बाहत खञ्जर धोपा ❋ कोउ मारत मुद्गर करि कोपा
भीमसेन गज बहुत सँहारे ❋ जो अभिरे तेहि सबहिं पछारे
मारु मारुकै सब मिलि भाखत ❋ महाबीर सब लोहुन चाखत
अभिरत भिरत लरत मैदाना ❋ क्रोधित सबै शङ्क नहिं माना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधिसों जोरत रणरङ्गा ❀ करत भोग सुरकन्यन सङ्गा
दो० दोउ बीर दल इमि लरत, जूझि गिरत मैदान।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े बिमान॥
रहत खेत महँ शूर न कैसे ❀ देखत भोर तारगण जैसे
धर्मराय तब कहा बिचारी ❀ सुनो शल्य हित बात हमारी
अब हमसों तुमसों है जोरा ❀ चढ़ि रथ कीजै धनु टंकोरा
बाजा भीम खेत महँ खांड़ो ❀ धर्मयुद्ध मोते रण चांड़ो
तब रथपर कीन्ह्यो असवारी ❀ धनुष बाण कर गह्यो सँभारी
कही शल्य अस्थिर अब रहिये ❀ मारतहौं तीक्ष्ण शर सहिये
यह कहि शल्य बाण दश छांटे ❀ धर्मपुत्र त्यहि बीचहि काटे
सात बाण भालुक नृप लीन्हे ❀ ते शर चोट शल्य पर कीन्हे
दोऊ बीर बाण परिहारहिं ❀ एकहिं एक क्रोधकै मारहिं
कोपि शल्य यमअस्त्रहि लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं ❀ इत नृप इन्द्रबाणसों मारहिं
तीसर बाण युधिष्ठिर छांटे ❀ नृपको धनुष बाण गुण काटे
दो० डारि धनुष कर शूललै, घालो घाव प्रचण्ड।
सात बाणते धर्मसुत, काटिकियोशतखण्ड॥
दोऊ बीर क्रोध ते पागे ❀ अशकुन होन बहुतबिधि लागे
दिशा धुंधि भयकारक भारी ❀ रवि अदृश्य बहु फिकर सियारी
जम्बुकगण बोलत रथ आगे ❀ रुधिर बुन्द नभ बरषन लागे
बैठे काक भयंकर बोलत ❀ भूमि चली अहिपति शिरडोलत
झंझर पवन बहै अतिभारी ❀ उलकापात होत भयकारी
गीधन आय शल्य रथ छाये ❀ ध्वजा टूटि धरणी पर आये
भये अघात शब्द घहराने ❀ अचरज करि सब काहू माने
भूप युधिष्ठिर हांके दीन्हो ❀ क्रोधित शक्ति हाथ कै लीन्हो
मारत हौं अब शल्य सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज हमारो
क्रोधित शल्य खड्ग कर लीन्हे ❀ शक्ति घाव राजा तब कीन्हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छूटत शक्ति शब्द भयो भारी ❀ दशौ दिशा कीन्ह्यो उजियारी
बज्रसमान शक्ति जब आई ❀ कुरुपति देखि महाभय पाई

दो० धर्म प्रबल सुतधर्म को, कीन्हो शक्ति प्रहार।
ढाल फोरि कर छेदिकै, हृदय भेदिगा पार॥

जूझे शल्य परे तब धरणी ❀ धर्मराज कीन्ही यह करणी
धर्मतनय जब शल्यहि मारो ❀ सब देवन जय जयति पुकारो
भीमसेन बल आपु सँभारो ❀ ज्यहि पायो त्यहि सबै सँहारो
द्रौणि कृपा कृतबर्मा भाजे ❀ जीति युद्ध पाण्डवदल गाजे
अन्ध धुन्ध भा खेत भयंकर ❀ नाचत महामगन मन शंकर
भूप युधिष्ठिर भाष्यो बैना ❀ अन्धकार नहिं सूझत नैना
कृष्ण समेत कियो तब गवना ❀ चले धर्मसुत अपने भवना
दुर्योधन तब शोचत मनमें ❀ कोऊ साथ रह्यो नहिं सँगमें
कीजै काह कवनि दिशि जैये ❀ बाढ़ो रुधिर पन्थ नहिं पैये
सात ताल भा रुधिर उँचाई ❀ हय गज भाषत बरणि न जाई
तुरग तुरंग कहत नहिं आवै ❀ रतनाकर की पटुतर पावै
बहे जात लोहित मँझधारा ❀ कवनि भांति जैये अब पारा

दो० पृथ्वीपति दुर्योधन, लक्ष छत्रधर साथ।
लक्ष्मी जाके कन्धपर, त्याहिबिधि कीन्ह अनाथ॥

तब नृप मन में कीन्ह बिचारा ❀ पैरि रुधिर जैये अब पारा
अस्त्र सनाह खोलि सब डारे ❀ लैकर गदा भूप पगु धारे
यहिबिधि भारत किये महारन ❀ एक लोथ पर परे हजारन
वार पार ढिग आव न जाही ❀ रुधिरनदी अति भई अथाही
पैरत भूप शङ्क नहिं मन में ❀ जात लोथ अभिरत है तन में
जबहुँ केश चरणन अरुझावैं ❀ पैरत जात पार नहिं पावैं
जहां द्रोण गाड़ो जय खम्भा ❀ अभिरे भूप गहो तब थम्भा
गहिकै खम्भ किये बिश्रामा ❀ जीव शोच पहुँचो किमि धामा
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा ❀ बूड़िजात सब सहत न भारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिधिबश एक लोथ तब गह्यो ❀ बूड़ो नहीं भार तिन सह्यो
चलो लोथ गहि रोहित हेलत ❀ अभिरत मृत्यु गदासों ठेलत
बहुत कष्ट सों उतरे पारा ❀ तब अपने मन कियो बिचारा

दो० कौन बीर की लोथ यह, किय मनमाहँ निदान।
शल्यपर्व या बिधि कही, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते शल्यपर्वणि
शल्यवधवर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

इति शल्यपर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ गदापर्व ॥

गदापर्व अब करत बखाना ❋ दुर्योधन मन में अनुमाना
अन्धकार भो गयो न चीन्हा ❋ मुकुट ज्योति मुख देखै लीन्हा
लषण कुमार चीन्हि जब पाये ❋ करुणा करत भूप मन लाये
जूझे पुत्र हमारे काजा ❋ कहिहौं कहा भवन अतिलाजा
ऐसे सुत सपूत संसारा ❋ मुयहु समय म्वहिं पार उतारा
रोय कह्यो दुर्योधन राजा ❋ बिधि बिरुद्ध कीन्हो यह काजा
यहि बिधि लोथ डारि जो जैहैं ❋ जम्बुक काक गीधगण खैहैं
अग्नि देन अवसर नहिं पाये ❋ कहो मृत्तिका दै करि जाये
गदा घाव धरणी पर मारो ❋ भयो गढ़ा तब लोथहि डारो
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो ❋ जम्बुक काक न पावहिं जैसो
महाशोच करि कीन्हो गवना ❋ पहुँचे जाइ सुकुरुपति भवना
अन्तःपुर कीन्हे परबेशा ❋ रानी चकित देखि यह बेशा

दो० एक बसन बूड़े रुधिर, अरुणबरण सब अङ्ग।
गदाहाथ शिर मुकुट है, और न कोऊ सङ्ग॥

रानी रोय ठोंकिकै माथा ❋ जिनबिधिकीन्ह्योहमहिंअनाथा
आदर करि आसन बैठाई ❋ धोइ रुधिर बस्तर पहिराई
दुर्योधन भाष्यो सब बचना ❋ ज्यहिबिधि भई युद्ध की रचना
सुनि रानी बोली यह बानी ❋ मेरी बात नाथ नहिं मानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी ❀ जूझेउ खेत सबहिं बलभारी
गिरे शल्यसुत बन्धु गिराये ❀ खेत छांड़ि काहे तुम आये
जैये तहां जहां पितु आवै ❀ जौलों खोज भीम नहिं पावै
कछुक आनि मिष्टान्न जेंवाये ❀ दीन्ह पान कछु बिनय सुनाये
अब यहि समय भूप सुनिलीजै ❀ साहस छोंड़ि शोच नहिं कीजै
चारिहु युग ऐसी चलि आई ❀ कर्म लिखा सो मेटि न जाई
दुर्योधन सुनि कीन्ह्यो गवना ❀ आये त्वरित पिता के भवना
चरण परसि ठाढ़े भे आगे ❀ कौरवपति सों कहिबे लागे

दो० दुर्योधन सब बिधि कही, जूझि गिरे सब खेत।
अब उपाय का कीजिये, बूझत हौं सो हेत॥

सुनत शोच धृतराष्ट्रक कीन्हो ❀ करि करुणा कछुकहिबो लीन्हो
बिधि परपञ्च जानि नहिं जाई ❀ ब्यास सरोवर रहौ छिपाई
गान्धारी भाष्यो तब बैना ❀ देखों पुत्र खोलि त्वहिं नैना
जबते पति देखो मैं आँधो ❀ तबते नैन पटी हम बाँधो
बसन राखि सुत आगे आयो ❀ पाछे ब्यास सरोवर जायो
एक बसन सों जङ्घ छिपाये ❀ दुर्योधन तब आगे आये
पटी खोलि गान्धारी हेरी ❀ हे सुत बात न राख्यो मेरी
वज्रशरीर भयो सुत तोरा ❀ उबरा जङ्घ दोष नहिं मोरा
अस कहि पटी नैन महँ दीन्हे ❀ करुणा सहित बिदा सुत कीन्हे
चलि निशङ्क दुर्योधन कैसा ❀ परमहंस छांड़त गृह जैसा
मातु पिता छांड़े त्रिय भवना ❀ लैकर गदा पन्थ कहँ गवना
तके सरोवर नृप तहँ आये ❀ फूले कमल सुबास सुहाये

दो० चक्रबाक सारस युगल, निर्मल जल गम्भीर।
मधुकरगण डोलत सदा, बहु मराल की भीर॥

पिछले पांव धसो जल राजा ❀ पाण्डव खोज मेटिबे काजा
यहिबिधि तृषित नीरतकि आये ❀ झलकत मुकुट देखि तेहि पाये
जलथम्भन विद्या कर कैसे ❀ बैठो जाइ भवन महँ जैसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लक्ष्मी कृपा बहुत बिधि कीन्ही ❀ कनकपलँग सोवन कहँदीन्ही
दुर्योधन कीन्हे बिश्रामा ❀ पाण्डु गये सब अपने धामा
जयकरि बिजयभवनकहँ कीन्ही ❀ कुन्ती हाथ आरती लीन्ही
रणमहँ इन मारे कुरुनाथा ❀ करै आरती तेहि निज हाथा
कही भीम सब बन्धु सँहारे ❀ दुर्योधन कहँ मैं नहिं मारे
धर्मपुत्र कह भो रण घोरा ❀ मोसन परेउ शल्य सों जोरा
अर्जुन कही मातु सों बैना ❀ कुरुपति हम नहिं देख्यो नैना
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा ❀ तब कुन्ती बूझा सहदेवा
मन्त्री मन्त्र बिचारत मनमें ❀ कुरुपति बच्यो कि जूझ्यो रनमें

दो० हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन।
जीवत है दुर्योधन, गिरत न देख्यों नैन॥

कुन्ती कही सुनहु हरि पारथ ❀ तुम भारथ रण कियो अकारथ
कुशल गये दुर्योधन धामा ❀ तौ सेना मारे केहि कामा
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग धाये ❀ दुर्योधनहिं बधे यश पाये
तब कुन्ती यह बात जनाई ❀ कही कृष्ण मेरे मन आई
पाण्डव तबहिं चले हरि साथा ❀ खोजत खोज फिरैं कुरुनाथा
अन्धकार भा जात न चीन्हा ❀ बारि मशाल हाथ कै लीन्हा
जूझे बीर खेत मों परे ❀ झलकैं मुकुट जरायन जरे
कहूं मुण्ड कहुँ देखे रुण्डा ❀ कहूं गयन्द परे कहुँ शुण्डा
कहूं तुरंगम परे अरध खर ❀ कहूं चरण कहुँ परे बिकरकर
रुधिरपानकरि योगिनि नाचहिं ❀ जम्बुककाकलाथि बहु खाचहिं
कुरुपति खोज करत नहिं पावत ❀ देखो पन्थ ब्याध इक आवत
भीमसेन पूछे तब बयना ❀ दुर्योधन को देख्यो नयना

दो० कही ब्याध करजोरिकै, भीमसेन सों बात।
बीर एक देख्यो हतो, ब्यास सरोवर जात॥

गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये ❀ बीर एक हम देखन पाये
सुनी भीम मन महँ अनुमाने ❀ निश्चय कै दुर्योधन जाने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पांचौ बन्धु कृष्ण सँग आवत ❀ आगे ब्याध पन्थ दिखरावत
ब्यास सरोवर निकटहिं आये ❀ चरण चिह्न तहँ देखन पाये
धरत पांव दुर्योधन जहँवां ❀ फूलत करण धरणि महँ तहँवां
बिधि बिरोध काहू नहिं होई ❀ लक्षण भयो कुलक्षण सोई
यहि बिधि खोजकरत चलि आये ❀ ब्यास सरोवर देखन पाये
अगम गँभीर सरोवर कैसो ❀ उठै तरङ्ग तरङ्गिनि जैसो
कृष्णदेव तब आप बखानत ❀ जलथंभन नीको नृप जानत
धर्मराज को भा अंदेशव ❀ जलमहँ कछु बल चलै न केशव
अब उपाय करिये प्रभु कैसो ❀ अबहीं निकरै कुरुपति जैसो

दो० महाबीर दुर्योधन, कहैं आपु भगवान ।
अबहीं निकरत नीरसों, भीम हांक सुनि कान ॥

भीमसेन आये तब तीरा ❀ दिये हांक दुर्योधन बीरा
निकरौ नृप बूड़ो केहि काजा ❀ कुरुबंशहि लावत हौ लाजा
सुनतै हांक क्रोध कै भारी ❀ उठिकर गदा गहो सम्भारी
पकरि बांह लक्ष्मी बैठाई ❀ पुनि राजा को बहुत बुझाई
जलसों निकरि युद्धमति करिये ❀ मेरो कहा चित्तमहँ धरिये
दूजी हांक भीम जब दीन्हो ❀ कटुक बचन कहिबे बहु लीन्हो
सुत बान्धव रण सबहिं जुझायो ❀ आपु भागिकै जीव बचायो
मानि गोबिन्द धरायो नामा ❀ जलमों आनि छिप्यो केहि कामा
भीम हांक सुनि कुरुपति कैसी ❀ द्रुमदावा लागी पुनि जैसी
गहि कर गदा उठन जब चह्यो ❀ आगे ह्वै कमला कर गह्यो
अस्थिर रहौ सुनौ मम बैना ❀ काल्हि देहुँ संपति सों सैना
दिवस अठारह भई लराई ❀ तीनि लोक फिरिकै हम आई

दो० तोसम लक्षणवन्त नहिं, कह्यों कन्ध जेहि बास ।
तीनि लोक महँ ढूंढ़िकै, फिरि आइउँ तव पास ॥

काल्हि दिवस जो तेरे मन में ❀ जीति सकैं नहिं पाण्डव रन में
ता कारण सुनु तोसों कहिये ❀ आजु धीर ह्वै जल महँ रहिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनिकै नृप कमला के बयना ❋ पौढ़ि पलँगपर कीन्हेउ शयना
तीजी हांक भीम जब मारो ❋ निकरु निकरु कुरुनाथ पुकारो
छांड़त हौ कत क्षत्री धर्मा ❋ होइहहि सोइ लिखा जो कर्मा
महागर्व तुम सब दिन कीन्ह्यो ❋ निकरत नहीं भाजि जल लीन्ह्यो
धिक जीवन जल में है तेरो ❋ इतनी बात अंगवत मेरो
अपने बलते गनत न आना ❋ अब काहे तुम तजत गुमाना
मारहुँ गदा फाटि जल जैहै ❋ गहिकै केश अबहिं लै ऐहै
सुनत बचन दुर्योधन जस्यो ❋ बरत अग्नि मानहुँ घृत पस्यो
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं ❋ गही बाहँ कमला पुनि तबहीं
बन्धु बैर को सकहि निहारी ❋ पांयन ठेलि लक्ष्मी डारी

दो० गदापाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आय।
धर्मराय तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाय॥

धर्म युधिष्ठिर के मन आई ❋ चलि सिंहासन बैठिय भाई
सब मिलि हम सेवा तव करिहैं ❋ आज्ञा सदा शीश पर धरिहैं
पांच गाँव अजहूं मोहिं दीजै ❋ अपनो छत्र सिंहासन लीजै
यह सुनि दुर्योधन हँसि भाखे ❋ धर्मराय तुम धर्महिं राखे
ऐसे समय न छांड़ौं टेका ❋ करिहौं आजु एक को एका
सुई अग्र देहौं नहिं दाना ❋ करहुँ युद्ध भारत मैदाना
धर्मराय कह सुनिये भाई ❋ तेरे मन ऐसी जो आई
दोउ बन्धु अब हम सों लीजै ❋ तीनि तीनि समता रण कीजै
हँसि दुर्योधन भाष्यो बानी ❋ भाई तुम यह बात न जानी
अर्जुन भीम लेउँ जो दोऊ ❋ बांधत तुम्हैं न राखत कोऊ
धर्मराय तब कहा बुझाई ❋ एक एक ते उचित लराई
दुर्योधन बोले परिमाना ❋ राजा राजहिं युद्ध समाना

दो० कह्यो कृष्ण कुरुनाथ सों, यह है उचित बिचार।
लरौ भीम सों खेत महँ, जय देइहि करतार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाख्यो ❋ कबते भीम छत्र शिर राख्यो
कही कृष्ण तुम बात न पाई ❋ चारिहु युगहि याहि चलिआई
भुजबल ते बसुधा कर भोगा ❋ ज्ञानी ह्वै सुकरहि पुनि योगा
भीम महाबल जीते भारथ ❋ लई राज अपने पुरुषारथ
तब भीमहिं राजा करि लेखों ❋ धर्मराय नावहिं शिर देखों
पांचहु बन्धु कृष्ण मुख ताके ❋ सब दिन रहत भरोसे जाके
धर्मराय जब शीश नवैहैं ❋ पल मों भीमसेन जरि जैहैं
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो ❋ लै हरिबंश भीमकहँ दीन्ह्यो
कृष्णदेव यह रचना ठाना ❋ ताको दुर्योधन नहिं जाना
श्रीपति कही बिलम्ब न लावहु ❋ धर्मराज अब शीश नवावहु
भीम बगल हरिबंशहि राखो ❋ सो तकि धर्मयुधिष्ठिर भाखो
भूप भीम कहँ शीश नवायो ❋ जयधुनि करि हरि शंख बजायो

दो० दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवन्त ह्वै बैन।
गदा युद्ध हम तुम करहिं, सब मिलि देखैं नैन॥

गहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े ❋ क्रोध अनल उर अन्तर बाढ़े
मण्डलफिरहिंघातदोउताकहिं ❋ कोउ कोऊ कहँ यतन न पावहिं
रोंकत गदा गदा सों टारत ❋ एकहि एक क्रोध कै मारत
गदा प्रहार शब्द भा कैसे ❋ छूटत बज्र इन्द्र कर जैसे
सरस निरस कहिजात न काहू ❋ परिडत गदा युद्ध बल बाहू
धावत गदा हांक दै हांकत ❋ पद के भार मेदिनी कांपत
कुरुपति भाष्यो भीम सँभारो ❋ आजु जानिबो तेज हमारो
कही भीम अब जानत भाई ❋ गाल मारि जनि करहु बड़ाई
मोंते आजु पस्यो है कामा ❋ देखो को जीतै संग्रामा

दो० दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचण्ड।
गदा रोंकि सम्भारिकै, भीम महाबलबण्ड॥

कोपि भीम तब गदा प्रहारा ❋ महाबीर कुरुनाथ सँभारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोऊ बीर जोरते झरपत ❀ महाबीर मन नेकु न डरपत
यहिबिधि करत युद्ध की करणी ❀ भूमिपाल डोलति है धरणी
महामत्त तन उरझ्यो दोऊ ❀ प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ
गदा गदा सों लागत जबहीं ❀ निकरत अग्निभभूका तबहीं
गदा हाथ रण शोभा पावत ❀ पक्ष सहित पर्वत जनु धावत
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे ❀ सतयुग महँ बलि बाँध्यो जैसे
चढ़े बिमान देवगण देखत ❀ अपने मन अचरज करि लेखत
गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे ❀ कुंकुम अरु कज्जल गिरि जैसे
कलबलकरत भीम फिरि आवत ❀ गदा पवन ते पक्षि उड़ावत
जुरे भीम दुर्योधन कैसे ❀ प्रद्युम्नहिं शम्बर रण जैसे

दो० अयुत नाग बल दुहुँनके, महाबीर परचण्ड।
मारत गदा जु कोपिकै, ज्यों टूटत यमदण्ड॥

लागत गदा दोउ के तन में ❀ धमकत घाव शब्द जन घन में
चञ्चल चपल फिरत दोउ बांको ❀ घूमत मनहुँ कुम्हार को चाको
दोऊ बीर युद्ध मन लाये ❀ तीरथ फिरि बलभद्रहि आये
देखो तहां महारण घोरा ❀ परे भीम दुर्योधन जोरा
हलधर बिहँसि कही यह बाता ❀ कुरुपति सहित गदा के घाता
बल कछु अधिक भीम के तनमें ❀ हार जीत नहिं देखत मन में
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई ❀ केहि कारण अब रचहु लराई
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन ❀ कोउ न सकहि काहुको मारन
अजहुँ दूनहूं प्रीति बिचारहु ❀ जो मानहु हित बचन हमारहु
युद्ध घात दोऊ अरुझाने ❀ हलधर बचन हृदय नहिं आने
कहि बलभद्र कियो तब गवना ❀ कुरुक्षेत्र परिरक्षक कवना
कृष्ण भीम कहँ जङ्घ बताई ❀ निरखि बृकोदर घात लगाई

दो० भीमसेन तब क्रोधकै, मार्यो घाव बचाय।
दोउ जङ्घ भञ्जन भयो, पर्यो धरणि पर आय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिरि कुरुपति धरणी में ऐसे ❀ काटत मूल परत द्रुम जैसे
पूर्व बैर मनमहँ सुधि आई ❀ भीमसेन तब लात उठाई
हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा ❀ रहहु भीम कहिबे अस लीन्हा
अष्टादश क्षौहिणी भुवारा ❀ भनत गोबिंद जानु सब सारा
कृष्ण सहित भाष्यो सब राजा ❀ चरण प्रहार करत क्यहि काजा
करते चरण समेटन कीन्ह्यो ❀ बैठ सँभारि कहै तब लीन्ह्यो
क्षत्री धर्म न भीम बिचाख्यो ❀ गदा घाव जङ्घन पर माख्यो
कही भीम दुर्योधन बीरहिं ❀ जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं
तादिन मैं सबसों प्रण भाख्यों ❀ तोख्यो जङ्घ प्रतिज्ञा राख्यों
श्रीपति कही कुरूपति राजहिं ❀ जब हम गये बसीठी काजहिं
तादिन मेरो कहा न कीन्हा ❀ कटुक बचन मोसे कहि दीन्हा
सेना संपति सकल गँवायो ❀ ज्यहि क्षण करगहि मोहिं उठायो

दो० दुर्योधन कह कृष्णसों, मैं हौं जन्तु समान ।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान ॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी ❀ मोहिं दोष नहिं अन्तर्यामी
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना ❀ धर्मराय तब आपु बखाना
कुरुपति कही बचन परमाना ❀ सुनि माधव तब कीन्ह पयाना
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्हे ❀ भारत जीति भवन शुभ कीन्हे
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो ❀ दीनदयाल भक्तप्रण राखो
अस कहिकै आरती सँवारी ❀ प्रथम कृष्ण के शीश उतारी
धर्मराय सों माधव भाखो ❀ मेरो मन्त्र सदा तुम राखो
मो कहँ मति ऐसी बनि आई ❀ चलो साथ तुम पांचौ भाई
आजु राति बसिये नहिं भवना ❀ नन्दिघोष चढ़ि कीजै गवना
अस कहि पांचौ बन्धु चढ़ाये ❀ योजन एक भवन तजि आये
अर्जुन हृदय शोच भा भारी ❀ का रचना यह कीन्ह मुरारी
सुमिरण शम्भुनाथ कर कीन्हा ❀ शंकर आय दरश तब दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० श्रीहरि भाष्यो शम्भु सन, हम सब कीन्हो गौन।
आजु राति द्वारे रहौ, द्वारपाल ह्वै भौन॥

गङ्गाधर भाष्यो परतक्षक ❋ आजु द्वार रहि हैं हम रक्षक
जो बिधि रची होय पुनि सोई ❋ द्वारे जान न पावै कोई
लै पाण्डव माधव पगु धारे ❋ शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी ❋ गिरे भूप यह हिय महँ जानी
मध्य प्रहर निशि आयो तहँवां ❋ जङ्घ भङ्ग दुर्योधन जहँवां
बैठे कर सों गदा फिरावत ❋ जम्बुक गीध निकट नहिं आवत
गुरुसुत दूरिहिते कहि कारण ❋ अमर सदा सक कोउ न मारण
अजहूँ कहा हमारो कीजै ❋ पाण्डव मारि जगत यश लीजै
सुनि बोले तब द्रौणी ऐसा ❋ राजा बिनु रण कीजै कैसा
गन्ध रुधिर लै टीका कीन्हा ❋ मैं राजा तुम कहँ करि दीन्हा
मारि पाण्डवन पांचौ भाई ❋ बसुधा भोग करहु तुम जाई

दो० गुरुसुत भाषो क्रोध कै, दुर्योधन सों बैन।
मारि पाण्डवन शीश लै, आनि देखावहु नैन॥

ऐसो कहि पुनि आयो तहँवां ❋ कृपाचार्य कृतबर्मा जहँवां
तासों बचन कहै अस लीन्हो ❋ दुर्योधन राजा म्वहिं कीन्हो
द्वौ जन मोरि सहाय जो कीजै ❋ पाण्डव मारि राज्य अब कीजै
बटतर तीनों मनहिं बिचारत ❋ एक उलूक काक बहु मारत
द्रौणी कहै देखिये नैना ❋ बूझे शत्रुहि को बल रैना
चलौ त्वरित जाइय यहि कारण ❋ दिवस नाश को पाण्डव मारण
यह कहिके तीनों जन आये ❋ द्वारे दरश शम्भु के पाये
गढ़ चहुँ फेर शूल है रक्षक ❋ दरवाजे शंकर परतक्षक
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❋ जात कहां ठाढ़े त्रिपरारी
द्रौणी कहा रहहु तुम रक्षक ❋ जैहौं निकट होइ परतक्षक
अस कहिके शंकर ढिग आये ❋ कै प्रणाम तब गाल बजाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब कृपालु हर भाष्यउ बानी ❀ मांगौ बर द्रौणी बड़ ज्ञानी

दो० द्रोणपुत्र यहि बिधि कही, भीतर दीजै जान।
गदापर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति गदापर्व समाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

सौप्तिक और ऐषिक-पर्व

—:o:—

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

सोते हुए द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को अश्वत्थामा ने मार डाला, तदनन्तर पाण्डवों पर ब्रह्मास्त्र के प्रहार करने की कथा वर्णित है।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९३१ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत सौप्तिकपर्व ॥

शम्भुनाथ बोल्यो यह बचना ❀ मनमें समुझि कृष्णकी रचना
द्वारे मारग जान न पैहौ ❀ गढ़हि फांदिकै भीतर जैहौ
कह्यो द्रौणि शंकर सों ऐसो ❀ फिरत शूल त्यागहिम्वहिंकैसो
काढ़ि भस्म शंकर तब दीन्हा ❀ जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा
कै प्रणाम तब तुरत सिधाये ❀ फांदो गढ़ भीतर तब आये
प्रथम गये द्रौणी चलि तहँवां ❀ कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवां
बैठे चपरि हृदय पर कैसे ❀ व्याघ कुरंग धरत हैं जैसे
लैकै खड्ग कण्ठ मों धरिहहुँ ❀ कटिहौं शीश बिलंब न करिहहुँ
कनक पलँग पर कीन्हे शैना ❀ पांच पुत्र तब देख्यो नैना
पांच बन्धुके पांचो जाये ❀ रूप समान भेद नहिं पाये
खड्ग घाव तब द्रौणी कीन्हे ❀ पांचौ शीश बामकर लीन्हे
यहि अन्तर दासी सब जागीं ❀ हा हा शब्द पुकारन लागीं

दो० जागिउठ्यो रनिवास सब, टेरत करुणा बैन।
द्रोण पुत्र कर खड्ग लै, लाग निपातन सैन॥

चौंकिउठे पुनि सब अकुलाने ❀ आपुस में बहुते अरुझाने
अन्धकार नहिं सूझै नैना ❀ मारु मारु करि भाषैं बैना
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते ❀ कृतबर्मा करि मारे तेते
अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत ❀ अपन परार कोउ नहिं बूझत
गढ़ भीतर द्रौणी संहारे ❀ निकरि चले कृतबर्मा मारे
भारत माहिं बचे हैं जेते ❀ निशा युद्ध महँ जूझे तेते
निकरि द्रोणसुत बाहर आये ❀ कृप कृतबर्मा देखन पाये

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection by Siddhanta eGangotri Gyaan. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारि पाण्डवन कीन्ह्यों काजा ❀ चलिये शीश देखाइय राजा
बैठे खेत कुरूपति जहँवां ❀ तीनिउ बीर गये चलि तहँवां
द्रौणी कही नृपति सों बाता ❀ पांचहु पाण्डव कीन्ह निपाता
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो ❀ मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो
धरे आनि शिर भूपति आगे ❀ मुकुट ज्योति सों देखन लागे

दो० पांच बन्धु के पांच सुत, भूप निहारे नैन।
बिस्मयकरि भूपति कही, द्रोणपुत्र सों बैन॥

करुणा करि भाष्यो तब राजा ❀ बालकबध कीन्ह्यो क्याहिकाजा
मूक भये दुख हृदय भुवारा ❀ बंश बार कीन्हे हत्यारा
असकहि प्राण तजे नृप जबहीं ❀ भय उपजो द्रौणी जिय तबहीं
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो ❀ द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो
कृतबर्मा जब चित्त बिचारा ❀ द्वारावती तुरत पगु धारा
भे आतुर द्रौणी चले तहँवां ❀ उत्तर नरनारायण जहँवां
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं ❀ लै पाण्डव हरि आये तबहीं
देखे सबै सैन्य संहारे ❀ पांचौ पुत्र तेउ गे मारे
करुणा करहि द्रौपदी सरसे ❀ आंसु नीर नैनन सों बरसे
अर्जुन देखि अचम्भव माना ❀ द्रुपदसुता यहि भांति बखाना
करुणा करि पाञ्चाली भाखी ❀ अब घट प्राण जाहिं ना राखी
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे ❀ अनुचर सहित सैन सब मारे
द्रौणिहिं बांधि तुरतही दीजै ❀ नातरु प्राण त्याग हम कीजै

दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो, हाँको रथ भगवान।
बांधि लैआवों द्रोणसुत, यह प्रणकिये निदान॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेसौप्तिकपर्वानु
कथनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति सौप्तिकपर्व समाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत ऐषिकपर्व ॥

यह सुनि रथ हांको बनवारी ❋ क्रोध शोक पारथ धनुधारी
ज्यहि पथ द्रौणी किये पयाना ❋ तापथ रथ हाँको भगवाना
सुनि रथशब्द द्रौणि उत ताके ❋ जात कहाँ अर्जुन तब हाँके
सोवत पांचौ बालक मारे ❋ भाज जात सुनु किमि हत्यारे
सुनि द्रौणी अपने मन जाना ❋ आयु आनि अबसमय निदाना
जाको भेद न अर्जुन जाने ❋ सोई बाण करै संधाने
यह सुनि शृंगी अस्त्रहि लीन्हे ❋ पढ़िकै मन्त्र फाँक शर दीन्हे
सुरगण देखि सबै भय माना ❋ प्रलय भये सबही मन जाना
पाण्डव बंश न एक उबारौं ❋ अर्जुन सहित आज सब मारौं
हांक मारि द्रौणी शर छाँटे ❋ भूमि अकाश अग्नि ते पाटे
छूट्यो बाण तेज सों कैसे ❋ प्रलय अनल महँ धावहिं जैसे
अर्जुन निरखि अचम्भव माना ❋ श्रीपतिसों यहि भांति बखाना

दो० पारथ कही बिचारिकै, सुनु देवन के देव।
कौन नाम है बाण को, बूझि परै नहिं भेव ॥

तब श्रीहरि यहि भाँति बखाने ❋ यह शर अर्जुन तुम नहिं जाने
गुरू द्रोण बञ्चित तोहिं कीन्हे ❋ पुत्र जानि बाको शर दीन्हे
त्याग किये यह शृंगी बाना ❋ तीनि लोक जाको भय माना
श्रीपति कही सुदर्शन धावहु ❋ पाण्डुबंश तुम जाय बचावहु
सात बाण तब अर्जुन मारे ❋ महाप्रबल शर टरत न टारे
बाण प्रताप सबन भय पाये ❋ नन्दिघोष तजि यदुपति धाये
बदन पसारि लीन्ह भगवाना ❋ महाबाण हरि उदर समाना
सहित युधिष्ठिर सबहिं बचाये ❋ गर्भ परीक्षित जरै न पाये
नागपाश तब पारथ लीन्हे ❋ क्रोधित द्रौणिहिं बन्धन कीन्हे
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे ❋ चले तुरन्त भवन पगु धारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करुणा करति द्रौपदी नारी ❋ आय गये पारथ धनुधारी
अश्वत्थामहिं कीन्हे ठाढ़ा ❋ छूटे केश कुबन्धन गाढ़ा
दो० तनुप्रस्वेदविगलितबदन, चितवनि नीचे नैन।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोले बैन॥
अरे मूढ़ काटौं अब शीशा ❋ द्रौपदि सुतन बैर लै ईशा
द्रौपदि देखि दया चित आई ❋ तब माधवसन भाष्यो गाई
बिप्र बधेकर दूषण भारी ❋ बन्धन छोड़ि देहु बनवारी
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं ❋ द्विजहत्या परलोक नशैहौं
सो सुनि हरि बहुतै सुखमाना ❋ धन्य द्रौपदी आपु बखाना
शीशचीरि श्रीहरि मणि लीन्हे ❋ पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हे
भारत रणमहँ सब हैं जेते ❋ सद्गति कीन्हि धर्मसुत तेते
पांच बन्धु श्रीपति सँगलाये ❋ देखै बुद्धिचक्षु पहँ आये
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे ❋ सबै कृष्ण पाण्डव के आगे
सब मिलि भीम सराहत तोको ❋ अङ्कमालिका दीजिय मोको
हरिरचना कै बृकोदर कीन्ह्यो ❋ लोहक भीम आगु लै दीन्ह्यो
अन्धभूप तब भुजा पसारे ❋ मिलत समय चूरणकरि डारे
भाष्यो भीम अर्द्धबल भारी ❋ तुम रक्षा कीन्हे बनवारी
दो० गन्धारी सबही मिले, मधुर बैन जो भाखि।
बहुतभांति परबोधकरि, समाधान करिराखि॥
राजहि कहि गन्धारी रानी ❋ हरिरचना कीन्हो यह जानी
दिवस अठारह भा यहि भारथ ❋ यकशत पुत्र सहितरथ पारथ
सो संहार सकल हरि कीन्हा ❋ ते फल लेहिं शाप हम दीन्हा
हलधर सहित सकल परिवारा ❋ एक दिवस सब होइ सँहारा
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा ❋ हँसे कृष्ण रिस नेकु न कीन्हा
पुरी हस्तिना कीन्ह्येउ गौना ❋ ब्यासदेव भाष्यो यह रौना
पुर में बन्दनवार बँधाये ❋ अति आनँदमय शोभा पाये
नट नाचत गायन सब गावत ❋ वेद पुराणहिं बिप्र सुनावत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कनक कलश गंगाजल धर्यो ❋ ब्यासदेव घट आगे कर्यो
द्रुपदसुता अरु धर्म नरेशहिं ❋ गांठिजोरिकीन्ह्योअभिषेकहिं
उत्तम बसन आनि पहिराये ❋ श्रीपति सिंहासन बैठाये
दो० दीन्ह्यो मुकुट शीशपर, मनहुँ उदित भे भान ।
जय जयभाष्यो देवगण, छाये बैठो आन ॥
यदुपति तिलक आपु करलीन्ह्यो ❋ ब्यासदेव ध्वनि बेदहि कीन्ह्यो
भीमसेन तब चामर ढारो ❋ अर्जुन छत्र शीशपर धारो
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाख्यो ❋ दीनबन्धु अपनो प्रण राख्यो
भारत तुम जीत्यो जगतारण ❋ कृपाकरीम्वहिं जगतउधारण
प्रभु तुम तीनि लोकके स्वामी ❋ जीव जन्तु सब के उरगामी
बिप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❋ केशी कंस अघासुर गञ्जन
यह सुनिकै श्रीपति सुख मान्यो ❋ धर्मराय सों आपु बखान्यो
तुम हो धन्य धर्म अवतारा ❋ परमभगत जानत संसारा
यहि अन्तर पुरबासी आये ❋ दिये भेंट अरु शीश नवाये
सब संसार सुखी भा भारी ❋ राजा धर्मराज अधिकारी
प्रजालोग सब करहिं अनन्दा ❋ जिमिचकोरपावहिंनिशिचन्दा
दो० द्रुपदपुत्र मन्त्री भये, पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंह चौहान कह, भक्तिबश्य भगवान ॥
भारत कथा सुनै मनलाई ❋ ताके निकट पाप नहिं जाई
जो फल सब तीरथ असनाना ❋ जो फल कोटिन कन्यादाना
जो फल होइ शरण के राखे ❋ जो फल सदा सत्य के भाखे
जो फल हो परमारथ कीन्हे ❋ जो फल पिण्ड गया के दीन्हे
जो फल रणमां प्राण गँवाये ❋ सो फल है यह कथा सुनाये
दो० भारत सुने अनेक फल, मोसे कहो न जाय ।
अनायास बैकुण्ठ लहि, दरश देहिं यदुराय ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाविरचिते
धर्मराजअभिषेककथासमाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

स्त्री-पर्व

—:o:—

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

दुर्योधन आदि सौ पुत्रों का मरना सुन, धृतराष्ट्र का दुःखित होकर व्यास आदि महापुरुषों को ज्ञान देना, पुनः गान्धारी-सहित सम्पूर्ण बन्धुओं का विलाप, कुरुक्षेत्र में तीन वीरों को बचे हुए देख क्लेशित होना तथा उन वीरों करके धैर्य देना, गान्धारी का कोप देख भीमादि भाइयों को क्षमा कराना, अपने-अपने कन्त की लोथों को देख सब रानियों का महा विलाप, धृतराष्ट्र करके श्रीकृष्णशाप, पुनः युधिष्ठिरादि करके मृतककर्म करना व धर्मराज का भ्रातृशोक से विरक्त होकर व्यासादि मुनियों का ज्ञानोपदेश देना आदि कथाएँ वर्णित हैं।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा

स्त्रीपर्व ॥

दो॰ जन्मेजय ते कहत हैं, बैशम्पयन बखान।
स्त्रीपर्व भाषा रचौं, सबलसिंह चौहान॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी ❋ जाते होइ पाप की हानी
संजय देख्यो मरे भुवारा ❋ बिस्मय मान्यो मनहिं मँझारा
जाइ तबै धृतराष्ट्र के आगे ❋ पुत्र मरण बिस्मय अनुरागे
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता ❋ मानो परी बज्र की घाता
रोदन करि तब अन्धभुवारा ❋ हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा
दुर्योधन सुत रण संहारा ❋ सबौ पुत्र जे हते हमारा
एक भीम सब रण महँ मारी ❋ का कीन्हेउ करतार खरारी
हा हा पुत्र पुत्र करि राई ❋ रोवै कुरु भूपति दुख पाई

दो॰ दुश्शासन अरु कुरुनृपति, सौ बान्धव लै सङ्ग।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँ भङ्ग॥

हा हा भीषम पित्र हमारा ❋ हाय द्रोण हा करण भुवारा
जो जो गुण है पुत्र तुम्हारा ❋ सो सुमिरे तन जरत हमारा
है सुत शोक महा संसारा ❋ कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा
राज पाट सब परा तुम्हारा ❋ कनक पलँग के सोवनहारा
कहाँ पुत्र दुर्योधन राऊ ❋ परा सुदेस सकल भुइँ माऊ
हृदय काल सुत शोकहि पावै ❋ बाम बिधाता भा दुखदावै
कहँ दोष दुख लिखे हमारा ❋ [illegible] मेटनहारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

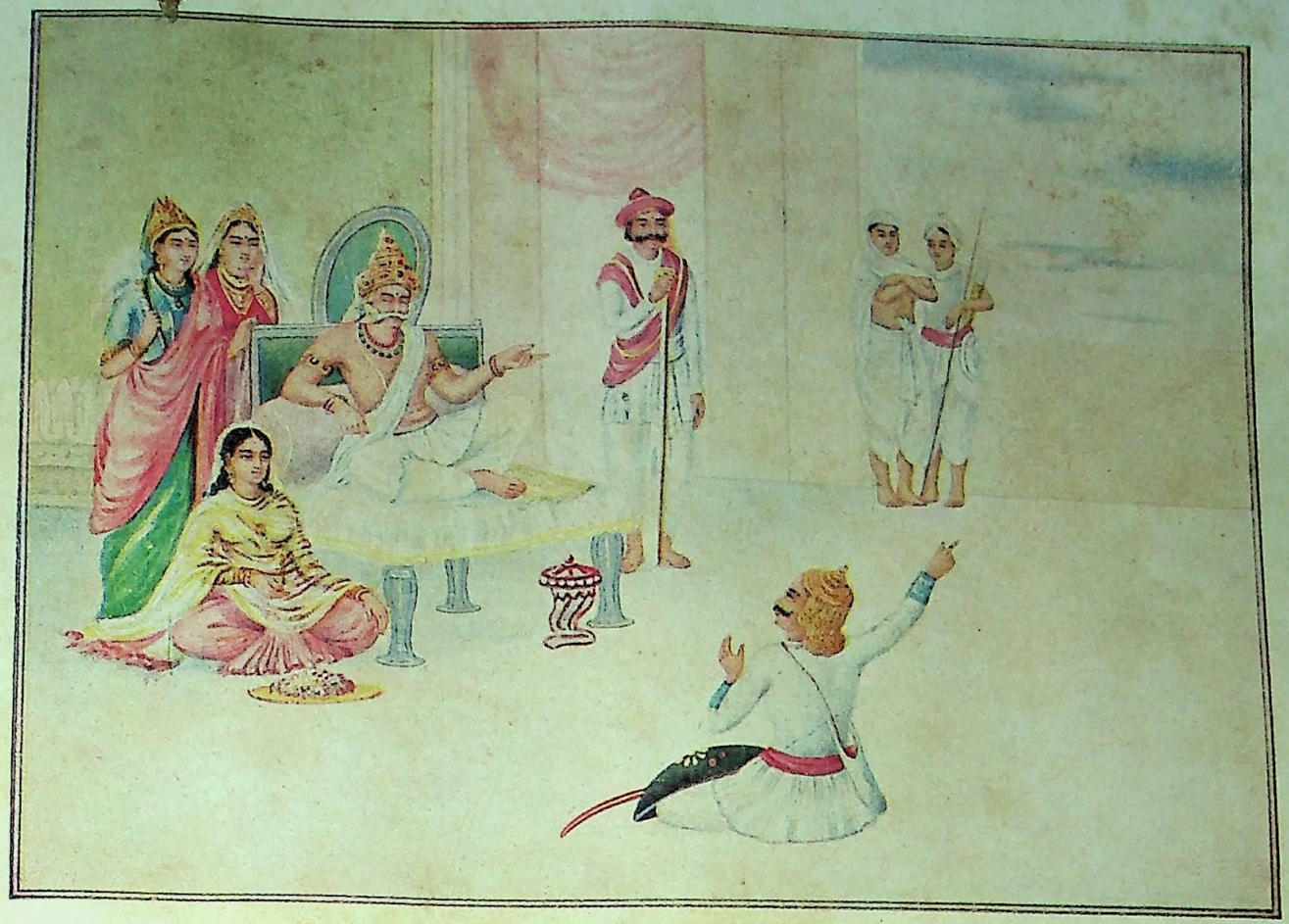

संजय का पुत्र-शोक से व्यथित राजा धृतराष्ट्र को समझाना।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा

स्त्रीपर्व ॥

दो० जन्मेजय ते कहत हैं, बैशम्पयन बखान।
स्त्रीपर्व भाषा रचौं, सबलसिंह चौहान॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी ❋ जाते होइ पाप की हानी
संजय देख्यो मरे भुवारा ❋ बिस्मय मान्यो मनहिं मँझारा
जाइ तबै धृतराष्ट्र के आगे ❋ पुत्र मरण बिस्मय अनुरागे
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता ❋ मानो परी बज्र की घाता
रोदन करि तब अन्धभुवारा ❋ हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा
दुर्योधन सुत रण संहारा ❋ सबौ पुत्र जे हते हमारा
एक भीम सब रण महँ मारी ❋ का कीन्हेउ करतार खरारी
हा हा पुत्र पुत्र करि राई ❋ रोवै कुरु भूपति दुख पाई

दो० दुश्शासन अरु कुरुन्द्रपति, सौ बान्धव लै सङ्ग।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँभङ्ग॥

हा हा भीषम पित्र हमारा ❋ हाय द्रोण हा करण भुवारा
जो जो गुण है पुत्र तुम्हारा ❋ सो सुमिरे तन जरत हमारा
है सुत शोक महा संसारा ❋ कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा
राज पाट सब परा तुम्हारा ❋ कनक पलँग के सोवनहारा
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ ❋ परा सुदेश सकल भुइँ गांऊ
बृथा काल सुत शोकहि पाये ❋ बाम बिधाता भा दुखदाये
कर्म दोष दुख लिखे हमारा ❋ सो अक्षर को मेटनहारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

संजय का पुत्र-शोक से व्यथित राजा धृतराष्ट्र को समझाना।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vimal Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परिचर्या करिबो हम काही ❀ पुत्र शोक हिरदय मां आही
बृद्धअवस्था बिधि दुख दीना ❀ जैसे पक्षी पंख बिहीना
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा ❀ का रचना कीन्हों करतारा

दो० बिना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों बिनुभानु।
चन्द्र बिना जिमि रैनि है, दीपक बिनु गृहजानु॥

त्यों बिनु पुत्र बंश है ऐसा ❀ कुल को नाम नाश भा तैसा
परशुराम नारद समुझाये ❀ सुत के मनते बात न भाये
हमैं छांड़ि सुत कहां सिधाये ❀ गर्बवन्त ह्वै प्राण गँवाये
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी ❀ जीवन आश नहीं अब मेरी
भीषम करण और भगदन्ता ❀ द्रोणगुरू को भयो निहन्ता
महाबिलाप अन्ध नृप करई ❀ संजय तबै बात अनुसरई
राजा शोच तजौ तुम यातें ❀ अब तुम सुनो ज्ञान की बातें
राजा अहौ परम सज्ञाना ❀ जानतहौ सब शास्त्र पुराना
जन्म मृत्यु दूनों सख्याता ❀ दूनों रहैं पिण्ड महँ ताता
जन्म मृत्यु माया ते धारण ❀ समुझौ मन रोवत केहि कारण

दो० जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज।
संजय तहँ समुझावहीं, अन्ध बृद्ध कुरुराज॥

संजय नाम हते यक राजा ❀ पुत्र शोक ते भयो अकाजा
सुत हित चाहत प्राण गँवाये ❀ तब नारद मुनि जाइ बुझाये
जीवन मरण लोक दुख जाना ❀ कर्म फलित प्रापत परमाना
सब माया जानो तुम नरपति ❀ केवल सबै कर्म की यह गति
पुत्रहि केर समुझि मन दोषा ❀ हृदय माहिं करिये संतोषा
काहूकेर बचन नहिं माना ❀ साधनबचन सुन्यो नहिं काना
दुश्शासन मन्त्री सब जाना ❀ ताते मन्त्र गने नहिं आना
शकुनी करण मन्त्र परमाना ❀ काहू केर कहा नहिं माना
भीषम केर बचन नहिं राखे ❀ बहुतै नीति धर्म उन भाखे
गन्धारी के बचन न माना ❀ तेहि अपराध तजे तिन प्राना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सदा पाप मनमें बसै, नाहिंन धर्म बिचार।
सोई पाप ते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार॥

ब्यास केरि बाणी नहिं मानी ❋ अतिशय अहंकार मति ठानी
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये ❋ पै बिरोध वाके मन भाये
क्षत्री सब कीन्हें क्षय जानी ❋ कृष्ण केरि बाचा नहिं मानी
तुम नृपसुत बश कछु नहिं कह्यऊ ❋ पाप ते पुत्र नाश ह्वै गयऊ
ताते शोक तजहु तुम राई ❋ बहुत प्रकार मन्त्र समुझाई
सुनत कछू अधीर भा राजा ❋ महाशोक पुत्रन के काजा
झांड़ै भूप ऊर्ध्व करि श्वासा ❋ पुत्र शोक ते भयो उदासा
रोवै धीर धरै नहिं राई ❋ तबहिं बिदुर राजहि समुझाई
सुनिकै बचन धीर भयो राजा ❋ कीन्हेउ शोक पुत्र के काजा
उठो नरेश शोच नहिं करिये ❋ मेरे बचन हृदय में धरिये
काल बश्य है सब संसारा ❋ तीन लोक बश मृत्यु भुवारा

दो० जानै योग्य अयोग्य तब, जानै सब संसार।
महाबीर क्षत्री जिते, सबै होत संहार॥

बृद्ध ज्वान अरु बालक आहीं ❋ राजा प्रजा जिते जग माहीं
सबही मृत्यु सत्य प्रचराना ❋ जानहु राजा परम निधाना
सुनि नृपबात बिदुरमुख जबहीं ❋ भयो मौन धृतराष्ट्रक तबहीं
तबहूं होत हृदय नहिं धीरा ❋ मूर्च्छित भये अन्ध नृप बीरा
तबहिं ब्यास संजय यक साथा ❋ बिदुर सहित बोधे नरनाथा
शीतल नीर बदन में दीन्हा ❋ तबहीं हृदय चेत नृप कीन्हा
यहि प्रकार तब चेत जनाये ❋ रोदन करत कहन मनलाये
धिग यह जीवन जक़ हमारा ❋ पुत्र सुशोक सहै को पारा
महाबिलाप धीर नहिं धरहीं ❋ पुत्रशोक पुनि पुनि उर करहीं
बारबार रोवत है राई ❋ हा हा पुत्र परम सुखदाई

दो० धृतराष्ट्रक रोवै तहां, पुत्र शोक कर हेत।
क्षणयक होत सचेत नृप, क्षणयक होत अचेत॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुबिधि ब्यास कहत समुझाई ❋ तबहूँ धीर धरत नहिं राई
बिदुर और संजय समुझावैं ❋ काहुके बात हृदय नहिं आवैं
महाशोक करि रोदन करहीं ❋ पुत्र नाम पुनि पुनि उच्चरहीं
तबहिं ब्यासमुनि कह समुझाई ❋ मन्त्र हमार सुनो हो राई
रोदन केहि हित करहु भुवारा ❋ यह सब देखन को उपकारा
मैं यकसमय इन्द्रपुर गयऊं ❋ नारद आदि सुनिन सँग लयऊं
तिहि अवसर बसुधा तहँ जाई ❋ बिधि सुरपति सों कह्यो बुझाई
कहौ देव मेरो उद्धारा ❋ मम ऊपर भवभार अपारा
पूर्व बिष्णु जे दैत्य सँहारा ❋ ते सब भये क्षत्रि अवतारा
भारी पाप सहै नहिं पारा ❋ यहै निवेदन सभा मँझारा
रोदन करि धरणी तब कहई ❋ सकल देवता साखी अहई

दो० तहां बिष्णु हँसिकै कहेउ, सुनु भुव बचन हमार।
मनचिन्ता त्यागन करो, हम टरिहैं तव भार॥

हैं निज बंश देवता जेते ❋ जगत माहिं जन्मै लै तेते
कुरुक्षेत्र भारत संचारा ❋ तहां होय सब को संहारा
जाहु पुहुमि अपने अस्थाना ❋ देव बिचारि कहौ भगवाना
बसुधा मृत्युलोक कहँ आई ❋ तबहिं बिचार करैं यदुराई
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा ❋ कलियुग केर अहै अवतारा
महाक्रोध चञ्चल है अङ्गा ❋ सो कलियुग आयसु करि भङ्गा
सौ बान्धव अरु करण भुवारा ❋ भारत हेत भयो अवतारा
हम सब कथा कही तुव पासा ❋ भयो युद्ध तेरो सुत नासा
ता कारण सब भयो सँहारा ❋ शोक तजहु अब अन्ध भुवारा
यह सब कीन्हें अन्ध भुवारा ❋ पृथ्वी केर उतारेउ भारा

दो० यहि प्रकारते ब्यास तब, कहेउ बहुत समुझाय।
धर्मरूप तुम अन्ध नृप, त्यागहु शोक उपाय॥

धर्म स्वरूप युधिष्ठिर राजा ❋ ताते होय तुम्हारो काजा
पांचौ बान्धव पाण्डुकुमारा ❋ सो जानौ शत पुत्र हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वे पांचौ तुव सेवा करिहैं ❀ आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं
मोरे बचन सत्य सुनु राजा ❀ तुम्हरे क्रोधते पाण्डु अकाजा
राखहु नृपति आपने पासा ❀ दास भाव मन करै हुलासा
पाण्डव केर करौ कल्याना ❀ सुनि तब राजा करै बखाना
ब्यास मुनीश्वर अग्र बिधाना ❀ सुनौ सबै तुम अब दै काना
पुत्र शोक तनु जरै हमारा ❀ धीरज धरौं सो कौन प्रकारा
तौ तुव हेतु बात हम माना ❀ पुत्र शोक त्यागे हम जाना
यहि प्रकार शान्तन नृप भयऊ ❀ तबहिंब्यासऋषितपहितगयऊ
शीतल जल राजा को दीन्हा ❀ व्यासबचनसुनि धीरजकीन्हा

दो० राजा को समुझाइकै, भे मुनि अन्तर्धान ।
ब्यास बचनते अन्धकहँ, मनमें उपजे ज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासबलसिंहकृतेव्यासअन्ध
शोकनिवारणोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा तब संजय कहई ❀ दोउ करजोरि चरण गहि रहई
कछुक निवेदन अहै हमारा ❀ आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा
गन्धारी कहँ बात सुनावो ❀ अन्तःपुर में खबरि जनावो
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा ❀ मूर्च्छितगात भूमि परकासा
तबहीं बिदुर उठायो राजहि ❀ रोदन काह करौ बे काजहि
तब धृतराष्ट्र कह्यउ समुझाई ❀ आनु बिदुर सब स्त्री जाई
बधुन समेत संग गन्धारी ❀ सब लावहु यह कहा बिचारी
चलौ संग तुमहूँ हम जैहैं ❀ सबही को अबहीं लै ऐहैं
यह कहि रथहि चढ़े तब राजा ❀ चले बधुन के आनहि काजा
गये तुरत तब महल मँझारा ❀ महाशोकते अन्ध भुवारा

दो० महादुखित रोदन करत, अन्तःपुरहु प्रवेश ।
सब जूझे कुरुक्षेत्र महँ, सबहुन सुना सँदेश ॥

रोदन करत भयो आघाता ❀ मानो परी बज्र की घाता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर घर रुदन नगर में ठयऊ ❀ नर नारी सब रोवत भयऊ
आंखिन जे देखी नहिं नारी ❀ परी भूमि लोटैं सुकुमारी
बिकलवन्त रोवैं सब नारी ❀ छूटे केश न देह सँभारी
एक एक पट पहिरे अहईं ❀ राजवधू स्त्री जे रहईं
घरते बाहर चलीं पुकारी ❀ बिकल सबै कुरुक्षेत्र सिधारी
गृह ते चलीं पुकारत जाई ❀ मनहुँ सिंहिनी पतिन गँवाई
एक को गहे एक धरि रोवै ❀ एक को हाथ हाथपर जोवै
कन्या पुत्र गोदते डारहिं ❀ परी भूमि में सबहिं पुकारहिं
कञ्चन पुतरी मनहुँ सँभारी ❀ रोवत लोटत भूमि मँझारी

दो० आरत नाद नगर महँ, सबै बधू अनाथ।
सबै बधू तहँ रोवतीं, धरे हाथ पर हाथ॥

सासु श्वशुर सब एकहि साथा ❀ रोवहिं सबै धुनैं महि माथा
चलि चलि नगरके बाहर तहँवां ❀ भयो युद्ध कुरुखेतहि जहँवां
सहित अन्ध नृप औ गन्धारी ❀ आईं सब कुरुखेतहि झारी
धृतराष्ट्रक तब देखन पाये ❀ तीनहु बीरन बचन सुनाये
कृप कृतबर्मा द्रोण कुमारा ❀ महाप्रबल तीनों सरदारा
राजा ते रोवत यह कहई ❀ बचन न आव नयन जल बहई
महायुद्ध कीन्हेउ कुरु राजन ❀ बचे न कोउ सुनिये महराजन
हम तीनों भारत में रहेऊ ❀ राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ
तीनों तब बोधत गन्धारी ❀ तजौ शोच सुनि बात हमारी
जाना तुम्हैं क्रोध में राई ❀ तबहिं लोहकर भीम बनाई
क्रोध तजौ राजा परमाना ❀ पाण्डव तनय पुत्र करि जाना
धर्मज के दुख देखु बिचारी ❀ तुम्हरे पुत्र दीन्ह दुख भारी
व्यास बिदुर भीषम समुझाये ❀ बहुप्रकार हम ताहि बुझाये
काहू केर कहा नहिं माना ❀ हठकर कीन्हेउ रण मैदाना
तुम सब जानत हौ सज्ञाना ❀ कहा कहों भाषत भगवाना
तुम्हरे चित्त दया नहिं आई ❀ पाये बहु दुख पांचौ भाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ांच गांउ तुमहूं न दिवाये ❋ अपने पुत्रहि नहिं समुझाये
दो० महादुःख सहि पाण्डवन, तब कीन्हों यह कर्म ।
मारन चाहौ भीम को, काह कहौ तुम धर्म ॥
कृष्ण बचन सुनि अन्धभुवारा ❋ कहै सुमति करि हृदय बिचारा
बड़े भाग ते भीम बचाये ❋ धन्य कृष्ण अन्धाहे समुझाये
क्रोध सकल अब गयो हमारा ❋ महा कृपा भै पाण्डुकुमारा
पुत्र सकल रण जुझे हमारा ❋ महाशोक भा नन्दकुमारा
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि ❋ परशहि अङ्ग पाण्डवनयोधहि
धर्मराज अरु भीम जुझारा ❋ पारथ सहदेव नकुल कुमारा
सबहि अन्ध चरणन लपटाने ❋ तजिकै क्रोध दया बहु माने
पाण्डव पुत्र महा अज्ञाना ❋ आपन पुत्र सत्य करि जाना
ऐसे पुत्रन शोक मिटाये ❋ प्रेम हर्ष तब पाण्डव पाये
दो० धृतराष्ट्रक को परशिकै, पुत्र सुशोक मिटाइ ।
तब पांचौ पाण्डव बहुरि, गन्धारी पहँ जाइ ॥
गन्धारी पहँ कीन्ह पयाना ❋ आइ व्यासमुनि तहां तुलाना
पुत्र शोक गन्धारी अहई ❋ शाप देन पाण्डव को चहई
पट्टी बांधे है दोउ नैनहिं ❋ तहां व्यास भाषे यह बैनहिं
वचन हमार बेद परमाना ❋ तू आगे मैं करौं बखाना
शान्त होहु सब दुखन मिटाई ❋ तुव सेवा करैं पांचौ भाई
जात युद्ध दुर्योधन राऊ ❋ आज्ञा लै नहिं परशउ पाऊ
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता ❋ धर्मज संजय पाप निपाता
इतनी बात पुत्र सन भाषा ❋ पूरण भयो धर्म अभिलाषा
बचन तुम्हार जक्र महँ टरई ❋ तौ रबि चन्द्र उदय नहिं करई
सोई बचन भयो परमाना ❋ बिरथै धर्म कुकर्म नशाना
दो० क्रोध क्षमा करु देवि तुव, कहेउ व्यास समुझाइ।
धर्म बृद्धि क्षय पाप की, यहै सुनो मन लाइ ॥
व्यास बचन सुनिकै गन्धारी ❋ तज्यो क्रोध तब कहेउ बिचारी

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations. Digitized by eGangotri Initiative

Virat Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ठाढ़े पांच बन्धु भगवाना ❋ कहेउ व्यास गन्धारि बखाना
जो कछु व्यास कहत हैं बानी ❋ बेद प्रमाण सत्य हम जानी
पांचो पुत्र परम रिस नाहीं ❋ सुत को शोक भयो मनमाहीं
जेहि सम कुन्ती जननी तासू ❋ तैसे हमैं देखि परगासू
कुरुपति शकुनी करणहुँ चारी ❋ पापी सबै भूप संहारी
पाण्डुपुत्र पापहि मन दीन्हों ❋ जानु भङ्ग दुर्योधन कीन्हों
नाभी हेठ दाग पर हारा ❋ ताते मनुभा क्रोध हमारा
पापी भीम जानु में मारा ❋ सुनत त्रास भयो पाण्डुकुमारा
मन महँ त्रास हाथ तब जोरै ❋ मातन कहौ दोष कह मोरै

दो० सबै बीर संहारिकै, बाच्यो एक भुवार।
ताहि न मारैं जननि हम, निष्फल युद्ध हमार॥

उनते जीति न सकेहु भुवारा ❋ पाप कपट करिकै हम मारा
अरु भाई कर दोष बिचारी ❋ ताते जानु भङ्ग करि डारी
जा दिन सभा द्रौपदी आनी ❋ जानु देखायो सो अज्ञानी
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा ❋ जानु भङ्ग ता कारण कीन्हा
राजा बिनु जीते ते माई ❋ केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे ❋ दीन्हो नहीं गर्व मन पागे
तबहुँ न मानी बात भुवारा ❋ कहु जननी का दोष हमारा
ता कारण नहिं धर्म बिचारा ❋ जसकरि जाना तस हम मारा
अपने कर्म भयो संहारा ❋ नाहिंन सुत कछु दोष तुम्हारा
यहु दुख मोहिं दीन्ह करतारा ❋ धर्मराज अस सुत रण मारा

दो० नकुल साथ दुश्शासनहिं, लरे प्रथम मैदान।
तुम गहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान॥

पाछे भीम कह्यउ समुझाई ❋ बिना दोष कीन्हों नहिं माई
रजस्वला जो द्रौपदी रानी ❋ गहि कर केश सभा महँ आनी
एक बस्त्र सोउ खैंचकै लीन्हा ❋ तहँ माता हमहूं प्रण कीन्हा
भुजा उखारों जबहिं तुम्हारी ❋ पुरै प्रतिज्ञा तबहिं हमारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्षत्री धर्म प्रतिज्ञा कीन्हा ❋ ताते भुज उखारि मैं लीन्हा
याते जननी दोष हमारा ❋ क्षमा करौ मैं शरण तुम्हारा
तुम जननी मन आनेहु आना ❋ हौं मैं जानत कुन्ति समाना
तुम जननी हौ बड़ी हमारी ❋ कृपा करहु अपराध बिसारी
मधुर बचन तब भीम सुनाये ❋ ऐसे मातहिं शान्त कराये
भीम तु क्रोध तज्यउ तब रानी ❋ परम हर्ष भयो शारँगपानी

दो० क्रोधशान्त देवी भई, भीमबिनयसुनिकान ।
तबगन्धारीशान्तिकरि, कहा सुनौ सज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्त्रीपर्वगन्धारी संकोपशान्तिकरणनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तब गन्धारी कह्यउ बुझाई ❋ कहँ स्त्री धर्म युधिष्ठिर राई
सुनत त्रास कांपे नरनाथा ❋ ठाढ़े भये जोरि कर हाथा
बोले बचन त्रास भइ भारी ❋ जननी सुनियो बात हमारी
हम ते भा सब बंश सँहारा ❋ जननी आयों शरण तुम्हारा
शाप योग्य मैं माता नाहीं ❋ सहै शाप तुव को जग माहीं
धिग जीवन है जक्र हमारा ❋ अपने हाथ बन्धु संहारा
देवी सुनत भयो मन धीरा ❋ दीन बचन भाषे नृप बीरा
प्रति उत्तर तब कछू न दीन्हा ❋ मन को दुख प्रकाश नहिं कीन्हा

दो० तब माता धीरज धरेउ, नृपति बिनय कह बैन ।
तीन बन्धु देवी कहै, हम नहिं देखे नैन ॥

अर्जुन सहदेव नकुल कुमारा ❋ सुनत बचन तब भयो खँभारा
हरिके पाछे पारथ जाई ❋ भागि दुरे तब दूनों भाई
तीनौ हरिके पाछे गयऊ ❋ शाप त्रास ते आतुर भयऊ
एक घरी सबही चुप रह्यऊ ❋ क्रोध शान्त गन्धारी कह्यऊ
पुत्र आउ अब निकट हमारा ❋ काहे कीजै त्रास कुमारा
अपनो हुकुम करौ अब जाई ❋ धर्मपुत्र तुम पांचौ भाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देवी क्रोध तज्यउ परमाना ❋ पाण्डव शाप भयो परित्राना
गन्धारी तब बोली बाता ❋ आनौ कुन्ती शत्रु अजाता
पांचौ बान्धव कुन्ती लाये ❋ सबही मिलि कुरुखेत सिधाये

दो० गन्धारी कुन्ती सहित, पांच बन्धु भगवान।
युद्धभूमि तब सबै जन, देखत ठाढ़ निदान॥

तहँ शत बधू रूप उजियारी ❋ मानहुँ चन्द्रकला द्युतिधारी
अपने अपने कन्त उठाये ❋ रोदन करैं सबै बिलखाये
मनहुँ मृगी शिशु यूथ बिहाई ❋ रोदन करैं सबै बिलखाई
युद्धभूमि देखी भयकारा ❋ देखे बीर अनेक जुझारा
कुण्डल नाना रतन अपारा ❋ महारूप ते परे भुवारा
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा ❋ पूरिरहेउ रणभूमि मँझारा
बसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे ❋ नाना मुकुट रतनमय लेखे
शोणित नदी बहत है ऐसी ❋ सरिता यम बैतरणी जैसी
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा ❋ बहेजात शोणित की धारा
तीन तार शोणित गम्भीरा ❋ परे नृपति क्षत्री बलबीरा

दो० रोवत हैं सब त्रियागण, नानारूप अपार।
आपन आपन कन्त को, रोदन करत पुकार॥

काहू केर शीश है नाहीं ❋ काहू केर परे कटि बाहीं
काहू केर दोउ भुज नाहीं ❋ काहुहि शूल घाव तन आहीं
कोई कटे खड्ग ते आधा ❋ काहुहि परे भूमि पर काँधा
काहू केर जांघ द्वौ काटे ❋ काहू केर हृदय में छाटे
ऐसे परे बीर बहु तहईं ❋ भारत रणहि भूमि है जहईं
काक गृध्र जम्बुक जहँ नाना ❋ अरु दुर्गन्ध बास है घ्राना
बहुत रूप पक्षी गण आये ❋ मांस खाइ आनन्द बढ़ाये
प्रेत भूत बैताल अपारा ❋ नाचैं योगिनि ताल सँभारा
नचैं कबन्ध देत करतारी ❋ योगिनि डाकिनि करैं धमारी

दो० क्रोधवन्त धनु बाण लै, कोई युद्ध प्रकाश।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उठे कबन्ध रणखेत महँ, प्रेतकरहिं सब हास ॥
कोइ पति कहि कोइ कहै कुमारा ❀ कोई बन्धु करि करै पुकारा
भयो महारण आरत शोरा ❀ रोदन भयो महाघन घोरा
रोवहिं शतहु बधू बिलखानी ❀ महाबिकल दुर्योधन रानी
सो कहँ लग मैं करहुँ उबारा ❀ भयो रुदन जहँ शब्द अपारा
हा हा कन्त प्राणपति राजा ❀ जाको यश सब जगत बिराजा
बासुक लक्ष्मी कन्ध नृपाला ❀ करैं सेवा लाखन भूपाला
छत्रहि छत्र रहत जग छाई ❀ सेवा करन आवत बहुराई
रतन सिंहासन पाट तुम्हारा ❀ नाम तुम्हार जान संसारा
रतन मुकुट आलंकृत नाना ❀ रूप देखिकै काम लजाना
अधिक सुन्दरी तुम्हरी रानी ❀ कर्मबश्य यह गति भै आनी
दो० अपने अपने कहैं सुन्दरी, शतबान्धवकीनारि।
बहुबिलापकहिजातनहिं, रोवहिं शीशउघारि॥
लखि गन्धारी भई अधीरा ❀ देख्यो यह कारण यदुबीरा
सकल बधू रोवतीं हमारी ❀ तुमहीं सब अनाथ करिडारी
जो सुन्दरि मैं तुमहिं गनाहीं ❀ भई अनाथ रोवत सब आहीं
राजा एक करै सुत सेवा ❀ ताकी यह गति कीन्ह्यों भेवा
जा तन अतर सुगन्ध सोहाई ❀ तौन शरीर गृध्र खग खाई
यात्रा समय पुत्रसन भाखा ❀ बचन हमार राउ नहिं राखा
ताहि दोष नहिं नन्दकुमारा ❀ सबै पराक्रम आहि तुम्हारा
जूझे सौ सुत रह्यउ न कोई ❀ अन्धनृपति की का गति होई
अस कहि रोवहिं ऊंच पुकारी ❀ ताहि देखि बोले बनवारी
तुम्हरे सुत मम बचन न माना ❀ मोर कहा सो तृण सम जाना
दो० भीषम द्रोण बुझाये, और बिदुर मुनिव्यास।
कह्यो नसान्यो काहुकर, कीन्ह्यो रण परगास॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धृतराष्ट्रक तब बहुत बखाना ❋ इन कीन्ह्यो सब कर अपमाना
पाण्डव बीर महाबल भारी ❋ हठिकै कुरुपति रणहि बिचारी
अपने कर्मन भये बिनाशा ❋ नारायण यह बचन प्रकाशा
सुनिकै बात कहत गन्धारी ❋ अपने कर्मन गो अपकारी
दोष न काहू को मन धरेऊ ❋ सौ बान्धव तेहि संगहि मरेऊ

दो० क्षत्रि धर्म उन करेउ रण, सबै बीर मैदान।
कुरुक्षेत्र तन त्यागिकै, सब चढ़िगये बिमान॥

तब तीनउ जन कह्यो बुझाई ❋ सुनिये मातु परम सुखदाई
शोक तजौ न करौ बिललापा ❋ गये स्वर्ग सब कह संतापा
भीम पाप कीन्ह्यउ बहुसङ्गा ❋ ताते हम कीन्हेउ रणरङ्गा
मारे दल पाण्डव संहारा ❋ बधे द्रौपदी पञ्च कुमारा
पाण्डव को सो पराभव दीन्हा ❋ राजा द्रुपद पुत्र बध कीन्हा
अब आज्ञा दीजै नरनाहा ❋ जैये हमहूं निज थल माहा
बिदा मांगि तीनों तब गयऊ ❋ द्रोणी व्यासाश्रम पगु धरेऊ
कृप कृतवर्म द्वारका गयऊ ❋ कुरुक्षेत्र महँ सब जन रह्यऊ
गये सबै रण भूमि मँझारा ❋ जहँ बहु बीर परे बिकरारा
रोदन करैं तहां सब कोई ❋ बाम बिधाता काहु न होई
भयो शोर तहँ आरत भारी ❋ एक बार शत बधू पुकारी

दो० महाशोर कुरुक्षेत्र महँ, रोदन भयो अपार।
नगर लोगकी नारि सब, रोवत करत पुकार॥

राजा धर्म सुनो यह पाये ❋ कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये
पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा ❋ कुरुक्षेत्र तुरतहिं पगु धारा
प्रथमै धर्मराज गये आगे ❋ अन्ध नृपति के चरणन लागे
महीं युधिष्ठिर पुत्र तुम्हारा ❋ मोरे दोष न करौ बिचारा
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा ❋ क्षमौ दोष जो भयो हमारा
राज पाट सब अहै तुम्हारा ❋ हम सेवक समेत परिवारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा ❋ तब धृतराष्ट्र शान्ति मन लीन्हा
अन्ध नृपति तब कह्यउ बिचारी ❋ भीम सबै मम पुत्र सँहारी
मिलन हेतु हमरी है आशा ❋ कपट बुद्धि मन में परगाशा
भस्म करन चाहै मन माहीं ❋ तब कह कृष्ण भीम यहँ नाहीं

दो० काल्हि आइकै भेंटिहैं, भीम तुमहिं नरनाह ।
चारौ बान्धव मिले तहँ, बिनय बहुत करि ताह ॥

तब यह श्रीपति युक्ति उपायउ ❋ लोहे भीम तहां निर्मायउ
भीमसेन कहँ राखि दुराई ❋ लोहे भीम अन्ध पहँ लाई
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई ❋ मिलौ हेतुकरि कण्ठ लगाई
नृपके कपट आहि मनु भाई ❋ मारौ भीमहि दुख मिटिजाई
कहो बात हिरदयमहँ चाही ❋ पुत्रके शोक बिकल तन माही
हर्षत क्रोध मिले तब राई ❋ मनहुँ परी दुखिया निधि पाई
अयुत नाग को बल तनमाही ❋ क्रोधित भीमसेन को गाही
मिलत लोह चूरण करिडारा ❋ पुहुमी माहिं परा कै धारा
संजय हा हा करी पुकारा ❋ भीमसेन को करै सँहारा
सबही हा हा शब्द पुकारा ❋ भयो मोह तब अन्ध भुवारा
तब माया करि रोवन लागे ❋ भीम शोक हिरदय महँ पागे

दो० हाय भीम सुत राजा, बहुबिधिकरतपुकार ।
शोकशान्ति जबहींभयो, श्रीपति बचनउचार ॥

राजहि बात कहत यदुनाथा ❋ रोदन कहा करौ नरनाथा
अहै भीम सुनिया हो राई ❋ धृतराष्ट्रक को कृष्ण बुझाई
राजा कहत सुनहु बनवारी ❋ है सब रचना कृष्ण तुम्हारी
सर्बमयी तुम हौ भगवाना ❋ तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना
वैसी बुद्धि तासु को दयऊ ❋ जाते शत बान्धव मरिगयऊ
पाण्डव कह जीते पुरुषारथ ❋ भक्तहेतु कीन्ह्यउ तुम स्वारथ
पाण्डव कुल के भयो उबारा ❋ कौरव बंश कीन्ह संहारा

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिना अठारह अस रण रच्यऊ ❋ शत बान्धव महँ एक न बच्यऊ
मोर बंश तुम कीन्ह सँहारा ❋ कृष्ण लीजिये शाप हमारा
त्रिंशति षट संवत यदुराई ❋ तव कुल आपुस महँ कटिजाई

दो० छपनकोटि यदुबंश है, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्ण तुम शाप मम, एकहि दिन संहार॥

हँसिकै कृष्ण कही यह बाता ❋ को अस है जग में सज्ञाता
यदुबंशिन सों जीतन चहई ❋ कौन जगत में ऐसो अहई
आपहि बंश होय अपकारा ❋ यद्यपि पायो शाप तुम्हारा
पापी कुरुपति गयो सँहारा ❋ काह दोष धौं भयो हमारा
हम जब गये हत्यन दरबारा ❋ पांच गांव मांगे भूपारा
ग्राम देहि नहिं मारन चहई ❋ तब कुरुपतिसन भीषम कहई
मोहिं शाप केहिकारण दीन्ह्यउ ❋ सहै जगतपति कहिबे लीन्ह्यउ
सुनिकै लज्जित भै गन्धारी ❋ कृष्ण बचन सों शोक निवारी
पुत्र शोक छांड़ेउ गन्धारी ❋ तज्यो क्रोध तनु सुरति सँभारी
ऐसे सुनत शान्त सब भयऊ ❋ तबहीं कृष्ण हर्ष मन लयऊ

दो० क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अन्ध कुरूपति राय।
पाछे तहँवां द्रौपदी, पुत्र शोक बहु पाय॥

पांच पुत्र गये बधे हमारा ❋ बिलपै डारि भूमि मंझारा
गन्धारी गहि हाथ उठाई ❋ लीन्ह बधू कहँ कण्ठ लगाई
बहु प्रकार समुझावहिं बानी ❋ भइ तब मौनि द्रौपदी रानी
सबै बधू लै कन्तन रोवत ❋ देवलोक सब सुरगण जोवत
तरुण बयस सब ही हैं बाला ❋ प्रथम बयस अतिरूप बिशाला
छूटे केश न देह सँभाला ❋ ब्याकुल सकल महाबिकराला
यह सब देखि परिहस्यो शोका ❋ पुत्र तुम्हार गये सुरलोका
रोइ सुभद्रा सुतहि पुकारी ❋ पुत्रहि बिना धीर किमि धारी
चक्रव्यूह युद्ध में बीत्यउ ❋ करण द्रोण बीरनते जीत्यउ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसो पुत्र जासु को मरई ❀ तासु जननि किमि धीरज धरई
दो० कैसे जीवै मातु वह, और तासु की नारि।
उत्रा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि॥
देख्यो बिस्मय श्रीभगवन्ता ❀ रोवत पारथ शोच अनन्ता
उत्रहि देखि सबै तहँ रोवत ❀ कुन्ती रानि बधू मुख जोवत
सासु सुभद्रा कहि समुझावत ❀ उत्रा कहँ कर गहि बैठावत
यहि प्रकार रोवत सब नारी ❀ कुन्ती मातु करै मनुहारी
ऐसे एक एक भइ धीरा ❀ शोक ते व्याकुल रहै शरीर
कुन्ती रानी औ गन्धारी ❀ कीन्ह बधुन की बहु मनुहारी
दो० आरत नाद मिटा तब, बहुबहुधीर धराइ।
सबमिलि त्यागहुशोकअब, कहा युधिष्ठिरराइ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्त्रीपर्वणि कुरुपाण्डवविलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

आरतनाद शान्त जब भयऊ ❀ धृतराष्ट्रक राजा सों कह
सुनहु बात धर्मज सुत राजा ❀ अबनहिं शोचकरनको काज
हरि की माया ते संसारा ❀ आवत जात न लागै बा
मरे बीर भारत मैदाना ❀ दानव हते देव जे नाग
अष्टादश क्षौहिणि दल भारी ❀ भारत भूमि परे सब झा
द्रोण करण भगदत्त भुवारा ❀ और नृपति जे हते अपा
और नृपति जिनके नहिं कोई ❀ समगति करौ सबन की सो
राजा कैसो करै उपाई ❀ दाह कर्म बीरन के अ
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा ❀ लागे करन दाह कर का
धर्मज भीम धनञ्जय बीरा ❀ और नकुल सहदेव रणधी
दो० पांचौ बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश।
बड़े बड़े सरदार सब, क्षत्री बीर नरेश।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे ❋ दाह कर्म सबही को कीन्हे
पहले दुर्योधन शत भाई ❋ लषण कुँवर को दाह कराई
भूमि गुप्त करि कुरुपति धारा ❋ बाहर काढ़ि कुँवर को जारा
द्रोण बीर भगदत्त भुवारा ❋ और कलिङ्ग शूर बरियारा
कर्ण बीर अँगारमति रानी ❋ क्षेत्र मांझ सत्ती भइ आनी
और त्रिया जेहि सत मनमाना ❋ भई संग पति सती प्रमाना
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा ❋ अभिमन्यु दाह करै तब काजा
उत्रा सती होन को जाई ❋ कहैं कृष्ण तासों समुझाई
तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई ❋ कुरु पाण्डव के सरबर सोई
है दुइ मास गर्भ कहि भाखा ❋ बहु समुझाइ कृष्ण तेहि राखा

दो० बहु प्रकार उत्रा कहँ, कह्यउ कृष्ण समुझाइ ।
दुहूँ बंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ ॥

तब बिराट अरु द्रौपद राजा ❋ सोमदत्त के दाहन काजा
अंशुमान को दह्यो शरीरा ❋ चेकीतान दह्यो रणधीरा
काशीराज शिखण्डी बीरा ❋ धृष्टद्युम्न को दह्यो शरीरा
कैकरि और त्रिगर्त नरेशा ❋ दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा
जे द्रुपदी के पांच कुमारा ❋ गति कीन्ही तब धर्म भुवारा
है घटोत्कच भीम कुमारा ❋ और हलंबुष दानव बारा
दाहन कर्म सबहि को कीन्हा ❋ क्षत्री बीर जहां लगि चीन्हा
पाछे को जेतने असवारा ❋ अरु पायक जे भये सँहारा
भारत महँ जूझे हैं जेते ❋ दाहकर्म धर्मज किये तेते
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा ❋ गये गङ्गतट ब्राह्मण साथा

दो० तर्पण अरु अस्नान करि, क्षत्री देव प्रमान ।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान ॥

करि अस्नान नगर में आये ❋ तब कुन्ती पुत्रन समुझाये
सुत सुपुत्र भाषहि संसारा ❋ सोइ कर्ण सुत हते हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसो पुत्र जासु को मरई ❋ तासु जननि किमि धीरज धरई
दो० कैसे जीवै मातु वह, और तासु की नारि।
उत्रा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि॥

देख्यो बिस्मय श्रीभगवन्ता ❋ रोवत पारथ शोच अनन्ता
उत्रहि देखि सबै तहँ रोवत ❋ कुन्ती रानि बधू मुख जोवत
सासु सुभद्रा कहि समुझावत ❋ उत्रा कहँ कर गहि बैठावत
यहि प्रकार रोवत सब नारी ❋ कुन्ती मातु करै मनुहारी
ऐसे एक एक भइ धीरा ❋ शोक ते व्याकुल रहै शरीरा
कुन्ती रानी औ गन्धारी ❋ कीन्ह बधुन की बहु मनुहारी

दो० आरत नाद मिटा तब, बहुबहुधीर धराइ।
सबमिलि त्यागहुशोकअब, कहा युधिष्ठिरराइ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्त्रीपर्वणि
कुरुपाण्डवविलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

आरतनाद शान्त जब भयऊ ❋ धृतराष्ट्रक राजा सों कह्यऊ
सुनहु बात धर्मज सुत राजा ❋ अबनहिं शोच करन को काजा
हरि की माया ते संसारा ❋ आवत जात न लागै बारा
मरे बीर भारत मैदाना ❋ दानव हते देव जे नाना
अष्टादश क्षौहिणि दल भारी ❋ भारत भूमि परे सब झारी
द्रोण करण भगदत्त भुवारा ❋ और नृपति जे हते अपारा
और नृपति जिनके नहिं कोई ❋ समगति करौ सबन की सोई
राजा कैसो करै उपाई ❋ दाह कर्म बीरन के आई
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा ❋ लागे करन दाह कर काजा
धर्मज भीम धनञ्जय बीरा ❋ और नकुल सहदेव रणधीरा

दो० पांचौ बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश।
बड़े बड़े सरदार सब, क्षत्री बीर नरेश॥

CC-O. Kanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे ❋ दाह कर्म सबही को कीन्हे
पहले दुर्योधन शत भाई ❋ लषण कुँवर को दाह कराई
भूमि गुप्त करि कुरुपति धारा ❋ बाहर काढ़ि कुँवर को जारा
द्रोण बीर भगदत्त भुवारा ❋ और कलिङ्ग शूर बरियारा
कर्ण बीर अँगारमति रानी ❋ क्षेत्र मांझ सत्ती भइ आनी
और त्रिया जेहि सत मनमाना ❋ भई संग पति सती प्रमाना
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा ❋ अभिमन्यु दाह करै तब काजा
उत्रा सती होन को जाई ❋ कहैं कृष्ण तासों समुझाई
तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई ❋ कुरु पाण्डव के सरबर सोई
है दुइ मास गर्भ कहि भाखा ❋ बहु समुझाइ कृष्ण तेहि राखा

दो० बहु प्रकार उत्रा कहँ, कह्यउ कृष्ण समुझाइ।
दुहुँ बंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ॥

तब बिराट अरु द्रौपद राजा ❋ सोमदत्त के दाहन काजा
अंशुमान को दह्यो शरीरा ❋ चेकीतान दह्यो रणधीरा
काशीराज शिखण्डी बीरा ❋ धृष्टद्युम्न को दह्यो शरीरा
कैकरि और त्रिगर्त नरेशा ❋ दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा
जे द्रुपदी के पांच कुमारा ❋ गति कीन्ही तब धर्म भुवारा
है घटोत्कच भीम कुमारा ❋ और हलंबुष दानव बारा
दाहन कर्म सबहि को कीन्हा ❋ क्षत्री बीर जहां लगि चीन्हा
पाछे को जेतने असवारा ❋ अरु पायक जे भये सँहारा
भारत महँ जूझे हैं जेते ❋ दाहकर्म धर्मज किये तेते
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा ❋ गये गङ्गतट ब्राह्मण साथा

दो० तर्पण अरु अस्नान करि, क्षत्री देव प्रमान।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान॥

करि अस्नान नगर में आये ❋ तब कुन्ती पुत्रन समुझाये
सुत सुपुत्र भाषहि संसारा ❋ सोइ कर्ण सुत हते हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कन्या कलँक भयो अवतारा ❋ सूर्यध्यान कीन्ह्यउ ज्याहि बारा
ज्येष्ठ बन्धु सोइ करण तुम्हारा ❋ प्रेत कर्म तेहि करौ भुवारा
यह चरित्र राजै सुनि पाये ❋ हाय करण तुम कहां सिधाये
भ्राता आजु बात सुनि पाये ❋ अनजाने रण तुमहिं गिराये
आगे माता नाहिं जनाये ❋ भाष्यो तब जब मारि गिराये
मो कहँ शोक सिन्धु में डारेउ ❋ पहले माता नाहिं सँभारेउ
तबहिं शाप माता कहँ दीन्हा ❋ तव गुण मातु कर्णबध कीन्हा
गुप्त कथा नारिन तन माहीं ❋ रहै कदापि कला उर नाहीं

दो० महाशोक राजा हृदय, कर्णहिं हेतु बिलाप ।
ज्येष्ठ बन्धु बधकीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप ॥

कर्ण बीर के कर्महिं कीन्हे ❋ बेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे
है बृषकेतु जो कर्ण कुमारा ❋ कर्म पिता के करै सँभारा
औरौ ज्ञाति सबै परिवारा ❋ कीन्हे कर्म बेद ब्यवहारा
तर्पण ज्ञान गङ्ग महँ कीन्हा ❋ पिण्डदान तब दश दश दीन्हा
यह कीरति जल में निर्बाहा ❋ पुनि बाहर आये नरनाहा
क्रियाकर्म सबके हित कीन्ह्यउ ❋ बहुत दान बिप्रन कहँ दीन्ह्यउ
बिदुर और धृतराष्ट्र भुवारा ❋ पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा
गृह में गये सबै यक साथा ❋ पाण्डव सङ्ग आप यदुनाथा
रहे गेह महँ सब जन आई ❋ कुन्ती अरु गन्धारी माई
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई ❋ चिन्तावन्त धर्मसुत राई

दो० ज्ञाति बन्धु को शोक है, धर्मराज मनमाह ।
दुख पावत हैं हृदय महँ, पाण्डवपति नरनाह ॥

यहि अन्तर तहँ सब मुनि आये ❋ पाराशर तब हर्षि सिधाये
नारद मुनि आये पुनि तहँवां ❋ सनक सनन्दनहू गे जहँवां
व्यासकपिलअरुऋषिगणनाना ❋ मुनि बशिष्ठ तहँ कियो पयाना
ऋषि जमदग्नि संग सब आये ❋ धर्मराज तब दर्शन पाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पांचौ बान्धव बैठे जहँवां ❀ कुरुनृप और बिदुर हैं तहँवां
बन्धु शोकते धर्म शरीरा ❀ नयन स्रवत जल बहुदुख पीरा
राज पाट हित बान्धव मारा ❀ महाशोक महँ धर्म भुवारा
रोदन कर तहँ धर्म नरेशा ❀ बन्धु शोक तन भयो प्रबेशा
तबहीं ब्यास सिखावन लागे ❀ राजनीति धर्मज के आगे

दो० बहु प्रकार समुझायकै, धीर धरायो ब्यास।
कृष्ण समेत बन्धु सब, बुद्धिचक्षु हैं पास॥

सुर अरु असुर दनुज नर दारा ❀ बन्धु बन्धु ते बैर सँभारा
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना ❀ सदा युद्ध ते करै निदाना
सदा सों यहै बात चलिआई ❀ तुम कह शोच करत हो राई
जन्म मृत्यु होतै परमाना ❀ हरिमाया काहू नहिं जाना
तीनों रूप त्रिगुण अवतारा ❀ सिरजैं पालैं करैं सँहारा
जनमत संग मृत्यु तो आवा ❀ मायारूप गर्भ नर पावा
मरिहैं सबै न बचिहै कोई ❀ जेतने देव दैत्य नर सोई
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा ❀ मरहिं अष्टकुल नागपसारा
मरिहैं धरती और अकाशा ❀ मरिहैं मेघ नीर परगाशा
मरिहैं चन्द्र सूर्य अरु तारा ❀ मरिहैं ब्रह्मऋषिहि संसारा

दो० शोक परिहरौ धर्मसुत, देखहु ज्ञान बिचार।
जो जन्मा सो सब मरा, मृत्युलोक संसार॥

जेतक भये मही अवतारा ❀ कहां गये वे सबै भुवारा
केते भये कहत नहिं आवैं ❀ अन्तकाल सब मृत्युहि पावैं
राजा रङ्क मरैं सब झारी ❀ मरिहैं महाबीर धनुधारी
मृत्युहि लोक नाम यहि अहई ❀ जो कोइ जन्म आइकै गहई
मरिहैं सबै अमर नहिं कोई ❀ केवल सुयश रहै जग सोई
माता पिता बधू सुत भाई ❀ जीवत भरि माया अधिकाई
अन्तकाल एको नहिं अहई ❀ अपनो धर्म आप सँग रहई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कन्या कलँक भयो अवतारा ❋ सूर्यध्यान कीन्ह्यउ ज्याहि बारा
ज्येष्ठ बन्धु सोइ करण तुम्हारा ❋ प्रेत कर्म तेहि करौ भुवारा
यह चरित्र राजै सुनि पाये ❋ हाय करण तुम कहां सिधाये
भ्राता आजु बात सुनि पाये ❋ अनजाने रण तुमहिं गिराये
आगे माता नाहिं जनाये ❋ भाष्यो तब जब मारि गिराये
मो कहँ शोक सिन्धु में डारेउ ❋ पहले माता नाहिं सँभारेउ
तबहिं शाप माता कहँ दीन्हा ❋ तव गुण मातु कर्णबध कीन्हा
गुप्त कथा नारिन तन माहीं ❋ रहै कदापि कला उर नाहीं

दो० महाशोक राजा हृदय, कर्णहिं हेतु बिलाप ।
ज्येष्ठ बन्धु बधकीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप ॥

कर्ण बीर के कर्महिं कीन्हे ❋ बेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे
है बृषकेतु जो कर्ण कुमारा ❋ कर्म पिता के करै सँभारा
औरौ ज्ञाति सबै परिवारा ❋ कीन्हे कर्म बेद ब्यवहारा
तर्पण ज्ञान गङ्ग महँ कीन्हा ❋ पिण्डदान तब दश दश दीन्हा
यह कीरति जल में निर्बाहा ❋ पुनि बाहर आये नरनाहा
क्रियाकर्म सबके हित कीन्ह्यउ ❋ बहुत दान बिप्रन कहँ दीन्ह्यउ
बिदुर और धृतराष्ट्र भुवारा ❋ पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा
गृह में गये सबै यक साथा ❋ पाण्डव सङ्ग आप यदुनाथा
रहे गेह महँ सब जन आई ❋ कुन्ती अरु गन्धारी माई
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई ❋ चिन्तावन्त धर्मसुत राई

दो० ज्ञाति बन्धु को शोक है, धर्मराज मनमाह ।
दुख पावत हैं हृदय महँ, पाण्डवपति नरनाह ॥

यहिअन्तर तहँ सब मुनि आये ❋ पाराशर तब हर्षि सिधाये
नारद मुनि आये पुनि तहँवां ❋ सनक सनन्दनहू गे जहँवां
व्यासकपिलअरुऋषिगणनाना ❋ मुनि बशिष्ठ तहँ कियो पयाना
ऋषि जमदग्नि संग सब आये ❋ धर्मराज तब दर्शन पाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पांचौ बान्धव बैठे जहँवां ❋ कुरुनृप और बिदुर हैं तहँवां
बन्धु शोकते धर्म शरीरा ❋ नयन स्रवत जल बहु दुख पीरा
राज पाट हित बान्धव मारा ❋ महाशोक महँ धर्म भुवारा
रोदन कर तहँ धर्म नरेशा ❋ बन्धु शोक तन भयो प्रवेशा
तबहीं व्यास सिखावन लागे ❋ राजनीति धर्मज के आगे

दो० बहु प्रकार समुझायकै, धीर धरायो व्यास।
कृष्ण समेत बन्धु सब, बुद्धिचक्षु हैं पास॥

सुर अरु असुर दनुज नर दारा ❋ बन्धु बन्धु ते बैर सँभारा
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना ❋ सदा युद्ध ते करै निदाना
सदा सों यहै बात चलिआई ❋ तुम कह शोच करत हो राई
जन्म मृत्यु होतै परमाना ❋ हरिमाया काहू नहिं जाना
तीनों रूप त्रिगुण अवतारा ❋ सिरजैं पालैं करैं सँहारा
जनमत संग मृत्यु तो आवा ❋ मायारूप गर्भ नर पावा
मरिहैं सबै न बचिहै कोई ❋ जेतने देव दैत्य नर सोई
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा ❋ मरहिं अष्टकुल नागपसारा
मरिहैं धरती और अकाशा ❋ मरिहैं मेघ नीर परगाशा
मरिहैं चन्द्र सूर्य अरु तारा ❋ मरिहैं ब्रह्मऋषिहि संसारा

दो० शोक परिहरौ धर्मसुत, देखहु ज्ञान बिचार।
जो जन्मा सो सब मरा, मृत्युलोक संसार॥

जेतक भये मही अवतारा ❋ कहां गये वे सबै भुवारा
केते भये कहत नहिं आवैं ❋ अन्तकाल सब मृत्युहि पावैं
राजा रङ्क मरैं सब झारी ❋ मरिहैं महाबीर धनुधारी
मृत्युहि लोक नाम यहि अहई ❋ जो कोइ जन्म आइकै गहई
मरिहैं सबै अमर नहिं कोई ❋ केवल सुयश रहै जग सोई
माता पिता बधू सुत भाई ❋ जीवत भरि माया अधिकाई
अन्तकाल एको नहिं अहई ❋ अपनो धर्म आप सँग रहई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्म कर्म जो जाको जैसा ❋ ताको फल पावै सो तैसा
ब्यास कहैं राजहि समुझाई ❋ शोक करो क्यहि कारण राई
एक ब्रह्म कै सब यह माया ❋ देव असुर मानुष्य भ्रमाया

दो० राजा शोक न करौ तुम, कहेउ ब्यास समुझाइ।
एक धर्म साथी अहै, और संग नहिं जाइ॥

जैसे एक चन्द्र नभ माहीं ❋ कोटि कला सम प्रकटै ताहीं
सर्ब मध्य देखौं सोइ चन्दा ❋ एकौ अङ्ग अहै सब बन्दा
नाना घट माया बिस्तारा ❋ सुत पितु बन्धु मातु परिवारा
यक घट नाश जबहिं ह्वैजाई ❋ ताको जल सब भूमि समाई
तजिकै रूप पुरुष अस जाई ❋ चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई

दो० घट बिनाश ते पुरुष तब, लीन होइ तहँ जाइ।
प्राकृत माया त्रिगुण जो, सो भरमावत आइ॥

यहिप्रकार मुनिब्यास बुझायो ❋ धर्मराज को धीरज आयो
भारत कथा पुनीत प्रतापा ❋ नाशै सकल देह कर पापा
आवै मति दुर्मति मिटिजाई ❋ सत्यवन्त ते जानत राई
कहैं कथा मुनि बैशम्पायन ❋ जनमेजय सुनिये सुखदायन
स्त्री पर्व यहै बिस्तारा ❋ अब अभिषेक सुनौ भुवपारा

दो० क्षत्री सुनत जे शूरमा, मूरुख ज्ञान प्रकास।
श्रवण पान जे करत नर, छूटत यमकी त्रास॥

इति श्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासबलसिंहचौहानभाषाकृते
व्यासयुधिष्ठिरसंवादेधर्मउपदेशवर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

इति स्त्रीपर्व समाप्तम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

शान्तिपर्व

—:०:—

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत, रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

श्रीभीष्मपितामहजी ने राजा युधिष्ठिर आदि पांचो भाइयों व श्रीकृष्णचन्द्रजी व कृष्णद्वैपायन और अच्छे २ श्रेष्ठ ऋषि मुनियों को ज्ञानोपदेश किया और उत्तरायण सूर्य प्राप्त होने पर अपने शरीर को त्याग के स्वर्ग को गये यही कथा उत्तम भांति से वर्णन की गई है।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अथ महाभारत शान्तिपर्व।

राजा सुनो शान्ति बिस्तारा ❋ करत राज श्रीधर्मभुआरा
ज्ञातिशोक ते धर्मभुआरा ❋ भावत नहीं राज संसारा
दिन दिन महाशोच तब माना ❋ चौथेपन का कीन पयाना
शतबन्धुनरु द्रोण गुरु मारा ❋ रोवहिं धर्म दीर्घ जलधारा
कर्ण बन्धु सोऊ बध कीना ❋ भीषम तौ शरशय्या लीना
यहै शोच तौ राजा करही ❋ दिन २ तनु दुःखित दुखपरही
जेही अवसर मुनि सब आये ❋ नारद और बशिष्ठ सिधाये
मार्कण्डेय कपिल अरु भृगुमुनि ❋ जमदग्नी औरौ मुनीशगुनि
बृहदश्व लोमश सज्ञानी ❋ सब मन्त्रीगण बिदुर प्रमानी

दो० श्रीबलभद्र नारायण, पांचौ बन्धु भुआर।
बैठे सबै सभा बिषे, सुनौ परीक्षित बार॥

सबै करत राजा से बाता ❋ श्रीबलहरिमुनिऋषि सख्याता
परजा भाग धर्मसुत राजा ❋ पुरी हस्तिना शोभित साजा
बड़े भाग कुरु सब संहारे ❋ परम सुःखकर राज भुआरे
जस संजय नृप शोक गमाये ❋ नारद सबको कहि समुझाये
बेदव्यास ऋषी बहु ज्ञानी ❋ धर्मराज से कहे बखानी
ज्ञानतन्त्र सुनहू नृप बाता ❋ चलो बेगि भीषम पे ताता
व्यास बचन सुनिकै नरनाथा ❋ चले नृपति हरिबल हैं साथा
औरौ सबै मुनी सँग लाये ❋ कुरूक्षेत्र में पहुँचे आये
जहँ शरशय्या भीषम पाये ❋ बैठे सबै तहां मन लाये
शरशय्या भीषम कहँ देखा ❋ महा शोक बाढ़यो नृप पेखा

दो० रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन।
हिरदय शोकप्रकाशिकै, कहै लाग नृप बैन॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालक काल पिता के हीना ❋ तब प्रतिपालन तुमहीं कीना
मोसम पापी मुग्ध न आना ❋ भीषम मैं मारे अज्ञाना
सत्य बचन हमको गुरुजाना ❋ मैं कर पाप असत्य बखाना
जेठबन्धु कर्णहि रण मारा ❋ अस्त्रहीन पारथ संहारा
मोसम पापी जगत न कोई ❋ भये नहीं नहिं होवै कोई
पांच पुत्र द्रुपदी के गयऊ ❋ औ अभिमनु रणमें बध भयऊ
कौन सुःख है राज हमारा ❋ अल्पकाल पातक को टारा
जाऊं बनहि तजौं मैं राजा ❋ बनौबास कुमती के काजा
शोक अनल ते दहै शरीरा ❋ महाशोक से कह नृप बीरा

दो० राजा ब्याकुल शोकहै, जगतबन्धु दुख ताप।
कर्म लिखा नहिंजानहि, सहब कहा संताप॥

कहही बात व्यास समुझाई ❋ समाधान है सुन अब राई
बाल युवा वृद्धहु किन होई ❋ अन्तकाल मरते सब कोई
दुख सुख है यक सम संसारा ❋ काल सर्व संहारनहारा
रोगी मरै बैद्य मरि जाई ❋ स्त्री पुरुष मरैं सब राई
राजा प्रजा गुणी सब मरैं ❋ देवरु दैत्य जन्म सब धरैं
मरिहैं गँधरब यक्ष अपारा ❋ चांद सूर्य मरिहैं अवतारा
सिध संन्यासी मरिहैं झारी ❋ मरिहैं राजा रङ्क भिखारी
जहँवा जन्म मृत्यु है तहँवा ❋ दुख सुख सब एकै सँग आवा
यहै बात जब भीषम सुना ❋ सुनताहि हिरदय में तब गुना

दो० शरशय्या महँ भीष्म कह, सुनो धर्म नरनाह।
जहँ संयोग बियोग तहँ, यहीभेद जो आह॥

पानी बिम्ब देख संसारा ❋ नाश होत नहिं लागै बारा
होतव्यता जो कर कर्तारा ❋ कहा तुम्हार रहब संसारा
जन्मे बीर रूप जग जाना ❋ होती मींच पतङ्ग समाना
रात्री दिन षटऋतु परमाना ❋ रचना रचते बिबिध बिधाना
पुनि पुनि आय करै पैसारा ❋ आवत जात न लागहि बारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहैं व्यास सुनहू नृप सोई ❀ आशा छोंड़ि सकत नहिं कोई
औषध विद्या मन्त्र अपारा ❀ अन्न सेज औ बलि बिस्तारा
घना कुटुम्ब बहुत बिस्तारा ❀ अन्तकाल को राखै पारा
काहूकेर पुत्र पितु नाहीं ❀ भार्या भगिनी मातु न आहीं
जैसे पथिक चलै मग माहीं ❀ तैसे जक्क माय सब आहीं
एकहि संग रहै परिवारा ❀ अन्तकाल को देखनहारा

दो० कौन पन्थ कै गवन है, पाव न कोई चाह ।
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा ❀ घरी रहट जानौ संसारा
जैसे कर्म जौन छल करई ❀ सो प्रकार जग भुगते फिरई
मायाजाल कपट मन बन्दा ❀ सब घट पूरण बालगोबिन्दा
यहि से तरे नाम इक धाई ❀ यज्ञ ध्यान मनसाफल पाई
बिना भक्ति बिष्णुहि को देखा ❀ कोटियज्ञ औ धर्म अलेखा
पूर्वज पाप सोय फल पावै ❀ धर्मपन्थ से सो सुख पावै
गङ्गासुत तब कहत बखानी ❀ श्रुति इतिहास पुराण बखानी
अत्री कहेउ जनक के पाहाँ ❀ जनक यज्ञशाला के माहाँ

दो० स्वर्ग मृत्यु पाताल सब, सृजा प्रजापति ताहि ।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि ॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई ❀ पृथ्वी भारन ब्याकुल होई
राय कहा परजापति ताहाँ ❀ पिंग भये भारत रणमाहाँ
दिनदिन सब बाढ़ी परिजाना ❀ परजापति से प्रथम बखाना
क्रोधरुद्र के नैन निहारा ❀ कन्या एक भई अवतारा
ब्रह्मा पाँह कहे सब बाता ❀ आज्ञा कहौ कवन सरुयाता
सबै जक्क अब करौं सँहारा ❀ तबै प्रजापति कहा बिचारा
मृत्युहि नाम प्रजापति भाखा ❀ अम्बु बृद्ध कै को गुणराखा
चौंसठ रोग तुम्हारे सङ्गा ❀ तव परिवार करौं गुण भङ्गा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर्य बदन यम को परमाना ❋ परम अधर्म बिचारहु नाना
दो० चित्रगुप्त सँग यम रहैं, मृत्युलोक संचार।
सुन्दा गृहस्थीरयम, करत जगत संहार॥
दण्डअस्त्र तब ताको दीन्हा ❋ यही प्रकार प्रजापति कीन्हा
शिव बिद्याधर हैं परमाना ❋ गँधरब किन्नर सुर तब जाना
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा ❋ उपमा कौन कहै को पारा
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा ❋ सो सूरज नहिं तहाँ पसारा
योगी सिध संन्यासी जेते ❋ पश्चिम द्वार जात हैं तेते
पूर्व द्वार उत्तम अस्थाना ❋ तहाँ जायँ जो सुनौ बखाना
कन्या भृङ्गी अन्न को दाना ❋ पूर्व माहिं सो पावहिं जाना
सत्यवन्त दाया परमाना ❋ अतिथि सेव परहित सनजाना
देवास्थल पुष्कर जो निकरै ❋ पूर्व द्वार से सब संचरै
तीनद्वार के भेद बखाना ❋ जौनकर्मकरि जेहिदिशिजाना
दो० उत्तम कथा प्रकाश किय, सुनो धर्म कर राव।
जवन कर्म करता जवन, तहाँ तवन सो पाव॥
अब सुन दक्षिणमार्ग भुवारा ❋ तहँ पर हैं चौरासी धारा
रात्रि दिवस है तहँ अँधियारा ❋ सात लाख औ तीनहजारा
हैं यमदूत तहां निहधीरा ❋ देखत सबै कुरूप शरीरा
लोहदण्ड सब के करमाहीं ❋ वहै द्वार यम रूप कुआहीं
पापी जीव तहाँ दुख पावै ❋ राजा हम से कहत न आवै
बहै नदी बैतरनी ताहाँ ❋ रक्त मांस औ जल औगाहा
नाना कृमी बिकट शारीरा ❋ जल सरिता सोहै गम्भीरा
तहँ जो जात सुनो सो काना ❋ भीषम भाषें शास्त्र प्रमाना
परदारा परद्रव्य चोरावै ❋ मिथ्या सदा पाप तेहि भावै
स्त्री ब्राह्मण गोहत्या करहीं ❋ मातपिता गुरु चित्त न धरहीं
दो० नगर पापकर भज्जता, दुख देवै संसार।
गुरुजन ते हिंसा करै, तहाँ करत पैसार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इनको तौ यमदुत लै जाई ❋ जहाँ धर्म यम राजा अहई
चित्रगुप्त तहँ करत बिचारा ❋ जाको जस पावै संसारा
पावन शमन नदी गम्भीरा ❋ ताते दाहत विवश शरीरा
लोहदण्ड मारैं यम ताही ❋ ऐसे कष्ट देत बहु आही
ऐस प्रजापति सिर्जै ताही ❋ कर्मज फल सब भुगतैं जाही
सब विष्णुहि माया जो अहै ❋ नानारूप भीष्म तो कहै
जन्मत संग मृत्यु अवतारा ❋ यहिसे शोच न करो भुवारा
कर्म के बश नर पाव कलेशा ❋ छुटै न कोटिकल्प परवेशा
श्रीकृष्णपद चिन्तन करै ❋ कर्म बन्ध से सो उद्धरै

दो० याहि बिचारो भूपते, तजो शोक संताप ।
श्रीपति कर्ता सबन के, नाना पुण्यरु पाप ॥
ताते सब कर्ता हरी, करन करावन सोय ।
इन्हीं चरणलवलावही, इनसे और न कोय ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाशान्तिपर्वभीष्मदर्शधर्मराजा पावनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा ❋ तजौ शोक शत करहू काजा
सो जस राजा कथा सँचारा ❋ भरत नाम राजा संसारा
हरि बिन और एक नहिं जाना ❋ महाराज भक्ती भगवाना
राज्य कियो बहुदिन बिस्तारा ❋ बन्धु राज्य दे बन पगु धारा
कियो प्रवेश महाबन नृपती ❋ निरत भक्तिपथ कृष्णकिगती
एक दिवस अस्नान के काजा ❋ सरवर मांह गये तब राजा
गर्भवती हरिणी यक आई ❋ नीर पियन को जल में जाई
पूरण गर्भ मृगी सो आहै ❋ माया बिष्णु सुनौ जो आहै
पीकर नीर चली शिर नाई ❋ प्रसव समय तो आय तुलाई
उदरपीर जो भई अपारा ❋ प्रसव भई सो सुना भुवारा
बालक एक नदी के तीरा ❋ राव चरित्र देख रणधीरा

दो० बिधि के रचना ऐसिहै, मृगी तजा तहँ प्रान ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देख भरत राजा तहां, सर में करत स्नान॥
देख नृपति शिशु परा अनाथा ❋ तबहिं ताहि पाले नरनाथा
तृण अरु नीर देत आहारा ❋ बहुत प्रीति कै पाल भुआरा
समय बिचारि मृगा बन आये ❋ सुत समान तौ पालहि राये
कितने दिवस बीति तब गये ❋ यक दिन मृगा भाग बन गये
पाये सँग जो मृग के तहां ❋ रहे परम सुख सँग में जहां
राजा हृदय महादुख आना ❋ ढूंढ़त नहिं पायो पछताना
कवन लेगयो मोर कुरङ्गा ❋ ताके हेतु सदा मन भङ्गा
कितने दिवस शोकमहँ गयऊ ❋ अन्तकाल राजा को भयऊ
तब यमदूत गये लै ताहीं ❋ हिरणा शोक हेतु मन माहीं

दो० कै बिचार तब धर्म नृप, दीन मृगा अवतार।
मृग स्वरूप में जो रहै, कौडलपुरी मँझार॥

सहसलाख सुनिनेरे तो जाना ❋ कारण कहा ऐस भगवाना
तुम चेतौ माया अवतारा ❋ मृगारूप यह हेतु तुम्हारा
पूरब बात भयो तब ज्ञाना ❋ जलतृणतजे किया नहिं पाना
ऐसा शोक मृगा तज प्राना ❋ पाया तब दर्शन भगवाना
आगे जन्म भये अवतारा ❋ तब सो राजहि भयो उधारा
सगरे शोक काल के फांसा ❋ ताते भूप करै हरि आसा
हरता करता तारत हरि है ❋ तीनों लोक बखानत हरि है
चारौ बेद प्रजापति धारा ❋ ध्यान धरे हरि पावन पारा
शेष सहसमुख गुण जो गावै ❋ नारद कपिल सनातन ध्यावै
मुनी करैं तप जा पद आशा ❋ करै अनन्त ब्रह्माण्ड प्रकाशा

दो० सो हरिबिना सुजक्त महँ, दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अंग्रित परमान॥

सहस नाम ते धर्म न आना ❋ सहसनाम गाङ्गेय बखाना
चारि बेद में सार जो आहै ❋ सहसनाम से पाप न राहै
राम रमहि राम रम रामा ❋ राम सहस्रन नाम समाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज स्वरूप ब्याक भय नाहीं ❋ छूटे ब्याध धर्म पद जाहीं
करि संक्षेप बखाने नाना ❋ सहस नामकै महिमा आना
नाम अनन्त अन्त को जाना ❋ एक नाम से पद निर्बाना
पञ्च नाम से द्वादश नामा ❋ अष्टाबिंश नाम है ज्ञाना
सत्य नाम सहसन में जाना ❋ पुनि अनन्त को नाम बखाना
परमतत्त्व अह नाम जो एका ❋ सुमिरहिं सन्त जो हृदयबिबेका
परमधर्म को सार है सोई ❋ नाम सहस्र पढ़े जो होई

दो० राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधा रवन ।
बिभु गोपाल शारंगधर, गोबर्द्धनधर जवन ॥
रावणारि कंसारि हरि, भक्तबन्धु भगवान ।
ध्यानकरौ मनजानिधरि, मनसाबाचा जान ॥
सर्वसार जे जगपती, इतना नाम बखान ।
नाम भजे पातक हरत, भूप सुनौ दै कान ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाशान्तिपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

राजा सुनौ कथा तौ अहै ❋ पुनि गङ्गासुत राजहि कहै
ब्राह्मण क्षत्री बैश्य सोहाई ❋ चौथे शूद्र बर्ण सुन राई
गङ्गासुत तब कहैं बखानी ❋ इनके धर्म नीति सज्ञानी
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना ❋ बिद्या बेद सहस्र प्रमाना
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना ❋ बेद प्रमाणहि जवन बखाना
योग न जाप न औ अध्यापन ❋ उद्यापन औ धर्मपरायन
इत्यादि ब्रह्मबर्ण के धर्मा ❋ गङ्गासुत भाष्यो यह मर्मा
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना ❋ ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमाना
सुन्दर जन्म जानु संसारा ❋ संस्कार से द्विज संचारा
बेद अभ्यास बिप्र सूजाना ❋ ब्रह्म जनम से ब्राह्मण जाना

दो० सन्ध्यातर्पण बिबिधबिधि, बेद पाठ परमान ।
परमकर्म यह बिप्र का, भीषमकहाबखान ॥

क्षत्री गो ब्राह्मण का पालै ❋ मन्त्री प्रीति शत्रु संहारै

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्भिक्षा जु अन्न कर दाना ❋ गाढ़ेशरण न जाय जो प्राना
रण में शूर धर्म मन माना ❋ है क्षत्री जो धर्म बखाना
बैश्य बणिज कृषि को संचारी ❋ द्विज बैष्णव पूजा अनुसारी
सदा धर्म जो यहै बखाना ❋ चौगुण बर्ण धर्म जग जाना
सुन्दर धर्म सुनै सब कोई ❋ तीन बर्ण को सेवत सोई
आलस तजौ भक्त भगवाना ❋ चौगुण बर्णरु धर्म बखाना
आपन आपन राखहि धर्मा ❋ चार बर्ण के याही कर्मा
सृष्टि होय है केहिन न सेवा ❋ त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा
कै बीचार परै गृह माहीं ❋ तब तासू गृह भोजन खाहीं
राजधर्म जो सुन बिस्तारा ❋ मिथ्याबाद दण्ड नहिं सारा
धन्य प्रजा जो लोभ न करही ❋ दानरु धर्म यज्ञ मन धरही
जीति बाहुबल यह संसारा ❋ पालहु प्रजा पुत्र परकारा
बचन प्रतिज्ञा अहै प्रमाना ❋ भूप यही नित पाल सुजाना
मन्त्री दिश न धरै बिश्वासा ❋ प्रीति प्रतीति बचन परकासा
गऊ ब्रह्म जो बिष्णुस्वरूपा ❋ पूजा करब एक मति भूपा
तीन दिना कै सुनब पुराना ❋ राजधर्म सब सुनहु प्रमाना

दो० देव दोष मिथ्या नहीं, रहही रैन सचेत।
राजनीतिका धर्म अस, रिपुसे जीतब खेत॥

रानी धर्म पती कर सेवा ❋ यह बृत्तान्त सुनहु जो भेवा
सेवक धर्म पती सेवकाई ❋ बिनु बोले सबकर अधिकाई
ताते धर्मज सब सुख पावै ❋ गृहद्वारा बिवाह करवावै
दशहू अङ्ग गुरूका देई ❋ सेवक धर्म कहे पुनि तेई
गृह को धर्म अभ्यागत पूजा ❋ अन्नदान से आन न दूजा
बैष्णव धर्म यकान्तकै पाऊ ❋ लीन ज्ञान परसंग उपाऊ
लै संन्यास तपस्या करै ❋ भीषम राजा यह संचरै
सर्वहि धर्मसार यतनाऊ ❋ अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ

दो० परहिंसा परकर्म तजि, दयावन्त हित होय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्षुधार्थी अनदान दे, यहिसे धर्म न कोय ॥
गुरु भक्ती पर नाहीं भक्ती ❀ भक्ती बिना जात तनु अगती
बिष्णुपरे सुर और जु नाहीं ❀ गुरूबिष्णु सम कहिये ताहीं
गङ्गा परे नदी नहिं कोई ❀ एकादशि सम ब्रत नहिं होई
बेद नाम जो साम प्रमाणा ❀ इन्द्रियनाम न रूप प्रमाणा
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा ❀ ताको कहिये उत्तम कर्मा
क्षत्री होय शोच का करहू ❀ ज्ञान हमार हृदय में धरहू
रण में क्षत्रि उपस्थित होई ❀ बन्धु पिता पुत्रहु नहिं कोई
ताते शोच तजौ परमाना ❀ राजा सुनिये करौं बखाना
साहसरण क्षत्री को कामा ❀ भजौ चरण तुम श्रीघनश्यामा
हरिको चरण सदा मन लावो ❀ भवसागर तर निश्चय जावो

दो० पिता बन्धु सुत क्षत्रिको, रणमें कौन बिचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषमकर उपचार ॥
धर्म एक सँग होत निज, और संग नहिं कोय ।
यहिते वह मन राखिये, धर्म न छोड़ौ सोय ॥

इति श्रीमद्दाभारतभाषाछन्दकृताशान्तिपर्वतृतीयोऽध्यायः ॥३॥

बैशम्पायन कहैं बिचारा ❀ भीषम भाषे धर्म भुवारा
ब्रतन शिरोमणि एकादशी ❀ तुलसी पुष्प तीर्थ बनरशी
ताको राजा सुन बिस्तारा ❀ दुर्लभ जन्म जो कह संसारा
एकादशिकी महिमा याहै ❀ भीषम धर्मराज सों काहै
दैत्य मुरासुर अति बल भारी ❀ ताते हरि माया संचारी
युद्ध माहिं जीती नहिं पारा ❀ मुरा असुर दानव संहारा
हरि को नाम मुरारी तबसे ❀ हरिबासर जु जन्म है तबसे

दो० अनगिन माया बिष्णुकी, योगमाया संचार ।
एकादशि ब्रत महिमा, सो तौ सुनौ मुवार ॥

अवधपुरी इक मङ्गल राजा ❀ बिष्णुस्वरूप करै सो साजा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संभावती तासुकी रानी ❋ धर्म पुत्र गत शूर सुज्ञानी
एकादशि ब्रत सो संचारा ❋ ताको राजा सुनौ बिचारा
नृप के पुष्प बाटिका आही ❋ तोरे पुष्प उर्बशी जाही
मालाकार पती का दहै ❋ धर्म प्रमाण सभा तौ गहै
राजा पहँ तौ बात जनाये ❋ तब राजा देखन को आये
तब उर्बशि सब अर्थ सुनाये ❋ हमैं सुरपती यहां पठाये
पुष्प हेतु आये तौ कामा ❋ पतिब्रतरत धर्महि के कामा
एकादशि को पुण्य जो चहिये ❋ तबहि बिमान अमरपुर जइये
राजा पूछै सब ब्यवहारा ❋ कहो भेद नाहीं संसारा

दो० दशमी एकहिबेर नृप, नियम करै आहार।
एकादशिउपवास ब्रत, शुचितनु रूपसबार॥

एकादशि ब्रत रहै उपासा ❋ प्रात द्वादशी होत प्रकासा
करि अस्नान अन्न दै दाना ❋ एकोतर सै सेर बखाना
यहिके मांह छूट जो होई ❋ एकादशि निसरावा देई
बिना पीत उछरंग न करै ❋ ताको पुण्य सर्व को धरै
ताको पुण्य सो पावहि तबहीं ❋ जाय बिमान स्वर्गको जबहीं
तौ राजा को जगमो नाहीं ❋ यहि प्रकार को जानत आहीं
खोजत एक तु भई उपाई ❋ रजक एक नगरी में अहई
तासु नारि सो रही कोहाई ❋ एकादशि को अन्न न खाई
क्रोध बिबश सो रही उपासा ❋ ब्रतपूरण द्वादशी प्रकासा
तिन चरणन से छुये बिमाना ❋ तबहिं बिमान तु स्वर्ग उड़ाना

दो० यहगतिदेखत भूपमणि, एकादशि परमान।
पुत्र समान प्रजापती, पालत रूप सज्ञान॥

दुखी दरिद्र कोइ पुर नाहीं ❋ धर्म बृद्ध सो राजा माहीं
एकादशि बिन और न जाना ❋ और देव नहिं पूजत आना
दशमी घर घर डोंड़ि बजाई ❋ कहै दूत सब कहँ हँकराई
दशमी संयम के उपहारा ❋ हरिबासर त्यागी संचारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकादशी जागरण करै ❀ प्रातस्नान द्वादशी धरै
करै अनेक अन्न जो दाना ❀ पुर में गृह प्रति करै बखाना
ऐसी बात नगर संचारा ❀ गज बाजी नहिं पाव अहारा
बृद्ध युवा पशु नर अरु नारी ❀ बालक दूध न दे थनहारी
चारौं बर्ण प्रजा जे रहै ❀ पशु अरु जीवजन्तु जो अहै
पापक नगर नहीं लवलेशा ❀ ऐसा ब्रत सब नगर प्रवेशा

दो० पशुश्वानादि गजादितक, और जीव चण्डार।
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिंयमलोकसँचार॥

एकबार कौतुक तौ भयऊ ❀ यक चण्डाल मृत्यु जो भयऊ
पापी महा रहा अपराधी ❀ यम के दूत चले लै बांधी
बिष्णुदूत ताक्षण तहँ धाये ❀ यमदूतन को दूर कराये
बहुप्रचार से गये जु ताही ❀ जीवहि बिष्णुदूत लै जाही
यम के दूत भाग सब राई ❀ यमराजा सन खबरि जनाई
बिष्णुदूत मारे प्रभु काजा ❀ लै चण्डाल गये सुन राजा
बन्ध छोरिके हमका मारे ❀ जीवहि लै बैकुण्ठ सिधारे
रथ चढ़ाय लैगे पुनि सोई ❀ यम से दूत कहैं अस रोई
भागे हम लै आपन प्राना ❀ धर्मराज तुम सुनौ बखाना
धर्मराज दूतन दुख देखी ❀ अपने मन में बिस्मय लेखी

दो० दूतहि सँगलै भूपमणि, ब्रह्मलोक पगढार।
ब्रह्मपास तौ जाय तब, कहा बचन संचार॥

मोर काज यह पद से नाही ❀ जेहि मन मानै दीजै ताही
कारण तासु सुनौ परमाना ❀ अवधनगर चण्डाल महाना
ताको लेन दूत सब गयऊ ❀ बिष्णु के दूत महादुख दयऊ
तब ब्रह्मा लागे अनुसारन ❀ सुनौ धर्म कहताहौं कारन
एकादशी बिदित संसारा ❀ महापातकी पावत पारा
एकादशी क्षुधा जो सहै ❀ तेहिके अनल पाप सब दहै
तोर दूत तहँ जाय न पारा ❀ एकादशी बिष्णु अधिकारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुना बात ब्रह्मा के जाना ❀ धर्मराय को आप बखाना
मोरा इह पद नाहीं काजा ❀ कहे बात ऐसे यमराजा
दो० तब ब्रह्मा कह बात यह, सुनौ धर्म के राव।
करत पक्ष तव कारणे, रचिये एक उपाव॥
नारद कहा नारि औ नारा ❀ ताते मोहित भये भुआरा
नयननमो ब्रह्मा को जाना ❀ सर्व देव को अंश प्रमाना
सिर्जा नानारूप अपारा ❀ लै ब्रह्मा तामें जिव डारा
सब पर एक किये परधाना ❀ मोहनी रतीरूप परमाना
मोरी बात अवधपुर जाई ❀ रुपमांगत को धर्म नशाई
लेकर पान सुकन्या जाई ❀ नगर निकट ठहरी बन आई
राजा तहां अहेरहि गयऊ ❀ तहां भेट कन्या से भयऊ
कामबश्य तो राजा मोहै ❀ कह कत मात पिता को अहै
तब कन्या कह बात बिचारी ❀ यहि बन में है बास हमारी
दो० सुरकन्या देवानुग्रह, भया मोर अवतार।
ब्याह नहीं भा भूपमणि, रहत बनै मंझार॥
राजा काम मोह कै कहई ❀ अस स्वरूप जे बन में रहई
ब्याह न करत सो कौने काजा ❀ कन्या कहत सुनौ हो राजा
मनबाञ्छित बर जो मैं पाई ❀ सोई कन्त सत्य समुझाई
राजा कहै चहौ का सोई ❀ पचै देव जो मन में होई
अवधनगर जो देश अनूपा ❀ मैं राजा रुपमांगत भूपा
अपने बल जीता संसारा ❀ दैत्य अनेक दुष्ट संहारा
सूरज बंश कहत मैं तोहीं ❀ आवै मन तौ बरिये मोहीं
कन्या कहा तेज मन जेते ❀ महाबली मैं चाहौं तेते
सत्यप्रण जो राजा कहिये ❀ तब हम राजा तुमको बरिये
सत्य हमार संग नरपती ❀ तौ हम मानी ताकहँ पती
दो० जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजै मोहिं।
यही शपथ करिये नृपति, तब हम बरिये तोहिं॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा सत्य कियो परमाना ❀ कन्या तबहीं कीन पयाना
केतिक दिवस रहे तब राऊ ❀ मोहित भये मोहनी भाऊ
दशमी राजा संयम कियऊ ❀ एकादशि ब्रत तब ते भयऊ
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े ❀ तबहिं मोहनी बोलत गाढ़े
खावहु पान भूपमणि राऊ ❀ तब राजा ताकहँ समझाऊ
एकादशि का संयम आहै ❀ मोरे हेतु नगर सब राहै
तब मोहनी कहत रिसियाई ❀ यह तौ कन्त मोहिं नहिं भाई
राजा भय पुरबासिन सुना ❀ सुनत बात सबही मनगुना
दानरु यज्ञ होम कै कर्मा ❀ जानौ यज्ञराज को धर्मा
संन्यासी बैरागहु जेते ❀ ब्रत उपवास कर्म हैं तेते

दो० पान खाइये भूपमणि, तजहू ब्रतकर बान ।
परबशते यह खाइये, दीजै हमको दान ॥

राजा तब मोहनि से सुना ❀ सुनत बात सबही मनगुना
ऐसी बात बहुरि जनि कहौ ❀ जो हमार जिव राखा चहौ
तुमहूं ब्रत करिये मनलाई ❀ लेहु अभयपद हरिपुर जाई
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ ❀ जाना भूप सत्य अब गयऊ
पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा ❀ देवआनि अब कहौ भुआरा
एकादशी तजौ तुम राजा ❀ जो चाहत हौ सत्य सुराजा
नहिं तो देव पुत्रकर माथा ❀ नहिं तौ ब्रत तजहू नरनाथा
राजा सुनिके चक्रित भयऊ ❀ बिनती बचन कहे तब लयऊ
मानत नहीं मोहनी बाता ❀ राजहि शोक भयो तब गाता
निज रानी से जाय जनाई ❀ धर्मागत पुत्रहु सुनि पाई

दो० पुत्र कहा सो बचन तब, सुनौ सत्य तुम तात ।
अन्तकाल पै देखहू, यही सत्य संघात ॥

धर्मागत जु बचन तब भाखो ❀ मम मस्तक दैकै ब्रत राखो
बहुत प्रकार पुत्र समझावा ❀ रानी राजा के मनभावा
एकादशि ब्रत करि असनाना ❀ पिता पुत्र दीन्हों बहुदाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र पद्म आसन करि बैसे ❋ धरे ध्यान योगी जन जैसे
तहाँ मोहनी कहै बखानी ❋ संझावती केशधरि तानी
देव सबै तहँ देखन आये ❋ तब राजा कर खड्ग उठाये
आसन डोलेव शंकर जाना ❋ द्विजस्वरूप करिगे भगवाना
दिव्य एक रथ आयो ताहा ❋ दर्शन प्रकट दियो नरनाहा
नगरहु सहित परम पद पाये ❋ अन्तरिक्ष राजा मनभाये
तब मोहनि को श्रीभगवाना ❋ शाप्यो नरकग्राम परमाना

दो० मम भक्तन पर संकट, कीन तहाँ चण्डार।
तातेअगतितुम्हारि भइ, नहीं तोर उद्धार॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई ❋ तब राजा पहँ बिनती लाई
क्षमहू मोर दोष नरनाहा ❋ मम उद्धार करौ जगमाहा
तब नृप हरि से बिनती लाई ❋ देव दयापति श्रीयदुराई
शाप अनुग्रह करु नरनाथा ❋ रहिहै तौ यह मोरे साथा
तब प्रसन्न भाषे भगवाना ❋ जाहू यन्त्र होव परित्राना
द्वादशि में जो पारण करै ❋ और शयन जो नींद संचरै
ताके व्रतहि धर्म बहु होई ❋ तुमका व्रत है है पुनि सोई
तबहिं मुक्ति होई तव नारी ❋ जग बैकुण्ठपुरी अधिकारी
यह बरदान जो मोहनि पाई ❋ पुरी सहित नृपनगर सिधाई
भीषम भाषे पद्मपुराना ❋ धर्मराज सुनतहि सुखमाना

दो० एकादशी महातम, भाषे सब गांगेय।
बैशंपायन कहत भे, जनमेजय सुनुभेय॥
हरिबासर उत्तम जु व्रत, सर्व पाप क्षय होय।
नाम सदा जो गावही, त्यहिसमान ना कोय॥

इति श्रीमहाभारते भाषाशान्तिपर्वण्येकादशीकथावर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

जनमेजय सुनिये यह काना ❋ धर्मराज से भीष्म बखाना
बनस्पती में तुलसि बखानी ❋ ताकी महिमा कह को जानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुलसी रोपहि पूजहि ताही ❋ प्रात दर्श से पाप नशाही
तुलसी रानि बिष्णु है राऊ ❋ करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ
एक पात्र राधे यदुराई ❋ जन्म जन्म के पाप नशाई
करै प्रदक्षिण नामस्कारा ❋ कबहूं यमपुर नहिं पैसारा
शीश नवाय पत्र शिर धरही ❋ तनुमेंके सब पातक हरही
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा ❋ अन्धमार्ग उजियारा कीन्हा
तुलसी दल पूजै भगवाना ❋ शालग्राम शिला परमाना
सदा बास बैकुण्ठहि पावै ❋ तुलसी महिमा कहत न आवै

दो० सुमिरण तुलसी मन्त्रको, लह बैकुण्ठ स्थान।
धर्मराज के आग्रह, भीषम कहे बखान॥

शालग्राम रूप हरि जोई ❋ तुलसी दल संतुष्टहि होई
पूरब दैत्य जलन्धर नामा ❋ तासु त्रिया बृन्दा गुणधामा
देवन संग महारण होई ❋ दैत्यहि जीतिसकै नहिं कोई
बृन्दा पतिव्रता अवतारा ❋ आप शरीर दैत्य कर धारा
तब हरिमाया करि बिस्तारा ❋ तासु धर्म नहिं दैत्य सँहारा
बृन्दा पहँ यह माँगेव हरी ❋ कै छल जाय नारि सो करी
रतिदानहि जब बृन्दा दयऊ ❋ तब रणमध्य दैत्य बध भयऊ
तब बृन्दा जाना सब भेऊ ❋ पाहन शाप हरी को दयऊ
दैत्यहि गति कारण तव नारी ❋ तब हरिपाहीं कहेउ बिचारी
हरि ने कही कोटि अवतारा ❋ पाहन खण्डव देह हमारा

दो० पत्र तोर मम पूजा, तैं तरिहै संसार।
शालग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार॥

सो तुलसी की ऐसी महिमा ❋ शंकर शेष बखानत हियमा
तुलसी माला जप जो करै ❋ ताहि फूल सच्यत जो धरै
शालग्राम शिला को जोई ❋ तुलसीदल से पूजत कोई
उत्तम पूजा कोइ करावै ❋ अन्तबास बैकुण्ठहि पावै
तुलसी मज्जन हरिके पासा ❋ भीषम कहे बात परकासा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुलसी गृह मज्जन जो करै ❀ उत्तम मारग सो पगु धरै
तुलसी माहँ अर्घ्य जल देई ❀ अन्तकाल सुख पावैं तेई
तुलसी बास बदन परकाशै ❀ तौने बास पाप सो नाशै
तुलसी गेह द्विजन जो देई ❀ उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो लेई
तुलसी मृत्यु समय जल पावै ❀ पापी हू बैकुण्ठ सिधावै

दो० तुलसी महिमा भाष्यऊ, धर्मराज सुनु कान।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान॥

आगे सुनौ धर्म के राऊ ❀ तीरथ माहँ बनारस भाऊ
जाति पत्र दै पूज महेशा ❀ यमके नगर न करु परबेशा
श्रीफल केर पत्र महँ सोई ❀ शिवा शम्भु संतोषित होई
शिव के लोक बास सो पावै ❀ काशी मध्य जु प्राण गँवावै
जो काशी में करवट देई ❀ मन बाञ्छित फल पावै सोई
जो काशी में करतो बासा ❀ यमके दूत न आवहिं पासा
जो काशी में नर कहुँ मरई ❀ तौ कैलास गमन सो करई
जो काशी में धरही ध्याना ❀ हो शिवलिङ्ग रूप परमाना
जो काशी में गोधन दाना ❀ ताको फल अनन्त नहिं जाना
जो काशी तीरथ नृप कहै ❀ हर त्रिशूल पै काशी अहै

दो० जो काशी महँ बास कर, सहित महातम राव।
शिवस्वरूपतेहि अन्त है, यमके नगर न जाव॥

तरे पतित बह गङ्गा पावनि ❀ देवमुनिन के शोक नशावनि
कोटिन लिङ्ग करै परकासा ❀ सदा रहत बासहि कैलासा
महिमा ताहि कहत ना आवै ❀ तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै
यमके दारन परी पुकारा ❀ काशीबास बर्ण अधिकारा
हरपूजा महिमा जो काशी ❀ बहुत प्रकार ब्रह्म परकाशी
धन्य धन्य लक्ष्मीहि जनावै ❀ संतत बृद्धि शत्रुक्षय जावै
रणमें जेतिक होत प्रकाशा ❀ तनु ते व्याधि होत है नाशा
शिवस्वरूप लिङ्गक परकासा ❀ अन्तकाल तेहि शिवपुरबासा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हर को बास जो काशी अहई ❋ भै कैलास मृत्युपुर रहई

दो० काशी का माहात्म्य यह, तुमसों कहा बुझाय।
चेतौ धर्मज धर्म नृप, सेय चरण यदुराय॥

औरौ धर्म सुनौ नरनाहा ❋ कार्त्तिकमास नहान जो चाहा
औ बैशाख स्नान प्रमाना ❋ ताकी संख्या सुनिये काना
आठमास कार्त्तिक अस्नाना ❋ दश बैशाख स्नान प्रमाना
मासमास यहिबिधि जो करही ❋ गो सेवा औ दान सँचरही
पञ्चरतन पट पण्डादाना ❋ करे होम जो शास्त्र बिधाना
प्रतिव्रत मास यही परकारा ❋ ताके फल जो सुनहु भुआरा
नृप होवे सुधर्म परमाना ❋ पावै सुख जन्महि भरि नाना
नृप धर्महि तजि पापउ धावै ❋ नरक बास ताकारण पावै

दो० कार्त्तिक अरु बैशाख जो, ताको सुनौ बखान।
भीषम भाषे नृपति से, पद्मपुरान प्रमान॥

औरौ धर्म सुनौ दै काना ❋ कन्या अरु कन्या को दाना
ताके फल कत कहौं बुझाई ❋ बिष्णुलोक सन्तत सुखदाई
कन्या की ले धान्य जो कोई ❋ महापातकी जग में होई
ताकी गती कल्पभरि नाहीं ❋ धर्म कथा सुनहू मम पाहीं
गऊ दूध घृत मधु को दाना ❋ जाय स्वर्ग सो दिव्य बिमाना
दानधर्म को यह व्यवहारा ❋ धर्मव्रत अब सुनौ भुआरा
शक्री रवी अष्ट उपवासा ❋ ताके फलहि पाव कैलासा
धर्मव्रत जो यह परमाना ❋ ताके फल को करौ बिधाना

दो० नानाधर्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखान।
धर्मराज सुनतै सबै, ताते पाप नशान॥
सब पुराण परसंगतौ, भाषे तहँ गाङ्गेय।
जो यह मत प्राणी चलै, सो न जन्म जगलेय॥

इति श्रीमद्भारतेभाषाशान्तिपर्वणिपञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

औरौ भीषम कहा बखानी ❋ गङ्गा को माहात्म्य सुजानी
कन्दु नाम मुनि एकहि रहैं ❋ ताकी कथा भीष्मजी कहैं
सो गृह तज द्विजपहँ मनभयऊ ❋ पृथ्वी की प्रदक्षिणा दयऊ
नाना तीरथ भर्मत अहै ❋ केवल प्रीति बिष्णुकै रहै
धर्म रूप बिष्णूकै भगती ❋ चाहै सन्त होन नहिं अगती

दो० जेतिक तीरथ पुहुमि में, बन सर नदी पहार।
भर्मत भर्मत जगत में, कीरति सब संसार॥

चन्दरभाग नदी पर गयऊ ❋ चन्द्रकेतु राजा तहँ रह्यऊ
मण्डप एक अहै अनुपामा ❋ पञ्च बर्ष तहँ कर बिश्रामा
बिकट रूप देखा द्विज जाई ❋ महाशोक सो ब्राह्मण पाई
पांचौ कहैं क्रोध से बाता ❋ कहौ नाम सोई सरुयाता
द्विज ने कहा कन्दु मम नामा ❋ कवन जाति है कितको धामा
सुनत बचन तब पांचौ कहैं ❋ पांचौ जना प्रेत हम अहैं
सूचीमुख शृंगीकर आहै ❋ जो यहि के बर ईप्सित काहै

दो० यह चारौजन प्रेत हरि, पञ्चक लेखक नाम।
जौने पापहि प्रेत भे, तासु सुनौ परिणाम॥

बर जो शीत प्रेत परधाना ❋ प्रथम कही ये आप बखाना
सत्य बात को झूंठ कहाये ❋ ताते महाकष्ट द्विज पाये
तौ नहिं पाप प्रेत अवतारा ❋ परयोषित है नाम हमारा
सूचीमुख तो ब्रतै बखाना ❋ मेरी बात सुनौ यह काना
ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा ❋ कर अपमान गर्बऊ पावा
वहां जाव जहँ यज्ञ सु होई ❋ ऐसा झूंठ कहा हम सोई
आशा दैके बिप्र बोलावा ❋ प्रेत जन्म ताही सों पावा
सूचीमुख ताते अभिधाना ❋ अब शृङ्गीकर करैं बखाना
अतिथि जु मांगा मोपहँ दाना ❋ क्षुधावन्त हम कीन बखाना
रहत अन्न में नाहीं दीना ❋ प्रेतजन्म ताही सों लीना

दो० ठाढ़ो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्षुधावन्त भो बिप्रबर, प्रेत तबहिं कहि लीन ॥
लेखक कहता बात बिचारी ❋ ब्राह्मण सुन अपराध हमारी
लेखक कह माया भर्माऊ ❋ क्षुधावन्त तो यक द्विज आऊ
ठाढ़ बिप्र आशा तब कीन्हा ❋ ताको मैं कुछ उतर न दीन्हा
पहर एक ठाढ़ा ह्वै रह्यऊ ❋ भा निराश मुखफिरिकै गयऊ
तौने पाप प्रेत अवतारा ❋ ताते लेखक नाम हमारा
वहिकै बात सुनौ परवेशा ❋ द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा
गुरु नारायण माना नाहीं ❋ विद्या पात्र गर्ब मन माहीं
गुरू बिप्र माना नहिं राई ❋ प्रेत कि योनि ताहि से पाई
सुनि पांचो जन केर उपाई ❋ बिस्मय होय कहा द्विजराई
काम भखनहौ जगत तुम्हारा ❋ ताते देह धरेव संसारा
दो० लज्जावन्तहि पञ्चजन, कहे बचन बिस्तार ।
मल मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करै अहार ॥
अन्धकार में रहन हमारा ❋ करौ गोसाईं मम उद्धारा
दयावन्त द्विज कहै पुराना ❋ गङ्गा केर महातम ज्ञाना
श्रवण परत पातक क्षय होई ❋ सुनत बचन तरिगे सब कोई
गङ्गा पतित पावनी अहै ❋ मृत्युलोक को महिमा कहै
एक समय सब देव उपाई ❋ बैठे सभा अनूप बनाई
बिष्णु कहा शंकर से बाता ❋ पञ्चबदन रागहि सख्याता
शंकर कहेव देव से बानी ❋ धरो धीर मैं कहत बखानी
पञ्चबदन जो राग गँभीरा ❋ सबै देव धरिसके न धीरा
लिये कमण्डलु सो जल परै ❋ राग निमित्त तौ शंकर करै
दो० बिष्णुशरीरहि सोय जल, राख्यो ब्रह्मा जानि ।
सुनौ नृपति भीषम कहै, गङ्गा चरित बखानि ॥
जब बलि छले त्रिपदहरि भयऊ ❋ एकजु पद आकाशहि गयऊ
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा ❋ वहिजलसे चरणोदक लीन्हा
कन्या रूप भई अवतारा ❋ जलस्वरूप प्रकटी त्रयधारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो गङ्गा मृतलोकहि आई ❋ सोइ महातम सुन मनलाई
पतितपावनी गङ्गा जु अहैं ❋ महापातकी पातक दहैं
सूर्यबंश तप सगर जु भयऊ ❋ साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ
महाबीर सेना बलवाना ❋ अश्वमेध यज्ञहि नृप ठाना
बहुत मुनी आये सब राऊ ❋ अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ
सो सब ब्रत करिकै उपकारा ❋ श्यामकर्ण पूजा संचारा
साठि सहस्र पुत्र दल संगा ❋ परदक्षिण करि छुटा तुरंगा

दो० नाना देश जु सब जिते, कहत होय बिस्तार ।
सुरपति मन्त्र किये तब, यज्ञखण्ड अनुसार ॥

जाना इन्द्र मोर पद लेई ❋ तासे मन शङ्का भै तेई
इन्द्र आय तब मायाधरी ❋ श्यामकर्ण को लैगे हरी
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं ❋ बांधे अश्वजान कोउ नाहीं
लगी समाधि मुनी नहिं जानी ❋ गये इन्द्र निज स्वर्ग स्थानी
तब सब बहुतो खोज तुरङ्गा ❋ कहँ गो अश्व भयामन भङ्गा
तब पद चिह्न तुरंगम जाई ❋ देखा अश्व मुनी के ठाई
तब सब खोदे पुहुमी माहा ❋ साठि सहस्र कुदारिन जाहा
देखा सबहि चोरकरि जाना ❋ मारा लात धरेव जो ध्याना

दो० छूटा ध्यान जु मुनीको, क्रोधित नयन निहार ।
साठि सहस्र समेत तो, भये पलक मो क्षार ॥

सगरभूप तब सुनि यह बाता ❋ साठि सहस्र जो पुत्र निपाता
पुत्र शोक राजा तब कियऊ ❋ महा खँभार यज्ञ नहिं भयऊ
जेठ पुत्र असमञ्जस आवा ❋ राजा ताके बेगि पठावा
कपिल मुनीसे कहौ प्रणामा ❋ हे मुनि कवन कीन हौ कामा
तब असमञ्जस गये पताला ❋ जहँवां ध्यान कपिलमुनिपाला
जाय प्रणाम कीन तेहि छनमें ❋ कपिल मुनी हर्षे तब मनमें
तब भाषा जो मुनी बिचारा ❋ बिना दोष मोहिं लातहि मारा
ताहि जरे सब राजकुमारा ❋ हम नहिं जानें अश्व तुम्हारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ले घोड़ा तुम जाहु कुमारा ❋ करौ जाय तुम यज्ञ सँचारा
करि परणाम अश्व तब लाये ❋ अवध नगर में तुरत सिधाये

दो० करी यज्ञ पूरण तबै, जो है तासु बिधान ।
सगरनृपति अति हर्षिमन, दीना द्विजको दान ॥

यहि परकार यज्ञ तब भयऊ ❋ कितने दिवस बीतिकै गयऊ
सगरनृपति परलोकहि गयऊ ❋ असमञ्जस राज्यहि मन दयऊ
बन्धुबर्ग कस हो उद्धारा ❋ यह चिन्ता राजा अनुसारा
तब बशिष्ठ से पूछा जाई ❋ तिन गङ्गा को नाम बताई
ब्रह्म कमण्डलु में सो अहै ❋ करिकै ध्यान मुनी तब कहै
करिकै तप जो आनै पारहु ❋ कुल समूह तुरतै उद्धारहु
सुनिकै राय हेमञ्चल गयऊ ❋ तहां जाय तपमहँ मन दयऊ
देवबाणि को भा संचारा ❋ तुम से नाहीं होब भुआरा
तोर पुत्र के सुत अवतारा ❋ पुत्र तोर तौ करै उधारा
तब सुनि राजा गृह फिरगयऊ ❋ अंशुमान ताको सुत भयऊ

दो० असमञ्जस को अन्तभा, अंशुमान भे राव ।
केतिक दिन ये राज्यकरि, सन्तति नाहीं पाव ॥

सुनी बात यह जबहिं भुआरा ❋ मोरे सुतसे बंश उधारा
मोरे पुत्र भया तौ नाहीं ❋ ताते राज्य छोड़िकै जाहीं
राजा गये छोड़िकै राजै ❋ हेमाचल में तप के काजै
कै तप भूप तजे तब प्राना ❋ सोते धर्म रानि सब जाना
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी ❋ तब बशिष्ठ से कहा बखानी
बंश नाश ह्वैगो मुनिराऊ ❋ सुनि बशिष्ठ तब कहा उपाऊ
सूर्यबंश हित चिन्ता करै ❋ तब बशिष्ठ ज्ञानहि हितकरै
बाम बाम करु रति शृंगारा ❋ होई पुत्र करब उपकारा
रानी गृह आई तब ताहा ❋ रति शृंगार कीन बिन नाहा

दो० रहस गर्भ आशा भई, सुनै जाय भव त्रास ।
दशममास के अन्त में, पुत्र जन्म परकास ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस्थिविहीन मांस कै देहा ❋ लै गमनीं बशिष्ठ के गेहा
मुनि कह जहां सुमारग आहीं ❋ अष्टबक्र मुनि न्हानकोजाहीं
सो मारग में राखु कुमारा ❋ होब अस्थि तौ सुनौ भुआरा
बालक लैकै तहां रखाई ❋ दूनों रानी तब गृह जाई
अष्टाबक्र मुनी तौ आये ❋ पन्थ में बालक देखन पाये
जाना मुनी करै अपमाना ❋ बिस्मय हर्ष बचन अनुमाना
अस्थिरहित बाके जो देहा ❋ अधिक बङ्क हो कहा सनेहा
जो बिन अस्थी देह सँवारा ❋ होइहौ दिव्य अस्थि सुकुमारा
कहत तासु तनु अस्थी भयऊ ❋ दै आशिष मुनि तब गृहगयऊ
रानी देखि अङ्क में लाऊ ❋ देखा बोल बशिष्ठहि ठाऊ

दो० हर्षित ह्वै मुनिनाथ तब, धर्यो भगीरथ नाम।
बालदशा के अन्त तब, सुनहू सकल बखान॥

पितृलोक केरा उपकारा ❋ वह सब कैसे होय उधारा
तबहिं भूप जो चाहै जाना ❋ मुनि बशिष्ठ तब जाय तुलाना
पाद्य अर्घ्य दैकर परणामा ❋ पितर उधारन पूजहि कामा
तब बशिष्ठ भाष्यो यह बानी ❋ गङ्गाबिनु नहिंगति अरुजानी
राजा कह गङ्गा कत अहैं ❋ नारद सन बशिष्ठ तब कहैं
साँचे राव जु नारद आये ❋ गङ्गा मर्म पूछि मन लाये
नारद कहा सुनौ हो राऊ ❋ मैं यक दिन गो इन्द्र के ठांऊ
पूछेव गङ्गा महिमा ताहीं ❋ इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं
इन्द्र देश मैं आयों ताहा ❋ यम राजासों पूछे आहा
उनहुँ कहा मैं जानत नाहीं ❋ यह तौ मर्म ब्रह्म का चाहीं

दो० पूछा बिधि से जायकर, कह्यो शम्भु पहँ जाव।
शिवपहँ तब हम जायके, पूछा भेद बताव॥

शिव कह तब गङ्गाका नामा ❋ नाशत पाप करै मनकामा
जाहु बिष्णु पहँ तुम मुनिराऊ ❋ गङ्गा भेद तहां सब पाऊ
तब बैकुण्ठ बिष्णु पहँ गयऊ ❋ महाभेद मैं पूछत भयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिष्णुकहा सुन चितधरि नारद ❋ गये बिष्णु पहला गुणशारद
सुने बिष्णु यह मनोकामना ❋ बड़ आश्चर्य चित्तमहँ आना
गङ्गा की महिमा जु बखाना ❋ बिष्णुरूप भे बिष्णु सुजाना
नारद गये जहां तौ राऊ ❋ पूछा महिमा गङ्गा नाऊ
देखा रूप शंख कर चारी ❋ चक्र गदा अरु पद्म सवारी
पूछा बात कहा तिन जानी ❋ चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानी
श्वान योनि में भा अवतारा ❋ बिना अहार महादुख भारा

दो० गङ्गाजल यक मुनी लै, जातरहे मग माहिं ।
और एक मुनि मांगेऊ, भेट भई तब ताहिं ॥

तेहि मारग पर परे हजारहि ❋ बिप्र बिप्र दोउ हर्षितकारहि
कुशसे जल मुनि मुनिपर डारा ❋ परा बूंद यक भाग्य हमारा
बूंद एक जल तनुमहँ डारा ❋ तासे रूप यह भयो हमारा
तब बैकुण्ठ माहँ हम आये ❋ नारद राजहि बात सुनाये
सो गङ्गा आने जो पावहु ❋ पितर सबै यमपाश छुड़ावहु
राजा सुनत बात बिस्तारा ❋ मन्त्री सौंपा राज्य भँडारा
माता पाहँ बिदा तब भयऊ ❋ मन्त्र एक भागीरथ दयऊ
प्रथम मेरुपर गे तप कीन्हा ❋ यम अरु नियममाहिं मनदीन्हा
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❋ मन्त्र एक भागीरथ कियऊ
सिद्ध करौ यह मन्त्र नरेशा ❋ पैहौ गङ्गा कर उपदेशा

दो० यही मन्त्रके सिद्ध हित, तब गे चलि कैलास ।
कथारूप गङ्गा अहै, महाशोक परकास ॥

बारह बर्ष तपस्या कीन्हा ❋ पूरण आश शंभु बर दीन्हा
गङ्गा अर्थ भगीरथ कहै ❋ कहारहै मोहिं पाहँन अहै
बारह बर्ष रहे निरहारा ❋ गङ्गा नहिं पाये करतारा
तबहिं बिष्णु का तप संचारा ❋ बारह बर्ष रहे निरहारा
नाना अस्तुति कै परकासा ❋ कह प्रसन्न हरि राजा पासा
चारी भुजा गरुड़ असवारा ❋ भागीरथ तब करै बिचारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हौ तुम भक्त हमारे राजा ❋ करौं तोर मनबाञ्छित काजा
चलहू संग हमारे तहाँ ❋ पुरवैं आशा गङ्गा जहाँ
हरि आगे पाछे जु भुवारा ❋ आये तब ब्रह्माके द्वारा
अर्घ्य पाद्य गङ्गा तब दीन्हा ❋ वही नीर चरणोदक लीन्हा

दो० शीश माहँ चरणोदक, ब्रह्मा डाख्यउ ताहिं ।
शिवआराधन कीन्ह्यउ, ब्रह्मकमण्डलु माहिं ॥

कन्या हरि से कहा बिचारा ❋ तुम्हरे चरण मोर अवतारा
बिष्णु कहा गङ्गा तव नामा ❋ पापबिनाशन जग बिश्रामा
जाहु मृतकपुर करौ न बारा ❋ तब गङ्गा बाणी संचारा
जगके पाप हमहिं निस्तरैं ❋ मेरे पाप कहौ को हरैं
तोरे पाप हरैं हरि कहहीं ❋ साधुस्नान करैं तौ दहहीं
नरको पाप जन्तु तौ खाई ❋ वही जन्तु नर भक्षै आई
जासुके पाप तासुके पाहा ❋ सत्यस्नान तोरि गति आहा
सुनि जलरूप गङ्ग भइ तबहीं ❋ आज्ञा हरिकी पाई जबहीं
भागीरथ जो अस्तुति सारा ❋ माता पितृन कर उद्धारा
ब्रह्मा हरि को कर परणामा ❋ लै गङ्गाजल राजा ग्रामा

दो० आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार ।
पहुँचे तौ कैलास महँ, शङ्कर देखि बिचार ॥

जाना गङ्गा चलीं भुआरा ❋ जटा तीन तौ तहां पसारा
जटामाहँ गङ्गा शिव लयऊ ❋ महाशोर भागीरथ कियऊ
हरि तुम बड़ दानी जु कहाये ❋ मैं सेवक नर दुख बहु पाये
तब गङ्गा तुमतौ म्वहिं दीना ❋ अब बटपारी कै तुम लीना
शिवसमाधि हरि हर्षितभयऊ ❋ माँगु माँगु बर बोलनलयऊ
राजा कहा कष्ट बहु लाये ❋ महाकष्ट से गङ्गा पाये
छुटी समाधि शंभु सुख भयऊ ❋ माँगु माँगु बर शंकर कहेऊ
जो तुम राखा दीजै दाना ❋ मोरे पितृ होयँ परित्राना
अस्तुति बहुत भगीरथ कीना ❋ तब गङ्गाको शंकर दीना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कै प्रणाम आये तब राऊ ❋ शंख बजावैं हर्ष उपाऊ

दो० हेमगिर्द दुर्गम शिखर, अटकी गङ्गा ताह ।
पर्वत लाँघि न पारहि, रोवैं तब नरनाह ॥

गङ्गा कहा पुत्रसे बाता ❋ इन्द्रपास अब जाव सख्याता
ऐरावत हस्ती लै आवो ❋ देहिमार्ग करि पारहि जावो
राजा गये इन्द्र के पाहा ❋ अस्तुति बहुत करै नरनाहा
बारहवर्ष तपस्या कीन्हा ❋ तबहिं इन्द्र यह आज्ञा दीन्हा
माँगु माँगु बर सुन नृप बाता ❋ ऐरावत दीजै सुरत्राता
इन्द्र कहा तुम गज पहँ जावो ❋ जासे मनवाञ्छित फल पावो
भागीरथ तब गज पहँ आये ❋ सबबृत्तान्त गजहि समुझाये
पर्वतमें करि दीजै द्वारा ❋ हमलै गङ्गा जायँ सो पारा
गज भाषा हमसे नहिं होई ❋ होय काज बच राखै कोई

दो० जो गङ्गा रति देइ मोहिं, देव तबै करिपार ।
नातौ हमसे होय नहिं, अन्ते खोजु भुआर ॥

सुनिकै राव गये फिरि ताहाँ ❋ गङ्गा जाना अन्तर माहाँ
रोदन भूप करौ केहि हेता ❋ आनहु गज तुम जाय सचेता
कहहु हस्तिसे बचन हमारा ❋ सहै हमार जु तीन प्रहारा
तौ हम देवें रतिको दाना ❋ जाहु पुत्र मम करौ बखाना
तब राजा फिर गजपहँ आये ❋ यह बृत्तान्त कह्यो समुझाये
सुनिकै गज तब परम अनन्दा ❋ भागीरथ कह सुन शुभदन्दा
तीन तरङ्ग हमार सहै ❋ रति संग्राम हमारा लहै
भाषे गज सो सहब तरङ्गा ❋ तब तरङ्ग परहास्यउ गङ्गा
एक लहर तब गजगै साहा ❋ दुःखित महाजीव अवगाहा

दो० गये बूड़ि गज तत्क्षणहि, पहिले लेत तरङ्ग ।
दूसरि लहरजो जलउठी, सहिनहिंसक्योगयन्द ॥

तब गज सुस्त भयो जलमाहीं ❋ गङ्गाकी अस्तुति तब काहीं
मैं पापी माता सुनु बाता ❋ राखु प्रहार शरण सख्याता

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तव महिमा जानैं सब देवा ❋ करत चरण तुम्हरे नित सेवा।
गङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी ❋ गर्भहिसे तव यह गति जानी
देव सबै मम राह उपाई ❋ सुनतै गज तब उठा हो राई
दन्तराय पर्वत गज ताहाँ ❋ भये रन्ध्र तब पर्वत माहाँ
चलिकै पार भये गजधारा ❋ गजने इन्द्रलोक पगु धारा
आगे चले भगीरथ राऊ ❋ पाछे गङ्गा चार सिधाऊ
जह्नु मुनीश करैं तप जहाँ ❋ पहुँचे जाय अचम्भित तहाँ

दो० जाना मुनि हैं गङ्ग यह, आय मृत्यु अस्थान।
परम हर्ष मन महामुनि, कर गङ्गा कहँ पान॥

भागीरथ बिस्मय तब भयऊ ❋ तब मुनीशकी सेवा कियऊ
मुनिके पाहँ बिष्णु को धाये ❋ बारह बर्ष तु तहाँ गँवाये
कोटिन बिप्र गऊ दे दाना ❋ नहिं गङ्गासम तीर्थ बखाना
बिष्णु आय हर्षित तब भयऊ ❋ मुनिकर ध्यान तुरत छुटिगयऊ
बिष्णु कहा तब मुनि सों बाता ❋ भागीरथ जगमहँ सख्याता
गङ्गा देहु बहुत सुख पाये ❋ पितृलोक उद्धारन आये
तब मुनि ज्ञान बिचारे तहाँ ❋ मैं गङ्गा देउँ केहि बिधि महाँ
मुत्र अशुद्ध मुख जूठा होई ❋ कहै उच्छिष्ट जगत सबकोई
जाँघ चीरिकै गङ्ग निकारा ❋ जाह्नवि नाम ताहि सों धारा
अन्तर्धान बिष्णु भे जाहीं ❋ भागीरथ हर्षित मन माहीं
आये देश माहिं तब राऊ ❋ माता पहँ धै गङ्गा लाऊ

दो० गङ्गा पाहीं कहा यह, गङ्गा कहि गोहराव।
तबहीं माता तव तहाँ, और ध्रुव बैठाव॥

माता पाहँ भगीरथ गयऊ ❋ मध्य नगर हर्षित तब भयऊ
कहेउ बात माता के पाहा ❋ गङ्गाका बृतान्त सब काहा
तहां देव गङ्गा परवाहा ❋ जाते जाय बिष्णुपुर माहा
यहि प्रकार पूजत हौ राऊ ❋ अभ्यन्तर अब सुनौ उपाऊ
गङ्गा नाम गऊ इक रहै ❋ एक अहीर पुकारत रहै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गा गङ्गा नाम पुकारा ❋ गङ्गा चली सहस ह्वै धारा
भागीरथ कहते तब बाता ❋ यह का कीन कहौ म्वहिं माता
तब गङ्गा राजा से कहेऊ ❋ तुम्हरा संशय अब नहिं रहेऊ
तव पितृनको करौं उधारा ❋ पाछे हम तारब संसारा
भागीरथ प्रसन्न मन माना ❋ भीष्म धर्मनृप पाहँ बखाना

दो० कन्दु नाम जो ब्राह्मण, कहे प्रेतगण माहँ ।
चन्द्रभाग नहिं प्राप्ती, परम हर्ष मनमाहँ ॥

महापातकी जग में अहै ❋ गङ्गा परसत पाप न रहै
धन्य भाग्य जो लेत तरङ्गा ❋ पाप नाश अरु निर्मल अङ्गा
कोटिन विप्र गऊ दे दाना ❋ नहिं गङ्गाके नीर समाना
सब तीर्थन में गङ्ग प्रधाना ❋ श्रुति स्मृति भागवत बखाना
यहि प्रकार द्विज कथा सुनाये ❋ पञ्च बिमान स्वर्ग से आये
प्रेतरूप तज ताही बारा ❋ बिद्याधर स्वरूप संचारा
स्वर्गलोक भा तेहि कर ग्रामा ❋ गङ्ग महात्म्य सुनत मनमाना
जाके चरण गङ्ग अवतारा ❋ ते हरि सब दिन सङ्ग तुम्हारा
तजौ शोक सब धर्म नरपती ❋ हरि सहाय संतत तुम गती
सत्य सत्य जानौ परमाना ❋ यही देवपति श्रीभगवाना

दो० यहि प्रकार से भीष्मजी, सुनते पाप नशाय ।
गङ्गा केर प्रभाव कह, धर्मराज समुझाय ॥
सर्व नदी में गङ्गा, देवन महँ भगवान ।
छन्द माहँ गीता सही, धर्म न दया समान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिगङ्गोत्पत्ति
वर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्मराज सुनहू परमाना ❋ भीषम भाषे अर्थ पुराना
महादेव सेवा मन लावै ❋ सो कैलासहि बास सुपावै
शिवका व्रत चतुर्दशी अहै ❋ धन्यरु धन्यरूप हर कहै
चरत नाम व्याधा संसारा ❋ सो कैलास माहिं पगु धारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौन रूप सुनते बिस्तारा ❋ भीष्म कहा सुन नृपति भुआरा
पशुन मारिकै बन से लावै ❋ मांस बेंचिकै दिन भुगतावै
एक दिवस तौ उपबन जाई ❋ संध्या भइ यक जन्तु न पाई
महाशोच बाढ़ा मन माहीं ❋ कौने रूप आज गृह जाहीं
स्त्री सुत पुत्री उपवासा ❋ सब तौ अहैं हमारी आसा
यह चिन्ता ब्याधा के भयऊ ❋ महाशोच करता तब लयऊ

दो० कौन रूप गृह गमन करूँ, सबही परे उपवास।
यह चिन्ता ब्याधा मनहिं, तनुके माहँ प्रकास॥

महादेव को व्रत दिन सोई ❋ महाशोक ब्याधा के होई
तब मन में यह करै बिचारा ❋ धिग धिग जगमें जन्म हमारा
ताते यह कानन के माहीं ❋ रहौं आज हम गेह न जाहीं
यहँ पर बाघ सिंह बहु आहै ❋ जन्म अन्त अब ब्याधाकाहै
श्रीफल तरु पचठी सो रहै ❋ ब्याधा हृदय शोच बहु गहै
कर्म अङ्क पै सदा सहाई ❋ कर्म के हेतु दुःख सुख पाई
जो बिधनाहै लिखा लिलारा ❋ दूसर कौन मिटावनहारा
कर्महिसे सुख होत जो राई ❋ पावै सुख अनेक सुखदाई
सदा चित्तसों मेटत सोई ❋ लाख उपाय करै जो कोई

दो० ब्याधा रहिगो राति तहँ, श्रीफल तरुके डार।
महाभयंकर निशि तहाँ, भये महाअन्धार॥

क्षुधावन्त अतिही दुख पाई ❋ रोदन करत हृदय दुखदाई
अर्ध रात्रि से शंकर आये ❋ बृषभ चढ़े गौरी सँग लाये
भूत प्रेत जो दैत्य अपारा ❋ सिंगी डमरु झाँझ मञ्जारा
ताही बनमें भा उजियारा ❋ सोई तरुवर परश भुआरा
तहँ बैठे हर उमा जो जाई ❋ ब्याधा है कउ मर्म न पाई
करते नृत्य महेश्वर तहाँ ❋ रोवै ब्याधा सो तरु महाँ
आंसुपात बहते हैं ताई ❋ कर्म भयो ताके फलदाई
एक श्रीफलपत्र प्रमाना ❋ आंसू भीजे रोवत नाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पवन तेज पत्ता सो झरे ❋ महादेव के शिर पर परे

दो० महादेव हर्षित बदन, कहैं बात तौ लीन।
ले बरदान आय अब, पुष्पाञ्जलि जो दीन॥

उतरि रूख से ब्याधा पड़ा ❋ हाथ जोरिकै सम्मुख खड़ा
शिव प्रसन्न होकर बर दीन्हा ❋ राजा श्री धन्यवन्ता कीन्हा
अन्तकाल सो गो कैलासा ❋ भोलानाथ भक्त परकासा
ब्याधा तब जानै नहिं पाये ❋ दैवी गति पत्ता हरि पाये
जगत माहँ करिकै सुख नाना ❋ अन्तकाल कैलास पयाना
भक्तबछल तौ शिव भगवाना ❋ ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना
रण में जो शत्रू संहारा ❋ सोय भवानी बर संसारा
राजा धर्म भक्ति मन धरौ ❋ शोक दुःख राजा परिहरौ
शोक करौ तौ गहि है नाहीं ❋ बचन मोर राखौ मन माहीं
केवल करौ हरी को ध्याना ❋ पावहु राजा पद निर्बाना

दो० तजौ शोक ह्वै राजा, चितवो राधारौन।
यहि प्रकार भीषम कहा, तौ कीन्हो है मौन॥

राजा सुना यही सब बानी ❋ तजा शोक तबहीं परमानी
देव मुनी सब जो अस्थाना ❋ सहित पाण्डवन श्रीभगवाना
प्रति बासर तौ राजा जाई ❋ सुना ज्ञान पितामह नाई
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन ❋ सुनतै पाप होत हैं खण्डन
सो चरित्र संक्षेपहि कहे ❋ पुनि बिस्तार बहुत तो रहे

दो० भीषम बर्ण्यो धर्म सो, सुनो सत्य मम पाह।
महापाप सब नाशहीं, सुनते श्रवणन माह॥
नाना शास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान।
राजा हृदय राख यह, सत्य बचन परमान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

वैशम्पायन गावन लागे ❋ जनमेजय श्रोता के आगे
यहिबिधि बहुतदिवसजबगयऊ ❋ उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Vamnasi. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना ❋ अब तजि देह करीय पयाना
धर्मराज के पाहँ बखाना ❋ राजा सुनौ बात परमाना
शरशय्या बहुते दुख सहेऊ ❋ उत्तरायण सूरज अब भयऊ
अब शरीर तजिहौं परमाना ❋ धर्मराज से कहत बखाना
अबतो कली होब परवाना ❋ सन्तत भूप विचारो ज्ञाना
एही कृष्ण देव परवाना ❋ अन्तकाल गति श्रीभगवाना
हरिको छोंड़ि रहहु जनि राजा ❋ कहौं बात तोरे भल काजा
अब तोहार जो होय उधारा ❋ भीषम भाषे पाहि मुवारा

दो० अब बैकुण्ठै आव हरि, शून्य देव अस्थान।
केतिक दिनके अन्तमें, गमनब श्रीभगवान॥

नृपति युधिष्ठिरसे यदुराई ❋ बहु प्रकार भीषम समुझाई
हरिते भीषम कह्यो बखाना ❋ सर्वलोकपति हो भगवाना
कृपा करो हम तजें शरीरा ❋ विश्वरूप तुमहीं यह बीरा
बहु प्रकारते अस्तुति कीन्हा ❋ तुरत शरणतब कृष्ण हि दीन्हा
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना ❋ तादिन भीषम कस्उ बखाना
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा ❋ सातो तीरथ कहे बिचारा
श्रीपति और जो पांचो भाई ❋ सबै पितामह लिये बोलाई
विदा भये सबते प्रभु गाये ❋ तजे शरीर परम सुख पाये
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये ❋ विष्णु दूत सँग लेने आये
रथ ऊपर भीषम बैठाये ❋ स्वर्गलोक की राह सिधाये

दो० परम हर्ष नारायण, भीषम तजो शरीर।
गये बैकुण्ठ विष्णुपुर, परम अनन्दित धीर॥

धर्मराज तब रोदन कीन्हा ❋ क्रियाकर्म सबकर मन दीन्हा
कीन्हा कर्म बेद व्यवहारा ❋ शास्त्र शान्ती कर संचारा
श्रीपति कहे राव सन बानी ❋ पुरी हस्तिनापुर महँ आनी
श्रीपति संग करहु सब काजा ❋ करहु राज्य हर्षित मन राजा
मोरी भक्ति करो मन लाई ❋ पुहुमी राज्य करो सुखदाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमको बिदा दीजिये राई ❋ हमहुँ द्वारका देखैं जाई
हर्षित राजा करै बखाना ❋ गति हमारि तुमहीं भगवाना
मैं अनाथ तुम जनके साथा ❋ अस्तुतिकरत बहुत नरनाथा
पायो बँधुसँग द्रौपदि रानी ❋ मिलेउ सबै सँग शारँगपानी
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई ❋ भये बिदा तु चले यदुराई

दो० सात्यकि रथको साजेऊ, श्रीपति भे असवार।
सबते बिदा होय हरि, द्वारावति पगुधार॥

हर्षित गये देव भगवाना ❋ द्वारावती नगर परमाना
आये द्वारावति यदुराई ❋ यदुवंशी हर्षित सब आई
धर्मराज राजा सुख करही ❋ सदा धर्म धर्महि हित धरही
नगरलोग सब तहँके सुखी ❋ स्वप्नहु तहँ सुनिये नहिं दुखी
पुत्र समान प्रजा प्रतिपाला ❋ धर्मरूप श्रीधर्म भुवाला
एही भांति राज्य नृप करही ❋ धर्मराज शोकित मन रहही
सजन सखा बन्धूजन जेते ❋ गुरु गोत्र कुल भीषम तेते
तिन सबको मारे निज हाथा ❋ यही शोच शोचै नरनाथा
प्रजालोग तब करैं अनन्दा ❋ जनु चकोर पाये निशि चन्दा
भारत कथा पाप क्षय जाई ❋ पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई

दो० बैशम्पायन कथा करि, पुरहस्तिना प्रकाश।
जाते पावहिं परमपद, होत पापको नाश॥
भारत कथा पुण्य फल, करैं नारि नर गान।
शान्तिपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेशान्तिपर्व-
एयष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

इति श्रीशान्तिपर्व समाप्तम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Digitized by eGangotri Library, BJP, Jammu, An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

अश्वमेधपर्व

—:o:—

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

श्रीराजाधिराज महाराज युधिष्ठिरजी ने श्यामकर्ण घोड़ा छोड़कर समस्त दिशाओं तथा उपदिशाओं के राजाओं को जीता था। उसी अश्वमेध-यज्ञ की कथाएँ वर्णित हैं।

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा ॥

अश्वमेधपर्व ॥

दो० गौरीनन्दन के चरण, बिनवौं बारम्बार ।
जिनके चिन्तन करतही, बिघ्न होयँ जरिछार ॥
पाराशर ऋषिके तनय, ब्यासदेव भगवान ।
आचारज हौ भार्तके, करौ नाथ कल्यान ॥
महरानी बानी सुमिरि, करौं कथा सुखदान ।
अश्वमेध भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

बैशम्पायन कह्यो बुझाई ❋ यज्ञ कथा सुनु कुरुकुलराई
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका ❋ भीषम भये जबहिं परलोका
कह्यो व्यास सन धर्मकुमारा ❋ मारा गोत्र पाप बहुभारा
यज्ञरु योग जाप का कर्मा ❋ कैसे पाप छुटै हो धर्मा
सुनी बात तब कहै ऋषेशा ❋ पातक खण्डब तोर नरेशा
परशुराम कहँ सब जगजाना ❋ हने मातु आज्ञा पितु माना
माता द्विज बध हत्या पाये ❋ अश्वमेध तब यज्ञ बनाये
यज्ञ कियो तब पातक हरे ❋ तुमहूं करौ यज्ञ अनुसरै
रामचन्द्र दशरथ कुमारा ❋ रावण बंश कियो संहारा
बिश्वशर्मा को सो सुत अहै ❋ ब्रह्म बधन तो रामहि गहै
बाजी यज्ञ कियो प्रभु रामा ❋ द्विज बध छूटि भये निष्कामा

दो० अश्वमेध तुमहूं करौ, गोत्रहि बध दुख हेत ।
धर्मराज यह सुना जब, भाष्यो बात सचेत ॥

यज्ञममर्थ जो धन मम नाहीं ❋ कैसे यज्ञ होय जगमाहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फल बिहीन तरु पक्षि न जाई ❋ धन बिहीन तस पुरुष कहाई
बिन धन धर्म कहौ कस होई ❋ धन से हीन पुरुष जगजोई
कहै व्यास सुनु धर्मकुमारा ❋ अर्थ चहौ सुनु बात हमारा
पूर्व मरुत नृप यज्ञ बनाये ❋ सुर नर मुनिजन हर्ष बढ़ाये
दिये दान बहु बिधि परकारा ❋ किये अयाचक मग्न अपारा
लै न सके तो तजि नृप गयऊ ❋ गिरिहिमाल्य के बीचहि रह्यऊ
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानौ ❋ सुरतकरी धर्मराज बखानौ
द्विज धन लैकै यज्ञ बनाओं ❋ यज्ञकरत तौ अपयश पाओं
व्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा ❋ सो सब द्विजन नहीं अधिकारा
पूर्व दैत्य बन राजा गयऊ ❋ ताही मारि देव धन लयऊ

दो० सोई धन हरिचन्द्र नृप, दीन्ह्यो मुनि को दान।
पाछे बलि राजा भये, सब धन ताकोजान॥

जो बलि राजा दीन्ह्यो दाना ❋ पाछे परशुराम जग जाना
कश्यप मुनि को दीन्ह्यो दाना ❋ ऐसे धन राजा को जाना
दान देय खाही बिलसाही ❋ ताको धन्य मुनी यश गाही
सो धन लै करु यज्ञ भुआरा ❋ कछू दोष नहिं लागु तुम्हारा
राजा धर्म व्यास सन कहही ❋ यज्ञ अश्व मोरे नहिं अहही
सुना व्यास तब कह अस बाता ❋ आनहु अश्व आह सख्याता
भद्रावति पुर हय है राई ❋ यौवनाश्व राजा के ठाई
दश करोड़ दल हयको रक्षक ❋ यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक
ताही जीति अश्व लै आओ ❋ धर्मराज ते बात जनाओ
भीम आदि बान्धव हैं जेते ❋ करि संग्राम थके नर तेते

दो० मेघवर्ण वृषकेतु है, बालक औ पितु शोक।
तासन कछु न भाषिये, दोष देय सब लोक॥

सुनिकै भीम कहत अस बानी ❋ करबे यज्ञ अश्व धन आनी
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा ❋ आनबधन अश्वहु जगकाजा
हमैं सहाय जगत के तारण ❋ केहिते डरिय कौन सो कारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा कह्यो सुनहु सब भाई ❋ कत अकेल बाजी बहुताई
दश करोड़ दल राख तुरङ्गा ❋ कैसे भीम करब रणरङ्गा
सुनि कै बृषकेतू तब कहैं ❋ आज्ञा देहु संग हम रहैं
आनो भीम के साज तुरङ्गा ❋ यौवनाश्व को करिये भङ्गा
सुनते राजा कहे बखानी ❋ कैसे कह न सको यह बानी
तोरे पितहिं धनञ्जय मारा ❋ देखे मुख मन दुःख हमारा
तब बृषकेतु कहेउ सुन राजा ❋ कीन्हेउ भला कर्णको काजा

दो० सभा मांझ द्रौपदि कहँ, पराभाव सो दीन्ह ।
एहि पापते तजेउ तनु, उन्हके गति तुम कीन्ह॥

पार्थ बाण से गङ्ग बहाये ❋ ताते पिता धर्म पद पाये
सुने भीम राजा सुख पाये ❋ मेघबरन तब बात सुनाये
भीम संग हम जैहैं तहां ❋ भद्रावती नगर है जहां
के प्रण तेज अश्व लै आऊं ❋ धर्मराज को यज्ञ कराऊं
भीम पितामह कर्ण को नन्दन ❋ करि रण उत्कट हेतु तुरङ्गन
सुनि हर्षित भे धर्मकुमारा ❋ यज्ञ भेद बहु पुण्य प्रकारा
केते बिप्र कौन मति दाना ❋ केते घृत साकल्य प्रमाना
ब्यास कहे मुनि बीस हजारा ❋ लाख कलश है घृत बिस्तारा
तीन लाख साकल्यहिं लाई ❋ इन्दु कुँदन के अश्व बनाई
पीत पूँछ अरु बपु है श्यामा ❋ चैत्र पूर्णतिथि कीजै कामा
कञ्चन पत्र बांध शिर ताही ❋ अपने नाम यज्ञपति चाही

दो० हम छोड़ा है अश्व यह, जगतबीर कोउ और ।
घड़ी एक जो गहि रखे, जीतब सो प्रण ठौर ॥

करे अश्व लघुशङ्का जहाँ ❋ सहसन गऊ दान दे तहाँ
एकहिं सेज द्रौपदी साथा ❋ साधन योग करो नरनाथा
यावत अश्व गेह नहिं आवे ❋ तावत भोजन बिप्र करावे
बीचहि खड्ग राखिकै राजा ❋ बर्ष दिवस सोवत यह साजा
नारी पामे मन जब जाई ❋ वही खड्ग चितवे तब राई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अश्वमेध इन्द्रहि मन धारा ❀ स्त्री व्रत पाली नहिं पारा
सत्यकेतु नाम सुनु राऊ ❀ अश्वमेध कै सबै नशाऊ
ब्यास गये कहि अपने थाना ❀ राजा करहिं हरी को ध्याना
सुनत राउ तब चिन्ता करै ❀ कठिन बरत आशा हरि धरै
अभ्यन्तर आये भगवाना ❀ द्वारपाल ते कहे बखाना

दो० कहो जाय राजा पहँ, आये श्री भगवान ।
सबै जानिकै आनहीं, कीजे जाय बखान ॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं ❀ तुव अटकाव कि आज्ञा नाहीं
कहे कृष्ण रात्री परमाना ❀ कौने मत हम करों पयाना
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ ❀ जहाँ धर्मनृप स्थित रहेऊ
सुनि सब बचन बन्धु हरषाये ❀ सहित द्रौपदी बाहर आये
राजा हरिहिं कियो परणामा ❀ चारों बन्धु मिले सुखधामा
बिहँसि बचन तब राजा कहेऊ ❀ चिन्ता मम तव मनमहँ अहेऊ
तेहि पीछे रानी मिलि आई ❀ भे अचिन्त तब पांचो भाई
पञ्चाली भाषेउ परतक्षक ❀ सदा भक्त के हौ तुम रक्षक
सभामाहँ तौ लज्जा तारा ❀ दुर्बासा छल मन बिस्तारा
सदा भक्त के रक्षा कारण ❀ जगतमाहँ कीन्हे तनु धारण

दो० सावधान बैठे सबै, परम हर्ष मन कीन्ह ।
धर्मराज नृप समझिकै, हरि सन भाषे लीन्ह ॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा ❀ नाथ आयके दर्शन दीन्हा
अश्वमेध हम कियो बिचारा ❀ जो आज्ञा करे नन्दकुमारा
कृष्ण कहे राजा के पाहीं ❀ जगत माहँ ऐसा को आहीं
जाना मन्त्र भीम यह दीन्हा ❀ उदर भरे कर उद्यम कीन्हा
दैत्यनिसंग भयो मन भङ्गा ❀ कामी बिबश सदा सुखरङ्गा
जगत माहिं जो धर्म न जाना ❀ महाबीर भक्तन परमाना
जानत नाहिं आप बल वाहीं ❀ भक्त बीर सब देखा नाहीं
रामचन्द्र यज्ञहिं निरमाये ❀ चतुरङ्गिणि को संग पठाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुक्रमती इक ग्राम अहेउ ❋ तहँ श्रुतदेव सु राज रहेउ
तहँ भा युद्ध महाभयकारी ❋ पुनि बालक दोउ शरननमारी

दो० चारौं बन्धु बधे रण, कुश लव दोऊ बीर।
तुम कत यज्ञ करे चहो, अस भाषे यदुबीर॥

को तुम को तौ राजा कारेहै ❋ को रण रचे अश्व को हारेहै
सुनिकै भीम कहे तब बानी ❋ अस कस भाषहु शारँगपानी
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहे ❋ पाछे मन्त्र राजपहँ कहे
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं ❋ जगत माहँ कोउ दूसर नाहीं
तुम तौ स्त्री के बश अहौ ❋ कहते कहत मौन है रहौ
धर्मराजको भ्रम उपजायो ❋ काहित काज नाश करवायो
अश्वमेध हम तो अब करिहैं ❋ ऐसे गोत्र पाप से तरिहैं
जेते बीर जगत में आहीं ❋ मारों सबहिं महारण माहीं
तुम हमार सर्बस हौ स्वामी ❋ तुम सबही के अन्तर्यामी
सुनिकै कृष्ण हर्ष तौ पाये ❋ तब राजा ते हर्ष सुनाये

दो० धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात बिचार।
पातक जो है गोत्रबध, हम कहँ देहु भुआर॥

मैं तो पाप करौं सब भारी ❋ सुखते कीजै राज्य अघारी
भीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा ❋ पातक कौन आपु हरिलीन्हा
पाप देहिं जो तुम कहँ राजा ❋ पाप बढ़ अरु धर्म अकाजा
महापुण्य मख में जन होई ❋ तुम कहँ राजा देहैं साई
हम तो यज्ञ करौं प्रण ठानी ❋ करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी
बृषकेतू जो कर्ण कुमारा ❋ मेघवर्ण सुत प्राण अधारा
मारे संग दोय जन जैहैं ❋ श्यामकर्ण अश्वहि लै ऐहैं
करौं युद्ध घाड़ा लै आवौं ❋ तो बृकओदर नाम धरावौं
धन जन सब जा है नृप पाहीं ❋ लाओ शीघ्र हस्तिपुर माहीं
तुम सहाय जा हौ जगतारण ❋ तौ हम भरमहिं कौने कारण

दो० सुनिके हर्षे जगतपति, हर्षित अज्ञा दीन्ह।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An Open Access Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अश्वमेध परवेश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह ॥
जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार ।
सोई यज्ञहिं कियेते, नर उतरै भवपार ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाअश्वमेधयज्ञकथनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनि राजा सो कथा प्रमाना ❋ यामिनिगत तौ भये बिहाना
मेघबर्ण अरु भीम सयाना ❋ बृषकेतू सँग कीन्ह पयाना
कुन्ती नृप औ श्रीभगवाना ❋ इन सब कहँ कीन्ह्यो परणामा
माता कछु सम्भर लै दीन्हो ❋ भीमसेन तब भोजन कीन्हो
पुनि माता कछु औरौ लाई ❋ मेघबर्ण कहँ दीन्ह बनाई
भीम कहे तब श्रीपति पाहीं ❋ यौवनाश्व नगरी हम जाहीं
तुम रक्षा परजाके करहू ❋ सत्यबात यह हियमहँ धरहू
यह कहिके तीनों जन जाई ❋ यौवनाश्व पुर चले चलाई
तीनोंजना एक सँग भयऊ ❋ यौवनाश्व के नगरहिं गयऊ
ग्राम रन्ध्र पुष्करणी अहे ❋ बन उपबन चहुँदिक् लहलहे
पुष्पबाटिका देखेउ जाई ❋ अनुदिन पुष्प रहे तहँ छाई

दो० पर्बत एक बिराजही, यज्ञ वेद पुर माहँ ।
तेहि पर पै तीनों जने, बैठे हय के चाहँ ॥

जब दोपहर दिवस भयो भारी ❋ जलके हेतु अश्व पगुधारी
श्यामकर्ण हय चालत आवै ❋ चँवर छत्र तापर छबि छावै
बहुतक दल हय गज सँगआये ❋ देखत मेघबर्ण मन लाये
भीमसेन सन कह तब बाता ❋ आनों जाइ अश्व सख्याता
यह कहिकै तुरन्त चलिभये ❋ गिरि ते कूदि भूमिपर गये
राक्षस माया तब सञ्चारा ❋ दश दिशि करे लागु अँधियारा
पाहन बर्षा अधिक चलावे ❋ देखत लोगन दिशा गमावे
देवन दूत स्वर्ग महँ गयऊ ❋ इन्द्र पाहँ जाकर सो कहेऊ
दैत्य एक माया परकाशा ❋ जगत चहत है करै बिनाशा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दूसर दूत सुरेश पठाये ❋ मेघवर्ण ताकहँ समुझाये
दो० मेघवर्ण पुनि कहेउ तब, तुम शङ्कित केहि काज ।
लै जैहैं हम अश्व तहँ, यज्ञ धर्म के राज ॥
सुनत दूत गवने सचुपाये ❋ सुनासीर कहुँ जाय जनाये
तब सुरेश मन माहँ थिराना ❋ अश्वमेध सुनि बहु हर्षाना
मेघवर्ण माया संचारा ❋ सबैबीर भये शिथिल अपारा
पीछे अश्व हरण तौ करे ❋ पर्बत माहँ तबै पगु धरे
देखे भीम हर्ष तब माने ❋ राजा दल सब शङ्का आने
राजा दल देखे तब धाये ❋ रणहित तब बृषकेतु सिधाये
बीरन काहँ हांक जब दीन्हा ❋ सबै बीर यह भाषण कीन्हा
काह नाम औ जात तोहारा ❋ भाषो सो तो पाहँ हमारा
तब बृषकेतू कहा रिसाई ❋ युद्धसमय का जाति जनाई
युद्ध करो या भागो भाई ❋ नाम गोत्रका करो सगाई
तब बीरन सब रण दिय ठाना ❋ महामार नहिं जात बखाना
दो० महाबली सब सैन्य के, जल सम बर्षत बान ।
कोटि बीर शर बर्षते, कर्ण कुँवर पर आन ॥
कर्णपुत्र तब बाण चलाये ❋ अगणित बीरहिं मारि गिराये
भगे बीर पुरुषारथ देखे ❋ जुझे बीर रण माहँ अलेखे
राजा आगे परी पुकारा ❋ हरे अश्व सबदल कहँ मारा
राजा कह केता दल अहै ❋ हम ते रण करने को चहै
धावन कहै देवता अहे ❋ तीन बीर हैं सब तब कहे
यौवनाश्व नृप तहँ पगु धारा ❋ और चले सब राजकुमारा
कर्णपुत्र को राजा देखा ❋ बालक देखत अचरज पेखा
राजा पूछा कहो कुमारा ❋ नाम गोत्र का अहै तुम्हारा
सुने कुँवर तब कहे बिचारा ❋ कश्यप गोत्ररु कर्णकुमारा
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❋ तातें अश्व लेन कहँ आये
दो० यौवनाश्व तब अस कहेउ, तुम्हरे तौ रथ नाहिं ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. A Digitized Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रथ लीजे मम पास से, करौ युद्ध रणमाहिं ॥
कर्णपुत्र तब कियो बखाना ❋ मैं ता रथ को युद्ध न जाना
राजा पुनि कह बाण चलैये ❋ कर्णपुत्र जब यह सुनिपैये
तुम तौ बृद्ध अहो मैं ज्वाना ❋ तुम्हरे दरश करैं भगवाना
राजा तब दश बाण चलाये ❋ कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये
तीन बाण राजा को मारा ❋ निष्फल कीन्हे सबै भुवारा
अर्धचन्द्र कुँवर तब छाँटे ❋ चमर छत्र गुण शारँग काटे
तब राजा धनु पै गुणधारा ❋ साठ बाण बृषकेतुहिं मारा
रक्तबाण कुँवर तब लीन्हा ❋ तीनबाण रिसकरितजिदीन्हा
सारथि अश्व तजे तब प्राना ❋ जूझे राजा सब दल जाना
अग्नि पवन के बाण चलाये ❋ उड़िकै सैन्य अग्नि जरिजाये
दो० तब राजा दूसर रथहि, क्रोधित भये सवार ।
बारिबाण तब भूपमणि, तहँ जो कीन्ह प्रहार ॥
ताते सब जो अग्नि बुताये ❋ बाणन कर्णकुमार छिपाये
भीमसेन तब देखन पाये ❋ राजा महामार मन लाये
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये ❋ काटे बाण बिलम्ब न लाये
पुनि इकबाण नृपति कहँ मारा ❋ क्रोधित भो मद्रेश भुवारा
मारेउ बाण कर्णसुत राऊ ❋ कर्णपुत्र को मूर्च्छा आऊ
देखत भीम क्रोध तब पाये ❋ गहि कर गदा क्रोध करि धाये
काह कहब राजा से जाई ❋ यह काहि भीम चले रिसिआई
धावत जँघते पवन चलाये ❋ हय गज रथ पैदल उड़िआये
बहुतै गज तहँ भये सँहारा ❋ जैसे पुण्य पाप करु छारा
यौवनाश्व राजा को मारा ❋ ताको नाम सुबेश उदारा
दो० कुँवर हांक तब भीम को, क्रोधित दीन्हे आय ।
गदा घाव तब धायके, मारे भीम घुमाय ॥
क्रोधित भीमसेन फिरि आये ❋ सो बैरी फिर भूमि गिराये
तब सुबेश आपुहि सम्भारा ❋ भीमसेन को भूमि पछारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीम उठाये गजते भारे ❀ राजपुत्र के ऊपर डारे
मास्यो गदा घाव भूवारा ❀ पड़े दोऊ रणभूमि मँझारा
राजा सुनो कथा अब आगे ❀ कर्णपुत्र मूर्च्छा ते जागे
यौवनाश्वको मारेउ बाना ❀ पाँचशरन नृप मोहन जाना
राजा मूर्च्छि परे मैदाना ❀ कर्णपुत्र धर्मी करि ज्ञाना
फेंट छोड़ि अंबर तब लीन्हा ❀ कुँवरपवन तब राजहिं कीन्हा
भाषे जो भक्ती भगवाना ❀ तब राजा पाये जिवदाना
यहि अंतर राजा तब जागे ❀ रहु रहु कै तब बोलन लागे

दो० चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावै पौन।
देखत लज्जा भै नृपहिं, तब कीन्हा है मौन॥

गल लगाय तब भेंटा राऊ ❀ तुमहीं हमरे प्राण बचाऊ
सदा धर्मरत तव पितु रहे ❀ ताके पुत्र कुँवर तुम अहे
दश राज धन प्राण तुम्हारा ❀ धन्य बीर हौ धर्मभुवारा
अवरन केर नहीं है कामा ❀ चलो तहाँ जहँ भीम सुठामा
यौवनाश्व औ कर्णकुमारा ❀ भीम पाहँ हर्षित पगुधारा
कहे जाय तव युद्ध न काजू ❀ कर्ण पुत्र मोहिं रक्षेउ आजू
प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना ❀ तेहि पीछे दीन्हो जी दाना
अब है युद्ध काज कछु नाहीं ❀ चलो भीम मेरे पुर माहीं
अब मेरे मन उपजो ज्ञाना ❀ दर्शन जाय करब भगवाना
दश सहस्र गज श्वेत जु अहै ❀ लै चल मखको राजा कहै

दो० राजा यज्ञ अरम्भेऊ, रक्षक हम को जान।
यहि प्रकारते प्रीतिकरि, पुरकहँ कीन्ह पयान॥

प्रीति भये तव देखन पाये ❀ मेघवर्ण हय लेकर आये
नगर माहँ कीन्हा परवेशा ❀ अन्तःपुर पठयउ सन्देशा
आरति लै रानी करु साजा ❀ अन्तःपुर आये तब राजा
राजा कहेउ सुनो तुम रानी ❀ बीरन कै आरति करुआनी
कण्ठ शत्रु जो अहै हमारा ❀ सो तुम राखौ कर्णकुमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पीछे भोजन पान कराये ❋ हर्ष होय तब भोजन पाये
शयन किये रैनी सख्याता ❋ गत भइ रैन भये परभाता
राजा उठि सेवकहि हँकारा ❋ सबते बात कहे संचारा
दल साजन को कर मनलाई ❋ हर्षित सब हस्तिनपुर जाई

दो० नगर लोग सब जेते, दल बल हय गज साथ ।
नगरहस्तिनापुर चले, जहँ दर्शन यदुनाथ ॥

यौवनाश्व माता के पासा ❋ जाय तहां ये बचन प्रकासा
माता चली हस्तिपुर माहीं ❋ कृष्णचरण जेहि पुर में आहीं
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❋ देश देशके नृप सब आये
सदा धर्म रूपहि भगवाना ❋ जाके चरण गंग परमाना
माता चली ताहि पुर माहीं ❋ जहँ बस नृपति युधिष्ठिर आहीं
तब माता कहि बचन सुनाई ❋ कारण कवन तहां को जाई
देव धर्म नाहीं हम जाना ❋ वहां गये मम देश नशाना
गोरस अन्न दासि अरु दासा ❋ गये हमारे होहिं बिनासा
कृष्ण युधिष्ठिर का दोउ करै ❋ आपन पुर मिथ्या परिहरै
जैसे गृह वेहैं मन दीन्हा ❋ तैसे गृह आपन मन कीन्हा

दो० बहु प्रकार राजा कहे, माता मानति नाहिं ।
बांधि मातुकहँ राव तब, डारा डोली माहिं ॥

यहि प्रकार माता कहँ लीन्हा ❋ तब राजा चलबे मन दीन्हा
पुरके लोग चले सब संगा ❋ नृपति सदल हिय भरे उमंगा
नाना धन जेते गज श्वेता ❋ चले हर्ष नृप सबै सचेता
दिवस पांच तो पंथ सिराना ❋ देश हस्तिना आय तुलाना
योजन एक हस्तिपुर रहे ❋ राजा पाहँ भीम तब कहे
इहां रहो राजा तुम भाई ❋ मैं यह बात जनावों जाई
यह कहिके बृकओदर गयऊ ❋ हस्तिनपुर प्रबेश तब भयऊ
चारों बन्धु और भगवन्ता ❋ इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता
भाषेउ तब यह बात बुझाई ❋ अश्व सहित लै आयउँ राई

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा सब परिवार समेता ❋ आयउ तव दर्शन के हेता
दरश चहै प्रभु तव चरननकी ❋ जो तारन सुर नर मुनिजनकी
तब नृप धर्मराज अस कहई ❋ जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई
जाय कहहु अस बयन हमारा ❋ तुम द्रुत नवसत करहु शृँगारा
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा ❋ बेगि चलहु कुन्ती के सङ्गा
भीमसेन द्रौपदि पहँ गये ❋ पूछा कुशल कहन तब लये
कहेउ भीम सब कुशल हमारा ❋ यौवनाश्व मम पुर पगुधारा
परभावति अति नैन बिशाला ❋ सखी सहस दश संग रसाला

दो० तुरै सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हारो चहत हैं, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी ❋ बिनु शोभा नहिं देव मुरारी
यहि अवसर नहिं यादवराई ❋ बिन गोबिन्द नहिं शोभापाई
तब द्रौपदी भीम से कहीं ❋ हैं हरि निकट गये नहिं अहीं
इतना कहत भीम संचरा ❋ नृप के पास देखि हरि खरा
चले नृपति सँग चारो भाई ❋ कृष्ण सहित शोभा बनिआई

दो० रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गजचढ़ि चारो भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई ❋ हय बनाय कर अग्र चलाई
धर्मराज पै अमरहुँ जाई ❋ हनि निशान जनु घन घहराई
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा ❋ महि डगमगै सैन्य के भारा
आय दोउ दल सम्मुख भयऊ ❋ धर्मराज तब देखन लयऊ
देखि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❋ बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा

दो० यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार ।
तब रथ से उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञभाषाकृतेयौवनाश्वधर्मराज-
सम्मिलनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

वैशम्पायन ऋषि तब आगे ❋ जनमेजय सन भाषन लागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यौवनाश्व तब लागे पाऊ ❋ आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ
तुम मोरे जस चारो भाई ❋ मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई
धरहु चरण उर करु सेवकाई ❋ जेहि ते अहै हमार बड़ाई
यौवनाश्व प्रणयउ यदुबीरा ❋ भो निर्मल बहु शुद्ध शरीरा
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा ❋ नृप द्रौपादि सह आशिष दीन्हा
धन्य तुरँग सब कहबे लयऊ ❋ जेहिहित तीन बीर चलिगयऊ
धनि बृषकेतु कर्ण के बारा ❋ जेहिते भयउ सुखी परिवारा

दो० भावी धन्य हमार यह, पूर्व पुण्य बहु कीन्ह।
दर्शन नयन जुड़ानेउ, नृप ये कहिबे लीन्ह॥

पुनि अर्जुन माद्रीसुत आये ❋ भे अनन्द तब अङ्कम लाये
अर्जुन नमस्कार तब कियऊ ❋ अस्तुति करि तब कहबे लयऊ
हमरे तुम जस धर्म नरेशा ❋ अतिगरिष्ठ जस देव महेशा
धन्य देश जहँ बसहु नरेशा ❋ हमरे भाग्यन यहां प्रवेशा
पुनि सुबेश पारथ से मिलेऊ ❋ करि प्रणाम तब कहबे लयऊ
बृषकेतू कै कीन्ह बखाना ❋ जिनके करत मिले भगवाना
धन्य तहां जहँ बस भगवाना ❋ बिनु गोबिन्द नर प्रेतसमाना
हरिसम दुर्लभ और न आना ❋ कृष्ण नाम नित करौ बखाना

दो० धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार।
मिलकर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार॥

पहर एक जब निशिगत भयऊ ❋ दामोदर तब कहबे लयऊ
सुनहु बात इक धर्मकुमारा ❋ यज्ञ काज सब करहु सँभारा
चैत पूर्णिमा गत भो राजा ❋ अब बिशाख शुभ करिये काजा
मासबिशाखतिथिनौमी धरिया ❋ तेहि दिन यज्ञ अरम्भन करिया
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❋ यज्ञ करे कहँ यह व्यवहारा
कच्चा सुबरन सागर पारा ❋ तहँ रह बीभीषण भूआरा
तहँवां से कञ्चन जो आवे ❋ सोइ यज्ञ के यतन करावे
तब राजा मन बिस्मय कीन्हा ❋ कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा सब परिवार समेता ❋ आयउ तव दर्शन के हेता
दरश चहै प्रभु तव चरननकी ❋ जो तारन सुर नर मुनिजनकी
तब नृप धर्मराज अस कहई ❋ जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई
जाय कहहु अस बयन हमारा ❋ तुम द्रुत नवसत करहु शृँगारा
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा ❋ बेगि चलहु कुन्ती के सङ्गा
भीमसेन द्रौपदि पहँ गये ❋ पूछा कुशल कहन तब लये
कहेउ भीम सब कुशल हमारा ❋ यौवनाश्व मम पुर पगुधारा
परभावति अति नैन बिशाला ❋ सखी सहस दश संग रसाला

दो० तुरै सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हारो चहत हैं, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी ❋ बिनु शोभा नहिं देव मुरारी
यहि अवसर नहिं यादवराई ❋ बिन गोबिन्द नहिं शोभापाई
तब द्रौपदी भीम से कहीं ❋ हैं हरि निकट गये नहिं अहीं
इतना कहत भीम संचरा ❋ नृप के पास देखि हरि खरा
चले नृपति सँग चारो भाई ❋ कृष्ण सहित शोभा बनिआई

दो० रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गजचढ़ि चारो भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई ❋ हय बनाय कर अग्र चलाई
धर्मराज पै अमरहुँ जाई ❋ हनि निशान जनु घन घहराई
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा ❋ महि डगमगै सैन्य के भारा
आय दोउ दल सम्मुख भयऊ ❋ धर्मराज तब देखन लयऊ
देखि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❋ बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा

दो० यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार ।
तब रथ से उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञभाषाकृतेयौवनाश्वधर्मराज-
सम्मिलनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

बैशम्पायन ऋषि तब आगे ❋ जनमेजय सन भाषन लागे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यौवनाश्व तब लागै पाऊ ❀ आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ
तुम मोरे जस चारो भाई ❀ मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई
धरहु चरण उर करु सेवकाई ❀ जेहि ते अहै हमार बड़ाई
यौवनाश्व प्रणयउ यदुबीरा ❀ भो निर्मल बहु शुद्ध शरीरा
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा ❀ नृप द्रौपदि सह आशिष दीन्हा
धन्य तुरँग सब कहबे लयऊ ❀ जेहिहित तीन बीर चलिगयऊ
धनि बृषकेतु कर्ण के बारा ❀ जेहिते भयउ सुखी परिवारा

दो० भावी धन्य हमार यह, पूर्ब पुण्य बहु कीन्ह।
दर्शन नयन जुड़ानेउ, नृप ये कहिबे लीन्ह॥

पुनि अर्जुन माद्रीसुत आये ❀ भे अनन्द तब अङ्कम लाये
अर्जुन नमस्कार तब कियऊ ❀ अस्तुति करि तब कहबे लयऊ
हमरे तुम जस धर्म नरेशा ❀ अतिगरिष्ठ जस देव महेशा
धन्य देश जहँ बसहु नरेशा ❀ हमरे भाग्यन यहां प्रबेशा
पुनि सुबेश पारथ से मिलेऊ ❀ करि प्रणाम तब कहबे लयऊ
बृषकेतू कै कीन्ह बखाना ❀ जिनके करत मिले भगवाना
धन्य तहां जहँ बस भगवाना ❀ बिनु गोबिन्द नर प्रेतसमाना
हरिसम दुर्लभ और न आना ❀ कृष्ण नाम नित करौ बखाना

दो० धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार।
मिलकर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार॥

पहर एक जब निशिगत भयऊ ❀ दामोदर तब कहबे लयऊ
सुनहु बात इक धर्मकुमारा ❀ यज्ञ काज सब करहु सँभारा
चैत पूर्णिमा गत भो राजा ❀ अब बिशाख शुभ करिये काजा
मासबिशाखतिथिनौमी धरिया ❀ तेहि दिन यज्ञ अरम्भन करिया
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ यज्ञ करे कहँ यह व्यवहारा
कच्चा सुबरन सागर पारा ❀ तहँ रह बीभीषण भूआरा
तहँवां से कञ्चन जो आवे ❀ सोइ यज्ञ के यतन करावे
तब राजा मन बिस्मय कीन्हा ❀ कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब अर्जुन अस कहबे लागे ❀ राजा कहहु हमारे आगे
जेहि कारण तुम बिस्मय करहू ❀ सो आयसु मेरे शिर धरहू
दो० तब राजा मन हर्षेउ, हँसिकै बीरा दीन्ह ।
अर्जुन लीन्हों बिहँसिके, चरण जुबन्दै कीन्ह ॥
कृष्णहिं किय प्रणाम करजोरी ❀ होहु सहाय जगतपति मोरी
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ बेगि जीत फिरु पण्डुकुमारा
तब अर्जुन दक्षिणदिशि गयऊ ❀ तहँ यक राक्षस भेटत भयऊ
भाष्यो दैत्य भाजि कहँ जासी ❀ मारों तोहिं मेलिके फाँसी
तब अर्जुन तिष्ठित ह्वै कहई ❀ कौन बीर तैं डांटत अहई
तब दानव अस कहै प्रचारी ❀ राय बिभीषण के रखवारी
तब अर्जुन किय मन अनुमाना ❀ मारों दैत्य करों यश माना
दैत्य शैल शिर ऊपर धावा ❀ सम्मुख अर्जुन सपदि चलावा
अर्जुन सपदि बाण कर लीन्हा ❀ शैलकाटि तो दुइ टुक कीन्हा
दैत्य भाजि लङ्का कहँ गयऊ ❀ हनुमत सों भेटत तब भयऊ
कह दानव सुनु पवनकुमारा ❀ इक क्षत्री बड़ आउ जुझारा
तहँवां सों भागत मैं आवा ❀ तुम्हरे शरणहि जीव बचावा
दो० मैं जानत हौं रामहहिं, की तौ लक्ष्मण आहि ।
भगि आये हम तुम पहां, जाहु खोजलेहु ताहि ॥
यह सुनि पवनतनय मन हर्सा ❀ चलहु साथ नहिं कीजे अर्सा
कह दानव सुनु पवनकुमारा ❀ हम नहिं जाउब साथ तुम्हारा
शैल एक मैं उन पर डारा ❀ धनुष टँकोर कीन्ह वे छारा
तिनके डरसे भगि मैं आवा ❀ कैसे मुख मैं उनहिं देखावा
बन्दि चरण दानव गो तहां ❀ बीभीषण नृप बैठत जहां
तबकहिबचन ताहि समुझावा ❀ बीभीषण सुनि आनँद पावा
तब हनुमत निजमन अनुमाना ❀ पवनतनय तौ पवन समाना
दो० पवन तनय तब ऊछला, उदधिपार चलिआय ।
सेतु बांध जहँ बांधेउ, खड़े हुये पुनि जाय ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हनुमत कोपि कहे अस बाता ❋ कौन बीर यह आहि बिधाता
पूछ्यो आये तुम केहि कारन ❋ तब कह पारथ लाउ न बारन
कह अर्जुन सुनिये कपि बीरा ❋ हम अर्जुन आहहिं रणधीरा
ब्रह्म सहोदर बध हम कीन्हा ❋ चिन्ता सोइ युधिष्ठिर लीन्हा
बोलेउ राज्य छोड़ि बन जाहीं ❋ भारी पाप भये हम पाहीं
अगुनत गये रात सब बीती ❋ चिन्ता नृपहिं भयउ नहिं रीती
व्यास ऋषै तब पूछै लीन्हा ❋ कारण ताहि यज्ञ उन कीन्हा
तब राजा दोऊ कर जोरा ❋ सुनहु व्यासमुनि बिनती मोरा
गुरू सहोदर बध हम कीन्हा ❋ भारी पाप हमहिं बिधि दीन्हा
कहा व्यास सुन धर्म सुराजा ❋ त्रेता कियउ राम मखसाजा
रामचन्द्र त्रेता महँ भयऊ ❋ पूर्विलकथा कहन तब लयऊ
रामचन्द्र रावण बध कीन्हा ❋ ताकारण यज्ञहिं चित दीन्हा
ऐसन यज्ञ तुमहुँ जो करहू ❋ तब यहि पापन ते उद्धरहू
व्यास ऋषय अस कहिकै गयऊ ❋ तेहिके सेवक बनचर रह्यऊ
रामचन्द्र तब किय अनुमाना ❋ केहिबिधिउतरबजलधिमहाना
तीनि दिवस सागर तट रहेऊ ❋ तऊ न पथ सागर सन लहेऊ
तब कोपेउ लक्ष्मण बलबीरा ❋ खैंच श्रवण लगि धनु पै तीरा
कर धरि जाम्बवन्त समुझावा ❋ स्वामी उदधि आपु चलिआवा
सुनि लक्ष्मण मन धीरज भयऊ ❋ ब्राह्मणरूप सिन्धु चलि अयऊ
ऐ स्वामी का अवगुण मोरा ❋ केहि हित बाण शरासन जोरा
हौं सेवक तुव आदि गुसांई ❋ तुम मारहु मम काह बसाई
तुम जो मोकहँ दीन्ह बड़ाई ❋ उतरहि कपि तो का प्रभुताई
नल अरुनील जो कपिकर बीरा ❋ औ सुग्रीव आहिं रणधीरा
नल अरु नील खेल लरिकाई ❋ वाही समय ब्रह्मऋषि आई
तिन अशीश दीन्हा मनलाई ❋ सिन्धु शिला तोहिं दे उतराई
सो नल नील आहिं तुवसाथा ❋ आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा

दो० सो अशीश तिन पाये, कीजै कापर रोख।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो आज्ञा इन दीजिये, बांधहिं सागर चोख ।
तब हनुमत सुग्रीव बुलावा ❋ तुरतआय तिन प्रभु शिरनावा
तब कपि कहा सबहिं समुझाई ❋ गिरि पहार तुम आनहुजाई
तब सब मिलि पहार लै आये ❋ सेतु बांध तब तुरित बँधाये
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❋ चले बीर निर्भय मन कीन्हा
यहि मिसु सागर बांधेउ बीरा ❋ तब तुव लङ्क जरे रणधीरा
सेतुबन्ध चढ़ि जाय न देऊं ❋ मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं

दो० रामचन्द्र कर सेवक, पवनपुत्र हनुमान ।
रण जीतउ कौरवदल, देखौं तुव अनुमान ॥

अर्जुन बाण हाथ कै लीन्हा ❋ तब हनुमन्तहि उत्तर दीन्हा
तोहिं राम अतुलितबल दीन्हा ❋ तौ समर्थ मम खोजे लीन्हा
तुम हनुमन्त पवनसुत जाये ❋ बलअनुमान न मोसन आये
कहु सागरहिं करौं जरि छारा ❋ कहु बाणन ते बांधौं सारा
कहहु मारि पौरुष तुव चूरौं ❋ की तोहिं मारि सिन्धुमहँ बूरौं
कोपि बचन जब अर्जुन कहेऊ ❋ हनुमत तब सम्मुख ह्वै रहेऊ

दो० कोपि पूंछ तब फेरा, हनुमत बीर रिसान ।
दोऊ बीर बिचक्षण, दोऊ चतुर सयान ॥

तब अर्जुन धनु शर संधाना ❋ हनुमत सन भाषेउ परमाना
एकहिं बाण समुद्रहिं पाटौं ❋ तब निजनाम धनञ्जय राखौं
तब हनुमन्त कोपि कह बैना ❋ देखब बाण तोर भरि नैना
मोर बांध तैं चढ़िकै देखा ❋ तोर बाण मोरे केहि लेखा
तोरौं बाण तौ हनुमत बीरा ❋ नातरु सेवक हौं रणधीरा
जो तोरे जिय अस मन देऊ ❋ तब अर्जुनहूँ प्रतिज्ञा लेऊ
दोनों बीर पैज जब किये ❋ डोलेउ नारायण तब हिये
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता ❋ जहां हुते अर्जुन हनुमन्ता

दो० यज्ञविषम जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान ।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे, भक्तिवश्य भगवान ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊठे कृष्ण द्वारका बासी ❋ सबै कृष्ण घट आहिं निवासी
एक रूप राखे मख माहाँ ❋ दूसर देह सिन्धु तट माहाँ
खैंचेउ बाण शरासन ताना ❋ मारेउ शर पारथ सन्धाना
दोऊ बीर प्रतिज्ञा कीन्हा ❋ कृष्णचरण तब सुमिरे लीन्हा
उदधि पाटिगो आरहिंपारा ❋ कह अर्जुन सुन पवनकुमारा
जो यह पाव तोरु हनुमाना ❋ तौ न छुवों मैं धनु गुन बाना
कृष्णचरित्र तबै यह कीन्हा ❋ बांध के तरे पीठ प्रभु दीन्हा
तब हनुमन्त कोपि कह बाता ❋ देखब बांध तोर मैं भ्राता

दो० हनूमान बहु कोप करि, उछल बांध बलबीर।
जहँवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहिं शरीर॥

तब हनुमत लज्जित ह्वै गयऊ ❋ दौरि चरण अर्जुन कहँ नयऊ
यहां बहुत जो कञ्चन पावों ❋ तब मैं हस्तीनगर सिधावों
कह हनुमत यह केतिक बाता ❋ सुबरन आनि देहुँ मैं भ्राता
तब अर्जुनकहँ धीरज दयऊ ❋ कहि यहबचन पवनसुत लयऊ
वही ठाम अर्जुनहि बिठावा ❋ आज्ञा लै हनु लङ्कहि आवा
तत्क्षण खोजे कञ्चन मेरू ❋ कञ्चन खोज लेत चहुँ फेरू

दो० खोजतबीतेउ तीनदिन, हनुमत मन अनुमान।
क्रोधित भे तब हनुबली, लङ्का सबै सकान॥

यह जब भेद बिभीषण पावा ❋ जहां पवनसुत तहँवां आवा
अञ्जलि जोरि बीनती कीन्ही ❋ कवन काज प्रभु आयसुदीन्ही
तब हनुमन्त कहैं सुनु बीरा ❋ कच्चा सोन देहु रणधीरा
कहा बिभीषण अज्ञान पूता ❋ तुम आपुही कीन्ह अजगूता
सगरी लङ्का खोरि जराये ❋ तहँ सो कञ्चन रहे न पाये
एक बात सुनहू हनुमाना ❋ रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना

दो० हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर वृथा कोहाहु।
जिउ हमार तुव आगे, जैसे शशि को राहु॥

यह तो बात पवनसुत सुन्यऊ ❋ परमज्योतिके सुमिरण कियऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाणी यह तब भई तुरन्ता ❋ काहे कोपेउ तुव हनुमन्ता
प्रथम लात कंगूरन मारा ❋ सो खसि परेउ समुद्र मँझारा
सो कञ्चन समुद्र महँ अहई ❋ मांगि लेहु यह बाणी कहई
तबहिं बिभीषण बिदा करावा ❋ तबहीं चला पवनसुत आवा
डाटि दर्प जो कह हनुमन्ता ❋ देहु रत्न नहिं बाँधु तुरन्ता
ब्राह्मणरूप उदधि प्रगटाना ❋ हनुमतसे छल कियो महाना
हम नहिं जानहिं कञ्चन मेरू ❋ काहे कोपि कहत चहुँफेरू

दो० हम नहिं जानहिं हनुमत, कञ्चन मेरु सुमेरु ।
जो घट मोरे होहि तौ, खोजि लेहु चहुँफेरु ॥

कहि यह सिन्धु हँसो मदमाता ❋ तब हनुमन्त कोपि कह बाता
जैसे लङ्का मैं जो डाहा ❋ तैसे आज समुद्र उछाहा
पवनपुत्र तब मैं हनुमन्ता ❋ नातो कञ्चन देहु तुरन्ता
नातो रारि होइ यहि ठाई ❋ देखिहो आजु मोरि मनुसाई
तब हनुमत लंगूर उठावा ❋ अवलोकत मीनहुँ डरखावा
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमन्ता ❋ बिधी बिष्णु तब कांपु तुरन्ता

दो० देहु मोहिं कञ्चन नहीं, कह अस पवनकुमार ।
ब्रह्मा बिष्णु जु रक्षहीं, तौ मारौं परचार ॥

इतनी बात पवनसुत करिया ❋ सिन्धु डरे मत्स्यहु खरभरिया
कह राघव सुनु सिन्धु गुसांई ❋ इहां मृत्यु हम सब कर आई
देहु सोन सब के जी रहई ❋ राघव अस समुद्र से कहई
कह समुद्र जो है घट तोरे ❋ आनि देहु कस लावहु भोरे
उगलि मीन तब कञ्चन दीन्हा ❋ करन उठाय सिन्धु तब लीन्हा
पवनपुत्र के आगे आवा ❋ करिबिनती हनुमत समुझावा
मैं नहिं जानों धर्म दोहाई ❋ क्षमा करहु अपराध गोसांई
राघव मत्स्य कहां तो पावा ❋ सोमोहिंआपुहिआनिमिलावा

दो० तबहिं पवनसुत हर्षे, कञ्चन लिये सुमेरु ।
आनि दीन्ह अर्जुन कहँ, अङ्कमाल किय फेरु ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब हनुमत अर्जुन सन कहेऊ ❀ हम सेवक अब राउर अहेऊ
जहँ सुमिरहु आवैं तोहिंपासा ❀ अरु हनुमत यहबचनप्रकासा
जैसे रामचन्द्र के काजा ❀ बिमुखहोहिं तौ मातुहिंलाजा

दो० तब अर्जुन सम्बोधेउ, सुनहु बीर हनुमान।
हमहुँ तुरत अब जाहिंगे, जहँवाँ श्रीभगवान॥

अङ्कमालिका अर्जुन किये ❀ पुर हस्तिन कहँ मारग लिये
हनूमन्त तब उहवाँ गयऊ ❀ तब अर्जुन हस्तिनपुर अयऊ
कीन्ह प्रणाम पार्थ तब जाई ❀ कृष्ण लीन्ह तब अङ्कमलाई
सुनि कुन्ती तब हर्ष कराई ❀ द्रौपदि सँग लै आरति लाई
राय युधिष्ठिर अङ्कम कीन्हा ❀ सहदेव नकुलचरणशिरदीन्हा

दो० पांचौ पाण्डव मुदितमन, कृष्ण युधिष्ठिर राय।
धन्य धन्य तुम अर्जुन, यज्ञ सम्बोधे आय॥

सुन राजा अब कथा प्रमाना ❀ पतिव्रता परपुरुष न जाना
धर्मराज नृपती सख्याता ❀ पूछे ब्यास ऋषी ते बाता
धर्म अधर्म पुण्य अरु पापा ❀ लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा
चारि बर्ण के धर्म प्रमाणा ❀ अपने धर्म केरि निर्माणा
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र बईसा ❀ चारों बर्ण धर्म परदीसा
जो जन जाप न होम प्रमाणा ❀ अपने धर्म करै निर्माणा
षट कर्मन बिप्रन परमाना ❀ इह सब बिना बिप्र कत जाना
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा ❀ क्षत्री धर्म याहि परकारा
कृषी बणिज बैश्यहु कर जाना ❀ सेवक धर्म शूद्र परमाना

दो० यहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव।
रानी धर्म जो राजा, तोहिं कहौं अब राव॥

पति आज्ञा सनद्ध रह जोई ❀ परपुरुषन से रहे अगोई
सासु ससुर की सेवा करे ❀ बीथिन माहिं सोचि पगु धरे
स्त्री धर्म इहै परकारा ❀ अब अधर्म जो सुनो भुआरा
कर्मन छहो हीन द्विज जोई ❀ क्षत्री बंश और जो कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आपन धर्म जो बैश्य न जाना ❋ दूसर कर्म करे परमाना
शूद्र गर्भ उत्तम तै करै ❋ इहै अधर्म रूप संचरै
ये गृह कहँ नारी जो जाई ❋ बिना काज सूनो हो राई
पति के आज्ञा नाहिं जो माना ❋ अपर पुरुष ते बात बखाना
बिधवा होके करे शिंगारा ❋ जानहु सब अधर्म के सारा
माता पिता पुत्र नहिं सेवा ❋ चञ्चल पुरुष नारि जो भेवा

दो० इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म उपाय।
पुण्य पाप औ राजा, सुनो सत्य मनलाय॥

गुरु को शिष्य जान सम हरी ❋ छेद बेद मन माहँ न करी
है गुरु ब्रह्मा रूप समाना ❋ भिन्न भाव वाको नहिं जाना
सदा पवित्र सुकीरति रहै ❋ माता सम परनारिहि कहै
भिक्षुक नाहीं होत निराशा ❋ कूप तड़ाग बाग परकाशा
येही पुण्य जगत महँ सारा ❋ व्यास कहे सुनु पाण्डुकुमारा
पाप कर्म कै सुनो बिचारा ❋ गुरु को आनहिं भाव निहारा
हृदय नाहिं सत सुकृत प्रकाशा ❋ परनारी ते सदा बिलाशा
भिक्षुक जन निराश फिरजाई ❋ ज्ञान धर्म हृदये नहिं राई
तनु अपवित्र सदा जो रहे ❋ मिथ्या बचन सन्त से कहे
गुरू द्रोह पावे न प्रसादा ❋ यह सबते है परम बिषादा

दो० यह सब पातक जगतहै, परधन हरु जो कोय।
सदा पाप मन बसत है, राजा सुनिये सोय॥

लक्ष्मी को भाषों अस्थाना ❋ सदा पवित्र जौन नर जाना
सात बर्ष कन्या जु कहावै ❋ ताके दान धर्म फल पावै
पतिब्रता नारी जो होई ❋ सदा पवित्र रहति है सोई
द्विज बैष्णव अरु गुरुजन माना ❋ देवालय बहु कर निर्माना
काहू की निन्दा नहिं करहीं ❋ ताके गृह लक्ष्मी संचरहीं
अब सुनु राजा कथा बिछेदा ❋ जहां लक्ष्मी तहाँ न भेदा
जाके सदा जज्ञा मन भावे ❋ सुरापान में चित्त रमावे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परदारन रति सबै सुहावे ❋ धातुनाम जो सबै चुरावे
पुस्तक तेल घीव अरु धाना ❋ मूल पुष्प फल काठगमाना
अमवस्या संक्रांति सुहाव ❋ एकादशी नारि मनलावे
दो० ग्रहणसमयअरुश्राद्धदिन,तियसँग भोग सुहाय।
देव गुरू नहिं मानहीं, तहाँ न लक्ष्मी जाय॥
ब्यास कहे राजा के पाहा ❋ यज्ञअश्व आनहु नरनाहा
धर्मराज भीमहि हँकराये ❋ जाहु द्वारका हरिहित भाये
आनहु कृष्ण सहित परिवारा ❋ द्वारावति मधुपुरी मँझारा
सबहि संग लै आवो जाई ❋ राजा भीमहि कहा बुझाई
भीमसेन तब हर्ष प्रमाना ❋ तब द्वारावति कियो पयाना
पहुँचेजाय कृष्ण के द्वारा ❋ जेंवत थे तहँ नन्दकुमारा
बहुबिध भोजन परसे आनी ❋ पवन करत चारों पटरानी
जाम्बवती अरु रुक्मिणि बाला ❋ सतिभामा लक्ष्मणा रसाला
जाम्बवती तब हास्य बखाना ❋ नँदगृह भोजन भूलेउ कान्हा
क्षीर पियत बन महँ यदुराई ❋ सो सब चितसे दीन्ह भुलाई
दो० कौतुक नारी करत तहँ,सो नहिं कीन्ह बखान।
तेहि अवसरमें भीम तब, तहँको जाय तुलान॥
तब सतिभामा हरिते कहे ❋ आये भीमसेन तौ अहे
इहाँ न आवन दीजे नाथा ❋ बूझ भीम कहत तब गाथा
कौतुक भीम करन तब लागे ❋ ठाढ़ होय आंगन महँ आगे
कैधौं अशुचि होउँ भगवाना ❋ कैधौं मैं पापी अज्ञाना
कहा सोदाइ हारके आहे ❋ ऐसा काम कीन्ह जो चाहे
जो वाकहँ हम देखन पावें ❋ नासा श्रवण हीन करवावें
जो कछु अटके कण्ठ तुम्हारे ❋ देउँ गदा ते बेगिहिं टारे
कौतुक सुने हर्ष भगवन्ता ❋ हँसिके भीमहिं कहे तुरन्ता
आवो भीम जु भाजन करहू ❋ मनमें कछू रोष नहिं धरहू
दो० भीमसेन तब भाषेउ. जो तुम भये मुआर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जानो हरि हम जैंयभे, आपुन करो अहार ॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष मनलाये ❀ बाँह गही भीमहिं बैठाये
भोजन पान तुरित करवाये ❀ किय आचमन परमसुख पाये
बैठे भीम निमन्त्रण दीन्हे ❀ बांचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हे
तब श्रीपति अक्रूर बुलाये ❀ पुनि प्रद्युम्न अनिरुद्ध मँगाये
कृतवर्मा तुरन्त हँकराये ❀ सुनि सात्यकी सारथी धाये
सबते कहा कृष्ण यदुराई ❀ साजहु दल हस्तिनपुर जाई
बाजिमेध सुयज्ञ परवाना ❀ देखहु जाय ताहि अस्थाना
सुनिकै सबहिं हर्ष तौ पाये ❀ आगे पुरके लोग सिधाये
बर्ण बर्ण हय चढ़ि सब धाये ❀ श्वेत बाजिपर श्रीहरि आये

दो० बर्ण बर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ।
बल बसुदेव बुझायके, भाषे नन्दकुमार ॥

रक्षा करो नगर के माहा ❀ रहो द्वारका कहो यदुनाहा
तब बसुदेवजु बोलन लागे ❀ प्रेम अर्थ श्रीपति के आगे
साधूलोग धर्म जो जाना ❀ तबतो सँग लीजै भगवाना
नारीवश कामीजन होई ❀ दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई
इन्हके संग गवन जनि करहू ❀ बचन मोर तुम हियमें धरहू
यह कहिके तब बिदा कराये ❀ कृष्ण चलेउ बहु हर्ष बढ़ाये
रानी सबै कृष्ण के सङ्गा ❀ हर्षित गात चले श्रीरङ्गा
भीम करत हाँसी मग माहीं ❀ देखत बहुत नारिके पाहीं
बर्ण बर्ण सब चलिभे तहाँ ❀ आये एक सरोवर जहाँ
कुञ्ज अनेक हंस बहुताई ❀ नाना भँवर तहाँ गुणनाई

दो० कौतुक प्रेमकथा हरी, कहे रुक्मिणी पाँह ।
भानु अस्त जब लीन्हहै, सदा भँवर रस चाह ॥

निशिके माहँ हर्ष तब पावे ❀ प्रातबिकसिके पतिहिंदिखावे
स्त्रीके मन थिरना रहे ❀ सुनि प्रत्युत्तर रुक्मिणि कहे
यहां न पक्षपात कछु राखौं ❀ सत्यबचन प्रभु तुममन भाखौं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भौंरा तो बालक सम अहै ❋ माता के हिय भीतर रहै
बालक सम रोदन सो करै ❋ माता हिय अन्तर संचरै
प्रेम सहित सुत गोद लगावे ❋ प्रीति हेतु मन चञ्चल धावे
जब रुक्मिणि यह बात जनाई ❋ सुनतहिं कृष्ण परमसुख पाई
रहे रात भरि हरि पुनि तहाँ ❋ अनुपम पाथ सरोवर जहाँ
तबहिं चले आये यहि भाँती ❋ मिले हरी के बाल सँघाती

दो० नाना कौतुक सभा सब, करत श्याम को देख ।
परमअनन्दित हर्षहिय, आदि सखा सबपेख ॥

पाछे सब गोपी तब आईं ❋ हर्षित दर्श कृष्ण को पाईं
नाना कौतुक भाव बनाई ❋ चले अनेक संग मन लाई
सबै संग मिल चल भगवाना ❋ तब यमुनातट आय तुलाना
तहँ उतरे प्रभु श्रीयदुराई ❋ नगर लोग सब भेटउ आई
ब्राह्मण अरु बन्दीजन नाना ❋ पावन गुण गावत सबिधाना
पुर नारी देखहिं घनश्यामा ❋ संन्यासी को करैं प्रणामा
होके सावधान इत रहो ❋ धर्मराज को पुर महँ कहो
निशि भो बिगत प्रात जब भये ❋ सबै राखि हरि अंकृत लये
अश्व चढ़े सब जन ले साथा ❋ पुर हस्तिन गौने यदुनाथा

दो० नाना कौतुक अस्तुति, पन्थ माहँ बिस्तार ।
बहुत होत भये नाटक, सूक्षम किया बिचार ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञकृतेकृष्णराजासम्मिलनो
नामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❋ राजा गृह तो श्रीपति आये
तब अन्तःपुर गे यदुराई ❋ राजा देखि परम सुख पाई
धृतराष्ट्रक अरु बिदुर बन्धुगन ❋ कृष्ण मिलेउ पारथसहसबजन
भेट कृपाचार्यहि से कीन्हा ❋ धर्मराज तब पूछन लीन्हा
आये संग बंश परिवारा ❋ कहे कृष्ण सब आउ भुआरा
पिता और हलधर को ताहीं ❋ रक्षाको राखो पुर माहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुने धर्म राजा सुख पाये ❀ अन्तःपुर तौ श्रीपति आये
कुन्ती और सुभद्रा भेटी ❀ पञ्चाली भेटी दुख मेटी
पीछे धर्मराज पहँ आये ❀ धर्मराज अर्जुनहिं बुलाये
कुन्ती आदिक जेती नारी ❀ निपुण काज कर कर शृंगारी

दो० सबै संगलै चलिये, जेहि थल सब यदुबंश ।
धर्मराजके बचनका, सब नर करहिं प्रशंश ॥

चले सबै संगहि हरि लीन्हे ❀ आगे सबन अश्वकरि लीन्हे
राजा चले सबै दल सङ्गा ❀ नारी सब तौ परम अनङ्गा
आये सबै यमुन तट जहां ❀ सब यदुबंशी उतरे तहां
देवकि और रोहिणी आई ❀ कुन्ती चरण परी सो जाई
रुक्मिणि अरु सतिभामानारी ❀ कुन्ती चरण परी व्यवहारी
पांचाली हरिजन तेहि परशी ❀ यहिपरकार त्रिया सब दरशी
सतिभामा परिहास कर तहां ❀ परम कथा सतिभामा कहा
पञ्च पुरुष बश तुम कस कीन्हा ❀ तब पञ्चाली यह बर दीन्हा
तुम कछु बोल हरी ते कहो ❀ कैसे पुरुष कीन्ह बश चहो
आपन तन मन दीजै वारी ❀ तबहिं कन्त बश करै सो नारी

दो० एक पुष्पके अर्थ तू, सखिकै दीन्हेउ कन्त ।
कैसे प्रीतमहोत बश, मुँहकी प्रीति अनन्त ॥

यहप्रकार ते कौतुक नाना ❀ सखिन सबै आपन हठठाना
सतिभामा देवन सन कहा ❀ करन अश्वपूजन सब चहा
देवन कहा कृष्ण के पाहा ❀ श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा
मातु अश्व को पूजन चहैं ❀ आज्ञा कहा नरायण कहैं
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ समाधान कै सब समुझाये
त्रिया अश्व पूजी घर आवैं ❀ तब तुव कार्य पूर मन भावैं
तब बीरन सब साज बनाये ❀ श्यामकर्ण के संग सिधाये
सब जब अश्वहि पूजन लागी ❀ कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी
गो अनुशल्य तहां बिकराला ❀ जहां अश्व को पूजैं बाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्णहिं बधौं शाल महँ आई ❀ लेउँ बैर मारौं यदुराई
दो० यह बिचारिकै राक्षस, घेरेउ जाय तुरङ्ग।
शोर भयो त्रिययूथ महँ, बीर भये सब भङ्ग॥
अश्व बांधि वह हमहीं राखा ❀ समाधान अपने बल भाखा
कृष्ण कहे पारथ ते बाता ❀ हरे अश्व सब के सख्याता
महागर्ब करि यह लै गयऊ ❀ आजुकाल दैत्यन यह भयऊ
धर्मराज से कह ब्रजराजा ❀ अश्वहरन से भै मोहिं लाजा
मरहिं बीर तुव हारहिं क्षत्री ❀ यौवनाश्व क्षत्री पति अत्री
अश्व लीन्ह अब का बरु चहिये ❀ ताकारण सबही ते कहिये
तब श्रीपति बीरा कर लीन्हे ❀ क्षत्रिनशीश नीच तब कीन्हे
काहू के साहस नहिं चीन्हें ❀ कामदेव तब बीरा लीन्हें
मैं गहि अश्वक्षणक महँ लावों ❀ कामदेव तब नाम कहावों
कामदेव चढ़ि रथ पर धाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये
दो० प्रदुमन केरे हाथ तब, बीरा श्रीपति दीन्ह
बीर सबै चुप भवन गे, वृषकेतुहि सँग लीन्ह॥
कर्णपुत्र रथ चढ़िकै धाये ❀ कामदेव के साथहि आये
हांक दीन अरु शंख बजाये ❀ दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये
रहु रहु काम कहे जब बाता ❀ कर्णपुत्र देखेउ सख्याता
तब अनुशल्य काम परचारा ❀ बहु प्रकार ताही तुतकारा
पतिब्रत नारि पुत्र के पाहीं ❀ चले तेज तोरत धिक नाहीं
महाक्रोध करि दैत्य भुवारा ❀ पांच बाण कामहि के मारा
लगत बाण तब भयो अचेता ❀ उड़ि हरि पहँ झाँड़े तब खेता
देख क्रोध किय नन्दकुमारा ❀ तुरत कामको चरण प्रहारा
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा ❀ कर्म कमीन जन्मलिय कहा
गर्भपात काहे नहिं भयऊ ❀ हारे समर प्राण नहिं गयऊ
दो० गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश।
काहे होत कुनाम मम, भाषे श्रीहृषिकेश॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत भीम असगुन मनलाई ❀ ऐ प्रभु काम भागि नहिं आई
बाण तेज ते तुर उड़ि आये ❀ बरबस काम आप पहँ आये
सबै दोष क्षमिये अब कामा ❀ हम लै संग जात हैं धामा
कामहि संग भीम लै धाये ❀ गदा घाय बहु बीर उड़ाये
भीम ने गदा घाव दल मारा ❀ हाथ पायँ चूरण करि डारा
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ कोटिन गदा रथिनको मारा
कर्णपुत्र तब भीम ते कहई ❀ आप समान जगत को अहई
तुम लायक दल है यह नाहीं ❀ इत क्यों अस्त्र गहे रणमाहीं
सुने भीम हर्षित ह्वै कहई ❀ काम परा भय संगर रहई
तुम मारो रिपु को दल झारी ❀ हम राजहि मारब परचारी

दो० यहकहिक्रोधित भीमभो, तब राजा शिरधाय।
कालसरिस शर मारेउ, भीममुरछि गिरजाय॥

मूर्च्छित भीम देखि जगतारन ❀ आये इत रण को पगुधारन
क्रोधित दारुक रथ लै आये ❀ हांकमारि राजा पहँ आये
तब अनुशल्य हांककर दीन्हा ❀ मैंही इन को बध है कीन्हा
भीम काम रण महँ मैं मारा ❀ अब बल देखौं नन्दकुमारा
तबहीं दैत्यराज परचारा ❀ भारी बाण कीन्ह परिहारा
चारो बाण तुरंगहि लागे ❀ रथके अश्व तुरत ही भागे
भो अदेख रथ श्रीभगवाना ❀ तब हरिको आगमन बखाना
मैं तो पापी हौं भगवाना ❀ आप गये मैं भेद न जाना
पुहुपवन्त कन्या जो होई ❀ रजस्वला अस्नान करोई
तादिन पुरुष जो तजिके भागे ❀ गर्भपात की हत्या लागे

दो० मोर देश के सब नहीं, अरुमम पावन कीन्ह।
दीजै दर्शन नाथमोहिं, सुनिहरि दर्शन दीन्ह॥

जब श्रीहरि तौ आगे आये ❀ तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये
तीनि बाण तब प्रभुहि चलाये ❀ एकहि शरते काटि गिराये
हरिके बाण क्रोधते काटे ❀ औरहु एक बाण तब डाटे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु के तनु में लाग्यो बाना ❋ मूर्च्छित भये तहाँ भगवाना
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो ❋ भागे सैन्य चेत तब पायो
धर्मराज जब देखे नैना ❋ हा हा शब्द करे तब बैना
हरिप्रिया अरु रुक्मिणि रानी ❋ मूर्च्छित देखा शारँगपानी
रोदन करती हरि की रानी ❋ हा हा शब्द भये घनबानी
कछु चेते जागे यदुराई ❋ सबहि समोधि परम सुखपाई
तब सतिभामा कह्यो रिसाई ❋ कछुक चेत जान्यो यदुराई
जब प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ ❋ बलिअनुशल्यमलेच्छनकियऊ

दो० तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात ।
चण्डिरूप अब धरब मैं, दैत्य बधब सख्यात ॥

यहि अन्तर श्रीपति तब जागे ❋ महाक्रोध हिरदै महँ लागे
गहे अस्त्र रथही चढ़ि धाये ❋ युद्धभूमि रण भीमहिं आये
बृषकेतुहि कर शारँग धारा ❋ सप्त बाण अनुशल्यहि मारा
तब अनुशल्य चारि शर मारा ❋ बृष्यकेतु रण काटि प्रचारा
चारी बाण बहुरि कर जोड़े ❋ मारेउ रथके चारिउ घोड़े
एक बाण ते सारथि मारा ❋ रथ सारथि पैदल संहारा
तेहि क्षण सूरज देख न पाये ❋ हय रथ तब बेगही पटाये
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना ❋ शरनछांह अनुशल्यछिपाना
सारथि अश्व तुरत संहारा ❋ क्रोधित भो अनुशल्यभुवारा
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा ❋ तब करगहि बृषकेतु फिरावा

दो० कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्यहि गहि लाय ।
सम्मुख देखत कृष्णके, पन्द्रह बार फिराय ॥

फिर अस कहा सुनो जगनायक ❋ यह तुरङ्ग हरने के लायक
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा ❋ जो अनुशल्य बीरकहँ मारा
ऐसी बात कहन हरि लागे ❋ यहिअन्तर अनुशल्यहुजागे
जब देखा तहँ श्रीभगवाना ❋ नाना स्तुति हर्ष बखाना
कर्णपुत्र कहँ धनि कर भाखे ❋ तव प्रताप मैं श्रीपति लाखे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो जगदीश्वर भगत उधारे ❀ ध्रुवहि अचल पद कर संचारे
स्तुति करत बहुत तहँ राऊ ❀ सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा ❀ हर्षगात आलिङ्गन दीन्हा
दक्षिण कर गहिकर हरि लाये ❀ धर्मराजके दर्श दिखाये
सम्मुख हाथ जोरिभे ठाढ़े ❀ धर्मराज तब बचन उचारे

दो० भीमआदि ममबन्धु जे, तुमहौ तिनहि समान।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु, राजा कहे बखान॥

तब अनुशल्य कही अस बाता ❀ देहौं शीश भुजा सख्याता
भाषे प्रभु अरु धर्म भुवारा ❀ धन्य धन्य हौ कर्णकुमारा
तव प्रताप अनुशल्यहि पाये ❀ परम हर्ष तब राजा आये
पाछे राजा धर्म नरेशा ❀ सहित अश्व पुरका परवेशा
रथ तुरंग गज पैदल सारा ❀ नृप हस्तिनपुरका पगुधारा
पहुँचे जाय नगर के माहीं ❀ बीर आदि जेते सब आहीं
अरु क्षत्री गण जेते आये ❀ अर्घ्य देय आसन बैठाये
भोजन पान सबन करवाये ❀ ऐसे दिन तब बीस गँवाये
चैत्र पूर्णिमा पुरव प्रमाणा ❀ तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा
सबै बिप्र तहँ यज्ञ बनाये ❀ द्रुपदसुता नृप तबहिं नहाये

दो० गांठि जोरि तब राजा, बैठि यज्ञ महँ जाय।
मणि सुबर्ण बहु दान दै, उठीं युवतिजन गाय॥

यज्ञ दान जो कछु बिबिधाना ❀ तेहि प्रकार तहँ दीन्हो दाना
बाद्य शब्द घन मानो गाजे ❀ पूजा अश्व वेद तब साजे
उत्तम धरी वेद जो बरणा ❀ बांधि अश्व के माथ अभरणा
तामहँ लिखे धर्म के राजा ❀ अश्वमेध यज्ञहि तिन साजा
ऐसो क्षत्री को जग आही ❀ गहे अश्वको निजबल वाही
यह लिखिकै पार्थहि बोलवाये ❀ अश्व संग तब भूप पठाये
यौवनाश्व अनुशल्य भुवारा ❀ प्रदुमन है अरु कामकुमारा
अपनी अनी संग कै लीजै ❀ तबहिगमनअश्वहिसँगकीजै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये ❋ धर्मराज को शीश नवाये
माथे मुकुट गाण्डिव हाथा ❋ और सेन क्षत्री सरुयाता

दो० दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार।
भेटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुवार॥

सब तौ बिदा भये सुख पाये ❋ पाछे शीश मातु कहँ नाये
अश्व संग नृप आज्ञा दीन्हा ❋ पारथ कह माता सों लीन्हा
कुन्ती कह केतक दल सङ्गा ❋ निज बल ते गवनहु रणरङ्गा
पारथ कहे सबै सरदारा ❋ श्रीपति अरु हैं कामकुमारा
यदुबंशी ये सोहहिं संगा ❋ यदुनन्दन दीन्हो मम संगा
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हे ❋ कर्णपुत्र की रक्षा कीन्हे
तासों यज्ञ सफल नाहिं पैहो ❋ जो पुत्रन कहँ कहूं जुझैहो
यह कहिकै तब आज्ञा दीन्हा ❋ पारथ चरण बन्दना कीन्हा
चले पार्थ तब हर्षित गाता ❋ कर्णपुत्र पुनि चले सरुयाता
भद्रावती कुँवर की रानी ❋ सुनिपतिबिदाहोत बिलखानी

दो० पियअनुरागिनिनारितब, कहत पार्थ सों बात।
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ॥

रण महँ कादरता नाहिं करौ ❋ मम लज्जा माथे पै धरौ
कर्णपुत्र बामा सों कहै ❋ जो सब तीर्थ पुण्य पै अहै
गया पिण्ड तिरिया गति पावै ❋ हरी नाम यमदूत बरावै
यह सब तो जो झूंठ बखानहिं ❋ तो हम भागहिं रण संग्रामहिं
ऐसे चले कहे रह सोई ❋ आपन सेना संग लगोई
श्रीपति और भीम उठि धाये ❋ पारथ को पहुँचावन आये
मध्यदेश गये तजा तुरङ्गा ❋ नाना दल पारथ के सङ्गा
चला तुरंग तेज पगु जाई ❋ तौ पारथ परसे यदुराई
धर्मराज माथे पर लीन्हा ❋ श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा
पारथ मेरो सब धन प्राना ❋ तुम रक्षा कीजो सज्ञाना

दो० यह कहि सौंपा काम को, पारथही यदुराय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीमसेन ते पारथ, बिदाभये सुखपाय ॥
सेन संग पारथ चलि आये ❀ श्रीपति पुनि हस्तिनपुर आये
भीम कृष्ण हस्तिनपुर आये ❀ पारथ अश्व संग तब धाये
बाणै बाणन होत अघाता ❀ चले बीर पारथ के साथा
कर्णपुत्र अनुशल्य कराला ❀ मेघवर्ण यौवन भूपाला
औसुवेग जो प्रदुमन बीरा ❀ अनिरुद्ध बीर जो है रणधीरा
सैन समूह चले जो साजा ❀ महाघोर तब बाजन बाजा
चले बीर ह्वै हर्षित नाना ❀ सबही बीर भगत भगवाना
महाबली सब दल है राऊ ❀ चले बीर आनँद उपजाऊ
दल चतुरङ्ग पन्थ नहिं पावै ❀ आगे अश्व तेज पग धावै
पाछे सैना बीर अपारा ❀ हय सँग चले बीर बिस्तारा
हय गज रथ जो पैदल नाना ❀ क्षत्री महाबीर जग जाना
दिशि दक्षिण प्रथमहि सो धाये ❀ छल बल महाबीर सँगलाये

दो० पवनबेग दिशि दक्षिण, चला तुरन्त तुरङ्ग ।
हर्षित सब सेनाधिपति, करत कुतूहल रङ्ग ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेअश्वदक्षिणदिशिगमनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

राजा सुनो ऋषी तब कहै ❀ महि सरस्वती नगर इक अहै
नालपुञ्ज तहँका नरनाहा ❀ प्रथमहि अश्व गयो चलिताहाँ
नाम प्रदीप राजनि कुमारा ❀ कुञ्ज महा त्रियरूप अपारा
नदी नर्मदा तट सो अहै ❀ तहां अश्व गो मुनि अस कहै
कुञ्ज माहिं स्त्री जब पाये ❀ तहँ पर बीर देखि मन लाये
पढ़ि पत्रहिं तिरियन समुझाये ❀ धर्मराज के हय यहँ आये
हैं रक्षक पारथ धनुधारी ❀ सुनि नारी सब गृह पगुधारी
तबहिं कुँवर रणकर मन धरे ❀ दल लै पारथ सम्मुख खरे
तब सब क्षत्री देखन धाये ❀ कर्णपुत्र तहँ आगे आये
भाषे रण महँ काह बिचारो ❀ पाछे पारथ पास सिधारो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० पांच बाण हनि कर्णसुत, मारे चारि तुरङ्ग।
पुनि सारथि रथ काटिकै, कियो बीर तब भङ्ग॥

त्रयगांसी शर राजकुमारा ❀ क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा
कर्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना ❀ तब अनुशल्य चलाये बाना
शरन छाँह छपि राजकुमारा ❀ जुरे बीर दूनौ सरदारा
नीलध्वज सुनि दल लै आये ❀ बाणावरिकर पुत्र छँड़ाये
सब दल कहँ तब मारे बाना ❀ पार्थ हाँककरि क्रोध बखाना
क्रोधयुक्त सुनि पारथ पायो ❀ पांच बाण लै क्रोधि चलायो
एक बाण ते राजा काटे ❀ तब पारथ क्रोधित शर छाँटे
नीलध्वज तब मूर्च्छा पाये ❀ जागे महायुद्ध मन लाये
अग्निबाण तब राजा मारा ❀ पारथ दल में भयो संहारा
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ जरै लगे सब करैं पुकारा

दो० मारि पार्थ तब वरुण शर, पावक स्तुति ठानि।
हाथ जोरिकै पार्थ तहँ, बहु प्रशंस उर आनि॥

सदा कृपा तव हमरे पाहीं ❀ रथ धनुबाण दिये तुम आहीं
अब कह दुख यह हमको दीन्हा ❀ वारेक महँ सैना बध कीन्हा
तब कह पावक ऐसी बानी ❀ पारथ तुम तो भये अज्ञानी
सदा रहत सँग जगके तारण ❀ अश्वमेध कीजै केहि कारण
हम राखे राजा कर माना ❀ ससुर हमार महिप जगजाना
जनमेजय पूछत मन लाई ❀ नीलध्वज कत ससुर कहाई
कैसे नृप कन्या तेहि दीन्हा ❀ बैशम्पायन कह मन लीन्हा
नीलपुञ्ज कै ज्वाला रानी ❀ श्याम नाम कन्या भै आनी
भइ तरुणी तब पूछहिं राऊ ❀ चाहो बर सो हमैं सुनाऊ
कन्या कहे मनुष नहिं काजा ❀ देव श्रेष्ठ जो बर देहुँ राजा

दो० बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान।
जो मन आवत पुत्रि तव, हमते कहो बखान॥

कन्या कहेउ चार कै करनी ❀ कीन्हे पाप छले ऋषिघरनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्फ काम बश हुइ अज्ञाना ❋ ऐसे सँगते धर्म नशाना
दूजो पति जो नारी करै ❋ कुम्भीपाक नरक महँ परै
अग्नी माहँ मरेते जरही ❋ ताते दुइ पति नहिं अनुसरही
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै ❋ बचन मोरापितु यह सुनलीजै
पुरजन राजा अचरज माना ❋ कन्या करै अग्नि को ध्याना
राजा कहा सर्प जो खाहीं ❋ सात जीभ ताके मुख आहीं
मुख अरु चर्मत्यागि सुख कैसे ❋ नदी नार नीचे बह जैसे
हरकाशीश तेज यश गज्ञा ❋ पृथ्वीमहँ तिन कीन्ह प्रसङ्गा
काहू बात न कन्या मानी ❋ समाधान कै तबहीं आनी

दो० चन्दन घृत अरु चिनी लै, तिल जौ मधुको राव।
जायफल लौंग कपूरकी, आहुति होम कराव॥

वेद वाक्य मन्तर अहिवाना ❋ बिप्ररूप तब अग्नि तुलाना
राजा पाहिं हर्षि पगुधारा ❋ देखि बिप्र तब पूछ भुवारा
को हौ देव कहाँ ते आये ❋ तबब्राह्मणअस बचनसुनाये
कन्या स्वाहा हम को दीजै ❋ ताते आये नृप सुनि लीजै
नृपति कहे सो पावक चहैं ❋ बिप्र कहे हम पावक अहैं
राजा कहा प्रतीत मोहिं कीजै ❋ अग्नी रूप आपनो कीजै
मन्त्री कहा यही बिधि जबहीं ❋ पावकरूप प्रकटकियो तबहीं
भइ प्रतीत तब स्तुति लाई ❋ कन्याकी तब मौसी आई
सो कहि द्विज चेटक यह करै ❋ प्रकट रूप अग्नी को धरै
राजा कहे आप गृह माहाँ ❋ परखाये कैसी जय ताहाँ

दो० ताके गृह पावक गये, रूप धरा बहु भार।
चीर कंचुकिहि जारत, और शीश को बार॥

राजा पहँ वह रोवत गई ❋ राखिलेहु वह पावक अहई
स्तुति करि नृप आगि बुझाई ❋ तबहिं ब्याहकी बात चलाई
मेरे गृह में संतत रहौ ❋ आवै रिपु तेहि जारत रहौ
ऐसे बचन करौ परमाना ❋ तब राजा दिये कन्यादाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा गृह में पावक रहै ❋ बैशम्पायन राजहि कहै
सो बाचा से सैन जराई ❋ ताते पारथ स्तुति लाई
पारथ पहँ पावक तब कहै ❋ पयनिधि बहुतकछू अबअहै
अब देखो दल तुमही नैना ❋ उठिहै सबै तुम्हारी सैना
सबै उठे जब पार्थ निहारा ❋ राजा पहँ पावक पगुधारा

दो० कहेजाय तब नृपति सन, पारथ मित्र हमार।
मिलौजाय नहिं जीतिहौ, जेहि सहाय कर्तार॥

पारथ मित्र कहे बैसाई ❋ मोहिं खवायो अन्नपुराई
बचन सुनत राजा खुश भये ❋ तब रानी को पूछन गये
मिलन मन्त्र ते कोपी रानी ❋ जब राजाको बोली बानी
सैना रण न जुझाये काहू ❋ कायर ह्वै मिलिबे को जाहू
राजा सुनत क्रोध कर भारी ❋ गो पारथ पहँ रण बिस्तारी
राजा क्रोधित धनु संधाना ❋ तेहिक्षण बहुतचलायो बाना
ऐसे बाण पार्थ तब मारा ❋ बाण छाहँ ते भयो अँधारा
बाण पार्थ के राजहि लागे ❋ रथ चढ़ाय सारथि लै भागे
ह्वै अचेत तिरियासे कहे ❋ सुतहि गवाँय मन्त्र तव गये

दो० अस कहि हय धन राजा, संगहि चले लेवाय।
श्यामकरन करि आगे, पारथ भेटेहु जाय॥

भेटे जाय द्रव्य बहु दीन्हे ❋ हर्षित पारथ सो लै लीन्हे
सैनापति तुम राउ हमारा ❋ परममित्र पारथ संचारा
अश्व पाय चलिबे मन दये ❋ सँग नीलध्वज राजा भये
ज्वाला क्रोध शोक ते भारी ❋ तुरत बधौ गृहमें पगुधारी
बन्धौ पहँ सो रोदन कीन्हा ❋ मोर पुत्र पारथ बध कीन्हा
बैर लेहु पारथ ते जाई ❋ सुनतहि बात कहे सो भाई
अपने गृह महँ बैठहु जाई ❋ आयो हम कहँ खोवन धाई
सो सुनि ज्वाला क्रोधित भई ❋ रोवत गङ्गा तट चाले गई
तरणी चढ़े कहे सो नारी ❋ भयो पाप लखु गङ्ग हत्यारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गातरिके मानुष जेते ❋ ज्वालापाहि कहे सब तेते

दो० पतितपावनी गङ्गजू, जगको पापविनास ।
सिधमुनितटतेहिजायकै, पावत सुरपुरबास ॥

धर्म रूप तब कहे भवानी ❋ गङ्ग दोषका कहौं बखानी
ज्वाला कहा अपुत्री भारी ❋ सात पुत्र दीन्हें जल डारी
एक पुत्र तब तात बचाये ❋ ताको पारथ मारि गिराये
सुनताहि गङ्गा क्रोध अपारा ❋ पारथ कहँ शापौ विस्तारा
मेरो पुत्र पार्थ संहारा ❋ छठे मास सो जैहै मारा
ज्वाला कहा कृपा करु माई ❋ बाण जन्म लै मारव जाई
तब गङ्गा दीन्हो बरदाना ❋ ज्वाला तजे गङ्ग महँ प्राना
प्राण तजे भो शर अवतारा ❋ अर्ध चन्द्र पर्वत तनु धारा
जन्म बाण पाये परसंगहि ❋ पारथ सुत के रहे निषंगहि
बभ्रुवाहन है नाम भुआरा ❋ वही पुत्रते करव सँहारा

दो० यह चरित्र इतही भये, उत तब चलत तुरंग ।
नीलध्वज अर्जुन सहित, यौवनाश्व नृप संग ॥

जौन धर्म इक कानन रहा ❋ अश्व गयो वाही बनमहा
योजन एक शिला है जाहाँ ❋ अश्व जात भयो ताही माहाँ
पाहन लागि अश्व रहे कैसे ❋ चुम्बक लोहे लागत जैसे
कोटि यतन करि अश्व छुड़ावत ❋ शिलाओड़ितबअश्वनआवत
तब सब शोच करन तहँ लागे ❋ कहे जाय पारथ के आगे
पारथ देखि शोच भयो भारी ❋ तब सेवकसे कहा हँकारी
देखो ऋषि कोई इत अहै ❋ पारथ बात सबन ते कहै
दूरि गये हेरन बन माहीं ❋ शंभरि नाम मुनी तहँ आहीं
नाहर गऊ सर्प शिष्य सन्ता ❋ मूस मँजारी संग अनन्ता
सदा प्रीति उनमें जहँ रहै ❋ ऐसो तेज मुनीको रहै

दो० द्युतिहि देखिकैमुनि कहा, बोलि धनञ्जय चाह ।
पारथ प्रद्युमन सात्यकी, यौवनाश्व नरनाह ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्णपुत्र संग ले गये तहां ❀ ऋषि आश्रम है बनमें जहां
पार्थ जाय तहँ बात जनाये ❀ धर्मराज यज्ञहि मन लाये
रक्षाहित हम सब इत आये ❀ बनमें अश्व शिला अटकाये
कौन उपाय अश्व अब छूटै ❀ गोत्रबन्ध को पातक टूटै
तब ऋषि कहे पार्थ सज्ञानी ❀ गीता सुनि के भये अज्ञानी
जो तुम काज करन को चाहो ❀ अस जनि कहो नारिते चाहो
कहो कि गोत्र बन्धु संहारा ❀ जो पालै सो मारनहारा
सर्व शरीर पुरुष रह मही ❀ गेह लिलार मुनी अस कही
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ ❀ अश्वमेध तौ करत अकारथ
पारथ कहा विष्णु की माया ❀ कोई जग महँ अन्त न पाया

दो० पारथके सुनि बचन अस, तब ऋषि कहै प्रकास।
शिलाचरित्र जो कौतुक, हर्ष धनञ्जय पास॥

संज्ञा पपीचण्ड इक रहै ❀ ताकी कन्या चण्डी अहै
उद्दालक को दीन्हेउ ब्याहीं ❀ लै नारी आयो गृह माहीं
पति सेवा सिखवै सेवकाई ❀ चण्डी सुनत क्रोध तब पाई
पति सेवा को मोहिं जो कहा ❀ मोसों नाहिं परोजन अहा
पुनि भाषे पूजा मन लाओ ❀ चण्डि कहे का हेतु सुनाओ
पती पुत्र ते मोर न कामा ❀ तोरा बचन करौं परमाना
एक बार मज्जन लगि जाई ❀ कहे कमण्डलु दीजै लाई
सुनतहि नारि क्रोध भयो भारी ❀ डारेउ फोरि भूमि दैमारी
पति के संग शयन नहिं करै ❀ पति की हँसी करत सो फिरै
दुष्ट त्रिया ते मुनि दुख पाये ❀ सुनत कमण्डलु मुनिपदआये

दो० दुर्बल देखि उद्दालक, पूछेउ मुनि मनलाय।
कौन हेतु दुर्बल भयो, कहो मुनी समुझाय॥

तब उद्दालक बोलत भयऊ ❀ तिरियादुष्ट बिधातैं दयऊ
मोर कहा मनमें नहिं धरै ❀ अपने मनका कारज करै
पीतर श्राद्ध समय दुख पावें ❀ क्यहिबिधिपितृश्राद्धमहँआवें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब हँसि कह्यो कमण्डलु बानी ❋ उलटी बात कहौ नहिं ज्ञानी
जो कछु कार्य करण तुम चहौ ❋ उलटे बचन नारि ते कहौ
हमतो गौतम तीर्थहि जैबे ❋ फिरत समय यहि मारग ऐबे
अस कहि मुनी कमण्डलु गयऊ ❋ तिरियहिआपु हीनमतदयऊ
काल्ही श्राद्ध पिताकी अहै ❋ प्रात कमण्डलु आवन चहै
मोते श्राद्ध कर्म नहिं होई ❋ केहिबिधिआवकमण्डलुसोई
सुनतहिं नारी क्रोधित भई ❋ बोली बात कन्त मति गई

दो० द्विजहिं बुलाओ प्रेमकरि, देव पिण्डको दान ।
उत्तम होवे श्राद्धबिधि, मैं करिहौं निरमान ॥

बात उलटिकै श्राद्ध प्रचारा ❋ श्राद्धकर्म यहिबिधिअनुसारा
जो कछु बचन कहै मुनि ताहीं ❋ तौन बात तिय मानति नाहीं
ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये ❋ इतना कहि मुनिनामनशाये
मुनि कछु कार्य करनको कहई ❋ प्राणजायँ बरु तिय नहिं करई
बात भूलिकै मुनि संचारो ❋ लै पिण्डा गङ्गा में डारो
सुनत बात क्रोधित ह्वै नारी ❋ लै पिण्डा घूरे महँ डारी
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी ❋ पाहन होहु जन्म हत्यारी
जब पारथ के दर्शन पैहौ ❋ शीघ्र शापते तब तरिजैहौ
शिला भई तब मुनिकी नारी ❋ फेरो हाथ बात सुन म्हारी
करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा ❋ जातहिं हाथ शिलामहँदीन्हा

दो० छूटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ।
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष ह्वै जीय ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधयज्ञकृतचुम्बकाश्वमोचनोनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❋ पारथ अश्व चले मन लाये
छूट शिला ते अश्व सिधाये ❋ पञ्चज पुरी अश्व तो आये
हंसध्वज राजा पुर माहीं ❋ पांच पुत्र राजा के आहीं
सुन्दरसरन सबल कुमारा ❋ तीजे नाम सुरथ संचारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौथा पुत्र सुरथ परवाना ❋ सबते छोट सुधन्वा माना
दूत जाय राजहिं समझाये ❋ अश्व संग हैं पारथ आये
सुनि राजा मन चिन्ता आई ❋ तब सब सेनापतिहिं बुलाई
सब ते कहनलाग अस बैना ❋ अबलौं दीख न पङ्कजनैना
लखौं आज हरि आनँदकन्दा ❋ पारथ पास सदा यदुनन्दा
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू ❋ लाओ सबहिं दरश हरिकरहू

दो० हर्षित ह्वै सब आयकै, कह्यो सुनौ नरनाह।
जो नहिं आवै युद्धहित, भुँजव कराहे माह॥

राजा चले सबै दल साजा ❋ बाजन लगे अनेकन बाजा
बिद्रथ चन्द्रकेतु तब आना ❋ चन्द्रसेन सँग दल परमाना
चन्द्रदेव औ बरत सिधाये ❋ यह पांचौ राजा सँग भाये
सत्रह सेनापति लै साथा ❋ रणको चलत भये नरनाथा
पांच सहस इकसौ रथ आये ❋ सहस निशान तोप लदवाये
गजके ठाट पचासि हजारा ❋ लक्ष सहस्र रहैं असवारा
सब दल चढ़ि मैदानहि हये ❋ पाछे कुँवर सुधन्वा गये
दलमधि तेल कराहन भरी ❋ पावक लाय तप्त तब करी
जो नहिं आवे दलमहँ कोई ❋ मांझ कराह मृत्यु त्यहिं होई
शंख लिखित प्रोहित दुइ भाई ❋ बाचा हेतु सबसौं जाई

दो० चले सुधन्वा हर्ष हिय, माताको शिरनाय।
कृष्ण दरश गति पाइहौ, माता कहेसि बुझाय॥

तहँते गये कुँवर परनामा ❋ पाछे गये बहिनि के धामा
बहिनी करलै आरति कीन्हा ❋ तब बीरनते बोलन लीन्हा
बहिनि भेटिकै बाहर आई ❋ त्रिया प्रभावति देखन पाई
प्रिया कन्त सन कह वरि नारी ❋ ताहिछोड़ि कहँ चलेसिधारी
नारी एक सदाव्रत आही ❋ चलिये भवन देहु रति चाही
कुँवर कह्यो दिवस न होही रति ❋ तब नारी ब्याकुलह्वै बिनवति
ऋतु स्नान कीन्हा मैं नाथा ❋ रतीदान दै करौ सनाथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिन अपराध पुरुष तियत्यागा ❀ गर्भ बधेकर हत्या लागा
बहुप्रकार नारिहि समुझाये ❀ मिलना कठिनबहुरिसुरझाये

दो० बिबशहि रसभे कुँवर तब, बिलमे तत्क्षणधाम ।
सुचित भये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम ॥

कुँवर कह्यो सुनु बचन हमारो ❀ को पीछे रह प्रश्न बिचारो
ताको भुँजहु कराहन माहीं ❀ याही प्रण कीन्हो मनमाहीं
तब नारी कह रतिदै जैये ❀ पीछे दरश तिहारो पैये
बिबश कुँवर नारी के परे ❀ टोप सनाह उतारी धरे
रति रस हेत तबहिं तौ साजा ❀ इत दलमाहिं हंसध्वजराजा
पूछनलाग सबन के पाहीं ❀ देखियत कुँवर सुधन्वा नाहीं
सुधि कराह भूला मैं जाना ❀ बेगि दूत तहँ करौ पयाना
गहिकर केश कुँवर लै आओ ❀ ताहि कराहे माहिं जराओ
राजा दूत चलन मन दीन्हा ❀ करिरतिकुँवरशीघ्रशुचिकीन्हा
बांधि अस्त्र रथ भे असवारा ❀ हर्षित चलिभा राजकुमारा

दो० यहि अवसर में दूत सब, देख्यो कुँवरहि जाय ।
राजा आज्ञा जो दियो, कुँवरहि कहा बुझाय ॥

सुनतहिं शीश गाज जनु परी ❀ दूतन पाहिं बचन अनुसरी
आज्ञा तात अहै परमाना ❀ यहकहि कुँवरहि कीन पयाना
जातहिं गये पिता के आगे ❀ क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे
पारथ हरिके दर्शन कारण ❀ आये नहीं मूढ़ मति धारण
मेरी आनि कुँवर नहिं मानै ❀ सुनत कुँवर करजोरि बखानै
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहै ❀ रती दान जल्दी यक चहै
तेहिते म्वहिं ह्वैगई अबारा ❀ कीजै जो कुछ होय बिचारा
राजा दूतहि कह्यो बुझाई ❀ तेलहि तप्त करो अब जाई
अब तो नात पुत्र का नाहीं ❀ पूछौ जाय पुरोहित पाहीं
सुनतहिं तेल तप्त तब कीन्हा ❀ प्रोहित पाहिं पूछ सब लीन्हा

दो० तबहिं पुरोहित अस कह्यो, अब पूछत का जानि ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र हेतु माया विवश, ताते पूछत आनि ॥
बचन हीन राजा तब भयऊ ❀ अब हम यहाँ रहब नहिं कहेऊ
जाय दूत राजा पहँ कहेऊ ❀ राजाके मन चिन्ता भयऊ
राजागे प्रोहित के पासा ❀ बिनती करिकै बचनप्रकासा
करिबिनती प्रोहित दोउ भाई ❀ अपने सँग लैगयो लेवाई
तेल तप्त है पावक जैसो ❀ मन्त्री पाहिं कहै नृप ऐसो
मध्य कराह सुधन्वहि डारो ❀ तेलके मध्य जराय के मारो
मन्त्री गयो कुँवर के पासा ❀ करुवो बचन जाय परगासा
हमते कछु नहिं बनत बिचारा ❀ आज्ञातात जो कीन्हतुम्हारा
मधि कराह डारौ किन आना ❀ सुनाकुँवर तब कीन्ह बखाना
बचन तात का करो प्रमाना ❀ मन्त्र मोहिं भावै नहिं आना

दो० शोच कियेका होत अब, परबश जनि कोइ होय।
अब काकी शङ्का करो, कुँवर कह्यो असरोय ॥

तेल कराह अग्नि सम ताता ❀ कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता
मोसन घाटि भई जगतारन ❀ आयेते हरि दरशन कारन
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी ❀ तुहीं बिभीषण लिये उबारी
दीनदयाल राखि अब लीजै ❀ महिमा प्रकट आपनी कीजै
जैसे अहते गजहिं छुड़ाओ ❀ ताहीबिधि अब मोहिं बचाओ
ऐसो सुयश रहै संसारा ❀ कुदा कराहे राजकुमारा
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा ❀ तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा
बहुप्रकार हरि अस्तुति ठानी ❀ कह्योअल्पनहिं बहुतबखानी
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली ❀ दीन्ह कराह कुँवर को डाली

दो० पावक उठा कराह सों, देखहिं सबदलबीर।
त्राहि त्राहिसबहिनकही, राखिलिये रघुबीर ॥

रोवहिं दलके सब सरदारा ❀ कुँवरहिं राखि हमैं किनमारा
शीतल तेल भयो सख्याता ❀ कुँवरबदन भयो कञ्जप्रभाता
केशव कृष्ण जपत यहिनामा ❀ प्रोहित संगकरै नृप ग्रामा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुँवरहि देखि पुरोहित कहै ❋ जाते अग्नि बरायनि रहै
कीधौं तेल तप्तनहिं आही ❋ कीकछुजरी कुँवर मुखमाही
दूतन कह्यो झूठ सब अहै ❋ केवल नाम कृष्ण को कहै
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी ❋ नरियर एक कराहे डारी
परत कराह फूटि छितराई ❋ प्रोहित के माथे लग जाई
ताक्षण प्रोहित बहुत लजाना ❋ भक्तद्रोह मैं कियो निदाना

दो० धनि धनि कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरिबास ।
परा कराहे मों कहा, मिले कुँवर के पास ॥

बिप्रआय अङ्कहि भरि लीन्हा ❋ अस्तुतिबहुतकुँवरकी कीन्हा
कुँवर प्रताप बिप्र सुख पयऊ ❋ भक्तिप्रभाव बदननहिंजरेऊ
ऐसी महिमा प्रभुकी बाढ़ी ❋ प्रोहित कुँवर दुहुँन कहँ काढ़ी
कुँवर साथ लैगये नृप आगे ❋ प्रोहिततबहिं कहन असलागे
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना ❋ इनके हृदय बास भगवाना
सुनि राजा तब सुतहिं बुलायो ❋ उठि नृप दौरि अङ्कलपटायो
राजा कुँवर दुहुँन सुख पायो ❋ बहुत प्रशंसा करि बैठायो
पितुके दोष धरहु नहिं मनमें ❋ मैं दलगमन करौं अब रणमें
हर्षित कुँवर तात पग परशे ❋ करि प्रणाम प्रोहितके दरशे

दो० रणको चले कुँवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।
गहौ तुरँग तुमजाय अब, सबते कहा भुआर ॥

बीरन जाय अश्व हरि लाये ❋ युद्ध करनको राव सिधाये
कुँवर सुधन्वा सबके आगे ❋ वाद्य जुझाऊ बाजन लागे
सब दल समाधान करि रहे ❋ नव पारथ प्रदुमन से कहे
हमरो हय जो हरि लैगये ❋ अस बलधारी नृप सब भये
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा ❋ नीलध्वज क्रतवर सरदारा
कामकहे अब उचितक अहै ❋ औरौ सबहिं अस्त्र कर गहै
मेरी तात संमती अहौ ❋ आप युद्ध कत कीन्हो चहौ
कर्णपुत्र तब कहै यह बाता ❋ तुम दुइबीर प्रलय के घाता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतहि रहो तुम हम रणजाहीं ❋ इतना कहि आये रणमाहीं

दो० कर्णपुत्र अरु नृपसुवन, दोउ भये इकठाँव।
राजपुत्र तब पूछता, कर्णपुत्र के नाँव॥

कह बृषकेतु कर्ण ममताता ❋ कश्यपकुलजो कह सख्याता
बृषकेतु नाम हमारो अहै ❋ सुनिकै बात सुधन्वा कहै
बन्धु छन्द मुनि गोत्र हमारा ❋ नाम सुधन्वा बीर अपारा
दोउ बीरन तो रण प्रणठाना ❋ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना
नृपति पुत्र के मारे बाना ❋ सारथिरथ सबकिय भङ्गाना
मूर्च्छा पाय क्षणक महँ जागे ❋ बाणन बृष्टि करन तबलागे

दो० दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये वहि ठाम।
कर्णपुत्र तब चढ़यो रथ, सुमिरि कृष्णका नाम॥

कर्णपुत्र बहुजय रण लीन्हा ❋ बिपुलबीरक्षणमहँ बधकीन्हा
हना सुधन्वा बाण रिसाई ❋ कर्णपुत्र को मूर्च्छा आई
कर्णपुत्र रण मूर्च्छित जाना ❋ तब प्रदुमन हाँके मैदाना
तुर्तहिं काम पंचशर मारे ❋ सारथि हय पैदल संहारे
बिशिख लग्यो तब खसेतुरङ्गा ❋ जोती ध्वज छत्रहु भे भङ्गा
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना ❋ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना
तीनि बाण सारथि संहारा ❋ सिंहनाद करि राजकुमारा
नष्ट भयो रथ खण्ड तुरङ्गा ❋ दण्ड छत्र तो भे रदभङ्गा
दोनों बीर भिड़े रण करनी ❋ कबहुँ गगन कबहूंकै धरनी
गदा गदा ते छत बहु लागे ❋ मूर्च्छे दोउ कुँवर तब जागे

दो० कामदेव मूर्च्छित रहे, कुँवर रथहि चढ़िजाय।
साहसक्षोहिणि सैन्यदल, मारतकुँवर रिसाय॥

दीख तबै कृतवर्मा धाये ❋ कुँवर के ऊपर बाण चलाये
राजपुत्र बाणन ते मारा ❋ और बाण अश्वहि संहारा
एक बाण ते सारथि मारा ❋ रण महँ गर्जे राजकुमारा
तब कृतवर्मा साजि सिधाये ❋ देखतहीं अनुशल्यहु धाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीक्षण राज बाण बिस्तारा ❀ सो अनुशल्य कुँवरपर डारा
मूर्च्छित कुँवर परे रण माहीं ❀ बहुतै दल मारेगे ताहीं
हाहाकार करत सब भागे ❀ राजपुत्र यहि अन्तर जागे
क्रोधित कुँवर बाण तब मारा ❀ मूर्च्छाभइ अनुशल्य भुआरा

दो० क्रोधवन्त ह्वै राजसुत, मारे बाण अपार ।
हय गज रथ पैदल कटे, पारथ दल संहार ॥

पारथ दल तब भागन लागा ❀ ताक्षण बीर सात्यकी जागा
बिपरित बाण क्रोध करि छाटे ❀ पञ्च बाण ते धनु गुण काटे
दोनों बीर लड़त मैदाना ❀ दोनों मानहुँ देव समाना
रक्त भिजे जनु टेसू फूले ❀ देखत रूप बीर सब भूले
शेल चक्र कुँवर धै मारा ❀ मूर्च्छे सात्यकि रणहि मँझारा
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे ❀ तब अर्जुन रथ हाँक्यो आगे
कहा टेरि सुनु राजकुमारा ❀ मोर नाम अर्जुन धनुधारा
भीषम द्रोण कर्ण संहारा ❀ बड़े बड़े बीर और सरदारा
कुँवर कहा पारथ जगतारण ❀ सबरथ जिते बीरता कारण

दो० हरिसे सारथि साजिकै, आये हौ रणमाहिं ।
ताते भाषत पार्थ यह, जीति तुम्हारी आहिं ॥

तुमहिं जीतिहौं लैकरि काजा ❀ करिहैं यज्ञ हंसध्वज राजा
सुनि पारथ तब बाण चलाये ❀ दश बाणते कुँवर बिचलाये
काढ्यो बाण कुँवर भयो क्रोधा ❀ राजकुमार महाबल योधा
बरषे बाण सके को भाषन ❀ सौते सहस सहसते लाखन
पारथ पावक बाण चलाये ❀ कुँवरके दलको बहुत जराये
बरुण बाण कूँवर तब मारा ❀ अग्नि बुझी बाढ़ी जलधारा
बर्षा की जनु उपमा पाय ❀ पवन बाण तब पार्थ चलाये
जलगयो सूखिउड़न दललागा ❀ राजहिं दीख पुत्र रिसपागा
तीस बाण क्रोधित ह्वै छाटे ❀ ध्वज पताक पारथ के काटे
कह्यो कुँवर अब पारथ सुनिये ❀ सारथि गिरे सारथी चहिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० हरि सारथिको सुमिरही, जो चाहै कल्याण।
नातरु बाम बिधाता, अन्तकाल तव प्राण॥

पारथ सुनिकै जोती गहे ❀ रणदल माँझ जान अबचहे
महाकष्ट आयो परमाना ❀ पारथ तब सुमिरो भगवाना
सुमिरतही तुर्तहिं हरिआये ❀ जोती गहे पार्थ सुखपाये
तब पारथ ने कीन्ह प्रमाना ❀ राजकुँवर तब करै बखाना
आपन भाग्य बड़ा मैं जाना ❀ तुम दर्शन दीन्हा भगवाना
अस्तुति करिकै शारँग गहै ❀ बचन एक पारथ तब कहै
कृष्ण समान पायहौं सारथ ❀ आज देखिहौं तुव पुरुषारथ
पार्थ कह्यो शर तीन हमारा ❀ ताते करब तोहिं संहारा
कुँवर कह्यो तीनहुँ शर कटिहौं ❀ खण्डखण्ड करिमस्तककटिहौं
कह्यो पार्थ जो तोहिं न मारौं ❀ अपने पितृ नरक महँ डारौं
इतना सुनि दौ बीर रिसाने ❀ क्रोधवन्त ह्वै शारँग ताने

दो० कुँवर कह्यो शर तोर मैं, जो न हतौं सुनु बात।
तौ मम बास अधोगत, कुँवर कहै सब्यात॥

राजपुत्र तब बाण चलाये ❀ हरिसमेत रथ माहिं बचाये
हाथ मारि सो पाछे गये ❀ पारथते हरि बोलत भये
तव पुरुषारथ देखौं पारथ ❀ बधपरतिज्ञा कीन्ह अकारथ
एक नारि कुँवर ब्रत आहै ❀ ऐसी बात कौन निर्वाहै
हम तुमते यह ब्रत नाहिं होई ❀ कौन पुण्यते मारब सोई
राजकुमार बाण तब छाटे ❀ हय गज रथ पैदल सब काटे
कह्यो कुँवर गोबर्धन धरे ❀ गाय गोपकी रक्षा करे
पारथको अब राखौ हरी ❀ सुनत क्रोध पारथ तनुजरी
एक बाण पारथ कर लीन्हा ❀ तामहँपुण्य जगत पति दीन्हा
गोबर्धन धरि जो फल भये ❀ सोइ पुण्य हरि शरको दये

दो० धाये देखन देव सब, रहत काहि प्रण आज।
दोउ बीर हैं भक्त हरि, काह करी ब्रजराज॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारे पारथ बाण तुरन्तहिं ❋ कुँवर बात यह कह भगवन्तहिं
जो नहिं शर कटिहै है पापू ❋ यह कहि बाण चलाये आपू
अर्धचन्द्र तब बाणन मारा ❋ पारथ को शर काटि पवारा
अचरज सबै देवतन माना ❋ तब पारथ लिय दूसर बाना
रामअवतार पुण्य जो कीन्हा ❋ सो सब पुण्य बाणको दीन्हा
पारथ बाण करै सन्धाना ❋ कुँवर कहे सुनिये भगवाना
पुण्य तोहारे पारथ बाना ❋ मैं प्रण काटे तृणहि समाना
परनारी ते जो रति भावो ❋ बिन काटे सो पातक पावो
पारथ बाण तजे जो भारी ❋ करु संधान कुँवर धनुधारी
ऐसे बाण क्रोधकरि छाटे ❋ पारथ काहि वोहु शर काटे

दो० शङ्खध्वनि तब कुँवर करि, देवन अचरज पाय ।
पारथ शर हरि सैन्य सब, काटे तृणसम भाय ॥

कहे श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजै ❋ रहौ युद्ध शङ्खध्वनि कीजै
हरिपारथ तब शङ्ख बजाये ❋ पाछे श्रीपति कह मन लाये
लेहु बाण सुनु बात हमारा ❋ यही बाण बध होय कुमारा
पारथ बाण हाथ ले लीन्हे ❋ मध्यकालबधि पश्चिम दीन्हे
श्रीपतिशर मन्त्रावलि कीन्हे ❋ सोइ बाण श्रीपतिकर दीन्हे
फर पर आप चले भगवाना ❋ पारथ सो शर करु संधाना
कुँवर कहै जाने जगतारन ❋ फर पर बैठिकै आवतमारन
मेरो प्रण सुनिये प्रभु सोई ❋ हरि हर नाम भेद कछु होई
जो नहिं यह शरकाटिगिरायो ❋ तौ यह पाप जगतमहँ पायो
पारथ मारे क्रोधित बाना ❋ तीनलोक शर देखि सकाना

दो० कुँवर तेज तब बाणको, मारि माँझ शरमाहि ।
काट्यो बाण सुपार्थको, रक्षकाल ज्यहि आहि ॥

सबै देवतन अचरज माना ❋ पंखसहित आधा उड़िआना
आधा बाण लग्यो तब जाई ❋ राजपुत्र शिर काटि गिराई
जूझे कुँवर जगत यश पायो ❋ हरिकेचरण शीश उड़ि आयो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्णहि कृष्ण जपत शिर रहई ❀ धाय कबन्ध अस्त्र कर गहई
शीशहि गहे हँसत भगवाना ❀ पारथ शर कीन्हा संधाना
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा ❀ राजाके रथ डारि सो दीन्हा
तब हंसध्वज शिर लै हाथा ❀ रोदन करत ठोकिकै माथा
बहु बिलाप तो करै भुआरा ❀ ताको नहिं कीन्हा बिस्तारा
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा ❀ प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा

दो० हर्षित ह्वै हरि शीश गहि, दीन्हो गगन चलाय।
तहँ शिवशङ्कर पाय शिर, मालामुण्ड बनाय॥

दूसर पुत्र सुरथ है नामा ❀ पितुके सम्मुख कीन्ह प्रणामा
तात शोक वारण अब कीजै ❀ हमैं युद्ध की आज्ञा दीजै
पितु की आज्ञा हर्षित पाये ❀ रथ पर चढ़ि रणहेतु सिधाये
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा ❀ मानहु प्रलय गाज घनघोरा
अब कत जैहौ पारथ बीरा ❀ मेरो बन्धु मारि रणधीरा
हरी पुण्य दुइ जन्म को दीन्हा ❀ मेरो बन्धु तबहिं बध कीन्हा
यहि प्रकार सब कहा सुनाई ❀ पारथ पाहिं कह्यो यदुराई
बन्धु शोकते ब्याकुल आवो ❀ अब यासों नहिं जीतनपावो
पारथ कह्यो कौन रणधीरा ❀ सहसन बधे एक दिन बीरा
आप सहाय जगत के नायक ❀ सुरथ कहा मम जीतनलायक

दो० कृष्ण कहा पारथ सुनो, सुरथ शूर सतवन्त।
ताते प्रदुमन आदिले, लड़हु कहा भगवन्त॥

सब बीरन मिलि कुँवरहि घेरा ❀ मारु मारु कहि सबहिन टेरा
पारथ के पाछे यदुराई ❀ आगे बीर घनेरे जाई
योजन त्रय पाछे हरि आये ❀ आगे बीरन गे अटकाये
सुरथ कह्यो पारथ है काहा ❀ सुने बीर हाँके रणमाहा
हम सन रण जो करिये आछो ❀ हरि पारथ को पूछो पाछो
सुनतहि सुरथ क्रोध तब पाये ❀ बीरन ऊपर बाण चलाये
ऐसो बाण क्रोध करि मारै ❀ पैदल रथ अरु अश्व सँहारै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाणमयी जूझे रण माहाँ ❀ सबको मोहित कीन्हो ताहाँ
सबै जीति गयो पारथ पहा ❀ रहुरहु हाँक मारिकै कहा
क्रोधित मारे बाण हजारा ❀ ध्वज अरु छत्र काटिमहिडारा

दो० पारथ मारे बाण सौ, काटे राजकुमार ।
लागे बर्षन बाण तब, मानहु सावन धार ॥

पारथ शर अवसर नहिं पावै ❀ ऐसे सुरथ बाण झरिलावै
तब पारथ सों कह्यो यदुपती ❀ देखौ रथी सुरथ की गती
बन्धु शोक त्यहि मारन चहै ❀ इतना सुनि तब पारथ कहै
मार्‌यो पार्थ सुरथ रथ बाना ❀ धसिगयो रथ पाताल समाना
मार्‌यो सुरथ पार्थ रथ बाना ❀ लगत बाण रथ स्वर्ग उड़ाना
तब श्रीपति औरौ हनुमाना ❀ राखे रथ सम्भारि प्रमाना
पारथ बाण क्रोध करि जोड़े ❀ मार्‌यो रथके चारहु घोड़े
काटे सारथि छत्र निदाना ❀ कुँवरहि कह्यो पाय मैदाना
मैं मार्‌यो पारथ रथ बाना ❀ राख्यो हरिहि और हनुमाना

दो० कुँवर बाण फिरि मारेऊ, रथ पारथके माह ।
भाष्यो कहुपारथ अबहिं, रथ डारौं मैं काह ॥

सुनतहिं पार्थ पंच शर मारा ❀ मूर्च्छित भो तब राजकुमारा
क्षणक एक महँ चेतन पाये ❀ चढ़ि रथ शर शोणित लपटाये
अर्धचन्द औ कर्ण वराहा ❀ तब प्रणामकरि पारथ काहा
जो नहिं रथते तोहिं गिरावों ❀ तौ मैं बास अधोगति पावों
यह कहि पार्थ क्रोधशर छाटे ❀ ध्वजा पताक सुरथ के काटे
मार्‌यो सुरथ बाण तूरन्ता ❀ काटे ध्वजा दण्ड बलवन्ता
क्रोधवन्त पारथ शर छाटे ❀ रथ रथवान पताका काटे
तबहिं सुरथ क्रोधानल जरे ❀ लेकर गदा पार्थ से लरे
दुइ सहस्र तबहीं रथ मारा ❀ एक लक्ष मारे असवारा
गज अरु हय बहु पैदर मारा ❀ पारथ दूसर बाण प्रहारा

दो० गदा सहित करकाटिहौं, सुरथहिं कहा रिसाय ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महामारु मैं करि अहौं, सुनु पारथ मनलाय ॥
युगल बाण पारथ तब मारा ❀ दूनहुँ जाँघ काटिकै डारा
कटे जाँघ कर शङ्का नाहीं ❀ युद्ध करे लुढ़कत महि माहीं
पारथ एक बाण तब लीन्हा ❀ तामहँ शक्ति देवतन दीन्हा
मारे बाण काट शिर जाई ❀ पारथ के शिर लाग्यो आई
पारथ तहाँ रहे मुरझाई ❀ शीशपस्यो चरणन यदुराई
पारथ को श्रीहरिहिं उठायो ❀ तासों बचन कहन मनलायो
पारथ कह्यो धन्य मैं जाना ❀ मो को मूर्च्छित किय मैदाना
यहि शिरको परशै जो कोई ❀ महाशूर क्षत्री सो होई

दो० यहि प्रकार ते सुरथ को, मार्‌यो पारथ बीर।
ऋषी कहत राजा सुने, जनमेजय रणधीर॥
अश्वमेध फल पावई, मन बाञ्छितफल सोय।
भावभक्ति जिय लावई, श्रद्धा सुन रण कोय॥

इति श्रीमहाभारतेयज्ञपर्वभाषाकृतेसुधन्वासुरथबधो नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

तब श्रीपतिने गरुड़ हँकारा ❀ आयो गरुड़ तुरन्त सँचारा
हरि कह शिर प्रयाग लै जैहौ ❀ राखिशीश प्रयागमहँ ऐहौ
गरुड़ कह्यो प्रभु तीर्थ अपारा ❀ गङ्गा यमुना चरण तुम्हारा
उत शिर लैजाऊं क्यहि काजा ❀ तबहीं बचन कह्यो ब्रजराजा
सुनौ बात किय बिनय कुमारा ❀ मम भण्डार प्रागनिजभारा
सुनत गरुड़ शिर को लै चले ❀ भये मार्गमें कौतुक भले
हर गौरी तु गगन महँ आये ❀ जात गरुड़ को देखन पाये
भृंगी दूतहि शंकर कहा ❀ वह शिर लै आवो मम पहा
तब हँसि पूछहिं सती भवानी ❀ कहौ भेद सब हमहिं बखानी

दो० शंकर तब हँसिके कह्यो, सुरथहि राजकुमार।
पारथ मारे रण बिषय, सो शिर लिये सिधार॥

हरि आज्ञा प्रयाग के माहीं ❀ शीशधरेको खगपति जाहीं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोई शिर जो हम पहँ आवै ❋ मुण्डमाल के मध्य लगावै
याको अनुज सुधन्वा अहे ❋ ताको शीश प्रथम मैं गहे
अब जो शीश सुरथ को पावों ❋ मुँडमाला ग्रिव शोभा पावों
भृंगी चले गरुड़ पहँ आये ❋ जाके बचन कहन तब लाये
देहु शीश नत लिहौं छिनाई ❋ सुनतहिं गरुड़ क्रोध अतिपाई
पवन पच्छ हरि दूत उड़ाई ❋ हरको दूत हरै पहँ आई
श्वास पवन ते गरुड़ उड़ाये ❋ उड़तहिं उड़त प्रयागहिं आये

दो० गरुड़ शीशको डारिके, लौटि कृष्णढिग आय।
नन्दी ताहि उठायके, दीन्ह शम्भुको लाय॥

महादेव मुँडमाल बनाये ❋ सुरथ जूझ नृप देखन पाये
तब रणको नृप कियो पयाना ❋ देखत उतरे श्रीभगवाना
हाथ उठाय कहा भगवाना ❋ राजा राखो शारँग बाना
सुतको शोक छाँड़ि अब दीजै ❋ मेल मिलाप पार्थ से कीजै
राजा सुनत हर्ष तब पाये ❋ धाय कृष्ण के पद लपटाये
जो मैं रूप कृष्ण कर देखो ❋ पुत्र शोक मेरे क्यहि लेखो
तब पारथ से बाँह मिलाये ❋ पारथ मिले हर्ष अति पाये
पाँच दिवसमें अश्व छुड़ाये ❋ श्रीपति हस्तिनपुरहि सिधाये
धर्मराज पहँ श्रीहरि कह्यऊ ❋ सबही राजधर्म कहिदयऊ
अश्व छूट तब पार्थ सिधाये ❋ हंसध्वज को संग लगाये

दो० उत्तरदिशि अब अश्वचलु, महाभयानक देश।
महाकुञ्ज कानन बिषे, अश्वहिं कीन्ह प्रवेश॥

सरवर एक अश्व तब गयऊ ❋ प्रविशतजल अश्विनिसो भयऊ
केतिक दूर गयो दुख पागे ❋ सरवर एक और है आगे
ताको जल हय कीन्हों पाना ❋ अश्विनिते भयो बाघ प्रमाना
सभै अचम्भौ पूछहि राव ❋ याहि अर्थ मुनि हमैं बताव
अश्व अश्विनी भो केहिकाजा ❋ व्याघ्र भयो कत पूछै राजा
फेरि अश्व ह्वैहै की नही ❋ सुनि मुनि बैशम्पायन कही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सतयुग माहिं देवि तस साधे ❀ वहिसर तट शंकर अवराधे
शंकर हेतु तबहिं मन लावा ❀ असुर एक पापी मतिभावा
कह्यो तबै कत करु अज्ञानी ❀ चलौ संग करिबे हम रानी
सुनत शाप तब देवी दीन्हा ❀ भस्म तुरन्त दैत्य को कीन्हा

दो० सर परशे जो पुरुष भये, त्रिया होत परमान।
यही शापते राज सुनु, अश्विनि भये निदान॥

रक्त बर्ण मुनि सतयुग रहे ❀ दूजे सर स्नानहि गहे
करि स्नान ध्यान मन लाये ❀ सरवर को शापित भे पाये
यहि सरको जल प्रबिशै जोई ❀ निश्चय बाघसो प्राणी होई
वहि सरमाहिं अश्व जब गयऊ ❀ बाघरूप ताकारण भयऊ
पारथ मही शोध तो पाये ❀ तब सो हरिको चरण नवाये
तारो पाप सिन्धु भगवाना ❀ अश्विनि प्रभु करहू निरमाना
तबहीं दलहि ध्यान मन लये ❀ राजा सुनि प्रसन्न मन भये
सगरो दोष अश्व को गयऊ ❀ श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ
हर्षित भे तब चले चलाये ❀ स्त्री राज्य सो पहुँचे आये

दो० त्रियाराज को त्रिया सब, पुरुष नहीं है ताह।
गन्धर्बराज शाप दिय, पुरुष न जन्मेचाह॥

कीन्ह भोग तब गँधरब देखा ❀ महाक्रोध दैत्यनबध लेखा
दैत्य को मारि देश कहँ शापा ❀ पुरुष जन्म पुर होय न पापा
औरो पुरुष भोग मन धरै ❀ गये तीस दिन निश्चय मरै
यहि प्रकार ते शाप रिसाई ❀ तब गन्धर्ब स्वर्गपुर जाई
तबते देश रूप यह भयऊ ❀ श्यामकर्ण हय तहँपर गयऊ
देखत एक त्रिया तहँ आई ❀ श्यामकर्ण सो हरि लैजाई
धर्मराजको हय यह अहै ❀ पारथ रक्षक नृप ते कहै
परिमल नाम रजा इक अली ❀ हँसिकै कहेसि कीन्ह तो भली
लै हयशाला बांधेउ जाई ❀ साजि त्रियादल युद्धहि जाई

दो० हय गज पैदल रथन चढ़ि, चलीं सबै जो तीय।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रबदनी कठोर कुच, रूप बिधातै दीय ॥
पारथ पाहँ परीमल कहई ❋ अबहूँ आश अश्वके अहई
आशा तजहु भोग करु आई ❋ युद्ध करै तौ कालहि खाई
तबहिं सबै दल मोहित भयऊ ❋ कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहेऊ
पारथ कह्यो सुनहु हो त्रिया ❋ तुम्हरेपहँगये पुरुष न जिया
परिमल कहै काल तब आये ❋ युद्ध माहिं जय कोधौं पाये
सतते भोग करौ मनलाई ❋ सुख में करौ परम सुख पाई
युद्ध करी जय पैहौ नही ❋ सुनिकै अस्त्र पार्थ तब गही
मोहन बाण हने तब पारथ ❋ हँसी त्रिया कह भये अकारथ
सुर नर मुनी शंभु उर धरें ❋ देखत हमहिं तासु मन हरें
मोहन बाण करहि का मेरो ❋ पारथ आज काल है तेरो

दो० मोहन बाण हमार है, देखत मोहत शंभु ।
मोहन बाण तुम्हार जो, मम का करत अनंभु ॥

नई बैस नवयौवन वारी ❋ मृगनयनी सरोज रतनारी
जब पारथ क्रोधित शर गहे ❋ तब देवन नभ दुन्दुभि महे
यह कहि पञ्चबाण तब मारे ❋ और सहस्रन बाण प्रहारे
तिरिया बधे पाप हो पारथ ❋ प्रीति करौ तो होवे स्वारथ
पारथ सन तो प्रीति बिचारो ❋ परिमलते जो बचन सँचारो
यज्ञहि होत योग मन लइये ❋ लैकै दल जो मम इतअइये
नातो पुरी हस्तिना जइये ❋ फिरव तुरन्त मोहिं प्रतिपलिये
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना ❋ पुरीहस्तिना करिय पयाना
छूटा अश्व पार्थ तब चले ❋ क्षत्री बीर सङ्ग सब भले

दो० ऐसे तरु देखे सबै, फूलसुरभि परमान ।
औ मनुष्यसम फल लगे, अचरजभयो महान॥

देखत सबहिन अचरज माना ❋ देखत चले अश्व परधाना
एक नैन देखा बँगदेशा ❋ देश बिदेश और प्रबिदेशा
गजके श्रवणन सम हैं काना ❋ एक देश देखा परमाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीन नयन अरु तीनै नासा ❋ एक देश ऐसा परकासा
एक देश नरसिंह स्वरूपा ❋ भोग गंधरब सुख अनुरूपा
यहि सब देश अश्व तो गयऊ ❋ जीते सबै बश्य तब भयऊ
चलत अश्व आये पुनि तहां ❋ भीषम नाम दैत्य रह जहां
एक चक्रवर्ती पुर आना ❋ तहँको अश्वहिं कीन्ह पयाना
मेटु हाथ दो मोहित अहैं ❋ सुनी बात यह नृपते कहैं
अर्जुनादि सब लाय तुरंगा ❋ जासू बन्धु तोर पितु भंगा

दो० पिता शत्रु तुव आवत, बधौ ताहि महराज।
रणमें धाओ बाण लै, यज्ञ करो जगसाज॥

चारि मासके ब्रत हम अहैं ❋ निराहार हैं तुमते कहैं
मदिरा रक्तासव नहिं खाये ❋ बालक यती भाइ जे पाये
जटाधारि अस्नान अहारा ❋ कार्त्तिक कन्या भक्ष अपारा
अब तौ वारन कीन्हे चहौं ❋ बधौं पार्थही ताते कहौं
भीषम सुनिकै क्रोधित भये ❋ युद्धहिं हेतु चलन मन दये
कोटिन दल लै दैत्य सिधायो ❋ लङ्काकी निशिचरि बहु आयो
दैत्यनि एक दीख हनुमाना ❋ भागु भागु सो करै बखाना
वह बन्दरकै जाना भाई ❋ पलमहँ लङ्कापुरी जराई
सुने एक अरु कहे बुझाई ❋ नरके मारे कौन बड़ाई
मानुष मारे रावण राऊ ❋ मैं कुचते सब सैन्य गिराऊ

दो० औरौ भाषो एक तो, तोरौं कुच सम बेल।
कुचको अग्र हमारहू, याजन इकका मेल॥

यह कहि स्वर्ग माहँ सो गई ❋ पारथको दल गो भहराई
बहुते दल तो मारौ जाई ❋ दलपर जाय प्रकट तो भाई
लेकर दल तो आगे आय ❋ पारथ पाहँ कहे समुझाय
तोको हतिकै भीम सँहारौं ❋ पिता बैर लै यज्ञ सँवारौं
यह कहि बाण बृष्टि करलाये ❋ बृक्ष पहाड़ अनेक चलाये
लक्ष बाण तब पारथ मारा ❋ पर्बत बृक्ष अस्त्र भौ छारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वह दैत्यनी बड़ो दुख दीन्हा ❋ पारथ बीर बाण तब लीन्हा
मारे रथ पैदल असवारा ❋ दैत्यन दल तो बहु संहारा
प्राणअन्त भयऊ जब जाना ❋ तब राक्षस माया निर्माना

दो० बाघ सिंह औ गऊ सम, सेना भयो प्रमान।
भीषम वह अचरज भयो, तपा रूप परवान॥

माया ते पारथ तब कहै ❋ येह दैत्य देता दुख अहै
पारथ तौ माया सब जाना ❋ तुर्तहिं बधे ताहि परमाना
छूटे प्राण दैत्य तब गयऊ ❋ महाहर्ष पारथ को भयऊ
सब सेना को पल महँ मारा ❋ जीते रणमहँ पाण्डुकुमारा
मरे दैत्य जब सब हर्षाना ❋ पारथ रथ बैठे हनुमाना
चले अश्व तौ किये पयाना ❋ पारथके सँग दल बहु नाना
यौवनाश्व नीलध्वज राऊ ❋ हंसध्वज बृषकेतु सिधाऊ
मेघ बर्ण आहै अनुशाला ❋ कामदेवही पुत्र गोपाला
चले अश्व के पाछे जाय ❋ अश्व चला तौ तेज पराय
चले अश्व तब आये तहाँ ❋ मणिपुर नाम ग्राम इक जहाँ

दो० सत्यवन्त सब क्षत्रिगण, इक नारी ब्रत बेश।
सब राजा कर देत हैं, अर्जुन पुत्र नरेश॥
पुरउपमानहिंजातकहि, जनु कैलास समान।
ऐसी शोभा देखि तहँ, पुर इन्द्रासन जान॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञपर्व भाषाकृते भीषमदैत्य-बधोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

बैशम्पायन करै बयाना ❋ पुर उपमा नहिं जात बखाना
पारथ संग बीर जो रहैं ❋ बड़े बली हैं सब मिलि कहैं
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना ❋ तत्क्षण देखे मृत्यु निशाना
गीध उड़ैं पारथ शिर लागे ❋ सबहिं देखि तौ संशय पागे
नगर लोग अश्वहि तब देखा ❋ गे राजा ते कहैं बिशेखा
सुनतहि राजा बीर पठाये ❋ श्यामकर्ण को तुर्त मँगाये

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कञ्चनपत्र शीश पर रहेऊ ❋ पठये राव जान सब अहेऊ
तब राजा मन्त्री सन कहै ❋ धर्मराज को हय यह अहै
पारथ ताको रक्षक अही ❋ मेरे पितु अस राजा कही
ताते मन्त्री कहै बिचारी ❋ कौनी बुद्धि करौं अब भारी

दो० तात भङ्ग मम तात करु, शापे तोकह तात।
ग्राह भई ता कारणे, पारथ तारु सख्यात॥

पारथको स्पर्श जब लीन्हा ❋ ऐसे त्रिया ब्याह तौ कीन्हा
छांड़ि गये होते जो ताता ❋ अब हम भेट करब सख्याता
करि मन प्रेम बुद्धि बीचारा ❋ आने अश्व कौन परकारा
मन्त्री कहै अश्व लै मिलो ❋ राजा कहै मन्त्र यह भलो
तब राजा बहु साज बनाये ❋ नाना द्रव्य अनेक मँगाये
नाना राग रङ्ग तब ठाना ❋ श्यामकर्ण लै किये पयाना
गज ते उतरि राव तब गये ❋ पारथ चरण माथ तब दये
मैं अब पुत्र तोहार प्रमाना ❋ चित्राङ्गदा गर्भ निर्माना
सम्पति राज्य लेहु अब ताता ❋ कीजै कृपा जन्मकर दाता
पारथ के दलका सरदारा ❋ सब पारथ सों कहै सुसारा

दो० पारथ मिलो न पुत्रते, देखौ सुतकर देश।
शीश चरण दै सुनि रहे, मणिपुरपती नरेश॥

पारथ उपजो क्रोध अपारा ❋ नृपके हृदय लात इक मारा
भाषत तोहिं लाज नहिं आवै ❋ बैश्यगती मम पुत्र कहावै
मोसे जन्म तोर नहिं अहै ❋ मेरो पुत्र ऐस नहिं कहै
अभिमन्यु पुत्र जानु संसारा ❋ चक्रव्यूह अकेल संहारा
नाच गान गन्धर्ब को काजा ❋ राजा भे तुहिं नेकु न लाजा
अश्वहि गहे सर्व मन लाये ❋ भय आतुर तब देखन पाये
युद्ध न भौ तोहिं शरणन लागे ❋ देखत भय आतुरते पागे
बभ्रूबाहन सुनत रिसाना ❋ क्रोधवन्त ह्वै बचन बखाना
और सही सब जो तुम कही ❋ एक बात तौ जात न सही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहे बैश्य सुत मोकहँ मारी ❋ तौ मम मातु भई व्यभिचारी
दो० अब तौ अश्व न देब हम, सुनु पारथ यह बैन ।
बैश्यनते हय लेउ अब, देखौं क्षत्री नैन ॥
यह कहि अश्व बाँधि लैगयऊ ❋ तब रणहेतु युद्ध मन दयऊ
नृपको दल निकरो अति भारी ❋ आगे भये बीर धनुधारी
अश्वहिं राखि गेह नृप आये ❋ महाक्रोध युद्धहि मन लाये
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ ❋ महागर्ब ते गारी दयऊ
अब आवतहौं युद्धहि करे ❋ सुनत क्रोध अनुशल्वा जरे
नऊ बाण मारे अनुशल्या ❋ बभ्रुबाहन क्रोध भौ कल्या
धनुष सँभारा सौ शर छाटे ❋ तीनि बाणते इन्ह दल काटे
तब राजहिं भयो क्रोध अपारा ❋ लगे बाण बर्षन जलधारा
भीजे रक्त दोऊ सरदारा ❋ ऋतु बसन्त टेसू परकारा
चारि बाण राजा तब मारे ❋ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे
दो० पांच बाण ते सारथी, काटे ध्वजा निशान ।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल्व लागे बान ॥
भयो क्रोध अनुशल्व भुवारा ❋ औरे रथहिं भये असवारा
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❋ रथ समेत ते काम बहाये
शर शारंग करै संधाना ❋ मारे राव सहस इक बाना
तबहिं गदा लै राजा धाये ❋ जाय धाय अनुशल्वहु लाये
तापाछे नौ बाणहि मारा ❋ मूर्च्छा भौ अनुशाल्व भुवारा
सारथि लेकै तुरतहि आये ❋ पाछे कामदेव तब धाये
रहुरहु करिकै शर दश छाटे ❋ अयुत शरन ते राजहि काटे
दोनहुँ बीर लगे शर मारन ❋ सौते सहस हजार हजारन
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे ❋ बाणन बिना और नहिं सूझे
रुण्ड मुण्ड तब भे बहुताई ❋ रक्तनदी तहँ बहु बढ़िआई
नदी तरङ्ग बहत है भारी ❋ योगिनि सब तौ करैं धमारी
दो० कामदेव ने रण कियो, रक्त बहायो खेत ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रुण्डमुण्ड भय मेदिनी, नाचहिं योगिनि प्रेत ॥
जबहिं काम ऐसे शर ठाना ❀ तौ मणिपुरपति क्रोधरिसाना
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❀ रथ समेत तौ काम छुपाये
कामहि तनु तौ झंझर भयऊ ❀ ऐसी मार कामको दयऊ
दोनों बीर तजें क्रोधित शर ❀ होनलगी अति मार परस्पर
राजा मार्‍यो बाण रिसाई ❀ मोहित कामदेव भे आई
साँग गदा तब लेकर झाटे ❀ तीन बाण ते गद नृप काटे
दोनों शर मारहिं रिसिआई ❀ तब दोनों मूर्च्छित भयेजाई
क्रोधित राजा मार्‍यो बाना ❀ मूर्च्छित भयो काम मैदाना
मूर्च्छित काम बहुत दल मारे ❀ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे
बिकट कबन्ध रूप तब धावें ❀ योगिनि गण तो मङ्गलगावें
दो० हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूं रुण्ड कहुँ मुण्ड ।
नाना अस्त्र सुहाथ महँ, मारत धावत रुण्ड ॥
बीर अनेकन पारथनन्दन ❀ पारथको दल कियो निकन्दन
तब अनुशल्व चेत भो धाये ❀ प्रद्युमन चेतत आगे आये
हंसध्वज नीलध्वज राई ❀ यौवनाश्व सूबेग सिधाई
मेघबर्ण आदिक सरदारा ❀ वह अकेल मणिपुरी भुवारा
सबै बीर मिलि शर तो झाटे ❀ पारथपुत्र सबै शर काटे
जूझे बीर खेत मों लाखन ❀ महामारु भै सकि को भाखन
सुर तुरंग जूझी नहिं परे ❀ कायर प्राण प्रथम तो हरे
लड़ि लड़ि शूर तजें तब प्राना ❀ गये अमरपुर बैठि बिमाना
सुरकन्या सँग रम सुख पाये ❀ अपनी देह अवनि दिखराये
कुञ्जर अश्व पदादिक नाना ❀ जूझे बहुत न जाय बखाना
दो० जैसे लव कुश रामते, मारु भई बिपरीति ।
पारथसुत अरु पार्थ ते, युद्ध होत यहि रीति ॥
राम कथा सब मुनि तब कहे ❀ जैसे रण तहँ होते भहे
पारथनन्दन बाण प्रहारा ❀ मूर्च्छित भो अनुशाल्वभुवारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

औरौ बाण काम को लागे ❋ मूर्च्छित भये नेकु नहिं जागे
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना ❋ यौवनाश्व लीन्हें तब बाना
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे ❋ पारथपुत्र मांझ तौ काटे
पारथसुत तब मारे बाना ❋ यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना
तब सुबेग अमरष भरि धाये ❋ मणिपुरपति पर बाण चलाये
मध्यबाण तब राजा काटे ❋ बाण सुबेग और तब छाटे
मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ ❋ पलक माहँ चेतन तब पाऊ
चेत भये तब मास्यो बाना ❋ तब सुबेग मूर्च्छित मैदाना

दो० मेघवर्ण तब धायऊ, करले शारँग बान ।
महायुद्ध तब लागेऊ, राजा सुनहु बखान ॥

मेघवर्ण पुरुषारथ करे ❋ दल अनेक खेतन महँ परे
जबहिं मणीपति मास्यो बाना ❋ मेघवर्ण मूर्च्छित मैदाना
मेघवर्ण मूर्च्छा जब पाये ❋ तब हंसध्वज राजा धाये
रहु रहु करि मारे तब बाना ❋ मणिपति को छाये मैदाना
ऐसे शर तब राजा मारे ❋ रथ सारथि पैदल संहारे
हंसध्वज कीन्हा प्रभुताई ❋ पांच क्षौहिणी मारि गिराई
क्रोधित भये मणीपुर राऊ ❋ हंसध्वजपर बाण चलाऊ
रथ सारथी कीन्ह नीदाना ❋ हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना
जेते बीर सबै बध भये ❋ बृषकेतू सों पारथ कहे
जैये पुत्र हस्तिना देशहि ❋ कहोजाय सुधि धर्मनरेशहि

दो० कहो जाय वृत्तांत सब, अग्र राधिकारौन ।
जो तुम जूझे रण विषे, कहै जाय सुधि कौन ॥

तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै ❋ हमहिं शाप दै प्राण गँवैहै
जब पारथ यह कहे बखानी ❋ तब देखा है मृत्यु निशानी
पारथ उपर गृध्र उड़ि आये ❋ रुण्ड छाँह लखि पारथ पाये
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ ❋ यह अब कष्ट जाय समुझाओ
मोरे बलहि यज्ञ नृप करै ❋ मोपर काल आय अब नियरै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखन यज्ञ नैन नहिं पाये ❀ यह बड़ शोच मोरमन आये
दण्ड सहस्र छत्र जेहि लागे ❀ सोइ चला राजाके आगे
यज्ञ माहँ दीन्हा नहिं दाना ❀ नृपने कीन्ह शेष अस्थाना
गंगा जल नहिं रानी भरै ❀ यही शोच मोरे जिय धरै
जाहु तुरन्त कर्णके नन्दन ❀ कहौजायकै जहँ जगवन्दन

दो० कर्णपुत्र तब असकह्यो, जो रण तजि हमजाहिं ।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटिपरैं भुवि माहिं ॥

रहै सुयश सब यहि संसारा ❀ यहिते भल जो मृत्युबिचारा
ताको जन्म सफल है पारथ ❀ जो तन धन देवहि परस्वारथ
तन धन निष्फल ताको गयो ❀ पर उपकार बिमुख जो भयो
जीतैं यज्ञ बड़ाई पावें ❀ जूझैं स्वर्गलोक को जावें
उत्तम देह पार्थ परमाना ❀ मणिपुरनृप है तृणहि समाना
बहुप्रकार पारथ समझायो ❀ कर्णपुत्र के हृदय न आयो
शारँग बाण हाथ करि लीन्हा ❀ रथचढ़ि तबहिं हांकतो दीन्हा
और बीर सम हमैं न जानौ ❀ अब हमते रण तुमहीं ठानौ
यह कहि तीन बाण फटकारा ❀ लगे मणिपतीगात भुवारा

दो० तब सँभारि मणिपुरपती, मारे बाण प्रचण्ड ।
सहित अश्वके सारथी, काटि किये नौ खण्ड ॥

कर्णपुत्र क्रोधहि तब पाये ❀ एक लक्ष तब बाण चलाये
रथ सारथि काटे पल माहा ❀ दोनों बीर बड़े बल बाहा
पारथपुत्र कहै तब बैना ❀ तो सम बीर न देख्यों नैना
कर्णपुत्र शर ऐसे मारा ❀ पर्बत पवन छाय अँधियारा
रवि कुबेर औ यमके बाना ❀ ते सब कुँवर करै संधाना
लेकर शम्भु बाण तब अत्रहि ❀ ताते हते पताका छत्रहि
मणिपुर नृपति हने अस बाना ❀ कर्णपुत्र नभ कियो पयाना
रविमण्डल मो पल इक रहे ❀ पितु प्रपिताके दर्शन भये
तबहिं बीर बसुधा पर आवा ❀ पारथसुत तब बचन सुनावा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० बिनतासुत जिमि इन्द्रबध, तैसे हति तुव प्रान ।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान ॥

तबमणिपुरपति स्वर्गाहि गयऊ ❀ सूर्यतेज महँ छिपि सो रह्यऊ
वहँते जबहीं कीन्ह पयाना ❀ तोसम बीर न देख्यो आना
तब फिरि गये सूर्यके पाहा ❀ अंग अंग तनु जर नरनाहा
पुत्र सुपुत्र कहे रिसिआई ❀ हंसध्वजको बधि प्रभुताई
ताते स्वर्ग देखायो तोहीं ❀ अजहूं बीर न चीन्ह्यो मोहीं
मणिपुरपति तब बसुधा आये ❀ बृषकेतू पर बाण चलाये
कर्णपुत्र स्वर्गाहि महँ गयऊ ❀ पाछे प्रकट भूमिमहँ भयऊ
कबहुँ अकाश कबहुँ धरधरनी ❀ पार्थ ठाढ़ देखत रणकरनी
बाण लगे तब मांस उड़ाये ❀ अन्तरिक्ष महँ पक्षी खाये
पांचदिवसलौं तब रण कीन्हा ❀ रैनिदिवस सांसहुनहिं लीन्हा

दो० मारे बाणजु क्रोधकर, मणिपुरपती नरेश ।
काटि शीश बृषकेतु कर, भये युद्ध करशेश ॥

उठी कबन्ध अस्त्र तो धरे ❀ शिर पारथ के रथ पर परे
हय रथ पैदल रुण्ड सँभारे ❀ देखा पार्थ रुदन संचारे
हा हा कर्णपुत्र धनुधारी ❀ सुन्दर मुख बलिजाउँ तुम्हारी
कुन्ती नृप भाई यदुराई ❀ इन सबते का कहिहौं जाई
बहुप्रकारते रोदन करही ❀ बिबिध भाँति बिलापसंचरही
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा ❀ आवतको नहिं दोष तुम्हारा
कर्णपुत्र का बदन निहारी ❀ मोहित भये पार्थ धनुधारी
शीश गोद लै मुर्च्छे पारथ ❀ रसना रटै श्रीपती सारथ
पारथ मूर्च्छित राजैं देखा ❀ आय निकट तौ कही बिशेखा
देखे मूर्च्छित पारथ आई ❀ बभ्रुबाहन परमसुख पाई

दो० मूर्च्छित जाने तात कहँ, धनुषहि अग्र उठाय ।
कछु बचन कहि मणिपती, भाषतकटकसुभाय ॥
सुनिये राजा श्रवण दै, ताको करौं बखान ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शोच किये का काम है, गहौ धनुष कर बान ॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधपर्वभाषाबभ्रुवाहनयुद्धकर्ण-पुत्रवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

बैशम्पायन करैं बखाना ❋ पारथपुत्र कह्यो परमाना
सुत बैश्यन को तब तुम कहेऊ ❋ ताकारण ते रण हम गहेऊ
सूझि परत नहिं क्षत्रिय कोई ❋ बैशम्पायन हय ले सोई
एते दल महँ बीर न ऐसे ❋ कर्णपुत्र कहँ देख्यो जैसे
तुम क्षत्री हम बैश्य सख्याता ❋ करौ युद्ध ऐसी कहि बाता
यह सुनि कर तब पारथ जागे ❋ महा खँभार क्रोध में पागे
बाण धनुष तब कर में लीन्हा ❋ क्रोधितह्वै रथचढ़ि शुभकीन्हा
करिकै क्रोध कहा यह पाहा ❋ रे मणिपुरपति जैहै काहा
मेरो दल तुमने सब मारा ❋ तोहिं बधौं अब पांडुकुमारा
औरो बहुत बात कहि आये ❋ बाणबृष्टि तो पारथ लाये

दो० क्रोधित पारथ बीर तब, बाण बृष्टि झरि लाय।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब भहराय ॥

कृतबर्मा को उत्तम साथी ❋ अश्वत्थामा नामा हाथी
भीमउपर कुंजर जब धायो ❋ बीचहि अर्जुन मारि गिरायो
प्रलयकाल महँ शंकर जैसे ❋ पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे
पारथ बाण करै संधानहि ❋ देखे कोइ न मर्महि जानहि
छूटत बाण न देखे पायो ❋ तब देख्यो जब मारिगिरायो
मणिपुरपति तब बिचले जाई ❋ पारथ लगे कोट महँ आई
बाण घावते गढ़ तब तोरे ❋ शर के घाव कँगूरा फोरे
नगर नारि नर रानी भागी ❋ शर ते पावक पुरमें लागी
जबहीं पारथ किय प्रभुताई ❋ क्रोध भये मणिपुरके राई
मारे बाण मणीपुर राऊ ❋ चारों हय के लागो घाऊ
तीनि बाण पारथ को मारे ❋ एक बाण ते छत्र सँहारे
सात बाण मुर्च्छे तब बीरा ❋ बेरथ भये पार्थ रणधीरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० तब दोऊ जन भूमि महँ, युद्ध करत बिपरीत।
महामारु को कहिसकै, देखत सब भये भीत॥

पारथ ने जेते शर छाटे ❀ मणिपुरपति तुर्तहिं सब काटे
बभ्रुबाहन बोलै तब कीन्हा ❀ अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये ❀ सारथि भे हरि सदा बचाये
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे ❀ कृपिणी के घर भिक्षुक जैसे
मम माता है सती प्रमाना ❀ ताको दोष दीन्ह अज्ञाना
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना ❀ निष्फल होत ताहिको बाना
यह अपराध बूझ दै गारी ❀ अजहूं सुधिनाहिंलीन्हतुम्हारी
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना ❀ तबलगि हम नाहिं मारहिंबाना
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा ❀ मणिपति घायलभये अपारा
बभ्रुबाहन क्रोधित शर मारा ❀ बाणनते ह्वैगो अँधियारा

दो० प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुवार।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये ❀ पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये
गङ्गा शाप तुलानेउ आई ❀ बिसरा बल औ बुद्धि नशाई
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा ❀ लीन्हें अर्धचन्द्र शर हाथा
गङ्ग वैर लै ज्वाला रानी ❀ अर्धचन्द्र शर आप समानी
उहै बाण लै धनु संधाना ❀ तेज मनो द्वादशहू भाना
देखत शर पारथ अकुलाना ❀ लक्ष बाण बहु किय संधाना
पावक बाण लगे तब झारन ❀ पै वह बाण लगै नहिं टारन
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई ❀ तजे कबन्ध शीश उड़ि जाई

दो० कार्त्तिक सुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलबार।
सांझ समय जूझ तहां, पारथ पाण्डुकुमार॥

पारथ बध राजा तब धाये ❀ शंखध्वनि करि हर्ष मनाये
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं ❀ बन्दीजन तौ अस्तुति साजैं
नगर माहिं तब भूपति चले ❀ नाना शकुन होत सब भले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब अन्तःपुर को शुभ कीन्हा ❀ रानी उतरि आरती लीन्हा
राजा सुनि तब आनँद मानो ❀ जीते सुत बहु हर्ष बखानो
दासी एक जाय कहि तहां ❀ चित्राङ्गदा उलूपी जहां
महाबीर है पुत्र तुम्हारा ❀ पारथ को कीन्हा संहारा
सुनत दोउ मूर्च्छित भुविपरी ❀ दासी सब तब बिस्मयकरी
राजा पाहिं कहा तब जाई ❀ माता दोउ मूर्च्छा खाई
सुनतहिं राजा अचरज पाये ❀ देखन मातुहिं तुर्त सिधाये

दो० कोइचन्दन कोइ पवनकरि, हाहा करत पुकार।
अस देखा दोउ मातु कहँ, मणिपुरपती भुवार॥

अलङ्कार बिन बिधवा जैसे ❀ मातुहिं जाय दीख नृप तैसे
माता कहँ तब भूप उठाये ❀ औरो बचन कहे मन लाये
हर्ष माहिं दुखभो का जाना ❀ माता हम सों कहौ बखाना
मेरो सुयश सुनौ अस माता ❀ पारथ कहँ मारयों सरुयाता
हंसध्वज नीलध्वज राजा ❀ यौवनाश्व प्रदुमन रणगाजा
अनुशल्वा सुबेग जूझारा ❀ और महाबल कर्णकुमारा
अलङ्कार पहिरौ हे माता ❀ देखत हैं अब मङ्गलदाता
सुनत बचन माता तब कहै ❀ हे सुत तुम पापी बड़ अहै
पारथ कन्त हमारो अहै ❀ मेरो सुत ह्वै पापहि कहै

दो० मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतार्यो आज।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवै लाज॥

यज्ञनाशि धर्महिं दुख दीन्हे ❀ कुन्ती कहँ पारथ बिन कीन्हे
युद्ध समय पूछेउ नहिं मोहीं ❀ पापी पापबुद्धि भइ तोहीं
हम अब कन्तहि संग सिधावै ❀ रे पापी म्वहिं कन्त देखावै
यह कहि दोउ तिय बाहर गईं ❀ बिस्मय राय बहुत बिधिभईं
तब उलुपी भाषण अस कहई ❀ एक परीक्षा पियकै अहई
आप बिलोकत हैं अब रोय ❀ है उपाय करि सकै जो कोय
मणी सजीवन अहै पताला ❀ प्राण सजीव होय ततकाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० तब दोऊ जन भूमि महँ, युद्ध करत बिपरीत।
महामारु को कहिसकै, देखत सब भये भीत॥

पारथ ने जेते शर छाटे ❀ मणिपुरपति तुर्तहिं सब काटे
बभ्रुवाहन बोलै तब कीन्हा ❀ अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये ❀ सारथि भे हरि सदा बचाये
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे ❀ कृपिणी के घर भिक्षुक जैसे
मम माता है सती प्रमाना ❀ ताको दोष दीन्ह अज्ञाना
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना ❀ निष्फल होत ताहिको बाना
यह अपराध बूझ दै गारी ❀ अजहूं सुधिनहिंलीन्हतुम्हारी
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना ❀ तबलगि हम नहिं मारहिंबाना
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा ❀ मणिपति घायलभये अपारा
बभ्रुवाहन क्रोधित शर मारा ❀ बाणनते ह्वैगो अँधियारा

दो० प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुवार।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये ❀ पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये
गङ्गा शाप तुलानेउ आई ❀ बिसरा बल औ बुद्धि नशाई
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा ❀ लीन्हें अर्धचन्द्र शर हाथा
गङ्ग बैर लै ज्वाला रानी ❀ अर्धचन्द्र शर आप समानी
उहै बाण लै धनु संधाना ❀ तेज मनो द्वादशहू भाना
देखत शर पारथ अकुलाना ❀ लक्ष बाण बहु किय संधाना
पावक बाण लगे तब झारन ❀ पै वह बाण लगै नहिं टारन
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई ❀ तजे कबन्ध शीश उड़ि जाई

दो० कार्त्तिक सुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलबार।
सांझ समय जूझे तहां, पारथ पाण्डुकुमार॥

पारथ बध राजा तब धाये ❀ शंखध्वनि करि हर्ष मनाये
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं ❀ बन्दीजन तौ अस्तुति साजैं
नगर माहिं तब भूपति चले ❀ नाना शकुन होत सब भले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब अन्तःपुर को शुभ कीन्हा ❀ रानी उतरि आरती लीन्हा
राजा सुनि तब आनँद मानो ❀ जीते सुत बहु हर्ष बखानो
दासी एक जाय कहि तहां ❀ चित्राङ्गदा उलूपी जहां
महाबीर है पुत्र तुम्हारा ❀ पारथ को कीन्हा संहारा
सुनत दोउ मूर्च्छित भुविपरी ❀ दासी सब तब बिस्मयकरी
राजा पाहिं कहा तब जाई ❀ माता दोउ मूर्च्छा खाई
सुनतहिं राजा अचरज पाये ❀ देखन मातुहिं तुर्त सिधाये

दो० कोइचन्दन कोइ पवनकरि, हाहा करत पुकार।
अस देखा दोउ मातु कहँ, मणिपुरपती भुवार॥

अलङ्कार बिन बिधवा जैसे ❀ मातुहिं जाय दीख नृप तैसे
माता कहँ तब भूप उठाये ❀ औरो बचन कहे मन लाये
हर्ष माहिं दुखभो का जाना ❀ माता हम सों कहौ बखाना
मेरो सुयश सुनौ अस माता ❀ पारथ कहँ मारयों सरुयाता
हंसध्वज नीलध्वज राजा ❀ यौवनाश्व प्रदुमन रणगाजा
अनुशल्वा सुबेग जूझारा ❀ और महाबल कर्णकुमारा
अलङ्कार पहिरौ हे माता ❀ देखत हैं अब मङ्गलदाता
सुनत बचन माता तब कहै ❀ हे सुत तुम पापी बड़ अहै
पारथ कन्त हमारो अहै ❀ मेरो सुत ह्वै पापहि कहै

दो० मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतार्यो आज।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवै लाज॥

यज्ञनाशि धर्महिं दुख दीन्हे ❀ कुन्ती कहँ पारथ बिन कीन्हे
युद्ध समय पूछेउ नहिं मोहीं ❀ पापी पापबुद्धि भइ तोहीं
हम अब कन्तहि संग सिधावै ❀ रे पापी म्वहिं कन्त देखावै
यह कहि दोउ तिय बाहर गईं ❀ बिस्मय राय बहुत बिधिभईं
तब उलुपी भाषण अस कहई ❀ एक परीक्षा पियकै अहई
आप बिलोकत हैं अब रोय ❀ है उपाय करि सकै जो कोय
मणी सजीवन अहै पताला ❀ प्राण सजीव होय ततकाला

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जीवहि पारथ जो मणि आवै ❀ बभ्रुवाहन सुनतै सचुपावै
हमरे पितुसन शंकर हारे ❀ बलसम भो को सर्प बिचारे
मैं पताल चलि मणि लैआवों ❀ जीतिनाग अब तात जिआवों
सुनत मातु कह हेतु बुझाई ❀ पुत्र न करु यह बाड़ लरिकाई
बिषम बिषैल तेज प्रत्यक्षक ❀ पन्द्रह कोटि नाग जहँ रक्षक

दो० सौ मुख कोइ दुइसै बदन, कोइ बदन सौतीन ।
चार पांच छः सात सौ, बदन आठ सौ कीन ॥

नागन केर मणी है प्राना ❀ परस्वारथ जिय देत को दाना
रहो पुत्र मैं मन्त्र उपावों ❀ अपनो भूषण पितहिं पठावों
तबहीं मन्त्रि बोलिकै लीन्हा ❀ सबै आभरण साथहि दीन्हा
कहियो जाय पिता के पाहीं ❀ तुव दुहिता बिधवा भइ आहीं
मणी देहु तौ तात बचायो ❀ कह्यो तबहिं इकज़ो जब पायो
तात पाहँ जो सहोदर कहेऊ ❀ खलुकै रहो रहा नहिं चहेऊ
पुण्डरीक मन्त्री कह बाता ❀ नाशहोय तनु पार्थ सख्याता
पिण्ड लगै तो मणि का करही ❀ कैसे प्राण फेरि संचरही
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई ❀ सुनत बभ्रुवाहन तब कहई

दो० बड़े बड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात ।
जाहुडसी यह कहैं सब, मणिपति कहसख्यात ॥

तब मन्त्री सबकहँ जो डसेऊ ❀ हर्षित होय पतालहि धसेऊ
पञ्च पेड़ दाड़िम के अहहीं ❀ ताहि देखि अब मोते कहहीं
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं ❀ पांचौ पेड़ आपुते जरहीं
जौनि परीक्षा मृतकै पावो ❀ तो हम तुम मिलि प्राणगँवावो
देखो जाय जरे तरु आहैं ❀ तब रोदन करि चलिपियपाहैं
हाहा कन्त पुकारत चली ❀ संगहि उलुपी रोवत भली

दो० देखा जाये शीश भुइँ, दोउ त्रिया लागि पावँ ।
शीश लगाये हृदयमहँ, देह परी केहि ठावँ ॥

रोदन करत कन्तको देखी ❀ बहुत विलाप न जाय बिशेखी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हा हा कन्त किरात सँहरेहू ❀ राहु बेधके द्रुपदी हरेहू
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो ❀ नृप बिराटके गऊ छोड़ायो
पावक शरण होत नरनाथा ❀ बन अखण्ड जार्‌यो हरिसाथा
रुदन करै अरु बात संचारी ❀ सुत मम शीशकाटि महिडारी
माता कह सुनिये अबराई ❀ दीजै कठिन चिता बनवाई
तजिहौं कन्त संग मैं प्राना ❀ सुनि रोदन करि पुत्र बखाना
पितुको जानि अश्व लै गयऊ ❀ मिलत तात गारी मोहिं दयऊ
सो माता अब कहा न जाय ❀ यहिते क्रोध हृदय मम आय
जन्मत हमैं मातु बध करती ❀ शोकसिन्धु केहि कारण परती

दो० बिभवबिलासहुलास रस, बिनपारथकेहिकाज ।
निश्चयअबपावक जरौं, स्वामी संग लै साज॥

सेवक बोलिकै राजा कहैं ❀ रचौ चिता जरनो हम चहैं
चित्राङ्गदा सुनत तब कहै ❀ आपुहिं जरौ हेतु का अहै
लै भूषण तौ चली प्रवेशा ❀ प्रथम गये ब्यालन के देशा
सुतल तलातल सब परमाना ❀ देखे जाय लोक तहँ नाना
नागसुता सब धर्म सुशाला ❀ देखत पहुँचे सप्त पताला
गङ्गधार देखन जब पाये ❀ तब गङ्गा पहँ शीश नवाये
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा ❀ पूजत हरहि और नहिं दूजा
नागसुता सब देखहिं नाना ❀ मदनरूप लखि चित्तलोभाना
पूजि देवता तुर्त सिधाये ❀ सुधाकुण्ड तब देखन पाये
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं ❀ हरित बदन जे उपमा धरहीं
ताहि देखिकै अग्र सिधारा ❀ पहुँचे शेषनाग दरबारा
कर्कोटक जहँ मन्त्री अहै ❀ हरित बर्ण ते शोभित रहै

दो० भरी सभा महँ मन्त्री, दीन्ह आभरण डारि ।
तुव दुहिता बिधवा भई, भाषै बात बिचारि॥

सो कन्या मणिहेतु पठाई ❀ जाते पार्थ जिये सुखदाई
सुनिकै शेष अचम्भौ माना ❀ सबै कथा जो पूछि प्रमाना

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कैसे पार्थ तज्यो है प्राना ❋ पुण्डरीक सुन कियो बखाना
धर्मराज यज्ञहि निर्माये ❋ हयरक्षक अर्जुनहिं पठाये
बहुत देश जीतत जब आये ❋ तब मणिपुर जो अश्वसिधाये
बभ्रूबाहन पार्थकुमारा ❋ गह्यो अश्व जब सुने भुवारा
पिता जानि मिलने जब गये ❋ तब पारथ बहु गारी दये
तात क्रुद्ध ह्वै रण अनुसारा ❋ सब दल सहित पार्थ को मारा
तुव कन्या सब विनय प्रमाना ❋ है सरवर संजीवन जाना
मणी देहु तौ बचिहै पारथ ❋ नातौ सब जो भये अकारथ

दो० शेष कहै बिस्मय बदन, धृतराष्ट्रक की बात।
सुनि मन्त्री आश्चर्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात॥

मणी देहु औ अमृत भाई ❋ जाते पार्थ प्राण बचिजाई
सुनतै सबै नाग रिस ताता ❋ एकहि बदन कहे सब बाता
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ ❋ पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ
पुरी पताल नाग जहँ मरई ❋ कहौ बात तव कत संचरई
यह मणि मृत्युलोक कहँ जाई ❋ औषध मन्त्र होब कत राई
तेज हमार हीन बिष होई ❋ भय हमार मानिहै नहिं कोई
तातें मणी दीन्ह नहिं चही ❋ सुनतै शेषनाग तब कही
मणि दीजै ह्वैहै यश मेरो ❋ और काम तो होय घनेरो
मन्त्री कहै देव नहिं राजा ❋ मणी गये नाशै सब काजा
धनुष बांधिकै नागन खैहै ❋ गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै

दो० शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरिको दास।
आये दूत सुआश करि, कैसे करहुँ निरास॥

ग्वाल बच्छ जब ब्रह्मा हरे ❋ माया रूप कृष्ण सब करे
बर्ष एक विधि रहे भुलाये ❋ सो पारथ के आय सहाये
मैं मणि देहौं जग यश रहै ❋ सुनत बात मन्त्री अस कहै
जो बिनाश नागन कुल कीजै ❋ मृत्युलोक तौ मणि यह दीजै
मन्त्री हेतु कहा सब यही ❋ राजा के मन बिस्मय रही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब हम कछू कहैं नहिं बाता ❀ अहि के भवन गये मरुयाता
पुण्डरीक के शेष बुझायो ❀ हम ते कछू नहीं बनिआयो
वहँ हैं कृष्ण जगत के तारण ❀ तुम पताल आये केहिकारण
शेषनाग तौ कह मन दयऊ ❀ आशा भङ्ग दूत तब भयऊ
भये निराश चले पुनि तहां ❀ नर नारी मग जोहत जहां

दो० रोदन करतीं त्रिया सब, बिस्मय मन बहुराय।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहूंचे आय॥

बातैं कह्यो सबै समुझाई ❀ पुरी पताल मणी नहिं पाई
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हे ❀ सुनत क्रोध बभ्रुबाहन कीन्हे
धृतराष्ट्रक राजा ते कहई ❀ मृत्यु भुवन को मणी न अहई
मणि अमृत हति सर्पहि लाऊं ❀ बभ्रुबाहन तब नाम कहाऊं
इन्द्र बरुण यम शंकर होई ❀ जीतों सबहिं जो आवै कोई
इतना कहि किय रणके साजा ❀ लै दल चले युद्ध के काजा
पहुँचे जबहिं शेष सुनि पाये ❀ तब मन्त्री सन कहा बुलाये
आये रणहि मन्त्र का अहै ❀ सुनत बात मन्त्री तब कहै
हम तो जाब करन रण साजा ❀ मारहुँ सबहिं शोच का राजा
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये ❀ नाग सैन्य तब अद्भुत आये
हय गज रथ पर भे असवारा ❀ बिषम बिषैल चले मणिआरा

दो० दोय तीनसौ चार मुख, बिषधर बीर अपार।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थ कुमार॥

देखत पारथ कुँवर रिसाना ❀ बर्षन लागे अद्भुत बाना
नागहिं अस्त्र बिषम फुफकारा ❀ मानुष जूझैं होत सँहारा
सेल्ह सांग मास्यो असि बाना ❀ मारौ सर्प बीर बलवाना
बिषके तेजहि दल अकुलाना ❀ जूझा दल तब बहुत रिसाना
सहस एकइस दल बध भयऊ ❀ बभ्रुबाहन नाम तब लयऊ
धृतराष्ट्रक सो मारे बाना ❀ क्रोधवन्त ह्वै काल समाना
न्यूर मोरको अस्त्र चलायो ❀ ऐसे बहुत नाग बिचलायो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महा मारु तब प्रकटी भारी ❋ मारेगये बहुत बिषधारी
पुनि सब नागन कीन्ह दरेरा ❋ दशो दिशा में नरदल घेरा
बभ्रुबाहन तब बहुत रिसाना ❋ क्रोधित मारे मधुको बाना

दो० मधू प्रश्न करिकै तबै, मारत पिलके बान।
चाम मांस औ हाड़ जे, छेदे उभय प्रमान॥

ऐसी मारु भई घमसाना ❋ तबहिं नागदल सब भहराना
मारन गये क्रोध करि बाना ❋ भागे हेतु कहा सो माना
अबहूं मणी तुरन्तहि दीजै ❋ शेष कहा मन्त्री अस कीजै
शेषनाग उर हर्ष जु कीन्हा ❋ मणि अमृत दोऊ लै दीन्हा
मिलन हेतु सो सब पग धरे ❋ गृह में मन्त्री रोदन करे
बैरी पाण्डव दुष्ट हमारा ❋ मणि अमृत गै करै बिचारा
दुष्ट दुर्बुधी दो सुत अहैं ❋ तब ते बात तात सन कहैं
हम हैं ऐसो पुत्र तुम्हारा ❋ जिये पार्थ कैसे संसारा
आजु जाहु राजा सँग धाई ❋ हम कछु तबहीं रचब उपाई

दो० शिर आनब मैं पार्थका, रुण्ड रहै मैदान।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान॥

यह कहि तात तुरन्त सिधाये ❋ दूनौ बन्धु मणीपुर आये
भेद कोउ जानै नहिं पाये ❋ पारथ को लै शीश सिधाये
कुञ्ज बिपिन महँ मालिके डारा ❋ शीश नहीं तब त्रिया निहारा
रोदन करैं त्रिया बहुरूपा ❋ मणिपति मिले धाय के भूपा
मणि अमृत दीजै तौ हाथा ❋ हर्षित चले मणीपुर साथा
शेष आदि सबही तब आये ❋ रणभूमी जहँ पार्थ गिराये
देखा तहां राव दुइ नारी ❋ काहु हरो शिर करौ गोहारी
राजा सुनतै मूर्च्छित भयो ❋ हे बिधि कौन कर्म तैं कियो
जबहीं राजा मूर्च्छित भयो ❋ पुरी हस्तिना की सुधि कियो
पारथ सपना मातुहि दयऊ ❋ कुन्ती हरिते बोलन लयऊ

दो० तेलकुण्ड महँ पार्थ अरु, सबन करे अस्नान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चढ़ि गर्दभन दखीनदिशि, कीन्हा रैनिपयान ॥

सोबर्तन सुलाल है फूल ❋ पारथ सपन देखि भय शूल
रोदन करि कुन्ती संचारे ❋ श्रीपति कीन्हा पारथ मारे
चले भीम तब कुन्ति डेरानी ❋ हरी गरुड़ पर आसनठानी
पार्थ हेतु चल शारँगपानी ❋ मणिपुर चले पहूंचे आनी
देखा रण श्मशान समाना ❋ तम्बू एक देख भगवाना
अगणित रानी रोदन करहीं ❋ कृष्णरु भीम तहां पगुधरहीं
देखा हरि पारथ के रुण्डा ❋ रोदन करैं त्रिया बिन मुण्डा
कह तब हरिहिं कौन रणराना ❋ को पारथ को कीन निदाना
हा पारथ करि कहा बखानी ❋ रोये भीम कुन्ति पटरानी
तबहीं भीम कहा असबानी ❋ ऐसो कौन बीर जग जानी

दो० मेरे देखत अश्व हरि, बधे पार्थ रणधीर ।
जाहि कुशल सो प्राण लै, ऐसो को यदुबीर ॥

बभ्रुबाहन रोदनकरि कहै ❋ हमतो पुत्र पार्थ कर अहै
कर्म दोष हत्या हम पाये ❋ तातहि अपने हाथ गिराये
अमृत हरि पताल ते लाये ❋ अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये
ताते भीम गदा परिहारौ ❋ मेरो शीश चूर्ण करिडारौ
मैं दर्शन श्री हरिके पाये ❋ जगके भय मोमन नहिं आये
श्रीपति हमैं मृत्यु अब दीजै ❋ मेरो पाप उऋण अब कीजै
चित्राङ्गदा रुदन तब करी ❋ कुन्ती के चरणन महँ परी
शोकित कुन्ती परि मुर्च्छाई ❋ शेष कहा सुनिये यदुराई
पाण्डुबंश बूड़त अब कैसे ❋ तुमहिं कियो रक्षा उपजैसे
सुनिकै हरि चिन्ता उर पागे ❋ सबै लोग तब बोलन लागे

दो० ब्रह्मचर्य जो पुण्य हम, कीन्ह जगत मोझार ।
तौ आवै शिर पार्थ को, चोर होउ संहार ॥

कहतै तुर्त शीश तब आये ❋ मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये
पाय शीश कन्धा पर धारे ❋ हरि मणिहाथ कहै संचारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उरमें पारथ मणि तब राखे ❀ उठत पार्थहि श्रीपति भाखे
लागे शीश उठो तब कैसे ❀ चुम्बकमाहिं लोहलग जैसे
प्रद्युमन वहमणि धरि जगबन्दन ❀ रहुरहुकरि तब उठे अनन्दन
कर्णपुत्र सूबेग कुमारा ❀ यौवनाश्व अनुशल्यभुवारा
हंसध्वज नीलध्वज राऊ ❀ जागे सबे चेत तब पाऊ
पारथ आदि सबै जब जागे ❀ धाय कृष्ण के चरणन लागे
सेवक शेषनाग तौ भयऊ ❀ शेष अनन्द बहुत बिधि भयऊ

दो० नानाकौतुक बाद्य तब, होत अनन्द अपार ।
पैदल सैना पार्थले, सुनत नगर पगुधार ॥

बभ्रूवाहन लज्जा पाये ❀ सभामाहिं नहिं मुख देखराये
कहै पाप पितुको बध ऐसो ❀ पाप याहि छूटै धौं कैसो
करवट लेउँ दहौं तनु काशी ❀ हिमप्रयाग जाइहौं प्रकाशी
तबहुँ पापका छूटत अहै ❀ सुनिकै भीम बोधि तब कहै
सुनहू पुत्र शोच नहिं कीजै ❀ हमजो कीन्ह श्रवण सुनिलीजै
भीष्मपितामह मैं संहारा ❀ द्रोण गुरू अपने कर मारा
हरि दर्शन सों पाप नशाना ❀ तुव दर्शन पाये भगवाना
पारथ गहे तबहिं सुत हाथा ❀ गहि बैठारे अपने साथा
पुरमहँ भई अनन्द बधाई ❀ परमहर्ष माने यदुराई

दो० पांच दिवस आनन्द बहु, बीते मणिपुर देश ।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये ऋषेश ॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई ❀ चित्राङ्गदहि लीन्ह सँगलाई
शेषसुता तौ संग सुजाना ❀ कुन्ती अरु मम मातु प्रमाना
अब तौ जाहुँ हस्तिना देशहि ❀ हम हस्तिनके संग बिशेषहि
सुनतै सबको सँगकरि लाये ❀ भीम बिदा तो हस्तिन पाये
शेषनागको पूजा दीन्हे ❀ शेषागमन पतालहि कीन्हे
भीमसेन हस्तिनपुर गये ❀ सबै बात तो कहबै लये
बिस्मय हर्षतु धर्मकुमारा ❀ वैशम्पायन कथा सँचारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डु बिजय यह पुण्य कहानी ❀ बाढ़े धर्म पापकी हानी
तब जनमेजय पूछन लागे ❀ कौनौ कौन देश नृप आगे
कहा भयो कैसो रण भारी ❀ बैशम्पायन कहौ विचारी

दो० बैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुनुराय।
मणिपुरते हय छूटेऊ, चले बीर सँग धाय॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषामणिपुरतोहय
मोचनोनामनवमोऽध्यायः॥ ६॥

बभ्रुबाहन संग है पारथ ❀ बैशम्पायन कहै यथारथ
चलत पन्थ महँ कौतुक भायो ❀ ताम्रध्वज हय देखन पायो
मोरध्वज को पुत्र जुझारा ❀ अपनो अश्व करै रखवारा
मोरध्वजहि यज्ञ निर्माये ❀ पारथ को हय देखन पाये
पारथ को हय गह सो पाये ❀ पठै सचिव तौ अर्थ सुनाये
बहुत शुद्ध मन्त्री की बाता ❀ ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता
हरे अश्व दलको संहारा ❀ कहै कुँवर तौ काज हमारा
संवत मध्य यज्ञ तो करै ❀ अष्टम यज्ञ अश्व तब हरै
हरे अश्व तौ हर्ष अपारा ❀ तब पारथ दल परी पुकारा
हस्यो अश्व तब रवरव भारी ❀ तब पारथ ते कह बनवारी

दो० महाबली तो मोरध्वज, सब राजा कर देत।
बभ्रुबाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत॥

कह्यो कृष्ण नर्मद के तीरा ❀ इनके तात यज्ञ करि धीरा
इनते जीति सकै नहिं कोई ❀ यद्यपि सैना साजै जोई
गीध पुष्प दल करी प्रमाना ❀ अनुशल्या रह कन्धस्थाना
हंसध्वज नयनन महँ राखो ❀ और काम अनिरुद्धहि भाखो
सात्यकि पुत्र पञ्च के माहा ❀ मेघवर्णदल रक्षक ताहा
पारथसुत औ कर्ण कुमारा ❀ दोनों चोचन के रखवारा
ऐसे दल संयुत करवाये ❀ ताम्रध्वज पहँ कृष्ण सिधाये
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै ❀ आपे युद्ध हेतु मन गहै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आपुहि युद्ध करिय मनलाई ❋ मोको नाहीं भ्रम यदुराई
अर्धचन्द्र शर सैना करै ❋ अगणित ताम्रध्वज संचरै

दो० सत्रह बाणन हाथ लै, मार्यो बिरह अनङ्ग ।
तीनि बाण तो श्याम के, मार्यो ताकि अभङ्ग ॥

पांच बाण दारुक को मारे ❋ घायल भये न ज्योति सम्हारे
रण महँ गर्जा सिंह समाना ❋ मारा सात्यकि को तब बाना
कृतबर्महिं मारे नौ बाना ❋ सहस बाण प्रद्युम्न समाना
बाण सहस्र कामसुत ताना ❋ अनिरुध क्रोधे काल समाना
रह रह अब सह बाण हमारा ❋ यह कहि बहुत बाण संचारा
करिकै क्रोध बाण तब छाटे ❋ मोरध्वज ता बीचहिं काटे
पांचबाण ताम्रध्वज मारा ❋ मारे चारौ तुरँग तुषारा
ब्याकुल भये क्रोध रण ठये ❋ पारथ दल सब घायल भये
प्रद्युमन के रथ को तौ तोरा ❋ तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा

दो० तब दोनों बसुधालरे, महामारु तौ ठान ।
मल्लयुद्ध तब ठानऊ, अनिरुध गिर मैदान ॥

औरे रथ ताम्रध्वज चढ़े ❋ महामार युद्धहि मन बढ़े
हरि ते भाषै अनिरुध गिरे ❋ तब देखत बृषकेतू फिरे
मारि हांक तौ बाण प्रहारा ❋ ताम्रध्वज को रथ संचारा
जौने रथ ताम्रध्वज आवै ❋ कर्णपुत्र सो मारि गिरावै
तबहीं क्रोध ताम्रध्वज भयो ❋ काल समान बाण तो लयो
तेहि शर मूर्च्छित कर्णकुमारा ❋ पांचबाण तौ तेहि संचारा
ताते मूर्च्छित भो अनुशल्या ❋ देखत बभ्रुवाहन तब चल्या
पांचबाण रहु रहु करि मारा ❋ ताम्रध्वज रथ काटि पँवारा
यौवनाश्व पारथ सुत मारे ❋ ताम्रध्वज सो काटि पँवारे
क्रोधित बाण झाँड़ि तब दीन्हा ❋ बभ्रुवाहनको मूर्च्छित कीन्हा

दो० रहो कृष्ण रणमाहिं अब, सहौ हमारो बान ।
क्षत्री भागेउ देखतै, पारथ दल भहरान ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबै बीर देखत हैं ताहां ❀ ताम्रकेतु डारत रण माहां
देखत पारथ बीर रिसाना ❀ ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना
नवो बाण पग अश्वन मारे ❀ और बाण ते रथ संहारे
औरे रथहिं भये असवारा ❀ नवो बाण पारथ कहँ मारा
और बाण ते रथ संहारा ❀ औरे रथहिं भयो असवारा
तबहीं क्रोध करै बहु लीन्हा ❀ बाण बृष्टि पारथपर कीन्हा
ते असदेखि सुचित तहँ भयऊ ❀ शंखध्वनि पारथ तहँ कियऊ
ताम्रध्वज का रथ संहारा ❀ औरै रथ चढ़ि श्यामकुमारा
क्रोधवन्त बाणन तब मारा ❀ पारथ के सारथि संहारा
और बाण पारथ के लागे ❀ मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे
महा मारु पारथ पर दीन्हे ❀ एक सहस्र मारि रथ लीन्हे

दो० ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान।
तबहूं ताम्रध्वज बली, छांड़ा नहिं मैदान॥

पारथ मारा बाण रिसाई ❀ ताम्रध्वज रथ मारि गिराई
औरहि रथ पर भो असवारा ❀ पारथ ऊपर बाण प्रहारा
पारथ के शर प्रबल समाना ❀ क्षोहिणि दुइदल गिरे प्रमाना
अयुत बाण ताम्रध्वज मारा ❀ पारथ क्रोधित बाण सँचारा
धनुषै गुन काटे तब पारथ ❀ दोय सहस मारे रथ सारथ
सातदिवसलग दिन अरु राती ❀ ऐसी मारु भई बहु भांती
ताम्रध्वज शर हते रिसाई ❀ पारथ को रथ चला उड़ाई
ऊपरते रथ भुवि करि श्रामा ❀ हस्तकमल पर लीन्हे श्यामा
भुवि पर जब राखे यदुराई ❀ तब ताम्रध्वज कह बिलखाई
भूमें मैं उड़ाय रथ डारा ❀ राखे कर धरि नन्दकुमारा

दो० श्रीपति गदा घाव करि, औ करि चरण प्रहार।
मूर्च्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार॥

तीनि बाण हरिको तब मारा ❀ कह हरि पाथ करौ संहारा
हम तुम आजहि इनको मारैं ❀ यहि अन्तर श्रीकृष्ण बिचारैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारे रिस करि पारथ बाना ❋ बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये ❋ ताम्रध्वज गुन काटि गिराये
तब ताम्रध्वज कहै रिसाई ❋ अब पारथ राख्यो यदुराई
जौ नहिं रथ पर पारथ आये ❋ सारथि भे तब रथहि बचाये
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना ❋ पारथ दल तौ सब भहराना
हय गज रथ पैदल हैं जेते ❋ वहि रण में बिचले सब तेते

दो० ताम्रध्वज को सबै दल, क्रोधित ह्वै भगवान।
गहे चक्र तब चक्रधर, महा मारु तब ठान॥

रथ ते बेगि उतरिकै धाये ❋ तीनि लोक तब शङ्का पाये
डगमगानि भुवि सब संसारा ❋ एक क्षोहिणी दल संहारा
तब सुचित्र बहुघातैं करै ❋ आय धाय श्रीकृष्णहि धरै
दहिने हाथ गहे तब धाये ❋ बायें कर पद शीश चढ़ाये
पारथ जाना मिले प्रमाना ❋ ताम्रध्वजहिं क्रोध तब माना
बाम चरण पारथ कहँ मारा ❋ हरि पर गिरे सुचित्रकुमारा
हरि अर्जुन तब मूर्च्छित भये ❋ लेकर अश्व चलन मन दये
हर्षिगात अपने पुर चले ❋ दूनौ अश्व संग हैं भले
मोरध्वज तब देखन पाये ❋ दूजो अश्व कहां ते लाये

दो० ताम्रध्वज औ मन्त्रि ने, भाषे सब बिरतन्त।
धर्मराज कर अश्व है, रक्षक कमलाकन्त॥

रक्षक पारथ श्री भगवाना ❋ सबदल मोहित किय मैदाना
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहै ❋ धिक धिक सुत तू मेरो अहै
हरि को तजे अश्व लै आये ❋ धिकजीवन तोहिं गुरूपढ़ाये
बहुप्रकार ते डाटन लागे ❋ इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे
बभ्रुवाहन आदि सरदारा ❋ चेतन भये सबै बिस्तारा
पारथ कहै कहां यदुराई ❋ अश्वहि लिये कहां सो जाई
हमहूं को चलिये लै तहां ❋ सुनी बात तब श्रीपति कहा
रत्नपुरी मोरध्वज राऊ ❋ वह लै अश्व गयो परमाऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम बली है भक्त हमारा ❋ माया कै कीजै संचारा
बृद्ध द्विज हम तुम हो बालक ❋ यहिबिधिचलौ कहैं गोपालक
दो० नृप का सत्त देखाइहौं, तुमको पारथ बीर।
बाल बृद्ध माया करी, चलौ नृपाति के तीर॥
सेन राखिके द्वउ जन आये ❋ रत्नपुरी निशि माहिं सिधाये
नर नारी कौतुक लख नाना ❋ प्रात होत नृप पहँलो आना
यज्ञशाल मो राजा अहै ❋ दूनौ अश्वहि देखत रहै
जाय बिप्र जब आशिष दयो ❋ तब राजा यह बोलत भयो
बिन प्रणाम तुम आशिषदयऊ ❋ मोको महापाप द्विज भयऊ
द्विज कह कछू पाप नहिं राजा ❋ याचकद्विजकी है यह काजा
करि प्रणाम तब राजा कहै ❋ कहौ बिप्र मन कामन कहै
द्विजन कहो मध्यपुर ग्रामहि ❋ कृष्णशर्म्मा है मेरो नामहि
अपने सुत को ब्याह बनाये ❋ पुत्रबधू लै तुम पहँ आये
मार्ग माहिं घन कानन अहै ❋ तहां सिंह मेरो सुत गहै
दो० मैं बिलाप बहु कीन्ह तब, सिंह न छांड़ै पुत्र।
हम न गहै शिशुही गहै, खान चहत ममपुत्र॥
सिंह कहै आयू जेहि अहैं ❋ ताको हम नाहीं द्विज गहैं
जो चाहत हौ पुत्र बचावा ❋ तौ दीजै जो मम मन भावा
एक बस्तु मांगा हम पासा ❋ जाते हम आये करि आसा
मोरध्वज राजा तब कहै ❋ मेरे देश सिंह नहिं अहै
तब राजा पूछन यह लागे ❋ तुम ते सिंह कहो का माँगे
जो माँगै सो हमैं सुनाओ ❋ जामें तुम अपनो सुत पाओ
मिथ्या होय न बात हमारी ❋ तब द्विज यह बाणी संचारी
मोरध्वज को अर्ध शरीर ❋ म्वहिंदै सुतकहँ ले द्विजबीर
तब हम कहा सिंह सुनु बीरा ❋ मोहित नृप कत देत शरीरा
तबहिं सिंह कह सत जो ह्वैहै ❋ दीहै देह कछू ना कहिहै
दो० ताते नृप मैं आयऊं, अपने सुत की आस।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्मराज साहस सुनौ, सो तो तुम्हरे पास ॥
मोरध्वज हर्षित है कहो ❀ लेहु शरीर विप्र जो चहो
कछु नहिं दुःख करौ संचारा ❀ यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते ❀ हाहा शब्द पुकारत तेते
काल स्वरूप बिप्र इक आवा ❀ नगरनिवासिन बहुदुख पावा
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो ❀ राजा तहां जाय भो ठाढ़ो
करि अस्नान तुलसिदल लये ❀ कृष्णध्यान महँ अतिमन दये
तबहिं म्लेच्छ राजा ते कहे ❀ करवत शिर देखौ जो गहे
पशु पक्षी रोवत पुर भारी ❀ तब रानी गइ कहै बिचारी
कुमुदावती तु रानी कहई ❀ अर्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई
दो० हर्ष गात द्विज भाषेऊ, सिंह कहा समुझाय ।
बाम अङ्ग जनि लायऊ, दहिना लाओ जाय ॥
बाम अङ्ग पतिबर्ता आहै ❀ ताते सिंह तुम्हैं नहिं चाहै
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये ❀ करि प्रणाम तौ द्विजहिं सुनाये
पितु को अङ्ग पुत्र सो अहै ❀ मेरो तनु लीजै यह कहै
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई ❀ तबहिं बिप्र यह बचन सुनाई
सिंहहि कहा और नहिं काजा ❀ लाओ तनु मोरध्वज राजा
स्त्री पुरुष चीरिहैं देहा ❀ बिस्मय नहिं आनन्द सनेहा
मङ्गल करिकै देह चिराओ ❀ दहिने अङ्ग बिप्र लै आओ
स्त्री पुरुष हर्ष तब करी ❀ करवतलै राजहिं शिर धरी
इन्द्र आदि देवनगण जेते ❀ नृप सत देखन आये तेते
नगर लोग सब देखहिं नाना ❀ स्त्री पुरुष तु हर्ष निदाना
दो० उलटे आरा नयन कर, अर्ध शीश गयो चीर ।
बाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चलो तब नीर ॥
देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं ❀ कादर दान लेत द्विज नाहीं
देत शरीर तु रोदन करैं ❀ याहि दान हम कैसे धरैं
बरु पुत्रही सिंह लै खाऊ ❀ यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संगहि पारथ करिकै चलेऊ ❀ लोग सबै तहँ देखत भयऊ
तब रानी करवती उतारा ❀ गहे दाबि शिर हाथ भुवारा
कहहीं बात नाथ सुनि लीजै ❀ बिप्र काहि सन्तुष्ट करीजै
तजे शरीर बिमुख द्विज जाई ❀ अहो कन्त द्विज लेहु मनाई
तब राजा कर शिर धरि कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै
अहो बिप्र बिनती सुनि लीजै ❀ पाछे आप गमन जो कीजै
करवत ते नहिं दुःख हमारे ❀ बहुत दुःख जो बिमुख सिधारे

दो० बाम अङ्ग रोदन करै, हम निष्फल संसार ।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज काज सँवार ॥

सुनतहि बात हर्ष द्विज पाये ❀ हर्षित राजहिं रूप दिखाये
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा ❀ माँग माँग बर बोलै लीन्हा
दै शरीर तोषित किय मोहीं ❀ जगमें भक्त देखियत तोहीं
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो ❀ सबदल जीतिलियो जिन मेरो
तब राजा अस्तुति बहु कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै
माथे हाथ मृतक के दीन्हा ❀ सर्ब कलेश नाश तब कीन्हा
राजा कह बिश्वम्भर देवा ❀ माँगहुँ बर सूनौ हरि भेवा
जैस परीक्षा हमरी लयऊ ❀ स्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा ❀ ऐस न याचहु त्यहि जगतारा
यह कहि धन अरु सम्पतिदयऊ ❀ दूनहु अश्व आप सँग लयऊ

दो० यह भाषे जगहेतु कहँ, पाय दर्श भगवान ।
करै यज्ञ हरि दर्श लहि, होय सदा कल्यान ॥
अश्वदलहि नृप संगलै, चले मोरध्वज राव ।
भक्त परीक्षा लेन को, तौ हरि कीन उपाव ॥

इति श्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषाकृतमोरध्वजराजा
दर्शनपावनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दूनौ हय लै पारथ चले ❀ बैशम्पायन बोलत भले
दल समग्र चलि आयो तहां ❀ सरस्वति पुरी नगर है जहां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बीर भानु तहँ नाम नरेशा ❋ दोनौं अश्व करैं परवेशा
नगर के लोग धर्म अनुरूपा ❋ आये अश्व सुन्यो तब भूपा
पञ्च बीर को आज्ञा दयऊ ❋ तबहीं अश्व नृपतिपहँ गयऊ
सुरभ सुलभ अरु नीलप्रमाना ❋ कुबलयबल पांचौ बलवाना
पांच बीर रण मों गह गहै ❋ तब मणिपुरपति रहुरहु कहै
शंखनाद तब बीरन कीन्हा ❋ धनुषबाण हाथै सब लीन्हा
बर्षन लगी बाण की धारा ❋ दोउ दल जूझे बीर अपारा
रथ गज अश्वरु पैदल लाखन ❋ जूझन लगे सकै को भाखन

दो० यहि अन्तर यम आयकै, सैना बधे हज़ार।
जामाता यम नृपति के, भाषे नन्दकुमार॥

ताते सैना इह बध कीन्हा ❋ तब पारथ पूछै कह लीन्हा
यमको कत नृप कन्या दीन्हा ❋ सुनतै कृष्ण कहे तब लीन्हा
राजाके मालिन भौ बारी ❋ योग स्वयम्बर भूप बिचारी
राजा पूछहि कन्या कहौ ❋ मांगहु बर जो मनमें चहौ
देव नाग अरु मनुज सुरारी ❋ जो बर चाहो कहो कुँवारी
कन्या कहै तात ते बाता ❋ यमराजा को चाहत ताता
कालहि पाय त्रिया जो मारे ❋ अन्त जन्म तो गृह पगुढारे
तबै कन्त दूसर तौ होई ❋ महापाप ताते है सोई
ताते प्रथमहि यम को वरो ❋ एक पुरुष दूसर परिहरो
नृपकन्या नृपपर मन साधे ❋ निशिबासर यमको आराधे

दो० नारद यह तौ जानिकै, यमपुरगो हरषाय।
कन्याका वृत्तान्त सब, कहा धर्म सन जाय॥

पांच पुण्य जानौ सम राजा ❋ मालिनिसुधिबिसरे केहिकाजा
धर्म्मवन्त कन्या सो अहै ❋ सारस्वतपुर नृपको रहै
एकव्रत सो मनमहँ धरै ❋ यम राजा को चाहत बरै
जाय करौ अब ताको ब्याहा ❋ तब यम भाष्यो नारद पाहा
आपु जाहु हम पाछे ऐहैं ❋ बैशाख मास मों हमहूं जैहैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुक्लपक्ष मों ऐहौं सही ❀ नारद सुना चले तब जही
सारस्वत नगरै तब गयऊ ❀ सबै बात राजा सों कहेऊ
कहिकै नारद सुरपुर गयो ❀ शुक्लपक्ष बैशाख तु भयो
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ सबै लोग तब तुरतहिं आये
दुइ आहैं सबके सरदारा ❀ शुक्र प्रमेह रोग आपारा

दो० सब रोगन सों यम कहै, चलो संग बरिआत।
ब्याह हमारो होत है, सारस्वत पुर जात॥

तब सब रोग कहैं यह बाता ❀ पुण्य धर्म है ह्वां बहु ताता
वहां हमार नहीं संचारा ❀ तुरत तेज बल जाव हमारा
यमहि कहा पापी नर जेते ❀ रूप कुरूप देखिहैं तेते
धर्मवान जेते नर अहई ❀ रूप अनूप देखिहैं कहई
जाको पीड़ा कर बहु भाई ❀ ताको भेद कहौ समुझाई
ब्रह्मबधे कर पातक जाही ❀ ब्रह्म अंश क्षयी गहु ताही
गोदावरि गौतम इक मासा ❀ परशे क्षयी रोग को नासा
देव द्रव्य हरवरी सतावै ❀ तासु शरीर विसूचिक आवै
ताको नाम खण्ड है भाई ❀ अजया कञ्चन मुख नहिं जाई

दो० कञ्चन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते जाय।
गर्भपातके पाप ते, गहत जलन्धर आय॥

एकोत्तर सौ तुला जो करई ❀ लक्ष छत्र दीन्हे सो हरई
रस अरु द्रव्य जो चोरी करै ❀ ताको व्याधि अरूचित धरै
कञ्चन दान करे ते जाय ❀ गौवें देहि कहे यमराय
बेश्या संग हरै गुरुनारी ❀ सन्निपात पीड़ा तौ धारी
पङ्क उधारन को धन हरै ❀ यमराजा को चाहत बरै
श्रुति दै भूषण भेटत दाना ❀ दूनहु व्याधि तुरन्त पराना
भूमिदान दीन्हे सो जाई ❀ पुनि द्विज भोजन जाय छोड़ाई
अरुचक तौ ताही गै धरै ❀ लाखन द्विज. भोजन परिहरै
आशा भङ्ग पन्थ बटपारी ❀ शूलव्याधि तेहि होती भारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० पक्षी कोटिन नाशकर, या बेंचत जो होय ।
हेमयज्ञ बैष्णव द्विजहिं, दान दिये क्षय होय ॥

बरदनि कादर हुचका होय ❀ लक्ष होम महँ नाशै सोय
साजुयोग जो दारे होई ❀ चुगुल रोग पावत है सोई
तेलकुण्ड दाना एक मासा ❀ तब सो व्याधि होति है नासा
निन्दा सन्त रोग मुख पावै ❀ लक्ष दान दै ताहि भगावै
परनारी देखत जो धावहि ❀ नैन रोगते बहु दुख पावहि
गुरु अपनेको ध्यान जो धरही ❀ नैन रोग तुर्तहि परिहरही
अंश छोड़ावै घेघा होई ❀ पञ्च रतन दीने सुख सोई
देखत दान सूम मुरझाही ❀ मृगी रोग होता है ताही
कृष्ण धेनु कञ्चन कर दाना ❀ मृगी रोग जाता क्षय माना

दो० यज्ञ स्थित जो ढाहतनु, डारत बन्दी माहि ।
शिवपूजै अतिहेतु सो, तब सो व्याधिनशाहि ॥

यही प्रकार और बहुतेरे ❀ नाना व्याधि पुरुष तनु घेरे
यहि प्रकार ते सबहि बुझाये ❀ तब सब सारस्वत पुर आये
राजा हर्ष गात ह्वै कहै ❀ कन्यादान देन तौ चहै
मेरे रिपु सों करहु लराई ❀ यह बाचा तौ कीन्ह्यो राई
तब कन्या दीन्हो यह दाना ❀ पारथ पाहँ कहैं भगवाना
तै बाचा ते रण हरि लाये ❀ ताते युद्ध हेतुको धाये
आप सबै रणको मन दीजै ❀ युद्ध जीति अश्वहि को लीजै
पारथ के रथ पर हरि आये ❀ युद्ध हेतु सबही मन लाये
वीर बर्म राजा तब आये ❀ पारथ सों तब बात सुनाये
करो युद्ध पारथ मन लाई ❀ महा मारु ह्वैहै प्रभुताई

दो० जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनीबात क्रोधितबदन, पारथ बचन प्रकासु ॥

छांड़ो अश्व कहैं हम राजा ❀ ना तौ महामार अब साजा
बर्म बीर तौ बोलन लागे ❀ अश्व कहां अब पैहो मांगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुओ अश्वलै मख मैं करौं ❀ तुम्हैं समेत कृष्ण कहँ धरौं
मोरे रण लायक नहिं पारथ ❀ पारथ सुनौ क्रोध पुरुषारथ
मारे पारथ बाण अपारा ❀ बर्मा बीर काटि शर डारा
तब सौ बाण पार्थ कहँ मारा ❀ साठि बाण तौ नन्दकुमारा
पांच बाण मारे ध्वजराऊ ❀ लग्यो बाण तब मूर्च्छा पाऊ
जब राजा के सारथि आये ❀ तब पारथ बहु बाण चलाये
पारथ शर तौ बर्षत नाना ❀ बीर बर्म मारे बहु बाना
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये ❀ बाण बुन्द ते बर्षा लाये

दो० पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय।
सात बाण तब राजहीं, मारे पार्थ रिसाय॥

नृप करि क्रोध साठि शरमारा ❀ सौ शर लागे नन्दकुमारा
चारि बाण अश्वहि पर दयऊ ❀ तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ
बीरबर्म तब कह यह बाता ❀ मोरे जयकर पाव सख्याता
भीषम द्रोण कर्ण संहारा ❀ ते शर काम न आव तुम्हारा
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि ❀ नृपरथ तुम लैजाहु अकाशहि
घोर सिन्धु रथ डारौ जाई ❀ सुना हनू तब चले रिसाई
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ ❀ बीरबर्म बहुबल तब कियऊ
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ ❀ लै रथ अन्तरिक्ष पुनि कहेऊ
जहाँ स्वर्ग माहीं हनुमन्ता ❀ पारथ रथ लै गयो तुरन्ता

दो० हनूमान सन भाषेऊ, लीजै रथहि हमार।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार॥

कहिये रथ लै डारों कहाँ ❀ क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहाँ
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा ❀ सुयश तुम्हार जगत मों बाजा
साधु भक्त औ बली कहाये ❀ बीरबर्म तौ बात चलाये
मैं तौ नाम सुना है तोरा ❀ लै रथ जान सके नहिं मोरा
यह कह एक मुष्टिका दई ❀ हनूमान के पीरा भई
हरि राजा पारथ हनुमाना ❀ तब सब बसुधा आयप्रमाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Vinay Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखत श्रीपति हाथ प्रहारे ❀ बीरबर्म मूर्च्छित बिकरारे
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ ❀ तुर्त कृष्ण के आगे गयऊ
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी ❀ आयों शरणै कृष्ण तिहारी
तुव दर्शन करि पातक भागे ❀ प्रेम भक्ति हिरदय महँ जागे

दो० तब राजा अस्तुति करी, धनुषबाण दिय डार ।
करि प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये भुवार ॥

पारथ सन भाष्यो यदुराई ❀ इनते जय काहू नहिं पाई
बीरबर्म को जीतन पायो ❀ मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो
पारथ कह जो तुम्हैं मनायो ❀ तासों जगमा जय को पायो
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा ❀ भांति भांति के बाजन बाजा
सब दल लैकै नग्रहि गये ❀ दिन इक छै बीती जब गये
देश भूमि तब आगे कीन्हा ❀ अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा
शत सहस्र हाथी तो दये ❀ औरहु अश्व अनेकन लये
छूट अश्व तौ संग नरेशा ❀ भरमत फिरा अनेकन देशा
नदी एक महँ पैठ तुरंगा ❀ तटहीं तट पारथ दलसंगा
पारथ भये अश्व तौ जाई ❀ तबै सर्व दल पार सिधाई

दो० परमानन्दित सर्व दल, पारथ हयके संग ।
वैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनंग ॥
चले अश्वके संग सब, नाना बीर नरेश ।
आय देश सब जीतिकै, चन्द्रहास के देश ॥

इति श्रीमद्दाभारतअश्वमेधयज्ञकृतवीरवर्मविजयो
नामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

वैशम्पायन राजहि कहा ❀ चलो अश्व तब आगे कहा
चन्द्रहास राजा जहँ रहै ❀ तहां अश्वचलि भो मुनि कहै
कित गो अश्व शोच सब पाये ❀ यहिअन्तर नारदमुनि आये
पारथ पाहँ कह्यो समुझाई ❀ कुन्तलपुरहि अश्व तब जाई
चन्द्रहास जो भक्त कहाये ❀ बड़े कष्ट राजा तब पाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धृष्टबुद्धि बैरी तेहि अहे ❋ रक्षक सदा लक्ष्मिपति रहे
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये ❋ मही प्रसाद राज पद पाये
तब पारथ कह बिनती लाई ❋ चन्द्रहास गुण कहो गुसाँई
नारद कह भल समय सुहाये ❋ कथा सुनै का हेतु सुनाये
अश्व कहां खोये मन लाई ❋ तब पारथ बोले बिहँसाई

दो० कुरु पाण्डवके युद्ध महँ, एक पलकके माहि।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि॥

सुनत कथा नारद तब कहहीं ❋ कदिदलदेश धर्म नृप रहहीं
ताके गेह जन्म इन लये ❋ जन्मत तात मातु मरिगये
लैकै धाइ कुँतलपुर आई ❋ बर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई
तीनि बर्षको बालक अहै ❋ षट अंगुलि बायांपद रहै
ताको लोग दया करि राखैं ❋ लक्षण राज सबै तो भाखैं
धृष्टबुद्धि मन्त्री गृह माहीं ❋ एक दिना सो बालक जाहीं
जादिन द्विज उन भोजनदयो ❋ सोदिन बालक तहँवां गयो
रूप देखि मन्त्री सुख पायो ❋ करि बहु प्रीति अग्र बैठायो
द्विज मुनि तो कहते यह बाता ❋ बालक नृप होवो सख्याता
राजा ह्वैहै आशिष दयो ❋ धृष्टबुद्धि तब चिन्तत भयो

दो० सब बिप्रन को बिदा करि, मनमों करै बिचार।
मदन अमल दो पुत्र मम, पै यह होत अुवार॥

यह बालक राजा मुनि कहै ❋ ताते मन बहु चिन्ता गहै
मुनिकै बाक्य झूठ नहिं सही ❋ बोलि चण्डालहिं मन्त्री कही
बालक हति त्रिह्वहि लै आवो ❋ धन सम्पति मोते बहु पावो
लै चण्डाल बाल बन गये ❋ दधि पावन शिशु मुखमोंलये
गोली खेलै मुख मो रहै ❋ तब चण्डाल हतन को चहै
हरि माया मोह्यो चण्डारा ❋ पूर्व पाप कहँ जनु अवतारा
बाल बधे अघ का गति होई ❋ बालक कहँ मारौ जनि कोई
बाम पाद षट अंगुलि देखी ❋ काटिलीन तौ देखि बिशेखी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धृष्टबुद्धि को दीन्ह्यो जाई ❀ धन सम्पति चण्डालहि पाई
भई झूठ बिप्रन मुख बानी ❀ बालक हते होति रजधानी

दो० धृष्टबुद्धि आनन्दित, बालक बन महँ रोय।
पशु पक्षी बन जन्तु सब, करि मनुहार सुजोय॥

सो बन गयो शिकारहि राजा ❀ नाम कुलिन्द भक्त रघुराजा
ते बालक देखन को पाये ❀ हर्ष गात लै गोद चढ़ाये
धृष्टबुद्धिके सेवक सोई ❀ पाछे शिशू हर्ष मन होई
सत्रावती तासु त्रिय आही ❀ बालक लेकर दीन्ह्यो ताही
पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो ❀ गुरुको सौंपि पढ़े कहँ दीन्ह्यो
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे ❀ कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे
गुरु तब जाय कुलिन्दहि कहै ❀ तुव सुत बाउर हरि हरि कहै
औरहु कछू बात नहिं अहई ❀ तब कुलिन्द गुरुसों असकहई
सात बर्ष महँ विद्या दैहौं ❀ यज्ञरु जाप पवित्र सिखैहौं

दो० जादिन ते सुख पायऊ, राजा शिशु धन बृद्धि।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु, सब तासु कर सिद्धि॥

सात बर्ष मों यज्ञ कराये ❀ पुत्रहिं तबै पढ़न बैठाये
वेद पुराण शास्त्र तौ पाये ❀ क्षत्री व्रत सब अस्त्र सिखाये
पारथ मनहिं हर्ष उपराजू ❀ ऐसेहि भक्तहि देखब आजू
पन्द्रह वर्ष के भये कुमारा ❀ दुर्ग विजय कीन्हा संचारा
बहुतक देश जीति धन लाये ❀ अपने देश अनेक बसाये
द्विजवैष्णव तौ अगणित राखे ❀ ग्राम भूमिदै प्रीतिहि भाखे
ग्राम ग्राम महँ देवल दीन्हा ❀ कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा
घर घर सबै जपैं भगवाना ❀ श्रवण करैं सब बेद पुराना
सबहीं व्रत एकादशि अहहीं ❀ परमानन्द प्रजा सब रहहीं
दुर्ग विजय करि गृह पग धारे ❀ आरति हर्षित मातु उतारे

दो० रूप देखि सब मोहित, गृहमें गयो कुमार।
कह कुलिन्द कुन्तल पुरी, आहै भूप हमार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तिन्ह कहँ बस्तु पठाये कञ्चन ❋ बारह सेर सीप गृह रञ्चन
सेर षष्ठ रानी सचिवन ते ❋ सो सुत जाहु सेवकहि चेते
पत्री लिखि दीना ता हाथा ❋ औ कञ्चन दीन्हा है साथा
गयो पन्थ में पहुँचे ताहा ❋ जादिन व्रत एकादशि आहा
करि अस्नान ध्यान मन दये ❋ तब मन्त्री के गृह को गये
भीगे बस्त्र देखि संचारा ❋ मन्त्री कुशल पूछि बिस्तारा
कहै कुशल तौ सबै सँदेशा ❋ और बस्तु तब दीन्ह प्रवेशा
पत्री पढ़ी सुनी सब बाता ❋ दुर्ग बिजय देवस सख्याता
तब भोजन कहँ मन्त्री कहै ❋ सब परकार भवन मम अहै
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं ❋ एकादशी अन्न ना खाहीं

दो० प्रातकाल है द्वादशी, पारण कीन्हों जानि।
बिदा होन जब लागेऊ, मन्त्री कहा बखानि॥

चन्दनपुर हम देखन जाई ❋ बिदा मांगि नृपते चलिआई
राज्यकार्य्य मदनहि जो दीन्हा ❋ चन्दनपुर मन्त्री शुभ कीन्हा
जाय दीख चन्दनपुर थाना ❋ वही ग्राम कीधौं है आना
देखत मनमहँ चिन्ता भयो ❋ तब कुलिन्द के गृह को गयो
बहु आनन्द कुलिन्दहि करे ❋ तब मन्त्री पूछन मन धरे
जब तुम्हरे गृह बालक भयो ❋ मोहिं खबरि काहू नहिं दयो
कहै कुलिन्द नहीं त्रिय जाये ❋ कानन बिचरत बालक पाये
छठईं अँगुरी काटी कोई ❋ बालक ब्याकुल बनमहँ रोई
हम लै आये पालै आनी ❋ मन्त्री सुनत बुद्धि हैरानी
जाना निश्चय बालक जो है ❋ चाण्डाल नहिं मारा सो है

दो० अस्त्र शैल सम लागई, मन आनन्द न पाव।
क्यहिबिधि बालक मारिये, काधौं मन्त्रहिआव॥

करिहौं झूठ मुनिन की बानी ❋ चन्द्रहास ते कहा बखानी
कागज मसी कलम लै आओ ❋ लै पत्री तुम मम गृह जाओ
चन्द्रहास आनी कै दयऊ ❋ मन में मन्त्री शोचत भयऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकटहि बधे द्वन्द्व बहु होई ❀ गरलहि देके मारै सोई
पत्री लिखे मदन को ताहा ❀ सोसति मदन पुत्र तौ आहा
यही हेतु पत्री लिखि दयऊ ❀ चन्द्रहास गति दर्शन दयऊ
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम सम्पति को ठाकुर होई
कछू बिचार हृदय नहिं कीजै ❀ तुरतै बिषया कहँ सुत दीजै
सबही काम सिद्ध तब होई ❀ कागज माहिं आपकरु सोई
चन्द्रहास को पाती दीन्हा ❀ मम गृह जाहु बोल असलीन्हा

दो० पत्री करमें लै तबै, कहै पितहि बिरतन्त ।
पाछे माता पहँ गये, बिदा होन सुत सन्त ॥

माता तबहीं आरति कीन्हा ❀ रक्षकदेव कहै तब लीन्हा
पद्मनाभ ऊदर हैं माधौ ❀ दोषहरण नरसिंहहि साधौ
कटि मधुसूदन मखपति जानू ❀ मुख नारायण रक्ष प्रमानू
बक्षस्थल माहीं ऋषि केशो ❀ सब तनु रक्षक पवन नरेशो
स्त्री लेकर गृह को ऐहैं ❀ मनोकाम तुरतै सिधि पैहैं
करि प्रणाम माता को चले ❀ है सवार हय मोदित भले
पत्री पाग माहिं तब कीन्हे ❀ उत्तमहार शीश सों लीन्हे
चन्द्रहास तब उपमा पाये ❀ मानहु दूलह ब्याहन आये

दो० कुन्तलपुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुरेष ।
मध्य दिवस आये तबै, जहँवां बाग बिशेष ॥

शीतल छाहँ जु देखन पाये ❀ चन्द्रहास बिश्राम कराये
गज अरु अश्व अम्बतरु बांधे ❀ तृण अरु जल दै हर्षित साधे
पांचौ जने शयन मन दिये ❀ यहि अन्तर यह कौतुक भये
नृपकन्या तौ अनुपम बामा ❀ पद्मक मालिन ताके नामा
मन्त्री की कन्या तौ अहै ❀ संगहि सखी अनेकन रहै
वहि सर माहिं सबै तौ गईं ❀ तूरि पुष्प न्हाती फिर भईं
कौतुक न्हान सबै तो कियऊ ❀ पीछे पग गृहको तब दयऊ
पाछे बिषया चली बिशेखी ❀ तहँवां चन्द्रहास को देखी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूप देखि मोहित भयो भारी ❀ वही ठांव बिलमी घरि चारी
अश्वहि किये प्रणाम बनाई ❀ हे प्रिय जनु बिधि देहु जगाई

दो० पुरुषनिकट गइ नारि तब, देखति रूप अघाय।
पिता हाथ की पत्रिका, तासु पागमहँ पाय॥

छाप खोलिकै पाती पढ़े ❀ महाशोच तौ मनमहँ बढ़े
बिष दै यहिको तुरतहिं मारैं ❀ तब का बन जब सबै बिगारैं
रूप देखि भइ मोहित नारी ❀ मनमा तब इक युक्ति बिचारी
नख कनिष्ठते कज्जल लीन्हा ❀ जहँ बिष तहँ बिषया कै दीन्हा
पूरबबिधि तौ छाप बनाई ❀ बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई
चलि सखीनमहँ मिलि सो जाई ❀ नाना कौतुक सखिन बनाई
पूर्व देखि तब रही लोभाई ❀ लागी कौतुक करै सोहाई
तब कन्या अपने गृह गई ❀ सांझ पहर की बेरा भई
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै ❀ खाये पान मगन मन होवै
गजारूढ़ ह्वै चलते भये ❀ मन्त्री गृह अभ्यन्तर गये

दो० द्वार द्वार प्रतिहार तौ, छठे द्वार महँ जात।
सप्तम द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात॥

तिन तो जाय मदन सों कहा ❀ चन्द्रहास द्वारे महँ रहा
बेद पुराण सुनै तो आहा ❀ सुनत तुरन्त चले उठि ताहा
बाहर आय भेंट हियलाई ❀ भीतर को सो गयो लिवाई
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा ❀ सबै कुशल कहवे तब लीन्हा
गूढ़ पत्र तव तात पठाये ❀ यह पत्री पढ़ि बूझहुजाये
पढ़ने मदन सभामहँ लागे ❀ सोसति मदनलिखाहै आगे
यही हेतु पत्री लिखि दये ❀ चन्द्रहास गति सुन्दर लये
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम सम्पति कर ठाकुर होई
कछू बिचार हृदय नहिं कीजै ❀ तुरतहिं बिषया ब्याहि सो दीजै
पूरण कार्य सिद्धि तब होई ❀ मदन पढ़ै चिट्ठी महँ सोई

दो० हर्षित मदन हृदय महँ, तुर्त ज्योतिषी लाय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्ब सुयोग सुमङ्गल, लग्न बिवाह धराय॥

बिषया तहां मनाव भवानी ❀ चन्द्रहास बरदे कल्यानी
तृतिया ब्रत करिहौं मैं तोरी ❀ तुम जो आश पुजावहु मोरी
अन्तःपुरै मदन तब गये ❀ सब बृत्तान्त मातुपहँ कहे
गोधन समय ब्याह परमाना ❀ चन्द्रहासबर बिषया बामा
बिषया ते सब सखिन सुनाई ❀ सुनतै बिषया लज्जा पाई
लग्न भये तब बाजन बाजे ❀ मङ्गलचार सखीगण साजे
चन्द्रहास को तब अन्हवाये ❀ बिषया को शृङ्गार बनाये
बिबिध प्रकार लग्न धरवाये ❀ ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये
गोत्र पूछि कह तब मन लाई ❀ चन्द्रहास तब बात सुनाई
माता पिता गोत्र हरि अहै ❀ लै कुलिंद पारावति कहै

दो० शाखोच्चार उचारि कै, बेद जो बिबिध प्रमान।
शास्त्रधर्म कुलधर्म मत, मदन देत है दान॥

कन्यादान मदन तब कीन्हा ❀ गज तुरंग मणि मुक्ता दीन्हा
रजत सुवर्ण बहुत तेहि दीन्हा ❀ सब भण्डार शून्य तौ कीन्हा
होम करी गँठिबन्धन भये ❀ भाँवरि सात अग्नि पर दये
दक्षिण ब्राह्मण सबहिन पाये ❀ यहि प्रकार ते ब्याह कराये
सब द्विज और पुरोहित आये ❀ दान देय सब बिदा कराये
मँगलाचार युवतिजन गाये ❀ बहुत गुणीजन मँगता आये
बिष देवायकै मारन चहै ❀ हरि सहाय तौ नारद कहै
केवल हरिहि सदा मनलाये ❀ बिष देते बिषया सो पाये
परमभक्त प्रभु कपट न करै ❀ एक पिता भक्ती मन धरै
ताहि सदा हरि रक्षक अहैं ❀ काह करै बिष नारद कहैं

दो० मङ्गलदायक वही प्रभु, नारद कहा बखानि।
बैशम्पायन भाषेऊ, सुनत दुःखकी हानि॥

धृष्टबुद्धि चन्दनपुर माहां ❀ तब कुलिन्दको पाये ताहां
प्रजा लोगको दण्डै ताहा ❀ महाकष्ट चन्दनपुर माहा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहु प्रकार ते कष्ट दिखावे ❋ यहि विधि सबसों धन मँगवावे
मठ देवालय देखत जरई ❋ महाकष्ट कालिन्दहि करई
लूटि मारि लीन्हा जब देशा ❋ तब कुलिन्द को भई अँदेशा
मन्त्री महाहर्ष मन भयऊ ❋ जाना शत्रु नाशि अब गयऊ
इक दिन बसे दुजे दिन गये ❋ तीजे अन्त भोर जब भये
हर्षित ह्वै चण्डोल सवारा ❋ तुरत आपने पुर पगु धारा
सौ तीनसौ कहार सोहाये ❋ त्यहिचँडोल सम पवन चलाये
मारग माहिं सर्प एक रहै ❋ बिषया खाकी बातैं कहै

दो० मूँहकलश मो हम हते, देखा बिषया ब्याह।
बूझा नहिं सो मन्त्रिने, चला हर्ष मनमाह॥

बाद्य शब्द सुनियो मनभङ्गा ❋ बिधना कीन्ह छत्र को भङ्गा
गृहके निकट पियादे भये ❋ जहँ मंगत जन तहँवाँ गये
ब्याह अर्थ सबहीं तहँ कहे ❋ मन्त्री सुनत क्रोध उर दहे
भाषे चन्द्रहास है जाना ❋ मंगत जन भाषे परमाना
आगे जात द्विजन को देखा ❋ आशिर्बाद देत द्विज पेखा
चन्द्रहास बर भाग्यन पाये ❋ सुनतहि मन्त्री मारन धाये
गांठि गहे बहु क्रोधित पागे ❋ देखत सबै बिप्र तब भागे
काहु यज्ञ में सूत्र उतारी ❋ काहू कुश पैंती अण्डारी
भागे द्विज गृह मन्त्री आये ❋ चित्र बिचित्रहि देखन पाये
स्त्री धूप दीप लै आई ❋ तब मन्त्री पूछा मनलाई

दो० कहा दये कह पायऊ, मङ्गल कौन उपाय।
चन्द्रहास कहँ पायऊ, स्त्री कहैं बुझाय॥

पूछे काह तासु कह दीन्हा ❋ स्त्री सबै निवेदन कीन्हा
धन रतनन दै कन्या दीन्हा ❋ सुनत क्रोध मन्त्री तब कीन्हा
क्रोधवन्त मन्त्री चलि आगे ❋ बर कन्या तो चरणन लागे
क्रोधित नैन सो देखत अहै ❋ सत्य असत्य न एकौ कहै
आगे बैठिके मदन बोलाये ❋ धिक धिक करि तब बात सुनाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पत्री पढ़िकै काम न कीन्हा ❀ मदन जोरिकर बोलै लीन्हा
धन अरु रत्न अश्व गज दये ❀ सब भण्डार सून तव भये
सुनतै अधिक क्रोध उर भये ❀ जा बनबास तु आज्ञा दये
मदन कहा मम दोष न दीजै ❀ का अपराध प्रकट त्यहि कीजै
एक घाटि भइ है मैं जाना ❀ नहीं कुलिन्द बुलायो माना

दो० आज्ञा दीन्ही जाहि हम, लाओ चरण मनाय ।
तुमने लिखा सुसत्य है, जरहु काहि मनलाय॥

सुनतै मन्त्री बहुतै जरई ❀ करमींजै औ हाहा करई
मन्त्री कह वह पत्री लाओ ❀ बांचि अर्थ तौ हमैं सुनाओ
मदन तुरन्त पत्रि लै आये ❀ बिषया नाम तु तुर्त बताये
देखत पत्री बिस्मय भयऊ ❀ बहुत बोध तौ पुत्रहि दयऊ
बिधिका लिखा मेटि नहिं जाई ❀ आन करत आनै होजाई
करि संतोष तु पोथी लीन्हा ❀ चन्द्रहास तब बोलन लीन्हा
जनि कछु संशय करु मनमाहीं ❀ तुमतौ हमरे पितु सम आहीं
कपट रूप भाष्यो तब बाता ❀ मनहिं बिचारै बध सख्याता
यहि हतिकै कन्या बिधवाओं ❀ करिकै छल यहि तुर्त मराओं
बोलि चँडाल कहै यह बानी ❀ प्रथमहि कपट करेहु अज्ञानी

दो० अब तौ मानहु बात मम, लैकर बान कृपान ।
पुर बाहर है चण्डिगृह, छिपि रहियो सज्ञान॥

संध्या जाय मारियो ताहीं ❀ बहुतै धन पैहौ मम पाहीं
तब चण्डाल जाय छिपि रह्यो ❀ चन्द्रहास सों मन्त्री कह्यो
हमरे कुलकी चण्डी आहा ❀ पूजहु जाय कियो है ब्याहा
संध्या समय अकेले जैयो ❀ चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो
सुनत बात तौ पूजन चले ❀ मदन गये राजा गृह भले
कुन्तल राजै सपना पाई ❀ गालभ प्रोहित को समुझाई
बिना शीश देखा परछाहीं ❀ कहौ बुझाय कौन फल आहीं
गालभ कहै अमङ्गल अहै ❀ अन्त निकट आये मुनि कहै

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और परीक्षा बहुत बताई ❀ जाते मृत्यु जान सब राई
बहुत अरिष्ट तु सुने भुवारा ❀ ताको नहीं करै बिस्तारा

दो० कुन्तल नृपती मदनते, कही बात समुझाय।
चन्द्रहास को राज्य दै, हम तप कानन जाय॥

कन्यादान राजपद पाये ❀ तुरतहि चन्द्रहास को लाये
गोधुलि बेरा सब चलि आहीं ❀ आगे और लग्न है नाहीं
सुनतहि मदन तुरन्त सिधाये ❀ मगमहँ चन्द्रहास को पाये
धूप दीप नैवेद्य सुहाये ❀ कहँ लै चल्यो पूछि मनलाये
चन्द्रहास कह मन्त्रि पठाये ❀ अकसर चण्डी पूजन आये
मदन कह्यो हम पूजैं जाई ❀ तुमहिं तुरन्त हँकारत राई
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै ❀ आप बिजय राजापहँ कीजै
लै नैवेद्य मदन तब चले ❀ चन्द्रहास नृप गृह गयो भले
मदन कहे तो असगुन भये ❀ मनमहँ तौ बहुचिन्तित भये

दो० राजा तब अभिषेक करि, दीन्हा कन्यादान।
राज्य देश भण्डार सब, दीन्हे हर्ष प्रमान॥

राज्य देश संकल्पहि दीन्हा ❀ राजा बनहि गमन तब कीन्हा
मदन गये चण्डी गृह माहीं ❀ मृत्यु भवन ह्वैगो तब ताहीं
चण्डालन तब कीन्हे घाऊ ❀ भूल खड्ग लै घाव लगाऊ
मदन तबहिं चण्डी ते कहा ❀ हमको बलि दीन्हे तुव अहा
परस्वारथ किय मैं गो मारा ❀ माता पूजत तुमने मारा
मैं नहिं महिषासुर हौं माता ❀ रक्तबीज नहिं शमन सख्याता
और निशुम्भ नहीं हौं माई ❀ परमज्योति तुम सुन मनलाई
यह कहि प्राण अन्त तब भयऊ ❀ रो चण्डाल सबै गृह गयऊ
चन्द्रहास राज्यासन पाये ❀ मन्त्री गृह लै त्रिया सिधाये
दूत जाय मन्त्रिहि समुझाये ❀ कहे जाय सब बात बुझाये

दो० राजा कन्यादान दिय, करि नृप बनै पयान।
मन्त्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रहास जब आये आगे ❀ कन्यासहित चरण तब लागे
मन्त्री पूछ चण्डि गृह माहीं ❀ गये हते कीधौं पुनि नाहीं
चन्द्रहास कह मदन सिधाये ❀ हमहिं नृपतिके भवन पठाये
चन्द्रहास कहि गृहको गये ❀ पुत्रशोक मन्त्री कहँ भये
रोवत चलिभो चण्डी पाहां ❀ अन्धकार रैनी भइ ताहां
श्मशान महँ आये जबहीं ❀ भूत प्रेत सब भागे तबहीं
बरते चिता काठ यक लाये ❀ तेहि उजियार चण्डिगृह आये
डारि काठ तब पुत्र उठाये ❀ ग्रीव लगाय रुदन मनलाये
मण्डप माहँ खम्भ यक आह ❀ मारे शीश खम्भ के माह
मृतक भयो मन्त्री परमाना ❀ यहि अन्तर तब भयो बिहाना

दो० द्विज पूजन कहँ गयो जब, देखा गृहमों जाय ।
मन्त्री मदन परे हते, चण्डी मण्डप आय ॥

विप्र जाय राजा ते कहेऊ ❀ चन्द्रहास तहँपर तब गयऊ
बहु अस्तुति चण्डी की करै ❀ कुण्ड खनाय यज्ञ संचरै
घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा ❀ बेद मन्त्र आवाहन कीन्हा
चण्डी पहँ राजा अस कहै ❀ तू तौ शक्ति मातु जग अहै
मोरे हेतु पूजने आये ❀ मोते रिसकरि बलि यह खाये
यह कहिकै तब होम शरीरा ❀ सर्व शरीर होम नृप बीरा
पाछे माथ उतारन चहै ❀ काढ़ि खड्ग हाथे महँ गहै
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी ❀ चन्द्रहास यह बचन बखानी
जन्म जन्म भक्ती भगवन्ता ❀ दीजै माता हमहिं तुरन्ता

दो० पाछे मांग्यो भूपने, ये दो देहु जिआय ।
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चण्डिका माय ॥

तब हँसि चण्डी कह मृदुबानी ❀ अचल भक्ति होइहि सज्ञानी
बालापनका चरित तुम्हारा ❀ सो कलि में गावत संसारा
मुँदौ नयन मैं देउँ जिआई ❀ सुनत नयन मूँद्यो तब राई
मन्त्री मृदतहि दिये जगाई ❀ अन्तर्धान चण्डि ह्वै जाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नयन खोलिकै राजा देख्यो ❋ उठे दोउ तब हर्ष बिशेख्यो
तीनहुँ जन तब मग्नहि गयऊ ❋ चन्द्रहास अस राजा भयऊ
तब पारथ पूछै मन लाई ❋ फेरि कुलिन्द मिले किमि आई
पारथ सों नारदमुनि कहै ❋ चन्दनपुर कुलिन्द दुख सहै
जो कुछ धन होते परमाना ❋ सब दे दियो द्विजनको दाना

दो० करि बिचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय।
संशय यह तब मन्त्रिसन, कहा दूत कोइ जाय॥

तब मन्त्री चन्दनपुर गयऊ ❋ बहुप्रकार अनुहारी कियऊ
चन्द्रहास चन्दनपुर गयऊ ❋ देखि कुलिन्द हर्ष मन भयऊ
सब समेत कुन्तलपुर आये ❋ परमहर्ष ते राज रजाये
बर्ष तीनि राजा तप कियऊ ❋ चन्द्रहास को सुत तब भयऊ
बिषयासुत मकरध्वज नामा ❋ पद्म नेत्र सुन्दर परमाना
पञ्चक मालीनी बिद्यानी ❋ दोनों गर्भ दोउ सुत जानी
बाल दशा बीते जब ताही ❋ शालग्राम ब्रत साधे आही
शिला महातम उत्तम अहै ❋ शालग्राम निराञ्जन लहै
मृत्यु समय चरणोदक पावै ❋ पापी तरि बैकुण्ठ सिधावै
निरमायल जो भक्षत कोई ❋ देव पितृ सन्तुष्टित होई
दानी दाता दीपन राऊ ❋ चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ

दो० शालग्राम जहाँ रहैं, देव पितृ सब ताहिं।
सर्व तीर्थ जल पुण्य तौ, चरणामृतके माहिं॥

तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं ❋ बिष्णु समान देवता नाहीं
तुलसी मञ्जरि हरिको बासा ❋ दर्शे पाप होत हैं नासा
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ ❋ सबै कथा तुमते कहि दयऊ
नारद देवलोक कहँ गयऊ ❋ सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ
दल लेकर कुन्तलपुर आये ❋ राजा अश्वहि देखन पाये
पत्र पढ़े राजा सुख पाये ❋ धर्मराजको अश्व जु आये
आज देखिबे श्रीपति नैना ❋ चन्द्रहास हर्षित कह बैना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मकरध्वज ते बात जनाई ❀ पूरब दिवस निकट भो आई
युद्ध रचे जग होहै नासा ❀ लैकै अश्व मिलो हरि पासा

दो० पन्द्रह दिन पर्यन्त हय, रक्षा कीन्ह्यो राव ।
पाछे मिलने हेतु तब, चन्द्रहास नृप आव ॥

तिलक सुतुलसी माल बिराजै ❀ मोरपंख रथ ऊपर छाजै
तब श्रीपति देखै कहँ पाये ❀ होय चतुर्भुज तुरत सिधाये
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे ❀ चारो भुजते अङ्कम लीन्हे
चन्द्रहास चरणन में परे ❀ बहु प्रकार ते अस्तुति करे
तब राजा से कह भगवाना ❀ इनके हृदय मोर अस्थाना
आकर मिलो भक्त यह आहै ❀ तब पारथ श्रीपति ते काहै
भारत माहँ कहे यदुराई ❀ प्रणको गुन आये दुखदाई
ताको मिलों कहो का राजा ❀ क्षत्री धर्म होत है लाजा
तब हरि भाषे यह तनु मेरा ❀ मिले आयकै हर्ष घनेरा

दो० प्रभू पुण्य सों राजा, भाषे श्री यदुराय ।
सुनत बिहँसिकै पारथ, मिले तुरन्तहि जाय ॥

प्रेम हर्ष भे अंकम गहे ❀ चन्द्रहास राजा ते कहे
मो मन करना हती लराई ❀ पै इक बर्ष आय नियराई
युद्धहि रचे यज्ञ करभङ्गा ❀ ता कारण मिलाप तुव सङ्गा
जहँ श्रीपती तहाँ रण कैसो ❀ यह अचरज मनमाहँ अँदेसो
अश्वरु धन राजा तब जाना ❀ राजा दीन्ह चरण भगवाना
श्रीपति राजा ता सुत किये ❀ प्रेम हर्ष आनन्दित भये
तीन दिवस रह तेहि पुर माहा ❀ छूटो अश्व चलो पुनि ताहा
चन्द्रहास कहँ तब सँग लीन्हा ❀ बालक ते जिन रक्षा कीन्हा
ते पुर छांड़ि रहब घर माहीं ❀ कृष्ण संग सैना करि जाहीं
लै दल चन्द्रहास तब चले ❀ पारथ संग चले सुख भले

दो० प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानन्द ।
चन्द्रहास संगहि चले, बिष्णु भक्त सानन्द ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चला अश्व भर्मत फिरे, नाना देश बिदेश ।
ऐस न कोई जगत महँ, पकरे अश्व नरेश ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्वणिचन्द्रहासमिलनो नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

बैशम्पायन कहैं बखानी ❀ चला अश्व बिधिवत परमानी
जौने जौन देश हय गयऊ ❀ सबै नृपति पारथबश भयऊ
पाछे अश्व चले जग माहां ❀ समुद्र माहँ परबेश्यो ताहां
पारथ तब शोचन को लागे ❀ दीन बचन भाषे हरि आगे
कहो कृष्ण का करौं उपाई ❀ तब पारथ सों कह यदुराई
तुम हंसध्वज पुत्र तुम्हारा ❀ मोरध्वज हम पञ्च भुवारा
ये सब रथी उदधि महँ चले ❀ दरशनमात्र रिपूदल भले
पांचौ रथ सागर महँ गये ❀ जल में रथ चलते तब भये
छाये मकरा देवल छाये ❀ पशु पक्षी तहँपर बहु आये
देखा पुनि इक दालभमुनी ❀ बटको पत्र धरे शिर पुनी

दो० जङ्घा भेदी लाल भ्रू, औ बहु अहै भुअङ्ग ।
नमस्कार गे कीन्ह तब, पांचौरथ इक सङ्ग ॥

पारथ कहे गेह किन करो ❀ ऐसा कष्ट हेतु केहि धरो
मुनी कहै दुख गृह में अहै ❀ स्त्रीग्रहण पाप बहु रहै
घरी घरी बीचारत नाना ❀ पैहैं पाप झूंठ परवाना
पातक नहीं धर्म पुनि नाना ❀ पाप पुण्य बहुतै बीधाना
सुत नारी कब देखब नैना ❀ माया बिष्णू की सब चैना
ताते थोरे जीवन काजा ❀ ताते गृह कीजै नहिं राजा
मार्कण्डेय बशिष्ठ जो मुनी ❀ लोमश मुनी आदि हैं पुनी
प्रलयसमय हम देखा जेते ❀ पारथ बात कहत हैं तेते

दो० एक बट तरे आरहैं, तासु एकसौ डार ।
एक पत्र के ऊपरै, बाल रूप कर्तार ॥

बालरूप बट पत्रहि रहै ❀ पद अँगुष्ठ सो चाटत रहै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चलो पुत्र तव देखौं जाई ❀ सभामाहँ पहुँचे यदुराई
देखा नृपहि अचेतन परे ❀ श्रीहरि हाथ शीशपर धरे
उठे पुत्र कहतै भय त्यागो ❀ सुनतहि बात तुरत सो जागो
जागे हर्षित भै महतारी ❀ पुत्रहि लै पारथ पग डारी

दो० पारथ बिनती कीन्ह बहु, नेवता दीना शाल।
पुत्रसहित हर्षित मनहि, चले यज्ञके काल॥

श्रीपति कहत पार्थके पाहीं ❀ बर्ष तुलान चलो गृहमाहीं
ढूनो अश्व गये बनवारी ❀ सबै नृपन सों कहा मुरारी
नीलध्वज हंसध्वज राऊ ❀ बीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ
चन्द्रहास्य अनुशल्या अहै ❀ यौवनाश्व बेगहि तब कहै
बृषकेतू औ कामकुमारा ❀ सब सों भाषो श्रीभर्तारा
हम तौ जात अग्र गृह आछे ❀ तुम सब मिलिकै आवहु पाछे
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ ❀ आनन्दित तब अर्जुन भयऊ
राजा सुनत हर्ष मन माना ❀ हरिको दै आलिङ्गन दाना
जहां जहांपर भै रण करनी ❀ करि बिस्तार सबै हरिबरनी

दो० भीम आदि पाण्डव सबै, परशे तबै मुरारि।
नारी रुक्मिणि आदि जहँ, तहां गये बनवारि॥

भीम सङ्ग हरिगे जहँ नारी ❀ सतिभामा परिहास बिचारी
नाना कौतुक भये हमारा ❀ ताको नहीं करे बिस्तारा
तब हरि भीम नृपति पहँ आये ❀ चले अग्र राजा समुझाये
धृतराष्ट्रक आगे तब कीजै ❀ आगेहो पारथ कहँ लीजै
कुन्ती आदि सहित गन्धारी ❀ औ जेती श्रीपतिकी नारी
बेदध्वनि कर ब्राह्मण चले ❀ कीन्हा गवन लोग सब भले
दधी दूब अक्षत औ माला ❀ यह सब लेइ चले द्विजपाला
आरति बहुतै भांति सँवारी ❀ चलीं साजि क्षत्रिनकी नारी
शंखध्वनि तो होत अपारा ❀ नाना भ्रमर करत गुञ्जारा
उतते अश्व अग्र हैं दोऊ ❀ बकदालभ्य संग हैं सोऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तैं प्रभु जाना मैं मनमाहा ❀ एही कृष्ण सन्त जग आहा
अब मोको आलिङ्गन दीजै ❀ धर्मराजको यज्ञसु कीजै
श्रीपति कहैं मुनी सों बाता ❀ महामुनी तुम हौ सख्याता
एक बार करि गर्ब जु नाना ❀ हरि माया इक पवन उड़ाना
मोहिं समेत गयो लै तहां ❀ अष्टमुखी ब्रह्मा है जहां
उन पूछा तुमको यह अहौ ❀ इन कह ब्रह्मा जानत रहौ
उन कह अष्टबदन हैं मोहीं ❀ कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं

दो० अष्टबदन ब्रह्मा हम, तुम हौ कौन प्रकार ।
यहै रूप तो बोलतो, भयो पवन संचार ॥

दूनो ब्रह्मा गे तब तहां ❀ सोलह मुख ब्रह्मा है जहां
उनहु एक परकार सुनाये ❀ तीनौ ब्रह्मा पवन उड़ाये
बत्तिस बदन पाहँ तब गयऊ ❀ उनहु रारितौ यहिबिधि कियऊ
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये ❀ चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये
उनहू रारि करै मन लाई ❀ पांचौ ब्रह्मा पवन उड़ाई
इक सौ अट्ठाइस मुख जहा ❀ उनहू गर्ब बात तौ कहा
छहौ ब्रह्मा उड़िगे तहां ❀ शतमुख ब्रह्मा रहते जहां
तिनने सबको ज्ञान सिखायो ❀ यह दालभमुनि कथा सुनायो
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये ❀ बकदालभ मुनि सबै बताये
मुनि को लै चण्डोल चढ़ाई ❀ अश्व दोउ लाये यदुराई

दो० चले अश्व तब लेयके, बकदालभ मुनि साथ ।
वैशम्पायन कहत हैं, सुन जनमेजय नाथ ॥

चले अश्व तब आये तहां ❀ जयद्रथ को बालक है जहां
दूतन कहा हमारे देशा ❀ अर्जुन कृष्ण कीन परबेशा
जो पारथ जयदर्थहि मारो ❀ सुनत मृत्यु त्यहि भये भुवारो
सभामाहिं मृत्यू तौ भये ❀ ताकी माता रोदन ठये
रोदन करत हरी पहँ गई ❀ पारथ हमें महादुख दई
पती पुत्र मारो दुइ सही ❀ देखत दयावन्त हरि कही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चलो पुत्र तव देखौं जाई ❀ सभामाहँ पहुँचे यदुराई
देखा नृपहि अचेतन परे ❀ श्रीहरि हाथ शीशपर धरे
उठे पुत्र कहते भय त्यागो ❀ सुनतहि बात तुरत सो जागो
जागे हर्षित भै महतारी ❀ पुत्रहि लै पारथ पग डारी

दो० पारथ बिनती कीन्ह बहु, नेवता दीना शाल ।
पुत्रसहित हर्षित मनहि, चले यज्ञके काल ॥

श्रीपति कहत पार्थके पाहीं ❀ बर्ष तुलान चलो गृहमाहीं
दूनो अश्व गये बनवारी ❀ सबै नृपन सों कहा मुरारी
नीलध्वज हंसध्वज राऊ ❀ बीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ
चन्द्रहास्य अनुशल्या अहै ❀ यौवनाश्व बेगहि तब कहै
बृषकेतू औ कामकुमारा ❀ सब सों भाषो श्रीभर्तारा
हम तौ जात अग्र गृह आछे ❀ तुम सब मिलिकै आवहु पाछे
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ ❀ आनन्दित तब अर्जुन भयऊ
राजा सुनत हर्ष मन माना ❀ हरिको दै आलिङ्गन दाना
जहां जहांपर भै रण करनी ❀ करि बिस्तार सबै हरिबरनी

दो० भीम आदि पाण्डव सबै, परशे तबै मुरारि ।
नारी रुक्मिणि आदि जहँ, तहां गये बनवारि ॥

भीम सङ्ग हरिगे जहँ नारी ❀ सतिभामा परिहास बिचारी
नाना कौतुक भये हमारा ❀ ताको नहीं करे बिस्तारा
तब हरि भीम नृपति पहँ आये ❀ चले अग्र राजा समुझाये
धृतराष्ट्रक आगे तब कीजै ❀ आगेहो पारथ कहँ लीजै
कुन्ती आदि सहित गन्धारी ❀ औ जेती श्रीपतिकी नारी
बेदध्वनि कर ब्राह्मण चले ❀ कीन्हा गवन लोग सब भले
दधी दूब अक्षत औ माला ❀ यह सब लेइ चले द्विजपाला
आरति बहुते भांति सँवारी ❀ चलीं साजि क्षत्रिनकी नारी
शंखध्वनि तो होत अपारा ❀ नाना भ्रमर करत गुञ्जारा
उतते अश्व अग्र हैं दोऊ ❀ बकदालभ्य संग हैं सोऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० भूप भूप सब भेंटते, मिलत सबै सरदार ।
स्त्री से स्त्री सबै, लेत अहैं इकबार ॥
मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ ❀ धर्मराज आनन्दित भयऊ
राजा सब तो करैं जोहारा ❀ पुण्य प्रतापी धर्मकुमारा
सब राजाको करि सन्माना ❀ यज्ञ रचा तौ बेद बिधाना
अश्वमेध को मण्डप साजै ❀ अष्ट द्वार तो सरस बिराजै
बेलि पर्ण औ पुष्प बनाये ❀ यज्ञ साज सबही निर्माये
बकदालभ जो बर्णैं धर्मा ❀ लागे मुनी यज्ञके कर्मा
बामदेव बशिष्ठहि आये ❀ पाराशर मुनि अत्रि सिधाये
भरद्वाज ऋषि गौतम आये ❀ मुनि अङ्गिरा आइ मनभाये
आठौ मुनी दया के पाला ❀ बरन कीन्ह है धर्म भुवाला
छीछन भै नृप द्रौपदि रानी ❀ हरिणा सींग गहे कर जानी
दो० धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गङ्गातीर ।
निज तिरिया लै जाइये, भङ्ग न गङ्गा नीर ॥
तिरियन संग चले सब भले ❀ अरुंधती बशिष्ठहुँ चले
कृष्णसंग श्रीरुक्मिणि रानी ❀ प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी
ऊषा अरु अनिरुध कै जोरी ❀ भीम सुसंग हिडंबी तोरी
बृषकेतू भद्रावति रानी ❀ मोरध्वज कुमोदनी रानी
यौवनाश्व चन्द्रावति चली ❀ नीलध्वज नन्दिनी भली
बेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये ❀ नारद सतिभामा गृह आये
कहे बात रुक्मिणि हरि प्यारी ❀ गांठि जोरि जल हेतु पधारी
तब सतिभामा मुनि ते कहे ❀ सदा कृष्ण मेरे ढिग रहे
तहाँ हरी मुनि देखन पाये ❀ ऐसे अष्ट नारि पहँ आये
गोपिन गृह कहँ देखन जाई ❀ तहवाँ देखा श्रीयदुराई
दो० सतिभामा श्रीजाम्बवति, रुक्मिणि नारी सङ्ग ।
गांठी जोरी चले हरि, भरन हेतु जल गङ्ग ॥
जलके हेतु तु सबै सिधाये ❀ तब राजा नारद पहँ आये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरी सहित जेते हैं राजा ❀ गङ्गा माहँ करैं जल काजा
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरे ❀ पाछे और सबन संचरे
व्यास आदि जल पूजन करे ❀ कञ्चन कलश नीरसों भरे
चले नीर ले सब नृप रानी ❀ अरुन्धती रुक्मिणी बखानी
कलश भार दुखदायक अहै ❀ सुनिये बात जाम्बवति कहै
कर पर धर तौ कृष्ण पहारा ❀ शीशन धरे कलशको भारा
बहुतै कौतुक स्त्रिन कीन्हे ❀ आये सबै गङ्ग जल लीन्हे
बेदध्वनिकै कलश उतारा ❀ युवती गावहिं मङ्गलचारा

दो० श्यामकर्ण जल पान करि, रानी नृप अस्नान।
द्रौपदि रानी धर्मसुत, जैसो यज्ञ बिधान॥

धोती पहिरि मुनी सब आये ❀ उत्तम चन्दन अङ्ग लगाये
पारथ भीम देत हरि दाना ❀ राजा सबै किये अस्नाना
दक्षिणा भये यज्ञ के हेता ❀ सबकहँ पूजन कियो सचेता
बेद उचार मन्त्र तब कीन्हे ❀ धौम भीम ते बोलै लीन्हे
बायें श्रवण अश्व को मारा ❀ ताते चलै क्षीर कै धारा
तब सबहीं बिस्मयकै माना ❀ धौम कह्यो भीमहि सुनकाना
मारौ अश्व होइ द्वै खण्डा ❀ तबहीं भीम गहे कर खण्डा
तबहीं भीम क्रोध करि छांटा ❀ दोय टूककै अश्वहि काटा
शिर उड़ि रबिमण्डल महँ रहे ❀ सुघर अश्व जग जीवनकहे
हयके हृदय आप हरिमारा ❀ हृदय चली रक्तकै धारा

दो० अश्वज्योति हरि अङ्गमों, प्रबिशतभै तबजाय।
परा अश्व बसुधाविषे, भो कपूर तनु आय॥

सो कर्पूर धराहै आगे ❀ व्यास होम करने को लागे
कुण्ड माहिं तब आहुति दीन्हे ❀ तबहीं व्यास कहनकहँ लीन्हे
इन्द्र आगमन परिश्रम करो ❀ तबहीं इन्द्र बचन अनुसरो
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो ❀ आहुति दें सब देव घनेरो
अश्वलिखा आहै गुरु पारा ❀ होम करो द्विज बेद उचारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो कपूर ते आहुति दये ❀ सब संसार संतुष्टित भये
यज्ञ धर्म आगम में लागे ❀ धर्मराज के पातक भागे
कृष्ण कह्यो सब राजा ठांय ❀ यज्ञ धर्म लीजै तन आय
अब आगे कलियुग जो ऐहै ❀ कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै
नृपति देव संतुष्टित भये ❀ सबै यज्ञ के पातक गये

दो० शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी सङ्ग ।
सहस दण्ड धरि छत्र तब, ताने नृपशिर रङ्ग ॥
भयो यज्ञ सब पूरण, भागे पाप अनन्त ।
जहाँ आप ठाकुर रहे, तहाँ सबै हर्षन्त ॥

वैशम्पायन कथा सुनाये ❀ तौ सब राजा तहाँ न आये
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ श्रीहरिको आलिङ्गन कियऊ
पाछे देन लगे सब दाना ❀ जो कछु होवे यज्ञ बिधाना
व्यासहि भूमिदान तौ दयऊ ❀ साठ एक बकदालभ भयऊ
एक हस्ति अरु एक तुरङ्गा ❀ कञ्चन माल एक तौ सङ्गा
मुक्ता अञ्जलि गऊ हजारा ❀ सेवकचारि तु दिये भुवारा
एकक द्विज तो एतिक पाये ❀ करि मख सबै दरिद्र भगाये
गज सौ चार तुरंग हजारा ❀ प्रतिदिन दीन्हो भूप उदारा
स्त्रिनको भूषण पहिराये ❀ वैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये
प्रेमहर्ष धर्म नृप जाना ❀ सिंहासन बैठे भगवाना

दो० अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्हो राउ ।
तीन लोक संतुष्टित, देवन आनँद पाउ ॥

पाछे नृपति मुनीजन आये ❀ षट्रसभोजन अमृत जिमाये
करि भोजन तब अचमनकीन्हा ❀ खरिकाशोधन केशव दीन्हा
त्यहि अन्तर ब्राह्मण दो आये ❀ झगरत धर्मराज पहँ धाये
एक कहै भूमी मोहिं दीन्हा ❀ इनने खेतजु बलकरि लीन्हा
कहै धान्य बांटी कर लीजै ❀ लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै
दूसर कहै भूमि है तेरी ❀ सबै धान्य है है कत मेरी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्ण कह्यो धर्मजके पाहीं ❀ है अन्याय छुटो है नाहीं
तीन मास बीते कलि ऐहै ❀ आपन न्याय आप करिलैहै
तुम जो दीन बांटि कै आधा ❀ ऐसे कली कपट दुख दाधा
यह कह घरको दीन्ह पठाये ❀ पाछे राजन बिदा कराये

दो० जहां देश है जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश।
अश्वमेध भारत कथा, काटे पाप कलेश॥

बिधि संयोग आय बन आवा ❀ बैशम्पायन कथा सुनावा
राय युधिष्ठिर कहबै लीहेउ ❀ ममअस मख काहू नहिं कीहेउ
एही बीच नकुल इक आवा ❀ मध्य उच्छिष्ट बूड़की खावा
तन मन देखि बुड़ै पै सोई ❀ क्षण बूड़ै क्षण ऊपर होई
यह अचरज तहँ देखत भयऊ ❀ यहि बिधि पहर एक सो गयऊ
कृष्ण देव सों राजा कहै ❀ यह चरित्र देखो कस अहै
उच्छिष्ट माहिं बूड़ै उतराई ❀ तन मन देखि बहुत पछताई
ऐस नकुल मैं कबहुँ न देखा ❀ कञ्चन मुख कबहूं ना पेखा
तबहीं कृष्ण कहा समुझाय ❀ यह बृत्तान्त कहौं मैं गाय
पूरब कथा सुनौ नरनाहा ❀ जाहीते मुख कञ्चन आहा
सो बृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ❀ जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं
पूर्ब जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ ❀ बहुत दुःख तनुव्यापित भयऊ
सुत पत्नी द्विज के सँग आहा ❀ चारों प्राणी रह सँग माहा
परम दरिद्र दुखित सो रहई ❀ तीरथब्रत सो फिरि फिरि करई
नेम धर्म बहुतै सो करई ❀ अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई
चारों प्राणी बहु शुचिवन्ता ❀ निशिबासर ध्यावत भगवन्ता
भिक्षा मांगि बिप्र लै आवै ❀ आधा अन्न संकल्प करावै
याही बिधि बहु दिवस गँवावा ❀ ब्यासदेव तब नृपहि सुनावा
चारों प्राणि बिप्र सो रहेउ ❀ एकते एक धर्म बहु किहेउ

दो० एक दिवस चलि यात्रा, पत्नी सह द्विजराव।
ऋषि अनङ्ग तहँ भूपती, सबही कृष्ण सुनाव॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चला यात्रा बिप्र नहाई ❀ चारि दिवस सो अन्न न पाई
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ ❀ पञ्चदिवस याही बिधि गयऊ
छठयें दिवस नगर इक आयो ❀ बिधि संयोग तहां कस भायो
जव कर खेत तहां इक अहई ❀ मारग बीच तहां सो रहई
जव काटी किसान लै गयऊ ❀ जव इक परा तहाँपर रहेऊ
तब द्विजसुत ब्राह्मणिसों कहेउ ❀ चुनहु आय बुद्धी यह किहेउ
पुत्र सहित द्विजबीनै लीन्हेउ ❀ एककजवचुनिराशिजोकीन्हेउ
जव सब चुनी बनावत भयऊ ❀ तबहीं बिप्र कहत अस भयऊ
आधो आधा द्विज तब किहेऊ ❀ आधा अंश हाकिमहि दिहेऊ
आधा अंश गृहस्थ बिचारी ❀ जो उबरा सो लिह्यो सँभारी
सो ब्राह्मणि लैगै जतसारा ❀ जवको चूरन कीन सुसारा
सत्तुपीसि ब्राह्मणि लै आई ❀ दोना पांच ब्राह्मणी बनाई
पांचोपत्र कीन्ह द्विज जबही ❀ एकक पत्र चारलिय तबही
इकसो अभ्यागत कहँ राखा ❀ अस धर्मिष्ठ कृष्ण तौ भाखा
जबहीं भोजन चाहै लीन्हा ❀ स्तुति आय बिप्र इक कीन्हा
तब द्विज चरण पखारा जाई ❀ बहु आदर आन्यो बैठाई
हर्ष सहित द्विजपत्र जु दीन्हा ❀ तबहीं द्विज कृष्णार्पण कीन्हा
कह्यो बिप्र संतुष्ट न भयऊ ❀ आपन पत्र जो ब्राह्मण दयऊ
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा ❀ चारौ पत्तर जेवै लीन्हा
करि प्रसाद अचवा पुनि सोई ❀ नीर प्रबाह पुहुमि में होई
एक नकुल तहँ आव पियासा ❀ ठोर कुँवा ये नीर प्रकासा
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पिहेऊ ❀ कञ्चन मुखहि तहाँतक भयऊ

दो० अस कौतुक तहँ होतभा, सुनौ राव चितलाय।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुवर्ण होजाय॥

नकुल मनहिमन करै हुलासा ❀ अब बिधि मोर जो पुरवैआसा
सुना नकुल ने यह सदभाऊ ❀ राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ
बहुत ऋषय आये मखशाला ❀ औरौ बहु आये महिपाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बड़ बड़ ऋषै तहाँ चलिआये ❀ प्रेम पुनीत देख मन भाये
औरौ देव मुनीजन भारी ❀ तिनके सँग आये बनवारी
उनकर जूंठ परा तहँ होई ❀ तनु मोरा कञ्चन हो सोई
यहगुणजानि नकुल तहँ आवा ❀ उच्छिष्टमाहिं तनु आप बोरावा
सो जु देह सुबरण नहिं होई ❀ तब तब बुड़की मारै सोई
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई ❀ सुनतहि मानभङ्ग भो राई
राय युधिष्ठिर गर्ब गँवावा ❀ लज्जा बश ह्वै शीश नवावा
सबै ऋषै कहँ लज्जा आवा ❀ मान महातम सुनत गँवावा

दो० यह चरित्र सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मान जु भङ्गभे, रहे ऋषै शिरनाय॥

कृष्ण साथ लिय सब परिवारा ❀ द्वारावती नगर पग धारा
प्रेम हर्ष आनन्द उपाय ❀ कृष्ण द्वारका पहुँचे जाय
बैशम्पायन कहैं बखानी ❀ अश्वमेध है पुण्य कहानी
दुखी सुनै दारिद्र पराय ❀ रोगी रोग तुरत क्षय जाय
निष्पुत्री सुनतै सुत पावै ❀ पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै
सहसन धेनु देइ जो दाना ❀ सर्ब तीर्थ करते अस्नाना
पर्ब अठारह सुन फल होई ❀ अश्वमेध जानो फल सोई
यह चरित्र सुनि जे मनलाई ❀ यमके दूत निकट नहिं जाई
कथा सुनत देते जो दाना ❀ प्रापति देव होयँ भगवाना
पाण्डव बिजय कहै अनुसारा ❀ कह संक्षेप करै बिस्तारा

दो० पाण्डवबिजय कथा यह, पुण्य श्लोक बखान।
अश्वमेध सम्पूरण, सुनु राजा सज्ञान॥

अश्वमेध मख पातक हरता ❀ राजा सुनौ श्रीपती करता
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना ❀ तापर रह प्रसन्न भगवाना
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं ❀ सुन अनसुनी एकसम ताहीं
मनसा फल प्रापति तौ होई ❀ यही सत्यकै जानौ सोई
मनमों धरै ज्ञान गुरुदेवा ❀ मनमें पार होत नर सेवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रद्धा मन जानौ परवाना ❀ ताते परब्रह्म पहिचाना
काम क्रोध मद अक्षय चाहा ❀ भावै ज्ञान कहो का ताहा
का कामी के आगे ज्ञाना ❀ काह क्रोधते भक्ति बखाना
का लम्पटके आगे धर्मा ❀ कामी काह पुण्यका कर्मा
जैसे ऊषर बीज बोवाये ❀ तैसे यह सब भेद बताये

दो० भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परबेश ।
मनमें भक्ति न जासुके, सो नहिं फल उपदेश ॥

इति श्रीमहाभारतसबलसिंहचौहानकृतअश्वमेधयज्ञभाषा-
राजप्रयाणवर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
इति अश्वमेधपर्व समाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

आश्रमवासिक, मुशलपर्व संयुक्त

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

विदुरकथा, सपत्नीक धृतराष्ट्र और कुंती का देहत्याग और अर्जुन का श्रीकृष्णचन्द्रजी के हाल जेने के लिये रथारूढ़ होकर द्वारकापुरी में गमन, दुर्वासादि ऋषियों का तप-निमित्त द्वारका में गमन दुर्वासःशाप, मुशल के खण्ड करके समुद्र में बहाना वहाँ मछली का खाकर बालिवत केवट का पाना, उद्धव का श्रीकृष्णजी की आज्ञा के अनुसार बदरिकाश्रम-गमन, राजा जनमजय का नव योगियों से सम्वाद आदि कथाएँ संयुक्त हैं।

—:o:—

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन १९३६ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत आश्रमवासिकपर्व ॥

जयति जयति रघुबर श्रीरामा ❋ भक्त जनन को पूरणकामा
बन्दौं गुरु गोबिंद सब ताता ❋ बन्दौं पुनि श्रीपितु अरु माता
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा ❋ बार बार शिवकी करि सेवा
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी ❋ सबिधि काब्य जनकी जो सेवी
बन्दौं ब्यासादिक मुनि नारद ❋ हनूमान जो ज्ञान बिशारद
सबलसिंह यह भारत भाखा ❋ श्रीप्रभु जब अरके दै राखा
औरँगशाह दिलीपति राजत ❋ मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत
ये नृप के पुरुषन महँ गाये ❋ सबलसिंह चौहान बनाये
सम्बत सत्रह सै इक्यावन ❋ शुक्लपक्ष दशमी बुध सावन
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा ❋ ब्यासदेव को सुमिरण कीन्हा

दो० लक्ष्मी के पति जौन हैं, हैं लक्ष्मीबश जाहि।
सल्लक्षण जामें मिलैं, बन्दत हौं मैं ताहि ॥
श्रीहरि ब्यापक जक्तसब, तेहिते बन्दिय सर्व।
सबलसिंह चौहान कहि, आश्रमवासिकपर्व ॥

नृपवर यज्ञ सरावत भयऊ ❋ कलुदिन अधम शम्भु बलिगयऊ
नृपवर यज्ञ सुभग श्रमभवा ❋ जादिन सभा अनूपम हवा
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो ❋ ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो
कथा बारता बिबिध प्रकारा ❋ सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा

दो० प्रथमहिं पूजियगणपतिहि, जाकी सेवा सर्व।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा आश्रमपर्व ॥

सब जन नृप बैठे आसन प्रति ❋ होइनि यज्ञ ठौर होके अति
ताहि समय द्वैपायन आये ❋ नृप सब बन्दि भ्रात मुद पाये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिंहासन पर नृपबर राजत ❀ नृत्य होत बाजन बहु बाजत
बैठे भूप सकल पृथिवीके ❀ अर्जुन भीम जीति पदवीके
बन्धुबान्धन हैं नृप अनुशाला ❀ नीलाम्बुज आदिक महिपाला
औरो बहु बैठे तहँ राजा ❀ बिबिध तँबूर तबल जहँ बाजा
तब नृपबर जनमेजय बोले ❀ पाणि जोरि मुख अम्मृत खोले
सकल भूप तहँ रहे बखानी ❀ कहाँ हुते बलि शारँगपानी
कह मुनि सुनुनृपबचन सोहाये ❀ तुव हित हेत कहत हम गाये

सो० रहे दूरि के राय, जे आये नृप यज्ञ महँ।
जे नगीचके आय, निजनिज नगरनको गये॥
षष्ठमास की बात, यज्ञन्तर नृप ह्वै गयो।
रहे दूर नृप तात, द्वैपायन सह भूपमणि॥

नाच होइ तहँ बिबिध प्रकारा ❀ मुख मोरहिं जोरहिं सब तारा
उघरहिं और केश छिटकावहिं ❀ कुच देखाइकै भूप रिझावहिं
द्वादश षोड़श बर्ष कि नारी ❀ करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी
तासु आभरण कौन बखानै ❀ पहिरे कर्ण मोतिया सानै
त्रिबली तरल तरङ्ग सोहाई ❀ अमिगण नाभि मनोहरताई
कटिकरकिङ्किणि तहँ छबिछाई ❀ पग नूपुर झनकार सोहाई
कुचयुग चक्रवाक जनु साजै ❀ मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै

दो० नाचैं नारी मनहुँ रति, अलकझलकछबिहोत।
चन्द्रबदनिमृगनैनिशिशु, भृकुटी कुटिलउदोत॥

सो० कुन्दकलीसमदांत, अधर अनूपम चिबुकतिल।
कुचसुचक्रकी भांत, तिलप्रसून नासा सुभग॥

यहि बिधि नृत्य होत दिनराती ❀ नृपसमाज देखत मुनिपांती
द्वैपायन नृप गे आश्रम को ❀ रैन व्यतीत मिलन कोकीको
यहिबिधि होत रोजप्रति उत्सव ❀ आवत देशन के वकील सब
जीतत हारत सकल बकीला ❀ करतसभगहित नृपगणमीला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बभ्रूबाहन नृप दुःशाला ❀ जीवनाथ आदिक महिपाला
करिकरि फौज साजि सबराजा ❀ बिदामांगि गे सहित समाजा
लै जनवास बिदा रानिन है ❀ चले नृपति सब श्रीशिवसुत है
करत बड़ाई धर्मज केरी ❀ निज निज धाम गये नृप फेरी
इहां हस्तिपुर धर्मज राजा ❀ नित नव मङ्गल मोद समाजा
बहुत बर्ष बीते सुखदाई ❀ आगे नृप सुनु कथा चलाई
यकदिन कृष्णचन्द्र बलरामा ❀ पुत्र पौत्र आदिक बर बामा
आये धर्मराज के धामहिं ❀ यथा उचित सबकीन्ह प्रणामहिं
बास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर ❀ कुन्ती भगिनिद्रुपदिमिलिआगर
यहिबिधि बीतिगये कछुकाला ❀ रहे कृष्ण गे हलधर बाला

दो० कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बलसँग दीन्हपठाइ।
आपु रहे हस्तिननगर, आनन्दित सुखपाइ॥

यहि बिधि कृष्णचन्द्र सुखदाई ❀ रहे हस्तिना मास गँवाई
यकादन द्वै ब्राह्मण तहँ आये ❀ तिन्हबोलायतिन्हबातजनाये
इनकी भूमि लीन्ह जोतनाहित ❀ जोतत रहत सुनो हे नृप नित
तामें मिलो सघन भंडारा ❀ हमरो हक नहिं ताहि पुकारा
सो हम धनहिं कृष्ण नहिं लीजै ❀ यादव पाण्डु न्याव करि दीजै
हमसों अन्नदेव ते कामा ❀ गड़ो मिलो सो याकर जामा
यह सुनि बोलउ द्विजबर दूसर ❀ नहिं हमार धन उपजो ऊसर
हम सों वर्ष दण्ड सों रहै ❀ और मिलै सो याकर अहै
नाहीं होत अन्न जब याके ❀ तबहूं लेत दण्ड हम साके
उपजै जा करोरि धन भाई ❀ तबहूं वहै मिलत है राई
उपजो जबन अवनि धन राजा ❀ हमसों नहीं कछू है काजा

दो० नृपबर सुनि द्विजबर बचन, कृष्ण पाहिं दै ताहि।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षष्ठमास निरवाहि॥

षष्ठमास महँ तुम द्विज आयो ❀ धर्मराय मुख न्याव करायो
यहसुनिगेद्विज निजनिज धामहिं ❀ सभाबन्दिनितप्रतियहकामहिं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

CC-0. Mata Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनु आगे नृप सुत अब कथा ❀ मैं गुण गाइ कहत भइ यथा
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा ❀ द्विजन बुलाइ दान बहु दीन्हा
ह्वैकै बिदा सुभद्रा पासहि ❀ द्रुपदिहि मिली बहुरिकै सादहि
मिलि नृप भीम पार्थसों भेंटत ❀ मन्त्रिहिनकुलहिमिलिसम्भेटत
कर्णपूत गान्धारी मातहिं ❀ तौ पितुअन्ध और बहुजातहिं
मिलत सबनसों चालन कीन्हा ❀ रथ ह्वै बेगि द्वारकहि चीन्हा
मिलत सबन यदुबंशिन आछे ❀ गये प्रथम मन्दिर कहँ पाछे
इत नृप धर्मराज शुभ करई ❀ चलै न मारग सत्य न टरई
बीते कछुक दिवस इमि ईछे ❀ आये व्यास शिष्यसह पीछे
देखि नृपति बन्धुन सह बन्दे ❀ अश्वासन लखि व्यास अनन्दे
कहा व्यास सुनु धर्ममहीसो ❀ कहेउ दास कारण सबहीसो
मम आगम तोहिं लागत फीको ❀ जाते होउ दास नृपहीको
धर्मज सुनत बन्दि हँसि दीन्हों ❀ कहेउ कृपा तव सबसुखकीन्हों
शत्रुन मारि राज्य हम पावा ❀ तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा

दो० अब कछु दिनसों महामुनि, लखत अन्य उपकार।
मिथ्या बाक्य प्रमोदअति, और सकल आकार॥

सो० ताहि समय सुनु तात, करत बतकही व्याससों।
आयो द्विज बतरात, बोलि न्याव लागेकरन॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी ❀ अन्न छांड़ि सब लेब करारी
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं ❀ करि करिया लेबै हम आहीं
सुनि बोलेउ द्विज दूजो बानी ❀ लेबै छीन कहत शिव आनी
याको भूमि बित्त सो चहिये ❀ और मिलै मोको नृप अहिये
यहसुनि सबहिंनाधिकाधिकबोले ❀ बृक्ष हलै धरणी सब डोले
डर सबके तिहुँपुर सब कांपै ❀ जल समुद्र उछलै अरु तापै
धर्मज सुनत आंगुरी चापी ❀ पवन चली बसुधा सब कांपी

दो० सुनि धर्मज कम्पनलगो, भे प्रमुदित भूपाल।
रामकृष्ण कहिकै गिरे, भे सचेत पुनि हाल॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आधो अर्ध दीन्ह कै राजन ❀ तब लागो पूछन महराजन
अहो ब्यास मुनिकारण कहिये ❀ नहिंतो चित्त अनलसों दहिये
कहो ब्यास यह कलियुग लागो ❀ धर्म धर्म नृपधर्महिं त्यागो
ताते आपु बद्रि पहँ जैये ❀ गलिहेवार हरि आश्रम रहिये
कलिमें सकल गोत्र बध करिहैं ❀ पाप तिहारे ऊपर धरिहैं
कलियुग नगरहेतु हम भाखा ❀ दोष झूंठ तव ऊपर राखा
ऐसे ब्यास कहेउ बहु ज्ञाना ❀ ब्यास धर्म बिन जाको आना
ब्यासगये निज आश्रम काहीं ❀ कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं
चलो कृष्ण पहँ मांगि रजाई ❀ तब उत्तरदिशि चाह्यो जाई
सुनिअर्जुनअतिशय सुखमाना ❀ भीम नकुल मन्त्री हर्षाना
बेगवन्त अर्जुन रथ साजा ❀ तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा
चारि बन्धु भूपति सँगलीन्हे ❀ हरिपुर ओर गमन नृप कीन्हे
चले अलौकिक देखत शोभा ❀ जितहिंजात तितहीं मनलोभा
कतहूं शिक्षित पण्डित बालक ❀ कतहूं जात सैनरिपुशालक
कहूं लरत गज अतिहित तारे ❀ उज्ज्वल गिरि समानभैभारे
माल महिष उष्ट्रादिक नाना ❀ लड़त शब्द फाटतते काना
कहत धनुर्विद सूरति छीजत ❀ पुरबाहर ह्वै कोउ कोउ ईछत
कोउनृत नाटक करत रिझावत ❀ बारमुखी नाचैं गुण गावत
मालीगण सींचत कहुँ बागन ❀ मधुकर काम अन्धसहरागन
कहुँ कहुँ होत युद्ध के साजा ❀ आवत नृपन पत्र जहँ राजा

सो० को कबि करै बखान, जहां रहैं श्रीब्रह्मप्रभु ।
असकोत्रिभुवनआन, जोनभजतश्रीप्रभुअसहि ॥

कहुँ बिवाह चूड़ाकरनादी ❀ गावत मङ्गलचार सदादी
सर अरु बाग नदीतट पावन ❀ भर्मत नारी काम लजावन

दो० कोकिलापिकअरुमोरगण, सुमनसहितऋतुराज ।
रहत सदा हरिकी कृपा, होनितप्रति यहकाज ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, New Delhi. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहिबिधिलखतसबन्धुनृप, करतमिलनसबपास।
रामकृष्ण कहिमिलतसब, कुशलकहतहमदास॥

कहेउ कृष्ण नृपकहु केहिकाजा ❀ आये सकल बन्धु महराजा
ब्यास बचन अरु न्याव बतायो ❀ कलियुग घोर पापमय आयो
जानचहत उत्तरदिशि प्रभु हम ❀ कीन्ह गोत्रबध हम नाहीं कम
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी ❀ हम तो पलक कोर प्रभु हेरी
भाष्यो कृष्ण सुनौ हे राजन ❀ कलियुग अहैघोर यहि काजन
तुम्हैं गोत्र बध पाप न ह्वैहै ❀ पुनि कलियुगबासी नहिं छुइहै
कहिहैं धर्मराज जो कीन्हा ❀ पाप पुण्य उनहूं नहिं चीन्हा

सो० ब्यास कहेउ यहि हेत, कलिबासी जोजन करत।
दोष तुम्हैं जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनो॥

कलियुग ऐहै घोर अपारा ❀ तामें चलै न कछुक अचारा
बृद्ध स्यान मम भुगिहैं राई ❀ मानहिं मातु पिता नहिं गाई
यौबन मदबश करहिं कुकर्मा ❀ तजिहैं देश लोक कुलशर्मा
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपुञ्जा ❀ जोतजिदिवसकरहिंनिशिपूजा
बीर्य हीन क्षत्री ह्वै जैहैं ❀ तबहीं म्लेच्छ नृपति ह्वै ऐहैं
बैश्य देव द्विज सेवा हीना ❀ कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीना
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं ❀ बूझो नृप कब कलियुग ऐहैं

दो० भाद्रमास पक्ष कृष्ण जो, त्रयोदशी रबिबार।
अबते बाकी मासषट, कलियुगकर अवतार॥

जब कलियुग गङ्गा कहँ जाना ❀ तब ह्वैहैं अतिअवगुण नाना
नारि धर्म जो बिधवा करिहैं ❀ कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला ❀ संकर बर्ण होइ कलिकाला
कछुदिन करहु राज्य नृप आछे ❀ हमसह चलब कछुक दिन पाछे
अब तुम नगर जाइयो राजन ❀ प्रथमैं कहेउ किहेउ जब साजन

दो० सुनि नृप प्रभुके बचन बर, मिले सबहिं भूपाल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Veterinary Univ., Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्जुन रहिगे द्वारकहि, आगे सब जन हाल ॥

नगर आइ भूपाल सुहाये ❀ पौत्रहिं बोलि सुकण्ठ लगाये
माता को सब बात जनाई ❀ कृपाचार्य सुनतै दुख पाई
धीरज धरि कुन्ती यह भाखा ❀ पतिसँग गमन मोहिं बिधि राखा
पुत्र बिना कस रहिहौं राई ❀ जावा चहत सुतहि तुम हाई
कलियुग केर प्रभाव बतावा ❀ तब कछु हृदय ज्ञान भरि आवा
कलियुगपुत्र जो पियअबआयो ❀ ताते मान मोहिं नहिं भायो
हम सबको तिलअञ्जलि दीजै ❀ उत्तर पन्थ गमन तब कीजै

दो० चलन कृष्ण आपहु कहे, तबलग माता जाय।
आये अर्जुन तेहि समय, गये मातुलग धाय ॥

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी ❀ अर्जुन कही कथा जस हेरी
कहेउ कृष्ण नृप रहो कछुकदिन ❀ सुनिनृप भये प्रशंसत छिनछिन
द्वै कारज अब ह्वैहैं पारथ ❀ मातुजाब यह सब बिधिस्वारथ
संध्या भई सबन शुभ कीन्हा ❀ भोर अन्हाय दान सब दीन्हा
क्रिया कराई सुविर सुहाये ❀ गये हुते बहु दिन अब आये
ताही समय आगमन कीन्हा ❀ पुरजन सहित नृपतिबर चीन्हा
बन्दि चरण सब जन तब ईछे ❀ चरण धोइ आसनपर पीछे

दो० कुन्ती द्रुपदी भगिनि प्रभु, तुवपितु मातुसबन्दि।
आशिषदीन्होंमुदितमन, श्रीबरबिदुर अनन्दि ॥

संध्या देखि क्रिया नित कीन्हे ❀ भोजन कीन्ह सबन मुदलीन्हे
ताहि समय नृप बन्धु सयाना ❀ बिदुरहि कहेउ पौढ़िये आना
करहु तात अब तुम बिश्रामा ❀ यहसुनिकहेउ बिदुरनिजकामा
बिदुर कहे भूपति सो बोले ❀ चाहत मिलन भ्रात मन डोले
आज्ञा दियो धर्म के राजन ❀ बिदुर चले मिलिबे के काजन

दो० किङ्करजन लैगे बिदुर, चरण गहेउ कहिनाम।
सुनतनाम नृपउठिमिले, सह संजय अभिराम ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो० बिदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो मुख चारि, ताकी प्रभुता है महत॥

हा हा बिदुर कहत भूपाला ❀ असकहि दम्पति ठोंकतभाला
हाय बिदुर मम सुत सब जूझे ❀ अजहुँ क्षुद्रतन प्राण असूझे
नात गोत्रजन सों भयों हीना ❀ पुत्रहीन हम अबहूं चीना
मरत न फूटत हियो है भाई ❀ मम सम भयो न होने आई
अस कहि दम्पति रोवनलागे ❀ अस सुनि जनमेजय नृपआगे
धीरज दियो बिबिध परकारा ❀ दियो ज्ञान भू एक अकारा
तब बोले नृप अन्ध सुजाना ❀ कहँ कहँ गये बन्धु इत आना
इतते गये सुनहु नरपाला ❀ रहे उजयनी जहँ महकाला
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका ❀ सोमनाथ बसि भयो अशोका
गङ्गाद्वार बास तब कीन्हा ❀ आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा
बाराणसी तहां ते आये ❀ बिश्वेश्वर के दर्शन पाये
गये हिमालय कहँ भूपाला ❀ अलकापुरी लख्यो सुखशाला
ब्यासाश्रम दश बर्ष बिताये ❀ तहँ ते चित्रकूट कहँ आये
यह सतसंग ऋषिन कर लीन्हा ❀ ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा
तहँ ते गये बड़े सो देशहि ❀ भुवनेश्वर किये दर्श बिशेषहि
रामनाथ कर दरश सुहाये ❀ तात तहां ते इतको आये
लहि मैत्रेय पास कछु शुभगति ❀ तुमहिं देखिबे आयगये सति
तव सुधि बिसरति हुती न नेको ❀ देखत तुमहिं सुखी नहिं एको
चलौ भ्रात तप हेतु महाबन ❀ जहँ थलअहै ब्यासकर पावन
सुनु नृप दुख न मानिये एको ❀ सोइ हरि बिनु जगमाहिं न एको
सोई जल सोई थल जानो ❀ सर्गुन निर्गुन तैसेहि मानो
सोई पृथ्वी सोइ अकासा ❀ आपुइ स्वामी आपुइ दासा
आपुहि राजा आपुहि रानी ❀ सोई अग्नि सोई है पानी
सोई धन सोइ चोर कराला ❀ सोई मरत सोई है काला
सोइ है हीन सोई है पावन ❀ सोइ है राम सोई है रावन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरि आपुइ नर आपुइ नारी ❋ आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी
आपुहि पिता आपुही माता ❋ आपुहि पुत्र आपुही भ्राता
आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी ❋ आपुहि महिष आपुही सानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई ❋ आपुहि आपु चरावन जाई
आपुहि भँवर आपुही फूला ❋ आपुहि ज्ञान बिना जन मूला
राज रङ्क दूजो नहिं कोई ❋ आपुइ आपु निरञ्जन होई
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका ❋ तैसे जानै ब्रह्म बिबेका
यहि प्रकार जाको मन लागै ❋ जरा मरण नाशै भ्रम भागै
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❋ ब्रह्मानन्द सुनहि तब पावै
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका ❋ सोइ है शोक सोई है हरषा

दो० मातु सोई पितु सुत सोई, सोई नृपति सोइ रङ्क ।
एकरूप जानो सुखद, नृप मति करियो शङ्क ॥

बोले बिदुर सुनहु हे राजा ❋ दुखबश देखिपरत केहिकाजा
कहा अन्ध नृप सुनि हे भाई ❋ भीम बचन मोहिं सहो न जाई

सो० और सकल सुखदेत, भीम कहत मोहिं कटुबचन ।
सो न सहब मनलेत, को भाषै हरिकी रचन ॥

बिदुरजाहिजिमिनृपकटुभाषत ❋ श्वानसमान नृपति तुवमाषत
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे ❋ टूक देखाय बुलावत पीछे
तस तुवदशा करत नरनायक ❋ भीम कहत नृपसे तुवलायक
खात शूद्र गृह लाज न आवत ❋ हीन बंश अजहूं हो रावत
ताते करौ चलो तप जाई ❋ नातरु लहौ अधिक दुख भाई
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे ❋ बिदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे
सुनो बन्धु जगकर ब्यवहारा ❋ जामें बँधो सकल संसारा
सुख दुख स्वप्न जानियो राजा ❋ यक इतिहास कहत तव काजा

दो० एक बणिक लै बहुतधन, चल्यो करन रुजिगार ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donation

एक दिवस बनमों परा, सूर्य अस्त की ब्यार॥
तहँ षट चोर मिले हे राजन ❀ लूटन संगचले तेहि काजन
बहुतचलो तब बणिक अजानो ❀ बसनहेत नहिं नगर निरानो
अधिकअधिकबनचलतपरतजस ❀ पके ताल यकरहो बैठितस
तहँ षट आकर चोरन लागे ❀ बणिक देखि भयबश तबभागे
बनमहँ परो भुलाय बणिक जब ❀ देख्यो तब चरित्र नृप सब अब
कहूं देखि भाजत गज भारी ❀ कहूं सिंह कहुँ सर्प करारी
दावा देखि जात भय भागत ❀ गिरत परत उठि कांटा लागत
दो० यहिबिधितेब्याकुलभयो, गिख्यो अँधेरे कूप।
बैशंपायन मुनि कहेउ, सुनु जनमेजय भूप॥
बटको वृक्ष हेठ पर राजत ❀ पकरि बणिकडालीकहँ ताजत
जो शाखा लटको मधि कूपहि ❀ ताहि रहे देखत हे भूपहि
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउ राजत ❀ शाखा काटि रहे पुनि गाजत
पकरि चहत सोइ हेठहि आवन ❀ हालत डार गिरत मधुपावन
सुखमधि गिरतचाटिसुखपावत ❀ कूपहि सर्प देखि भय लावत
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हों ❀ ऐसहि दशा सबहिं प्रभु कीन्हों
बोले तब नृप बचन सुहाये ❀ कौनत बन अब देहु बताये
बोले बिदुर सुनहु हे भाई ❀ जीवहि बणिक जानि जो आई
काम क्रोध अरु मोह लोभ मन ❀ इन्द्रिय यइ जानौ तसकरजन
अरु पुत्रादि सकल परिवारा ❀ पाइ सहायक चोर अपारा
जाते कहत बनाय जीवको ❀ उत धन धर्म अधर्म हीवको
जिमिब्याघ्रादिडरावतबणिकहि ❀ तिमिकुलचोरडरावतजनिकहि
बन है दुःख जौन संसारा ❀ स्त्री आदि कूप है कारा
है आयू वह शाखा जौन ❀ द्रव्य अहै तौ बहता पौन
मूषक राति दिवस करिजानो ❀ काल सर्प को नृप करि मानो
कह संजय जो बिदुर बखानत ❀ हमहूं कहत जाहु अस जानत
दो० इन्द्री हय अरु मन बहक, देह सुरथ रथवान।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरि आपुइ नर आपुइ नारी ❀ आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी
आपुहि पिता आपुही माता ❀ आपुहि पुत्र आपुही भ्राता
आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी ❀ आपुहि महिष आपुही सानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई ❀ आपुहि आपु चरावन जाई
आपुहि भँवर आपुही फूला ❀ आपुहि ज्ञान बिना जन मूला
राज रङ्क दूजो नहिं कोई ❀ आपुइ आपु निरञ्जन होई
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका ❀ तैसे जानै ब्रह्म बिबेका
यहि प्रकार जाको मन लागै ❀ जरा मरण नाशै भ्रम भागै
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❀ ब्रह्मानन्द सुनहि तब पावै
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका ❀ सोइ है शोक सोई है हरषा

दो० मातु सोई पितु सुत सोई, सोई नृपति सोइ रङ्क ।
एकरूप जानो सुखद, नृप मति करियो शङ्क ॥

बोले बिदुर सुनहु हे राजा ❀ दुखबश देखिपरत केहिकाजा
कहा अन्ध नृप सुनि हे भाई ❀ भीम बचन मोहिं सहो न जाई

सो० और सकल सुखदेत, भीम कहत मोहिं कटुबचन ।
सो न सहब मनलेत, को भाषै हरिकी रचन ॥

बिदुरजाहिजिमिनृपकटुभाषत ❀ श्वानसमान नृपति तुवमाषत
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे ❀ टूक देखाय बुलावत पीछे
तस तुवदशा करत नरनायक ❀ भीम कहत नृपसे तुवलायक
खात शूद्र गृह लाज न आवत ❀ हीन बंश अजहूं हो रावत
ताते करौ चलो तप जाई ❀ नातरु लहौ अधिक दुख भाई
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे ❀ बिदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे
सुनो बन्धु जगकर ब्यवहारा ❀ जामें बँधो सकल संसारा
सुख दुख स्वप्न जानियो राजा ❀ यक इतिहास कहत तव काजा

दो० एक बणिक लै बहुतधन, चल्यो करन रुजिगार ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक दिवस बनमों परा, सूर्य अस्त की ब्यार॥
तहँ षट चोर मिले हे राजन ❀ लूटन संगचले तेहि काजन
बहुतचलो तब बणिक अजानो ❀ बसनहेत नहिं नगर निरानो
अधिकअधिकबनचलतपरतजस ❀ पके ताल यकरहो बैठितस
तहँ षट आकर चोरन लागे ❀ बणिक देखि भयबश तबभागे
बनमहँ परो भुलाय बणिक जब ❀ देख्यो तब चरित्र नृप सब अब
कहूं देखि भाजत गज भारी ❀ कहूं सिंह कहुँ सर्प करारी
दावा देखि जात भय भागत ❀ गिरत परत उठि कांटा लागत
दो० यहिबिधितेब्याकुलभयो, गिर्यो अँधेरे कूप।
बैशंपायन मुनि कहेउ, सुनु जनमेजय भूप॥
बटको बृक्ष हेठ पर राजत ❀ पकरि बणिकडालीकहँ ताजत
जो शाखा लटको मधि कूपहि ❀ ताहि रहे देखत हे भूपहि
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउ राजत ❀ शाखा काटि रहे पुनि गाजत
पकरि चहत सोइ हेठहि आवन ❀ हालत डार गिरत मधुपावन
मुखमधि गिरतचाटिसुखपावत ❀ कूपहि सर्प देखि भय लावत
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हों ❀ ऐसहि दशा सबहिं प्रभु कीन्हों
बोले तब नृप बचन सुहाये ❀ कौनत बन अब देहु बताये
बोले बिदुर सुनहु हे भाई ❀ जीवहि बणिक जानि जो आई
काम क्रोध अरु मोह लोभ मन ❀ इन्द्रिय यह जानौ तसकरजन
अरु पुत्रादि सकल परिवारा ❀ पाइ सहायक चोर अपारा
जाते कहत बनाय जीवको ❀ उत धन धर्म अधर्म हीवको
जिमिब्याघ्रादिडरावतबणिकहि ❀ तिमिकुलचोरडरावतजनिकहि
बन है दुःख जौन संसारा ❀ स्त्री आदि कूप है कारा
है आयू वह शाखा जौन ❀ द्रव्य अहै तौ बहता पौन
मूषक राति दिवस करिजानो ❀ काल सर्प को नृप करि मानो
कह संजय जो बिदुर बखानत ❀ हमहूं कहत जाहु अस जानत
दो० इन्द्री हय अरु मन बहक, देह सरथ रथवान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

याके बश भर्मत फिरत, जीवन कछु है आन ॥
सो० कह संजय मतिमान, रूपहि देखा साधुको ।
ताबिन कछु नहिं आन, जड़चेतनउत्पन्निसत ॥
दो० भई ब्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भोर ।
धर्म नृपति आवत भयो, बन्दत पितुहित ओर ॥

नृपति भीम अर्जुन तबबन्दे ❋ नकुल देव सहदेव अनन्दे
नाम कहेउ तब पाण्डव चीन्हो ❋ गदगद ह्वै दम्पति शिष दीन्हो
कृपाचार्य मिलि बिदुरहि भेटत ❋ संजय मिलो तापत्रय मेटत
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे ❋ औरौ सकल बसैया नेरे
कर्णपुत्र नृप हृदय लगायो ❋ मेघबर्ण मिलि दुसह नशायो
बैठे निज निज आसनपर सब ❋ अन्धनृपति गदगद बोले तब
हो हो पुत्र धर्म सुखदाता ❋ किय प्रतिपालमोर अरु माता
दुर्योधन आदिक सब जूझे ❋ तबसों तुम मोको अति बूझे
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं ❋ रोमहिं रोम अशीशत तोहीं
मम सुत तुमहिं दुःख बहु दीन्हो ❋ फल पायो ते आपन कीन्हो
अब मम देह सकल जरजरसै ❋ बलसुहीन सब निकरिगई सै
सरिता हेठ बृक्ष मोहिं जानो ❋ त्वक्ष उखरिबो शङ्क न मानो

दो० आज्ञा दीजै जाइँ हम, दम्पति भ्राता साथ ।
कर्ममुक्तिहित बनै कछु, उतहित धन जोहाथ ॥

नृपसुनि यहबन्धुनसहदुखअति ❋ बोलतभे तब ज्ञान चक्षुपति
हमरे तुम सबके सुखदाता ❋ केहिबिधि कहौंजाहु असबाता
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू ❋ होय सुभग सह मङ्गलसेतू
तब कुन्ती बोली बिलखाई ❋ हमहूं चलब संग तुव राई
सुनतै सब काहुन समुझावा ❋ कुन्तीके मन नेकु न आवा
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे ❋ धर्मराज राजा के आगे
पुत्र मात सम्बन्धी जोई ❋ जानाहै औरौ सुन सोई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै ❀ भोर जाब पुनि सब व्रत धरिकै

सो० सुनि धर्मज गुणऐन, बन्दि सबनि पितु पदपदुम।
आये निज निज ऐन, नित्यक्रिया भोजन कियो॥

नृप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये ❀ तिन नृपआयसु सुखद सुनाये
लै बन सबन बस्त्र पट नाना ❀ गजरथ बाजी उष्ट्र बिताना
अरु भोजन के साज अथोरा ❀ लै मतिदृग पहँ जाहु करोरा
यह सुनि किङ्कर सकल बुलाये ❀ जो जेहि लायक ताहि सुनाये
निकरत मुखबानी किङ्कर जन ❀ लै सबगये मिलो अति अरु बन
लादि साज नृपमन्दिरमों सब ❀ होनलाग शुभकाज सकल तब

दो० निशाभयो पुनिव्यक्तमो, गये धर्म के राज।
पितहिं बन्दि लागेकरन, सबजनसबबिधिसाज॥

होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा ❀ जस बिधिबेद कहेउ तसकीन्हा
भोजन श्राद्ध यथाबिधि कीन्हों ❀ दान अथोर बिप्र नृप दीन्हों
याचक सकल अयाचक भये ❀ यकदिन एकनिशा इमि गये
अरुणोदय लखि चालन कीन्हा ❀ दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा
आशिषदै निज धामन आयो ❀ जनमेजय सुनि मुनि सबगायो

दो० कुन्ती मिलिगन्धारिता, बिदुरसहित मिलिधर्म।
सबनमिलत आगे चले, पुरजनसह जिमि सर्म॥
पुरजनमहँ सुरराजसम, नृप धर्मज सह भाय।
नारी नर सब बिकल ह्वै, हा हा हा कहि राय॥

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा ❀ मिलिसबहिनयोजनयकआवा
धर्मराजकहँ आशिष दीन्हा ❀ संजय कहँ प्रबोध तब कीन्हा
सब काहुन पलटायो राजा ❀ गाङ्गेय मिले अर्ध महराजा
मायामोह तोरि तृणइव सब ❀ आगे चले सुनहु नृपबर अब
बिदुर कन्ध धरि कर नरपाला ❀ पति कन्धा गन्धारी बाला
तापाछे कुन्ती धरि हाथा ❀ चले नयन गङ्गकहँ माथा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करि मज्जन अरु बहुकर दाना ❋ चले बनहिं चारिउ जन भाना
यहि बिधि करत बासमगमाहीं ❋ चले जात नित भय दुख नाहीं
ब्यासाश्रममिलि सबमुनिजूहन ❋ भे प्रसन्न भोजन फलमूहन
ब्यासहिंमिलतअधिकसुखपावा ❋ कहमुनि भलीकीन्ह जो आवा
जैमिनि शुकदेव बकदालभ्भी ❋ औरौ मिले मुदित मुनितभ्भी
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता ❋ सुतजूझन आदिक बहुबाता
कह मुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा ❋ नेकु हृदयमहँ ज्ञान न आवा

दो० निजतन तूल भराइकै, निजकर अग्नि लगाय ।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय ॥

सो० ताते करु तप भूप, हृदयराखि अव्यक्तप्रभु ।
देखि चराचर रूप, जोत्रिभुवनमहँएकप्रभु ॥

करन लगे तब नृपहो रानी ❋ बिदुर आनिकरि ज्ञानसुहानी
भे अद्भुत सदृश यमराजा ❋ मग्नफिरत बन और न काजा
उत नृप धर्मराज दुख पावत ❋ लख्यो तबै ऋषिनारद आवत
उठे सभासद मुनि कहँ बन्दे ❋ लख्यो धर्मनृप बहुत अनन्दे
अर्घ देइ आसन बैठाख्यो ❋ मुनि समीप असबचन उचाख्यो
त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ मुनीशा ❋ फिरत रहत तुम सदा अहीशा

दो० तुम मुनीश सर्बज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कहोखबरिकछु विदुरकी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रम-
वासिपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बिदुर बिरक्त फिरत बनमाहीं ❋ त्यागो तन गे हरिपुर काहीं
तौ पितु और दोउ पटरानी ❋ गईं अग्नि जरि सुनु गुणखानी
भये बिकल सुनि बन्धु नृपाला ❋ जोगतिहोतबिकलजिमिकाला
रोवत बार बार हा हा कहि ❋ मूर्च्छित ह्वै कै गिरत अहैं महि
यह देखत बोले मुनि नारद ❋ सुनु नृपबर विज्ञानबिशारद

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मरण भयो न कछू यह जाना ❀ समुझनहेतु कहेउ असराना
हे पितु भक्त सदृश कोइ नाहीं ❀ परपितुमानत समपितु आहीं
अबचलि दरश करौ पितु केरा ❀ नातरु काल आयगो नेरा

दो० यह कहिकै नारद ऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर।
अब आगे सुनु नृप कथा, श्रोतनके शिरमोर॥

तुरत तयार नृपतिबर भये ❀ बन्धु सहित नृप मिलि अबगये
पति औ नारी सकल समाजा ❀ नगर महाजन अरु द्विजराजा
चले सकल जेहि राजत पुरमों ❀ बाण सदृश यह लागत उरमों

सो० चले नृपाल भुवाल, सहितबन्धुपुरजनसकल।
ठौर ठौर रक्षपाल, राखि चले हस्तीनगर॥

नृप तब नगर राखि रक्षकगन ❀ चले सबनसहदुखित नृपतिबन
तीरथ करत बास भगवाना ❀ चले बनहिं जहँ कुरुपतिराना
गये ब्यास आश्रम के पासा ❀ भे पदत्रान बिहीन सुदासा
मिलतऋषिनकहँबिबिधबिधाना ❀ गये जहां हैं ब्यास सुजाना
मिलेब्यासकहँ बन्दनकरि करि ❀ बारबार शिर पद महँ धरिधरि
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया ❀ कृपा कटाक्ष सबनपर दाया
मिले पिता दौ मातन काहीं ❀ नाम सुनाइ कहेउ कछु नाहीं
सकल मोहबश जल नैननमहँ ❀ को अस कहै दशा नृप भै तहँ

दो० दै अशीश सबकहँ सबन, बैठे सब जनराय।
बैशम्पायन कहत हैं, जनमेजय पहँ गाय॥

दुर्लभ देखि राय कहँ राजा ❀ सहमतु नहिं दुर्बल तपकाजा
बोले नृपबर गदगद बानी ❀ कहँहैं बिदुर कहेउ तब रानी
कुन्ती कह भे परमहंस वै ❀ ढूंढ़न चले अकेल बनै स्वै
देख्यों भागिजात बनमाहीं ❀ गोहरायो ठिठुके त्यहि नाहीं
तदपि बृक्षआश्रित चीन्हों जब ❀ नयननीर भरि रहेउ ठाढ़ि तब
चरण गहेउ धर्मजके राजा ❀ ताहि समय दुन्दुभि बरबाजा
बिदुर त्याग तनु ताही औसर ❀ गे यमराज बिदुर ह्वैके बर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि धर्म नृप बन्धु बोलाये ❋ कहि सब कथा नयन जल छाये
दाहन चहेउ तबै बाणीभय ❋ जीवनमुक्ति बिदुर यम कह हय

दो० यमराजा को अङ्ग है, बिदुर भक्त भगवान ।
धर्मराजहियसुमतिभो, परबोधिक सुनिकान ॥

सो० आयो राजा धर्म, कहेउ कथा सब बिदुरकी ।
कीन्होंबिधिवतकर्म, निजकर राजाअन्धबर ॥

रहे बनहिं कछुदिन शुभबीतत ❋ महादुःखलखि मुनिबर चीतत
पूछेउ सबसों को केहि चाहत ❋ जासों होत उऋणमों दाहत
कुन्ती कहेउ कर्ण मैं देख्यो ❋ गन्धारी जामात्रहि लेख्यो
सुभद्राआदिक सुतकहँ भागत ❋ पितुसुतबन्धुपतिहिशरणागत
सबै कौशिकी तट लै गयऊ ❋ तपप्रभाव सब आवत भयऊ
दिव्यदृष्टि अन्धहि नारी सह ❋ सुनत लगायो कह हाहा तह
कोउ पति मिलत महामुद छाये ❋ कोउ कोउ पुत्रन हृदय लगाये
कोऊ भाई बापहि लावत ❋ दुख मिटिगे कोउ मङ्गल गावत
रैनि एक सुखसे सब बीतत ❋ अरुणोदयलखिसबजन चीतत
फांदे सब बन नृप छलमाहीं ❋ रहे न एकौ धौं कोउ माहीं
सकल मोहबश नारि अपारा ❋ धर्मी जलै करि घोर चिकारा
कोउ कोउ बनमहँ ढूंढ़त भागत ❋ कोउ कोउ प्राणतजत भैलागत
कोउ कोउव्याघ्रादिकधरिखायो ❋ जलमहँधसिसब प्राण गँवायो
कोउ कोउ शून्यहोम मखशाला ❋ जरीं अग्निमहँ जे बरबाला

दो० सबकाहुनतनत्यागिकरि, गईं पतिनके साथ ।
व्यास कहेउ यहधर्म सों, अबभलतबहिंअनाथ॥

सो० आये सुनि नरपाल, जहांहोमशाला नृपति ।
सुनु अब कछुसुतहाल, बैशम्पायन कहतभे ॥

धर्मनृपति मख करत रहे तहँ ❋ मखशाला रह व्यासकेर जहँ
अग्निप्रचण्ड शिखाअतिबाढ़ी ❋ अर्ध नृपति अङ्गहि तहँडाढ़ी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुन्ती चलन चहेउ उठि तहँते ❀ अक्षबिहीन नृपतिबर जहँते
धर्म बिचारि जरी सँग तिनके ❀ रामकृष्ण कहि कहि वै जिनके
कोऊ ऋषि अरु पाण्डुकुमारा ❀ रहै न तब कोउ उठवनहारा
आय नृपति यह दशा निरेखी ❀ कीन्हों रुदन सुनत जिन देखी
रोय उठे सह नृप बन्धुन जन ❀ और नगरबासी आये बन
रोवहिं कुन्तिहि गन्धारी कह ❀ हाय हाय कहि अन्धनृपतिसह
लैकर अस्थि सुदम्पति केरी ❀ लीन्हे अस्थि ढूंढ़िमा केरी
कीन्हे कर्म सबिधि गङ्गातट ❀ जहँ पबित्रबन मोहिं एकबट
कीन्हतिलञ्जलिदेयसबिधिबिधि❀ चलेधीरधरि नगर नृपतिसिधि
करि बन्दनऋषिब्यासससबनको ❀ चलेमगहिंमहँ श्रम नहिं मनको

दो० बासचलनकरिमगनसब, नृपराजन सह भाय।
नारीसंग सुभद्र सह, द्रुपदी सह दुख पाय॥

सो० आयेनगर नृपाल, दियेतिलाञ्जलिदिवसनिशि।
एकादश सुखपाल, दिये बाजि नारी सबन॥

दो० द्वादशयें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर।
बासलसो दम्पति तबै, सह कुन्ती सब ओर॥

पायो बास सुखद सब काहू ❀ मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू
धर्मराज जो बिदुर कहायो ❀ निजपुर बास न्यावमन लायो
जनमेजय सुनि भाषन लागे ❀ सम्पुट जोरि मुनीशन आगे
नाथ कहौ यम केहि अपराधू ❀ भये मनुज गुणबर अरु साधू
बोले मुनि राजा के आगे ❀ गदगद बचन रावके पागे
एक मण्डपी ऋषी सोहावन ❀ करतहु तप पवनमधि पावन
बहु तसकर चोरी कर लाये ❀ तहँ बन मध्य मोर करि पाये
तहँ बन डारि सकल तब भागे ❀ उन नृप आपु उदय लखिजागे
धन बिहीन लखि रक्षक डाटे ❀ तिनके चोप रह्यो नहिं काटे
चरण चिह्न देखत सो दौरे ❀ थग देख्यो देख्यो मुनि औरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धन लदाइ मुनि बूझन लागे ❀ अरे चोर क्रोधहि अतिपागे
धरे मौनब्रत मुनि नहिं बोले ❀ धन सहायकरि गयो नृप तौले
नृप देखत अति क्रोधहि पागे ❀ कहिकटुबचन कहन असलागे
शूली देहु चढ़ाय सुचोरहि ❀ दिय चढ़ाइ तब मुनिबर औरहि

दो० शूलीपर बैठे ऋषै, धरे तत्त्व को ग्राम।
कष्टपायसब ऋषि तबै, आये ऋषि के धाम॥

सो० खग मृग रूपनधारि, आयेमुनिबूझनलग्यो।
पाप कौन अस चारि, जोऋषिबरअतिकष्टहौ॥

दो० हरिइच्छाअसकहिदयो, सबसों मुनिबर गौन।
राय सुनत दीन्हों छुटै, आयो यम के भौन॥

हे यमराज कहौ केहि पापन ❀ लह्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन
कह यमराज सुनौ मुनिराजा ❀ लह्यो कष्टअति सुनुसोइ काजा
है पतङ्ग गुद वाली कीन्हों ❀ तेहि कारण इतनो दुख लीन्हों
यह सुनि क्रोधित ह्वै ऋषि बोले ❀ अग्निशिखामुखअग्निहिबोले
शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत ❀ शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत
सुनि यमराज चरणगहिलीन्हों ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों
ह्वैहै शूद्र मुख भाषन कीन्हों ❀ हरिके भक्त और सिख दीन्हों
पुनि यमराज होइहौ आई ❀ आये मुनि कहि अति सुखपाई
बिदुर व्यास तप बल ते राई ❀ भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई
बोले जनमेजय भूपाला ❀ व्यास रच्यो नरबश सब बाला
बनमहँ देह त्यागि तिन्हकीन्हों ❀ माया तप यह चाहत चीन्हों
बोले मुनि तपबल ऋषिव्यासा ❀ कीन्ह देखु अमरावति बासा
मैं जानी नृप तुव मन इच्छित ❀ ताते आवत पिता परीक्षित
ताहि समय नभगहगह बाजत ❀ आवत देखि बिमानहि गाजत
किन्नर देव नृपति सँग आवत ❀ बाजत बेणु अप्सरा गावत
नौल नारि नलनी कच राजत ❀ कुचयुग झरत फूलमकुवाजत

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० चमकतमोतिनजोरिमुख, हँसत फँसतचितदून ।
लाजत देखत जाहि रति, मति न रहतशुभजून ॥
सो० यहिबिधि सुभग सुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बारबार बन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा ❋ बाजे हरि तन आनँद बाजा
मिले परीक्षित कहँ सबनृपगण ❋ नातगोत्रसुत सह पुरजनजन
तब जनमेजय द्विजन बोलाये ❋ आशिष पाय प्रसन्न जनाये
देव सकल पितु सह उठि ईछे ❋ मज्जन करवायो सब पीछे
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो ❋ ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो
सिंहासन पर पूजा कीन्हों ❋ चरणधोय चरणामृत लीन्हों
सुभग सुगन्धित माला दीन्हों ❋ शय्यादै आश्वासन कीन्हों
तबपश्चिमलखिअस्तदिवाकर ❋ द्विजभूपन मिलि मिले पुत्रबर
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे ❋ चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँ बन्दे

दो० बाजैकिंकिणिचारुध्वनि, नाचन लागीं नारि ।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर, तनक न लागीबार ॥
तब जनमेजय भूपबर, मुनिअस्तुतिअनुरागि ।
सूत शौनकादिककहत, निशाबीतिसबजागि ॥

अरुणचूड़ अरुणोदय लागत ❋ श्रोता बक्ता सब जन जागत
मज्जनकारे आसन प्रति आय ❋ जनमेजय इमि अर्ज सुनाये
कहौ तात सब कथा सुहावन ❋ पापनशनि समपुण्य बढ़ावन
शत्रुनशनि मित्रनि सुखदानी ❋ कलिनाशनिमुनिमहाजिमिबानी
कल्पलता कल्पाय सुतासी ❋ कुन्दकली उचलित कुन्दासी
जीवनसी जीवात्मा ईशी ❋ परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी

दो० जीवन धनसी ईशसी, पीससदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्यो महामुनि, कलिजन पापनशाय ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धन लदाइ मुनि बूझन लागे ❀ अरे चोर क्रोधहि अतिपागे
धरे मौनव्रत मुनि नहिं बोले ❀ धन सहायकरि गयो नृप तौले
नृप देखत अति क्रोधहि पागे ❀ कहिकटुबचन कहन असलागे
शूली देहु चढ़ाय सुचोरहि ❀ दिय चढ़ाइ तब मुनिबर औरहि

दो० शूलीपर बैठे ऋषै, धरे तत्त्व को ग्राम ।
कष्टपायसब ऋषि तबै, आये ऋषि के धाम ॥

सो० खग मृग रूपनधारि, आयेमुनिबूझनलग्यो ।
पाप कौन अस चारि, जोऋषिबरअतिकष्टहौ ॥

दो० हरिइच्छाअसकहिदयो, सबसों मुनिबर गौन ।
राय सुनत दीन्हों छुटै, आयो यम के भौन ॥

हे यमराज कहौ केहि पापन ❀ लह्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन
कह यमराज सुनौ मुनिराजा ❀ लह्यो कष्टअति सुनुसोइ काजा
है पतङ्ग गुद बाली कीन्हों ❀ तेहि कारण इतनो दुख लीन्हों
यह सुनि क्रोधित ह्वै ऋषि बोले ❀ अग्निशिखामुखअग्निहिबोले
शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत ❀ शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत
सुनि यमराज चरणगहिलीन्हों ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों
ह्वैहै शूद्र मुख भाषन कीन्हों ❀ हरिके भक्त और सिख दीन्हों
पुनि यमराज होइहौ आई ❀ आये मुनि कहि अति सुखपाई
बिदुर व्यास तप बल ते राई ❀ भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई
बोले जनमेजय भूपाला ❀ व्यास रच्यो नरबश सब बाला
बनमहँ देह त्यागि तिन्हकीन्हों ❀ माया तप यह चाहत चीन्हों
बोले मुनि तपबल ऋषिव्यासा ❀ कीन्ह देखु अमरावति बासा
मैं जानी नृप तुव मन इच्छित ❀ ताते आवत पिता परीक्षित
ताहि समय नभगहगह बाजत ❀ आवत देखि बिमानहि गाजत
किन्नर देव नृपति सँग आवत ❀ बाजत बेणु अप्सरा गावत
नौल नारि नलनी कच राजत ❀ कुचयुग झरत फूलमकुवाजत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० चमकतमोतिनजोरिमुख, हँसत फँसतचितदून ।
लाजत देखत जाहि रति, मति न रहतशुभजून ॥
सो० यहिबिधि सुभग सुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बारबार बन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा ❋ बाजे हरि तन आनँद बाजा
मिले परीक्षित कहँ सबनृपगण ❋ नातगोत्रसुत सह पुरजनजन
तब जनमेजय द्विजन बोलाये ❋ आशिष पाय प्रसन्न जनाये
देव सकल पितु सह उठि ईछे ❋ मज्जन करवायो सब पीछे
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो ❋ ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो
सिंहासन पर पूजा कीन्हों ❋ चरणधोय चरणामृत लीन्हों
सुभग सुगन्धित माला दीन्हों ❋ शय्यादै आश्वासन कीन्हों
तबपश्चिमलखिअस्तदिवाकर ❋ द्विजभूपन मिलि मिले पुत्रबर
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे ❋ चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँ बन्दे

दो० बाजैकिंकिणिचारुध्वनि, नाचन लागीं नारि ।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर, तनक न लागीबार ॥
तब जनमेजय भूपबर, मुनिअस्तुतिअनुरागि ।
सूत शौनकादिककहत, निशाबीतिसबजागि ॥

अरुणचूड़ अरुणोदय लागत ❋ श्रोता बक्ता सब जन जागत
मज्जनकारे आसन प्राते आय ❋ जनमेजय इमि अर्ज सुनाये
कहौ तात सब कथा सुहावन ❋ पापनशनि समपुण्य बढ़ावन
शत्रुनशनि मित्रनि सुखदानी ❋ कलिनाशनिमुनिमहाजिमिबानी
कल्पलता कल्पाय सुतासी ❋ कुन्दकली उचलित कुन्दासी
जीवनसी जीवात्मा ईशी ❋ परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी

दो० जीवन धनसी ईशसी, पीससदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्योमहामुनि, कलिजन पापनशाय ॥

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो० मुनिबर भाष्यो बैन, राजासुनु धरिध्यान यह ।
सबसुखको जो ऐन, पढ़तसुनतसुखनवलनित ॥
यकदिन राजाधर्म, भोर उठे श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्होंनितकृतकर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥

ताहिसमय कलियुगसुधिआई ❀ देह दशा धर्मज दुख पाई
कह पारथ हरिपुर अब जैये ❀ उत्तर चलौ कृष्ण पहँ लैये
मातुपिता के हित इत रहेऊ ❀ ते सबगाय सबिधि ते कहेऊ
अब रहिबो नहिं उचित सुभाई ❀ ताते लावहु श्रीहरि जाई
अर्जुन सुनत सुभग रथ साजा ❀ भीमहिं मिले सबहिं पुनि राजा

दो० बेगवन्त अर्जुन चले, जहां बसत भगवान ।
आश्रमवासिकपर्व कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते आश्रम-
वासिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ मुशलपर्व ॥

दो० श्रीगिरिजागणपतिसुमिरि, बरणिभक्तिहनुमान।
मूशल को भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
जनमेजय मुनिसों जवन, भाष्योसुनिशुभगाथ।
ताहि सुभग भाषा रचत, धरिशिरनिजप्रभुपाथ॥

बन्दौं गुरु गोबिंद के पायन ❋ जिन प्रसाद हूजै सुखदायन
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति ❋ नारद शारद सुमिरि महामति
सुमिरौंआदिकाव्यघट्यासहि ❋ जाकीसबिधि भांतिमोहिंआशहि
ईश्वररूप जानि जगती को ❋ सुमिरौं राम आदि शिव नीको
सम्बत शुभ सहस्र सै तीशा ❋ भाद्रमास सप्तमि रजनीशा
औरँगशाह दिलीपति नायक ❋ सबलसिंह तब हरिगुणगायक
बैशम्पायन कहत सुनाई ❋ सुनहु सार्थ कुलबर नृपराई
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी ❋ गे हरिपुर सह कुन्ती रानी

दो० इत अर्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुखपाय।
मार्गमिले नारद सुमुनि, रथमों लिये चढ़ाय ॥

बिबिध भांति भाषत शुभगाथा ❋ जातचले अर्जुन मुनि साथा
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा ❋ मिले अमृतही श्रीबलरामा
अनिरुध साम्ब प्रद्युम्नसुआदी ❋ औरौ चले देखि मिलनादी
देखि पार्थ नारद मुनि राई ❋ उतरे रथ सुमिलनहित धाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यदुबंशिन प्रणाम तब कीन्हो ❀ नारदमुनि आशिष तब दीन्हो
पग बन्दे पारथ हलधर के ❀ हिये लगाय कहतहौं नीके
जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती ❀ बन्दे चरण मिले सब जाती
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे ❀ मिले सात्यकादिक अलछूछे
यहिबिधि मिलतपार्थसुनिराम ❀ राजहिं मिलि गे जहँ सुखधाम
सम बन्दे तहँ मुनिबर ईछे ❀ अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे
अर्घपाद मुनिबर कहँ दीन्हा ❀ बिधिवतपूजि सुआशिषलीन्हा
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ ❀ मिले पार्थ सब त्रियन यथारथ
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा ❀ मनभावत आशिष शुभलीन्हा
पटरानिन सेवा मन दीन्हो ❀ पार्थ कृष्ण मुनि भोजन कीन्हो

दो० भोजन करि बीरा लयो, सुभगसुगन्धित लेपि ।
तब सोये बर पार्थभट, बूड़ेउ नारद सोपि ॥

सो० आगम कहौ मुनीश, केहि कारण आवनभयो ।
कहेउनारद सुनिईश, ब्रह्मा पठयो आपु पहँ ॥

मानुष उमिरि अधिक ह्वै गयऊ ❀ अजहुँ न आवन हरिकर भयऊ
प्रभुडर काल डरत नहिं आवत ❀ यदुकुल कतहुँ जीव नहिं जावत
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे ❀ उग्रसेन आदिक ज्येठारे
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला ❀ ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला
कहति सृष्टि नइ नीति चलाई ❀ केहि कारण मोहिं ईश बनाई
चतुर्मुखा केहि कारण भाखत ❀ देवन में सरिता करि राखत
हौं पुनि उनहीं केर बनावा ❀ अन्तखोज प्रभु हमहुँ न पावा
तौ निजकर क्यों नाहिं बनावत ❀ हमरे ऊपर दोष धरावत
ब्रज मों गाय गोप उन कीन्हो ❀ तब प्रथमै हम परचो लीन्हो
ताते अब यह उचित न तुमको ❀ हँसवन उचित प्रभू है हमको
ताते कृपा करहु बनवारी ❀ पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी
औरौ कही बात करजोरी ❀ कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी
हँसि कह प्रभु भो घोर नेवारा ❀ तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An e Gangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह मुनि भार अथोर अपारा ❀ यदुकुल मरिहि न काहुहिमारा
करिय नाथ अब कछुक उपाई ❀ जाते नाथ लोक निज आई
कह हरि गन्धारीसुत जूझे ❀ तब अस पुनि संजयसों बूझे

दो० श्रीहरि पक्षी पाण्डु के, जयकी आशा छूटि।
अन्ध दीन्ह मेरे लिये, शत सुत बिधनै लूटि॥
कहा कृष्ण सिरजै तवै, सुनु माता अस कौन।
हारि यहां मेटन चहै, मनमानी किय जौन॥
यह सुनिक्रोधालुब्ध ह्वै, शाप गँधारी दीन्ह।
अबते छत्तिस बर्ष में, जो मोकहँ तुम कीन्ह॥

करि असमत गन्धारी शापा ❀ निजकुलहते सुनिजकर पापा
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा ❀ गुण गावत मुनि चले अकाशा
ब्रह्मा पास कही जो हेरी ❀ यदुकुल नाश आइहै फेरी
यहिबिधि बीतिगये कछुकाला ❀ आगे सुनहु नृपति भो हाला
यक दिन ब्रह्मा अतिदुख पायो ❀ अजहुँन काशी श्रीप्रभु आयो
अस मन समुझि देव ले साथा ❀ गे द्वारकहि जहां ब्रजनाथा
करि परिक्रमा नायकरि शीशा ❀ अस्तुति करत देव दिगईशा
पाहि पाहि शरणागत बत्सल ❀ हे कृपालु पालन श्रीअत्सल
दीनानाथ देवकी नन्दन ❀ मैं तव शरण भक्तपालनजन
जय गोबिंदबासी बृन्दाबन ❀ जयति देव जय जगजनबन्दन
जय जय जय माधव असुरारी ❀ तारण तरण गौतमी नारी
दशरथसुत जयजयजगपालक ❀ जनकसुता बारन हरिबालक
परशुराम निजरूप मानहर ❀ बनहिबासकियनाशत्रिशिरखर
मग मारीच बधन सीता छल ❀ बानरसंग सहित हनुमतबल
सेतु बांधि रावण को मारो ❀ अवधपुरी प्रभु भक्ति उधारो
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण ❀ चलिये निजपुर श्रीजगतारण
हे प्रभु भक्तबछल बनवारी ❀ हँसि तब मधुर गिरा उच्चारी
चलब कछुक दिन में हे देवा ❀ यह सुनि लगे जनावन सेवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व ॥

इति श्रीमहाभारतेमुशलपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गे निजधाम देव समुदाई ❀ अब नृप कथा सुनहु जो गाई
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे ❀ कृष्णचन्द्र सन बूझन लागे
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा ❀ जो प्रथमहिं प्रभुमन्त्र अरूपा
इतसों जाइ चलन जब चहे ❀ तब कुन्ती माता बश रहे
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई ❀ जान चहत उत्तर नृपराई
चलन हेतु प्रभु तुमहूं भाखा ❀ चलहु नाथ अब काहे राखा
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी ❀ सुनु नृप बोले शारँगपानी

दो० चलब कछुक दिनमें सुनहु, रहौ इतै कछु काल ।
सुनु असकहि राखत भये, श्रीप्रभु करिकै जाल ॥

रहे बहुत दिन आदर लहिके ❀ अतिमुद सहित बारता कहिके
यकदिन हरि असकह्यो बिचारी ❀ नाशहोइ केहिबिधि कुलकेरी
ताहि समय नारदमुनि आये ❀ हरिगुणगावत आदर पाये
तिनसों बूझेउ यदुकुल नायक ❀ नाश यत्न भाषो जेहि लायक
नारद कह बिन शाप दिवाये ❀ देखि न परत कि युद्ध मचाये
यह भाषत नारद सुनु राई ❀ ताहिसमय ऋषिमुनिगणआई
आये व्यासशिष्य सब साथा ❀ हमहूं हते सुनिय नरनाथा
भृङ्गी ऋषि भृङ्गी मुनिनायक ❀ देवल कपिलआदि सुखदायक
सनतकुमार सप्तऋषि राजा ❀ दुर्बासाऋषि सहित समाजा
विश्वामित्र बशिष्ठादिक मुनि ❀ अरुकौण्डिल्यसुनौ भाषतगुनि

दो० अरु भृगुनायक अङ्गिरा, पाराशरऋषिराय ।
देखि कृष्णआदिक सकल, परे पार्थ सह पाय ॥

सो० उग्रसेन सह कृश्न, पायँ धोय भोजन दयो ।
हलधर कीन्ह्यो प्रश्न, केहिकारण आगमसबन ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Various Collection

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बोले मुनिबर व्यास सुहावन ❀ अशनदेहु इत कछुदिन पावन
चतुर्मास बरषाऋतु पावन ❀ देहु अशन यहिहित सबआवन
रहब इतै सबमुनि सुखदायक ❀ करब सुतप जो आज्ञापायक
कह हलधर मम भाग्य अपारा ❀ महा महामुनि जो पगुधारा
रहो देव हम अशन सोहावन ❀ टिकयोमुनिन्ह अपावन पावन
नितप्रति भोजन सुभग बनाई ❀ बिलग मुनिन्हप्रति देत पठाई
यहिबिधिकछुक दिवस नृप बीते ❀ यकदिन सब शिकार हितरीते
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नाती ❀ लै आज्ञा ह्वै चढ़ि सबभांती
खेलि शिकार मारि मृग रूरे ❀ पुरहि पठाय चले मुदपूरे
आये मुनिबर जेहि बनबासा ❀ बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्बासा
कोउ कह मुनि भोजनहित आये ❀ मांगत भीख कतहुँ नहिं पाये
मिलो पेटभरि इतै अहारा ❀ परे ताहिते ये शठ द्वारा
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई ❀ जो बिधि लिखा होत है सोई

दो० कोउ कह हैं सर्वज्ञ निधि, कृपायतन मुनिराज।
नृपन चाहियो दानशुभ, मुनिबरभोजनकाज॥

सो० निन्दो मति सबकोय, इनकोमानत कृष्णबलि।
जो बिश्वास न होय, कत न परीक्षा लेहु तुम॥

तुरत ग्राम को दूत पठायो ❀ मूशल काढ़ि एक लै आयो
पियो सुरा सब यादव बालक ❀ भयो मस्त हरिइच्छा सालक
बांधि साम्ब हियकाढ़ि सुहावन ❀ मूशल राखि मध्य हियरावन
सुभग नारि गर्भिणी बनाई ❀ केश मूल गहना पहिराई
गेंदन के तहँवां कुच कीन्हे ❀ सेंदुर दै शिर बेंदी दीन्हे
बिछुवा आदि अभूषण जेते ❀ कहँ लौं कहौं किये सब तेते
जाय बन्दि मुनिबर दुर्बासा ❀ बैठि बचन असकीन्ह प्रकासा
हे मुनिबर सर्वज्ञ निधाना ❀ पुत्री पुत्र जात नहिं जाना
जो कृपालु ह्वै तुरत बतावो ❀ अतिशुभ सुयश जगतमहँ पावो
ध्यान धरी मुनिबर तहँ देखे ❀ छलसमुझे कछु और न देखे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रोधित मुनिबर बोले बैना ❋ सुत सुख देख्यो यह कुलनैना

दो० बोले मुनिबर क्रोधकरि, होय सत्य यह बैन ।
याही सुत के होतही, मरै कृष्ण सह सैन ॥

सो० सकुलसंहरिहैंसर्व, जिनटिकाय अपमानकिय ।
अससुनियेनृपपर्व, मरै रुक्मिणी जवन सिय ॥

यह सुनि सकल भभरि तबभागे ❋ मनहुँ सिंह कोउ सोवत जागे
मुनिहि सकोप बकत बहु बैना ❋ इत आये सब निज निज ऐना
सकल बात सब काहुन पावा ❋ जुरि समाज सब नृपपहँ आवा
सुनत कृष्ण अतिभये प्रसन्य ❋ उग्रसेन सह शोचत अन्य
शोचत बसुदेव अरु बलरामा ❋ बारबार कहि शिवहरि नामा
तब नृप मन्त्री ज्ञात बोलाये ❋ उद्धव सात्यकादि सब आये
शोच सुमत करि यह ठहराये ❋ बोलि लोहार सहस्रन आये
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ ❋ चूरन करि समुद्र महँ बहेऊ
ताते भयो सुखर उत्पन्य ❋ औरौ सुनौ कछुक नृप अन्य
एक चूर जो लोह बहायो ❋ शापसत्य हित मीन सो खायो
मीनहि ताहि पकरिकै लावा ❋ बालि नाम धीमर जो आवा
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा ❋ तीक्षण धार थोथ महँ सोहा

दो० सुनु नृप भावी मिटै कस, अरु श्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्णप्रभु, करतकोटिकहशाप ॥

कछु दिन बीतिगये यहि भांती ❋ आनँद जातदिवस अरु राती
श्रीप्रभुकृष्ण वृत्य अस जागी ❋ द्वारावती शाप नहिं लागी
असमन समुझि कृत्तिभगवाना ❋ चहहुँ प्रभासकरिय असनाना
यहसुनि सकल बुलाय सुबासी ❋ भोर चलनकह आनँदरासी
यह सुनि उद्धव हरिपहँ आये ❋ नमस्कारकरि अस्तुति गाये
पुनि रोवन लागे हाहा कहि ❋ कबमैं रहौं नाथ दुख यह सहि
तव मन में हौ निजपुर जैहौ ❋ नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहौ
नाते रहौ जहां हम पैये ❋ जो मन चहौ नाथ सो ह्वैये

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहुँ सनाथ।
असकहि लागे रुदन तब, धरेउ चरणपर माथ॥
सो० भाष्यो श्रीप्रभु बैन, करत शोच तुमहौ कहा।
धरिपद निजहिय ऐन, करौ जाय तप बद्रिका॥
यह देखतहौ जौन सकल जग ❀ सो जानहु सबजाहि एकमग
हय गय द्रव्य पुत्र अरु दारा ❀ सो सबजानु झूठ व्यवहारा
मरण काल कोउकाम न आवत ❀ कबि कोबिद मै सज्जनगावत
मम नाभीते कमल भयो जब ❀ ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब
ताते भई सृष्टि बिस्तारा ❀ मैंहूँ धरेउँ बहुत अवतारा
चारि बेद श्वासन ते गाये ❀ मुखते द्विज भुजक्षत्रिय गाये
बैश्य जानु पद शूद्र बनावा ❀ याहीमें सब जग बेलमावा
तब श्रीकृष्ण कृपा अतिकीन्हे ❀ ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे
औ यह कह्यो सुनौ उद्धव तुम ❀ अब तुम जाउ बद्रिकाको गुम
नाश होन चाहत अब द्वारा ❀ किहेउ दिवसप्रति भजनहमारा
बृष्योनि ते मनुज होत जब ❀ सुमिरण मेरो उचित सुनहुतब
सुनि उद्धव तब शीश नवायो ❀ परिक्रमा करि तुरत सिधायो
इत यदुबंशी भोर भये जब ❀ चले प्रभास काल प्रेरित तब
सजिसजि साज चले सब कोई ❀ पुरजन कृष्णसहित बलि जोई
दो० कहँलगि कहिये सुनहुनृप, चले सहित यदुनाथ।
सात्यकि कृतबर्मा सहित, यदुजन पुरजनसाथ॥
उग्रसेन बसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु, सुखद सुगहिकै बाहिं॥
सो० उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेहबर॥
पारथ राखि नगर रखवारी ❀ आपु चलनहित कीन्ह तयारी
दारुक अरु पारथमों कहेऊ ❀ आयो काल्हि नारिसह रहेऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गे सब प्रभाक्षेत्र सुख पाई ❀ तहँ नारद मुनि बीण बजाई
नारद आयसु दीन कृपाला ❀ जाहु नगर द्वारकहि विशाला
सिखवो तात मातु नृप जाई ❀ मोह मूल को शूल नशाई
तहँ नारद असज्ञान सिखावत ❀ भूमिअकाशहि निजदरशावत

दो० वृक्षयोनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरिपूत ।
ताते अजहुँ न सुमिरियो, होन चहत हौ भूत ॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो, पूर्वभाग्य मुनिराज ।
भक्ति मुक्ति मांगी नहीं, अब आवतिहै लाज॥

सो० मुनि बोले इमिबैन, तुवहित हेतहि कहत हम ।
यकइतिहास गुनैन, नौयोगीश्वर जनकको ॥

नौयोगीश ऋषभ सुत आये ❀ जनक देखिकै शीश नवाये
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती ❀ सिंहासन दीन्हो मन माती
कृपा कीन्ह मम भाग्य अपारा ❀ ऋषभदेव सुत जो पगुधारा
जैसे कियो पवित्र मोहिं चरणन ❀ तैसे पूछत करिये बरणन
तब बोले योगी बर बैना ❀ निज इच्छत तुम पूछत हैना
कहा जनक कर सम्पुटकरिकै ❀ कौनबस्तु अस्थिर बिनभरिकै
जो कह धन स्त्री अरु बालक ❀ आज्ञाकरिकै अरु कुलपालक
ताते मुनि कछु अस्थिर नाहीं ❀ धनदकुशासन सब मरिजाहीं
ताते शोक होत है भारी ❀ है अस्थिर को कहौ बिचारी
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी ❀ अस्थिर नाश न कहिये तैसी
बोले कश्यप नामक योगी ❀ प्रथम भयो हरिहर यश भोगी
बहु सुखप्राप्त उन्हें मिथिलेशा ❀ जे हरिभक्ति ते त्यागि अँदेशा
पुत्र दार धन सब परिवारा ❀ भाग्यमान जिमि अलबकरारा
जे लपटे पुत्रादिक नेहा ❀ ते जब मरे बिकल संदेहा
ताते नाश बस्तु है जोई ❀ अलग रहै सुख पैहै सोई
हरि अवतार यहि हेतु धरतहैं ❀ गाय जाहि नरनारि तरतहैं
जो मन लाग एकधा नाहीं ❀ थोरा थोरा कीजिय ताहीं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जिमि भूखा अन ज्यों ज्यों खैहै ❀ त्यों त्यों बूत तासु के ऐहै
जोकोउमगनितप्रतिचलिहैं नर ❀ एक दिवस वै जाहिं पहुँचिबर
जो न चली वह पहुँची कैसे ❀ हे मिथिलेश भक्ति है तैसे
माया थोरी थोरी छूटै ❀ भक्ति थोरही थोरी जूटै

दो० पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप।
सोई तौ थिरता सुनौ, और झूठ है भूप॥

सो० योगीकहि भे मौन, करजोरे कह जनक तब।
कहिये तपामितभौन, भक्तिरूप किमि होतहै॥

तब हरिनाम दूसरो भाई ❀ सुनु नृप कहत सुलक्षणगाई
कबहुँ हँसत जब हाइँ प्रमन्नित ❀ कबहुँ रोष लक्षण उनके इत
हंसन हेतु यह सुनहु बिदेहा ❀ करत भक्ति पर तुम हरिनेहा
धरते सगुण गाय जाते जन ❀ भवसागरतरि जाहिं जौनबन
गाय ध्यानधरि तरियतु जाते ❀ ये लक्षण हंसन मन माते
रोषन कर लक्षण यहि काजन ❀ सो अब सुनहु कहत मैं राजन
आयु हमारी बीती भारी ❀ फँसो रहो ममता अवतारी
बिनु हरि भक्ति बीतिगे सोई ❀ हे जनकेश देत बय रोई
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा ❀ उत्तम मध्यम और नकारा
सकल चराचर देखिय जौन ❀ चौरासी लक्षित नृप तौन
यक सों लखत ब्रह्म सबमाहीं ❀ हैं लक्षण ये उत्तम आहीं
साधू संगति सत पथ चलिये ❀ हैं ये लक्षण मध्यम पलिये
पुनि ये तेज बराबरि सबमें ❀ नहिं समुझत बिदेह वे जगमें
अब निकृष्ट लक्षण ये सुनिये ❀ माया मोह फँसे हैं दुनिये
काहू पहर असमरण पूजा ❀ ते करिलेहिं निकृष्टित मूजा

दो० जबलगितृष्णानहिंछुटत,तौलगिनहिंनबिरक्त।
दूसर योगीश्वर कहै,तबलगिबिषयासक्त॥
तीनिप्रकारित भक्तिके, सुनुलक्षणमिथिलेश।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥
सो० माया जाको नाम, नारायण में लीन है ।
की है बिलग अकाम, तौन नाथ बर्णन करौ ॥

अन्तरिक्ष जो तीसर योगी ❀ सुनिये नृपति रामयशभोगी
माया हरि की ईहा जानो ❀ ताको त्रिगुणरूप है मानो
सात्त्विक राजस तामस जोई ❀ मारण उत्पति पालन सोई
बिनु हरि मायाकर भ्रमजाला ❀ काम क्रोध मद लोभ कराला
नाहिंन छूटि सकत कोउ राजा ❀ चहिये करिबो उत्तम काजा
महाप्रलय ऊपर हरि रचना ❀ चाहत जबहिं सुनहुनृपबचना
तब माया की ओरहि देखत ❀ माया महातत्त्व को पेखत
महातत्त्व सब उत्पति करिकै ❀ सब जगदेत बराबरि भरिकै

दो० नाशकरन चाहत जबहिं, मूशल धारा बर्षि ।
सुनो करत मायासहित, पारब्रह्म तहँ हर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर ब्यवहार ।
समुझबहरिको उचितहै, सुनुजनकेशउदार ॥

जो माया हरि ईहा कहिये ❀ संसारी किमि उतरन चहिये
माया ते छूटै किमि योगिनि ❀ तुमहौ बैद्य बताइ अरोगिनि
पर बुधि नाम चौथ है जौन ❀ जब जान्यो हरि ईहा तौन
माया हरिइच्छा जब जानी ❀ तब हरि ईहा एकै मानी
हरि परिक्रमा करै नर जोई ❀ पावै सफल अफल नहिं होई

दो० ब्राह्मण लक्षण सहित है, ब्राह्मणकी मतिधीर ।
नहिं सो ब्राह्मणशूद्रसम, ताहिकहतमतिथीर ॥
ऐसो जानौ जनक नृप, चारि बर्णकी चाल ।
पारब्रह्म को जानिबो, नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानो जिन्हैं, सो पायों मों लीन्ह ।
नातरुहै सब अन्यथा, जन्म बिधाता कीन्ह ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बोले जनक राय कर जोरी ❀ को अस बिना हृदय जोहोरी
कौन जीव सोवत हैं नाहीं ❀ जलथलनभ अकाश के माहीं
बोले पञ्चम योगी बैना ❀ हृदय तात पत्थरके हैंना
सोवत मीन सुनो नृप नाहीं ❀ और सकल श्रमबश ह्वै जाहीं

दो० जगमेंगरुआ कौनअति, अतिऊंचो है कौन।
बोले षष्ठम योगिबर, अतिबर बुधिको भौन॥
मेरोगिरि ते गरू है, मात सुनो नृप बात।
आसमानते ऊंच अति, जानो है निज तात॥

सो० कैसे मन नहिं लाग, बिषयामेंमन सबनकर।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तनसुखद सोहावनो॥

ऐसे कृपा कृष्ण की होई ❀ मन लागै हरि यह सुनु सोई
जेते रोवां जानौ तनुमें ❀ तेते रोकन हारे जनमें
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं ❀ कर्म भोगवत है सब याहीं
बोले तब जनकेश उदारा ❀ काके बीज जगत बिस्तारा
कह मुनि पारब्रह्म को जानौ ❀ बीज कौन काको को मानौ
परदादा के दादा जाये ❀ दादाके पितु निज तब भाये
ताके सुत यह देह भई सुनु ❀ को ताको अस सकै भूप गुनु

सो० कहेउ जनक यह बात, कहौ कर्मव्यवहारअब।
कह मुनि सुनु नृप तात, कर्मआदिव्यवहारसब॥

दो० कही पूर्ब निष्ठाद्विधा, ज्ञानयोग संचार।
साखिनकह योगीनकह, कर्मयोग ब्यवहार॥
अनारभ्य के कर्म ते, होत न नर निष्कर्म।
सर्वत्याग संकल्पते, मिलत न सिद्ध सुधर्म॥
मनसा इन्द्रिन रोकिजे, करत न तत्त्व बिचार।
रहत लगाये बिषय में, मनसो मिथ्याचार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

असकहिकैयोगीसकल, गये ब्रह्मपुर और।
असकहिनारदमुनिगये, सकलमुनिनशिरमौर॥

अब नृप सुनहु कथा मनलाई ❋ वहां टिके यदु यदुकुलराई
गड़े बितान अमौलिक लाखन ❋ राखनलगे सूरप्रभु माखन
बस्तु अमौलिक भांतिन केरी ❋ बाजहिं ठौर ठौर प्रतिभेरी
सेना देखि लगत भय हियमें ❋ तबहिं बिचारे श्रीप्रभु जियमें
सबते कहेउ चलिय अस्नाना ❋ करि अस्नान कीन्ह सबदाना

दो० प्रभाक्षेत्र अस्नानकरि, निशिहि टिकेउयदुबंश।
उतसुदेवमिलिसुनुनृपति, खैंच्योनिजनिजअंश॥

हलधर सह पुनि होत बिहाना ❋ सुरापान करि गे अस्नाना
भे मदमत्त उछाड़ैं कूदैं ❋ और हनैं पुनि आंखी मूंदैं
देहिं परस्पर गारि प्रचारी ❋ नाहीं हँसहिं देहिं करतारी
पितु सुत नहिं घरनी हो वारा ❋ लाजहीन लपटहिं जनु दारा
लटपटाहिं धरणी द्वौ गिरहीं ❋ भाजत लड़हिं दौरि तेहि धरहीं
करहिं जलहिअस्नान सोहावन ❋ आपु बीरदल लागो आवन
पुनि पुनि जलउछालसबकरहीं ❋ डण्ड ठोंकि पितुसुतसों भिरहीं
एक पकरि बोरहिं जल माहीं ❋ बूड़हि रोवहि छांड़हिं नाहीं
एकहि डारि सुजल के माहीं ❋ चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं
उत सात्यकि कृतबर्मा जूटे ❋ भिरहिं प्रचारि केश शिर छूटे

दो० लरहिंभिरहिं यहिबिधि सुनहु, रहो न काहू ध्यान।
शापबश्य राजा सुनो, कोसुत कोपितु आन॥

सो० जलउछाल करिबीर, आयेनिज निजपक्ष लखि।
जहँ सात्यकि कृतबीर, ह्वै समाज उमहत दोऊ॥

तब सात्यकि कृतबर्म बखाना ❋ भागेसि शठ नत कालनेराना
मम सहाय पाण्डव रण जीते ❋ मारे दुर्योधन भट रीते
सो मैं शत्रु आजँ कृत तेरे ❋ भागि बचो नहिं हनत सबेरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ताते अजहुं मानु शठ बानी ❀ नत अब होनचहत कुलहानी
कह कृत होत अधम केहि धोखे ❀ निजकर बधब हनब शरचोखे
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई ❀ नत मारत बहु पाण्डवराई
अजहूं सात्यकि जीह संभारो ❀ नत अब शरन देत शिरभारो
सुनि सात्यकि कोपित ह्वै मनमों ❀ मानहुं जीतिचले रण घरमों

दो० अरेअधमसात्यकिकहेउ, सोवतते बहुमारि।
सत्राजित पाण्डवसुवन, अजहुँबकत बशहारि॥

सो० तब सात्यकि भटयुद्ध, पारथगुरुकोध्यानधरि।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपिमध्यआवतभयो॥

तब कृत कह अति कोपितबैना ❀ शठ धर्मातम देख्यों नैना
भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ ❀ ताहि समय बर पारथ रहेऊ
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा ❀ यह धर्मातम तव हम चीन्हा
असकहि सहपक्षी बर बीरा ❀ लै हथ्यार आयो तेहि तीरा
सात्यकि पक्ष सहित लै हाथा ❀ बज्रनाभिभजिगो तजिसाथा
जाय बचो अनिरुधसुत भागी ❀ शापबश्य लागी तब आगी
तब सात्यकि प्रचारि निजपक्षी ❀ कृतलैकरि सेनानिज अच्छी
बाक्य बादि करि करि उतकर्षा ❀ लागे करन मूल शर बर्षा
चहुंदिशि बाणगदा असिधारा ❀ भिरे बीर करि क्रोध अपारा
तदपि न जूझो कोउ बरबीरा ❀ टूटि गिरे हथियार व तीरा
तब सब समुद्रफेन खरलीन्हा ❀ ताते मारु भयानक कीन्हा
सुरामस्तभट जूझैं गिरिगिरि ❀ उलटिपलटि लपटैं पुनि भिरि भिरि
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी ❀ मारहिं सुभट फेनु तेहि घेरी

दो० शाप कृष्णमंशा प्रबल, अबला मनुष्य उपाउ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ॥

सो० जूझि गिरे बहुबीर, जे रहिगे प्रभुपहँ चले।
योगाभ्यास गंभीर, तनु त्याग्यो जे सहसबर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्णचन्द्र तब भागि पवाँरे ❀ रहे जवनते युद्ध बिचारे
मरे जूझि एको नहिं बाचे ❀ मन क्रम रहे शूर सब सांचे
इत तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना ❀ बैठे पीपल बृक्ष सुजाना
तातरु बैठि कीन्ह शुभ आसन ❀ लीलाकीन्हसुभग हितदासन
धरे जानुपर चरण कृपाला ❀ ताहि समय आयो बहुकाला
जान्यो नयन मृगाकर सोहत ❀ लैके धनुष बाण मन मोहत
बालिनाम बानर त्रेता कर ❀ धीमररूप छांड़ि दीन्होशर
चरणमध्य चमकत तहँ जानी ❀ आयो लेन शिकार गिल्यानी
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना ❀ बन्दि चरण तब ऐंच्यो बाना
कह कृपाल बदला तुम लीन्हो ❀ रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हो
उत अर्जुन सब रथहि चढ़ाई ❀ रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई
दारुक पास कही अस बाता ❀ लै रथ जाहु अग्र तुम ताता
पाछे हम आवत सह नारिन ❀ जाते होइ न श्रम कंसारिन
दारुक हांकि सुभग रथ गयऊ ❀ उतरिरथहि हरिचरणननयऊ
उतरत दारुक के नरपाला ❀ हय समेत रथउड़िगो हाला
यह लखि दारुक बिस्मय पावा ❀ सब चरित्र तब कृष्णबतावा
यह सुनि सूत परेउ गिर धरणी ❀ तब हरिकही दुःखकी हरणी
तुम धरि ध्यान त्यागु तनुजाई ❀ अर्जुन पास कहेउ अस जाई
कछुक दिवसमें बुड़िहै ग्रामा ❀ कहेउजाइँलै निजनिज सामा

दो० गीता ज्ञानहिं राखिहिय, जाय बद्रिका धाम।
अबआयोकलियुगप्रबल, इतै न रहिबो काम॥
ऐसे कहते कहत हरि, गह गह हने निशान।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु, किङ्किणिनाद बिमान॥

सो० यहिबिधिकृष्णकृपाल, गयेधामनिजनिजसुनहुँ।
दारुक गयो उताल, अर्जुनसों सब यों कहेउँ॥

सुनि अर्जुन सह यदुकुल नारी ❀ रोवहिं गिरहिं मुर्च्छिसुकुमारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दारुक जाय कतहुँ तनुत्यागा ❀ तब सबहिनकर मुर्च्छाजागा
सह नारिन गे जहँ रणपावन ❀ देखि भूलिगो को कत आवन
पटरानी अरु यदुकुल नारी ❀ अति दुखबूड़िमरीं कछुबारी
कछुक चितारचि धरिसुतनाती ❀ पतिसहजरतभईं सब जाती
गईंसकलमिलिनिजनिजअंशन ❀ अनिरुधसुत बिन रहेउनबंशन
इत अर्जुन पुनि धीरज धारा ❀ बज्रनाभ सह गे नृप द्वारा
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन ❀ बंशबृद्धि होवै अति पावन

दो० पाप नशै कीरति बढ़ै, ब्यास गिरा परमान।
भणितपर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेमुशलपर्वणि
नामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji [illegible] Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत

स्वर्गारोहणपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है।

जिसमें

महाभारत करक द्रौपदी सहित पांडवों का गोत्राघात का पश्चात्ताप होकर व्यासोपदेश से श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन कर उत्तराखण्ड हिमालय में गलना और युधिष्ठिर का सदेह हरि विमान में बैठ स्वर्गलोक जाना आदि कथाएँ वर्णित हैं।

—:o:—

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९३९ ई०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वर्गारोहणपर्व ॥

दो० प्रथमहिंगुरुकेचरणशुभ, सुमिरौं शीश नवाइ ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकलबिघ्नमिटिजाइ॥
महादेव पदकञ्ज पुनि, सुमिरौं दोउ करजोरि।
जो अभिलाषा मन बढ़ी, सो पुरवौ प्रभु मोरि ॥

श्रीशक्ति मैं बिनवौं तोहीं ❀ माता पार लगायो मोहीं
हरिलीला बरणौं मन लाई ❀ सो तुम अक्षर देहु मिलाई
महाबीर सुमिरौं सबलायक ❀ भयभञ्जन मनबाञ्छितदायक
अगणित बिघनहरण हनुमाना ❀ सो भरोस मैं मन अनुमाना
दिहिनि मोहिं मन प्रभु उपदेशू ❀ सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू
कहौं हृदय गुरु को धरिध्याना ❀ त्याहिते पावौं निर्मल ज्ञाना
अगहन मास पुनीत सुहावा ❀ बुधबासर हरि तिथि शुभ पावा
सम्बत सत्रहसै इक्यासी ❀ ताहि समय हरिकथाप्रकासी
हरिको रूप सकल जग जाना ❀ करिसबहिनकहँ दण्डप्रणामा
ईश्वर को द्रुम रूप बखानी ❀ तीनि लोक सो शाखा जानी
चारिहु युग सो पत्र समाना ❀ शुभअरुअशुभयुगलफलजाना

दो० सबलसिंह करजोरियुग, सबसन्तन शिरनाइ ।
अस्तुतिकरत गणेशकी, अक्षर देहु मिलाइ ॥

सोमबंश हस्तिनपुर राजा ❀ नृपति युधिष्ठिर तहां बिराजा
कीन्हेउ महाभार्त अतिभारी ❀ गुरु औ बन्धु सखा सबमारी
दुर्योधन को जीति भुवारा ❀ पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा
श्रीकृष्णकी आज्ञा पाई ❀ कीन्ह यज्ञ कछु बरणि न जाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज कीन्ह बहु काल सोहाई ❀ पाछे नृप के मन अस आई
गोत्रघात कीन्हें बहुतेरा ❀ कस होई भवसिन्धु निबेरा
ब्यासदेव सों द्वौ कर जोरी ❀ सुनौ नाथ अब बिनती मोरी
ज्यहि प्रकार हरिलोकहि जाई ❀ सो प्रसंग प्रभु कहौ बुझाई

दो० तबऋषिव्यास बिचारकरि, बोले बचनबिनीत।
जाय हेवारे गलौ तुम,तबतनहोय पुनीत॥

जो हेवार तन त्यागै कोई ❀ मन बाञ्छित फल पावै सोई
कोटि जन्म के पाप कमाये ❀ गलत हेवार पार तिन पाये
ब्यास कहा नृप सुनु इतिहासा ❀ जो सुनि होय सकलभ्रमनासा
एक ग्राम यक पण्डित रहई ❀ नितउठि एकनृपति के जाई
श्रीभागवत सो जाय सुनावे ❀ दक्षिणा लै अपने घर आवे
एक दिवस तेहि मारग माहीं ❀ मिला नाग तेहि पण्डितकाहीं
नर बानी बोल्यो शिरनाई ❀ पण्डित दीनदयाल गोसांई
हमहिं भागवत आजु सुनावो ❀ हरिलीला अमृत रस गावो

दो० नागबचन सुनि पण्डित,मनमहँकीन्हबिचार।
हरिलीला पर प्रीतिलखि, तब कीन्हों उच्चार॥

अध्याय एक तब पण्डित बांचा ❀ मनक्रमबचनताहि लखिसांचा
कथा सुनाय बिदा जब भयऊ ❀ यकमोहर त्यहि दक्षिणा दयऊ
बिप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई ❀ नितमोहिं यक अध्याय सुनाई
गयो बिप्र तब अपने ग्रामा ❀ रहेउ नाग सो अपने धामा
नित उठि बिप्र भूपघर जाई ❀ श्रीमत कहै नृपहिं समुझाई
फिरती बार नाग गृह आवै ❀ यकअध्याय नित ताहि सुनावै
एक अशरफी सो नित देई ❀ पण्डित महा मगन ह्वै लेई
कछुक दिवस यहिबिधिगे बीती ❀ पण्डित नाग केरि शुभरीती
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा ❀ नाग सुमिरि मिथ्या संसारा

दो० पण्डित सों शिरनायके, नाग कहेउ मृदुबयन।
बचन एक मैं मांगहुँ, मोहिं देहु गुणअयन॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वर्गारोहणपर्व ॥

दो० प्रथमहिंगुरुकेचरणशुभ, सुमिरौं शीश नवाइ ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकलबिघ्नमिटिजाइ॥
महादेव पदकञ्ज पुनि, सुमिरौं दोउ करजोरि।
जो अभिलाषा मन बढ़ी, सो पुरवौ प्रभु मोरि ॥

श्रीशक्ति मैं बिनवौं तोहीं ❋ माता पार लगायो मोहीं
हरिलीला बरणौं मन लाई ❋ सो तुम अक्षर देहु मिलाई
महाबीर सुमिरौं सबलायक ❋ भयभञ्जन मनबाञ्छितदायक
अगणित बिघनहरण हनुमाना ❋ सो भरोस मैं मन अनुमाना
दिहिनि मोहिं मन प्रभु उपदेशू ❋ सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू
कहौं हृदय गुरु को धरिध्याना ❋ त्यहिते पावौं निर्मल ज्ञाना
अगहन मास पुनीत सुहावा ❋ बुधबासर हरि तिथि शुभ पावा
सम्बत सत्रहसै इक्यासी ❋ ताहि समय हरिकथाप्रकासी
हरिको रूप सकल जग जाना ❋ करिसबहिनकहँ दण्डप्रणामा
ईश्वर को द्रुम रूप बखानी ❋ तीनि लोक सो शाखा जानी
चारिहु युग सो पत्र समाना ❋ शुभअरुअशुभयुगलफलजाना

दो० सबलसिंह करजोरियुग, सबसन्तन शिरनाइ ।
अस्तुतिकरत गणेशकी, अक्षर देहु मिलाइ ॥

सोमबंश हस्तिनपुर राजा ❋ नृपति युधिष्ठिर तहां बिराजा
कीन्हेउ महाभार्त अतिभारी ❋ गुरु औ बन्धु सखा सबमारी
दुर्योधन को जीति भुवारा ❋ पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा
श्रीकृष्णकी आज्ञा पाई ❋ कीन्ह यज्ञ कछु बरणि न जाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज कीन्ह बहु काल सोहाई ❀ पाछे नृप के मन अस आई
गोत्रघात कीन्हें बहुतेरा ❀ कस होई भवसिन्धु निबेरा
ब्यासदेव सों दौ कर जोरी ❀ सुनौ नाथ अब बिनती मोरी
ज्यहि प्रकार हरिलोकहि जाई ❀ सो प्रसंग प्रभु कहौ बुझाई

दो० तबऋषिव्यास बिचारकरि, बोले बचनबिनीत।
जाय हेवारे गलौ तुम,तबतनहोय पुनीत॥

जो हेवार तन त्यागै कोई ❀ मन बाञ्छित फल पावै सोई
कोटि जन्म के पाप कमाये ❀ गलत हेवार पार तिन पाये
ब्यास कहा नृप सुनु इतिहासा ❀ जो सुनि होय सकलभ्रमनासा
एक ग्राम यक पण्डित रहई ❀ नितउठि एकनृपति के जाई
श्रीभागवत सो जाय सुनावे ❀ दक्षिणा लै अपने घर आवे
एक दिवस तेहि मारग माहीं ❀ मिला नाग तेहिपण्डितकाहीं
नर बानी बोल्यो शिरनाई ❀ पण्डित दीनदयाल गोसांई
हमहिं भागवत आजु सुनावो ❀ हरिलीला अमृत रस गावो

दो० नागबचन सुनि पण्डित,मनमहँकीन्हबिचार।
हरिलीला पर प्रीतिलखि, तब कीन्हों उच्चार॥

अध्याय एक तब पण्डित बांचा ❀ मनक्रमबचनताहि लखिसांचा
कथा सुनाय बिदा जब भयऊ ❀ यकमोहर त्यहि दक्षिणा दयऊ
बिप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई ❀ नितमोहिं यक अध्याय सुनाई
गयो बिप्र तब अपने ग्रामा ❀ रहेउ नाग सो अपने धामा
नित उठि बिप्र भूपघर जाई ❀ श्रीमत कहै नृपहिं समुझाई
फिरती बार नाग गृह आवै ❀ यकअध्याय नित ताहि सुनावै
एक अशरफी सो नित देई ❀ पण्डित महा मगन ह्वै लेई
कछुक दिवस यहिबिधिगे बीती ❀ पण्डित नाग केरि शुभरीती
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा ❀ नाग सुमिरि मिथ्या संसारा

दो० पण्डित सों शिरनायके, नाग कहेउ मृदुबयन।
बचन एक मैं मांगहुँ, मोहिं देहु गुणअयन॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ ❋ जो तुम कहौ तौन मैं दयऊ
नाग कहेउ बिप्रहि समुझाई ❋ बदिक आश्रम चलौ गोसांई
बिपुल अशरफी मोरे धामा ❋ सो लैजाहु नाथ निज ग्रामा
सकलअशरफी तब द्विजलीन्हा ❋ लैकै नाग गमन तब कीन्हा
कछुकदिवसमहँ तहँ चलिआये ❋ बद्रीपति जहँ धाम सुहाये
जाय शम्भु के दरशन कीन्हा ❋ तब सो नाग उतर फिरि दीन्हा
निकट हेवारे कहँ अब चलहू ❋ जो मैं कहौं तौन तुम करहू
बिप्र निकट तब गयो तुरन्ता ❋ नाग सुमिरि तब लक्ष्मीकन्ता
कह्यो बिप्रसन सुनहु गोसांई ❋ मोहिं शीत महँ देहु चलाई

दो० बिप्र चलायो नाग कहँ, गिरो हेवारे जाइ।
बिप्र चल्यो घर आपने, हँस्यो नाग ठट्ठाइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलासिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि
नागबद्रिकाश्रमगमनंनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

तब फिरि बिप्र उतर असदीन्हा ❋ जो तुम हँस्यो चहहुँ सो चीन्हा
तेइ तब कह्यो सुनहु द्विजराई ❋ हँसेक भेद मिलै यक ठांई
काशी पुरी शम्भु अस्थाना ❋ तहां क राजा परम सुजाना
त्याहिते जाइ पूछि तुम लेहू ❋ अनतेजाइ कह्यो जनि केहू
तबहिं तुरत द्विज गमनतभयऊ ❋ कछुकदिवसमहँकाशिहिगयऊ
पुरी मनोहर देख्यो जाई ❋ दरशनकरत सकल अघ दहई
तुरतहि चल्यो शम्भु दरबारा ❋ प्रदक्षिणा दै बिप्र उदारा
उठि तब चल्यो भूप दरबारा ❋ करि प्रणाम राजा बैठारा
प्रथमकथा द्विज कह्यो बुझाई ❋ सुनौ नृपति यहचरित सुहाई
नाग हेवारे ज्याहिबिधि गयऊ ❋ हंसेक भेद जौन कछु रह्यऊ

दो० सो बहु भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर।
तब मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदयकी पीर॥

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई ❋ बैष्णव तीन रहैं यक ठाँई
महि प्रदक्षिणा करत सोहाये ❋ फिरत फिरत आश्रमयकआये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करत प्रसाद रहैं यक तीरा ❀ तीनिउ जने ज्ञान मतिधीरा
तहँवाँ एक श्वान चलि आवा ❀ त्यहिका दै तिन भोजन पावा
भोजन करि वे चलिभे आछे ❀ श्वान चला तब तिनके पाछे
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई ❀ हम नितवाह सुनोरे भाई
जन्मभूमि यह होय तुम्हारी ❀ रहो श्वान अस हृदय बिचारी
तब वह कहै लाग अब बूझी ❀ मोकहँ परत यहै अब सूझी
जहां मिलै मम उदर अहारा ❀ सोई है निज धाम हमारा
यह कहि चल्यउ तासु सँग सोई ❀ नित तिनके सँग भोजन होई
यहिबिधिमहि प्रदक्षिणा दयऊ ❀ तीनिउ जने हेवारे गयऊ
पाछे श्वान लागि तहँ गयऊ ❀ तीनिउ जने अमरपद लयऊ

दो० कुत्ताके श्रवणन महँ, रहे किलना दुइ लाग।
कुत्ता गलेउ हेवारमहँ, तिनहुँ कीन्ह तनत्याग॥

सुनहु हेवारे कै प्रभुताई ❀ किलना दोउ भूप भे आई
जगन्नाथ पुर एक बिराजा ❀ यक मकसूदाबाद क राजा
महीं होउँ वह श्वान सुहावा ❀ काशीपुरी रुचिर मैं पावा
सो वहु नाग हँसा अस जानी ❀ ब्राह्मण रहे बड़े बिज्ञानी
दैकै द्रव्य आइ तन त्यागी ❀ लौट्यो बिप्र कौनसुख लागी
सो वह हँसा सुनहु द्विजराई ❀ मैं अपनी निज करणी गाई
यह इतिहास ब्यासअसकह्यऊ ❀ सबलसिंह संक्षेपहि लह्यऊ
सुनौ युधिष्ठिर अस मन जानी ❀ गलौ हेवारे मन क्रम बानी
यह सुनि तब सहदेव बिचारा ❀ कह्यो भूप सुनु कहा हमारा
जो गुरु कह्यो सत्य सो बानी ❀ चलौ जहां हैं शारँगपानी
यदुनायक सों आज्ञा मांगी ❀ चलौ हेवारे महँ तन त्यागी
तुरत ब्यास सों आज्ञा लीन्हा ❀ द्वारावती गमन नृप कीन्हा
अर्जुन जाय तुरत रथ साजा ❀ त्यहिपर चढ़्यो युधिष्ठिर राजा
अतिशोभितरथबरणि न जाई ❀ किङ्किणिध्वनि सुनि देव सिहाई

दो० पांचौ भाई चढ़े तब, श्रीगुरुचरण मनाय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिन्धु तीर द्वारावती, तहां पहूंचे जाय ॥

द्वारावती निकट नृप गयऊ ❀ तब रथत्यागि पियादे भयऊ
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहिं धामा ❀ तहँ नृप कीन्ह्यो दण्डप्रणामा
धर्मतनय सम्पुटकरि हाथा ❀ अस्तुति करत मनाइहि माथा

छं० नमामि शिखरधारणं । गोकुला गोपतारणं ॥
सुरेश मान मर्दनं । नमामि प्रभु जनार्दनं ॥
नमामि कंसमर्दनं । चाणूरगर्ब गञ्जनं ॥
गयन्द प्राण रञ्जनं । ग्राह गर्ब भञ्जनं ॥
प्रहलाद प्राणरक्षकं । नृसिंह दुष्ट भक्षकं ॥
सिन्धुसुता नायकं । बिप्र सुख दायकं ॥
मही भार टारणं । फणीश मानमारणं ॥
मच्छ कच्छ रूपराखी । ताके सब बेद साखी ॥
बाराह बपुष धारी । हिरण्याक्ष दुष्ट मारी ॥
नमामि रूप बावनं । ब्रह्माण्डकियो पावनं ॥
नमामि गरुड़ बाहनं । तवशरण कामदाहनं ॥
नमामि चक्र धारणं । सुर धेनु दुःख हारणं ॥
जय बिश्वरूप स्वामी । कृपालु अन्तरयामी ॥
जय जक्कहरण न्यारे । नरदेह आय धारे ॥
मुकुन्द जक्क पालकं । गोबिन्ददनुजघालकं ॥
जय जय जलशायनं । जय सर्व गुणआयनं ॥
नमामि शरण आयों । श्रीकृष्णदरश पायों ॥

सो० यहि बिधि अस्तुति कीन्ह, पाणिजोरिकै धर्मसुत ।
कृष्णअङ्कभरिलीन्ह, करिदायाबहुबिधिमिलेउ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबलसिंह तजिमोह, जो सुमिरे हरिनामदृढ़।
सोई नर अति सोह, जन्म जन्म सुख पावही॥

बैठे तुरत नृपहि बैठारी ❀ बोले बचन सन्त भयहारी
कहौ कुशल नृप हमहिं सुनाई ❀ हस्तिनपुर कै सब कुशलाई
आयो सकल भाइ किमिआजू ❀ सो महिपाल बतावहु काजू
तब बोले नृप दोउ कर जोरी ❀ सुनहु मुरारी बिनती मोरी
हमसे ब्यास कह्यो अस बाता ❀ तुमनृपअगणितगोत्र निपाता

दो० कोटिन यज्ञ करहु जो, तीर्थ करहु समुदाय।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नहिं जाय॥

सो यदुनाथ कहौ समुझाई ❀ ज्याहिबिधि हम भवपारै जाई
तब बोले श्रीयदुकुलनाथा ❀ कर्म अकर्म सबै बिधि हाथा
एक बात समुझावहुं तोहीं ❀ जस नृप समुझि परत है मोहीं
आयो कलियुग महाअनीती ❀ अब न कोय निजइन्द्रियजीती
ब्राह्मण नहिं करिहैं शुभकाजा ❀ सजिहैं शूद्र तपस्या साजा
दाया धर्म रहित ह्वै जाई ❀ साधु निरादर जहँ चलिजाई
कलियुग तीरथ रहै छपाई ❀ बिरला कोउ तीरथ का जाई
कलियुग गौवैं दूध न देहैं ❀ कन्या बेचि सकल धन लेहैं
दायारहित सकल संसारा ❀ कोउ न आतम करहि बिचारा
मेघबृष्टि करिहैं अति थोरा ❀ मण्डलखण्ड बृष्टि चहुँओरा
राजा प्रजा त्रासि धन लेहैं ❀ बोइ किसान अंश नहिं देहैं

दो० करिहैं राज्य मलिच्छ सब, क्षत्री सब बिधिहीन।
धर्महीन ह्वै जाइ हैं, तेहिते ह्वैहैं क्षीन॥

कन्या द्वादश बर्ष प्रसूता ❀ षोड़श बर्ष जाइहै पूता
अर्थ लागि नर धर्महि करहीं ❀ बिना अर्थ नहिं दाया धरहीं
कलियुग करम बिबिधपरकारा ❀ बरणत होई ग्रन्थ अपारा
सो संक्षेप कह्यों समुझाई ❀ आगिलचरित सुनहु मनलाई
श्रीकृष्णहि जब कह्यो बुझाई ❀ तब राजा के बिस्मय आई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिबिधभांतिमन कीन्हबिचारा ❀ अब नाहीं होई निस्तारा
तुरत कृष्णकहँ करि परणामा ❀ चढ़िरथचलतभयो निजधामा
आयो तहँवां पांचो भ्राता ❀ जहँवां रहै कुन्तिमा माता
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई ❀ काहे बदन सूख तव अहई

दो० कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा बिस्तार।
सबलसिंह श्रीकृष्णप्रभु, भाष्यो सबै बिचार॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

कहा नृपति मातहि समुझाई ❀ उत्तर पन्थ जाब सब भाई
सुनत कुन्तिमा नृप के बयना ❀ हृदय शोच भरिआयो नयना
क्याहि कारण मम पुत्र बिछोहू ❀ यहमनसमुझि भया अतिकोहू
फिरिधरि धीरज कह्यो बिचारी ❀ सुनहु पुत्र यह बात हमारी
भूमि हेतु तुम भारत कीन्हा ❀ रणमहँलोह गुरुनसन लीन्हा
दुर्योधन कै सेन सँहारी ❀ गुरु औ बन्धु गोत्रसबमारी
मारेउ करण दुशासन बीरा ❀ बिष्वक्सेन हत्यो रणधीरा
भीषमचार्य धर्मध्वज मारेउ ❀ अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ
बीर कलिङ्ग जौन धनुधारी ❀ कुँवर लक्ष्मण हत्यो प्रचारी

दो० बिबिधभांतिसंग्राम करि, जीत्यो बीर अनेक।
पाइ एकछत राज्य अब, तजौ भीम की टेक॥

सुनि माता के बचन बिनीता ❀ तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता
सुनु माता अब कलियुग माहीं ❀ राज्य करै कर पौरुष नाहीं
श्रीकृष्णहि आज्ञा शिर धरिहौं ❀ उत्तरपन्थ गमन अब करिहौं
राज्य परीक्षित देहु सुहाई ❀ करिहैं मातु तोरि सेवकाई
यह सुनि शीश परीक्षित नाये ❀ बोले नृप सन बचन सुहाये
तुम बिन नाथ मोहिं सुख नाहीं ❀ बन्धुहीन नहिं राज्य सोहाहीं
तब नृप पुत्रहि हृदय लगावा ❀ धीरज दीन बहुत समुझावा
सत्य बचन सुत कह्यो बिचारी ❀ क्षत्री धर्म सदा अनुसारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दाया राख्यो मन करि धीरा ❀ पाल्यो प्रजा सदा तुम बीरा
दो० दायाराख्यो हृदय महँ, कहेउ सो किहेउ प्रमान।
राजधर्म लक्षण यही, ऐसे बेद बखान॥
भीमसेन सों कह्यो भुवारा ❀ बेगि करौ अभिषेक बिचारा
अगणित स्यन्दन तुरत सजाये ❀ ओषधिमूल फूल सब लाये
दूतन बोलि तुरत जल मांगा ❀ साजे बेगि अनेकन नागा
बिबिध भांति बाजन बजवाये ❀ ब्यास आदि सब ऋषै बोलाये
बिप्रन कीन्ह बेद उच्चारा ❀ जय जय शब्द भयो अनुसारा
महादिब्य सिंहासन आवा ❀ मणिनजटित बहुभांतिसोहावा
ब्यासदेव की आज्ञा पाई ❀ राज्य परीक्षित को बैठाई
ब्यासदेव तब तिलक करावा ❀ देशके भूपन माथ नवावा
पौत्रहि राज्य भूप जब दीन्हा ❀ सबहिनबिबिधनिछावरिकीन्हा
तबहिं नृपति मातहिं शिरनाई ❀ पांचो भाइ चले हर्षाई
गङ्गातीर तुरत नृप आये ❀ मणि मुक्ता बहुभांति लुटाये
दो०बोले बिप्र अनेक बिधि, दीन्हदान बहुभांति।
स्यन्दनहयगजबसनमणि,बरणतबरणिनजाति॥
बायु बेग साज्यो रथ पावन ❀ ऊंच ध्वजा अतिपरम सुहावन
सहित द्रौपदी पांचो भाई ❀ तिहि पर नृपति चढ़्यो हर्षाई
उत्तर मुख तुरतहि रथ भयऊ ❀ नगरलोग ब्याकुल ह्वै गयऊ
रोवहिं पशु पक्षी सब नाना ❀ महाबियोग न जाइ बखाना
अब क्यहिके शरणागत रहिबे ❀ होइहि त्रास भागि कहँ जैबे
तब सबहिन समुझाय नरेशा ❀ कहि सब कलियुगको उपदेशा
धर्मराय सब कहँ समुझावा ❀ उत्तरदिशहि बिमान चलावा
ब्रह्मचर्य ब्रतयुक्त सुहाये ❀ हरद्वार समीप नृप आये
को छबि हरद्वार की कहई ❀ दरशन करत महाअघ दहई
घाट सोहावन रतन जड़ाय ❀ जहँ बहु देव रहैं नित छाये
दो० हरि चरणन दरशनकरी, ब्रह्मकुण्ड असनान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीकृष्णपद सुमिरि तब, नृपफिरिकीन्हपयान॥
हरद्वार उत्तर चलि आये ❀ बीरभद्र के दरशन पाये
करि दरशन नृप आगे गयऊ ❀ तपकानन प्रमुदित मन भयऊ
बिबिध मुनिनके धाम सुहाये ❀ भूपति देखि महासुख पाये
भरत दरश कीन्ह्यो हरषाई ❀ लक्ष्मण चरण बिलोक्यो जाई
करि परदक्षिण सुमिरि मुरारी ❀ सुरप्रयाग देख्यो भयहारी
फेरि नृपति तहँवां चलि आये ❀ शिव आश्रम जहँ बेदन गाये
शंकर दरश हेत मन ठाना ❀ सो गिरिनाथ हेत सब जाना
छिपे शम्भु महिषा उर माहीं ❀ ढूंढ़न लगे मिलहिं हर नाहीं
कह नृप सुनहु बचन अब ताता ❀ कहँ गे शम्भु कहौ सो बाता

दो॰ कह सहदेव बिचारि करि, सुनहु भूमिपति बात।
यहै जानि छिपिरहे शिव, हम कीन्हे कुलघात॥

सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं ❀ क्रोध कीन्ह बायूसुत तबहीं
जो महिषा उर छिपे महेशू ❀ तौ तुम सुनौ मोर उपदेशू
मम चरणनके बीच निकारी ❀ तब दरशन देहैं कामारी
भूप कह्यो सुनु भीमकुमारा ❀ क्रोध किये नहिं काज हमारा
शंकर दीनबन्धु जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावहिं शीशा
धर्मराय तब अस्तुति ठाना ❀ पांचौ भाइन यह मत माना
जय जय शंकर जनभयहारी ❀ दीनबन्धु भयहरन पुरारी

छन्द त्रिभंगी॥

जय शिवशंकरशरण भयहरण व्यापक रूपअनूपा।
पाणित्रिशूल दरिद्रदवन प्रभु कृपासिन्धु सुररूपा॥
सुर मुनिपालक खलकुल घालक जय कृपालु वृषकेतू।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू॥
अङ्ग बिभूति अभूषण सोहैं देखिरूप सुर नर मुनि मोहैं।
कण्ठशेष गरलकृत भक्षन शीश जटा गङ्गाजी सोहैं॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमहिं कृतारथ करनहेत अब दरशन देहु कृपाला ।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप बिनवैं जयजय दीनदयाला ॥
जयशिवसबलायकसबजगनायकगञ्जनबिपतिसमूहा।
गुण औगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर जूहा ॥

सो० यहि बिधि बिनतीकीन्ह, पाणि जोरि धर्मराजतहँ ।
तब हर दरशन दीन्ह, तबकेदारपतिपरछिनृप ॥
परछि केदार भुवाल, बिनयकरतमहिभालधरि।
जयजय शम्भु कृपाल, प्रभु मोहिं पार लगाइये ॥

छन्द ॥

नमामि ईश ईश्वरं । पाहि मे प्रमेश्वरं ॥
नमामि आशुतोषनं । समस्तलोक पोषनं ॥
अनेक रूप धारणं । बिभञ्जलोक कारणं ॥
गिरीश रूप आगरं । त्रिलोक में उजागरं ॥
कपाल माल शोभितं । पाहि शरण मैनितं ॥
नमामि गङ्ग धारणं । भवसिन्धुसुतातारणं ॥
व्यापकं बिभुं प्रभो । गुणाकरं कृपाल भो ॥
दयाल दीन नायकं । सन्त सुःखदायकं ॥
कराल काल भक्षकं । स्वभक्त दीन रक्षकं ॥
हिमवन्तसुता नायकं । सर्व सिद्धि दायकं ॥
निरङ्कार रूप नाथ । अर्थ चारि प्रभो हाथ ॥
शैलनाथ शिवनाथ । नागेश्वर रामनाथ ॥
दरशदियोजानिदीन। मैंतौ सर्वज्ञ हीन ॥
बार बार हाथ जोरि । राखो अभिलाषमोरि ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० बार बार बिनती करी, भूप दण्डवत कीन्ह।
मनवाञ्छित बरपायो, शम्भु आशिषहिदीन्ह॥

पांचो भाइ बहुरि शिरनाई ❀ आगे कहँ रथ दीन चलाई
चलेउ बद्रिकाश्रम को ताके ❀ अगणित पर्बत नांघत बांके
शैलावत पर्बत पर आयो ❀ महाऊंच नहिं मारग पायो
ताहि तूरि तहँ पवनकुमारा ❀ रजकर शृङ्ग तूरि महिडारा
निर्मल पन्थ कीन्ह बलवाना ❀ आगे चलत भजत भगवाना
बिश्ववती गिरि देख्यो जाई ❀ मारग तहां भीम नहिं पाई
बायें हाथ तूरि तिहिं दयऊ ❀ तहां पन्थ अतिनिर्मल भयऊ
तिहि पर चढ़िगे पांचौ भाई ❀ शिखर बिमानवती नियराई
तहां एक अति दैत्य प्रचण्डा ❀ आगे आइ मिला बरबण्डा
देखि नृपहिं अतिहर्षित भयऊ ❀ बचनक्रोध अतिशीतल कहेऊ
सुफल जन्म मम भयो भुवारा ❀ शत्रुदरश मोहिं मिलेउ तुम्हारा
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा ❀ मिटा कोटि दुख दारुण दावा

दो० आजु जन्म ममसुफल भा, सज्जनरिपु गृह पाइ।
देहु युद्ध धर्मराज मोहिं, कहैलाग गोहराइ॥

कहा भूप सुनु निशिचर राजा ❀ मैं छांड़्यों सब लौकिक काजा
ब्रह्मचर्य हम पांचौ भाई ❀ बर्त युक्त नहिं युद्ध सोहाई
अस्त्र सकल अर्जुन धरि दीन्हे ❀ अगमपन्थमहँ काहु न लीन्हे
शङ्कर दरश कीन्ह हम जबहीं ❀ भीमहु गदादीन्ह धरि तबहीं
पण्डित है भाई सहदेऊ ❀ नकुल न जान युद्धकर भेऊ
यहि मा लरनहार नहिं कोई ❀ हम सों युद्ध कबहुँ नहिं होई
यह सुनि मेघनाद अस कहई ❀ बिना युद्ध नहिं देवै जाई
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा ❀ पुनि पुनि कहै निशाचर बीरा
सुनिकै भीम क्रोधभरि आयो ❀ धर्मराय सों बचन सुनायो

दो० आज्ञादेहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतौं प्रचारि।
भूपति कहेउ भीमसन, राखहु क्रोध सँभारि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहा पन्थ कहँ जो कोउ जाई ❀ क्रोधै तजै शास्त्र अस कहई
हरिजनकहँ रिस कबहुँ न आवै ❀ द्वादश षष्ठ पुराणै गावै
दयत नृपति कहँ बहुत प्रचारा ❀ नहिं आवा कछु हृदय खभारा
मेघनाद तब गर्जत भयऊ ❀ जनु घनघोर महाधुनि कयऊ
प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा ❀ कीन्हासि नाद महापरचण्डा
झपटि द्रौपदी को लै गयऊ ❀ भीम हृदय अतिविस्मय भयऊ
कहा भूपसन पवनकुमारा ❀ नाथ भयो अपमान हमारा

दो० पञ्चाली को दैत्य अब, लैगा अपने धाम।
धिक धिक जीवन जन्म मम, जो न कीन संग्राम॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणिद्रौपदी हरणंवैशम्पायनराजाजनमेजयसंवादोनाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

असकहि भीम क्रोध भरिआयो ❀ मानहुँ सोवत सिंह जगायो
ताल ठोंकि पर्बत लै धायो ❀ जहँवां असुरधाम तहँ आयो
कोटिन दैत्य महा बरियारा ❀ धाये गरजत बिबिधप्रकारा
शिखर प्रहार भीम तब कीन्हा ❀ मानहु बज्रघात करि दीन्हा
पवनतनय अति भुजबलजोरा ❀ सहस निशाचर गहि शिरफोरा
मेघनाद कहँ भूमि पछारी ❀ हाहाकार भयो अति भारी
मारि निशाचर तपसिनलीन्हा ❀ तबहिं द्रौपदी आशिष दीन्हा
धन्य पवननन्दन बलवाना ❀ अपनि प्रतिज्ञा कियो प्रमाना
धन्य महाबल अतिभुज जोरा ❀ राख्यो भीम सत्य तुम मोरा

दो० धन्य धन्य पाण्डवसुवन, द्रुपदी कीन बखान।
पांचोभाइन सुमिरिहरि, पुनि फिरि कीन पयान॥

बैशम्पायन कहि समुझाई ❀ सुनु जनमेजय नृप मनलाई
कथा पुनीत सुनत दुख भागे ❀ पांचौ भाइ चले पुनि आगे
यूप कूप आगे शत बीरा ❀ देखत कूप भीम रणधीरा
कहा कूप सुनु पाण्डुकुमारा ❀ सुनहु नाथ अब कहा हमारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये ❀ हमहूं दरश तुम्हारे पाये
अस शुभ बचन कूप जब कह्यऊ ❀ सुनत भीम तब शीतल भयऊ
आगे चले युधिष्ठिर राजा ❀ बेनवती देखिनि नृप साजा
देवसुता तब आगे आई ❀ दोउ करजोरि कहा शिरनाई
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा ❀ अबकछु सिखवन सुनहु हमारा
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी ❀ महाशिखर आगे भयकारी

दो० इहवाँ रहहु नरेश तुम, करहु बिबधबिधि भोग।
सुरपुरते अतिसरिससुख, छूटै जक्क बियोग॥

कहेउ भूप सुनु कन्या बानी ❀ बेद चारि अस कहैं बखानी
राजपसार लोक तिन त्यागा ❀ हरिचरणन तिनकर मन लागा
तिनसम धन्य और नहिं कोई ❀ हरिहि पियार सदा वै सोई
अन्तसमय केवल पद पावैं ❀ फिरियहिजक्क बहुरि नहिं आवैं
मैं निज पुर त्यागो अस जानी ❀ कहतभयो नृप अति मृदुबानी
बेनवती समुझाय भुवाला ❀ बहुरि सुमिरिनिजइष्टगोपाला
धराशिखर ऊपर चढ़ि आये ❀ महागहन नहिं मारग पाये
भीम हृदय तब कीन्ह बिचारा ❀ धराशिखर अतिऊंच अपारा
सब पर्वत ते अति बिस्तारा ❀ ताके शृङ्ग तूरि महि डारा

दो० धरा पर्वतन तूरिकै, कीन्हों पन्थ पुनीत।
हरिहरसुमिरतबन्धुसब, आगे चलेउ बिनीत॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ ❀ देखि पाण्डवन मोहित भयऊ
आगे आइ नृपति शिरनाई ❀ मृदुल बचन अति कह्यो सुहाई
धन्य देव राजन शार्दूला ❀ सत्यबादि तुम सुकृती मूला
बिबिध बिलास महाअस्थाना ❀ करहु भोग नृप परम सुजाना
देवन कन्या परम सुहाई ❀ सो तुम्हारि करिहै सेवकाई
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये ❀ सो पैहो नृप नित मनभाये
करहु बिलास त्याग निज हेतू ❀ रहो नाथ सब बन्धु समेतू
उत्तर पन्थ गहन बहुतेरे ❀ तहँवां पन्थ न पैहो हेरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देव सुतन तब रूप देखावा ❀ देखि भूपके नहिं मनभावा

दो० भद्रकालिसों धर्मसुत, बहुबिधि कहेउ बुझाइ ।
इन्द्रपुरी सों सरिस सुख, सो मैं चलेउँ बिहाइ ॥

हम जाइब श्रीपति के धामा ❀ हम से नहीं भोगसे कामा
भद्रकालि समुझाइ नरेशा ❀ आगे चलेउ अगम जहँ देशा
शिखर अनन्त महाबिस्तारा ❀ शतयोजन सो ऊंच अपारा
चढ़ेउ युधिष्ठिर पांचौ भाई ❀ संग द्रौपदी पन्थ न पाई
आग भीम पन्थ तहँ कीन्हा ❀ गिरिके शृङ्ग तूरि तब दीन्हा
नांघि अनन्त शिलापर गयऊ ❀ बद्रीपति कहँ देखत भयऊ
दूरिहिं ते प्रदक्षिणा कीन्हा ❀ ठाकुरके दरशन नहिं कीन्हा
अस्तुति कीन्ह नृपति हरषाई ❀ जय कृपालु सन्तन सुखदाई

त्रिभङ्गी छन्द ॥

जय भवतारण असुरसँहारण जय चक्रदधर स्वामी। महिभारबिभञ्जन सुरमुनिरञ्जन जय कृपाल अन्तर्यामी ॥ जय गदापदुमधर जिनहिं नमत हर जासु चरण श्रीगङ्गा । प्रकट भई संसार में आइ कीन्हेनि पाप सकल भङ्गा ॥ जय दुष्टनिकन्दन जय जगबन्दन तुम भस्मासुर भस्म करी । तुमहीं प्रभु प्रहलाद उबारेउ हरिणाकुशको उद्र बिदारेउ तब ह्वैके नरसिंह हरी ॥ ते सब लायक सब सिधिदायक जिनकर मन रत पदकञ्जा। सुमिरै नाम हेत सब त्यागी धन्य धन्य ते नर बड़भागी जिन माया को दल भञ्जा ॥ तुमहीं प्रभु मधुकैटभ मारेउ तिहिके तनकै महि बिस्तारेउ मुर ताल को बल भञ्जा। मच्छ कच्छ नरसिंह रूप बावन परशुराम बपु ह्वै

CC-0. Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये ❋ हमहूं दरश तुम्हारे पाये
अस शुभ बचन कूप जब कह्यऊ ❋ सुनत भीम तब शीतल भयऊ
आगे चले युधिष्ठिर राजा ❋ बेनवती देखिनि नृप साजा
देवसुता तब आगे आई ❋ दोउ करजोरि कहा शिरनाई
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा ❋ अबकछु सिखवन सुनहु हमारा
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी ❋ महाशिखर आगे भयकारी

दो० इहवाँ रहहु नरेश तुम, करहु बिबधबिधि भोग।
सुरपुरते अतिसरिससुख, छूटै जक्क बियोग॥

कहेउ भूप सुनु कन्या बानी ❋ बेद चारि अस कहैं बखानी
राजपसार लोक तिन त्यागा ❋ हरिचरणन तिनकर मन लागा
तिनसम धन्य और नहिं कोई ❋ हरिहि पियार सदा वै सोई
अन्तसमय केवल पद पावैं ❋ फिरियहिजक्क बहुरि नहिं आवैं
मैं निज पुर त्यागो अस जानी ❋ कहतभयो नृप अति मृदुबानी
बेनवती समुझाय भुवाला ❋ बहुरि सुमिरिनिजइष्टगोपाला
धराशिखर ऊपर चढ़ि आये ❋ महागहन नहिं मारग पाये
भीम हृदय तब कीन्ह बिचारा ❋ धराशिखर अतिऊंच अपारा
सब पर्वत ते अति बिस्तारा ❋ ताके शृङ्ग तूरि महि डारा

दो० धरा पर्वतन तूरिकै, कीन्हों पन्थ पुनीत।
हरिहरसुमिरतबन्धुसब, आगे चलेउ बिनीत॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ ❋ देखि पाण्डवन मोहित भयऊ
आगे आइ नृपति शिरनाई ❋ मृदुल बचन अति कह्यो सुहाई
धन्य देव राजन शार्दूला ❋ सत्यवादि तुम सुकृती मूला
बिबिध बिलास महाअस्थाना ❋ करहु भोग नृप परम सुजाना
देवन कन्या परम सुहाई ❋ सो तुम्हारि करिहै सेवकाई
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये ❋ सो पैहो नृप नित मनभाये
करहु बिलास त्याग निज हेतू ❋ रहो नाथ सब बन्धु समेतू
उत्तर पन्थ गहन बहुतेरे ❋ तहँवां पन्थ न पैहो हेरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देव सुतन तब रूप देखावा ❋ देखि भूपके नहिं मनभावा
दो० भद्रकालिसों धर्मसुत, बहुबिधि कहेउ बुझाइ ।
इन्द्रपुरी सों सरिस सुख, सो मैं चलेउँ बिहाइ ॥
हम जाइब श्रीपति के धामा ❋ हम से नहीं भोगसे कामा
भद्रकालि समुझाइ नरेशा ❋ आगे चलेउ अगम जहँ देशा
शिखर अनन्त महाबिस्तारा ❋ शतयोजन सो ऊंच अपारा
चढ़ेउ युधिष्ठिर पांचौ भाई ❋ संग द्रौपदी पन्थ न पाई
आगे भीम पन्थ तहँ कीन्हा ❋ गिरिके शृङ्ग तूरि तब दीन्हा
नांघि अनन्त शिलापर गयऊ ❋ बद्रीपति कहँ देखत भयऊ
दूरिहिं ते प्रदक्षिणा कीन्हा ❋ ठाकुरके दरशन नहिं कीन्हा
अस्तुति कीन्ह नृपति हरषाई ❋ जय कृपालु सन्तन सुखदाई

त्रिभङ्गी छन्द ॥

जय भवतारण असुरसँहारण जय चक्रदधर स्वामी। महिभारबिभञ्जन सुरमुनिरञ्जन जय कृपाल अन्तर्यामी ॥ जय गदापदुमधर जिनहिं नमत हर जासु चरण श्रीगङ्गा । प्रकट भई संसार में आइ कीन्हेनि पाप सकल भङ्गा ॥ जय दुष्टनिकन्दन जय जगबन्दन तुम भस्मासुर भस्म करी । तुमहीं प्रभु प्रहलाद उबारेउ हरिणाकुशको उद्र बिदारेउ तब ह्वैकै नरसिंह हरी ॥ ते सब लायक सब सिधिदायक जिनकर मन रत पदकञ्जा। सुमिरै नाम हेत सब त्यागी धन्य धन्य ते नर बड़भागी जिन माया को दल भञ्जा ॥ तुमहीं प्रभु मधुकैटभ मारेउ तिहिके तनकै महि बिस्तारेउ मुर ताल को बल भञ्जा। मच्छ कच्छ नरसिंह रूप बावन परशुराम बपु ह्वै

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरि सुर सन्तन को दुख गञ्जा ॥ सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमहीं प्रभु यह जग बिस्तारा कोइ न पावै पारा। निगमागम निशि बासर गावैं शेष शारदा शङ्कर ध्यावैं बीते कल्प हजारा ॥ गुण औगाह थाह नहिं पावैं अपनी मति भरि सहि नहिं गाई को कबि करै बखाना। जेहि पर नाथ दयाकरि हेरेउ तेहिकी मति मद मोह न घेरेउ सो चरणन लपट्याना॥बार बार करजोरि धर्मसुत सहित द्रौपदी औ अनुजन युत अस्तुति करत सुजाना। मनबाञ्छित फल सो दीन्हेउ मोहिं जय कृपाल प्रभु मैं याचौं तोहिं यहि बर मन अनुमाना ॥ फिरि नृप बन्धु सहित गे तहँवां ऋषयसमूह बिराजै जहँवां कीन्हेउ दण्डप्रणामा। लोमशादि मुनि सकल बिराजैं निज निज बेदिन ऊपर राजैं तेज ज्ञानके धामा ॥

दो॰ गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम।
अङ्गीऋषि शृङ्गीऋषि, जिनजाने हरिनाम॥

पारस उदालीक मुनि ज्ञानी ❋ औ कौण्डिल्य महासज्ञानी
शोभाऋषै गर्गऋषि तहँवां ❋ मारकण्डेय सहित हैं जहँवां
सुरगुरु कपिलदेव तहँ भ्राजा ❋ विश्वामित्र करहिं तपसाजा
सूर्यबंश के गुरु तहँ देखे ❋ राजै धर्म धन्य करि लेखे
बामादिक अरु ऋषय बशिष्ठा ❋ ये सब बैठे सकल सरिष्ठा
बालमीकि सब ऋषै अनेका ❋ ऋषिदल मध्य जे परमबिबेका
भृगुनायक औ भारंगादी ❋ और सकल परमारथबादी
अत्रीमुनि तहँ ज्ञाननिधाना ❋ कुम्भज आदि सकल सज्ञाना
परमहंस देखत मन मोहै ❋ मानहुँ बेद धरे तन सोहै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP. Digitized by eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सनक सनन्दन सनतकुमारा ❀ शौनकादि नारदहि निहारा
जान्यो सुफल जन्म मम होई ❀ ऋषि समूह जब देख्यो सोई
दो० सबकहँ कीन्ह्यो दण्डवत, धन्य जन्म निज जानि।
सबलसिंह नृप बन्धु युत, चरण परेउ तब आनि॥
तब ऋषि बोले गिरा सुहाई ❀ आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई
नारदऋषि बोले तब बानी ❀ सुनहु धर्मनन्दन बिज्ञानी
करतिउ राज सकलसुखनाना ❀ अबहीं काहेक कियो पयाना
बैतरणी अति दूरि भुवाला ❀ मारग अगम बसै बहुकाला
तहँको पहुँचब कठिन नरेशा ❀ काहेक तज्यो रुचिर अति देशा
हस्तिनपुरी महासुख सोहै ❀ जेहिके देखत सुरगण मोहै
सुनि नारदके बचन सुहाये ❀ भूप जोरिकर बचन सुनाये
मोरिभाग्य अतिबल ऋषिराई ❀ जो तव चरण बिलोक्यों आई
नृप करजोरि मुनिनके आगे ❀ अस्तुति करन लगे अनुरागे

छन्द नाराच॥

नमामि सिद्धिदायकं। मुनीश सन्त नायकं॥
बेद रूप आगरं। श्री ब्रह्मपुत्र नागरं॥
सर्बज्ञ नाथ ब्रह्ममय। नमोनमःकृपाल जय॥
जयब्रह्मबिष्णुशम्भुरूप। अग्नि सूर्य चन्द्ररूप॥
बेदनाथ बेदरूप। तारो भ्रमजाल कूप॥
नमामि मोह त्यागी। हरि रूपमें अनुरागी॥
मोहिं दीन जानिकै। दरशदियो आनिकै॥
पाहि पाहि नाथ मे। सनाथ भयो देखि ते॥
सो० अहो भाग अवगाह, देख्यों चरण मुनीश तव।
छुटिगे कोटिन दाह, सबलसिंह नृप कहेउ अस॥
सुनहु ऋषय कह बहुरि नरेशू ❀ ज्यहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू
आयो कालयुग महाप्रचण्डा ❀ अब सबके उर बस पाखण्डा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नीति बिचार करी नहिं कोई ❀ बिबिधभांति अनीति जग होई
नारदऋषि तब बोले बयना ❀ सुनहु महीप सकल गुण अयना
भलकीन्हेउ तुम यह मतठाना ❀ जो उत्तर पथ कियो पयाना
नारद कहन लगे विज्ञाना ❀ सुनहु महीप हृदय धरि ध्याना
यहितनुअमितअनीतिहिरहहीं ❀ अपनी बृद्धि सकल वे चहहीं
अस्थि मांस नारी त्वच जोरा ❀ काम क्रोध तिहिमा बरजोरा
माया मोह साज भय सज्जा ❀ इनकै बिबिध प्रकार तरज्जा
रजो तमो औ सतगुण आवै ❀ इनसब जीव बिबिधबिधि भावै

दो० ये सब करहिं कर्मबश, जीव कहै हम कीन्ह ।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहिते इनमहँ लीन्ह ॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं ❀ बहुबिधि नींद बश्य ह्वै रहहीं
प्राकृतकर्म जीव कहँ लागै ❀ होइ सुखी जो इनकहँ त्यागै
कर्म अकर्म उभय जग करई ❀ त्यहिते देह अनेकन धरई
इन्द्री स्वाद भूलि जग माहीं ❀ हरिशरणागत आवत नाहीं
दश इन्द्रिन के दशौ बिचारा ❀ वे निशि बासर चलैं अपारा
नेत्रन रूप रूप बश करई ❀ देखै की इच्छा बहु धरई
श्रवणन शून्य सुनै कछु जबहीं ❀ जीवहि आइ करै बश तबहीं
जिह्वै पर रस रस को चाहै ❀ नासा गन्ध गन्ध बश राहै
त्वचा बसत अस्पर्श सुहाई ❀ शीत तपनि दुख सुखहि बताई
औरी इन्द्रिन के अति स्वादा ❀ सो वे चहैं गयरि मर्यादा
औरौ चारि अवस्था गाढ़ी ❀ तिन बहुभांति जीवकहँ दाढ़ी
बालक होइ युवा ह्वै जाई ❀ बृद्ध होय तनु जाय पराई
यानि लक्ष चौरासी जोई ❀ कर्म निबन्ध करै जिय सोई
यहि प्रकार जिय हरिकहँ भजई ❀ रहत अधीन संग कस तजई
तीनि अवस्था बेद बखाना ❀ जाग्रत स्वप्न सुषोपति जाना
पांच पचीस तत्त्व बलवाना ❀ इन सँग जीव भयो अज्ञाना
शोधि मनै नहिं धावै पावै ❀ इनते गाँसि नादपर लावै

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्रिकुटी संयम चढ़ै गगनमा ❀ सुरति बांधि देखो निजतनमा
पांचौ शब्द होयँ झनकारा ❀ साइ साहब त्रिभुवनते न्यारा
सो० प्राकृत संग छोड़ाइ, मनकहँ गांसि बिचारिकरि।
हरिपदसुरतिलगाइ, फिरि न परै भ्रमजाल नर॥
समदरशी है जाइ, एकरूप सब जक्र लखि।
कहु नारद समुझाइ, सबलसिंह भवतरै सोइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहण-
पर्वणिविज्ञानवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

जब नारद राजहि समुझावा ❀ तत्त्वज्ञान को भेद बतावा
तब नृप बहुरि हरषि शिरनाये ❀ सहित द्रौपदी पन्थ सिधाये
आबू शिखर गये सब भाई ❀ तहँवां दैत्य मिले समुदाई
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे ❀ राजहिं आइ पन्थ महँ घेरे
मांगहिं युद्ध गर्जि घनघोरा ❀ प्रलयकाल रव भै चहुँओरा
कोइ गयन्द है रूप देखावैं ❀ है केहरि कोइ गर्जत आवैं
अगणितरूप भयंकर देखी ❀ नृपति भीमसों कहेउ बिशेखी
क्रोध न कीन्हेउ पवनकुमारा ❀ अब मन सुमिरहु जक्र उदारा
दो० बासुदेव भगवान प्रभु, हरे कृष्ण गोपाल।
गोपीपति गोबिन्द कहि, आगे चलेउ भुवाल॥

तहँवां शीत प्रबल अतिभयऊ ❀ तुरत द्रौपदी तनु गलिगयऊ
पञ्चाली तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह बैकुण्ठनिवासा
देखि भीम अतिशोच बढ़ावा ❀ दोनों नयन नीर भरि आवा
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा ❀ तुम सम बर्त न काहू कीन्हा
जस रोहिणी चन्द्रमहिं जाना ❀ जस रुक्मिणी कृष्ण कहँ माना
तस अर्जुन कहँ मानेहु देवी ❀ निशिदिनचरणनृपति के सेवी
तब ब्रत राखा कृष्ण मुरारी ❀ उभय सभामहँ होत उघारी
भीमहिं बाढ़ा शोच अपारा ❀ तब समुझायो धर्मकुमारा
भीमसेन तुम तजहु कलशू ❀ निगमागमकर अस उपदेशू

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भारत भयो द्रौपदी हेतू ❀ जूझिगये सब गुरुन समेतू
त्यहिकारण तनु गत ह्वै गयऊ ❀ धरहु धीर राजहिं अस कहेऊ
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा ❀ धर्मसुवन बहुबिधि उपदेशा

दो० जनअर्दन यदुनाथ कहि, शिरीकृष्ण कुलकेतु ।
आगे बढ़ेउ नरेश तब, पांचौं भाइ समेतु ॥

कछुक दूरि आगे जब गयऊ ❀ कञ्चनपुरी बिलोकत भयऊ
रतनखम्भ सब जड़ित सोहाये ❀ कञ्चनके कपाट बहु लाये
देवन कला बिबिध परकारा ❀ जिनके रूप न कोउ संसारा
रति रम्भा उर्बशी लजाहीं ❀ और त्रिया को लेखे माहीं
शिव हरिशक्ति गनै को भाई ❀ जक्षमातु उपमा किमि लाई
रूपराशि कन्या सब धाई ❀ धर्मतनय सों कह्यो बुझाई
अहहु भूप तुम शीलनिधाना ❀ राज्य करौ हमरे अस्थाना
बिबिधभांति सुखकरहु नरेशा ❀ देवसुतन कर अस उपदेशा
पांचौं भाइ रहौ सब जानी ❀ बोली सकल बचन रससानी
तब राजैं सब बचन सुनाये ❀ हम तौ राजभोग तजि आये
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी ❀ तब हमचले सकलसुख त्यागी

दो० राजबिषय रस भोग हैं, मैं त्यागेउँ अस जानि ।
शिरीकृष्णपदपङ्कज, मति लागे भय हानि ॥

अस कहि भूप चलत पुनिभयऊ ❀ नाम अनङ्ग शिलापर गयऊ
शीतप्रबल कछु बरणि न जाई ❀ सहदेव तनु तहँ गयो बिलाई
कीन्ह भीमतहँ अति अपघाता ❀ बुद्धिमन्त नहिं देखिय ताता
कह्यो भीम भा बन्धु बिछोहू ❀ यहसुनि नृपहि भयो अतिकोहू
ज्योतिष सकल बिशारद भाई ❀ सकलशास्त्रमतिबरणि न जाई
बेदनिधान सकल गुण पूरे ❀ क्षत्री धर्म अस्त्र के पूरे
अहह बन्धु गत मैं क्याहे पापा ❀ सुमिरि भीमअतिकीन्हबिलापा
राय युधिष्ठिर तब समुझाये ❀ कूर्मशिला ऊपर चढ़ि आये
अतिघनघोर शिला तब कीन्हा ❀ नकुलहिआयतोपितेहिलीन्हा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कीन्हकोलाहल तेहि भयकारी ❀ अतिप्रज्वलित शीत त्यों डारी
तहँवां नकुल देह गलि गयऊ ❀ पवनतनयके अतिदुख भयऊ
दो० रूपराशि ममबन्धुदोउ, सकलगुणनकी खानि ।
रोवहिं अर्जुन भीम सब, बल औ शील बखानि॥
नृपति समेत क्षण ककरि शोचू ❀ आगे चल्यो छांड़ि सबशोचू
नाम गोमती शिला पुनीता ❀ त्यहिपरप्रबलअमितअतिशीता
गर्जि धनञ्जय कहँ लै लीन्हा ❀ गजपुरनाथ शोच तब कीन्हा
अहह बन्धु तुम यज्ञ कराई ❀ घोड़ा लायहु भूमि फिराई
तुम्हरे बल बिप्रन कहँ दाना ❀ दीन्ह्यों मैं जो मो मन माना
महाधनञ्जय कृष्ण पियारे ❀ तुम राजन के गर्व प्रहारे
तुव भुजबल सुरनाथ गयन्दा ❀ पूजि कूजि मैं कीन्ह अनन्दा
तुम बिनु दिशा शून्य ह्वै गयऊ ❀ अहह बन्धु कहँवां तुम गयऊ
धिक ममजन्म युधिष्ठिर कह्यऊ ❀ जो मम बन्धु नाश ह्वै गयऊ
क्षणक शोच फिरि शोच बिहाई ❀ आगे चलत भये द्वौ भाई
बैतरणी जहँ नदी सोहाई ❀ तिहि अस्थान गये द्वौ भाई
दो० बैतवती जहँ शिला बड़, गर्जा प्रलय समान ।
तिहितर तोपि गयो पुनि, बायूसुत बलवान॥
नृपति युधिष्ठिर शोच बढ़ावा ❀ श्वानस्वरूप तहां यक आवा
ताहि देखि नृप कह्यउ बिचारी ❀ अहो श्वान कहँ बास तुम्हारी
उत्तर पन्थ स्वर्ग भयकारा ❀ तुम कहुँ देख्यहु भीम कुमारा
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा ❀ कहो श्वान कछु इनकर भेवा
यह सुनि श्वान कह्यो मृदु बानी ❀ सुनहु युधिष्ठिर नृप बिज्ञानी
बैतरणी यह नदी पुनीता ❀ कृष्णस्वरूप कहत अस गीता
मज्जन करहु पाप मिटिजाई ❀ फिरि नहिं जक्रजन्म नियराई
नरतनु मोह लोभ सँग लागे ❀ मायारवगुण तीनि अभागे
यह नरदेह मूत्र मल झोरी ❀ यहिमा पांच तत्त्व हैं जोरी
कामादिक बिष्ठा लपटानी ❀ करुअस्नान नृपति अस जानी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यामें मज्जन करै जो कोई ❀ पलटै देह देवतन होई

दो० श्वानकह्यउ समुझाइकै, करहु नृपति अस्नान।
सकल पाप तव छूटै, आवै स्वर्ग बिमान॥

तुरत नृपति मज्जन तब कियऊ ❀ छुटिगा मोह ज्ञानवर भयऊ
भूप श्वान की अस्तुति कीन्हा ❀ तुम ममपिता ज्ञान मोहिं दीन्हा
माता बन्धु सखा तुम मोरे ❀ यहिबिधि नृपति कहत करजोरे
तिहिक्षण आवा बिष्णुबिमाना ❀ तेजपुञ्ज रबिकिरणि समाना
को शोभा त्यहि यान कि कहई ❀ शेष शारदा त्यउ ठगिरहई
मुक्तन के गुच्छा चहुँ ओरा ❀ मणिनसिंहासन तिहिपरजोरा
महापुनीत रत्नमय सोहा ❀ जानै धर्मसुवन जिन जोहा
बिबिध सुगन्ध लपेटि सोहावा ❀ लेकै बिष्णुदूत तहँ आवा
धर्मतनय सन कहेसि बुझाई ❀ चढ़हु बिमान नाथ अब आई
चढ़ि बैकुण्ठहि चलो भुवाला ❀ तहँभोगहुसुखबिबिधबिशाला
सकल देव जहँ श्रीभगवाना ❀ मुनिजन तहां बसत हैं नाना
बिबिधतपस्या जिनमहिकीन्हा ❀ तिनहिंनिवासतहांबिधिदीन्हा

दो० बिष्णुदूतके बचनसुनि, कहा नृपति करजोरि।
श्वान चढ़ावो यानपर, प्रभु बिनती सुनि मोरि॥

बिना श्वान नहिं चढ़ौं बिमाना ❀ नहिं बैकुण्ठ करौं प्रस्थाना
नृपबाणी सुनि सूर्यकुमारा ❀ कह्यो धन्य सुत ज्ञान तुम्हारा
चढ़हु तात हरिरुचिर बिमाना ❀ मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ ❀ सुरतरु सुमन बृष्टि नभ करेऊ
धर्मराज सुररूप देखावा ❀ राइ युधिष्ठिर पद शिरनावा
धन्य जन्म मम भयो सोहावा ❀ पिता तुम्हार दरश मैं पावा
नेमक्रिया सब सुफल हमारे ❀ तात चरण अब देखि तुम्हारे
नमोऽस्तुते कहि बारहिंबारा ❀ हरिबिमान पर चढ़्यो भुवारा
बिष्णु बिमान बैठि जब राजा ❀ तबहरिगणन अभूषण साजा
मुकुट मनोहर शीश बँधावा ❀ पीताम्बरपट आनि ओढ़ावा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवभूषण भुज बांधि बहूंटा ❋ कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा
हरिस्वरूप जस बेदन गाये ❋ बिष्णुगणन तस नृपहि बनाये
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना ❋ ढोरत चमर उड़ान बिमाना

दो० यहिबिधि नृपहिं बिष्णुगण, क्षणमहँ लैगे धाम ।
जे छलछांड़ि भजहिं हर, तिनहिंदेतगति राम ॥

हरिगण नृपहि धाम लै आये ❋ श्रीनिवास के दर्शन पाये
देखि भूप दोनों करजोरी ❋ जय दयाल राख्यहु रुचि मोरी
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा ❋ यह सुनि आपु उठे श्रीरामा
क्षीरनिवास हृदय महँ लाये ❋ गहि भुज अपने ढिग बैठाये
नृप बैकुण्ठ बिराज्यो जाई ❋ बैशम्पयन कथा सब गाई
जनमेजय सुनि अतिसुखपावा ❋ मुनिकहँ बहुरि हर्षि शिरनावा
कथा पुनीत सुनत दुख भागा ❋ आगे बहुरि करहु अनुरागा
मुनिअभिलाष नृपतिकी जाना ❋ फिरि आगे तब कीन्हबखाना
हरिपुर नृपति जाइ सुख पाई ❋ तहां बिलोक्यो चारिहु भाई
सहित द्रौपदी रूप अनूपा ❋ द्रोणाचार्य सहित सब भूपा
देवरूप तहँ भीष्मपितामा ❋ करणसहित राजहिं हरिधामा
दुर्योधन आदिक बलवाना ❋ जिन जिन मरत युद्ध रणठाना
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते ❋ हरिपुरमध्य बिराजहिं तेते
नृप बैराट सहित सुत देखा ❋ औरहु बहुत करै को लेखा
गांधारी माता तहँ देखा ❋ माद्री सहित धरे शुभ बेखा
जयद्रथ नृप अहिबरणकुमारा ❋ सबहिनकहँ तहँ देखि भुवारा

दो० भारत महँ जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
बिबिधभांतिसुखपायो, ध्रमसु[illegible]हितनिहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पाण्डवा गयऊ ❋ सुनि जनमेजय कहँ सुखभयऊ
बारम्बार जोरि युग पानी ❋ ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी
आनन शशि तवनाथ पुनीता ❋ अमृतमय यह गिरा बिनीता
तृषितहृदयसुनिअतिसुखभयऊ ❋ नानाभांति लाभ मैं लह्यऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यामें मज्जन करै जो कोई ❀ पलटै देह देवतन होई

दो० श्वानकह्यउ समुझाइकै, करहु नृपति अस्नान।
सकल पाप तव छूटै, आवै स्वर्ग बिमान॥

तुरत नृपति मज्जन तब कियऊ ❀ छुटिगा मोह ज्ञानवर भयऊ
भूप श्वान की अस्तुति कीन्हा ❀ तुम ममपिता ज्ञान मोहिं दीन्हा
माता बन्धु सखा तुम मोरे ❀ यहिबिधि नृपति कहत करजोरे
तिहिक्षण आवा विष्णुबिमाना ❀ तेजपुञ्ज रबिकिरणि समाना
को शोभा त्यहि यान कि कहई ❀ शेष शारदा त्यउ ठगिरहई
मुक्तन के गुच्छा चहुँ ओरा ❀ मणिनसिंहासन तिहिपरजोरा
महापुनीत रत्नमय सोहा ❀ जानै धर्मसुवन जिन जोहा
विबिध सुगन्ध लपेटि सोहावा ❀ लेकै बिष्णुदूत तहँ आवा
धर्मतनय सन कहेसि बुझाई ❀ चढ़हु बिमान नाथ अब आई
चढ़ि बैकुण्ठहि चलो भुवाला ❀ तहँभोगहुसुखबिबिधबिशाला
सकल देव जहँ श्रीभगवाना ❀ मुनिजन तहां बसत हैं नाना
बिबिधतपस्या जिनमहिकीन्हा ❀ तिनहिंनिवासतहांबिधिदीन्हा

दो० बिष्णुदूतके बचनसुनि, कहा नृपति करजोरि।
श्वान चढ़ावो यानपर, प्रभु बिनती सुनि मोरि॥

बिना श्वान नहिं चढ़ौं बिमाना ❀ नहिं बैकुण्ठ करौं प्रस्थाना
नृपबाणी सुनि सूर्यकुमारा ❀ कह्यो धन्य सुत ज्ञान तुम्हारा
चढ़हु तात हरिरुचिर बिमाना ❀ मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ ❀ सुरतरु सुमन बृष्टि नभ करेऊ
धर्मराज सुररूप देखावा ❀ राइ युधिष्ठिर पद शिरनावा
धन्य जन्म मम भयो सोहावा ❀ पिता तुम्हार दरश मैं पावा
नेमक्रिया सब सुफल हमारे ❀ तात चरण अब देखि तुम्हारे
नमोऽस्तुते कहि बारहिंबारा ❀ हरिबिमान पर चढ़्यो भुवारा
बिष्णु बिमान बैठि जब राजा ❀ तबहरिगणन अभूषण साजा
मुकुट मनोहर शीश बँधावा ❀ पीताम्बरपट आनि ओढ़ावा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवभूषण भुज बांधि बहूंटा ❀ कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा
हरिस्वरूप जस बेदन गाये ❀ बिष्णुगणन तस नृपहि बनाये
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना ❀ ढोरत चमर उड़ान बिमाना

दो० यहिबिधि नृपहिं बिष्णुगण, क्षणमहँ लैगे धाम ।
जे छलछांड़ि भजहिं हर, तिनहिंदेतगति राम ॥

हरिगण नृपहि धाम लै आये ❀ श्रीनिवास के दर्शन पाये
देखि भूप दोनों करजोरी ❀ जय दयाल राख्यहु रुचि मोरी
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा ❀ यह सुनि आपु उठे श्रीरामा
क्षीरनिवास हृदय महँ लाये ❀ गहि भुज अपने ढिग बैठाये
नृप बैकुण्ठ बिराज्यो जाई ❀ बैशम्पयन कथा सब गाई
जनमेजय सुनि अतिसुखपावा ❀ मुनिकहँ बहुरि हर्षि शिरनावा
कथा पुनीत सुनत दुख भागा ❀ आगे बहुरि करहु अनुरागा
मुनिअभिलाष नृपतिकी जाना ❀ फिरि आगे तब कीन्हबखाना
हरिपुर नृपति जाइ सुख पाई ❀ तहां बिलोक्यो चारिहु भाई
सहित द्रौपदी रूप अनूपा ❀ द्रोणाचार्य सहित सब भूपा
देवरूप तहँ भीष्मपितामा ❀ करणसहित राजहिं हरिधामा
दुर्योधन आदिक बलवाना ❀ जिन जिन मरत युद्ध रणठाना
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते ❀ हरिपुरमध्य बिराजहिं तेते
नृप बैराट सहित सुत देखा ❀ औरहु बहुत करै को लेखा
गांधारी माता तहँ देखा ❀ माद्री सहित धरे शुभ बेखा
जयद्रथ नृप अहिबरणकुमारा ❀ सबहिनकहँ तहँ देखि भुवारा

दो० भारत महँ जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
बिबिधभांतिसुखपायो, धर्मसुतहितनिहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पाण्डवा गयऊ ❀ सुनि जनमेजय कहँ सुखभयऊ
बारम्बार जोरि युग पानी ❀ ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी
आनन शशि तवनाथ पुनीता ❀ अमृतमय यह गिरा बिनीता
तृषितहृदयसुनिअतिसुखभयऊ ❀ नानाभांति लाभ मैं लह्यऊ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह तन कल्प पाण्डवन केरा ❋ सुनि छूटै चौरासी फेरा
व्यासदेव भारत महँ भाखी ❋ याहिके चारि निगम हैं साखी
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी ❋ पाइहि सिद्धि सकल सुख भूरी
जो नर या कहँ झूँठ बिचारी ❋ होइहि अधम नरक अधिकारी
क्षत्री सुनै समर जय पावै ❋ जो बिश्वास मानि यह गावै
ब्राह्मण पढ़ै सुनै छल त्यागी ❋ बेदनिधान होय बड़भागी
जो नर नारि सुनै मन लाई ❋ त्यहिकर पाप सकल मिटिजाई
अन्तकाल निर्भय हरिलोका ❋ जाइ बसै तजिकै यमशोका
काशी प्राग गया अस्नाना ❋ तसफलयहसुनि ब्यास बखाना
दान अनेक देय जो कोई ❋ तस फल होय सुनै यह सोई

सो० शंकर शारद शेश, चारिहु बेद सहस्र षट ।
सबकर असउपदेश, भजुहरिचरणबिहायछल ॥
सबलसिंहमतिहीन, व्यासकहततसकहेउहम ।
प्रभु तारत जनदीन, सोइ मनकर्मभरोसकरि ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि
श्रीपाण्डवस्वर्गवासवैशम्पायननृपजनमेजय-
संवादोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति श्रीस्वर्गारोहणपर्व समाप्तम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

N. K. P., L. श्रीराधिकाजी का भगवान् की वंशी लेकर बजाना। [स्व

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative